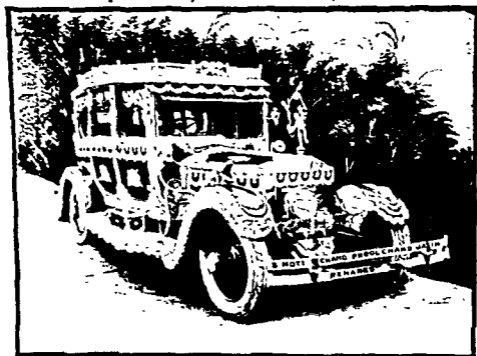


# हमारे माननीय सहायक

- १।० ५० शिवरत्ननर्मी मोहना, करांची  
 वार् घनश्यामदासजी विड्ढा, कन्नडत्ता  
 १।० ५० जगदीश नारायण विंद साह्य पडोभाराज  
 श्रीयुव बालगोविन्दरामजी छोडीवाल, करांची  
 शय बडानुर मजालाल जगन्नाथ करांची  
 म्नाथ जम्बन्तरायजी चूडामणि, करांची  
 मझाराज पं० मुन्दरलालजी रातवैद्य इण्डायन, करांची  
 मेमर्मे विधानदास पुतेचन्द एण्ड सन्स; करांची  
 मेड रेराशङ्कर मोतीराम, करांची  
 मेड शम्भोमल घेलाराम, करांची  
 मेड राजमलजी कल्लरानी जामनेर ( पूर्वं यावदेन )  
 मेमर्मे शुभकरण श्रीराम, पैडूस सिर्कदावाद ( दक्षिण )  
 मेमर्मे रामदास घाम्भीराम शय साह्य, हैदरावाद ( दक्षिण )  
 मेमर्मे हरगोपालदास रामलाल पैडूस हैदरावाद ( दक्षिण )  
 मेमर्मे श्रीराम शालिगराम, घामणगांव  
 मेमर्मे बम्बलाल मझालाल जनरल गंज, कानपूर  
 ६० रामेश्वरदासजी बागला एम० एल० ए० कानपूर  
 ६।० रामरत्ननर्मी गुप्त कानपूर  
 मेमर्मे भीमचन्द रेणवचन्द मोहना, दिगनघाट  
 शय साह्य नारायणदासजी हाटी, अमरावती  
 मेमर्मे मोदीगल बंसीगज पैडूस; अकोला  
 मेड स यनःरायणजी गोण्डा ( परमराम हरनन्दाय ) देहली  
 मेमर्मे एम० एम० अशानीयसाद घेदुलाल जवणुर  
 मेमर्मे एम० कपेंद लणमोचेंद दुर्गाचेंद, सागर

पनारस की प्रसिद्ध कारीगरी के अद्भुत नमूने !!!  
सिंघई मोतीचंद फूलचंद जैन  
चाँदी कोठी, मोती कटरा, बनारस.



चाँदी-मोने के बने हुए प्रथम सुन्दर एवम् अत्यंत कलापूर्ण सामान  
श्री

मोटर्स, हाथी के हॉटे, पलंग, छड़ियाँ, मिहामन, कुमियाँ, ट्रेयें, फव्वारे इत्यादि ।

विराजित धर्म मन्दिरों एवम् राजा महाराजा और रईमों के विनास

मन्दिरों को सुसज्जित करनेवाली अभूतपूर्व सामग्रियाँ

भारतवर्ष में अपने ढंग का एक ही कार्यालय

कार्यालय का विवरणार्थः—

सुन्दर, मज्जा, और मजबूत पर प्रत्येक कार्य उत्तम कारीगरों से बहिला मनेजमेंट में तैयार करवाकर  
सत्राय दिया जाता है । कार्य की उत्तमता के लिये बड़े प्रशंसना पत्र प्राप्त हैं ।

परीक्ष्य प्रार्थनीय



## भूमिका

—:०:—

आज पुनः इस विराट् आन्दोलन के नवीन प्रयत्न को लेकर पाठकों के सम्मुख उपस्थित होते हुए हम लोगों का हृदय छिना आनन्द और उत्साह पूर्ण हो रहा है। इसका वर्णन शब्दों के द्वारा करना असम्भव है। हीन जनता या कि केवल १०) रुपये की छुट्टी से तीन नवयुवकों के द्वारा आरम्भ किया हुआ यह विराट् आन्दोलन इतनी सुन्दरता, सच्यता और समर्पणता के साथ इतनी मंत्रित पर पहुँच जाया और भारतीय समाज में अपने दृढ़ का प्रथम आन्दोलन सिद्ध होगा। मगर जहाँ पर प्रबल इच्छाशक्ति, आगूय मनोबल, और तर्ज उत्साह होता है, वहाँ पर कठिन से कठिन कार्य भी आसान हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में प्रकृति भी बड़ी सहायक होती है। यही कारण है कि जिस उत्साह के साथ हमने इस कार्य को आरम्भ किया, वही उत्साह से जनता ने हमारे इस कार्य का स्वागत किया। व्यापारियों ने हमारे साथ पूर्ण सहाय्यता और सहयोग प्रदान किया। जिसके फलस्वरूप बिना पैसों से आरम्भ किये हुए इस कार्य के विभिन्न भाग तक कठिन पक्षों हमारे धन्य हस्तों के सहज सच और साराई खर्च में व्यय करने में समर्थ हुए। इससे हम प्रकृति की धन अनुदान नहीं समझते।

मगर इस विराट् आन्दोलन की सच्यता का क्या हम लोगों को नहीं है। इस सच्यता का वास्तविक क्या हमारे पास हस्तु उस व्यापारी आठन को है। जिसके सहयोग और अनुदान से यह विराट् कार्य सम्भव हुआ। और जिसके हस्तार्थ परदार को हम किसी प्रकार विनमन नहीं कर सकते।

इस तीव्र भाग को सम्भव करने में कई महातुमनों से बहुत अधिक सहायता प्राप्त हुई है। जिनके प्रति हृदयगत प्रबल न करना अत्यंत आवश्यक होती। इन महातुमनों में कर्षी के धन पुत्र धीपुत्र राधकान्तुर विपिनवर्मा मोहन, बाबू चंद्रशेखरजी मूरदा, बाबू कान्धोबिन्दादासजी छोरीवाल, पं० हीरा-काठकी शर्मा, पं० मोतीकाठकी शर्मा, हैदराबाद स्थित के धीपुत्र रामशर्माजी पूत आदि सच्यों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन महातुमनों ने हम लोगों के कार्य में हर प्रकार से सहायता और सहाय्यता प्रदान की, जिसका बदला किसी प्रकार कानिष्ठ धन्यवाद में नहीं चुकाना जा सकता। इसके अतिरिक्त बराल के स्थानीयवासियों के मंत्रेण धीपुत्र गणपति हम्म पुत्रों को धन्यवाद देना हम जनता कर्तव्य समझते हैं जिन्होंने बहुत ही संभवपूर्वक इस दुष्कृत को पारने के दो बरतों की अनेका अतिरिक्त सुन्दर और आकर्षक बना दिया है।

## विशेष निवेदन

इस स्थान पर हम पाठकों से एक विशेष निवेदन कर देना अत्यन्त आवश्यक समझने हैं। बात यह है कि इस ग्रन्थ का बहुत सा भाग भाज से करीब ८ मास पूर्व का संग्रह किया हुआ है। और इन दिनों में भारतवर्ष की व्यापारिक परिस्थिति में बड़े भयंकर और अनिष्टकारी परिवर्तन हुए हैं। अतएव इन आकस्मिक परिवर्तनों के लिये यह ग्रन्थ किसी भी प्रकार जिम्मेदार नहीं है।

इन बार देशभ्यारी आन्दोलन के प्रभाव के कारण हमारे मैटर संगृहीत करने में आवश्यकता से अधिक समय और शक्तिपूर्ण व्यय करनी पड़ी। परिणाम यह हुआ कि इतना समय व्यतीत हो जाने पर भी हमलोग पञ्जाब प्रान्त को इसमें शामिल न कर सके, जिसका हमें हार्दिक खेद है। पञ्जाब के बदले में हमने इसमें सी० पी० बरार, खानदेश और निजाम स्टेट प्रान्तों को मिला दिया है। पंजाब का मैटर भी संगृहीत हो रहा है। उम्मीद है शीघ्र भाग में जोड़ दिया जायेगा।

अन्त में हम अपने कृपातु पाठकों को कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद देने हुए इन बार बिदा लेकर, शीघ्र ही शीघ्र भाग के साथ आगले वर्ष पुनः उपस्थित होने की आशा करते हैं।

शांति मन्दिर,  
भानपुरा  
दीनाबली १९१०

}

भवदीय—

संचालक—कॉमर्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस

# विषय-सूची

—:0:—

पंजाबी-सिटी	फरांची	पेज नं०	पेज नं०
प्राग की सीमा व परिधिनि	...	३	...
फरांची जिले का इतिहास	...	३	...
ताजुके एवं रियासत	...	५	...
फरांची-सिटी का इतिहास	...	५	...
फरांची सिटी का व्यापार	...	६	...
फरांची पोर्ट ट्रस्ट	...	८	...
फरांची पोर्ट पर जहाजों की बंदगी	...	९	...
इयूनिवर्सिटी	...	९	...
बैकर्स एण्ड लेन्डलॉर्स	...	१०	...
कारन एण्ड ग्रेन मरचेण्ट्स	...	११	...
बन्दे के व्यापारी	...	४०	...
होदे के व्यापारी	...	५०	...
मोस्टकर रिजर्स	...	५४	...
सिमेन्स आनर्स	...	५५	...
जवरल मारचेण्ट्स	...	५६	...
पी मरचेण्ट्स	...	५८	...
विदेशी बंगवियाँ	...	५९	...
<b>दहली-सिटी—</b>			
ऐतिहासिक परिषद	...	३	...
दार्शनिक रचना	...	४	...
दिल्ली का व्यापारिक परिषद	...	५	...
व्यापारिक बैण्ड	...	१०	...
देवदर्स एण्ड अग्रेसिबिलिटी	...	११	...
बैकर्स एण्ड लेन्डलॉर्स	...	११	...
जिन्-कारर्स	...	१६	...
बन्दे के व्यापारी	...	१९	...
दौरी	...	२४	...
होदे के व्यापारी	...	४०	...
दौरी होदे के व्यापारी	...	४१	...
दिल्ली एण्ड ग्रेन मरचेण्ट्स	...	४१	...
दिल एण्ड इन्डिया	...	४६	...
व्यापारियों के पत्रे	...	५०	...
<b>संयुक्त-नाम</b>			
<b>आगरा—</b>			
ऐतिहासिक परिषद	...	३	...
दार्शनिक रचना	...	३	...
व्यापारिक परिषद	...	...	...
व्यापारिक परिषद	...	...	...
व्यापारियों के परिषद	...	...	...
व्यापारियों के पत्रे	...	...	...
<b>बिरोजापाद—</b>			
व्यापारिक परिषद	...	...	...
व्यापारियों के परिषद	...	...	...
व्यापारियों के पत्रे	...	...	...
<b>हटाया—</b>			
व्यापारिक परिषद	...	...	...
व्यापारियों के परिषद	...	...	...
व्यापारियों के पत्रे	...	...	...
<b>मैनपुरी—</b>			
व्यापारिक परिषद	...	...	...
व्यापारियों का परिषद	...	...	...
व्यापारियों के पत्रे	...	...	...
<b>पकवापाद—</b>			
व्यापारिक परिषद	...	...	...
बैकर्स	...	...	...
बैकर्स एण्ड लेन्डलॉर्स	...	...	...
जवरल मरचेण्ट्स	...	...	...
जवरल मरचेण्ट्स	...	...	...

	पेज नं०	देहरादून—	पेज नं०
बाँदी-सोने के व्यापारी	...	प्रारंभिक परिचय	...
व्यापारियों के पते	...	व्यापारियों के परिचय	...
	...	व्यापारियों के पते	...
<b>कशीज़—</b>		<b>हरिद्वार—</b>	
प्रारंभिक परिचय	...	प्रारंभिक परिचय	...
व्यापारियों के परिचय	...	व्यापारियों के पते	...
	...		...
<b>कासगंज—</b>		<b>मुरादाबाद—</b>	
प्रारंभिक परिचय	...	प्रारंभिक परिचय	...
व्यापारियों के परिचय	...	व्यापारियों का परिचय	...
व्यापारियों के पते	...	व्यापारियों के पते	...
	...		...
<b>हाथरस—</b>		<b>रामपुर—</b>	
प्रारंभिक परिचय	...	प्रारंभिक परिचय	...
व्यापारियों के परिचय	...	व्यापारियों के पते	...
व्यापारियों के पते	...		...
	...	<b>चन्दौसो—</b>	
<b>अलीगढ़—</b>		प्रारंभिक परिचय	...
ऐतिहासिक परिचय	...	व्यापारियों के परिचय	...
दरौनीय स्थान	...	व्यापारियों के पते	...
भौतिक परिचय	...		...
व्यापारियों का परिचय	...	<b>बरेली—</b>	
व्यापारियों के पते	...	प्रारंभिक परिचय	...
	...	व्यापारियों के परिचय	...
	...	व्यापारियों के पते	...
<b>बुरजा—</b>			...
प्रारंभिक परिचय	...	<b>उमियानी—</b>	
व्यापारियों का परिचय	...	प्रारंभिक परिचय	...
व्यापारियों के पते	...	व्यापारियों के परिचय एवं पते	...
	...		...
<b>हापड़—</b>		<b>पौलीमीत—</b>	
प्रारंभिक परिचय	...	प्रारंभिक परिचय	...
व्यापारियों के परिचय	...	व्यापारियों का परिचय	...
व्यापारियों के पते	...	व्यापारियों के पते	...
	...		...
<b>मेट—</b>		<b>गोला गोकुलनाथ—</b>	
प्रारंभिक परिचय	...	प्रारंभिक परिचय	...
व्यापारियों का परिचय	...	व्यापारियों के परिचय एवं पते	...
व्यापारियों के पते	...		...
	...	<b>लखीमपुर-खीरो—</b>	
<b>मुजफ्फरनगर—</b>		प्रारंभिक परिचय	...
प्रारंभिक परिचय	...	व्यापारियों के परिचय	...
बैकर्स एण्ड केड हाइंड्स	...	व्यापारियों के पते	...
कमीशन एजेंट्स	...		...
व्यापारियों के पते	...	<b>सीतापुर—</b>	
	...	प्रारंभिक परिचय	...
<b>साहायपुर—</b>		व्यापारियों का परिचय	...
प्रारंभिक परिचय	...	व्यापारियों के पते	...
व्यापारियों के परिचय	...		...
व्यापारियों के पते	...		...

शहर/स्थान	पेज नं०	धनारस	पेज नं०
<b>शाहजहाँपुर—</b>			
प्रारंभिक परिषद ...	124	ऐतिहासिक परिषद ...	217
व्यापारियों के पते ...	125	दुर्गमीय स्थान ...	218
		पूजनीय स्थान ...	220
<b>हरदोई—</b>		व्यापारिक परिषद ...	220
प्रारंभिक परिषद ...	125	व्यापारिक बाजार ...	221
व्यापारियों के परिषद एवं पते ...	126	बैक्स एवं बैंड लाइसेंस ...	221
		धनारसी माल एवं चाँदी-सोने के व्यापारी	226
<b>लखनऊ—</b>		जौहरी ...	229
प्रारंभिक परिषद ...	127	गल्ले के व्यापारी ...	232
दुर्गमीय स्थान ...	128	बतनों के व्यापारी ...	234
चाँदी-सोने के व्यापारी ...	128	व्यापारियों के पते ...	237
जौहरी ...	130		
मोटा छिनारी के व्यापारी ...	132	<b>पलिया—</b>	
गल्ले के व्यापारी ...	132	प्रारंभिक परिषद ...	239
व्यापारियों के पते ...	134	व्यापारियों का परिषद ...	240
		व्यापारियों के पते ...	242
<b>कानपुर—</b>			
ऐतिहासिक परिषद ...	139	<b>छपरा—</b>	
व्यापारिक परिषद ...	139	प्रारंभिक परिषद ...	243
प्रधान व्यापारिक बेम्बू ...	140	व्यापारियों के परिषद एवं पते ...	244
पैत्रोत्र एवं इंट्रूड्रीज ...	141		
मिल-ऑनस ...	142	<b>गौरापुर—</b>	
कपड़े के व्यापारी ...	145	प्रारंभिक परिषद ...	245
बैक्स एवं बंगोरस ...	145	व्यापारियों का परिषद ...	246
कपड़े के व्यापारी ...	146		
चाँदी-सोने के व्यापारी ...	147	<b>पड़रौना—</b>	
बिजने के व्यापारी ...	149	पड़रौना राजवंत ...	247
गल्ले के व्यापारी ...	152	व्यापारियों के परिषद ...	248
छोटे के व्यापारी ...	150		
अमल मारफेस ...	151	मध्य-प्रदेश	
व्यापारियों के पते ...	152		
<b>भारसी—</b>		<b>नारापुर—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	155	प्रारंभिक परिषद ...	2
व्यापारियों का परिषद ...	155	व्यापारिक परिषद ...	2
व्यापारियों के पते ...	157	बैक्स ...	3
		चाँदी-सोने के व्यापारी ...	4
<b>इलाहाबाद—</b>		कपड़े के व्यापारी ...	10
ऐतिहासिक परिषद ...	201	गल्ले के व्यापारी ...	12
दुर्गमीय स्थान ...	202	व्यापारियों के पते ...	14
पवित्र स्थान ...	203		
बैक्स एवं बंगोरस ...	204	<b>धामटो—</b>	
व्यापारी एवं बन्धन एवं ...	208	प्रारंभिक परिषद ...	15
		व्यापारियों का परिषद ...	16
<b>मिर्जापुर—</b>			
व्यापारियों का परिषद ...	212	<b>काटोल—</b>	
		प्रारंभिक परिषद ...	17
		व्यापारियों का परिषद ...	17
		व्यापारियों के पते ...	19



पर्या—	पेज नं०	राजिम—	पेज नं०
प्रारंभिक परिषद ...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
व्यापारियों का परिषद ...	...	व्यापारियों के पते ...	...
व्यापारियों के पते ...	...	...	...
हिंगटनघाट—		राजनांदगाँव—	
प्रारंभिक परिषद ...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
मिज़ ऑनर्स ...	...	व्यापारियों का परिषद ...	...
हाटन मार्चेंट्स ...	...	व्यापारियों के पते ...	...
हाथ मार्चेंट्स ...	...	...	...
व्यापारियों के पते ...	...	गोंदिया—	
...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों का परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों के पते ...	...
...	...	...	...
...	...	सिवनी—	
...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों का परिषद ...	...
...	...	...	...
...	...	छिंदवाड़ा—	
...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों का परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों के पते ...	...
...	...	...	...
...	...	येतूल-बिदनूर—	
...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों का परिषद ...	...
...	...	...	...
...	...	इटारसी—	
...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों का परिषद एवं पते ...	...
...	...	...	...
...	...	हुदांगावाड़—	
...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों के पते ...	...
...	...	...	...
...	...	गाडरवाड़ा—	
...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों के परिषद एवं पते ...	...
...	...	...	...
...	...	भोपाल—	
...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों का परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों के पते ...	...
...	...	...	...
...	...	सिहोर—	
...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों के परिषद ...	...
...	...	व्यापारियों के पते ...	...
...	...	...	...
...	...	यरार और खानदेश	
...	...	अमरावती—	
...	...	प्रारंभिक परिषद ...	...
...	...	...	...

	पेज नं०
बॉटन मरचेट्स ...	४
बपदे के ब्यापारी ...	११
ब्यापारियों के पत्रे ...	१२
<b>बेलगाँव—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	१३
ब्यापारियों का परिषद ...	१३
<b>अकोला—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	१६
कीर्तित्त्व एण्ड इन्फ़ार्मिज़ ...	१७
ब्यापारियों का परिषद ...	१८
ब्यापारियों के पत्रे ...	२१
<b>वामनाथ—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	२४
ब्यापारियों का परिषद ...	२५
ब्यापारियों के पत्रे ...	४३
<b>वपतनाल—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	४५
ब्यापारियों का परिषद ...	४५
ब्यापारियों के पत्रे ...	५०
<b>परिषदपुर—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	५१
ब्यापारियों के परिषद ...	५२
ब्यापारियों के पत्रे ...	५३
<b>शंभुनाथ—</b>	
ब्यापारियों के परिषद एवं पत्रे ...	५७
<b>शार्दी—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	५९
ब्यापारियों के परिषद ...	५९
ब्यापारियों के पत्रे ...	६४
<b>धामनाथ—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	६५
ब्यापारियों का परिषद ...	६५
ब्यापारियों के पत्रे ...	६८
<b>शारदा—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	६९
ब्यापारियों का परिषद ...	६९
ब्यापारियों के पत्रे ...	७३
<b>शोभा—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	७४
ब्यापारियों के पत्रे ...	७४

	पेज नं०
<b>शाकोट—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	७६
ब्यापारियों का परिषद ...	७६
<b>मुक्तिजापुर—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	७७
ब्यापारियों के पत्रे ...	७७
<b>मलकापुर—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	७७
ब्यापारियों के परिषद ...	७८
ब्यापारियों के पत्रे ...	७९
<b>जलगाँव—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	८१
ब्यापारिक असेसिप्लान्त ...	८२
कीर्तित्त्व एण्ड इन्फ़ार्मिज़ ...	८३
ब्यापारियों के परिषद ...	८४
ब्यापारियों के पत्रे ...	९१
<b>धूलिया—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	९३
ब्यापारियों के परिषद ...	९३
ब्यापारियों के पत्रे ...	१००
<b>झमलनेर—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	१०२
इंडीय रयान ...	१०२
ब्यापारियों के परिषद ...	१०३
ब्यापारियों के पत्रे ...	१०४
<b>जामनेर—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	१०६
ब्यापारियों के परिषद एवं पत्रे ...	१०६
<b>सोडुनी और कलमसरा—</b>	
ब्यापारियों का परिषद ...	१०९
<b>घाटीरगाँव—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	११०
ब्यापारियों का परिषद ...	११०
ब्यापारियों के पत्रे ...	११२
<b>चोंगडा—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	११३
ब्यापारियों का परिषद ...	११३
ब्यापारियों के पत्रे ...	११५
<b>दादा—</b>	
प्रारंभिक परिषद ...	११६

	पेज नं०		पेज नं०
व्यापारियों का परिचय ...	11६	व्यापारियों का परिचय ...	७९
व्यापारियों के पते ...	11८	व्यापारियों के पते ...	८३
<b>मुसायल—</b>		<b>निजामाबाद—</b>	
प्रारंभिक परिचय ...	11९	प्रारंभिक परिचय ...	८६
व्यापारियों का परिचय ...	11९	व्यापारियों का परिचय ...	८७
व्यापारियों के पते ...	1२०	व्यापारियों के पते ...	९०
<b>बुरहानपुर—</b>		<b>नांदेड़—</b>	
प्रारंभिक परिचय ...	1२1	प्रारंभिक परिचय ...	९1
व्यापारियों का परिचय ...	1२1	व्यापारियों का परिचय ...	९1
व्यापारियों के पते ...	1२४	व्यापारियों के पते ...	९४
<b>हैदराबाद-स्टेट</b>		<b>पूर्णा—</b>	
<b>हैदराबाद-सिटी—</b>		प्रारंभिक परिचय ...	९६
ऐतिहासिक परिचय ...	३	व्यापारियों का परिचय एवं पते ...	९६
व्यक्तिगत परिचय ...	७	<b>ऊमरी—</b>	
बैंकर्स ...	९	व्यापारियों का परिचय ...	९८
औद्योगिक ...	३२	<b>हिंगोली—</b>	
बपड़े के व्यापारी ...	३४	प्रारंभिक परिचय ...	९९
आयर्न एण्ड टिंकर मरचेण्ट्स ...	३७	व्यापारियों का परिचय एवं पते ...	1००
ग्रेन मरचेण्ट्स एण्ड कमीशन एजेंट ...	३८	<b>परमनी—</b>	
ज्वारल मरचेण्ट्स ...	३९	प्रारंभिक परिचय ...	1०३
व्यापारियों के पते ...	४1	व्यापारियों के परिचय ...	1०३
<b>सिकंदराबाद—</b>		व्यापारियों के पते ...	1०६
बैंकर्स ...	४७	<b>सेल—</b>	
ज्वारल मरचेण्ट्स ...	५८	प्रारंभिक परिचय ...	1०८
व्यापारियों के पते ...	६२	व्यापारियों के परिचय ...	1०८
<b>गुलबर्गा—</b>		व्यापारियों के पते ...	111
प्रारंभिक परिचय ...	६७	<b>जालना—</b>	
व्यापारियों का परिचय ...	६८	प्रारंभिक परिचय ...	11२
व्यापारियों के पते ...	७1	व्यापारियों का परिचय ...	11२
<b>रायचूर—</b>		व्यापारियों के पते ...	11५
प्रारंभिक परिचय ...	७३	<b>औरंगाबाद—</b>	
व्यापारियों का परिचय ...	७४	प्रारंभिक परिचय ...	11७
व्यापारियों के पते ...	७६	व्यापारियों के परिचय ...	11८
<b>परभट—</b>		व्यापारियों के पते ...	1२1
प्रारंभिक परिचय ...	७८		

करांची-सिटी

—

KARACHI-CITY.



# कराँची

## कराँची-जिला

प्रांत की सीमा और परिस्थिति—

इस जिले का क्षेत्रफल ११९७० वर्गमील है। इसके उत्तर में लरकाना, पूर्व में सिंधु नदी और हैदराबाद जिला, दक्षिण में समुद्र और कोरो नदी तथा पश्चिम में समुद्र तथा लालबेला रियासत ( विलोचीस्थान ) हैं। इस जिले में पहाड़ विरोप हैं। इसकी प्रधान नदी सिंधु और हाव हैं। पानी की यहाँ बड़ी कमी रहती है। खेती प्रायः बरसाती पानी ही से होती है। यहाँ का जंगल बड़ा मनोहर है। इसके कोटरी तालुका के लखी नामक स्थान पर गरम जल के तथा गंधक के मरने निकलते हैं। यहाँ बहुत से यात्री यात्रा के निमित्त आया करते हैं। इसी प्रकार इस जंगल में और भी कई स्थानों पर कई सुन्दर दृश्य देखने को मिलते हैं। इस जंगल में आम, बेर, सेव, अंजीर, आदि भी पैदा होते हैं पर ज्यादा नहीं। ये सब यहाँ खप जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ लकड़ी भी होती है जिसमें दासकर बबूल विशेष होती है। छ्वाच और Kandel भी यहाँ साधारण पैदा होते हैं। पहाड़ी स्थानों में यहाँ के जानवर, छेदुआ, हिरन, धरगोरा, सियार, लोमड़ी, भेड़िया आदि हैं। मगर भी यहाँ के तालाबों एवं सिंधु और हाव नदी तथा बड़ी २ नहरों में पाये जाते हैं। यहाँ की आबहवा समुद्र का खुला हुआ किनारा होने से अच्छी है। यहाँ बरसात की औसत बहुत कम है। मानसून में वर्षा करीब ५ इंच होती है तथा कराँची तालुका में ९ इंच तक हो जाती है। यहाँ यहाँ की वर्षा का एवरेज है।

कराँची जिले का इतिहास—

इस प्रांत का इतिहास उस समय सेगुरु होता है जब कि ग्रेट एलेक्जेंडर हिन्दुस्थान को विजय करने के लिये भारतवर्ष में आया था। उसने परसियन गल्फ के रास्ते यहाँ से अपना सम्बन्ध स्थापित किया था। सन् १०१९ और १०२६ के बीच महमूद गजनवी यहाँ आया; उस समय इस प्रदेश पर सुमा राजवंश का राज्य था। इस राजवंश का प्रथम

पुराने घामनीविहस का टिडुलर बसाल था। इसी ने इस राज्यवंश को जन्म दिया था। सन् १३३३ में यह मुबारकवंश कच्छ से लरकाना जिले के सेहवान नामक स्थान में आया। पश्चान् ठट्टा में इसने निवास करना प्रारंभ किया। मकली पहाड़ के पास सामुई नामक स्थान इन लोगों की राजधानी थी। ये लोग वास्तव में हिन्दू या बौद्ध थे, मगर इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों पर विश्वास करके चौदहवीं शताब्दी के अंत में मुसलमान हो गये। जब किंगडम तुंगलक देहली में शासन करता था उस समय इनका निवासस्थान ठट्टा सारे सिंध में प्याहार का प्रधान स्थान हो गया था। इसकी मनुष्य संख्या भी बहुत बढ़ गई थी।

सन् १५२१ में अरफुन राज्यवंश के स्थापक शरह बेग ने इस सुमा राजवंश के अंतिम राजा को हरा कर इस प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। इसका राज्य करीब ३४ साल तक रहा। बर्गोडि इमका लड़का शाह हुसैन बेगौलाद सन् १५५४ में मर गया था।

सन् १५९२ में भारत सम्राट् अकबर ने इस प्रांत पर चढ़ाई कर उसे अपने कब्जे में कर लिया और यह प्रांत मुगलान सूबा में मिला दिया गया। इसी समय ठट्टा पर जान बेग का शासन था। यह सम्राट् से पराजित हो चुका था। अतएव इसने प्रार्थना कर अकबर के पास भेजरी कर ली और जागीर के बतौर यह इमका भोग करने लगा। पश्चान् यह यहाँ का पुस्तैनी शासक हो गया।

सन् १७९९ में कलान के स्थान ने व्यापार के निमित्त बंदर की वलाश की। उसे करांची परांत आया और उसने इसे व्यापार का प्रधान केन्द्र बनाना चाहा। कुछ ही समय पश्चात् शालपुर के मौर—जिनके यहाँ कलान का स्थान काम करता था—अलग २ हो गये। सन् १८३८ में अकबरान युद्ध के समय इस पोर्टे का विरोध महत्व रहा। इसे ब्रिटिश दूत ने अपना अज्ञा बलवा और सन् १८३८ में यह पूर्ण रूप से ब्रिटिश सरकार के हाथ आ गया। जब से यह ब्रिटिश सरकार के हाथ में आया इसकी दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति होने लगी। भिन्न २ समय पर इसमें हैदराबाद एवं लरकाना का पोरान मिला लिया गया। यही आजकल करांची जिले के नाम से पुकारा जाता है।

आजकल भी इस जिले में पुरातत्व सम्बंधी कई सामान हैं। जैसे शिलालेख, पुरानी मसजिदें, मकबरे, कबरे आदि। यहाँ की मुगलानों की कब्रों की कुम्भामसजिद बड़ी अच्छी और प्राचीनकारी-नियों का अलंकार समृद्ध है। शालपुर मसजिद की बीच महाराज बटुन ही अच्छी है। ठट्टा का पुरातत्विकी की दरतनीय है जो सन् १६९९ में बनना शुरू हुआ था पर कभी खतम नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त सिंधु के मैदान में लाहौरी, काकर, मुक्रेरा, समुई, फतेवाग, काट, घामन, बू, करी, कादिन, टुर, भावमारे आदि स्थान पैसे हैं जहाँ पुरातत्व सम्बंधी सामग्री आज भी मिलती है।

तालुके एवं पैदावार—

इस जिले में सय मिलाकर ११ तालुके या महाल हैं। जिनके नाम फोटीरी, फोहिस्यान, करांची, ठट्टा, मीरपुर सकरो, घोडावारी, केंटी, मीरपुर यंतोरो, मुजावल, जाती और शाह वंदर हैं। इन सय तालुकों में मिलाकर ५ टाउन तथा ६२८ देहाती गाँव हैं। इस प्रांत का परिचा ११९५० वर्गमील है। इस प्रांत में खेती घरसाती पानी, भरने एवं कुओं में होती है। यहाँ की पैदावार जुवार, याजरी, जौ, गन्ना है जो करांची शहर से करीब १२ मील की दूरी पर मलीर प्रान में होती है। इसके अतिरिक्त शाहवंदर और ठट्टा के डेल्टे में चावल होता है। यहाँ गेहूँ, गन्ना, कपास और समालू भी होती है। फोहिस्यान के बेरिन हिस्स नामक स्थान पर भी कुछ खेती होती है। मगर कम, जब कि पानी बहुत ज्यादा गिरता है। सौदर्न प्रान में रहनेवाले मनुष्य पशुओं को भी पालते हैं। यहाँ कम पानी पढ़ने ही से बहुत से मरने बहने लग जाते हैं। जो कि कारी सादा में यहाँ हैं।

यहाँ के पशुओं में भैंस, गाय, ऊँट, गधे वगैरह हैं। गायें करांची सिटी से करीब ४० मील की दूरी पर बहुत होती हैं। ये करांची की गायों के नाम से मराहूर हैं। पम्बई प्रांत में यहाँ से बहुत गायें हस्ताल जाया करती हैं। यहाँ की गायें भारतवर्ष में अपना बहुत ऊँचा स्थान रखती हैं। भैंसे भी यहाँ बारी निकदार में हैं। इनसे विशेषकर घी तैय्यार होता है। नार्दन इंडिया का घी बहुत अच्छा होता है। वह इन्हीं भैंसों से तैय्यार किया जाता है। यहाँ ऊँट और गधे लादने के काम में आते हैं।

करांची-सिटी का इतिहास—

दुनियाँ परिवर्तनशील है। बौन जानता है कि जहाँ आजकल भय्य और सुन्दर इमारतों को लिये हुए विशाल नगर खड़े हैं, वहाँ समय आने पर कुछ न बिनो और जहाँ आज कुछ भी नहीं मिलता,—जहाँ भयंकर जंगल हैं, फल वहाँ विशाल नगरों की रचना हो जाय। हमारा करांची भी इसी प्रकार के बदलणों में से एक है। मन् १७२५ की बात है, जहाँ आजकल यह भारत प्रसिद्ध नगर खड़ा है वहाँ कुछ न था। एक नामक नाम का छोटा सा देहात था। इसके पास ही हाय नामक नदी बहती थी। यहाँ साधारण व्यापार होता था। उस समय यह स्थान देहातों के बीच जानवरिया वस्तुओं के बाँटने में था। मीर ने अपने व्यापार की तरकीबें लिये एक कस्तुरी फोटी की खोज करना चाही। उसी समय कस्तुरी के पास बारांची पुन नामक स्थान था। बाराँचर से वही नान आजकल करांची के नाम से प्रख्या है। मीर के बरने से उसके बाँटने में रहनेवाले बजोहा के दिन बताय



## भागीय व्यापारियों का परिचय

के स्थान ने सन् १७९२ में इसको खोज की और इसे व्यापारिक स्थान समझ कर यहाँ व्यापार करना प्रारंभ किया। यह उस समय कलात के स्थान की सीमा पर स्थित था।

इसी समय सन् १७९२ से १७९५ तक इसे तीन बलोची शत्रुओं ने हस्तगत करना चाहा, मगर हैदराबाद के ताजपुर के चीफ ने अपनी सेना द्वारा पराजित कर तीनों ही बार इन बलोचियों को पराजित किया। इसी समय मनोरा नामक स्थान पर जो आजकल करोंची का जरी भाग है, इमने एक किला भी बनवाया। तालपुर के चीफ ने इस स्थान के व्यापार की ओर बड़ा ध्यान दिया। उसने कई व्यापारिक सुविधाएँ कीं। यही कारण है कि उस समय इमका व्यापार और मनुष्य संख्या जोरों से बढ़ने लगी। उस समय इसकी मनुष्य संख्या १४००० हो गई। इममें भाषे हिन्दू थे। उस समय यहाँ छप्पर के मकान विशेष थे। उनकी दिवालें बाढ़ की बनी हुई होती थीं। दो मंजिला मकान तो बहुत ही कम नजर आता था। इन्हीं लोगों के पाग से यह स्थान सन् १८३८ में भारत सरकार के पास आया और तब से इन्हीं के हाथ में है। इनके पाग आने में इमकी महत्ता बहुत बढ़ गई और आजकल तो यह बंदर भारत में तीसरे नम्बर का माना जाता है।

### बिटी का व्यापार—

यों तो यहाँ का व्यापार तालपुर के मीर के जमाने ही में बढ़ने लग गया था पर ब्रिटिश सरकार के समय में इम पोर्ट के व्यापार को बहुत उत्तेजन मिला। मीर के समय में यहाँ का रेटेन्सू ९९०००) रह गया था। यही सन् १८३७ में बढ़कर १७४०००) हो गया। कुछ समय के परवान् बढ़ते २ यहाँ का सारा व्यापार करीब ४० लाख का हो गया। उस समय यहाँ आने वाला माल इंग्लिश मिल्क, प्रोड क्लाय, बंगाल और चीन का मिल्क, गुलाम, राबर, बीनकायी, लम्बा और कपास था। तथा जानेवाले माल में विरोष कर अफीम, ची, अरंडी, नैट्टू, माडर (madder) उन, नमकीन मछली आदि थे। गुलाम स्लेग विरोष कर मस्कन से आते थे। निषी और अवासीनियस भी आते थे, मगर कम। अफीम कटौन ५०० उंटों पर लद कर मारवाड़ की तरफ से आती थी और यहाँ से पोर्तगीज के दमन कालक स्थान पर भेजी जाती थी।

सन् १८४३, ४४ में करांची, चेटी और मिरगंधा नामक पोर्टों का व्यापार मिकं १२ लाख रह गया था। इसका कारण अफीम के व्यापार का गिर जाना था। बाद में इम व्यापार की औसत १६ लाख की थी। दूसरे साल यहाँ व्यापार २३ लाख, तीसरे साल ३५ लाख और चौथे साल को ४४ लाख तक पहुँच गया।

सन् १८५२ में यहाँ का व्यापार बढ़कर ८१ लाख का हो गया। सन् १८५७ में यहाँ का एक्सपोर्ट इम्पोर्ट से भी बढ़ गया। कर्ची के व्यापार को विरोध उत्तेजन अमेरिका के सिविल वार से मिला। इस वार के समय यहाँ से बहुत कपास बाहर गया। इस समय यहाँ का व्यापार ६ करोड़ का हो गया। इसमें २ करोड़ का माल इम्पोर्ट होता था तथा ४ करोड़ का एक्सपोर्ट होता था। अमेरिका में जब शांति हो गई तब यहाँ का व्यापार वापस कम हुआ पर शीघ्र ही सन् १८८२, ८३ में वापस बढ़कर ७ करोड़ का हो गया। और १८९२-९३ में यही ११ करोड़ का हो गया।

सन् १९०३-४ में गवर्नमेंट स्टोअर को छोड़कर यहाँ का एक्सपोर्ट इम्पोर्ट का व्यापार २४.१ करोड़ का हो गया। इसमें ९.६ करोड़ का इम्पोर्ट और १५.२ करोड़ का एक्सपोर्ट होता था। एक्सपोर्ट होने वाले माल में विरोध कर गन्ना और विजहन वाना था। यह पंजाब एवम सिंध प्रान्तों द्वारा रेल मार्ग से यहाँ लाया जाता था। बाहर से आने वाले माल में कपड़ा, सूत, ऊनी माल, हाईवेअर और फटलरी, शराब, सिगरेट,, धातुएँ (खासकर लोहा, ताम्बा, स्टील) शक्कर, मशीनरी, मिल के उपयोगी सामान, तेल आदि २ थे।

कर्ची पोर्ट पर अमेरिका से भी बहुत माल आता था। उसमें विरोध कर कपड़ा, रेल्वे सामग्री, शराब, कोयला, मशीनरी, धातुएँ, दवाइयों, प्रोविजन्स आदि थे। इस प्रकार भारत के भी कई स्थानों से माल यहाँ आता था। बम्बई से कपड़ा, सिल्क, धातुएँ, शक्कर, चाय, जूट, रंगई का सामान, सुपारी, उनी माल, सिल्की माल, शराब, फल और सब्जी आती थी। इसी प्रकार परसियन गल्फ से सूखा मेवा, ऊन, गल्ला और घोड़े तथा मकरान कोस्ट से ऊन, प्रोविजन्स, गन्ना, दाल, और कलकत्ता से, जूट, गल्ला, दाल तथा रशिया से मिन्टल वाटर आता था।

कर्ची से भी विदेशों में तथा भारत के भिन्न २ स्थानों में माल का एक्सपोर्ट होता था उनमें अमेरिका को रुई, ऊन, गेहूँ, बीज, चमड़ा और हथियों, फ्रांस को गेहूँ, रुई, दही, चमड़ा, चना, आदि, जर्मनी को गेहूँ, रुई, चमड़ा, हथिया और शीइस, जापान को रुई, रुस को अरंडी और रुई जाते थे। तथा बम्बई, कच्छ और गुजरात में यहाँ से रुई, गल्ला, अरंडी, शीइस, चमड़ा, मड़ली, मोरेशस द्वीप में गल्ला और दाल, परसिया में चावल, मद्रास में चावल और चमड़ा तथा चीन में रा काटन यहाँ से जाता था।

यहाँ गेहूँ विरोधकर पंजाब और यू० पी० से, कपास पंजाब से, उन, सूखा मेवा और घोड़े कंदहार एवं फलाव से, तथा जलाऊ लकड़ी, घास, घी, चमड़ा और पामलियन बगैरू, चूँटों, पैलों, एवम गंधों पर लदकर लाख पैला और कोदियान से आते थे।

यह हम पहले ही जिन युके हैं कि यह बन्दर ताजपुर के मीर और ब्रिटिश शासन के बीच सन्धि में बहुत होना था। उस समय यहाँ साधारण नावें ही रहा करती थीं। बड़े जहाजों की जहाजों के बिना यहाँ जगह नहीं थी। ये सब मनोवा नामक स्थान पर ही रह जाने थे। यहाँ से लोहा और लकड़ी के मार्ग से जो सब आसानी होती आदमी और माल लाया जाता था। इसलिए यह केनेडि बन्दर पर काम शुरू पर पहुँचाया जाता था। जो स्थान इतना होता था कि जिनके साथ बड़े जहाजों में इतनी कठिनाई पड़ती थी कौन जान सकता है कि समय आने का यह बड़े जहाज और जहाज हमेशा पड़े रहेंगे। सन् १८५४ में सर वॉटसन प्रोथर (Sir Watson Prother) के कमीश्नरि में जहाजों को यहाँ बंदर में पहुँचाने के लिये शिवायारी कायदा बनाने और यहाँ के बीच गैरियर मीने या कामरे नामक रास्ता बनाया गया। पहले बंदर के लिये जहाजों को यहाँ तक आने में मुश्किल हो गई।

सन् १८५९ में इस बंदर के सुधारा करने के लिये एक स्कीम बनाई गई। तथा इसे लंडन के इन्जिनियरिंग विभाग के पास भेजा। इनके इस स्कीम के लक्ष्य के लिये २९ लाख रुपया खर्च बतलाया। इस स्कीम के काम हो जाने में नीपटिडोज के पास बहुत चौड़ा और २५ फीट गहरा स्थान हो जाता। अगर इतना खर्च न करने हुए बहुत बाद-रिवाज के पत्रानु 'मनोरा प्रेक बन्दर' बनाने के लिये काम किया गया जिसमें १५०३ फीट चौड़ा रास्ता हो सकता था। यह स्कीम सन् १८६९ में शुरू की गई और १८७३ में करीब ७ लाख की लागत से पूरी हुई। इनके अतिरिक्त बड़े बड़े जहाजों को करने हुए सन् १८८० में जहाजों को मुश्किल पूर्ण तरीके से लाने के लिये बन्दर को पूर्ण करने के लिये हार्वर वॉट की स्थापना हुई। यही वॉट बन्दर के अन्दर सन् १८८८ में वॉट ट्रस्ट के रूप में बंदर बनाया। अपने समय में वॉट ने बड़े काम किये। इनके नियामकी और इन्जिनियर की बढ़ाया जिसमें टिड्डन क्लो नामक बन्दर के लिये स्थान बन गया। सन् १८८९ में मेरी वेदर पियर merewether pier बन्दर बंदर होता गया जहाँ एक जहाज एवं टुकड़ा रह सके। इसके पत्रानु २ हजार फिट लम्बा इमारत बन्दर बनाया और १६०० फीट लम्बा जेम्स वार्ड (James wharf) नामक बन्दर भी बना। यहाँ सब जिन बंदर बन्दर १० जहाज रह सकते हैं। इसके अतिरिक्त नावें बन्दर के लिये बन्दर के लिये का व्यवस्था स्थापित किया। आयतन स्कीम के लिये शिवायारी के लिये स्थापित किया। यहाँ ४ जहाज रह सके। बन्दर हार्वर जहाँ सब माल रखा जाता है यहाँ बन्दर के लिये बन्दर के लिये बन्दर बनाया।

इस समय जहाजों के आने के लिये बन्दर २५ फीट गहरे हैं जो कि सुन्दर मौसिम

आने पर बनाए गये हैं। इसके अतिरिक्त २ रास्ते और जो कि २८ फीट गहरे हैं, बनाए जा रहे हैं।

कर्त्तवी पोर्ट पर जहाजों की बंदी—

सन् १८४७, ४८ में इस बन्दर पर कुल २९१ देरी काफ़ थे। जिनका कुल वजन ३०५०९ टन था। सन् १९०३, ४ में दूसरे विदेशी बंदरों से यहाँ ३८४ काफ़ जिनमें १७४ हो स्टीम से चलते थे जिनका वजन ३०११०९ टन था। इसी साल ५१५ काफ़ यहाँ से बाहर के बंदरों पर भेजे गये।

भारत और बर्मा के पोर्टों से यहाँ १३११ आये। जो कि ५६०४३६ टन माल ले जा सके थे। इसी प्रकार भारत तथा बर्मा के पोर्टों पर यहाँ से ११७७ गये जो कि ३९२४९३ टन वजन के थे। इन सबका इन्विजाम यहाँ के पोर्ट ट्रस्ट के द्वारा होता है। इसकी आय सन् १९०३, ४ में करीब १९ लाख तथा खर्च करीब १३ लाख का था। इसके चार पाँच साल बाद तक की औसत आमदनी २१ लाख तथा खर्च १४३ लाख का था। यहाँ की जहाजी कम्पनियों में एास डर एलरमेन, विलसन, स्ट्रिच, हंसा, आस्ट्रियन लॉयड, मिटिरा इंडिया, और वाम्बे स्टीम नेविगेशन कम्पनियाँ हैं।

म्युनिसिपैलिटी—

इस शहर में म्युनिसिपैलिटी की स्थापना सन् १८५२ में हुई। इसकी आय बढ़ते २ सन् १९०१ में १२ लाख की हुई। इसके पश्चात् १९०३, ४ में १५ लाख की आमदनी तथा १४ लाख का खर्च हुआ। इसकी आमदनी के खास जरियों में से कस्टम से १० लाख (इसमें ६ लाख की पारस की हुई रकम शामिल नहीं है) पर और जमोन का टेक्स ५३०००) और विद्या २७०००) है। इसी प्रकार खर्च की रकमों में खास २ जैसे इन्विजाम में ७ लाख, पानी सप्लाई करने में ६२०००) कन्सर्वेन्सो में १५०००) विद्यालये में ४९०००), हास्पिटल और इवासानो में १५०००) पब्लिक वर्क्स में १६३०००) है।

कैम्पनमेंट का इन्विजाम भी कमेटी के ही हाथों में है। वहाँ की आमदनी तथा खर्च सन् १९०३, ४ में करीब १८५००) का था।

कर्त्तवी में सबसे अतिपूर्व बात है पानी की कमी। वहाँ के बहुत से कुएँ हो पानी पीने के काम में ही नहीं आते। हाँ, शिपार्स में कुछ कुएँ काम देने हैं। बंदर पर रहने वाले और शिप-मारी के लोग गाँदियों द्वारा पानी प्राप्त करते हैं जो कि द्वाबनी से लाया जाता है। बरफ़ बनाने के लिये छोटी गामक स्थान से रेल के द्वारा पानी आता है। इसी प्रकार की कमी को पूर्ण करने के लिये सन् १८८२ में गार्डियर गामक नदी में एक बड़ी नहर करीब १८ मील लम्बी काट कर वहाँ लाई गई है। इसमें करीब ५ लाख रुपये का खर्च हुआ। इस नहर के आगने से कर्त्तवी

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

उस समय आपके इस कार्य की मजाक करते थे, मगर आप उनकी कुछ भी परवाह न कर इंदु चित्त से अपना काम करते जाते थे। संवत् १९४५ में आपने इस खरीदी हुई जमीन में अपना ऑफिस, दुकान, गोशाला और रहने का मकान बनवाया।

### गोवर्द्धनदास मार्केट की स्थापना—

करौंची में गोवर्द्धनदास मार्केट की स्थापना इस फर्म के इतिहास में एक बड़ी महत्वपूर्ण घटना है। इस मार्केट के बनने के पूर्व कपड़े का बाजार अत्यन्त वृद्ध और गन्दी गलियों में लगा करमा था। इन गलियों में हमेशा अत्यन्त दुर्गन्ध आया करती थी, जिससे व्यापारियों को बहुत अधिक फट्ट होता था। सेठ साहब का ध्यान इस कष्ट की ओर आकर्षित हुआ और आपने एक सुव्यवस्थित मार्केट बनाने की कल्पना कपड़े के व्यापारियों के सम्मुख रखी। और उसके अनुसार आपने संवत् १९५० में मार्केट की नींव डाल दी।

यहाँ एक बात जिस देना आवश्यक है कि इतना बड़ा मार्केट तयार करने के लिए भी सेठजी ने किसी इंजिनियर से नक्शा नहीं बनवाया प्रत्युत खुद अपने ही बुद्धिबल से आपने एक साधारण मिस्त्री से नक्शा बनवा कर कार्य प्रारम्भ कर दिया। दो वर्ष के पश्चात् जब मार्केट बन कर तयार हुआ तो उसे देख कर अच्छे २ इन्जीनियरों ने आश्चर्य प्रकट किया। मार्केट जितना मजबूत बना जाना ही सुन्दर और सुविधाजनक भी है। इसी मार्केट की प्रतिद्वन्द्विता में यहाँ पर दो मार्केट और बने, और कुछ समय तक इनकी वजह से सेठ साहब को हानि भी उठाना पड़ी पर भागे जाकर समझौता हो गया और मार्केट का कार्य भली प्रकार चलने लगा।

### ड्रेग का प्रयोग—

इसी समय करौंची में एक घटना और हो गई जिसका उल्लेख करना यहाँ पर आवश्यक है और जिससे सेठजी के असीम धैर्य और उत्कट साहस का पता चलता है। संवत् १९५३ में करौंची में भीषण ड्रेग चल निकला। जिससे लोग करौंची छोड़ कर बेतहाशा भागने लगे। बाँरों और सारों और बीमारों का भयङ्कर दृश्य नजर आने लगा। ऐसे समय में आपको दुष्टाने के लिए बीचानेर से वार पर वार आने लगे। मगर इम विकट परिस्थिति में भी आपका चित्त विचलित न हुआ। इस भीषण समय में आपको परोपकार-परायणता का पूरा परिचय मिला। आर डाक्टरों के साथ में करौंची के मुहल्ले २ में जाकर बीमारों को देखने, उनको आधासन देवे और उनकी उचित सहायता करते थे। मार्केट के सब दुकानदार अपना २ माल असबाब छोड़ कर भाग गये थे, उनके माल असबाब की आपने रक्षा की।

इसी असीम सहिष्णुता, धैर्य और व्यापारिक दूरदर्शिता का परिणाम यह हुआ कि आपको करने उद्योग में असीम सफलता मिली, और आप अत्यन्त साधारण स्थिति से उठकर केवल





१००. व्यापारिक परिवर्तन ( १००० )  
 व्यापारिक परिवर्तन



१०१. व्यापारिक परिवर्तन ( १००० )  
 व्यापारिक परिवर्तन



१०२. व्यापारिक परिवर्तन ( १००० )



स्वावलम्ब्य से भारत के नामी २ व्यापारियों में गिने जाने लगे। आज भी करांची का यह सुप्रसिद्ध मार्केट आपकी कौर्ति और धैर्य का दैर्घ्यमान स्मारक है।

करांची की दुकान पर आपके साथ आपके बहनोई सेठ गोवर्द्धनदास जी मूंदड़ा काम करते थे। आपको विद्यमानता में सेठ साहब बड़े निश्चिन्त रहते थे। सन्वत् १९६२ में आपका स्वर्गवास हो गया, जिससे सेठ साहब को अत्यन्त दुःख हुआ। सेठ गोवर्द्धनदासजी मूंदड़ा के दो पुत्र हुए सेठ रामरतनजी और सेठ चांद्रतनजी। उनमें से सेठ रामरतनजी मूंदड़ा का स्वर्गवास संवत् १९७५ में हो गया। इस समय सेठ चांद्रतनजी इस फर्म में कार्य कर रहे हैं आपके परिचय आगे दिया जायगा।

श्रीयुत रामरतनजी मूंदड़ा बड़े ही हीनहार और परिभ्रमी थे। आपके कार्य से सेठ साहब बड़े निश्चिन्त रहते थे। आपकी अकाल मृत्यु से मोहता परिवार को अत्यन्त खेद हुआ। तथा काम अधिक नहीं बढ़ाया गया। आपका भी परिलक लाईफ बहुत बल्लुष्ट था। आप भी करांची और बीकानेर में बहुत लोकप्रिय थे। आपके इस समय एक पुत्र है जिनका नाम दुर्गादासजी है।

आपके परवान् आपके भाई चांद्रतनजी ने कार्य सम्हाला। इस समय आप वपरोक्त फर्म के सब काम भली प्रकार सम्हालते हैं। कपड़े के व्यापारियों में आप बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखे जाते हैं। गवर्नमेंट ने आपको करांची में आनरेरी मजिस्ट्रेट के पद से सम्मानित कर रक्खा है।

### सार्वजनिक कार्य—

अर्थ संचय के साथ ही साथ सेठ गोवर्द्धनदासजी ने धार्मिक और सार्वजनिक कार्यों में भी सुले हाथों से दान दिया। जैसे तो आपके सार्वजनिक कार्यों की लिस्ट देना एक प्रकार से असम्भव ही है क्यों कि आपके कई दान तो ऐसे होते थे जिनकी फानों कान पार भी नहीं होती थी फिर भी इनके कुछ प्रसिद्ध कार्यों का विवरण इस प्रकार है।

१—सन्वत् १९४८ में जब बीकानेर रेलवे लाइन बनी तब वहाँ के स्टेशन पर एक धर्मशाला की आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः आपने तथा सेठ लक्ष्मीचंदजी और सेठ जगन्नाथ जी ने राज्य से जमीन लेकर बर्तमान विशाल धर्मशाला बनवाई। यह धर्मशाला आज भी अपनी बसी वन्नत हाजत में मोहता परिवार की स्तुतियों को जीवित रख रही है। इस धर्मशाला में एक आयुर्वेदिक औषधालय तथा संस्कृत पाठशाला भी है। इसके बनाने में करीब १॥ लाख रुपया लगा है। तथा इसके रखरखाव को चलाने के लिये दो लाख का फण्ड अलग किया हुआ है।

२—संवत् १९६५ में आपके छोटे पुत्र श्रीयुत मूलचन्द्रजी का केवल १६ वर्ष की आयु में



देहावसान हो गया। यह एक ऐसी घटना थी जो सेठ साह्य के धिचं पर काफ़ी बुरा असर डाल सकती थी मगर इस कठिन समय में भी आपने असीम साहस और धैर्य से काम लिया और सारासार विवेक को न खोकर मूलचन्दजी के स्मारक में एक "मोहवा मूलचन्द विद्यालय" खुलवाया। इसके भवन-निर्माण में करीब ५० हजार रुपया लगा और इसके निर्वाह के लिए करोंची के एक मकान का ट्रस्ट बनवा दिया जिसका मूल्य अभी तीन लाख रुपया अनुमान किया जाता है।

१—सिन्ध में आँखों की धीमारी का प्रकोप अधिक रहता है और इसके निवारण के लिए उस समय कोई विशेष साधन न था। अतएव आपने ७०००० की लागत से करोंची में मोहवा मोतीलाल गोयर्दनदास नामक आँख का अस्पताल खुलवाया।

४—बीकानेर शहर के दक्षिणी कोण पर आपने करीब ४०००० की लागत से विस्तृत भूमि पर एक धर्मशाला तथा प्याऊ बनवाई।

इसके अतिरिक्त कई बार अकाल के टाड़म पर तथा और २ समयों पर लाखों रुपयों का दान किया। कहने का मतलब यह कि करोंची में शायद ही कोई ऐसा पब्लिक कार्य या पब्लिक संस्था होगी जिसमें आपने कुछ न कुछ दान न दिया हो। देहावसान के समय में आपने एक लाख बीस हजार रुपया अपनी धार्मिकियों को तथा करीब साठ हजार रुपया भिन्न २ रूपों में दान किया।

आपकी इन सब सेवाओं से प्रसन्न होकर गवर्नमेण्ट ने आपको "राय बहादुर" और ओ० बी० ई० की प्रतिष्ठित पदवियों से सम्मानित किया।

देहावसान—

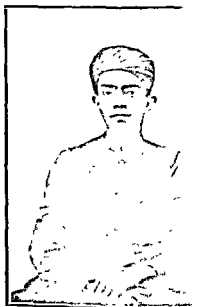
सन्वत् १९७५ के भाद्रपद मास से आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होने लगा जिससे आप करोंची छोड़ कर बीकानेर आ गये। आपकी इच्छा इलाज करवाने की न थी मगर सब लोगों के आमह से आपने इलाज करवाना स्वीकार किया, मगर इस रोग से आपको पूर्ण आरोग्य लाभ न हो सका और संवत् १९७६ की वैशाख सुदी सप्तमी को आपने उठते ही हरिद्वार चलने की आज्ञा दी। धनुषार सब लोग स्पेशल ट्रेन से हरिद्वार को रवाना हो गये। वहाँ पहुँच कर आपने अपनी इच्छानुसार गंगास्नान किया। जप-जाप करवाये और अपने सब मनोरथ पूर्ण कर वैशाख सुदी ११ को देहत्याग किया।

आपके स्वर्गवास होने के समाचार सुन कर करोंची और बीकानेर में शोक छा गया। आपके वियोगजनित दुःख में करोंची का मार्केट बन्द रक्खा गया। कई प्रसिद्ध पत्र पत्रिकाओं ने आपके लिए समवेदनासूचक एडिटोरियल नोट लिखे। तथा उनके कुटुम्बियों को देश विदेश से सैकड़ों सदानुभूतिसूचक तार व पत्र आये।





श्री० शम्भूदास दासगुप्त ( मोतीदास  
गोवर्द्धनदास ) कराची



श्री० महेश्वरी मोहनलाल ( मोतीदास  
गोवर्द्धनदास ) कराची



श्री० महेश्वरी दासगुप्त ( मोतीदास )



मतलब यह कि सेठ गोवर्द्धनदासजी का जीवन प्रारम्भ से अन्त तक उत्कृष्ट मानव-जीवन का एक सर्वोत्कृष्ट नमूना है। जिससे प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

सेठ गोवर्द्धनदासजी के तीन पुत्र हुए। (१) भीमान् सेठ रामगोपालजी मोहता (२) रा० ब० शिवरत्नजी मोहता (३) श्रीयुत मूलचन्द्रजी मोहता। इनमें से श्रीयुत मूलचन्द्रजी मोहता के असामयिक स्वर्गवास का विवेचन पहले किया जा चुका है। रोप दोनों भाताओं ने अपने सत्कार्यों से किस प्रकार अपने पूज्य पिताजी की स्मृति को उज्ज्वल किया यह आगे माद्म होगा।

### भीमान् रामगोपालजी मोहता

आप भीमान् सेठ गोवर्द्धनदासजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आपका जीवन बड़ा ही परोपकारपूर्ण रहा है। इस समय तो आप व्यापारिक कार्यों से रिटायर होकर सात्विक और ऋषितुल्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मगर इसके पूर्व आपका व्यापारिक जीवन भी अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है यद्यपि आपके समय में बीकानेर में अंग्रेजी की शिक्षा का प्रचार न था। फिर भी आपका अंग्रेजी ज्ञान बहुत उंचे दर्जे का है। आपने अपने पिताजी के स्थापित किये हुए व्यापार को बहुत तरकी दी। छोटी उम्र से ही आपने व्यापारिक कार्य में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था और अपने पिताजी के जीवनकाल ही में आपने व्यापार को बखूबी सन्हाल लिया था व्यापारिक बुद्धि आपकी बड़ी प्रखर थी। करीब २० वर्ष पूर्व आपने व्यापार साहित्य पर एक जल्दी और उपयोगी पुस्तक निकाली थी। आपने कर्ौची में मेसर्स हरमन मोहता कम्पनी में अपना साम्रा ढाला और आज तो इस कम्पनी के अधिकांश शेअर आप ही की फर्म के पास है। यह कम्पनी केवल कर्ौची ही में नहीं, प्रत्युत सारे उत्तर पश्चिमी भारत में अपने ढङ्ग की सभ से बड़ी है। इसका परिचय आगे दिया जायगा।

सेठ रामगोपालजी का जीवन न केवल व्यापारिक ही रहा प्रत्युत सार्वजनिक और समाज सुधार के कार्यों में भी आपने भारतवर्ष में एक उदार आदर्श उपस्थित कर दिया है। सामाजिक क्रान्ति के आप एकान्त पक्षपाती और सुधार के उपासक हैं। आध्यात्मिक जीवन भी आपका बड़ा उत्कृष्ट है। आप वेदान्तदर्शन के अच्छे विद्वान् हैं। हाल ही में "सात्विक जीवन" नामक एक उत्कृष्ट पुस्तक प्रकाशित कर आपने सुप्त में बौटी है।

### रायबहादुर सेठ शिवरत्नजी

आप राय बहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी के द्वितीय पुत्र हैं। आपका जन्म संवत् १९४५ की भावण शुद्धा ८ में हुआ। आपका भी व्यापारिक और सामाजिक जीवन बड़ा उत्कृष्ट है। कर्ौची में आप जितने लोकप्रिय हैं उतना व्यापारिक समाज में रायब ही कोई दूसरा व्यक्ति

होगा। अमीर और गरीब सब आपको हृदय से चाहते हैं खास कर यहाँ के हिन्दू-दितों के लिए तो आप जीवन-स्वरूप हैं आपने अपने घर में परदा-सिस्टम के समान भयङ्कर कुप्रथा को तोड़ कर मारवाड़ी समाज में एक अच्छा आदर्श उपस्थित किया है। आप करोंची के पीस गुड्स एसोसियेशन के प्रेसिडेण्ट, मारवाड़ी विद्यालय के प्रेसिडेण्ट, हिन्दी साहित्य भवन के प्रेसिडेण्ट तथा हिन्दू जिमखाना के प्रेसिडेण्ट हैं। मतलब यह कि करोंची के प्रत्येक सार्वजनिक कार्य में आपका कुछ न कुछ हाथ अवश्य रहता है। सन् १९२८ में गवर्नमेण्ट ने आपको राय बहा-दुर की उपाधि से सम्मानित किया। बीकानेर दरवार में भी आपका बहुत अच्छा सम्मान है। वहाँ की लेजिस्लेटिव एसेम्बली के आप नॉमिनेटड मेम्बर हैं। हाल ही में जोधपुर स्टेट से आपको अस्सी लाख रुपये का थिरिडग कण्ट्राक्ट मिला है। अभी तक शायद ही किसी भारतीय को इतना बड़ा कण्ट्राक्ट मिला होगा।

### कुँवर गिरधरलालजी

आप राय बहादुर सेठ शिवरतनजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। बड़े उत्साही और होनहार हैं। आप राजस्थान नवयुवक-मण्डल करोंची के प्रेसिडेण्ट हैं। आप भी व्यापार में भाग लेते हैं।

### सार्वजनिक कार्य

उपर जिन सार्वजनिक कार्यों का वर्णन किया गया है वे सब रा० ब० गोवर्द्धनदासजी के हाथों से किये हुए हैं। आपके पश्चात् सेठ रामगोपालजी ने तथा सेठ शिवरतनजी ने और भी लाखों रुपयों का दान कर अपनी असीम उदारता और दानवीरता का परिचय दिया है। आपके किये हुए दानों में से कुछ २ मुख्य २ कार्यों का परिचय इस प्रकार है।

१—हिन्दू अनाथालय करोंची—यह आश्रम करीब चार वर्ष पूर्व स्थापित किया गया। इसका ट्रस्ट २॥ लाख रुपये का है। इस ट्रस्ट से करोंची हिन्दू अनाथालय, बीकानेर का हिन्दू अनाथालय और वनिताश्रम ये तीन संस्थाएँ चलायी जाती हैं।

२—हिन्दू अनाथाश्रम बीकानेर—यह आश्रम भी अनाथ विद्यार्थियों को आश्रय और शिक्षा देने के लिए बनाया गया है। यह भी उपरोक्त ट्रस्ट फण्ड से चलता है। इसके अतिरिक्त हाल ही में आपने जोधपुर में एक अनाथालय खोलने के लिए एक लाख रुपये और प्रदान किया है।

३—हिन्दू वनिताश्रम बीकानेर—यह आश्रम निराश्रित और समाज-द्वारा प्रताड़ित स्त्रियों को आश्रय देने के लिए स्थापित किया गया है। इसकी एक शाखा करोंची में भी है।

४—हिन्दू जिमखाना—यहाँ की म्यूनिसिपैलिटी ने हिन्दू और मुसलमानों को जिमखाना बनाने के लिए बहुत समय पूर्व जमीन दी थी। बहुत दिनों तक द्रव्य के अभाव से जिमखाना



माहता पैलेस ( हवान्दर ) कराँची





नहीं वन सदा तब आपने ३५०००) देकर यह ज़िमखाना घनवाया। इस ज़िमखाने में सब प्रकार के स्पोर्ट्स की शिक्षा दी जाती है।

५—रामरतन गोवर्द्धनदास मूंदड़ा लायब्रेरी एण्ड हॉल—इस नाम से करीब १५००० की लागत से म्यूनिसिपैलिटी की ज़मीन पर एक लायब्रेरी और हॉल बनाया गया है।

६—मोहता मूलचन्द्र बोर्डिंग हाउस—ऊपर जिस मोहता मूलचन्द्र विद्यालय का विवेचन किया गया है। उसके साथ ही विद्यार्थियों के रहने के लिये यह हाउस बनाया गया है इसमें अभी करीब ७५ विद्यार्थी रहते हैं। जिनमें कई फीस देकर और कई बिना फीस रहते हैं।

इसके अतिरिक्त बाबू गिरधरलालजी के शुभ विवाह के उपलक्ष में आपकी ओर से १५१०००) का दान किया गया। जिसमें से ५१०००) लण्डन में शिवमन्दिर बनाने के लिए २५०००) हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए तथा शेष रकम और २ संस्थाओं को दी गई।

इसके अतिरिक्त और २ कार्यों की लिस्ट देना तो एक प्रकार से असम्भव ही है। मतलब यह कि प्रत्येक शुभ और अच्छे कार्य में आपकी ओर से हमेशा कुछ न कुछ जरूर दिया जाता है।

#### व्यापारिक परिषद

- |  |   |
|--|---|
| <p>१—मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास करांची<br/>( T. A. Marketwala )</p> | <p>यह फर्म बैंकर्स और लैण्ड लॉर्ड्स है। करांची का सुप्रसिद्ध गोवर्द्धनदास मार्केट तथा मोहता ट्रिनिटींग तथा और बहुत से बड़े २ मकानात इसके अण्डर में हैं। जिनसे किराये की प्रचुर आमदनी होती है।</p> |
| <p>२—मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल करांची (T. A. Badaseth)</p>        | <p>इस फर्म पर सब प्रकार के कपड़े का थोक व्यापार होता है।</p>  |
| <p>३—मेसर्स रामगोपाल शिवरतन करांची</p>                               | <p>इस फर्म पर प्रिण्टेड और रंगीन कपड़े का थोक व्यापार होता है।</p>  |
| <p>४—मेसर्स शिवरतन चांदरतन</p>                                       | <p>इस पर हॉट और फैनसी कपड़े का थोक व्यापार होता है।</p>   |
| <p>५—मेसर्स एलिगर मोहता एण्ड क० लि० (T. A. Moha)</p>                 | <p>यह फर्म जॉन रज़ेन एण्ड कम्पनी ग्लामगो की सोल एजण्ट तथा अन्य कई कम्पनियों के कपड़े विभाग की एजण्ट हैं। इस पर इन्सुरेन्स का काम भी होता है।</p>  |



भारतीय व्यापारियों का परिचय

- ६—मेसर्स इरमन मोहता एण्ड कं० लि० (T. A. Expsion) } इस फर्म के भी आधिकांश शोअर आप ही के पास हैं। यह फर्म इन्डोनिअर और शिप बिल्डर्स है। यह कई बड़ी २ कम्पनियों की सोल एजण्ट्स तथा एजण्ट है। इसकी प्रांचिस लाहौर और मेरठ में हैं।
- ७—दिई—मेसर्स गोबिंदचंदनराम रामगोपाल चण्डी चौह T.A.Mohatta } इस फर्म का यहाँ आफिस तथा दुकान दोनों ही हैं। यहाँ पर पीसगुड्स का बहुत बड़ा व्यापार होता है।
- बालगु—मेसर्स गोबिंदचंदनराम रामगोपाल (जनाएजर्स T. A. Tredgoods) } यहाँ भी पीसगुड्स का व्यापार होता है।
- ८—मेसर्स मदनगोपाल रामगोपाल २९ स्ट्राण्ड रोड } यह फर्म स्टिनर्स कम्पनी की बेनियन और सोलडिलर्स है। इसके अण्डर में तीन दुकानें हैं। सब पर रंगीन कपड़े का काम होता है। कलकत्ते का सुप्रसिद्ध गणेशमयन भी आपका ही है। मरिया में सीतानाला, कोहिनूर और इष्टनन्दी नामक आपकी तीन कल्लेरिज हैं जिसका कोयला इनका उत्तम है कि जोधपुर और बीकानेर रेलवे इस कोयले के मितते हुए दूसरा लेना पसन्द नहीं करती।

कोहानेर—मेसर्स मदनमुख्य मोदीलाल—इस फर्म पर बैंकिंग विजिनेम होना है।

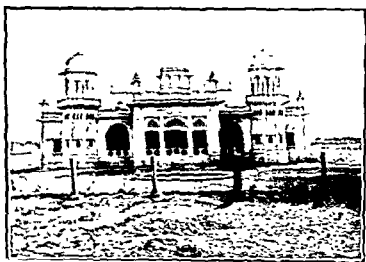
इसके अतिरिक्त कर्गंधी में मेसर्स रामगोपाल शिवरतन के नाम से यह स्टिनर्स कम्पनी की सिन्ध, पंजाब, दिप्पी और यू० पी० के लिए सोलडिलर्स है।

इस फर्म का कर्गंधी में डिपटन पर एक सुन्दर मोहता पैतेम करीब ५ लाख की लागत का बना हुआ है। कर्गंधी के दूरानीय स्थानों में यह भी एक है। इसका फोटो इस ग्रन्थ में दिया जा रहा है।

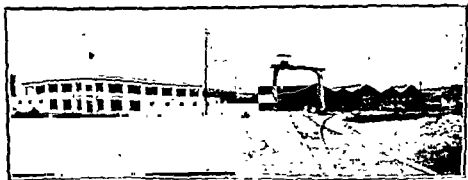
मेसर्स विरानदास फतेचन्द एण्ड सन्स

यह फर्म कर्गंधी में बहुत पुरानी है। कर्गंधी शहर जिस समय एक छोटे से गाँव के रूप में था, वही से इस फर्म के मालिक यहाँ पर बसे हुए हैं। सबसे पहले मेड फतेचन्द ने इस फर्म को यहाँ पर स्थापित किया। आपका विजिनेम कायरेक्ट चीन के साथ था। तथा बम्बई,

भारतीय व्यापारियों का परिचय :-  
( तीसरा भाग )



हिन्दू विमलाना बिदिग ( मोतीदाल गोवर्द्धनदास ) करांची



भक्तिम एण्ड वर्क शॉर हरमन एण्ड मोहना लिमिटेड करांची











डॉ. ए. डब्ल्यू. ब्रॉडबेंट (डब्ल्यू. ब्रॉडबेंट का पुत्र) का चित्र



डॉ. डब्ल्यू. ए. ब्रॉडबेंट (डब्ल्यू. ए. ब्रॉडबेंट का पुत्र) का चित्र



डॉ. ए. डब्ल्यू. ब्रॉडबेंट (डब्ल्यू. ब्रॉडबेंट का पुत्र) का चित्र



डॉ. ए. डब्ल्यू. ब्रॉडबेंट (डब्ल्यू. ब्रॉडबेंट का पुत्र) का चित्र

पंजाब और सिन्ध में आपकी करीब ४० ब्रॉन्चेस थीं। आपका स्वर्गवास करीब ४३ वर्ष पूर्व होगया। आपके पाँच पुत्र थे। उनके नाम क्रमशः श्रीयुत् होतचन्दजी, श्रीयुत् विशानदासजी, श्रीयुत् ठाडुरदासजी, श्रीयुत् रतनचन्दजी और श्रीयुत् रेवाचन्दजी हैं। इन पाँचों भाइयों के फर्म संघन १९५५ में अलग २ हो गये। इनमें से यह फर्म सेठ विशानदासजी का है। सेठ विशानदासजी का स्वर्गवास सन् १९२७ ई० में ५७ वर्ष की आयु में हो गया। आपके इस समय एक पुत्र है। जिनका नाम श्रीयुत् जमनादासजी है। आप सिन्धी-लुहाना ( सराई ) जाति के सज्जन हैं।

इस फर्म की ओर से दान और सार्वजनिक कार्य भी बहुत हुए हैं। आपकी ओर से करांची में फतेचन्द देवनदास खिलनानी हॉल बना हुआ है जो ए० ई० डी० नामक इन्जीनियरिंग कॉलेज को दे दिया गया है। इसके अतिरिक्त दयाराम जेठानन्द खिलनानी हॉल और लायब्रेरी रेयर रोड पर आपकी ओर से बनाई गई है। इसमें प्रो लाइब्रेरी और लेक्चर हॉल है। इसके अतिरिक्त गोड्डल में आपकी ओर से एक घर्मशाला तथा पब्लिक पार्क और कुआँ बना हुआ है। इसके सिवा जनाना अस्पताल बनाने के लिए सेठ फतेचन्दजी के नाम से पचवन हजार का एक ट्रस्ट फण्ड भी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करांची—मेसर्स विशानदास फतेचंद एन्ड सन्स मन्धई धाजार (T. A. Mourdhwaja)	}	इस पर खासकर कपड़े का बहुत बड़ा इम्पोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग विजिनेस भी बहुत अधिक होता है। यह फर्म करांची में बहुत बड़ी लैण्ड लॉर्ड्स है। कमीशन एजन्सी का भी यहाँ पर काम होता है।
---	---	---

### वैद्यराज महाराज पंडित मुंदरलालजी इच्छापुरन, वैद्यवाचस्पति

प्राचीन समय में नौशेरोषा बादशाह के समय श्रीमान् महाराज पण्डित गंगारामजी कौल राजवैद्य हुए थे। जिन्होंने महत्वपूर्ण आयुर्वेदीय चिकित्सा का अपूर्व ग्रन्थ वैद्यकसार संग्रह नामक रचा है। इसके पश्चात् जम्मु व काश्मीर नरेश श्रीमान् महाराज गुलाबसिंहजी के समय में प्रधान राजवैद्य श्रीमान् महाराज पण्डित सीतारामजी कौल हुए थे। तब से लेकर आज तक आपके पूर्वज सभी प्रशंसनीय लक्ष्मप्रतिष्ठ राजवैद्य हुए हैं। इस समय में भी आपके ज्येष्ठ भ्राताजी श्रीमान् महाराज पण्डित मधुसूदनजी नामा स्टेट के प्रधान राजवैद्य हैं। और श्रीमान् महाराज पण्डित दूनीचंद गोंव प्रागपुर जिला बांगडा में प्रसिद्ध वैद्यराज हैं।



आपके वृद्ध लिंग पूर्वज्ञान में तो काश्मीर निवासी थे, परन्तु कुछ समय से जिला बांगड़ा में प्रागपुर ग्राम के बामी हुए। आपके जन्म संवत् १९१५ विक्रमी में प्रागपुर ग्राम में हुआ है। आप इस समय करौंची नगर में मुसलिह रईम, लेन्डलॉर्ड और प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपने आयुर्वेद का बहुत ही प्रचार किया है। लगभग ५० पचास वर्ष तक चिकित्सा का कार्य बड़े अस्पताल के माय करौंची नगर में किया है जब कि करौंची की जनता देशी वैद्यक चिकित्सा तथा देशी वैद्य के नाम से पबराती थी और नाम मुनता भी पसन्द नहीं करती थी ऐसे समय में आयुर्वेदीय चिकित्सा का प्रचार करना यह आपके ही पुरुषार्थ है। आपके पुरुषार्थ से आयुर्वेदीय चिकित्सा की महत्ता जनता के हृदय पर अंकित हुई और जनता ने विश्वास किया कि हमारी प्राचीन चिकित्सा-पद्धति आयुर्वेदीय ही है। आपके पास राजा महाराजाओं के दिये हुए बहुत से पदार्थ हैं और गार्नमेंट के तरफ से भी लखनौटी के ऑफिसरों के दिये हुए बहुत से पदार्थ हैं।

आपने ग्रेज के समय में दैजे की चिकित्सा पोजेन्ज दे दे कर अन्य चिकित्सकों की समानता में आयुर्वेदीय पद्धति के अनुकूल की थी और आयुर्वेदीय चिकित्सा का डंका बजा दिया था। जिससे आयुर्वेदीय चिकित्सा का प्रभाव जनता पर ऐसा पड़ा कि विदेशी चिकित्सा-पद्धतिवालों ने भी कुछ बंट में प्रारंभ आयुर्वेदीय चिकित्सा की की। और शनैः शनैः आयुर्वेदीय चिकित्सा की उत्पत्ति निच प्रान्त में अच्छी प्रकार में हुई और आज दि आंग इण्डिया आयुर्वेदिक कान्फरेंस होने का औभास्य करौंची नगर की प्राप्ति हुआ है।

जनता के दरिद्रार्थ तथा आयुर्वेद से अत्यन्त प्रेम होने के कारण धर्मार्थ आयुर्वेदीय औषधालय शुरू कर में सोलने का निश्चय किया है जो कि ईश्वर की अमीम कृपा से यावत् लॉन्डनर्स ४० ५०० पौंच सो महत्कार के शर्त से चलाया जायगा। इस औषधालय का उद्घाटन और इण्डिया आयुर्वेदिक के कान्फरेंस अवसर पर ५-१-३० को बड़े समारोह में सब बेटों और शहर के प्रतिष्ठित लोगों को इच्छा कर के किया गया। इस औषधालय में बिना किसी कमीर के-आज के करीब १५० रोगी रोज औपचि पाने हैं। यह सख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आप दरिदर तथा अल्पव्यय उदार पुरुष हैं। आपने अपने जीवन में हजारों शरर का दान बहुत की संख्याओं को उद्यर्प दिया है। आपकी प्रारंभ में जिवना भी परिचय रिच कर कर कोड़ा ही है।

आपको बहुत सी लैडरने प्रारंभ करौंची में है। निनेमा के निच एक थियेटर हॉल को आपने बनवाया है जिसके दिग्गने की काफी आमदनी होती है

## कॉटन एण्ड ग्रेन मरचेंट्स

मेसर्स अर्जुन खीमजी एण्ड को०

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ अर्जुन खीमजी और देवजी खीमजी और उनके दो लड़के सेठ भवानजी अर्जुन और सेठ भागजी देवजी हैं। आप जैन धर्मावलम्बी वस्त्रा ज्ञोसवाल हैं। आपका रहना तेरा ( कच्छ ) में है। इस फर्म का हेड ऑफिस धम्बई में है। धम्बई में यह फर्म करीब ३५ वर्ष से स्थापित है। कराँची में इस फर्म को स्थापित हुए करीब तीन वर्ष हुए। इस दुकान का मैनेजमेण्ट श्रीयुव शाहमूलजी भाई भोगीलाल करते हैं। आप कराँची फर्म के एक्सपोर्ट डिपार्टमेण्ट के वर्किंग पार्टनर भी हैं।

इस फर्म के मालिक दान, धर्म और सार्वजनिक कामों में हमेशा दान देते रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

<p>धम्बई—मेसर्स अर्जुन खीमजी एण्ड को० आउट्रस रोडपोर्ट ( T. A. kalooladhu, chidan and )</p>	<p>इस फर्म पर रूई का जूता तथा वैंकिंग यिजिनेस होता है। यह फर्म विलायत तथा जापान को रूई का एक्सपोर्ट भी करती है।</p>
<p>कराँची—मेसर्स अर्जुन खीमजी कैम्पवैल स्ट्रीट ( T. A. chidanand )</p>	<p>इस फर्म पर रूई का एक्सपोर्ट और धार्मिक होता है।</p>

इसके अतिरिक्त कारंजा, धारवा, मोतीबाग, हुधली, अमलनेर, रामगॉव, मलकापुर इत्यादि स्थानों पर भी आपकी प्रान्सेस हैं। जहाँ पर रूई की खरीदी का काम होता है। सब स्थानों पर आपकी दुकानें बहुत पुरानी हैं। इसके अतिरिक्त काटोल ( C. P. ) में आपकी जीनिंग केन्टरी भी है।

### मेसर्स अञ्जूमल जगतराय

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान टंडोजाम (देदुवारा) में है। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुव अञ्जूमलजी हैं। इस फर्म को कराँची में स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसकी स्थापना यहाँ पर सेठ जगतरायजी ने की। आपका स्वर्गवास हो चुका है। इस फर्म के मालिक सेठ अञ्जूमलजी टंडोजाम में रहते हैं। कराँची फर्म का मैनेजमेण्ट नईबजरायजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस-टंडोजाम ( हैदराबाद ) मेसर्स अञ्जूमल जगतराय	}	यहाँ पर आपकी कॉटनजीन और प्रेस है। तथा रूई का व्यापार होता है।
कराँची-मेसर्स अञ्जूमल जगतराय पोरी गार्डेन ( T. A. Achhera ) हैदराबाद सिन्ध— मेसर्स अञ्जूमल जगतराय पुलेली ( T. A. Rajawir )		}

### दी कराँची कॉटन कम्पनी

इस फर्म की स्थापना सन् १९२९ में हुई। इसकी स्थापना श्रीयुत सेठ छोटालाल खेतसी ने की। आपका मूल निवास-स्थान सायका ( काठियावाड़ ) में है। आप जैन धर्मावलम्बी श्रीमाली वैश्यजाति के सज्जन हैं। इसके पहले आप करीब २५ वर्षों से रूई का व्यापार कर रहे हैं। पहले आप मेसर्स किलाचन्द देवचन्द की बम्बई की फर्म में पार्टनर थे। उसके बाद कराँची में मेसर्स लालजी नारायणजी की फर्म में पार्टनर हुए। सन् १९२८ तक आप इस फर्म में पार्टनर रहे। पश्चात् आपने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय प्रारम्भ किया।

श्रीयुत छोटालाल भाई का जीवन सार्वजनिक रूप में भी बहुत अच्छा रहा है। पहले आप कराँची इण्डियन मर्चेण्ट एसोसियेशन के ज्वाइण्ट सेक्रेटरी थे। अभी भी आप इण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन, वायर्स एण्ड शिपर्स एसोसियेशन तथा कराँची पांजरापोल के मेम्बर हैं। धार्मिक और सार्वजनिक कार्यों की ओर आपका बहुत लक्ष्य है। हर एक अच्छे कार्य में आप सदारता से दान देते रहते हैं।

सन् १९२६ में जो बङ्गौरा में भीषण प्लग हुआ था उसमें आपने कराँची से बड़ा भारी चन्दा करवा कर भिजवाया था।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

दी कराँची कॉटन कम्पनी साराय रोड ( T. A. stock )	}	इस फर्म पर ग्रेन और कॉटन का व्यापार तथा कर्माशन एजेन्सी का काम होता है। यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट भी करती है।

मेमर्स किरानमसाद एण्ड कम्पनी

यह फर्म बराँची में सन् १९०५ में स्थापित हुई। इस फर्म का हेड ऑफिस अम्बाला में है। यह एक लिमिटेड कम्पनी है। इस फर्म के मैनेजिंग टायरेक्टर लाला किरानमसादजी हैं। तथा इसकी बराँची फर्म का मैनेजमेण्ट आपके भाई निरंजनप्रसादजी करते हैं। भाव लोगों का मूल निवेश-रवान अम्बाला है।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

- |  |   |
|--|---|
| अम्बाला—मेमर्स किरानमसाद एण्ड कम्पनी लि०<br>T. A. Nitapha    | } यहाँ पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है। |
| बम्बई—किरानमसाद एण्ड कम्पनी कालबादेबी<br>T. A. Nitapha       |   |
| बराँची—मेमर्स किरानमसाद कम्पनी लोरो-<br>गार्टन T. A. Nitapha |   |

मेमर्स किरानचन्द सूटानन्द

इस फर्म का विवरण परिषय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ ६९ पर विस्तार दिया गया है। बराँची में इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

बराँची—मेमर्स किरानचन्द सूटानन्द बम्बई बाजार (T. A. Morankut) —यहाँ पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेमर्स रवीशर्मा विमगाद एण्ड सो०

इस कम्पनी का हेड ऑफिस बंगलूरु विभिन्न हाउसिंग सोसायटियों में है। यहाँ पर सन् १८८७ में स्थापित हुई। इसके चार्ल्स मूरुक्की और जेम्स, बच्चे और जेम्स, जेम्स एल एम्स, रॉबर्ट जेम्स, एल्ले-किरान एम्स, किरानचन्द और एल्ले-जम्स हैं। बराँची में यह फर्म बम्बई का व्यापार और एजन्सी का काम है।

### मेसर्स म्यूचुअल ट्रेडिंग कम्पनी

इस कम्पनी का विस्तृत परिचय ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १८८-१८९ पर दिया गया है। इसका कारोबारी का परिचय इस प्रकार है—

कारोबारी—मेसर्स म्यूचुअल ट्रेडिंग कम्पनी बम्बई वाजार ( T A Vagh )—यहाँ एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट तथा कमीशन का काम होता है।

### मेसर्स गिरधारीदास जेठानन्द

इस कम्पनी का विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १८७-१८८ में दिया गया है। कारोबारी का परिचय इस प्रकार है—

कारोबारी—मेसर्स गिरधारीदासजी जेठानन्द बम्बई वाजार ( T A Atmarup )—यहाँ में अनाज, घाण्ट और काँची का एक्सपोर्ट होता है।

### मेसर्स गोकुलदास डोसास

इस कम्पनी के मालिक कारोबारी निवासी लुधाना गुरुवासी जाति के हैं। इस कम्पनी का सेठ गोकुलदासजी ने स्थापित किया। इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३६ पर चित्र सहित दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ मन्मथदास जी हैं।

कारोबारी—मेसर्स गोकुलदास डोसास कम्पनी ( L A Doss )—यहाँ पर एक्सपोर्ट इम्पोर्ट का व्यवसाय और कमीशन कारोबारी का काम होता है।

### मेसर्स चाण्डूलाल बलीराम मुर्वा

इस प्रतिष्ठित कम्पनी के मालिकों का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग में पृष्ठ १९८ पर दिया गया है। कारोबारी का परिचय इस प्रकार है—

कारोबारी—मेसर्स चाण्डूलाल बलीराम ( L A Bhaleraam )—यहाँ इन्डियन रु. ड. गन्ना चीनी, सोना तथा कमीशन का काम होता है।

### मेसर्स चैचेरी एण्ड टाकरसी लिमिटेड

यह एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी है। इसके मैनेजिंग डायरेक्टर सेठ टाकरसी हीरजी और चैचेरी गैरिदत्त चैचेरी हैं। इस कम्पनी का इण्डियन हेड ऑफिस बम्बई तथा कारेन टैंड



भारतीय व्यापारियों का परिचय  
(तीसरा भाग)



श्री. भुवनेश्वर शर्मा (भुवनेश्वर शर्मा एण्ड कंपनी) इलाहाबाद रायसाहब मोतीलालजी रानीवाले (चन्द्रलाल मोतीलाल) इलाहाबाद



श्री. रामचन्द्र शर्मा (शर्मा एण्ड कंपनी) इलाहाबाद श्री. सुन्दरलालजी शर्मा (सुन्दरलाल मोतीलाल) इलाहाबाद

ऑफिस पेरिस में है। यह फर्म बम्बई में करौची ५, ६ साल से स्थापित है। करौची में इसका शाख सन् १९२६ में खुला है। करौची में इस फर्म का मैनेजमेण्ट मि० बी० आर० वल्लभ करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

बम्बई—मेसर्स चैचेटी एण्ड ठाकरसी लिमिटेड पेटिटबिल्डिंग एलफिन्स्टन सर्कल ( T. A. Chacaty )	}	यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट करती है।
पेरिस—मेसर्स चैचेटीफ्रेञ्चर्स		यहाँ पर यह फर्म कॉटन का इण्डिया से इम्पोर्ट करती है।
करौची—मेसर्स चैचेटी एण्ड ठाकरसी लि० ( T. A Chacaty )	}	यहाँ पर भी यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट करती है।
न्यूयार्क—मेसर्स रानीचैचेटी		यहाँ पर भी यह फर्म कॉटन, ऊल और इण्डि- यन मटेरियल्स का काम करती है।

### मेसर्स रायवहादुर चम्पालाल मोतीलाल

इस फर्म के मालिक व्यावर के मूलनिवासी हैं। आप अमवाज जाति के जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस समय इस फर्म के मालिक श्रीमान् रायवहादुर चम्पालालजी तथा उनके पुत्र रायसाहब मोतीलालजी तथा अन्य हैं। आपका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग में दिया गया है।

करौची फर्म का मैनेजमेण्ट श्रीयुत इन्द्रलालजी काला जयपुर निवासी करते हैं। आप बड़े सज्जन और योग्य व्यक्ति हैं। करौची के व्यापारिक समाज में आपका अच्छा प्रभाव है।

करौची में इस फर्म पर रुई, गद्दा का व्यापार तथा सय प्रकार की कमीरान एजन्सी का काम होता है। यह फर्म विलायत को रुई का एक्सपोर्ट भी करती है। (T.A. Raniwala) इसका हेड ऑफिस व्यावर में है।



### मेसर्स लाजा जसवन्तराय एण्ड सन्स

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाजा जसवन्तरायजी गूडामणि एम. ए. हैं। आप अपना ज्ञाति के सन्तान हैं। आपका मूल निवास-स्थान लुधियाना (पंजाब) है। करांची में यह फर्म १९११ से स्थापित है। पहले इस पर मेसर्स जसवन्तराय एण्ड कम्पनी लिमिटेड नाम पड़ता था। १९१८ से यह फर्म मेसर्स जसवन्तराय एण्ड सन्स के नाम से काम कर रही है। पहले १९१२ से १९२८ तक बम्बई में भी इस फर्म का ऑफिस था।

इस फर्म के प्रोप्राइटर लाजा जसवन्तरायजी गूडामणि एम. ए. करांची इण्डियन मर्चेंट्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट हैं। करांची के रुई के व्यापारियों में आपका स्थान बहुत ऊँचा है। सार्वजनिक कार्यों में आपकी रुचि और दान वीरता बहुत प्रसिद्ध है। आपकी ओर से करांची में १० लाखपत्राय टां० ए० १००० टाईरहून नामक एक बहुत अच्छा टाई क्लब बन रहा है। इसमें आपने ५००००) नगद और २४०००) की जमीन विन्डिंग के लिए प्रदान की है इसके चेयरमन भी आप ही हैं। इसके अतिरिक्त आपने अपनी स्वर्गीय धर्म-पत्नी के स्मारक में मुशीलामयन नामक ४२ हजार की लागत का एक मन्दिर बनाया है। इसमें आपने समाज मन्दिर और प्राथमरी स्कूल हैं। इसके अतिरिक्त आप करांची यूनिवर्सिटी स्कूल बोर्ड के मेम्बर हैं। करांची की रुई की मण्डी में सुधार करने का प्रथम श्रेय आपको ही है। इसके अतिरिक्त स्वामी श्रद्धानन्द ट्रस्ट एण्ड के आप ट्रस्टी भी हैं। आप स्वदेशभक्त लाजा लालपत्राय के पतिष्ठ प्रेमियों में से एक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

करांची—मेसर्स जसवन्तराय एण्ड सन्स खोरी-गार्डन (T. A. Famous) Phone 171	} इस फर्म पर रुई का बहुत बड़ा व्यापार तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है। करांची के रुई के व्यापारियों में यह फर्म बहुत बड़ी है।
--	---

### मेसर्स जैरामदास नाऊमल

इस फर्म के मालिक मूल निवासी करांची डिस्ट्रीक्ट ही के हैं। आप सिन्धो-लुहाना (भाईबन्ध) जाति के हैं। इस फर्म को करांची में स्थापित हुए करीब २० साल हुए। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुन् जैरामदासजी हैं। आप भीयुन् नाऊमलजी के पुत्र हैं। इस फर्म की स्थापना भीयुन् जैरामदासजी ने ही की।

इस फर्म के मालिकों की सार्वजनिक कार्यों की तरफ भी अच्छा लक्ष्य है। राजनीति तथा सामाजिक सभी कार्यों में आपकी ओर से सहायता दी जाती है।





श्री ज्योतिराजराज नारायण काशी



श्री कल्याणदास वरनमल (श्रीनेत्र ज्योतिराजराज नारायण) काशी



श्री कल्याणदास श्रीनंदन (श्रीनेत्र ज्योतिराजराज नारायण) काशी



श्री हनुमंतराजराज वरनमल (श्रीनेत्र ज्योतिराजराज नारायण) काशी

इसके अतिरिक्त डोकरी ( लरिकाणा ) न्यमक स्थान में आपका राईस मिल है ।

इसका मैनेजमेण्ट सेठ सामलदास रजूमल सेठ त्रियालदास बरनमल और ईसरदास बरनमल करते हैं । आप तीनों ही सञ्जन राजनैतिक और समाज सुधार के कार्यों में बहुत भाग लेते हैं । सेठ ईसरदासजी सामाजिक सुधार के बहुत बड़े कार्यकर्ता हैं ।

यह फर्म इण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन और करांची जॉइन कॉटन कमेटी के बोर्ड के मेम्बर है ।

भोयुत ईसरदास भाई करांची न्युनिसीपैलिटी के मेम्बर और सिन्ध प्राविन्शियल कांग्रेस कमेटी के मेम्बर तथा करांची में १९३१ में होनेवाली कांग्रेस के ट्रेन्सरर हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस करांची—मेसर्स जैराम दास नाऊमल नई घाल ( T. A. just )	}	इस फर्म पर रुई, गल्ला, विहलन का व्यापार और फमीरान एजन्सी का काम होता है । यह फर्म शिवाजी ग्राम दाल एण्ड फ्लारमिल की प्रोप्राइटर है ।
--	---	--

### मेसर्स जेटादेवजी एण्ड कम्पनी

इस फर्म का हेड ऑफिस बम्बई में है । इसके मालिक भोयुत जेटाभाई देवजी, गोकलदास देवजी, हरामीदास देवजी, नारायणदास जेटाभाई, भगवानदास जेटाभाई हैं । आपका विलुप्त परिचय इस ग्रन्थ के पहले भाग में बम्बई विभाग में दिया गया है ।

करांची में यह फर्म सन् १९१२ से स्थापित है । इसका मैनेजमेण्ट भोयुत लघामाई चट्टवजी, तथा जीवनदाम लघामाई करते हैं । आप इस फर्म में मैनेजिंग पार्टनर हैं । आपका मूल निवास-स्थान वेङ्ग ( जामनगर ) में है । यह फर्म करांची इण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन की मेम्बर है । सेठ लघामाई पहले इण्डियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन के बार्स प्रेसिडेण्ट थे ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस बम्बई—मेसर्स जेटादेवजी माण्डवी बम्बई	}	इस फर्म का परिचय पहले भाग में दिया गया है ।
करांची—मेसर्स जेटाभाई देवजी कैंपेयैज्जरीट ( T. A. Fortify gedeo )	}	इस फर्म पर रुई, गल्ला, विहलन का फमीरान एजन्सी का काम होता है । यह फर्म कॉटन का एक्सपोर्ट भी करती है ।

... ..

### समय-व्यवस्था-संबंधी

इस कठोर वास्तविकता का बोध ... ..

... ..

... ..

- (1) ... ..
- (2) ... ..
- (3) ... ..

... ..

(I. A. ... ..)

इसके अलावा ... ..

### ... ..

... ..

करांची में इस फर्म का मैनेजमेण्ट श्रीयुक्त भगवानदासजी केडिया और श्रीयुक्त कन्हैया-लालजी गुहालेवाला करते हैं। इनमें से श्रीयुक्त भगवानदासजी का मूल निवास-स्थान रेवाड़ी और श्रीयुक्त कन्हैयालालजी का मूल निवास-स्थान मुकुन्दगढ़ है। आप दोनों घड़े योग्य और सज्जन पुरुष हैं।

इस समय यह फर्म वर्मा ऑइल कम्पनी की घेनियन और शॉवॉलेन् कम्पनी के पास गुड्स डिपार्टमेण्ट की ग्यारण्टीड घेनियन्स है। इसका एक ऑफिस वर्मा ऑइल कम्पनी के ऑफिस में तथा एक ऑफिस मेसर्स शॉवॉलेन्स कम्पनी के ऑफिस में है तथा इसको दुकान बैलेस स्ट्रीट पर अपने निज के मकान में है। इसका कार का पता (seth Poddar) है। इसके अतिरिक्त इस फर्म पर बैडिंग मेन, शॉट्स, बॉटन का व्यापार तथा सन प्रकार की कमी-शन एजेन्सी का काम होता है। यह फर्म इंडियन मर्चेण्ट्स एसोसिएशन और पायर्स और शिपर्स एसोसिएशन की मेश्बर है। करांची के अत्यन्त प्रतिष्ठित और नामी व्यापारियों में इस फर्म का बहुत ऊँचा स्थान है।

### मेसर्स तुलसीदास मेघराज

इस फर्म का विस्तृत परिषय इस ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ ३११ पर दिया गया है। करांची का परिषय इस प्रकार है।

करांची—मेसर्स तुलसीदास मेघराज खोरी गार्डन—T. A. Sabberwal—घरों पर शम्बर, मन्ने, बैडिंग और कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

### मेसर्स तुलस्थान कम्पनी लिमिटेड

इस कम्पनी के मालिक मेसर्स सन्तोषियन लुहारमज ही हैं। करांची में यह कार्यालय वर्षों से स्थापित है। इस फर्म का मैनेजमेण्ट एच. कान्तलाल करते हैं। करांची में यह कम्पनी बॉटन का एक्सपोर्ट करती है। इस फर्म का हेड ऑफिस भी मेसर्स तुलस्थान कम्पनी के नाम से है। घरां पर यह कम्पनी बॉटन, मन्ने और रॉस गुड्स का एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट और डिजि-नेम करती है। करांची में इसका कार का पता घाँसिक है। बम्बई में इसका कार का पता (T. A. Coltrud) है। इस कम्पनी की काकोस, इम्बा (जावन) तथा बोरी (जावन) में भी हैं।

### मेसर्स देऊमल ईसरदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान शिकारपुर का है। आप चुगशराक जाति के निम्नी सज्जन हैं। इस फर्म को करांची में स्थापित हुए ६ वर्ष हुए। इस फर्म का हेड आफिस शिकारपुर में है। यहाँ पर यह फर्म करीब ८० या १०० वर्ष से स्थापित है। इस फर्म की स्थापना ईसरदासजी के पुत्र सेठ गौरीमलजी और देऊमलजी के पुत्र सेठ जेठानन्दजी तथा ईसरदासजी के पुत्र सेठ निहचलदास ने की। इस समय इस फर्म के मैनेजिंग प्रोप्राइटर श्रीयुत सेठ निहचलदास दीपचन्द हैं।

इस फर्म के मालिकों की दान, धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर बहुत रुचि रही है। बहुत से बड़े धार्मिक कार्य इस फर्म के मालिकों ने किये हैं। यहाँ तक कि शिकारपुर में भीमसेठ गौरीमलजी धर्मोत्सव कहे जाते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—शिकारपुर  
मेसर्स देऊमल ईसरदास  
T. A. Jerimal

इस फर्म पर खास व्यापार ऊन और सूत्रे मेवे का है। अफगानिस्तान से यह ऊन और सूत्रे मेवे का इम्पोर्ट करती है। इसके अतिरिक्त बैङ्किंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

२—शिकारपुर  
मेसर्स गौरीमल धर्मदास

यह फर्म गल्ले का बहुत बड़ा व्यापार तथा सब तरह की कमीशन एजन्सी का काम करती है। इसी फर्म के अण्डर में लारकाना (सिंध) में भी एक शाखा है। वहाँ यह फर्म चावल का व्यापार करती है।

३. सहर—  
मेसर्स गौरीमल लक्ष्मणत  
(T. A. Indigo)

यह फर्म मेसर्स फारवस एण्ड को० की ऊल डिपार्टमेण्ट की ग्यारण्टेड प्रोकर है। तथा सैण्डर्ट आइल कम्पनी की भी सिन्ध के लिए ग्यारण्टेड प्रोकर है। इसके अतिरिक्त उन का व्यापार बहुत बड़े स्केल पर यह फर्म करती है। इस फर्म पर पहले नील का बहुत बड़ा व्यापार होता था।

४. करांची—  
मेसर्स देऊमल ईसरदास  
प्रोप्राइटर  
(T. A. Colgrain)

यहाँ पर यह रुई, गहला रॉइस का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी काम करती है। इस दुकान की मैनेजरी माई टीलुमल पोकरदास और श्रीयुत शिवदास रोमचन्द करते हैं। आप बड़े शिक्षित और योग्य सज्जन हैं।

५. मुलतान—  
मेसर्स गौरीमल जेठानन्द  
( T. A. Tishnur )

यह फर्म फारवस कैम्ब्रेल कम्पनी के उल डिपार्ट-  
मेंट की मुलतान जिला और फ्राण्टियर के लिए  
प्यारपेटेड मोकर है। इसके अतिरिक्त मेन,  
कॉल, शीट्स का व्यापार और कमीशन एजन्सी  
का काम होता है।

६. लायलपुर—  
मेसर्स गौरीमल जेठानन्द

यहाँ पर मेन, कॉटन, शीट्स और कमीशन एजन्सी  
का काम होता है।

### मेसर्स धाड़ीराम जिन्दाराम

इस फर्म की स्थापना करांची में सन् १९१८ में हुई। शुरु २ में इस फर्म पर मेसर्स  
विरामदास धाड़ीराम नाम पड़ता था। सन् १९२२ से इस फर्म का नाम मेसर्स धाड़ीराम  
जिन्दाराम पड़ने लगा। यहाँ पर यह फर्म श्रीयुत सेठ निहालचंदजी ने स्थापित की। आप श्रीराम  
सेठ धाड़ीरामजी के पुत्र हैं। आप लोग खत्री समाज के सद्गत्त सज्जन हैं। आप लोगों का  
मूल निवास-स्थान मग्याना ( जद्ग ) में है। श्रीयुत धाड़ीरामजी का स्वर्गवास सन् १९१४ में  
हो चुका है। श्रीयुत धाड़ीरामजी के चार पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीयुत सुरावीरामजी, श्रीयुत  
निहालचन्दजी, श्रीयुत चमनलालजी और श्रीयुत कारमीरीलालजी हैं। इस फर्म में सेठ जिन्दाराम  
जी का साम्रा है। आप भी मग्याना के रहनेवाले खत्री सज्जन हैं। इनके दो पुत्र राम-  
दियामलजी और श्रीयुत जगतरामजी हैं। श्रीयुत जगतरामजी करांची फर्म पर रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषप इस प्रकार है—

- |   |   |   |
|---|---|---|
| १-हेड ऑफिस-मग्याना ( पंजाब )<br>मेसर्स धाड़ीराम सुरावीराम                 | } | यहाँ पर बैंकिंग विजिनेस और जर्मीदारी का काम<br>होता है। |
| २-जंगमण्डी-मेसर्स धाड़ीराम राम-<br>दियामल                                 |   | इस फर्म पर सब तरह की कमीशन एजन्सी का<br>होता है।        |
| ३-गोजरामण्डी-(लायलपुर)-मेसर्स<br>जिन्दाराम सुरावीराम                      | } | यहाँ पर भी कमीशन एजन्सी का काम होता है।                 |
| ४-दोषा टेकसिंग-(लायलपुर)-मेसर्स<br>धाड़ीराम जिन्दाराम<br>( T. A. Chaman ) |   | यहाँ पर भी कमीशन एजन्सी का काम होता है।                 |



५-करोंची—मेसर्स धाड़ीराम जिन्दा-  
राम बन्दररोड़  
( T. A. Deshbandhu

} इस फर्म पर रुई, गट्टा, तिइजन, शकर का व्यापार  
और कमीशन एजन्सी का काम होता है। यह  
फर्म शकर का इम्पोर्ट करती है।

### मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला दीवानचन्दजी है। करोंची में इस फर्म की स्थापना लाला दीवानचन्दजी ने की। इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई पोर्शन में दिया गया है।

करोंची फर्म के मैनेजिंग प्रोप्राइटर श्रीयुत लाला रूपलालजी हैं। आपका मूल निवास-स्थान सरगोधा में है। आप इण्डियन मर्चेन्ट्स एसोसिएशन की तरफ से म्यूनिसिपैलिटी में रिप्रेजेंटेटिव रह चुके हैं। और इसी संस्था के आप बहुत समय तक ऑनरेरी सेक्रेटरी भी रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त आप कितने ही समय तक करोंची आर्य समाज के प्रेसिडेण्ट रहे। इस फर्म की तरफ से करोंची में धनपतमल पुत्री पाठशाला नामक एक कन्या पाठशाला चल रही है। इसके चेअरमैन लाला रूपलालजी हैं।

मेसर्स धनपतमल  
दीवानचन्द  
T. A. Dhanpat

} करोंची में इस फर्म पर रुई, गल्ला, विलहन, कपड़ा  
और शकर का व्यापार तथा कमीशन एजन्सी  
का काम होता है।

लायतपुर  
मेसर्स धनपतमल दीवानचन्द  
T. A. Dhanpat

} इस फर्म का यहाँ पर हेड ऑफिस है तथा वेंचिंग  
और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

लायतपुर—  
धनपतमल दीवानचन्द

} यह फर्म फ्लोअर मिल्स एण्ड आईस फैक्टरी ऑर्गर्स  
और आइल एक्सपोर्टर्स है।

मिदाचन्द ( मुन्वान )—धनपतमल  
दीवानचन्द

} यहाँ इस फर्म की कॉटन जॉनिंग फैक्टरी एण्ड प्रेसिंग  
फैक्टरी चल रही है।

माण्ट गौमरी—मेसर्स धनपतमल  
दीवानचन्द  
T. A. Dhanpat

} यहाँ पर भी आपकी कॉटन जॉनिंग और प्रेसिंग है।

गोदइवदा ( किरौजपुर )  
मेसर्स धनपतमज्ञ दीवानचन्द

} यहाँ पर भी आपकी जीनिंग एण्ड प्रेसिंग पैक्टरी  
और ऑइल एक्स्प्लोर्स चल रहे हैं ।

### मेसर्स बच्छराम एण्ड कम्पनी लिमिटेड

यह एक लिमिटेड फर्म है । यह फर्म १० लाख की पेइअप केपिटल से स्थापित की गई है । इसके डायरेक्टर्स भीयुत सेठ जमनालालजी बजाज, भीयुत रामेश्वरदासजी विडला, भीयुत पालीरामजी मुमुनुवाला, भीयुत केशवदेवजी नेवटिया, सेठ पुरुषोत्तमदास जीवनदास, भीयुत मधुरादास धामजी, भीयुत नारायणलालजी पिची तथा भीयुत कन्हैयालालजी भाकोला वाले हैं । इसके प्रेसिडेण्ट भीयुत जमनालालजी बजाज तथा मैनेजिंग डायरेक्टर भीयुत केशवदेवजी नेवटिया हैं ।

इस नाम से यह फर्म सन् १९२७ में स्थापित हुई । इसका हेड ऑफिस बम्बई में है । कर्गोची की ग्रॉस का मैनेजमेंट भीयुत सेठ लालजी मेहरोत्रा करते हैं । आपका मूल निवास स्थान जौनपुर ( यू० पी० ) का है । आप यी० ए० एल-एल बी० हैं । पहले आप प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र "इण्डियन ट्रेड" के एडिटोरियल स्टॉक में रहे थे । आप चार महीने तक हस्त लिखित "इंडियन ट्रेड" निहालते रहे । पहले आप देश पूज्य पं० मोतीलालजी नेहरू के प्रायवेट सेक्रेटरी रहे हैं । सन् १९२२ में जो सिविल डिप्लोमा इन बिजनेस कमेटी घैठी थी उसके आप सेक्रेटरी थे । सन् १९२३ से आपने व्यापारिक लाइन में प्रवेश किया । सन् १९२८ में आप बच्छराज कम्पनी के मैनेजर नियुक्त हुए । मतलब यह कि आपका जीवन बड़ा देश भक्ति पूर्ण और उज्वल रहा है । यह फर्म इंडियन मर्चेंट्स एसोसियेशन तथा वायर्स एण्ड शिपर्स एसोसियेशन की मॅम्बर हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बम्बई—मेसर्स बच्छराज एण्ड कम्पनी  
३९५ कालवादेवी रोड  
( T. A. Shree )

} यहाँ पर रुई का बड़े स्केलपर व्यापार तथा  
कमीशन एजन्सी का काम होता है । रुई के केन्द्रों  
से यह फर्म खरीदी करती है ।

कॉपी—मेसर्स बच्छराज एण्ड  
कॉ० सराय रोड  
( T. A. Bachharaj )

} यहाँ पर कौटन और प्रेस का व्यापार तथा  
कमीशन एजन्सी का काम होता है । यह फर्म काटन  
और प्रेस का एक्स्पॉर्ट भी करती है ।

कर्वा—मेसर्स बच्छराज कंपनी } यहाँ पर भी रूई का व्यापार होता है ।

### मेसर्स बसन्तलाल गोरखराम

इस फर्म का हेड ऑफिस भारवाड़ी बाजार बम्बई में है । जहाँ तार का पता "सेर सरिया" है । इसका विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ ९८ पर दिया गया है । कर्वाची फर्म का परिचय इस प्रकार है—

कर्वाची—मेसर्स बसन्तलाल गोरखराम सराय रोड-यहाँ पर बैंकिङ तथा कमीशन एजेन्सी का काम होता है ।

### मेसर्स बसन्तलाल रामकुमार

यह फर्म बम्बई के मेसर्स सनेहीराम जुहारमल और मेसर्स बसन्तलाल गोरखराम के सामंती है । इन दोनों ही के मालिकों का मूल निवास-स्थान चिड़ावा (जयपुर) में है । इन दोनों फर्मों का परिचय इस ग्रन्थ के बम्बई विभाग के रूई के व्यापारियों में दिया गया है ।

कर्वाची में इस फर्म को स्थापित हुए करीब ४ वर्ष हुए । इस फर्म का मैनेजमेंट श्रीयुत छोटालालजी मुंभुनुवाला करते हैं ।

कर्वाची में यह फर्म रूई, गन्ना, तिलहन का व्यापार और सब तरह की कमीशन एजेन्सी का काम करती है । ( T. A. Sekhasaria )

### मेसर्स रायबहादुर ब्रजलाल जगन्नाथ

इस फर्म के मालिक श्रीयुत रायबहादुर ब्रजलालजी मूल निवासी जुगरांव (छुधियाना के) हैं । तथा श्रीयुत जगन्नाथजी सज्जन (जालन्धर जिले) के रहने वाले हैं आप दोनों सज्जन स्वामी जाति के हैं । यह फर्म कर्वाची में सन् १९२३ से स्थापित है । आप लोगों ने सब से पहले सन् १९२० में कानपुर में शर्करा का काम प्रारम्भ किया था । उसके पश्चात् आपने कर्वाची में रूपना काम प्रारम्भ किया । आप दोनों ही सज्जन बड़े योग्य और सज्जन हैं । सन् १९२० में श्रीयुत ब्रजलालजी को गवर्नमेण्ट ने रायबहादुर की पदवी से सम्मानित किया ।

श्रीयुत रायबहादुर ब्रजलालजी छुधियाना जिले के बड़े प्रतिष्ठित और प्रभावशाली पुरुष

हैं। व्यापारिक प्रभाव के अतिरिक्त गवर्नमेण्ट तथा पब्लिक में भी आपका बहुत प्रभाव है। आपकी उम्र इस समय ४० साल की है।

श्रीयुक्त जगन्नाथजी श्रीमान् रायबहादुर रत्नारामजी सी० आई० ई० एस० ओ० के सुपुत्र हैं। श्रीमान् रत्नारामजी भारतवर्ष में फुर्ट भारतीय चीफ इंजिनियर हैं। आप बड़े सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं। सामाजिक क्षेत्र में आपने बहुत अच्छे २ काम किये हैं। फलफत्ते में श्रीयुक्त धानूराजजी चौधरी के साथ आपका बहुत पुराना दोस्ताना है। आपके साथ में आपने बहुत से अच्छे २ सार्वजनिक तथा शिक्षा-सम्बन्धी काम किये हैं। आपकी उम्र इस समय ६५ वर्ष की है। तथा श्रीयुक्त जगन्नाथजी इस समय ३३ साल के हैं।

इस फर्म के मालिकों का सुधार और शिक्षा-सम्बन्धी कार्यों में बहुत दिलचस्पी है। फानपुर तथा करांची डि० ए० बी० हाईस्कूल, ग्लेशूक तथा और भी सार्वजनिक कार्यों में आप बहुत दान देते रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

देह ऑक्सि-जुगरांव ( पंजाब ) मेसर्स रायबहादुर ब्रजलाल जगन्नाथ ( T. A. Brijajan )	}	यहाँ पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
लुधियाना—मेसर्स रायबहादुर ब्रजलाल जगन्नाथ ( T. A. Brijajan )		यह फर्म इम्पोर्टियल बैंक की ग्यारण्टेड ब्रोकर है। तथा कमीशन एजन्सी का काम होता है।
करांची—मेसर्स रा० ब० ब्रजलाल जगन्नाथ कैम्पबेलस्ट्रीट ( T. A. Brijajan )	}	यहाँ पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम तथा जावासे सुगर का इम्पोर्ट होता है। यह फर्म जावा की ( Kian Gwan ) केन ग्वान कम्पनी की ग्यारण्टेड ब्रोकर है।

आपके मूल निवास-स्थान सहर में राय बहादुर रत्नारामजी की ओर से एक अस्वत्वाल चल रहा है। इसके अलावा मोघा के आई हॉस्पिटल में आपने अच्छी सहायता पहुँचाई है।

### बाळगोविन्ददास एण्ड कम्पनी

इसकी स्थापना सन् १९२४ में हुई। इसके संचालक बाळगोविन्ददासजी लोदीवाल तथा सेठ लीलारामजी, मोहनदासजी और मोतीरामजी हैं। बाळगोविन्ददासजी का आदि-निवास-

स्थान इटावा है। अन्य चीनों मज्जन सिन्धी लोहाने भाईबन्द हैं। यह फर्म रुई तथा गल्ले की दुकानें करती है। और राजी मरर की House Brokers है।

पता—(१) युइस्ट्रीट राजी थिल्डिंग फोन नं० ३४५ (२) खोरी गार्डन।

### मेसर्स भागचन्द रिज्जूमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुग रिज्जूमलजी और तीरथदासजी हैं। आपका मूल निराग-ग्यान दारपेना (मिन्घ) में है। इस फर्म को यहाँ पर स्थापित हुए १८ वर्ष हुए। इसकी स्थापना स्वयं रिज्जूमलजी ने ही की।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करौची—मेसर्स भागचन्द रिज्जूमल  
बन्दर रोड (F. A. Bhag)

इस फर्म पर रुई, गल्ला और तिलहन का व्यापार होता है। खास तौर से इस फर्म पर तिलहन बाने का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त पत्राव और यू० पी० में आदतियों के द्वारा आपका बहुतसा काम होता है।

### मेसर्स मैहरबक्ष मौलाबक्ष

इस फर्म के मालिक मूल निवासी विनोर (जंग) के रहनेवाले हैं। करौची में यह फर्म जल्दीम पचास बरस से स्थापित है। इस फर्म की स्थापना करौची में सेठ राम्मुहीन ने की। सेठ राम्मुहीनजी की मृत्यु बरस साल हो गये। राम्मुहीनजी के तीन बेटे थे, मियों अमीरहीन, मियों मैहरबक्ष और मियों मुदाबक्ष हैं। इस समय इस फर्म के मालिक मियों मैहरबक्षजी के लड़के मियों मौलाबक्ष (स्वर्गीय) मियों दोस्तमुहम्मद और मियों नजीरहुसैन हैं, तथा मियों मुदाबक्षजी के लड़के मियों अलाबक्षजी, मियों अमीरउमर, मियों मुहम्मद सादिक, इरान-इस्फाही, बख्शवारी हैं। मियों मौलाबक्षजी के दो लड़के हैं जिनके नाम एहमदयूसूफ और मुहम्मद इकबाल हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करौची—  
मेसर्स मैहरबक्ष मौलाबक्ष  
बख्श रोड  
(T. A. Rahman)

यह फर्म शगर का बहुत बड़ा व्यापार करती है। इसके अलावा दोन्ट्रेड में भी यह फर्म दिन्द में बहुत बड़ी है। इसके अलावा कॉटन, प्रेन, रीइम की कमीशन एजेन्सी का काम भी होता है।

दिल्ली—मेसर्स अस्तावक्ष  
मुहम्मद शईद, महम्मद शरीफ  
कूचा काबिल अत्तार  
(T. A. Kherkhawa)  
संस्थाह—

यहाँ पर यह फर्म बोन का ट्रेड करती है। इसमें  
महम्मद शईद और महम्मद शरीफ का पार्ट है।

इसके अलावा मटिएडा, कलकत्ता और कानपुर, जोधपुर, बीकानेर, में भी इस फर्म को  
मांचेस हैं।

### मेसर्स रामप्रताप रामचन्द्र

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान भिवानी में है। आप अमवाल जाति के वासल  
गौर्वाय सञ्जन हैं। इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत सेठ रामप्रतापजी हैं। यह फर्म भिवानी  
में सन् १७७५ से स्थापित है। संवत् १८०० से यह फर्म वहाँ कमीरान का काम कर रही  
है। पहले इस पर भिवानी में पी और लाल मिर्च का बहुत व्यापार होता था। करोंची में यह  
फर्म करीब १९ वर्षों से स्थापित है। इसे भीयुत सेठ नरसिंहदासजी ने स्थापित किया। आपका  
स्वर्गवास संवत् १९७५ में हुआ। इस समय भीयुत नरसिंहदासजी के छोटे भाई पन्नालालजी  
के पुत्र श्रीयुत बन्सीलालजी, श्रीयुत रामप्रतापजी, श्रीयुत जोधरामजी और श्रीयुत रामचन्द्रजी ही  
इस फर्म के मालिक हैं। श्रीयुत रामप्रतापजी के इस समय एक पुत्र हैं। आपका नाम नाथूराम-  
जी है। आप श्रीयुत बन्सीलालजी के दत्तक हैं। आप व्यापार में भाग लेते हैं।

इस फर्म के मालिकों का दान धर्म की ओर भी बहुत रुचि रही है। प्रायः सभी अच्छे  
कामों में आप दान देते रहते हैं। मथुरा में आपकी ओर से एक धर्मशाला ( जो भिवानीवालों  
की धर्मशाला के नाम से प्रसिद्ध है ) बनी हुई है। इसमें एक अन्नशेख भी चलता है। इसके  
अतिरिक्त भिवानी में भी आपकी ओर से धर्मशाला, मन्दिर, कुआ, व छत्री बनी हुई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

- १—भिवानी—मेसर्स अमीरचन्द जोधराज }  
मेसर्स अमीचन्द नरसिंहदास }  
मेसर्स अमीचन्द फूलचन्द }  
२—बम्बई—मेसर्स नरसिंहदास जोधराज }  
कात्रादेरीरोड }  
( T. A. Bansal ) }

यहाँ पर आपका मूल निवास स्थान है तथा सराफरी  
का काम होता है।

इस फर्म पर हुण्डी, चिट्ठी, रुई, अलमी, सोना,  
चाँदी, तथा सोरा की कमीरान पत्रन्धी का  
काम होता है।

१-कराँची-मेमर्स रामदास रामचंद्र  
मगपरोड़ ( T.A. Bansal )

यहाँ पर गले और रुई का व्यापार तथा कमीरान एजन्सी का काम होता है। यह फर्म कराँची के गले के बड़े व्यापारियों में है। यह फर्म पीस गुड्स का वितायत से इम्पोर्ट करती है तथा बीमे का काम भी होता है।

### मेसर्स लालजी लखमीदास

इस फर्म की स्थापना कराँची में सन् १९४५ में हुई। इसकी स्थापना सेठ लालजी लखमीदासों ने की। सेठ लालजी भाई का स्वर्गवास हुए करीब ८ वर्ष हो गये। कराँची में सेठ लालजी भाई बड़े प्रसिद्ध और प्रभावशाली पुरुष थे। आपका बनाया हुआ एक मार्केट कराँची में है। सेठ लालजी भाई के दो पुत्र हैं जिनके नामः—श्रीयुत सेठ हरिदास भाई और सेठ रत्नजी भाई हैं। आप माटिया जाति के राजन हैं। यह फर्म दोनों भाइयों की सम्मिलित संपत्ति है।

सेठ हरिदास भाई भी कराँची में बड़े प्रसिद्ध पुरुष हैं। आप वायर्स एण्ड शिपर्स चेम्बर के कौन्सिली सेक्रेटरी तथा पोर्ट ट्रस्ट के मेम्बर हैं।

इस फर्म का व्यवसायिक परिचय इस प्रकार हैः—

कराँची—  
मेमर्स लालजी लखमीदास  
( T.A "Lotus" लोटस )

यह फर्म सन प्रचार की कमीरान एजन्सी का काम करती है। यह फर्म टिम्बर और छाजूर का इम्पोर्ट भी करती है। कराँची में यह फर्म बहुत बड़ी लीपड लॉर्ड्स भी है।

### दि मिन्ड सागर कम्पनी लिमिटेड

यह एक लिमिटेड कम्पनी है। इसके चेयरमेन सरदार बहादुर मेहतासिंह वार० पट० ला० लाहौर हैं। तथा इसके डायरेक्टर्स सरदार साहिब सक्क्यनसिंह गर्वनमेंट कण्ट्राक्टर लाहौर, सरदार जसदरसिंह सिन्धी राईस लाहौर, सरदार मन्मोहनसिंह अमृतसर, सरदार बहादुर हुकमसिंह कानपुर, साया हीरानन्द देहली, सरदार बहादुर धर्मसिंह कण्ट्राक्टर देहली, राय बहादुर सादर विराजसिंह देहली, राय बहादुर साया दिव्यनारायण पब्लिक प्राइमियर

फिरोजपुर, सरदार साहब वज्रसिंह एम० ए० एम० एल० सी०, मियाँबन्नु मुलवान, शेष रहमत इलाही रोपड़ा और मि० युधिष्ठिरलाल वनेजा बैरिस्टर फिरोजपुर हैं ।

इस फर्म का हेड आफिस लाहौर में है तथा इसके करोंची फर्म के एजेण्ट सरदार परदमन-सिंह और सरदार हरबन्धसिंह सिस्त्वानी हैं । करोंची फर्म का टेलिमाफिक एड्रेस (Sindhassa-gar) है । यहाँ रुई, गन्ना, विजहन की कमीशन एजन्सी का काम होता है ।

### मेसर्स हीरजी नैनसी एण्ड को०

इस फर्म के वर्तमान प्रोप्राइटर श्रीयुक्त पदमसी हीरजी और श्रीयुक्त ठाकरमी हीरजी हैं । यह फर्म बम्बई में करीब ३० साल से स्थापित है । करोंची में यह फर्म सन् १९२६ से स्थापित है ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बम्बई—मेसर्स हीरजी नैनसी	}	यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है ।
पेटिट विल्डिंग-एलविन्स्टन सर्कल ( T. A. Hirnensey )		
करांची—मेसर्स हीरजी नैनसी ( Hirnensay )	}	यहाँ पर भी यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है ।

### मैग्गू इ० टी० एण्ड को०

इस कंपनी का हेड ऑफिस हेगोल रोड बेलार्ड स्ट्रीट बम्बई में है । इसकी शाखाएँ लन्दन, मैम्बेस्टर, कलकत्ता, राउर बाह, करांची और बगदाद में हैं । करांची में यह फर्म कॉटन एक्सपोर्ट का काम करती है ।

### मैग्गू ट्रेडिंग एण्ड को०

इस कंपनी का हेड ऑफिस लन्दन में है । बम्बई में इसका ऑफिस ५९ परसेंस स्ट्रीट में है । इसकी शाखाएँ मैम्बेस्टर, बम्बई, कलकत्ता, करांची, राउरबाह, संघार, बमरा, बगदाद और हैदो में हैं ।

करांची में यह फर्म रुई का एक्सपोर्ट करती है ।



### मेसर्स हीरानन्द ताराचन्द मुखी

इस फर्म के मालिकों का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १५१ पर दिया गया है। इस फर्म की हैदराबाद, बम्बई, करांची, मुलवान, सरगोधा, पुलरवार, सिलावाली मण्डी, इत्यादि कई स्थानों पर इस देश में तथा इजिप्ट, सीदिया, मीस, जापान इत्यादि विदेशों में भी दुकानें हैं।

करांची—मेसर्स हीरानन्द ताराचन्द, बन्दर रोड़ (T. A. Mukhi) यहाँ बैङ्किंग, सोना, चाँदी और कमीशन का काम होता है।

### मेसर्स एलिगर मोहता एण्ड कम्पनी लि०

इस फर्म का विस्तृत परिचय मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास के नाम से दिया गया है। यह फर्म जॉन ग्लैस एण्ड कम्पनी ग्लासगो की सोल एजेंट तथा अन्य कई कम्पनियों के पीस गुड्स डिपार्टमेण्ट की एजेंट है। इस पर इन्स्यूरेन्स का काम भी होता है। इसका तार का पता (Mohta) है।

## कपड़े के व्यापारी

### मेसर्स कलाचन्द मोतीराम

इस फर्म के मालिक हैदराबाद (सिन्ध) के निवासी हैं। आप सिन्धी—आमल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना सन् १९०४ में हुई। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुत मोतीरामजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करांची—मेसर्स कलाचन्द मोतीराम गोवर्द्धन- दास, मार्केट T. A Diamond	}	इस फर्म पर पीस गुड्स और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
बम्बई—उधाराम धीरूमल कोलीवाड़ा		यहाँ पर कमीशन एजन्सी का काम होता है।

### मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल

इस फर्म का विस्तृत परिचय मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास के परिचय में देखिए। इ नाम से इस फर्म पर यहाँ सब प्रकार के कपड़े का थोक व्यापार होता है।

### मेसर्स गणपतराय ईसरदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान प्रतेपुर ( सीकर ) में है। आप अमृत  
 जाति के गर्ग गौत्रीय सञ्जन हैं। इस फर्म की स्थापना संवत् १९४८ में हुई। इस फर्म  
 विशेष तर्कों श्रीयुत स्व० ब्रजलालजी दाहका के पुत्र श्रीयुत वित्सेरलालजी दाहका  
 हाथों से हुई। इस समय श्रीयुत वित्सेरलालजी के पुत्र श्रीयुत भावरमलजी दाहका  
 स्थान पर हैं। इस समय इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत उंकारमलजी सरावगी (श्रीयुत  
 ईसरदासजी के पुत्र) हैं तथा श्रीयुत शिवभगवानजी (श्रीयुत गणपतरायजी के पौत्र) हैं।  
 इस फर्म के मैनेजर तथा मैनेजिंग पार्टनर श्रीयुत भावरमलजी दाहका हैं। आप मारवाड़ी  
 विद्यालय करोंची तथा मारवाड़ी धर्मशाला करोंची के ट्रस्टी हैं।  
 आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हेड ऑफिस—अमृतसर  
 मेसर्स रामलाल गणपतराय  
 आडुवाला कटरा  
 ( T. A. Sarawagi )

करोंची—मेसर्स गणपतराय ईसरदास  
 न्यू हाॅप मार्केट  
 T. A. Parasnath

बम्बई—मेसर्स रामलाल गणपतराय  
 कालकादेवी रोड  
 ( T. A. Kailaspati )

यहाँ पर विज्ञापनी तथा देरी कपड़े का व्यापार  
 और कमीशन एजन्सी का काम होता है।  
 यहाँ पर यह दुकान करीब ८० वर्षों से  
 स्थापित है, यहाँ के आप बहुत पुराने  
 रहस हैं।

यहाँ पर भी कपड़े का व्यापार तथा कमीशन  
 एजन्सी का काम होता है।

यहाँ पर कमीशन एजन्सी का काम होता है।

### मेसर्स गोभार्ड करञ्जा लिमिटेड

इस फर्म का परिचय इस फर्म के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १४९-५० पर  
 दिया गया है। इसकी करोंची शांघ पर जापानी और थायनीस सिल्क का व्यापार होता है।

### मेसर्स गोवर्द्धनदास सेउमन्

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीयुत सेऊमलजी हैं। आप श्रीयुत मूलचन्दजी के पुत्र  
 हैं। आपका स्वर्गवास अभी हुआ है। यह फर्म यहाँ पर करीब २२ वरस से स्थापित है।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

सेठ चेलारामजी और उनके पुत्र बूलचन्दजी ने की। सेठ चेलारामजी का स्वर्गवास हुए १५ साल हुए। इस समय इसके माजिक भ्रायुत चेला रामजी के पुत्र श्रीयुत बूलचन्दजी, सूरत-रामजी और कन्हैयालालजी हैं। आप सब बड़े सज्जन और योग्य हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

हेड ऑफिस बम्बई—मेसर्स चेलाराम  
बूलचन्द वारभाई मोहडा नं० ३  
(T. A. twill)

इस फर्म पर बम्बई की मिलों के रंगीन माल (डाईंग ड्राय) का थोक व्यापार होता है। आपका स्पेशल मार्का नाग शेर छापा, छोकरा बन्दूक छापा और कन्हैयालाल टिकिट, जोगनसतार टिकिट ये पाँचों आपके स्पेशल मार्का हैं। इस फर्म का दूकान मूलजी जेठा मार्केट में है।

शिवापुर—मेसर्स चेलाराम बूलचन्द—यहाँ पर भी यही व्यापार होता है।

सावर—मेसर्स चेलाराम बूलचन्द—यहाँ पर भी यही व्यापार होता है।

### मेसर्स ठाकुरदास देऊमल

इस फर्म के माजिक सेठ परूपल, देऊमल, रामचन्द्र, ठाकुरदास और अगरीभाई हैं। आप लोग शिवापुर निवासी रोहेरा जानि के हैं। इस फर्म का हेड आफिस शिवापुर में है तथा इसकी प्राथम्य बम्बई और करांची में हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—  
करांची—मेसर्स ठाकुरदास देऊमल बम्बई बाजार—यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

### मेसर्स तेजभानदाम ठारूमल

इस फर्म का विरोध परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३७ पर दिया गया है। करांची में इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करांची—मेसर्स तेजभानदाम ठारूमल बम्बई बाजार (T. A. Honumon) यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

### मेसर्स दान्तराम मोहनदास

इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३७ पर दिया गया है। इसकी करांची फर्म का परिचय इस प्रकार है।





करांची—मेसर्स दीलतराम मोहनदास बम्बई बाजार (T. A. Lalpagri) यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

### मेसर्स नागरपल पोदार

इस फर्म का विस्तृत परिचय कई चित्रों सहित इस ग्रन्थ के दूसरे भाग में फलकता विभाग के पृष्ठ ६८१ पर दिया गया है। इसका हेड ऑफिस नागपुर में है। करांची में इस फर्म पर टाटा मिन्स तथा दूसरे स्वदेशी कपड़े का व्यापार होता है। इसका पता गोवर्धनदास माफेंट करांची है।

### मेसर्स पोकरदास द्वारकादास

इस फर्म के मालिक शिकारपुर निवासी सेठ द्वारकादासजी के पुत्र सेठ मेधराजजी हैं। आपका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १३८ पर दिया गया है। इसकी करांची फर्म का परिचय इस प्रकार है।

करांची—पोकरदास द्वारकादास गोवर्धनदास मारकोट (T. A. Swadeshi) यहाँ स्वदेशी, विलायती और जापानी कपड़े का व्यापार होता है।

करांची—द्वारकादास फतेचन्द मूलजी जेटा मारकोट—यहाँ गांवठी कपड़े का व्यापार होता है

करांची—पी० द्वारकादास मूलजी जेटा मारकोट—इस ऑफिस से विलायत से इम्पोर्ट होता है।

### मेसर्स फतेचन्द मदनगोपाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान बिसार्क (जयपुर) का है। करांची में इस फर्म की स्थापना सन् १९१४ में हुई। इसके स्थापक श्रीयुक्त फतेचन्दजी मुरारका हैं। आप अमवाज जाति के गर्ग गौत्रीय सज्जन हैं। आप ही के हाथों से इस फर्म की वित्तोप तरकी हुई।

इस फर्म में इस समय चार पार्टनर हैं। जिनके नाम श्रीयुक्त शिवदानमलजी, श्रीयुक्त मदनगोपालजी, श्रीयुक्त फतेचन्दजी तथा श्रीयुक्त रामेश्वरदासजी बी० काम० (बम्बई) हैं। श्रीयुक्त शिवदानमलजी श्रीयुक्त नौरंगरायजी के पुत्र हैं। तथा श्रीयुक्त रामेश्वरदासजी श्रीयुक्त फतेचन्दजी के पुत्र हैं।

श्रीयुक्त फतेचन्दजी मारवाड़ी विद्यालय के ट्रस्टी तथा सिन्धु प्रान्तीय अमवाज सभा के उपाध्यक्ष हैं। श्रीयुक्त मदनगोपालजी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी युवक सम्मेलन के मन्त्री, सिन्धु प्रान्तीय मारवाड़ी अमवाज सभा के उपाध्यक्ष, मारवाड़ी कन्या विद्यालय के मन्त्री और

नरजुवह सेवक दल के प्रधान मन्त्री हैं। श्रीयुग रामेश्वरदासजी मारवाड़ी विद्यालय के आनरेरी सुपुत्राचार्य, नरजुवह सेवक दल के सभापति और हिन्दी साहित्य भवन के आनरेरी सुपुत्राचार्य हैं। तथा यह फर्म मारवाड़ी विद्यालय भी कोषाध्यक्ष है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

- |   |   |   |
|---|---|---|
| १-श्रीश्री मेसर्स केशवन्द मदनगोपाल<br>गोवर्द्धनराम माऊंट<br>(T. A. Murarka) | } | यहाँ पर विलायती कपड़े का डायरेक्ट इम्पोर्ट होता है तथा थोक और खुदरा बिजनेस होता है। यहाँ आपका आफिस भी है। |
| २-कल्याण-मेसर्स केशवन्द<br>मदनगोपाल<br>बहाग कल्याण<br>(T. A. Murarka)       |   | }   |
| ३-भारत-दर्शनदत्त मदनगोपाल   | } |   |

### मेसर्स बेरामल केवलराम

इस फर्म का परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में मेसर्स बेरामल परशुराम के नाम से सम्बद्ध विवरण के पृष्ठ ११९ पर दिया गया है

बतौर—मेसर्स बेरामल केवलराम यहाँ गावठी कपड़े का व्यापार होता है।

### मेसर्स रामगोपाल शिवरत्न

इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी भाग के प्रारम्भ में मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनराम के नाम से दिया गया है। इस नाम से इस फर्म पर ट्रिप्लेड और रज्जिन कपड़े का थोक व्यापार होता है।

### मेसर्स व्योमचन्द्र मोहनयाल

इस फर्म के मालिक बंदिनेर के मूल निवासी हैं। आज माहेश्वरी जाति के मोहता सञ्जन हैं। इस फर्म की स्थापना शरीरों में इस नाम से हुए करीब १० वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म कल्याण-केशवन्द मदनगोपाल फर्म में सम्मिलित था। इस समय इस फर्म के मालिक श्रीयुग सेठ मोहनयालजी मोहता हैं। आजके इस समय चार पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीयुग मालिक-





# भारतीय व्यासियों का परिचय

(संलग्न पत्र)



डॉ. डी. डी. चट्टोप्याय (डा. डी. डी. चट्टोप्याय) बरारपी



महं माहानलालजी माहता (लक्ष्मीनंद माहानलाल) बरारपी



महं क. क. चट्टोप्याय (क. क. चट्टोप्याय) बरारपी



महं सिध्दी श्रीलक्ष्मीनंद माहानलाल बरारपी

लालजी, भीयूत बट्टीदासजी, श्रीरंकरलालजी तथा श्रीलालजी हैं। भीयूत माणिकलालजी तथा बट्टीदासजी व्यापार में भाग लेते हैं, तथा श्रीरंकरलालजी और श्रीलालजी पढ़ते हैं।

भीयूत मोहनलालजी के पिता भीयूत लक्ष्मीचन्द थे। जिनका नाम बीकानेर में बहुत प्रसिद्ध है। आपकी ओर से बीकानेर में कई सार्वजनिक कार्य हुए। जिनमें मोहता मूलचंद बोर्डिंग हाऊस इत्यादि संस्थाएँ प्रसिद्ध हैं। आपके सार्वजनिक कार्यों का वर्णन प्रथम भाग के बीकानेर के पोर्शन में मेसर्स मोतीलाल लालमोचन्द के परिचय में दिया गया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करांची—मेसर्स लालमोचन्द मोहनलाल  
लालमोदास—स्ट्रीट—

यह फर्म राणी ब्रदर्स के पीस गुड्स डिपार्टमेंट की हेड ग्रांजर है। यहाँ पर इस फर्म के कई मकानात भी हैं।

दिल्ली—मेसर्स लालमोचंद मोहनलाल  
न्यू क्लॉथ मार्केट

यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

अमृतसर—मेसर्स लालमोचंद मोहनलाल  
आल्हाला कटरा

यहाँ पर कमीशन एजन्सी का काम होता है।

करांची—मेसर्स लालमोचन्द बट्टीदास  
गोवर्द्धनदास मार्केट

यहाँ पर कपड़े का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

मेसर्स बसियामल आसूमल

इस फर्म का विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १४९ पर दिया गया है। करांची फर्म का परिचय इस प्रकार है—

करांची—मेसर्स बसियामल आसूमल—यहाँ पर चायनीज और जापानी सिल्क का व्यापार होता है।

मेसर्स शिवरतन चौदरतन

इस फर्म का विस्तृत परिचय इस भाग के प्रारम्भ में मेसर्स मोतीलाल गोवर्द्धनदास के नाम से दिया गया है। इस नाम से इस फर्म पर छोट और फैनसी कपड़े का थोक व्यापार होता है।

### मेसर्स सोहनलाल गणेशलाल

इस फर्म के वर्तमान मातृक भोयुन् सोहनलालजी मेहता हैं। आपका मूल निवासस्थान बीकानेर में है। बीकानेर के सुप्रसिद्ध दालवीर सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी के आप पुत्र हैं। आपका विद्वत् वैयक्तिक परिचय प्रथम भाग के बीकानेर पोशन में मेसर्स मोतीलाल लक्ष्मीचन्द्र के परिचय में दिया गया है।

इस फर्म को इस नाम में करौची में स्थापित हुए २० वर्ष से ऊपर हो गये। पहले यह फर्म मेसर्स सोहनलाल अन्तरणन्द के नाम से काम करता था। उसके पश्चात् मेसर्स सोहनलाल-कल्याणन्द के नाम से व्यापार कर रहा है।

ई पुत्र सोहनलालजी के इस समय एक पुत्र है। जिनका नाम श्रीयुन् गणेशलालजी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स सोहनलाल गणेशलाल  
सोहनलाल अन्तरणन्द  
(T. A. Chameli)

इस फर्म पर विलायती कपड़े का व्यापार तथा कमी-  
रान एजन्सी का काम होता है। यह फर्म  
कार्बिस कैम्ब्रज एण्ड को० की करौची और  
अमृतसर दोनों स्थानों की हेड ऑफिस है।

### मेसर्स सागरमल रामप्रकाश

इस फर्म के स्वामीजी का मूल निवास-स्थान भिवानी है। आप अमृतसर जाति के विन्दत मौर्य सज्जन हैं। इस फर्म को काम करने हुए ४ वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म दूसरे नाम से काम करती थी। इस फर्म के वर्तमान मातृक रामरिषणलालजी रवीराम हैं। आप मेसर्स इन्दरलाल अग्निवाहन के मैनेजर हैं। आप बड़े साज्जन और योग्य हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१—मेसर्स सागरमल रामप्रकाश  
सोहनलाल अन्तरणन्द T. A. Saggur  
२—सागरमल अन्तरणन्द  
रामप्रकाश

इस फर्म पर विलायती कपड़े का व्यापार और कमी-  
रान एजन्सी का काम होता है।

इस फर्म पर कटोमि शुद्ध का व्यापार होता है।

### मेसर्स हामोमल चेतनमल

इस फर्म के स्वामीजी का मूल निवास-स्थान देवगढ़ (मिन्ध) में है। इस फर्म को करौची में स्थापित हुए करीब १० वर्ष हुए। इसकी स्वयंता सेठ हामोमलजी ने की। आपका जन्म मौर्य

१९२१ में हुआ। आप श्रीयुग् चेलारामजी के पुत्र हैं। श्रीयुग् हामोमलजी करौची में बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। यहाँ के व्यापारिक समाज में तथा गवर्नमेण्ट में आपका अच्छा प्रभाव है। गवर्नमेण्ट ने आपको ऑनररी मजिस्ट्रेट का सम्मान दे रक्खा है। इसके अतिरिक्त सेठ हासोमलजी को दान, धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी प्रवृत्ति है। करौची के स्मरान को बनाने में आपने बहुत मदद दी। तथा बशों को गाड़ने की व्यवस्था के लिए आपने कम्पाउण्ड बना दिया है। और भी आपका क्याल बहुत अच्छे र काम करने का है। आपके इस समय एक पुत्र है जिनका नाम हेमनदासजी हैं। तथा आपके दत्तकपुत्र श्रीयुग् सेऊमलजी हैं अभी आपको बहुत सा रुपया दे दिया गया है। गुरु से तो श्रीयुग् सेऊमलजी इम फर्म में ज्वाइण्ट थे। आपका इन पर बहुत प्रेम है। दुकान में बहुत लाभ हुआ इस लिए श्रीयुग् सेऊमलजी को बहुत धन दिया।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

करौची-मेसर्स हासोमल चेलाराम  
कपड़ा मार्केट

} यह फर्म सब प्रकार के पॉसगुड्स का थोक व्यापार करती है।

मेसर्स हीरान्याल शिवलाल एण्ड को०

इम फर्म के मालिक श्रीयुग् हीरालालजी शर्मा हैं। आप श्रीयुग् शिवलालजी शर्मा के पुत्र हैं। आपका मूल निवास-स्थान पहले राजौर (जयपुर) में और फिर भरतपुर में रहा। श्रीयुग् हीरालालजी का जन्म संवत् १९४५ में हुआ। सबसे पहले आप सन् १९०६ में करौची आए। गुरु २ में आप भिन्न २ यूरोपियन फर्मों में सर्विस करते रहे। इसी बीच सन् १९१३ से आपने कपड़े के व्यापार में हाथ डाला। इस समय आप सर्विस भी करते रहे। और आपका व्यापार भी चञ्चलता रहा। सन् १९२६ से आपने सर्विस विजकुल छोड़ दी और अपनी सारी किर्यो व्यापार की ओर लगा दीं।

ऊपर लिखे विवरण से पता चलेगा कि श्रीयुग् हीरालालजी कितने सकल अध्यवसायी और ईर्षीर हैं। आपका परिचय बड़े र अंग्रेज अफसरों तथा व्यापारियों से रहा है। तथा करौची सार्वजनिक क्षेत्र में भी आपका बहुत नाम है। इस समय आप कपड़े का इम्पोर्ट तथा इन्व्यूरेन्स का काम करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

### मेसर्स पोहमल ब्रदर्स

यह फर्म करोंची में सन् १९२१ से स्थापित है। इस फर्म का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में रेशम के व्यापारियों में दिया गया है। इसकी करोंची फर्म का मैनेजमेण्ट श्रीयुन् कद्दानबन्द परमानन्द आड़वाणी करते हैं। आपका मूल निवासस्थान सिध हैदराबाद में है।

यहाँ पर यह फर्म लोहे का विलायत से इम्पोर्ट करती है, और लोहे का बड़ा स्टॉक भी रखती है। और यहाँ से ग्रेन, शीइस इत्यादि वस्तुओं का एक्सपोर्ट करती है।

( T. A. Dipmala )

### मेसर्स विहारीमल जग्गामल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान अमृतसर (पंजाब) है। इसके वर्तमान मालिक श्रीयुन् जमनालालजी हैं। आप अमवाल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म को करोंची में स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए। इसकी स्थापना श्रीयुन् सेठ संतरामजी ने की। आप श्रीयुन् सेठ जग्गामलजी के पुत्र थे। आपका स्वर्गवास सन् १९०९ में हो गया। आपके बंधान् श्रीयुन् जमनालालजी के पिता श्रीयुन् कारीरामजी ने इस फर्म को सम्हाला। आपका स्वर्गवास सन् १९१७ में हो गया। तब से इस फर्म का संचालन श्रीयुन् जमनालालजी कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हेड ऑफिस—करोंची

मेसर्स विहारीमल जग्गामल

सन्ने मोहम्मद स्ट्रीट

( T. A. Ciredes )

इस फर्म पर बैंकिंग और लोहे के सब प्रकार के सामानों का बहुत बड़ा व्यापार होता है। यह फर्म विलायत से डायरेक्ट लोहे का इम्पोर्ट करती है। आपकी एक शांच पैरिस में भी खोली गई है।

### मेसर्स मारोाराम हरदेवदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान देहली का है। आप हायडेलवाल सज्जन हैं। इस समय इस फर्म के प्रोवाइडर लाला ईमरामजी, लाला गोविन्ददासजी, लाला दीनानाथजी और लाला आनन्ददेवी ( बसंतजी लाला खुमनजी ) हैं, आपके परिवार का विस्तृत परिचय इस ग्रन्थ के दूसरे भाग में कच्छणा विभाग के पृष्ठ ५०२ पर दिया गया है।

करोंची में यह फर्म सन् १९४१ से इस नाम से व्यापार कर रही है। इस फर्म के करोंची शांच का मैनेजमेण्ट लाला दुआलालजी करते हैं। आप भी हायडेलवाल जाति के वैश्य हैं।

भारतीय व्यापारियों का परिचय —  
( तीसरा भाग )



राजा हंसराजजी (महाराजाम हारदेवदास) कराची



राजा गोबर्दनदासजी (महाराजाम हारदेवदास) कराची



हीमानंदजी (महाराजाम हारदेवदास) कराची



जयकण्ठदासजी (महाराजाम हारदेवदास) कराची



आपका मूल निवास स्थान महिपालपुर (दिहौ) है। आप चौबीस साल से इस फर्म पर कार्य कर रहे हैं। आप बड़े सज्जन, योग्य, और व्यापार कुशल सज्जन हैं। आप आयर्न मर्चेण्ट एसोसिएशन की मैनेजिंग कमेटी के मेंबर हैं। पहले आप कराँची को पॉजरापोल सोसाइटी की मैनेजिंग कमेटी के मेंबर रह चुके हैं। यह फर्म न केवल कराँची में प्रत्युत सारे भरतवर्ष के लोहे के व्यापारियों में बहुत बड़ी है। इसका हेड ऑफिस दिल्ली में है तथा कलकत्ता, घन्वई और कानपुर में भी शाखाएँ हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कराँची—मेसर्स माधौराम हरदेवदास  
मिक्लोड रोड

इस फर्म पर आयर्न एण्ड स्टील का बहुत बड़ा व्यापार होता है। यह फर्म डायरेक्ट विलायत से लोहे का इम्पोर्ट करती है। इसके सिवा इस फर्म पर बैंकिंग बिजिनेस भी होता है। यह फर्म गवर्नमेण्ट कन्स्ट्रक्टर भी है। कमीशन एजन्सी का काम भी यह फर्म करती है।

मेसर्स मुरलीमल सन्तराम एण्ड कम्पनी

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाल भीष्मदासजी और लाल सन्तरामजी हैं। आप लोग अमृतसर के रहनेवाले हैं। इस फर्म को करीब २५ वर्ष पूर्व स्वर्गीय लाल मुरलीमलजी ने स्थापित किया। लाल मुरलीमलजी का स्वर्गवास करीब ९-१० वर्ष हुए हैं। आप जब तक जीवित थे व्यापार का संचालन अपने पुत्रों सहयोग से सुदृढ़ ही किया करते थे। आपके स्वर्गवास होने के बाद आपके पुत्र लाल भीष्मदासजी तथा लाल सन्तरामजी करने लगे। आप दोनों भाई बड़े विचारवान और व्यापारज्ञ हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कराँची—मेसर्स मुरलीमल  
सन्तराम लक्ष्मीमदास  
स्ट्रीट  
Phone No, 664  
(T. A. Murli)

यहाँ पर आप लोग लोहे का डायरेक्ट इम्पोर्ट करके व्यापारियों को बेचते हैं। यह फर्म सेएण्टीथ का इम्पोर्ट भी करती है।

—मेसर्स मुरलीमल सन्तराम

इस फर्म की एक ब्रांच बेलजियम में भी है।



## मोटरकार डीलर्स

मेसर्स नारायणदास एण्ड कम्पनी

बर्मा की शहर के अन्तर्गत जब मोटर गाड़ियों के व्यापार का उल्लेख किया जाता है तब हम में पहले मेसर्स नारायणदास एण्ड कम्पनी का उल्लेख करना पड़ता है। यह फर्म केवल बर्मा ही में नहीं प्रचलित मिन्य, पंजाब, बलूचिस्तान और सीमा प्रान्त में इस व्यापार के अन्तर्गत हम में बड़ी गिनी जाती है। इस फर्म का अपना निज का बड़ा मध्य और सुन्दर मकान बर्मा में बना हुआ है, जो लगभग ५००० वर्गगज भूमि को घेरे हुए है। यह मकान इस फर्म की जग्गों के अनुसार बड़े उपयोगी ढङ्ग से बनाया गया है। यह फर्म शेवरलेट, ह्यूड, फोर्ड, टियागनी, ह्यमोबिल, साइटरोन, सिगट, सिल्ली (इंग्लीरा) और सनवीम, इत्यादि गाड़ियों की, मिन्य, पंजाब, बलूचिस्तान और सीमाप्रान्त के लिए एजण्ट है। इसके सिवा यह फर्म एरोप्रेन डीलर्स भी है। इसी फर्म ने इण्डिया में पहली बार एरोप्लेन मॉडल कर बेचा। इसके साथ ही इस फर्म में स्पेअर पार्ट्स तथा मोटर सम्बन्धी आवश्यक वस्तुओं का स्टॉक भी बहुत बड़ी मात्रा में रहता है। इतने पर भी विशेषता यह है कि ये सब सामान इन्हीं व्यवस्थित ढङ्ग में सजाये जाते हैं कि कौन वस्तु स्टॉक में है या नहीं यह मालूम करने में समय की बरबादी का बहुत अंश बच जाता है।

इस कार्यालय की दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि इसमें मोटर इन्जिनियरिंग का काम बहुत ही अच्छे ढंग से किया जाता है। इस फर्म की कारों की आफिस में लगभग १०० होशियार कारोन्टर काम करते हैं जो कि इस कार्य के विशेषज्ञ हैं और उनकी योग्यता का ही परिणाम है कि काम इतना बढ़िया होता है। इस फर्म में भिन्न २ वस्तुओं की प्रदर्शनों के लिए अलग २ विभाग हैं और यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि मोटर गाड़ी के सम्बन्ध का ऐसा कोई भी कार्य नहीं रह जाता जो इस फर्म के द्वारा सीधे और बम्बूरी किया न जा सकता हो। अनेक कार्यों के लिए इस फर्म में अब तक की प्राप्त हर तरह की मशीनें हैं। हुको प्रणाली के मोटर पर रंग करने की भी इसमें बड़ी सुन्दर व्यवस्था है।

इस फर्म में सब प्रकार की आवश्यकताओं को पूर्ण के योग्य सब प्रकार की गाड़ियाँ रहती हैं। अर्बन्ट टोले और इनकी गाड़ियों में लेकर बड़ी २ भार टोनेवाली, और सुमाफिर गाड़ियाँ मिलती हैं। इसके अतिरिक्त इस फर्म के कार्यों में इलेक्ट्रोप्लेटिंग, और अपरोनमटरी आदि कार्यों भी सम्बन्धित किये जा सकते हैं। इस फर्म में कठिन से कठिन मोटर रिपैरिंग भी बहुत व्यवस्थित की जाती है, जो वहाँ के मोटर वाहनेवालों के लिए बड़ी सुविधाजनक है।

श्रीयुक्त नागपणदासजी मोटर और साइकल के व्यापार की स्थापना करने में इधर मध से पहले गिने जाते हैं। आपने सन् १९०५ में मध से पहले केटा में यह व्यापार प्रारम्भ किया। इसके पहले बिजुबिस्वानवालों ने मोटर का दर्शन भी नहीं किया था। इनकी कुशलता और सज्जनता के परिणामस्वरूप यह व्यापार प्रति वर्ष तरफ़ी करता गया और आज तो सारे भारत के मोटर-व्यापारियों में इनका नाम वल्लेखनीय हो गया है। इनके यहाँ लगभग २३० कारीगर काम करते हैं। जिनमें लगभग १०० इनकी लाहौर की ग्रांथ में नियुक्त हैं। जहाँ पर की इनका व्यापार करोंची की अनेका अधिक परिमाण में चलता है। इसके अतिरिक्त इनकी एक शाखा केटा में भी है। श्रीयुक्त एम० पी० नागपणदास डब्ल्यू. पी. मेयराज फर्म के मालिक और भागीदार हैं। इनके घर का पता ( छोटे मावाडज़ ) है। और इनके यहाँ ए० वी० सी० पॉबवो संस्करण, तथा वेनटर्ज़ीज का प्रायडेंट कोड इस्तेमाल किये जाते हैं।

## सिनेमा ऑनर

### दी करांची पिक्चर हाउस

#### श्रीयुक्त शेठ रेवाशाहुरजी मोनोगान पञ्चोटी

श्रीयुक्त रेवाशाहुरजी का मूल निवासस्थान हलवड ( काठियावाड ) का है। आप औदीच्य आदाय हैं। आप उन सज्जनों में से एक हैं जिन्होंने केवल अपने पैरों के बल पर बहुत साधारण स्थिति से उन्नति करते २ अच्छी उन्नति कर ली। बहुत समय नहीं हुआ है आप चार्टर्ड बैंक में सर्विस करते थे मगर आपको नौकरी से स्वाभाविक प्रेम न था, और आप स्वतन्त्र व्यवसाय करना चाहते थे। सन् १९१८ में आपका ध्यान सिनेमा विजिनेस की ओर गया और आपने इम्पेरियल थिएटर में सिनेमा का उद्योग प्रारम्भ किया। इस उद्योग में आपको इतनी सफलता मिली कि धीरे २ आपके ५ सिनेमागृह हो गये। इस समय तो यह हालत है कि, करांची के सिनेमा विजिनेस पर एक तरह से आपका ही अधिकार है। आपके एक छोटे भाई श्रीयुक्त दलमुज्जासजी हैं। आप सिनेमा फ़िल्म के विरोध हैं।

आपको सिनेमा कम्पनियों का परिचय इस प्रकार है:—

#### १—करांची पिक्चर हाउस

इस सिनेमा कम्पनी की स्थापना सन् १९२७ में इस नाम से हुई। पहले सन् १९१८ से १९२७ तक इसकी जगह आप इम्पेरियल सिनेमा के नाम से काम करते थे। यह सिनेमा कचे दर्जे के हिन्दी फ़िल्म दिखाता है।

- |    |                   |   |  |
|----|-------------------|---|--|
| २— | ब्रिटीश सिनेमा    | } | इस सिनेमा को आपने सन् १९२५ में स्थापित किया। इस समय यह सिनेमा करांची में सबसे अधिक चञ्चलता है। यह सिनेमा इंग्लिश फिल्म दिखलाता है। |
| ३— | मराठा सिनेमा      |   | इसकी स्थापना सन् १९२७ में हुई।   |
| ४— | दार्जिलिंग सिनेमा | } | इसकी स्थापना सन् १९२७ में हुई। यह सिनेमा ऊँचे दर्जे के हिन्दी फिल्म दिखलाता है।  |
| ५— | मद्रास सिनेमा     |   | यह सिनेमा सन् १९३० के मार्च से शुरु हो गया। इसमें पिटाफोन सुपिटोन पिक्चर्स (बोलती हुई फिल्म) दिखलाया जाता है।                      |

## जनरल मन्चिंगट्स

### सेवागत कतराफ एण्ड को०

१९ दस सन १८९१ में करांची में स्थापित हुई। इसका स्थापन खान बहादुर के० एच० बहादुर मन्चिंगट्स ने किया। कतराफ महाशय एक मामूली व्यक्ति थे। आपने अपनी पढ़ाई कानून करने ही बंदग के पारसी कॉलेज हाउस में मास्टरी की नौकरी की। इस बात को कतराफ को न होने पार थे कि आपने इसे छोड़ कर विजिनेस लाईन में प्रवेश किया। कतराफ बन्धित होने से ही विजिनेस को धोर मुखा रहा है। अतएव आप राजपिंडी में कतराफो पण्ड को कतराफ कर्म में अभियन्त मैनेजर के पद पर नियुक्त हुए। यहाँ आपने कतराफ १९ सन एक बन्धित अनुभव प्राप्त किया। पत्राण आप अपना स्वतन्त्र व्यापार करने के निवे बहादुर मन्चिंगट्स और बर्डी बंटा मा व्यापार प्रारंभ किया। इसी समय आपने देखा कि करांची में आपकी सेवागामी मति में उन्नति कर रहा है। यह स्थान सिंध, विन्नीपीगान पर उन्नत का क्षेत्र है। यहाँ क्षेत्रक अधुने यही आपकी कर्म स्थापित करने का निश्चय किया। कतराफ ने देखा कि इसीके बन्धितमन्चिंगट्स बर्डी इस कर्म को स्थापना हुई। और इसने कार्प-रिज और बन्धितमन्चिंगट्स का काम प्रारंभ किया गया और यों थीं इसकी तरकी हान्दी को को० इस कर्म के कार्पको ने कतराफ व्यापार क्षेत्र भी बताया। आपने कार्पण्ड विनायक के इन्वन्ट व्यापार कतराफ को प्रारंभ किया। इसके अधिनियम आपने कई एक कम्पनियों की कई एक कम्पनियों की, बन्धित, मिर, और विन्नीपीगान के निवे को० प्रेरितगर्ती ली। इसीमें

इस फर्म की बहुत उन्नति हुई और वर्तमान में भी यह फर्म कई एक वस्तुओं की कई एक कम्पनियों की सोल एजेंट है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक के० बी० के० एच० कतराक और सोराय के० एच० कतराक हैं। श्री० के० बी० कतराक महाशय फर्स्ट क्लास ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट हैं। आप सरकार द्वारा स्युनि-सिनेसिटी एवं पोर्ट ट्रस्ट के मेम्बर चुने गये थे। आप बंगमेन्स मॉरोएस्ट्रीयन एसोसिएशन के फाउण्डर, फेड्रन और प्रेसिडेंट हैं और पारसी पंचायत फंड के आप ट्रस्टी हैं।

इस परिवार की ओर से बहुत से सार्वजनिक कार्यों में सम्पत्ति व्यय की गई है। आपकी ओर से ७५ हजार रुपये बंगमैम इन्टो स्ट्रीयन एसोसिएशन में, ५० हजार बाई वीर बाईजी कतराक मेटरिटीसिंग में, ६० हजार कतराक पार्लिक फण्ड में ३ हजार कतराक स्वीमिंग बाथ के बनवाने में, और २० हजार गरीब लोगों के लिये "खरखेद बाई कतराक पारसी होम" बनवाने में दिया। इन प्रकार कई जगह आपने हजारों रुपये खर्च किया।

वर्तमान में इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

बरांची—मेमर्स कतराक एण्ड को० कतराक टेरेस, सर्वाभियानो—यह फर्म विदेशों से वाहन, मिनिट, जनरल मरचेन्डिस का सामान बौगद् का बड़े परिमाण में इपोर्ट करती है। इसके अलावा इस फर्म पर कई कम्पनियों की एजेंसी हैं। इसकी एक शाखा कतराक डिस्ट्रिक्ट, विन्डोरीया रोड में भी है। जहाँ पुटकर सामान बिक्री होता है। यह फर्म बरांची की बड़ी फर्मों में से है। इसकी स्थायी सम्पत्ति भी यहाँ अच्छी मात्रा में है।

### मेमर्स गिरपारोव्यान् एण्ड सन्ना

इस फर्म के वर्तमान मालिक भीसुन गिरपारोव्यान्जी हैं। आप बरांची जिले के मजदर हैं। आपका मूल निवास-स्थान जिला कार्टागोनरी में है। इस फर्म की स्थापित शिष्टे हुए भारतको बरांच ५ वर्ष हुए।

भीसुन गिरपारोव्यान्जी के निवा भीसुन गोरारामजी की जानपन और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी आपकी रुचि रहती है। आपकी ओर से कार्टागोनरी जिले में एक धर्मशाला बनी हुई है। इसी जिले में आपने हांगरूक के डिस्ट्रिक्ट में भी दान में दी है। इस जिले में आपकी जमींदारी और कारखाने भी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

मेमर्स गिरपारोव्यान् एण्ड सन्ना  
 डिस्ट्रिक्ट रोड  
 (T. A. Nagdebhans)

} यह फर्म मुख्यतः मैचमन्स, पैकजिंग, कपडों, कपडों-  
 काप, राजपुन मैच कपडों, बॉय, को एण्डरस और  
 कोयन है। यह कम्पनी तिलु, पंजाब और राजपुन  
 की मैचिब उद्योग करती है।

हैदराबाद ( सिंध )-गिरधारीलाल  
एण्ड सन्स

} यहाँ पर आपका स्टोअर है ।

इसके अलावा लाहौर, जालन्धर और ओकारा में भी आपकी ब्रॉन्चेस हैं ।

## घी के व्यापारी

### मेसर्स जानीमल प्रधानमल

यह फर्म करोंची में करीब १०० वर्षों से स्थापित है । उस समय करोंची शहर इस रूप में नहीं था । प्रत्युत बहुत छोटे रूप में था । करोंची की बहुत पुरानी फर्मों में से यह फर्म भी एक है । इस फर्म की स्थापना सेठ जानीमलजी ने की । आपका स्वर्गवास हुए करीब ३५ वर्ष हुए । सेठ जानीमलजी के दो पुत्र थे, जिनके नाम श्री सेठ अमरनामल और सेठ चाण्डूमलजी हैं । इनमें से सेठ अमरनामल का स्वर्गवास हुए करीब ३ वर्ष और सेठ चाण्डूमलजी का स्वर्गवास हुए करीब ३२ वर्ष हो गये । इस समय सेठ अमरनामलजी के तीन पुत्र, और सेठ चाण्डूमलजी के दो पुत्र ही इस फर्म के मालिक हैं । सेठ अमरनामलजी के तीन पुत्रों में सेठ चक्रामलजी व्यापार करते हैं तथा शेष दो स्कूल में पढ़ते हैं । सेठ चाण्डूमलजी के दोनों पुत्र सेठ हीरामलजी और सेठ सौवलदासजी व्यापार में भाग लेते हैं ।

इस फर्म की दान-धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि है । सेठ अमरनामलजी ने अपनी मृत्यु के समय २०००० रुपये पंचायत को और ५००० दूसरे कार्यों में दान किया था । और करीब २०० गज जमीन में स्वामी नारायणकी छत्री बनाई है । सेठ अमरनामलजी करोंची कलेक्टर दरबार के मेम्बर थे और मलरि लोकल बोर्ड के मेम्बर थे । आप कई संस्थाओं के ट्रस्टी भी थे । आपके स्वर्गवास के समय कई पत्रों ने आर्टिकल भी लिखे थे । अभी भी सेठ चक्रामलजी मलरि लोकल बोर्ड के मेम्बर तथा कई संस्थाओं के ट्रस्टी भी हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

करोंची—  
मेसर्स जानीमल प्रधानीमल  
ओड़िया बाजार

} इस फर्म पर असली घी का करोंची भर में सब से बड़ा व्यापार होता है । करोंची में इसके बराबर घी का व्यापार कोई दूसरी फर्म नहीं करती । इसके अतिरिक्त यह फर्म इम्पोरियल बैंक की सराफ भी है; तथा बैंकिंग बिजिनेस भी करती है ।

करांची—

मेसर्स जानीमल परधानीमल  
जोड़िया बाजार

} यह फर्म तमालू का व्यापार करती है (Phone 885)

करांची—

फे० एस० परधानी एण्ड कम्पनी

} यह फर्म पीस गुड्स, सण्ड्रीज, ग्लासवेअर इलेक्ट्रिक गुड्स और हाईवेअर गुड्स का विलायत से इम्पोर्ट करती है। इसके टेलिप्रॉफिक एड्रेस Zamindar, Jagirdar, Pradhan हैं।

करांची—

मेसर्स सुन्दरदास वामुदेव

} इस नाम से यह फर्म गल्ले का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम करती है।

मेसर्स अमरना मल जानीमल

} इस नाम से इस फर्म की मलरि और करांची में बहुत बड़ी जमीन्दारी है। इतनी जमींदारी मलरि में शायद दूसरी किसी भी हिन्दू फर्म की नहीं है।

### विदेशी कम्पनियाँ

एवर्ट लैंगम एण्ड को०—इस कम्पनी का हेड ऑफिस लन्दन में है। जहाँ का पता एंग्लो श्याम कार्पोरेशन लि० ५ से० हेलेन पैलेस विरोप घोट लन्दन है। इसकी बम्बई, करांची, ब्रिस्टॉल और सिंगापुर में शाखाएँ हैं। बम्बई में इसका आफिस टेमीरिल्ड लेन (पोस्टवाक्स नं० ७०) में है। करांची में यह फर्म कॉटन एक्सपोर्टर है।

ग्रहम (ट्रस्ट्यू० ए०) एण्ड को०—इसका आफिस कारनाक बन्दर बम्बई में है। इसके एजण्ट ग्लासगो, लीडरपूल, मैन्चेस्टर, लन्दन, ओयार्टो, मास्को, फ्रांकफ़र्ट, रंगून, कराची में हैं। करांची में यह कॉटन एक्सपोर्टर का काम करती है।

वालकट प्रदर्स—यह रिवस कम्पनी है। भारत वर्ष में व्यापक व्यापार करने वाली बड़ी २ तीन चार फर्मों में यह भी एक है। सन् १८५१ में इसका आफिस बम्बई में स्थापित हुआ था। इसके प्रधान कोलम्बो, कोचीन, टेलीचेरी, नूरीकोरन, मद्रास तथा करांची इत्यादि स्थानों में भी इसके आफिस स्थापित हुए। भारतवर्ष में इसकी लगभग ४० आदत की दुकानें हैं। इस फर्म का प्रधान व्यवसाय रुई का है। भारतवर्ष से रुई खरीद कर यह कम्पनी

## भारतीय व्यापारियों का परिषय

विलायत भेजती है। इसके अतिरिक्त अनाज, तिलहन, कच्चा चमड़ा इत्यादि वस्तुओं का एक्सपोर्ट करती है और शकर, घातु इत्यादि वस्तुओं को बाहर से मंगाकर यहाँ सप्लाय करती है। इस कम्पनी की धूलिया, अमरावती, खामगाँव, नागपूर, मुलतात, रामपूर, गुण्डकल, विरुपट्टी इत्यादि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियों हैं इसके लन्दन वाले ऑफिस का पता ९६-९८ लीवर्नहाल स्ट्रीट में है। करांची में भी यह फर्म इन्हीं चीजों का एक्सपोर्ट इम्पोर्ट करती है।

थाम्बे फो० लिमिटेड—इस कम्पनी का आफिस ९ वालेस स्ट्रीट बम्बई में है। तथा इसकी शाखाएँ मद्रास, कलकत्ता और करांची में है। इसके लन्दन वाले एजण्ट का पता वालेस ब्रदर्स एण्ड फो० लि० ४ मासवाई स्कायर लन्दन है। करांची में यह फर्म एक्सपोर्ट का काम करती है।

शालिग्रामदास—यह भारत वर्ष में व्यापार करने वाली सच से बड़ी विदेशी कम्पनी है शायद ही कोई व्यापार भारत में ऐसा होगा, जिसे यह कम्पनी न करती हो। यदि कलकत्ते में यह कम्पनी जूट की सच से बड़ी व्यापारी है तो बम्बई और करांची में रुई और गले के व्यापार कर यह अपना प्राधान्य रखती है। इसी प्रकार इम्पोर्टिंग बिजिनेस में भी यह पीस-गुड्स का इम्पोर्ट सबसे अधिक करती है। मतलब यह कि भारतवर्ष का बहुतांश व्यापार इस कम्पनी के द्वारा होता है। इसके लन्दन आफिस का पता २५ विन्सवरी सर्कस ई० सी० २ है। तथा बम्बई का आफिस २४ रैमलीन स्ट्रीट फोर्ट में है। इसके एजण्ट मद्रास में रहते हैं।

करांची से यह फर्म रुई, गन्ना, तिलहन और हड्डी खरोद कर विलायत को भेजती है। तथा विलायत से कपड़े का इम्पोर्ट कर उसे यहाँ सप्लाय करती है। इसके कॉटन डिपार्टमेण्ट के हाऊस प्रोकर श्रीयुत बालगोविन्ददासजी लोहीवाल हैं। तथा इसके पीसगुड्स डिपार्टमेण्ट की हेड प्रोकर मेसर्स शरणीचन्द मोहनलाल फर्म है।

चारवस फारवस केम्बिल एण्ड फो०—यह भी भारतवर्ष की प्रसिद्ध २ विदेशी कम्पनियों में से एक है। इसकी भारतवर्ष में कई शाखाएँ हैं। करांची में इस फर्म पर एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

देहली

—

DELHI.





## देहली

ऐतिहासिक परिचय—

दिल्ली का ऐरवर्ष्य, दिल्ली का इतिहास, दिल्ली का सौन्दर्य सभी आकर्षक हैं। भारत-वर्ष के अत्यन्त प्राचीन नगरों में से यह एक सब से प्रधान नगर है। इसके कई बार नाम-परिवर्तन हुए, कई बार स्थान-परिवर्तन हुए, मगर फिर भी इसका महत्व ज्यों का त्यों अनुपम है। यह कहा जा सकता है कि दिल्ली एक महान् स्मरान है। जहाँ अनेकानेक राजवंशों की समाधियाँ बनी हुई हैं। जिन स्थान पर इस समय दिल्ली शहर बसा हुआ है उसके आस-पास ४५ वर्ग मील भूमि में नाना राजवंशों के राजमहल दुर्ग, विज्ञानमन्दिर और मसजिदों का खंसाबरोप ढनको गव वैभव की सृष्टि दिला रहे हैं।

इस अत्यन्त प्रसिद्ध महत्वपूर्ण नगर का प्राचीन नाम इन्द्रप्रस्थ है। यह यमुना तट पर बसा हुआ है। महाभारत से श्राव होता है कि पाण्डवों ने हस्तिनापुर से आकर इस नगरी को बसाया था। युधिष्ठिर के बाद ३० पीढ़ियों तक वहाँके वंशजों की यह राजधानी रही। इसके बाद अन्य कितने ही राजवंशों के आधीन यह प्रदेश रहा और यह नगर इनकी राजधानी रहा। ४थी शताब्दी के लगभग राजा घन ने इस नगरी में इतिहासप्रसिद्ध लोहे का स्तम्भ जो लोहे की लाट बहावा है स्थापित किया। इसकी खेसाई लगभग ५० फुट के है। इसके बाद कुछ काल तक दिल्ली सज्जों पड़ी रही पर सन् ७३६ ई० में राजा अनंगपाल ने पुनः दिल्ली को बसाया। सन् ११९३ ई० में महम्मद गोरी ने राजा शृष्वीरज को यानेरवर के युद्ध में परास्त कर यह प्रदेश अपने हाथ में लिया। पर वह यो प्रदेश लौट गया और अपने सेनापति बुतुबुशीन को छोड़ गया जिसने दिल्ली को मुसलमानों की राजधानी बनाया और इस प्रकार यह नगर हिन्दू राज की राजधानी के स्थान पर मुसलमानों की राजधानी बनी। गोरी पराने के बाद जब इस भू-प्रदेश पर तुगलक बादशाहों का शासन स्थापित हुआ तो गयामुशीन तुगलक ने इस दिल्ली से चार मील दूर एक दूसरी दिली बसाई जो तुगलक बाद के नाम से प्रख्यात हुई। आज तुगलक बाद और इन्द्रप्रस्थ के खण्डर मात्र दिखाई देते हैं। तुगलक वंश का नारा तावारी बादशाह तैनूर तैंग ने किया और उसके आन्तर के



(२) पठान राज्यकाल के मध्य भाग के (सन् १३२० से १४१४ ई०)

तुगलकाबाद और सुगजक राह की समाधि अष्टालिका, कलज्ज मसजिद, प्रतीरोजरशाह की कोटलावाली मसजिद, कदमरारायक, निशामुरीन की मसजिद ।

(३) पठान राज्यकाल के अन्तिम भाग के (सन् १४१४ से १५५६ ई०)

सैयद और लोदी बादशाहों की समाधि-अष्टालिकाएँ । पुराना किला और मसजिदें आदि ।

(४) सुगज राज्यकाल के (सन् १५५६ से १६६० ई०)

हुमायुं की समाधि-अष्टालिका, दिल्ली का दुर्ग और राजप्रासाद, जामा मसजिद, मुनहरी मसजिद, सफ़्दरजह्न की समाधि अष्टालिका आदि ।

दुर्ग और दुर्गान्तर्गत राजप्रासाद ही सब से बढ़कर प्रसिद्ध है । उस समय के ऐतिहासिकों के निर्णयानुसार इन सब भवनादि के निर्माण का व्यय निम्नरूप हुआ था:—

दुर्ग और दुर्गान्तर्गत के भावनादि	...	...	...	६० लाख रुपया ।
दुर्गान्तर्गत का राजप्रासाद	...	...	...	२८ " "
दीवाने खास	...	...	...	१४ " "
दीवाने खान	...	...	...	२ " "
पेगमों आदि के वास भवन	...	...	...	७ " "
दुर्ग की दीवानी और गढ़	...	...	...	२१ " "

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि इन दिनों शिल्पियों और मर्मियों का मिहनवाना तथा मसजिदों का मूल्य इन दिनों की अपेक्षा बहुत ही कम देना होता था ।

दिल्ली शहर की मुख्य सड़क पर अवस्थित चौदनी चौक से होते हुए लाहौर दरवाजे में जाकर दुर्ग में प्रवेश करना होता है । इस तोरणवाले फाटक के ऊपर विमखिला गृह है । फाटक का पथ ४१ फीट ऊँचाई का और २४ फीट चौड़ाई का है । इस फाटक से नदवतलाने तक का पथ छत से ढका हुआ है ।

सदरन्तर दीवानेखान है । इस विराल कमरे में फतार की फतार सम्भे हैं । इस कमरे के अन्दर ऊँचे चबूतरे के ऊपर संस्थापित सिद्दासन से बादशाह प्रजा के आनेदन-पथों को लेते थे । यह सिद्दासन जहाँ स्थापित था, वहाँ की दीवार के पथर पर मुनी हुई चित्रकारी फल, फूल, चिह्नियों आदि की है । कहा जाता है कि ये चित्रकारियों किसी प्रयत्नीय शिल्पकुशल थीं । दरबार के समय उस गृह की जो शोभा खिलती थी, उसका आज दिन केवल कल्पना ही की जा सकती है । यह कमरा १०० फीट लम्बाई का और ६० फीट चौड़ाई का है । दरबार के समय अनीर-वनराय उस कमरे में प्रविष्ट होते थे । उस समय कमरे की जैसी सजावट होती थी, वह वास्तविक पर्यटकों की पुस्तकों के चर्चों से विदित होता है ।

## भारतीय इतिहासों का परिचय

फर-स्वल्प दिल्ली में पाँच दिन तक लूट मार की महा विपद् आयी और नगर पुनः उजड़ गया। नैपूर के बाद यहाँ लोदी वंश का शासन रहा और लोदी राज को हटा कर बाबर ने मुगल शासन की नींव डाली। बाबर के पेटे हुमायूँ ने पुनः दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। पर नगर का जंगींदार शाहजहाँ ने कराया और नगर का नाम शाहजहाँनाबाद रक्खा यही वर्तमान दिल्ली है।

वर्तमान दिल्ली को १९७ वर्ष पूर्व शाहजहाँ बादशाह ने बसाया था। इस नगर के तीन घोर पत्थर की ऊँची दीवार है जो प्रायः ५॥ मील लम्बी ४ गज चौड़ी ९ गज ऊँची है। इसमें १६ दरवाजे ४ गिरफ्तियाँ और ९४ युर्ज हैं। शाहजहाँ के बनवाये शाही महल, किला और जामे मस्जिद आदि देखने लायक हैं। शाहजहाँ के विशाल महल में एक स्थान पर लिखा है।

अगर फिर दीम बर ह्ये जमीनग  
हसीनगो, हसीनगो, हसीनग

}

अगर कहीं स्वर्ग पृथ्वी पर है तो यही है  
यही है यही है।

पर स्वर्ग गमान गात्र समाप्त में लित हो मुगल वंशजों ने अपना विनाश स्वयं किया। पत्थर पट्टनों और धरमगनों के आक्रमण हुए। लूट-मार नर हत्या का दौड़-दौड़ा रहा और मराठों ने आखिरी मुगल बादशाह को कैद कर लिया और सन् १८०३ ई० तक उसे जेल में डाल रक्खा। सन् १८५७ ई० में मिर्जाहो विद्रोह के बाद अंग्रेजों ने अन्तिम मुगल बादशाह को संतुल कैद कर भेज दिया और इस प्रकार दिल्ली अंग्रेजों के हाथ आयी।

सन् १८७७ में लार्ड रिटन ने प्रथम शाही दरवार पर महारानी विक्टोरिया के राज-राजेसरो होने की घोषणा की। सन् १९०३ ई० में लार्ड कर्जन ने दूसरा दरवार किया। और महाराज सनम एडवर्ड के भारत सम्राट् होने की घोषणा की। तथा सन् १९११ ई० की १६वीं दिसम्बर को बीसवाँ दिल्ली दरवार हुआ जिसमें स्वर्ण सम्राट् पंचम जार्ज सप्तमीक पधार और तब से दिल्ली पुनः भारत की राजधानी घोषित की गयी।

### दरिन्दीय स्थान

दिल्ली के दरिन्दीय स्थान कई भागों में बाँटे जा सकते हैं—

(१) इतिहासिक पट्टन ताप्यकाय के (सन् ११९३ से १३२० ई०)

कुतुबुद्दीन की मस्जिद और कुतुबमीनार। अजमेरा की समाधि अलाउद्दीन दरवाजा। जमा-मस्जिद मस्जिद।

वे सब प्रबल हिन्दू मस्जिदों के सम्मेलों को लेकर हिन्दू मूर्तिमोचन-विद्या की परिपाटी की लक्ष्य से थी। अतएव इन हिन्दू विद्या के साथ मिजास के फल से जहाँ ही हिन्दू मूर्तिमोचन की परिपाटी बच्य है।

(२) पठान राज्यकाल के मध्य भाग के (सन् १३२० से १४१४ ई०)

मुगलकाबाद और मुगलक शाह की समाधि अट्टालिका, कल्लन मसजिद, फौरोजशाह की कोटलावाली मसजिद, कदमशरीक, निजामुद्दीन की मसजिद ।

(३) पठान राज्यकाल के अन्तिम भाग के (सन् १४१४ से १५५६ ई०)

सैयद और लोदी बादशाहों की समाधि-अट्टालिकाएँ । पुराना किला और मसजिदें आदि ।

(४) मुगल राज्यकाल के (सन् १५५६ से १६६० ई०)

हुमायुं की समाधि-अट्टालिका, दिल्ली का दुर्ग और राजप्रासाद, जामा मसजिद, मुगहरी मसजिद, सफ्दरजह्न की समाधि अट्टालिका आदि ।

दुर्ग और दुर्गान्तर्गत राजप्रासाद ही सब से बढ़कर प्रसिद्ध है । उस समय के ऐतिहासिकों के निर्णयानुसार उन सब भवनादि के निर्माण का व्यय निम्नरूप हुआ था:—

दुर्ग और दुर्गाभ्यन्तर के भावनादि ...	...	...	६० लाख रुपये ।
दुर्गाभ्यन्तर का राजप्रासाद ...	...	...	२८ " "
दीवाने खास ...	...	...	१४ " "
दीवाने आम ...	...	...	२ " "
बेगमों आदि के वास भवन ...	...	...	७ " "
दुर्ग की दीवानी और गढ़ ...	...	...	२१ " "

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि उन दिनों शिल्पियों और अभिकों का मिहनताना क्या मसालों का मूल्य इन दिनों की अपेक्षा बहुत ही कम देना होता था ।

दिल्ली शहर की मुख्य सड़क पर अवस्थित चौदनी चौक से होते हुए लाहौर दरवाजे में जाकर दुर्ग में प्रवेश करना होता है । इस वोरणवाले फाटक के ऊपर तिमखिला गृह है । फाटक का पथ ४१ फीट ऊँचाई का और २४ फीट चौड़ाई का है । इस फाटक से नह्यतखाने तक का पथ छत से टका हुआ है ।

उदनन्तर दीवानेआम है । इस विराज कमरे में फतार की फतार खम्भे हैं । इस कमरे के अन्दर ऊँचे चबूतरे के ऊपर संस्थापित सिंहासन से बादशाह प्रजा के आवेदन-पत्रों को लेते थे । वह सिंहासन जहाँ स्थापित था, वहाँ की दीवार के पत्थर पर गुनी हुई चित्रकारी फल, फूल, चिड़ियों आदि की है । कहा जाता है कि ये चित्रकारियों किसी प्रान्तीय शिल्पकुशल की हैं । दरबार के समय उस गृह की जो शोभा चित्रती थी, उसकी आज दिन केवल कल्पना ही की जा सकती है । वह कमरा १०० फीट लम्बाई का और ६० फीट चौड़ाई का है । दरबार के समय अमीर-उमराव इस कमरे में प्रविष्ट होते थे । उन समय कमरे की जैसी सजावट होती थी, वह तालुकालिक पर्यटकों की पुस्तकों के बर्णनों से विदित होता है ।

दीवाने-ग्याम की बात सर्वत्र प्रसिद्ध है। एक मङ्गलवार का कमरा है, जिसकी दीवारों के ऊपरी भाग पर मुनहरी काम है। यह कमरा ५ फीट लम्बा और ७ फीट चौड़ा है।

कमरे का चंदवा मुनहरी कामदार चाँदी का था। यह चंदवा ३ लाख रुपये खर्च में बनाया गया था। सन् १७६० ई० में मराठों ने उसका दूत कर लीया था। उस समय भी उसको २८ लाख रुपये प्राप्त हुआ था।

दीवाने-ग्याम में ही जगन्नाथचिद्ध नन्द-नाट्य । भार 'महाजन' का यह मिहामन ७ वर्षों के परिश्रम में शिल्पियों ने प्रस्तुत किया था। यह जलवा करना काम है। एक कमरा बनवाने में कितना खर्चा हुआ था। किन्तु टावानियर का खर्च है। यह उसका 'तमाग' का व्यय सादे ली करोंड़ रुपया हुआ था।

दीवाने-ग्यास में कितनी लालाएँ ही गईं 'शाहजहाँ की वक्तों में दिन में पूरा काला थारा कमरा था। सन् १७१६ ई० में बादशाह फर्रुखशाह का लोखला कर 'कमरा' शिल्पियों ने इसी कमरे से अङ्गरेजों के लिये गद्दातट पर के ३८ शहरों में 'कमरा' लोखला का विकार प्राप्त किया था। उमी के फल में इस देश में 'अङ्गरेजी राज्य' में लोखला 'कमरा' ने सन् १७३९ ई० में अपने से पराजित महम्मद शाह को अपना माला 'कमरा' लोखला कर देने पर लाचार किया था। इसी कमरे में गुलामकादिर ने उठे बादशाह 'कमरा' में ही 'अपने निकाल ली थी। इसी कमरे में बादशाह ने 'सेन्धिया के दयालु में लोखला का 'कमरा' लोखला लेक को दिया था। सन् १५८७ ई० में बागों सिपाहियों ने इसी कमरे में 'कमरा' लोखला को हिन्दुस्थान का बादशाह बनाने की घोषणा की थी और इसके 'माल' में 'कमरा' लोखला दूसरे 'महादुरशाह' की दयालु का विचार किया गया था।

दुर्गके अभ्यन्तरस्थित रङ्गमहल, हम्माम आदि विशेष वस्तुस्थितयें हैं। यह हम्माम की ही नकाशियों को देखने से अनुमान किया जा सकता है कि समय राजप्रसाद के शिल्पकार्य कैसी ऊँची श्रेणी के हैं। दिल्ली के हम्माम का शाहजहाँ और औरङ्गजेब के बाद और कोई बादशाह अपने काम में नहीं लाये थे। उस हम्माम में गंधे जल के विधानय १०५ गन लकड़ी जलायी जाती थी।

राजप्रसाद में जल लाने के लिये ६० मील दूर की नदी से राजप्रसाद तक नहर बनायी गयी थी। नदी से उस नहर की राह जल आकर झरने की तरह हल्लाकार गिरता और घूमूचे दुर्गम में परिष्कृत किया जाता था।

गुजलों के ऐश्वर्य की बात क्यों सारी दुनिया में कहावत की तरह फैल गयी थी, यह दुर्गाभ्यन्तरस्थित प्रसाद के अवशेषों को देखने से किसी के समझने में बाकी नहीं रह जाता।

प्रसाद के अन्दर ही मसजिद है।

इसी प्रासाद से मुगल बादशाह उसके नीचे एकत्रित प्रजाजन को दर्शन देते थे। सम्राट् पञ्चम जाज के राज्याभिषेक दरबार में राजदर्शन की वह प्रथा फिर से चलायी गयी।

मुगल बादशाह राजधानी को चारों ओर ऊँची दीवारों से घेरते थे और दीवारों में अनेकानेक तोरणवाले फाटक बनाते थे। दिल्ली से निकलने के अनेक फाटक हैं, जिनमें कश्मीर दरवाजा, बाबुल दरवाजा आदि कई बड़े प्रसिद्ध हैं।

चाँदनी चौक की पुरानी शोभा अब नहीं रही है। पहिले सड़क के मध्य भाग में घुड़ों की फवारियाँ। जिस समय लाहँ हादिस की ओर जानकर किसी ने धम फेंका था। उस समय यह विचार कर, कि किसी घुड़ की ओट से उसने यह धनर्ष किया होगा, वे तमाम घुड़ काट डाले गये। चाँदनी चौक की एक ओर दुर्ग है और दूसरी ओर जुम्मा मसजिद। यह मसजिद भी शाहजहाँ ने बनायी। यह ऊँचे पथर पर बड़े भारी आकार की है। उसके तीन गुम्बद सङ्ग-मरमर के हैं। उन पर बीच बीच में समानन्तर रेखाएँ काजे पत्थर की बनाकर विधिप्रथा का सञ्चार किया गया है। लार्ड कर्जन का कहना है कि सारे पूर्वी देश में इसके जोड़ की यदियों मसजिद और बोर्ड नहीं है।

दिल्ली मुगलजानों की राजधानी थी, जिससे वहाँ मसजिदों की अधिकता अवश्य ही होनी चाहिये। दिल्ली दरवाजे के पास की मुगलरी मसजिद, कइन मसजिद आदि द्रष्टव्य हैं।

दिल्ली में एक जैन मन्दिर है, जिसके शिल्पकार्य विशेष वल्लेख योग्य हैं।

पुराने बागों में कुरशिया बाग अब तक अनेक दर्शकों को आकर्षित करता है, रोशनभास बाग भी बढ़िया है।

दिल्ली के चिनारे पहाड़ों का सिलसिला है, जिनके एक स्थान में हिन्दूराज का भवन-पुराना प्रासाद है। इस पहाड़ों मिलसिले पर एक ओर सिपाहियों के गृह का एक स्तूपिस्तम्भ है तथा एक अशोकस्तम्भ भी है। इसके दूसरी ओर खिरोरशाह के कोठले में और भी एक स्तम्भ अशोक का है। यह दूसरा अशोक स्तम्भ अम्बाला जिले के टपरा नामक स्थान से बड़ा लाकर स्थापित किया गया है। खिरोरशाह के कोठले में खिरोरशाह का किना था। दिल्ली की दो समाधियों प्रसिद्ध हैं एक हुमायुँ की स्तूपि-अट्टालिका और दूसरी सफ़दरजह की। हुमायुँ की समाधि बहुत बड़ी अट्टालिका है। सिपाहियों के गृह के बाद अन्तिम बादशाह के शाहजारे इमरी अट्टालिकाओं का द्विपे थे और वहाँ मारे गये। सफ़दरजह की समाधि इमरी नकल से बनायी गयी है। किन्तु वह किसी तरह से भी हुमायुँ की समाधि के जोड़ की नहीं करी जा सकती।

दिल्ली के दर्शनीय स्थानों और अट्टालिकाओं की कमी नहीं। इनको छोड़े दिनों में देख लेना कष्टकर है। किन्तु बुधवर्नानार की तरह इतिहास प्रसिद्ध पदार्थों को न देखने में दिल्ली-दर्शन अधूर्ण रह जाता है। यह मन्दिर का स्तम्भ २३८ फुट ऊँचा है। यह कई तलों में ऊपर को बड़ा



इसी प्रकार गोटा किनारी, कामदानी और कश्मीरी शाल तथा सिल्क के भी अच्छे २ व्यापारियों की दुकानें यहाँ पर हैं। गोटा किनारी तो यहाँ का बहुत प्रसिद्ध है। जनरल मर्चेण्टाइज, ज्वैलरी, मशीनरी, मोटर्स, साइकिल्स, और केमिकल वस्तुओं के भी यहाँ बहुत बड़ी २ व्यापारी फर्म्स हैं जो लाखों रुपये का व्यापार करती हैं।

यहाँ पर कपड़े की चार मिलें हैं जिनके नाम विड़ला कॉटन मिस्स ( इसके मैनेजिंग एजण्ट विड़ला ब्रदर्स हैं ) जयपुरिया कॉटन मिल ( लक्ष्मीचन्द रामकुमार ) गोएनका कॉटन मिल ( परसराम हरनन्दराय ) और दिल्ली जनरल कॉटन बीविंग मिस्स ( ला० मदन मोहनलाल ) हैं।

व्यापारिक केन्द्र—

चान्दनी चौक—यह दिल्ली की मेन सड़क पर बसा हुआ दिल्ली का सबसे बड़ा व्यापारिक बाजार है। इसकी सुन्दरता, विशालता और इसकी चहल पहल देखने योग्य है। इस बाजार में जनरल मर्चेण्ट्स, ज्वैलर्स, बैड्जर्स, सिल्क मर्चेण्ट्स, कपड़े के व्यापारी, परफ्यूमर्स आदि सभी प्रकार के व्यापारियों की दुकानें हैं। इसके दोनों किनारों पर कई बड़े २ कटरे बने हुए हैं जो व्यापार के केन्द्र कहे जा सकते हैं। उनके कुछ नाम इस प्रकार हैं—

कटरा शाहन्शाही, कटरा धूलियावाला, कटरा म्मेती, कटरा मारवाड़ी।	}	इन सब में कटपीस का व्यापार होता है।
--	---	-------------------------------------

कटरा नवाब साहब, कटरा मुंशी गौरीशङ्कर, कटरा चौबान, कटरा अशाही, दिली हॉथ मार्केट।	}	इन सब में देशी विदेशी कपड़ों का थोक व्यापार होता है।
---	---	--

कटरा तमासू—इस कटरे में किराना और रंग के बड़े २ व्यापारियों की दुकानें हैं।

बाघड़ी बाजार—इस बाजार में नीचे २ लोहे के बड़े २ व्यापारी, कागज के व्यापारी तथा बर्तनों के व्यापारी व्यापार करते हैं तथा ऊपर शाम के समय मङ्गल मुखियों के रूप की हाट लगती है।

सदर बाजार—यहाँ मनिहारी सामान का बड़ा व्यापार होता है।

कारमोरी गेट—मोटरों और साइकलों के व्यापारी, जौहरी और अगिजी ड्रग की बड़ी २ दुकानें हैं।

सहजी भरही—इस स्थान पर तीन हॉथ मिस्स तथा बरफ का कारखाना है।

किनारी बाजार—इस बाजार में गोटा किनारी का थोक व्यापार होता है।

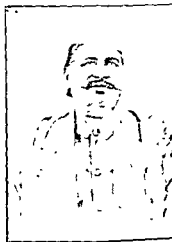
माली बाड़ा—इसमें पगड़ी के व्यापारी तथा आचार मुख्ये के व्यापारी रहते हैं।



भारतीय व्यापारियों का पश्चिम  
( तीसरा भाग )



१६० सेठ श्रीरामजी सोमानी ( दीनाराम धाराम ) देहली



नया बाजार—यहाँ खास व्यापार गल्ले का होता है तथा कई प्रधान २ अरबपतों  
 अंकित हैं।  
 दरीवा—चौड़ी-सोने के घर्तन और फापीगरी तथा मुजम्मे का सामान बिकता है।

चेम्बर्स एण्ड एसोसिएशनस

व्यापारिक संस्थाओं में पंजाब चेम्बर ऑफ कॉमर्स काश्मीरी गेट देहली, पीस गुड्स एसो-  
 सिएशन, देहली ट्राय एण्ड कमोशन एजेंट एसोसिएशन कूचा हीराजाल, तथा देहली हिन्दु-  
 स्थानी मर्केटाइल एसोसिएशन इगर्टन रोड के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें से हिन्दुस्थानी मर्के-  
 टाइल एसोसिएशन की करीब पांच सौ कपड़े की व्यापारी फर्में मेम्बर हैं। इसके प्रेसिडेण्ट  
 श्रीयुव रामलालजी खेमका हैं। इस एसोसिएशन का व्यापारिक समाज पर अच्छा प्रभाव है।  
 यह व्यापारियों के आपसी मगड़ों को मिटाता है। तथा व्यापार जगत् में उत्पन्न हुए कई महत्व  
 पूर्ण प्रश्नों का बड़ा बुद्धिमानी पूर्ण निर्याय करता है।  
 यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

**वैङ्कर्स एण्ड लेण्डहोल्डर्स**

**मेसर्स दौलतराम श्रीराम धूलियावाले**

इस फर्म के मालिक माहेश्वरी जाति के सोमानी सज्जन हैं। इस खानदान का इतिहास  
 संवत् १५९५ से सेठ मोहीरामजी से प्रारम्भ होता है। मगर इसका खास इतिहास वहीं से  
 विरोध महत्त्व ग्रहण करता है जब कि संवत् १७५२ में सेठ रूपचन्द्रजी सोमानी ने खोल से  
 धूलिया जाकर वहाँ अपना व्यापार शुरू किया। आपने अपना व्यापार अपने बेटे और पोते  
 बलवत्तम नानूराम के नाम से शुरू किया और उसमें अच्छी सन्नति की। इसके पश्चात्  
 संवत् १८०८ वि० में आपकी फर्म मेसर्स बलवत्तम नानूराम के नाम से दिल्ली में स्थापित  
 हुई। बाद में इसका नाम बदल कर सेठ नानूरामजी के बेटे दौलतरामजी और उनके बेटे श्रीराम  
 सेठ दौलतरामजी का स्वर्गवास संवत् १९५१ विक्रमी में हो गया। आपके पुत्र सेठ  
 श्रीरामजी तथा सेठ शादीरामजी का स्वर्गवास आपकी मौजूदगी ही में संवत् १९४७ और  
 संवत् १९३९ में हो चुका था। सेठ दौलतरामजी इस खानदान में बड़े प्रतापी और ख्यातिप्राप्त  
 सज्जन हो गये हैं। आपके हाथों से जहाँ फर्म के व्यापार की बेहद तरकी हुई, वहाँ सार्वजनिक  
 और धार्मिक कार्य भी बहुत हुए। आपने संवत् १९५० में धूलिया में जीनिंग बैंकटरी खोली  
 तथा मेसर्स श्रीराम शादीराम के नाम से चौदनी चौक देहली में, मेसर्स बलवत्तम नानूराम के

नाम से जलगाँव में तथा एक फर्म इसी नाम से पलामखेड़ा जिला औरंगाबाद में, मेसर्स नानकचन्द शादीराम के नाम से कानपुर में, तथा इसी प्रकार छुधियाना, नौगढ़, अमलनेर, हापुड़, इत्यादि स्थानों पर अलग २ नाम से आपने अपनी फर्म स्थापित की थी। संवत् १९५० में आपने कानपुर में दी कानपुर आयर्न एण्ड ब्रास वर्क्स, तथा फ्लोअर मिल डिप्टी के पड़ाव में खोला। इन सब फर्मों पर उस समय बैंकिंग, कर्मीशन एजेन्सी, गद्दा, कपड़ा व किराने का व्यापार होता था। मतलब यह कि सेठ दौलतरामजी के समय में इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। आपने कई बड़ी बड़ी इमारतें भी बनाईं। जिनमें दिल्ली का कटरा धूलिया वाला (चौदनी चौक) मकान दीवान खाना धूलिया वाला (सीताराम बाजार) तथा मकान नौगढ़ कानपुर उल्लेखनीय हैं।

आपने दिल्ली के समीप कालका के मन्दिर पर एक धर्मशाला, तथा एक कुँआ, एक प्याऊ और एक दालान छोटी बोकानेर (गुड़गाँव) में बनवाया और इन संस्थाओं की मरम्मत और रखें का स्थायी प्रबन्ध कर दिया तथा आपने न्यूहास्पिटल देहली में ५०००) प्रदान किये। मरते समय भी आपने कई हजार रुपये का दान किया।

आपकी फर्म के जनरल मैनेजर स्व० रायबहादुर जवाहरमलजी सोमाणी थे। सेठ दौलतरामजी का आप पर बड़ा प्रेम था। सन् १८९२ में रा० ब० जवाहरमलजी बार्ड नं० ८-९ की तरफ से मेम्बर चुने गये। इनके काम से पब्लिक बहुत लुभा रही। फलतः आप तब से आजन्म पर्यन्त इस पद से न हटे। सन् १९१० में आपको रायबहादुरी का खिताब मिला।

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ शादीरामजी के दत्तक पुत्र रायसाहब मोनामलजी सोमाणी हैं। आपको सेठ दौलतरामजी ने अपने छोटे पुत्र शादीरामजी के नामपर संवत् १९४९ में दत्तक लिया। सन् १८९९ में आप मालिक हुए और अधिकार मिलने पर आपने सब कोठियों का काम सम्हाला। सन् १९०५ में आप कुर्सीनशीन और १९१६ में प्राविन्शियल दरबारी हुए। सन् १९१३ से १९२१ तक आप न्यूनिसियल मेम्बर रहे। तथा सन् १९१६ में आप ऑनोरेरी मजिस्ट्रेट चुने गये। सन् १९२० में आपको रायसाहब का खिताब मिला। इसके अतिरिक्त आप कई सभा सोसायटियों, एसोसिएशनों के प्रेसिडेंट तथा सेक्रेटरी हैं, तथा रह चुके हैं। मतलब यह कि आपका सार्वजनिक जीवन बहुत उज्वल है। आपने अपने दास निवास स्थान बौदा में एक धर्मशाला (१००००) की लागत से बनवाई है। तथा और भी कई सार्वजनिक कार्यों में करीब पचास साठ हजार रुपया दान किया है। आपको भारत धर्म महामण्डल से परमालंकार की पदवी मिली है।

आपके इस समय चार पुत्र हैं जिनके नाम श्री हरिकृष्णजी, श्री रामकृष्णजी, श्री बालकृष्णजी तथा श्री राधाकृष्णजी हैं।



श्री० हरिद्वारजी सोमाजी (दौलतराम धीराम) देहली



श्री० रामकृष्णजी सोमाजी (दौलतराम धीराम) देहली



श्री० बालकृष्णजी सोमाजी (दौलतराम धीराम) देहली









# भारतीय व्यापारियों का परिचय

( तीसरा भाग )



श्री ० राय साहब सेठ लक्ष्मीनारायणजी ( प्रतापमोहनदास-  
लक्ष्मीनारायण ) देहली



सेठ रामकुमारजी जयपुरिया ( लक्ष्मीचन्द्र रामकुमार )  
देहली ( परिचय पृष्ठ १८ में देखिए )



आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

- १—देहली—मेसर्स दौलतराम श्रीराम धूलियावाला सीवाणमवाजार (T. A. Dhuliawala) यहाँ पर बैंकिंग और लैण्डलार्ड प्रॉपर्टी का काम होता है।  
 हावड़ा—मेसर्स रायसाहब मोनामल बालकृष्ण (T.A. Mahashawari) इस फर्म पर बैंकिंग और कमीरान एजन्सी का काम होता है।  
 हावड़ा—मेसर्स हरिशृष्ण रामकृष्ण—यहाँ पर गल्ले का काम होता है।  
 कानपुर—मेसर्स नानकचन्द शादीराम नौगड़ा नयागंज (T. A. Dhuliwala) यहाँ बैंकिंग और कमीरान एजन्सी का काम होता है।  
 कानपुर—दो कानपुर ऑपेनंग्रेसस वरुण फ्लोवर मिल्स डिप्टी का पद—ये दोनों कारखाने आप ही के हैं।  
 भूतिया—मेसर्स पन्तराम नानूराम—यहाँ आप की जोनिंग फैक्टरी है।

### मेसर्स ब्रजमोहनदास लक्ष्मीनारायण

देहली के अन्तर्गत धार्मिक और सार्वजनिक कामों में वशरतपूर्वक सहयोग देनेवाले महा-मुम्तसिल का जब वल्लेख किया जाता है तब राजी समाज के मुम्तसिल रईस लाला लक्ष्मीनारायणजी का नाम भूलाया नहीं जा सकता। जिनके (कीर्ति और सृष्टियों) द्वारा किये गये अनेक परोपकारी कार्यों आज भी उनके नाम की उम्रत और गौरवान्वित कर रहे हैं।

इस मुम्तसिल और आदरणीय खानदान के पूर्व पुरुष लाला लक्ष्मीनारायणजी के पितामह लाला महेरादासजी देहली के एक नामांकित व्यक्ति हो गये हैं। आप यहाँ के रईस, डॉनरेटी मजिस्ट्रेट और मुम्तसिलत कमिश्नर थे। आपके सम्मान के लिए भारत सरकार और पकिस्तान दोनों ही के द्वारा स्थानीय टाऊनहाल में आपका एक एनलाज फोटो लगाया गया है।

आपके पदधान् इस फर्म का संभालन लाला लक्ष्मीनारायणजी ने किया। आपका जन्म संवत् १९१८ में हुआ। आपने अपने पूर्वजों की भक्ति करने खानदान की प्रतिष्ठा और सम्मान को अमुष्ण ही नहीं बनाये रखना प्रामुख्य से और भी पढ़ाया। आपके जीवन में क्या भारत सरकार और क्या जनता दोनों ही आपको बड़ी इम्त और सम्मान के साथ देखते थे। आप करीब १२ वर्ष तक स्थानीय मुम्तसिलेडिटी के कमिश्नर तथा कई बार रईस प्रसिद्धे रह चुके हैं।

आपका ध्यान सार्वजनिक एवं सार्वजनिक कार्यों की ओर भी असीम रूप में रहा है। आपने देहली में मुसाफिरो के आवास और उनकी सुविधा के लिए स्टेशन के पास ही बरीर (१५००००)

रुपयों की लागत से एक सुन्दर तथा विशाल धर्मशाला का निर्माण करवाया। इस धर्मशाला में आपने रोगियों के लिए एक औपघालय भी स्थापित किया जहाँ जनता को मुक्त में औपधि प्रदान की जाती है जिसके ऊपर करीबन ५००) माहवार खर्च होता है—इतना ही नहीं इसके साथ ही आप अपनी निजी सम्पत्ति में से कुछ जायदाद पुण्यार्थ छोड़ गये हैं। जिसकी सालाना आय करीब २४००१) रुपया होती है। यह रकम पुण्यार्थ ही खर्च में लगती है।

आपकी सेवाओं से प्रसन्न होकर गवर्नमेंट ने आपको रायसाहब की सम्मानसूचक उपाधि से सम्मानित किया। साथ ही समय २ पर सरकार द्वारा आपको खिलाजतें, मेडिक्स और सार्टिफिकेट्स आदि भी प्राप्त होते रहे हैं। आप स्थानीय आनरेरी मेजिस्ट्रेट भी थे। स्थानीय ऑफिसर और पब्लिक ने आपका अनूठा सम्मान प्रदर्शित करने के लिए स्थानीय टाऊनहाल में आपकी आर्टलपेंट की तस्वीर प्रतिष्ठित की है। कहने का मतलब यह है कि आप यहाँ के एक नामांकित व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सन् १९२६ में हो गया। आपके स्वर्गवास के समय आपके मित्रों, रिश्तेदारों एवं जनता में शोक का समुद्र उमड़ उठा था और उसके लिये सारे शहर में १ दिन हड़ताल रही थी।

वर्तमान में हम फर्म के संचालक स्व० लाला लक्ष्मीनारायणजी के सुपुत्र लाला गिरधरी-लालजी हैं। आप भी अपने योग्य पिता की योग्य संतान हैं। आपने अपनी माताजी के नाम से अपने पिताजी के स्मारक स्वरूप बनी हुई धर्मशाला के पास ही एक और धर्मशाला बनवाई। इसमें करीब ६०) हजार रुपया खर्च हुआ। इस धर्मशाला के बनवाने से मुसाफिरों के लिये बहुत सुविधा हो गई। क्योंकि पहलेवाली धर्मशाला विवाहादि अवसरों पर भौंगी हुई दे दी जाती थी। इससे मुसाफिरों को इधर उधर मारा २ फिरना पड़ता था। मगर दूसरी धर्मशाला के हो जाने से यह सब तर्कहीन रफ्त हो गई। आपके द्वारा अनेक सार्वजनिक कामों में सह-योग दिया जाता है।

हम फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स ब्रजमोहनराम  
लक्ष्मीनारायण  
कटरावेल—(बागदोबार)  
T. A. "Girdhari Co."

} यहाँ बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है। यह फर्म यहाँ की रईस फर्मों में से एक है, इस फर्म पर ए. बी. सी. सिक्स पडिरान और वेष्टले का कोई व्यवहार किया जाता है।



भारतीय व्यापारियों का परिचय >>>  
( तीसरा भाग )



श्री ११११११ श्री ११११११११ ( मन्त्रालयमन्त्र  
राज्यदाम ) दिल्ली



श्री १११११ श्री ११११११११ ( मन्त्रालयमन्त्र  
राज्यदाम ) दिल्ली



## मेसर्स मतवालामल ठाकुरदास

देहली में व्यापार करनेवाली पुरानी और प्रसिद्ध फर्मों में से उपरक्त फर्म भी एक है। आप लोग दखनी जाति के सज्जन हैं। इसके संचालकों का निवास-स्थान यही है। इसका स्थापन करीब २०० वर्ष पूर्व ला० मतवालामलजी के द्वारा हुआ। आप पहले बहुत ही साधारण स्थिति के पुरुष थे। यहाँ तक कि शुरू २ में आप कौड़ियों और पैसों का काम करते थे। उसी से धीरे २ बढ़ कर आपने बैंकिंग व्यापार शुरू किया। आपके पड़वान् आपके पुत्र लाला ठाकुरदासजी ने काम सम्हाला आपके हाथों से इस फर्म की बड़ी उन्नति हुई। आगे बढ़े व्यापारकुशल एवं मेधावी सज्जन थे। आप सन् १८५७ में मिलिटरी की सहायता करने के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा दरवारी बनाएगये थे। आपका सरोंफे में इतना बढ़ा सम्मान था कि आप जिस व्यापारिक हगड़े का फैसला कर देते थे वह सर्वमान्य समझा जाता था। आप का स्वर्गवास सन् १८७१ में हुआ।

आपके पड़वान् इस फर्म का संचालन आपके पुत्र ला० हरध्यान सिंहजी ने सम्हाला। आप अपने समय में देहली के नानांकित रईसों में चमकते हुए सितारे थे। भारत सरकार ने आपको रायबहादुर के सम्मानित पद से मुरोभित किया था। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः ला० राधाकिरानजी तथा ला० माधोप्रसादजी हैं। राय बहादुर ला० हरध्यान सिंहजी स्वर्गवास सन् १९११ में हो गया। आपके पड़वान् इस फर्म का संचालन ला० राधाकिरानजी ने सम्हाला। आपने अपने सुद्धिमानों, नम्रता एवं सेवा भाव से जनता के मन में एक खासा स्थान प्राप्त कर लिया था। आप स्थानीय म्यूनिसिपल कमिश्नर भी रहे। मगर दुर्भाग्य से सन् १९१४ में आपने अपनी इहलौकिक सीला समाप्त की।

आपके पड़वान् इस फर्म के प्रधान लाला माधोप्रसादजी हैं। आप ही की देख-रेख में इसका संचालन होता है। जब से देहली में प्रांतिक वार फंड कमेटी की स्थापना हुई और आप इसके ऑनररी सेक्रेटरी बनाए गये तभी से आपका पब्लिक जीवन प्रारम्भ होता है। इस समय करीब ७ माह तक कठिन परिश्रम कर आपने दाताओं की सूची तैयार की। आपने स्वयं (१०००) वार फंड में दिया। इसी साल आप देहली प्रान्त की, फर्स्ट इंडियन वारलोन कमेटी के ऑनररी सेक्रेटरी बनाए गये। जिसमें आपके अध्यक्ष परिश्रम और दिज्ञघरनों की बजह से लायों रूपया एकत्रित हुआ। सन् १९१८ में आप स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के कमिश्नर बनाए गये। इसके एक माह के पश्चात् ही पंजाब सरकार के द्वारा आप विजिटर्स आफ दी रिफार्मेटी स्कूल देहली की कमेटी के मेम्बर बनाए गये।

सन् १९१८ में ही फिर दूबारा, दूसरे बार लोन फंड के व्याप ऑनररी सेक्रेटरी बनाए





श्री० सेठ सधनारायणजी गोपलका ( परसराम  
हरनन्दराय ) देहली



श्री० सेठ गंगाधरजी गोपलका ( परसराम  
हरनन्दराय ) देहली



सेठ दुर्गांसदाजी गोपलका (परसराम हरनंदराय) देहली



श्री० राजेन्द्र कुमार S/o गंगाधरजी गोपलका





आप स्वयं भी अच्छे चित्रकार हैं। इसके अतिरिक्त आपके पास प्राचीन और नवीन प्रत्यों का भी एक अच्छा संग्रह है। जिससे आपका पुस्तक-मेम प्रतीत होता है। सेठ गंगाधरजी के इस समय दो पुत्र हैं जिनमें एक का नाम बाबू राजेन्द्र कुमारजी हैं और दूसरे का अभी नाम करण नहीं हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

<p>देहली—मेसर्स परसराम हरनन्दराय रमायू कटरा ( T. A. Satya, Sunbeen, Prasad Phone 1566, Code Bentely Private</p>	<p>इस फर्म पर खास व्यापार धोरों का होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग, पोसगुड्स इम्पोर्टिंग, कमीशन एजन्सी का बहुत बड़ा काम होता है। यह फर्म दो गोएनका कॉटन मिल दिल्ली की मैनेजिंग एजेंट है।</p>
<p>कलकत्ता—मेसर्स हरनन्दराय बन्नीदास ९५ ट्राइव स्ट्रीट</p>	<p>इस फर्म पर गनी और हैसियन का व्यापार होता है। इस फर्म का मैनेजमेण्ट राधकहादुर सेठ मुखरामजी कानोडिया के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी कानोडिया करते हैं।</p>
<p>कलकत्ता—मेसर्स हरनन्दराय बन्नी- दास ६९ कॉटनस्ट्रीट</p>	<p>यहाँ पर भी हैसियन और गनी का व्यापार होता है। इसमें राधकहादुर सेठमलजी कालमिया पार्टनर हैं।</p>
<p>कानपुर—मेसर्स हरनन्दराय अर्जुन- दास नयागंज</p>	<p>यहाँ पर भी गनी का व्यापार होता है।</p>
<p>सुधियाना—मेसर्स हरनन्दराय दीना- नाथ कैसरगंज</p>	<p>यहाँ पर भी गनी का व्यापार होता है।</p>

### बिड़ला घरदास

इस प्रतिष्ठित फर्म का विस्तृत परिचय अनेक विधियों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राज-पूताना विभाग के पृष्ठ ८१ से ८६ तक, तथा दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ २३५ पर तथा और भी स्थान २ पर दिया गया है। देहली में यह फर्म बिड़ला कॉटन सर्विंग एजेंसी लिमिटेड का मैनेजिंग एजेंट है। इसके सांख्यिक बाबू सुगर्भचरणजी बिड़ला, बा० रामेश्वरदासजी बिड़ला, बा० बनरामराधजी बिड़ला तथा बा० अश्वमेधजी बिड़ला हैं।

संगों में आने बंदार कायों और सेवाओं से प्रत्येक देशवासी के हृदय में स्थान कर रक्खा है। आप लोग मारवाड़ी समाज के चमकते हुए रत्न हैं।

### मेसर्स लाला मदनमोहनलाल

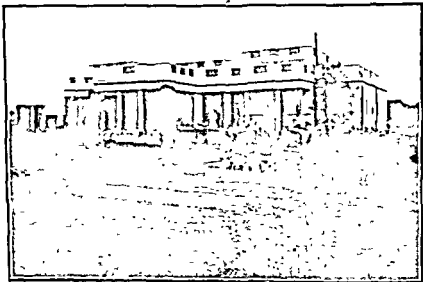
इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला मदनमोहनलालजी हैं। खेद है कि हमारे प्रतिनिधियों के कई बार घूमने पर भी आपका परिचय हमें प्राप्त नहीं हो सका। आप देहली के एक अत्यन्त प्रसिद्ध व्यापारी हैं। आप देहली ट्राय एण्ड जनरल मिल्स कम्पनी लिमिटेड के सेक्रेटरी और गवर्नर; मैनेजिंग एजेंट भी हैं। आपका परिचय प्राप्त न हो सकने का हमें हार्दिक खेद है।

### मेसर्स लक्ष्मीचन्द राजकुमार

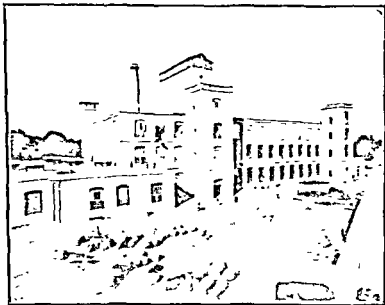
इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान नवलगढ़ (रोखावाड़ी) है। आप अमवाल समाज के त्रैगुरिया गज्रन हैं। सर्व प्रथम सेठ लक्ष्मीचन्दजी सन् १८७८ में बम्बई गये। वहाँ काकर आने कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। बम्बई में सन् १८९२ में ट्रेग चल जाने के कारण आप वहाँ से नागिच होकर जयपुर चले आये। आपके पश्चात् आपके पुत्र रामकुमारजी पुनः बम्बई गये मगर फिर ट्रेग की बजह से वापस सन् १८९९ में दिल्ली चले आये। वहाँ काकर आने कटरीम का व्यापार शुरू किया। इस व्यापार को आप करीब १५ वर्ष तक चला रहे। इस व्यापार में आपको अच्छी सफलता प्राप्त हुई। इसके पश्चात् सन् १९२२ में आने रायबहादुर सरदार शोभासिंह के सामे में दो सातसा स्थिति एण्ड विविंग मिल्स दिल्ली को लिया। दक्षिण भाग भी सुचारु रूप से काम कर रही है। इस मित में ९००० स्क्वैरिस् तथा २५० टन्स हैं। इसका सारा फार्निशियज सेठ रामकुमारजी करते हैं। इसमें करीब १५०००००) मशीनों पर तथा ८०००००) माल पर लगता है। इस फर्म की विरोध उन्नति आप ही के द्वारा हुई। आप मिलनमर व्यापारकुशल एवं मेधावी समाज हैं। आपके दो भाई और हैं जिनके नाम सुरजीधरजी तथा महादेवप्रसादजी हैं। आप भी व्यापार में योग देने हैं। सेठ रामकुमारजी की भी वहाँ के कपड़ेवालों में बहुत अच्छी प्रतिष्ठा है।

आपने कई पब्लिक कार्यों में भी सहायता प्रदान की है। आपकी ओर से दिल्ली ट्राय एण्ड जनरल के सामने बजा एक मकान जिमकी कीमत ६०) हजार रुपया है अपनी कार्यालय के स्वतंत्रता के समय धर्मार्थ निकाल दिया, जिसकी आपकी धर्मार्थ लगाई जाती है। आपने लेडी हार्डिंग हार्डिंग के लिए ५०००) लेडी रीडिंग को दिये। आपने करीब १०००) की लागत की ५ मारवाड़ की व्यापक बनवाई तथा १०००) नगद दिया जिमसे पशुओं

भारतीय व्यापारियों का परिचय १०  
( मीमरा भाग )



शिडिंग ( मेघसं मूरजलाल एण्ड सन्स ज्वेलर्स ) देहली



खाद्यसा मिल्क ( लक्ष्मी वन्द रामकुमार ) देहली



के पीने के पानी का इन्तजाम होता है। इसके अतिरिक्त आपने एस० पी० सी० ए० व्हेटेनेरी हॉस्पिटल की बिर्दिग बनाकर सरकार को दी। इसके लिए वाइसराय महोदय ने आपका प्रशाना सूचकपत्र दिया है। कहने का मतलब यह है कि आपने इसी प्रकार कई संस्थाओं को दान दिया है तथा अब भी देते रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हिली—मेसर्स लक्ष्मीचन्द रामकुमार  
नया कटरा चौक  
T. A. Jaipuria  
T. Ph 5113

जी—मेसर्स—लक्ष्मीचंद जैपुरिया  
चौदनी चौक

} यहाँ हेड ऑफिस है तथा मिल के बने माल के बिक्री का काम होता है।

} यहाँ इम्पोर्ट का काम होता है।

### कपड़े के व्यापारी

#### मेसर्स ईश्वरदास निर्भयराम

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान सूसागढ़ ( भिवानी ) है। आप लोग अपना बाल वैश्य-सनातन के बुधिया सज्जन हैं। इस फर्म के मालिकों के पूर्व पुरुष लाजा शंकरदास जी ने सम्बन्ध १८९५ के लगभग अपने आदि निवास-स्थान भिवानी में मेसर्स शंकरदास राम-प्रसाद के नाम से एक फर्म स्थापित कर व्यापार आरम्भ किया था। आपने लगभग ६० वर्ष हुए दिहा में मेसर्स गंगाराम शिवनारायण के नाम से दूसरी फर्म स्थापित की थी। इन दोनों फर्मों में अच्छी वस्त्रि हुईं पर मालिकों के परिवार अलग हो जाने के कारण लाजा धनराजजी और लाला ईश्वरदासजी ने सम्बन्ध १९४६ में अपनी स्वयं फर्म हररोष्ट नाम से खोल कर कपड़े का पुठना व्यापार करने लगे। फर्म ने कपड़े के व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। इसकी प्रधान वस्त्रि लाजा धनराजजी के हाथों से हुईं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेंट धनराजजी तथा आपके पुत्र बाबू अर्जुनदासजी और आपके बड़े भाई स्व० सेंट निर्मलदासजी के पुत्र लाला धनराजजी और बाबू अर्जुनदासजी के पुत्र बाबू नगरमज्जाजी हैं।

इस फर्म के मालिकों की पारिवारिक भावना सराहनीय है। इसकी ओर से भिवानी में एक धर्मशाला बनने लगी है जिसकी सुन्दरता का पूरा प्रत्यक्ष है। इसी धर्मशाला में स्व० सेंट

नाम्न नामों को मिलाकर एक खास प्रकार का फार्म बनाया गया है। यह फार्म जो वैश्वराज और खानाबदोश के नामों से जाना जाता है, इस फार्म के माध्यम से शाही का भोजन भी मिलता है। इस प्रकार के फार्मों के माध्यम से शाही का भोजन प्राप्त करने के लिए पाठशाला में भेड़े जाते हैं और वहाँ पर उन फार्मों के नामों को लिखा जाता है जो शाही के भोजन के लिए जिम्मेदार हैं। इन फार्मों के नामों को लिखने के बाद फार्मों के नामों को शाही के भोजन के लिए भेजा जाता है।

इस फार्म का न्यायार्थिक अर्थव्यवस्था इस प्रकार है

दिल्ली-मेसर्स ईश्वरदास निमंत्रण म रामबाजार-दुआ मार्ग	}	यहाँ एक फार्म है जो शाही के भोजन के लिए
I. A. Lohwar ( ईश्वर )		भेजा जाता है।
कलकत्ता-मेसर्स रामप्रसाद ईश्वरदास के जगमोहन मल्लिक स्ट्रीट	}	यहाँ एक फार्म है जो शाही के भोजन के लिए
T. A. Repute		भेजा जाता है।
कलकत्ता-मेसर्स द्वाजूराम अर्जुनदास सदामुख फटला हरीमनरोड़	}	यहाँ एक फार्म है जो शाही के भोजन के लिए
मेसर्स शंकरदास रामप्रसाद दानू बाजार भिवानी		भेजा जाता है।

### मेसर्स ईश्वरीदास बनारसीदास

इस फार्म के मालिकों का मूल निवास स्थान हिमालय के आप अथवा नैनीताल के भित्तलन गौत्रीय सज्जन हैं। कहा जाता है कि यह कुटुम्ब मुगल सम्राट शाहजहाँ के समय में देहली में आकर निवास करने लगा। धीरे-धीरे इस कुटुम्ब ने यहाँ गोदा किनारी तथा जवाहरात का व्यापार आरम्भ किया। इस कुटुम्ब के पूर्वज लाला हजारीलालजी को अन्तिम मुगलसम्राट् बहादुरशाह ने अपना शाही जौहरी बनाया था। उस समय आपके यहाँ जवाहरात तथा पुराने सिक्कों का कारखाना जोरों से होता था। आपकी मातवरी से खुश होकर समय-समय पर मुगल-बादशाहों की ओर से आपको कई सनदें भी प्राप्त हुई थीं पर दुर्भाग्यवशात् सन् ५७ के गदर के समय बड़ी गड़बड़ी में आपको धर्मपुरा, पहाड़गंज तथा गुडगाँवा में अपना निवास स्थानीय

भारतीय व्यापारियों का परिचय  
( तीसरा भाग )



श्री. आनंदरामजी ( श्री. आनंदराम किशोरराम )  
देहली



श्री. कल्याण चक्रवर्तीजी ( श्री. आनंदराम  
चक्रवर्ती ) देहली







करना पड़ा उस समय भापका माल सनदें आदि जो तहराने में पन्द थी वे लुट गई और जल कर टाक हो गई। उस समय इस फर्म पर ईश्वरीदास केरारीदास के नाम से काम होता था।

संवन् १८७९ में सेठ ईश्वरीदासजी और केरारीदासजी अलग २ हो गये। सेठ ईश्वरीदास जी के कोई पुत्र नहीं था अतः आपने अपने दोहित्र सेठ बनारसीदासजी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। सेठ ईश्वरीदासजी बड़े प्रतिष्ठाप्राप्त सज्जन हो गये हैं। आपके हाथों से कई लोकोपकारी कार्य हुए हैं। आपने माधोदासजी की बगोची में एक श्रीलक्ष्मीनारायणजी का मंदिर तथा कालकाजी पर तालाब और धर्मशाला बनवाई, लालढिगगी पर एक कुश्नी तैयार करवाया। इसी प्रकार के लोकोपकारी कार्यों में आपने बहुत द्रव्य लगाया। इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिताते हुए संवन् १९३२ में आपका शरीरान्त हुआ। सेठ बनारसीदासजी के चार पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः श्रीरामकृष्णजी, श्री श्रीकृष्णजी, श्रीमजकृष्णजी तथा श्रीरामकृष्णजी हैं। सेठ बनारसीदासजी ने अष्टिकेरा में एक धर्मशाला बनवाई, बट्रिकारम के मार्ग में उत्तर काशी नामक स्थान में भी एक धर्मशाला का निर्माण कराया तथा देहली का ईश्वरभवन नामक कटला जिसमें किराने की मंडी है, निर्माण कराया। आप सन् १९११ में स्वर्गवासी हुए।

यह कुटुम्ब बहुत शिश्ति एवं ऊँचे दर्जे की प्रतिष्ठा पाये हुए हैं। केवल व्यापारिक जगत् में ही नहीं प्रसुव शिश्ति समाज में भी इस परिवार ने बहुत उन्नति कर दिखाई है। लाला श्रीकृष्णदासजी पी० काम० इन्वार्ज एसोसिएटेड प्रेस हैं। लाला शुककृष्णजी पी० ए० ऊँचे दर्जे के स्वदेशभक्त सज्जन हैं। आन विरोपतया महात्माजी के साथ रहते हैं। लाला श्यामकृष्णजी एम० ए० पीसगुड्स का इम्पोर्ट बिजनेस करते हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला रामकृष्णदासजी आदि चारों भ्राता हैं। लाला रामकृष्णदासजी मर्चेंटाइल बैंक की देहली शाँघ के रजिस्ट्री तथा म्युनिसिपल कमिश्नर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

देहली—ईश्वरीदास बनारसीदास बाँदनी चौक तारका पता Mobar	}	यहाँ बैंकिंग व चाँदी सोने का बहुत बड़ा कारबार होता है।
देहली—ईश्वरीदास बनारसीदास कटला सुराजराय कृष्णनिवास		यहाँ जमींदारी तथा स्याई सम्पत्ति का काम होता है।
देहली—सूर्य कृष्ण एण्ड कं० बिल्लामारन	}	यहाँ कपड़े का तथा सूत का इम्पोर्ट तथा देरी कपड़े का थोक व्यापार होता है।

### मेसर्स कालूराम मंगतराम

इस फर्म का विस्तृत परिचय ग्रन्थ के प्रथम भाग में वस्त्र विभाग के पृष्ठ १३३ पर मेसर्स राजाराम कालूराम के नाम से दिया गया है। देहली फर्म का परिचय इस प्रकार है।

देहली—मेसर्स कालूराम मङ्गतराम अशर्की कटला—यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है।

### मेसर्स केशवराम जीवनराम

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग में कलकत्ता विभाग के पृष्ठ ३६३ पर मेसर्स जीवनराम जानकीदास के नाम से दिया गया है। इसकी देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है।

देहली—मेसर्स केशवराम जीवनराम कटरा नवाब साहब चाँदनीचौक (T. A. Virat)

यहाँ जर्मनी, जापान तथा इंग्लैण्ड से कपड़े का इम्पोर्ट होता है तथा उसकी थोक विक्री होती है।

### मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल

यह फर्म बीकानेर निवासी मोहता परिवार के सुप्रसिद्ध रायबहादुर गोवर्द्धनदास ओ० बी० ई० के बंशजों की है। इसके वर्तमान मालिक रा० ब० गोवर्द्धनदासजी के पुत्र श्रीयुत रामगोपालजी मोहता और श्रीयुत रा० ब० शिवरतनदासजी मोहता हैं। इस फर्म का हेड आफिस करीबी में है। अतः इसका सुविस्तृत परिचय वहीं के पोरान में चित्रों समेत दिया गया है।

इस फर्म को दिल्ली में स्थापित हुए २४ वर्ष हुए। इस फर्म की देहली दुकान के प्रधान मुनीम श्रीयुत शिवदासजी मूंदड़ा हैं। आप माहेस्वरी जाति के सज्जन हैं। आपका मूल निवास-स्थान मिनासर (बिकानेर) में है। आपको इस फर्म पर कार्य करते हुए करीब २० वर्ष हुए।

दिल्ली में आपकी एक दुकान मेसर्स गिरधरलाल ब्रजरतन के नाम से, मालीबाड़ा में है, इस पर सब प्रकार की कमोशन एजन्सी का काम होता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स गोवर्द्धनदास रामगोपाल  
चाँदनी चौक (T. A. Mohite)  
P. Box No 28 T. Ph. 5608

इस फर्म पर सब प्रकार के रँगोन कपड़े का थोक व्यापार होता है। यह फर्म विलायत की सुप्रसिद्ध स्टिनर कम्पनी और जॉनगॉलेन की ग्यारण्टेड बेनियन है।

## मेसर्स गुरुप्रसाद कपूर एण्ड ब्रदर्स

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला रायसाह्य गुरुप्रसादजी कपूर हैं। आप ही के द्वारा सन् १९०० में इस फर्म की स्थापना हुई। इस पर गुरु ही से कपड़े का इम्पोर्ट बिजिनेस किया गया। लाला गुरुप्रसादजी के पिठा लाला छुटकामलजी का स्वर्गवास सन् १९११ में हुआ। जिस समय आरका स्वर्गवास हुआ उस समय रायसाह्य की उमर २८ वर्ष की थी। आपके द्वारा फर्म की अच्छी वन्नति हुई। आप मिलनसार एवं सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं। आप दिल्ली पीसगुह्स एसोसिएशन के वपसभापति, देहली हाय मार्केट के ऑनरेरी मंत्री, एत्री वपकारक सभा के मंत्री, इन्द्र प्रस्थ सेवा मंडल के सभापति, म्युनिसिपल कमिश्नर (१९१८-१९२८ तक) और आनरेरी मैजिस्ट्रेट हैं। सन् १९२४ में आपको भारत गवर्नमेण्ट ने रायसाह्य की पदवी से विभूषित किया है। इसी प्रकार आपका और २ संस्थाओं में भी भाग है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—गुरुप्रसाद कपूर एण्ड ब्रदर्स कटलानीत देहली T. A. "Fovouride"	}	यहाँ हेड ऑफिस है, तथा कपड़े के इम्पोर्ट का व्यापार होता है।
मेसर्स—गुरुप्रसाद कपूर एण्ड ब्रदर्स मेस्टन रोड कानपुर T. A. "Sincerly"		यहाँ भी कपड़े का इम्पोर्ट व्यापार होता है।

## मेसर्स गोपीनाथ छंगामल

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है। अतः इसका विरोप परिचय कानपुर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म विजायती कपड़े का व्यापार करती है। इसका आफिस कलाय मार्केट में है जहाँ इम्पोर्ट का काम होता है।

## मेसर्स छोगमल राठी

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान देहली में ही है। करीब ११० वर्षों से यह परिवार यहाँ पर बसा हुआ है। सब से पहले सन् १८७३ में सेठ छोगमलजी ने इस फर्म के व्यापार की प्रारम्भ किया और तब से बराबर यह फर्म यहाँ पर व्यापार कर रही है। सन् १९५३ में सेठ छोगमलजी का स्वर्गवास हुआ। आपके धार पुत्र हुए, जिनके नाम

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

कर्म से श्रीयुत गोवर्द्धनदासजी, श्रीयुत शिवतालजी, श्रीयुत कन्हैयातालजी, श्रीयुत छुट्टनतालजी हैं। इस समय आप चारों भाई सम्मिलित रूप में इस कर्म के मालिक हैं।

देहली में आपका एक कटरा बना हुआ है। जिसका नाम राठी कटरा है। इसमें कपड़े के दुकानदार व्यापार करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहली—सेठ छोगमल राठी राठी कटरा नई सड़क ( T. A. Rathi )	}	इस कर्म पर अहमदाबाद और बम्बई की देशी मिल्ओं के कपड़े का व्यापार होता है।
अहमदाबाद—सेठ छोगमलजी जूना माधुपुरा		यह कर्म दिल्ली की कर्म को अहमदाबाद की मिशों का कपड़ा सप्लाय करती है।
कलकत्ता—सेठ छोगमलजी राठी २०१ हरिसन रोड	}	इस कर्म पर अहमदाबाद के मिल्ओं की कपड़ों का व्यापार होता है।

## मेसर्स ताराचन्द्र मंगतराय

इस कर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान भिवानी में है। आप अमवाल जाति के बांसज गोश्रीय सज्जन हैं। आपकी कर्म को देहली में स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। आपका पुराना कर्म सहारनपुर में करीब ५२ वर्षों से स्थापित है। इस कर्म की स्थापना देहली में सेठ बालमुकुन्दजी ने की। इसकी विशेष तरकी भी आप ही के हाथों से हुई। आप बड़े परिश्रमी और योग्य सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सम्बत् १९६५ में हुआ। सेठ बालमुकुन्दजी के तीन भाई और थे जिनके नाम श्रीयुत दुल्लिचन्द्रजी, रामचन्द्रजी और उदमीरामजी थे। इनमें से सेठ उदमीरामजी अभी विद्यमान हैं। इस समय यह कर्म इन्हीं चारों भाइयों के वंशजों की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

सहारनपुर—हेड ऑफिस—मेसर्स शादीराम उदमीराम	}	इस कर्म पर गल्ला, गुड़, राकर इत्यादि की कमीशन एजन्सी का काम होता है।
कलकत्ता—मेसर्स शादीराम उदमी- राम ५९ तुलापट्टी (T. A. Harsika)		यहाँ पर भी यह कर्म कमीशन एजन्सी का काम करती है।

- |  |   |  |
|--|---|--|
| ३ थाना भवनमण्डी—(मुजफ्फरनगर)<br>मेसर्स शादीराम उदमीराम | } | यहाँ पर भी सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है ।  |
| ४ दिल्ली—मेसर्स शादीराम बाल-<br>मुकुन्द नया बाजार      |   | इस फर्म पर गल्ले की कमीशन एजन्सी का काम होता है ।  |
| ५ रोहतक—मेसर्स दुलीचन्द उदमी-<br>राम                   | } | यह फर्म बर्मासैल स्टोरिज के रोहतक की सोल एजेंट है तथा सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है । |
| ६ दिल्ली—मेसर्स वाराचन्द मंगतराम<br>हॉथ मार्केट        |   | इस फर्म पर सब प्रकार के कपड़े का व्यापार होता है ।   |
| ७ सफ़ेदम मण्डी ( मॉड ) मेसर्स<br>दुलीचन्द उदमीराम      | } | यहाँ पर भी सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है ।  |
| ८ बरनाला मण्डी (पटियाला) मेसर्स—<br>शादीराम बालमुकुन्द |   | कमीशन एजन्सी का काम होता है ।  |
| ९ भिवानी—मेसर्स शादीराम बाल<br>मुकुन्द                 | } | यहाँ पर भी सब प्रकार की कमीशन एजन्सी का काम होता है ।  |

### मेसर्स पीरजन्नाल रामप्रसाद

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है जहाँ यह फर्म मेसर्स विहारीलाल रामचरण के नाम से व्यापार करती है । इसका विशेष परिचय वहाँ दिया गया है । यहाँ इसका आफिस चौदनी चौक में है । यह आफिस इम्पोर्ट आफिस की प्रांच है और विलायती कपड़े के इम्पोर्ट का काम करती है ।

### मेसर्स निहालचंद बलदेव सहाय

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है अतः पूरा परिचय वहाँ दिया गया है । यहाँ यह फर्म हाथ मार्केट में है जहाँ कानपुर के ग्योर मिल के कपड़े की बिक्री का काम होता है । इसी प्रकार यहाँ के न्यू कटरे में मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र के नाम से इसकी एक दूसरी फर्म है जहाँ कानपुर इलमिन मिल के कपड़े तथा सूत की बिक्री का काम होता है ।

### मेसर्स नौरंगराय श्यामसुन्दर

इस फर्म को दिल्ली में स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए पर बीच २ में इसके नाम बदलते रहे हैं। इस फर्म की स्थापना यहाँ पर सेठ रामविलासजी ने की। आपके छोटे भाई श्रीयुक्त राजारामजी हैं। सम्वत् १९६४ तक आप दोनों भाइयों का काम सम्मिलित रूप में चलता रहा। बाद में दोनों फर्म अलग हो गईं। उपरोक्त फर्म सेठ राजारामजी की है। आपके इस समय तीन पुत्र हैं; जिनके नाम क्रम से श्रीयुक्त दुलचिन्दजी, माधौप्रसादजी और श्रीयुक्त नौरंगरायजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

- |  |   |  |
|--|---|--|
| मेसर्स—दयाराम दुलचिन्द खारी<br>यावड़ी                  | } | इस फर्म पर कपड़ा, किराना अनाज वगैरह सब प्रकार की कमीरान एजन्सी का काम होता है। |
| २ मेसर्स—नौरंगराय श्यामसुन्दर<br>दिल्ली ड्रॉय मार्केट  |   | } यहाँ पर सब प्रकार के देशी कपड़े का व्यापार होता है।                          |
| ३ धाना भवनमण्डी (मुजफ्फरनगर)<br>मेसर्स दयाराम दुलीचन्द | } | इस फर्म पर सब प्रकार की कमीरान एजन्सी का काम होता है।                          |

### मेसर्स नारायणदास भगवानदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान दिल्ली ही है। आप लोग अमबाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। लग भग ८० वर्ष पूर्व सेठ भगवानदासजी ने मेसर्स नारायणदास भगवानदास के नाम से अपनी फर्म स्थापित कर कपड़े का व्यापार आरम्भ किया था। आपको इस व्यापार में अच्छी सफलता मिली। अतः आपने ५० वर्ष पूर्व अपनी दूसरी फर्म की स्थापना की और विलायती कपड़े का व्यापार करने लगे। इस प्रकार इस फर्म की स्थापना हुई, इस फर्म ने कपड़े के व्यापार में अच्छी उन्नति प्राप्त की जिसके प्रमाण स्वरूप आज फर्म की क्विन्ती ही अन्य शाखायें हैं जो सभी प्रकार का देशी तथा विलायती कपड़े का थोक व्यवसाय करती हैं। इस फर्म की प्रधान उन्नति सेठ परमेश्वरीदासजी के हाथों से हुई। इस फर्म का प्रधान संचालन स्वयं सेठजी करते हैं पर आपके परामर्श और देख-रेख में आपके पुत्र बाबू पदुमचंदजी व्यापार का पूरा काम संचालित करते हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ परमेश्वरीदासजी तथा आपके पुत्र बाबू पदुमचंदजी हैं। सेठ परमेश्वरीदासजी ने नाथद्वारे में एक विशाल धर्मशाला बनवाई है जिसमें सरलता



शाला परमेश्वरीदास जी ( भगवानदास  
परमेश्वरीदास ) देहली



शाला ज्योतनारायणजी खर ( गोरखदास  
शिवनारायण ) देहली



शाला प्रेममुखदासजी ( भगवानदास परमेश्वरीदास ) देहली



शाला रामदास खन्ना





से १ हजार आदमी ठहर सकते हैं। इसी प्रकार आने दिल्ली में १ लाख रुपया खर्च कर राजकी का मंदिर बनवाया है। आपके विवाजो ने भी दिल्ली के महले चूड़ीवाला में एक सुन्दर मंदिर बनवाया है।

आनका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

- |  |   |
|--|---|
| दिल्ली-मेसर्स नाथपनदास भगवानदास<br>माली बाड़ा नयी सड़क   | } यहाँ फर्म का हेड आफिस है। वया कपड़ा खरीद कर थोक देसावर को भेजा जाता है। यहाँ मैनेज्स्टर की हॉर्टे स्ट्राटवर्क की दिहा के लिये सोल एजन्सी है।                                  |
| दिल्ली-मेसर्स भगवानदास परमेश्वरीदास<br>कलाय मार्केट<br>T. A. Padum                               | } यहाँ देसी वया बिलायती कपड़े का थोक व्यापार होता है वया सोलापुरी माल का व्यापार भी है। साथ ही बम्बई को इंडियन मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी, वया न्यू कैसरे दिंद मिल को भी एजन्सी है। |
| दिल्ली-मेसर्स पदुमचंद एण्ड कम्पनी<br>कलाय मार्केट  | } यहाँ कपड़े के इम्पोर्ट का काम होता है।  |
| दिल्ली-मेसर्स पदुमचंद राधानोदन<br>घाटक हबरायाँ   | } यहाँ किराने का थोक व्यापार होता है।<br>दहली का लम्बा व्यापार होता है।   |
| अमृतसर-मेसर्स पदुमचंद राधानोदन<br>पुराना मार्केट,  | } यहाँ कपड़े के कमोरान का व्यापार होता है।  |
| बम्बई-मेसर्स परमेश्वरीदास किरणाम<br>धर्मराजलेन<br>मूलजी जेठा मार्केट नंबर २<br>T. A. Slowsteady. | } यहाँ देसी मिलों का मान खरीद कर बेचा जाता है।  |

### मेसर्स नाथूराम रामनारायण

इस फर्म के मालिकों का विस्तृत परिचय मेसर्स येनेराम जेमराज के नाम से इस ग्रन्थ के अन्त में उनके बम्बई विभाग में अनेक बिजों कलिय दिया गया है। देहली में दर फर्म कपड़े का व्यापार करती है।

### मेसर्स पोहमल ब्रदर्स

इस फर्म का विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १४६ पर अनेक चित्रों सहित दिया जा चुका है। इसका हेड ऑफिस सिन्ध हैदराबाद में है। यह फर्म उन फर्मों में से है जिसने अपना व्यापार न केवल इसी देश में, प्रत्युन् विदेशों के भी खाम २ स्थानों में खमका रक्खा है। इसकी सात बड़ी २ दुकानें भारतवर्ष में आठ पूर्वीय देशों में तथा वेरह दुकानें पश्चिमीय देशों में हैं। इसकी देहली दुकान का परिचय इस प्रकार है:—

देहली—मेसर्स पोहमल ब्रदर्स चाँदनी चौक ( T. A. Pohmal ) यहाँ पर जापानी और चायनीज सिल्क का व्यापार होता है।

### मेसर्स प्रेममुखदास नरसिंहदास

इस फर्म के मालिक अप्पवाल वैश्य-समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व सेठ प्रेममुखदासजी ने की। उस समय इस पर आदत का व्यापार शुरू किया। आपके आपके पुत्र सेठ नरसिंहदासजी भी व्यापार में योग देते थे। सम्बत् १९५० में एकाएक नरसिंहदासजी की मृत्यु हो गई। आप के ५ वर्ष के पश्चात् ही सेठ प्रेममुखदासजी का भी स्वर्गवास हो गया। सेठ प्रेममुखदासजी के पश्चात् इस फर्म के कार्य का संचालन आपके भतीजे लाला केदारनाथजी ने सम्हाला। आप व्यापारकुशल और मेधावी सज्जन हैं। आपके द्वारा फर्म की अच्छी वन्नति हुई। आपके दो भाई और हैं। बड़े भाई का नाम सेठ नैनमुखदासजी तथा छोटे भाई का नाम मेलारामजी है। लाला नैनमुखदासजी भिवानी में रहते हैं और लाला मेलारामजी अमृतसर में रहते हैं। आपने अमृतसर दुकान की बहुत वन्नति की है। आप वहाँ के प्रभावशाली व्यक्ति माने जाते हैं। आप अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अप्पवाल महासभाके भरिया के सभापति चुने गये थे। आप नये विचारों के स्वदेशभक्त सज्जन हैं। आपने राजनैतिक और समाज-सम्बन्धी गद्यपद्य की कई पुस्तकें लिखी हैं। असहयोग के जमाने में देश की पुनीत सेवा करने हुए आपने जेजयात्रा भी की थी। लाला केदारनाथजी के दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रम से बा० हनुमान प्रसादजी एवं बाबू घनरयामशामजी है। इनमें से बाबू हनुमानप्रसादजी राजी प्रदर्म की रिहती प्रेंच के फरडा एवं सूत के बेनियन हैं। बा० घनरयानदासजी इस समय बी. ए. में पढ़ रहे हैं। सेठ केदारनाथजी कलाय कमीशन एजेंट एसोसिएशन तथा कलाय माफेट के सभापति हैं। बा० हनुमानप्रसादजी स्थानीय मारवाड़ी युवक मण्डल के सभापति हैं तथा कई स्कूलों के मन्त्री हैं। मननव कहने का यह कि यह परिवार शिक्षित एवं सार्वजनिक कार्यों में बहुत अग्रगण्य है।

भारतीय व्यापारियों का परिचय :-  
( तीसरा भाग )



सेंट बेंडानापत्री सिंहल ( प्रेममुसदास  
मसिहदास ) देहली



सेंट लक्ष्मीनारायणजी गार्हो देवा ( एम० एम०  
गार्होदेवा ) देहली



सेंट बेंडानापत्री सिंहल ( प्रेममुसदास मसिहदास ) देहली





इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मिथानी—मेसर्स प्रेममुखदास खैतराम  
हाल्ड बाजार

दिल्ली—मेसर्स प्रेममुखदास नरसिंहदास  
नई सड़क T. A. sukh

अमृतसर—मेसर्स नरसिंहदास हनुमानप्रसाद  
विधानेरिया बाजार आलू फटला  
T. A. Narsigh

बम्बई—नरसिंहदास मेलाराम  
कालवादेवी रोड़ नं० २

जाजंधर—प्रेममुखदास कनीराम  
बाजार नोहरिया

लुधियाना—प्रेममुखदास रामचन्द—यहाँ कपड़े का काम होता है ।

यहाँ हेड आफिस है तथा कपड़े का काम होता है ।

यहाँ बैकिंग, कपड़ा, सूत, बारदाना एवं भाड़त का व्यापार होता है । यह फर्म रालिन्द्रसँ के कपड़ा एवं सूत विभाग की बेनियन है ।

यहाँ बैकिंग, कपड़ा, सूत, बारदाना एवं कमीशन एजेंट का काम होता है ।

यहाँ बैकिंग, किराना सूत तथा कपड़े का व्यापार होता है ।

बैकिंग तथा कपड़े का व्यापार होता है ।

### मेसर्स घट्टीदास बगड़िया

इस फर्म का हेड आफिस फानपुर है अतः इसका विशेष परिचय वहीं दिया गया है । यहाँ यह फर्म न्यू क्लाय मार्केट में है जहाँ विजायती कपड़े की एजेंसी का काम होता है ।

### मेसर्स विहारीलाल बेनीप्रसाद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान नवलगढ़ ( जयपुर ) का है । आप अमवाल समाज के जयपुरिया सभजन हैं । सेठ विहारीलालजी संवत् १९५२ में देहली आये । यहाँ आपने कटपीस का व्यापार शुरू किया । जिसमें अच्छी तरकी हुई । इस समय आपके पाँच पुत्र हैं, जिनके नाम था० बेनीप्रसादजी, मदनलालजी, बामुदेवजी, सागरलालजी तथा परसराम जी हैं । इनमें से प्रथम तीन सेठ विहारीलालजी से अलग होकर अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं । तथा शेष दो अपने पिता के साथ व्यापार कर रहे हैं ।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स बिहारीलाल बेनीप्रसाद  
कटरा राईसाह  
T. A. Saraf

} यहाँ पर कटपीस का इम्पोर्ट तथा व्यापार होता है।

### मेसर्स बिहारीलाल पोदार

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान बिसाऊ (जयपुर) है। इस फर्म की स्थापना सेठ बिहारीलालजी तथा जमनादासजी पोदार ने लगभग ३१ वर्ष पूर्व दिल्ली में की थी। आरम्भ में इस फर्म पर अमदाबाद के मिलों के कपड़े का व्यापार आरम्भ किया गया। जिसमें फर्म को अच्छी सफलता प्राप्त हुई। इसके बाद अमदाबादी माल के स्थान पर फर्म ने बम्बई के मिलों का माल बेंचना आरम्भ किया और पूर्व के अनुरूप ही इस व्यापार में भी अच्छी सफलता प्राप्त की। जिस समय नागपुर का मॉडल मिल स्थापित हुआ उस समय फर्म ने अपना अन्य सब काम बंद कर मॉडल मिल के कपड़े की सोल एजेन्सी दिल्ली और कानपुर के लिये ली जो वर्तमान समय में भी इसी फर्म के पास है। इसी प्रकार बदनोर के दिव्यार मैनुफैक्चरिंग कम्पनी लि० की भी सोल एजेन्सी इस फर्म ने आरम्भ से ही दिल्ली और कानपुर के लिये ली जो आज भी इस फर्म के पास है।

इस फर्म की प्रधान उन्नति इसके संस्थापक सेठ बिहारीलालजी पोदार और छोटे भाई सेठ जमनादासजी पोदार के हाथों से हुई है। आप लोगों ने अपने व्यापारकौराज से फर्म को उन्नत अवस्था पर पहुँचाया है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ बिहारीलालजी तथा आपके भाई सेठ जमनादासजी और सेठ बिहारीलालजी के पुत्र बाबू रामेश्वरदामजी तथा सेठ जमनादासजी के पुत्र बाबू कपूरचंद जी और बाबू नाथूरामजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स बिहारीलाल पोदार  
नया कटरा, बान्दनी चौक  
दिल्ली  
T. A. Poddar

} यहाँ माडेल मिल तथा बरार मैन्यू फैक्चरिंग कम्पनी लि० की सोल एजेन्सी है और इन्हीं मिलों के माल का व्यापार होता है।

मेसर्स बिहारीलाल पोदार  
जेनरलमार्ग कानपुर

} यहाँ माडेल मिल तथा बरार मैन्यू फैक्चरिंग कम्पनी लि० की सोल एजेन्सी है। और इन्हीं मिलों के माल का व्यापार होता है।

### सेठ रामलालजी खेमका

इस फर्म के मालिक बिसाऊ (शेराबटो) के रहनेवाले हैं। सर्व प्रथम यहां सेठ जोधरामजी आये और कपड़े का कारबार शुरू किया। आप अमवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपकी देख-रेख में आपके पुत्र सेठ सनेहीरामजी भी कारबार में योग देने लग गये थे। आप दोनों सज्जनों के हाथों से इस फर्म की बहुत उन्नति हुई। आप व्यापार-कुशल सज्जन थे। आपने बम्बई, कलकत्ता आदि स्थानों पर भी अपनी शाखाएँ स्थापित की। सेठ जोधरामजी का सम्बन्ध १९५० में और सेठ सनेहीरामजी का सम्बन्ध १९७४ में देहावसान हो गया। सेठ सनेहीरामजी ने यहाँ हिन्दुस्थानी मर्कण्टाइल एसोसिएशन स्थापित की तथा इसके करीब २० वर्ष तक समापति रहे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सनेहीरामजी के पुत्र बाबू रामलालजी खेमका हैं। आप सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आपने दस वर्ष पूर्व बम्बई, कलकत्ता की फर्म को सम्मान के साथ बटा ली है। आजकल आप अपने ही नाम से बैंकिंग विजिनेस करते हैं। आप हिन्दुस्थानी मर्कण्टाइल एसोसिएशन के समापति तथा पंजाब नेशनल बैंक के डायरेक्टर हैं। दिल्ली म्युनिसिपैलिटी के आप मेंबर भी रह चुके हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स जोधराम सनेहीराम  
फटरा अशर्फी  
चाँदनी चौक दिल्ली

} यहां बैंकिंग और हुंही चिट्ठी का व्यापार होता है।

### मेसर्स रामलाल श्यामलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास देहली है। आप अमवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १९६९ में हुआ। इस फर्म का स्थापन लाला रामप्रसादजी ने किया। आप बड़े सुयोग्य, देशभक्त और सुधरे हुए विचारों के सज्जन हैं। आप मर्कण्टाइल एसोसिएशन के सन् १९२१ से ऑनरेरी सेक्रेटरी, मारवाड़ी लायमेरी के सेक्रेटरी तथा म्युनिसिपल कमिश्नर भी सन् १९२१ से हैं। देहली के व्यापारिक तथा सार्वजनिक समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपके पार्टनर लाला श्यामलालजी का स्वर्गवास हो चुका है। अद्य उनका सान्ध भी नहीं है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स रामप्रसाद श्यामलाल  
चाँदनी चौक।

} इस फर्म पर कपड़े का थोक व्यापार होता है।



### मेसर्स रिझम्ल ब्रदर्स

इस कर्म का रिझम्ल परिषद इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १५१ पर दिया गया है। इसकी देखी दुकान का परिषद इस प्रकार है—

देखी—मेसर्स रिझम्ल ब्रदर्स चॉरनी चौक ( T. A. whitesilk ) यहाँ पर रेसामी चीस मुहम तथा हैण्डर चीक का व्यापार होता है।

### मेसर्स रामेश्वरदास मंगलचंद

इस कर्म का रिझम्ल कर्म के मातृका का रिझम्ल परिषद अनेक चित्रों सहित मेसर्स फूलचन्द बंशराज के नाम से इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पृष्ठ १२८ पर दिया गया है।

देखी दुकान का परिषद इस प्रकार है।

देखी—महर्ष रामेश्वरदास मंगलचन्द न्यू क्लॉथ मार्केट—यहाँ पर बैकिंग मशीनेस और कपड़े का थोक व्यापार होता है।

### मेसर्स ए० एन० गाडोदिया एण्ड को०

इस कर्म के बन्देख नरनागदु निवासी हैं। आप अमवाला पैरय समाज के गाडोदिया सदस्य हैं। इस कर्म की स्थापना सेठ लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया ने सन् १९१० ई० में दिल्ली में की थी। इस कर्म पर कपड़े का इम्पोर्ट तथा देशी और विनायनी कपड़े की बिक्री का थोक व्यापार कारखाने से ही होता है। इस कर्म के पास कानपुर, अमदावाद तथा बम्बई की फिन्नी हो देखी बियों की एजन्सियाँ भी हैं जिनके मातृ की बिक्री के लिए इसकी फिन्नी शाखाएँ भी दिल्ली और अन्य स्थानों में हैं।

सेठ लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया स्थानीय न्यूनिमिषैतिटी के न्यूनिमिषयन कमिश्नर, हिन्दु-स्वयं सङ्घ वि० के अध्यक्ष तथा दिल्ली के हिन्दुस्थानी मॅजिस्ट्रेट एमोथियेरान की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य हैं।

इस कर्म के बन्देख सेठ लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया और लाता बनारसीरामजी हैं।

हिन्दु सेठ लक्ष्मीनारायणजी ने एक लाख रुपये कात देकर गाडोदिया ट्रस्ट बनाया है। इस ट्रस्ट में से मैनेजिंग गाडोदिया स्टोअर्स बूचानटर्षा, दिल्ली, तथा मोहन टैनात रोड अन्धर में क्लॉथ स्टोर से करी है। इन दोनों स्टोअर्स की समान आरय रिग्या, तथा अन्य बन्देख कर्मों से कर्य भी करी है।

इन फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—लक्ष्मीनारायण गाडोदिया ब्रो०  
गाडोदिया बिल्डिंग निपट्टाकटा-  
वर दिल्ली T. A. Gadodia

} यहाँ हेड ऑफिस है यहाँ कपड़े की आड़व का काम होता है तथा एरपैड और फरोएल का काम होता है।

मेसर्स—लक्ष्मीनारायण बनारसीदास  
शुभानटवा दिल्ली

} यहाँ आड़व का काम होता है।

मेसर्स—एल० एन० गाडोदिया गिरधारी  
लाज जेनरल गंज कानपुर  
(T. A. Girdhari)

} यहाँ न्यू विक्टोरिया मिल्स की घोल बेजगसी है।

मेसर्स—एल० एन० गाडोदिया कम्पनी  
गोल्डन टेम्पल रोड अमृतसर

} यहाँ कपड़े की आड़व तथा एरपैड फरोएल का काम होता है।

इसी प्रकार दिल्ली के न्यू ट्राय मार्केट, बटवा मुंशी गौरीरांछर, बटवा चौवा और बटवा मराठ काह्य में मेसर्स एल० एन० गाडोदिया एरड ब्रो० के नाम से अन्य चार दुकानें हैं जहाँ कपड़े की किरी का काम होता है। इसी प्रकार अमृतसर में बटला आड़वाला में आधरी तीन दुकानें और हैं। यहाँ पर भी कपड़े का काम होता है।

### मेसर्स शादीराम मंगलसेन

इस फर्म के आदिशों का मूल निवासस्थान रामरावा है। लगभग ५० वर्ष पूर्व लाज नारायणी में मेसर्स भागदास मंगलसेन के नाम से अपनी फर्म दिल्ली में स्थापित की गई थी। यहाँ कपड़े की आड़व का व्यापार आरम्भ किया। कानूने कपड़े की किरी के लिए एक ही फर्म मेसर्स भागदास मंगलसेन के नाम से खोली। कानूने स्वर्णशाय होने पर कानूने लाज मुहमेन और लाज मंगलसेनजी ने व्यापार का संभालन किया। आप लोगों ने व्यापार की बहुत अच्छी रकब बढ़ाया पर पहुँचा। आप लोगों ने दिल्ली और भागदास में ही अन्य व्यापारिक स्थानों में फर्म खोली जिनमें से हरीशच फर्म भी एक है। १९०२ में लाज मुहमेनजी का स्वर्णशाय हुआ। कानूने फर्म के व्यवसाय के संभालन पर पूर्णतः से लाज मंगलसेन के हाथ में आया। कानूने में कानूने में ही लाज नारायणी फर्म का संभालन करने के और कानूने ही मेसर्स शादीराम मंगलसेन के हाथ

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

से इस फर्म की स्थापना संवत् १९७६ में अलग होकर की थी। आपका स्वर्गवास संवत् १९८१ में हुआ और फर्म का संचालन आपके पुत्र लाला जोगध्यानजी के हाथ में आया।

इस फर्म के मालिक लाला जोगध्यानजी हैं। आप ही फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स शादीराम मंगलसेन ईगर्टेन रोड } यहाँ देशी तथा विलायती कपड़े की आड़त का काम  
दिल्ली } होता है।

## जौहरी

### मेसर्स कानजीमल एण्ड सन्स

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान पटियाला-स्टेट है। आप क्षत्री जाति के सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व यह फर्म लाला कानजीमल के द्वारा बम्बई में मेसर्स हजारीमल कम्पनी के नाम से शुरू हुई। जिस समय कम्पनी खोली गई उस समय के पहले आप चार रुपये मासिक पर सविस करते थे। कम्पनी भी सिर्फ ४०० की पूंजी से खोली। धीरे-धीरे बढ़ती होती गई। आपने कम्पनी का नाम बदल कर मेसर्स कानजीमल भगवानदास के नाम से काम शुरू किया। इसके पश्चात् आप उपरोक्त नाम से व्यापार करने लगे। आप के द्वारा ही इस फर्म की उत्पत्ति हुई। आप व्यापार-कुशल व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९२७ में हो गया। आप ने किंग जॉर्ज एवम् बादशाह हथीबुद्धाखों आदि से भी जवाहरात का व्यापार किया था। तथा कई साहबों से प्रशंसापत्र प्राप्त किये। आप के छ पुत्र हुए जिनमें से बनारसी दासजी तथा छोटे लालजी इस फर्म से अलग हो गये। शेष ४ जिनके नाम क्रमशः रामरतनजी, परसोतमदासजी, लक्ष्मणदासजी और बालकृष्णदासजी हैं जो इस फर्म के मालिक हैं। रामरतनजी सब से बड़े हैं। फर्म का संचालन आप ही करते हैं। शेष तीनों भाई विद्याध्ययन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—कानजीमल एण्ड सन्स—

बाँदनी चौक दिल्ली

T. A. Royal

} यहाँ हेड-ऑफिस है तथा जवाहरात, सोना  
चाँदी के घने बर्तन तथा जेवर और शाल,  
परिमने, गलीचे आदि का व्यापार होता है।

मेसर्स कानजीमल एण्ड सन्स  
अलीपुर रोड, दिल्ली  
T. A. Royal

यहाँ भी उपरोक्त काम होता है ।

मेसर्स कानजीमल एण्ड सन्स  
इस्ट स्ट्रीट पूना

यहाँ भी उपरोक्त काम होता है ।

### मेसर्स खूबचन्द इन्द्रचन्द्र

इस फर्म के मालिक ओमवाल वैश्य-समाज के थोरडिया सज्जन हैं । करीब १२ पीढ़ियों से यह परिवार यहीं निवास करता चला आ रहा है । पहले इस परिवार के लोग गोटा किनारी का व्यवसाय करते थे । संवत् १९५५ में लाला खूबचन्दजी तथा आप के पुत्र लाला इन्द्रचन्द्रजी ने जवाहरराव के कारबार को तरकी दी । लाला खूबचन्दजी के पिता सेठ रूपचन्दजी का संवत् १९६३ में देहावसान हो गया । एक साल के बाद ही अर्थात् सम्बत् १९६४ में लाला खूबचन्दजी भी स्वर्गवासी हो गये । तब से इस फर्म के कार्यभार का संचालन एक मात्र सेठ इन्द्रचन्द्रजी करते हैं । यों तो फर्म पहले ही उन्नतवस्था में थी मगर आप ने इस फर्म की बहुत उन्नति की । आप व्यापार कुशल, मेधावी एवम् सज्जन व्यक्ति हैं । आप के एक पुत्र हैं जिनका नाम चन्मालालजी हैं । आप अपने पिताजी की देहरेख में फर्म का संचालन करते हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—खूबचन्द इन्द्रचन्द्र  
मालीवाड़ा, देहली  
T. A. Faithful

यहाँ सब प्रकार के जवाहरात का होल-सेल व्यापार होता है । यह फर्म विलायत में भी अपना माल भेजती है ।

### मेसर्स रामचन्द्र हजारीमन्

यह फर्म संवत् १९०५ से स्थापित है । प्रारंभ में इसे सेठ बालमुकुन्दजी एवम् सेठ केसरीचंदजी ने स्थापित किया । सेठ बालमुकुन्दजी माहेश्वरी जाति के सज्जन और सेठ केसरीचंदजी श्री श्रीमाल जाति के थे । आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है । आप लोगों के पश्चात् सेठ बालमुकुन्दजी के पुत्र सेठ रामचन्द्रजी और सेठ केसरीचंदजी के पुत्र सेठ हजारीमलजी ने कारबार को सम्हाला । आप लोगों के समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई । सेठ रामचन्द्रजी का स्वर्गवास संवत् १९५३ में हो गया ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हजारीमलजी एवम् सेठ रामचन्द्रजी के पुत्र दुर्गामलजी हैं। आप ही फर्म के काम का संचालन करते हैं।

सेठ रामचन्द्रजी ने करीब एक लाख की लागत से मालीवाड़े में एक राम लक्ष्मण का मन्दिर बनवाया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

देहती—मेसर्स रामचन्द्र हजारीमल

चौदनी चौक

T. A. Poonam

इस फर्म पर बैंकिंग तथा जवाहरात के जड़ाऊ जेवर और फुटकर नगों का व्यापार होता है।

### मेसर्स शादीराम गोकुलचन्द्र

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिक ओसवाल समाज के जैन धर्मावलम्बीय नाहर सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्व पुरुष ला० तिथीमलजी के पिता पहले पहले यहाँ आये। तथा मद्रमद्राद रंगोले के समय में जवाहरात का काम शुरू किया, आपके पश्चात् आपके पुत्र ला० तिथीमलजी ने फर्म के कार्य का संचालन किया। आपके समय में फर्म की अच्छी वज्रति हुई। आपका स्वर्गशाम हो गया। आपके पश्चात् आपके पुत्र ला० जीतमलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आप व्यापार बुरात और मेधावी व्यक्ति थे। अपने अपनी फर्म की बहुत तरकी की। साथ ही फर्म के सम्मान को भी बहुत बढ़ाया। उस समय इस फर्म पर मेसर्स निद्रोमल जीतमल के नाम से जवाहरात का व्यापार होता था। आपका भी स्वर्गशाम हो गया। दुःख की बात है कि आपके पश्चात् आपके पुत्र ला० बुद्धसिंहजी ने कई कारखों की वजह से फर्म की बरबादी कर दी। आपके पश्चात् आपके पुत्र ला० शादीरामजी होनदार व्यक्ति हुए। आप व्यापार चतुर, बुद्धिमान एवं मेधावी सज्जन थे। आपने छिर गोटे का कारखार प्रारम्भ किया तथा अपने पिताजी के द्वारा छोड़े हुई इच्छत को छिर प्रज्त किया। आप मारवाड़ में शादीरामजी छिनारी कालों के नाम से मशहूर थे। आपका स्वर्गशाम १९१८ में हो गया। आपके दो पुत्र हुए। लाला भैरोंदासजी तथा ला० गोकुलचन्द्रजी।

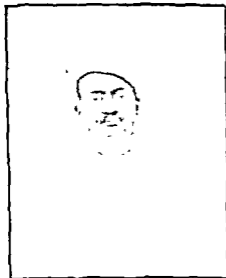
ला० शादीरामजी के पश्चात् फर्म का संचालन ला० भैरोंदासजी करने लगे। आप गोटे ही का व्यापार करते रहे। इसी समय मद्रलसेनजी की दिग्गेशरी में मेसर्स मद्रलसेन भैरोंदास के नाम से एक और फर्म स्थापित किया। तथा लाला शादीरामजी की ही मौजूदगी में आप ही ने गोकुलचन्द्र सुप्रोपान के नाम से एक और फर्म स्थापित की। इस प्रकार फर्म की क्रमशः वज्रति होती गई। ला० भैरोंदासजी का स्वर्गशाम मई १९४४ में हो गया।



लाला हिन्दुचन्द्रजी चोराडिया ( मूवचन्द्र  
हिन्दुचन्द्र ) देहली



लाला हजारीमलजी जौहरी ( रामचन्द्र  
हजारीमल ) देहली



लाला मोहलचन्द्रजी जौहरी ( सादिराम  
मोहलचन्द्र ) देहली



लाला मूलचन्द्रजी बाहलीबाब ( मूलचन्द्र  
१९२२ सम्म ) देहली



वर्तमान में इस धर्म के मातृक ला० गोडुलचन्दजी तथा आपके भतीजे ला० लालजी हैं। आपके दूसरे भतीजे ला० मोहन लालजी का स्वर्गवास हो गया है। ला० लालजी के कनूरचंदजी नामक एक पुत्र हैं। ला० सोहनलालजी के महलचंदजी, हेमच तथा मेहताचंदजी नामक तीन पुत्र हैं।

संवत् १९४५ से ही इस धर्म के प्रधान संवाजक ला० गोडुलचंदजी हैं। आपने सात से अपने पुराने उवाहराव के व्यवसाय को तिर स्थापित किया। संवत् १९८० में आप गेटे के व्यवसाय को बंद कर दिया। वर्तमान में आपकी धर्म सिकं उवाहराव ही का व्यवसाय करती है। इस व्यापार में यह धर्म अच्छी समझी जाती है।

ला० सोहनलालजी भी बुद्धिमान और योग्य सज्जन हैं। आप ला० साहव की देव-रेत में व्यापार का संभालन करते हैं।

इस धर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है :—

देहली—मेसर्स राधाशंकर गोडुलचंद  
 चौधरी चौक ।

यहाँ बैंकिंग तथा उवाहराव का व्यापार होता है। रियासतों को भी यह धर्म माल सजाई करती है। इसके अतिरिक्त कमीशन एजन्सी का काम भी होता है।

**मेसर्स मूरजगल एण्ड सन्स**

इस धर्म के मातृक स्वामिधर के मूल निवासी हैं। आप राणदेवराज जैन जाति के बाह-लोकवा सज्जन हैं। इस धर्म को यहाँ पर लाया मूरजलालजी ने सन् १८८० में स्थापित की। आप केवल १६ वर्ष की उम्र में स्वामिधर से देहली आये इनकी कोई उम्र में ही आपने अपनी व्यापारिक प्रवृत्ति में अच्छी तरफों पर लीं। इस समय आप ही इस धर्म के मेसर्स एण्ड सन्स हैं। पर धर्म उवाहराव तथा फाटं और बचुरियों निवासी का अच्छा व्यापार करती है। लाया मूरजलालजी के इस समय चौब पुत्र हैं। जिनके नाम अशुभ माणिकचन्दजी, गुलाबचन्दजी, निगतचन्दजी, कनूरचन्दजी और जगमूदचन्दजी हैं। आप सब व्यापार में काम लेंगे हैं।

इस धर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है :—

मेसर्स मूरजगल एण्ड सन्स  
 देहली (T. A. Bachliwal)

इस धर्म पर सब प्रकार की खरीदों और बचुरियों निवासी का व्यापार होता है।



## लोहे के व्यापारी

मेसर्स नन्नेमल जानकीदास तथा रायसाहब लाला नानकचन्द्रजी

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान दिल्ली है। आप लोग छण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व सेठ नन्नेमलजी ने कर लोहे का व्यापार जारी किया। सेठ नन्नेमलजी के स्वर्गवास के पश्चात् सेठ जानकीदासजी ने फर्म का संचालन किया। आपने फर्म के लोहे के व्यापार के अतिरिक्त ग्राण्ड आयरन वर्क्स के अपने कारखाने को वन्नवि की और अमसर किया। आपके पश्चात् आपके लघुभ्राता सेठ रामचन्द्रजी ने इसको और भी तरफों पर पहुँचाया। इसकी खास वन्नवि लाला रामचन्द्रजी और बनारसी-दासजी के हाथों से हुई। लाला रामचन्द्रजी ने अपने जीवन में राजसेवा और जातीय सेवा में बहुत सहयोग दिया था। आपका स्वर्गवास सन् १९१० में हो गया। मरते समय आपने एक लाख रुपये की रकम धर्मार्थ निकाली।

लाला रामचन्द्रजी के दो पुत्र हैं रायसाहब लाला नानकचन्द्रजी और लाला दीनानाथजी ( जो जन्म से गूंगे तथा बहरे हैं )।

रायसाहब लाला नानकचन्द्रजी सन् १९२४ में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और १९२५ में न्यूनिशियल कमिश्नर हुए, तथा १९२६ में रायसाहब की सम्मान सूचक उपाधि से विभूषित किये गये। आपने २५००० इन्कस्ट्रट बैंकफेअर शेण्टर में दिया। इस संस्था का शिलारोपण आपके पिता जी के नाम से सन् १९२३ में काउण्टेस ऑफ रीडिंग साइव ने किया। इस शेण्टर के कायम हो जाने से लेडी रीडिंगइत्य स्कूल पब्लिक फायदे के लिए जारी हो गया। इसके सिवाय आपने और भी बहुत सी रकमें पब्लिक कामों में दान की हैं। जिनकी सूचि बहुत बड़ी है।

लाला बनारसीदासजी बड़े व्यापार कुराल और मेघावी सज्जन हैं। आपके हाथों से फर्म को बहुत तरफों हुई। आप दिल्ली आयर्नमर्चेंट्स एनोसिएरान के प्रेसिडेण्ट हैं।

सन् १९२६ तक लाला रामचन्द्रजी और लाला बनारसीदासजी के धराजों की फर्म सम्मिलित ही थी। मगर दिसम्बर सन् १९२६ में ये दोनों परिवार अलग हो गये हैं।

इस फर्म का सम्मिलित व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१-देहली—मेसर्स नन्नेमल जानकीदास  
आबड़ी बाजार

इस फर्म पर सब प्रकार के लोहे, पीतल, ताम्बे का भारी कारखाना होता है। यह फर्म विलायत से लोहे का इम्पोर्ट करती है। इसके अतिरिक्त बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का भी यह फर्म काम करती है।



स्वामी श्यामप्रसादजी ( नर्मल  
आनंददास ) देहली



श्री बनारसीदासजी श्यामप्रसाद ( नर्मल  
आनंददास ) देहली



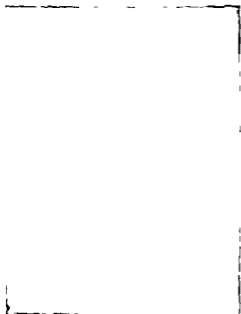
श्रीसद्गुरु श्याम मानहण्डजी (नर्मल आनंददास) देहली



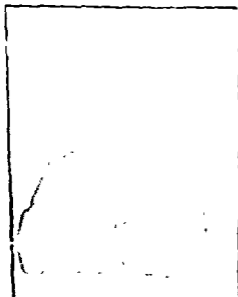
श्याम श्रीआनंदप्रसादजी (नर्मल आनंददास) देहली







डा. रामाशरण श (रामचन्द्रशरणच पासीराम) देहली



- १-ग्रॉण्ड ऑयनें वर्क्स चावड़ी बाजार } इस कारखाने में शूगर मशीनों की दलाई का काम होता है ।
- २-करोबी-मेसर्स नम्रेमल बनारसीदास खारादर (T. A. Mettles) } इस फर्म पर लोहे का इम्पोर्ट व्यापार, वैकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है ।
- इसके सिवा यू० पी० तथा पंजाब में आपके बहुत से गोडाउन्स हैं । जिनके द्वारा शूगर मशीन सप्लाय की जाती है ।

### मेसर्स प्यारेलाल माधोराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान देहली है । यह फर्म बहुत पुरानी है । बहुत समय से ही इस पर लोहे का व्यवसाय होता चला आ रहा है । उपरोक्त नाम से करीब ५५ वर्षों से यह फर्म काम कर रही है । इसकी स्थापना ला० प्यारेलालजी के हाथों से हुई । आप व्यापार सुराज और मेधावी सज्जन थे । आपके ही द्वारा इस फर्म की धरती भी हुई । आप धार्मिक स्वभाव के सज्जन थे । आपका स्वर्गवास संवत् १९०९ में हो गया है ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० प्यारेलालजी के सुपुत्र ला० माधोरामजी हैं । आप बयोद्व सज्जन हैं । आपका ध्यान भी धार्मिक कार्यों की ओर विरोध रहा है । आपने धरने निवाजी की आज्ञानुसार उनके स्मारक स्वरूप सीदाराम बाजार में एक सुन्दर धर्मशाला बनवाई है । इसमें करीब २०० व्यक्तियों के रहने की सुविधा है ।

इस फर्म के व्यापार का परिषय इस प्रकार है:—

- देहली—मेसर्स प्यारेलाल माधोराम } यहाँ वैकिंग तथा लोहा और हाईब्रिडर का व्यापार होता है । इसके साथ ही यह फर्म इम्पोर्ट का व्यापार भी करती है ।
- चावड़ी बाजार  
T. A. Hardware

### मेसर्स भानाचण्ड शुलजारीमन

इस फर्म के मालिक स्वयं निरायी दमीर (अपनर) के हैं । बतौर १०० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना हुई । कुछ २ से इस फर्म पर लोहे की विजायत हो गयी थी । मन् १८७४ में इस फर्म ने एक लोहे की दलाई का कारखाना देहली में खोला । जिसमें अचिन्तर बोनू टैटार होते थे । लेकिन अब बतौर २ सब प्रकार की दलाई का काम होने लग गया है । फर्म के वर्तमान



गोलों। शक्कर के व्यवसाय के लिए आप डेविड साम्बुत कम्पनी के डेनियन नियुक्त हुए। उस समय आपने जानान में भी अपना एक ऑफिस खोला था एवं निज की जहाज सर्विस भी शुरू की थी। फर्म की स्थायी सम्पत्ति को भी आपने खूब बढ़ाया था। आपने करीब ३० लाख की जायदाद कलकत्ते में, ६ लाख की मसूरी में तथा इसी प्रकार देहली और करौची में भी जायदाद बनवाई।

लाला रघूमलजी दानी भी बहुत बड़े थे। सार्वजनिक कार्यों की ओर आपका बड़ा लक्ष्य था। आपने करीब १। लाख रुपये प्रदान कर इन्द्रप्रस्थ का गुरुकुल स्थापित किया। देहली के कन्या-गुरुकुल को एक लाख रुपये प्रदान किया। सन् १९१९ के देहली के शहीदों का स्मारक बनाने के लिए करीब एक लाख रुपये दिया। जिससे परीदी हुई विल्डिंग में इस समय नेशनल हाई स्कूल और यतीमखाना चल रहा है। इसी प्रकार आपने अपने जीवन भर में करीब ४०-५० लाख रुपयों का दान किया। आपका स्वर्गवास सन् १९२६ में हुआ। मरते समय आपने २० लाख रुपयों की जायदाद दान की। जिसके ट्रस्टी धायू घनश्यामदास विद्वाजा आदि कई बड़े २ महातुभाव हैं। लालाजी के कोई सन्तान न थी। अतएव आपने अपनी सम्पत्ति के बराबर चार विभाग किये (१) धर्मपत्नी लाला रघूमलजी (२) पुत्री लाला रघूमलजी (तथा दामाद लाला हंसराजजी गुन) (३) भानजे लाला गोरधनदासजी, और (४) भानजे लाला दीनानाथजी।

वर्तमान में इस फर्म की कलकत्ता, बम्बई, कानपुर एवं करौची ब्रांच का संचालन लाला हंसराजजी गुन एम० ए० करते हैं तथा देहली का कारोबार लाला गोरधनदासजी एवं दीनानाथजी सम्हालते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

दिल्ली—मेसर्स माधोराम बुद्धसिंह चावड़ी बाजार—यहाँ पर लोहे का व्यापार, बैंकिंग और जायदाद का काम होता है। यहाँ आपकी फर्म शूगरकेन मिस्टर मैन्सू, फैब्रिकर भी है।

कलकत्ता—मेसर्स माधोराम हरदेवदास, धरमा इष्टा स्ट्रीट—लोहे का व्यापार और जायदाद का काम होता है।

करौची—मेसर्स माधोराम हरदेवदास मेकलोड रोड, लोहे का व्यापार, बैंकिंग और जायदाद का काम होता है।

बम्बई—मेसर्स माधोराम रघूमल बम्बादेवी नं० २—लोहे का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स जीवनलाल रघुजीवमल—लोहे का व्यापार होता है।



### मेसर्स रामरिचपालमल्ल घासीराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान देहली में ही है। आप अमवाल वैश्य जाति के सज्जन हैं। इस फर्म को देहली में लोहे का व्यापार करते हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म चाँदी सोने का व्यापार करती थी। इस फर्म की स्थापना लाला गंगासहायजी ने की थी। लाला गंगासहायजी का स्वर्गवास हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके पश्चान् आपके पुत्र लाला रामरिचपालमल्लजी ने इस फर्म के काम को सन्हाला। लेकिन आपका स्वर्गवास भी लाला गंगासहायजी के कुछ ही समय पश्चान् हो गया। इस समय इस फर्म के मालिक लाला रामरिचपालमल्लजी के पुत्र लाला घासीरामजी हैं। आप बड़े योग्य, सज्जन और सुधरे हुए विचारों के देशभक्त पुरुष हैं।

श्रीयुक्त लाला घासीरामजी का दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ वैदिक पुस्तकालय में बहुत बड़ा हाथ है। आप समाजिस्त विचारों के सज्जन हैं। इसके अलावा आप इन्द्रप्रस्थ सेवक-मण्डली तथा आर्यसमोज के सदस्य हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स रामरिचपाल घासीराम हीज काजी } इस फर्म पर सब प्रकार के लोहे का व्यापार होता है।  
T. A. Garders

### मेसर्स लक्ष्मणदास रामचंद्र

इस फर्म के मालिक दिल्ली के ही आदि निवासी हैं। इनके पूर्वज लोहे का व्यापार करते थे। इस फर्म की स्थापना लाला लक्ष्मणदासजी ने सन् १८८७ ई० के लगभग की। आपके पुत्र लाला रामचन्द्रजी तदण वय के थे, अतः आप भी व्यापार संचालन में भाग देने लगे और दोनों के सम्मिलित उद्योग से फर्म को अच्छी सफलता प्राप्त हुई। लाला लक्ष्मणदासजी के स्वर्गवास के बाद फर्म का सम्पूर्ण संचालन-भार लाला रामचन्द्रजी ने सन्हाला। आपने अपने पुत्र लाला बंगालीमल्लजी को अपनी देखरेख में व्यापार का काम-काज सिखाया अतः आपके बाद से आपके पुत्र लाला बंगालीमल्लजी ही व्यापार का संचालन कर रहे हैं।

इन फर्म की स्थापना के साथ ही सन् १९८७ में लाला लक्ष्मणदासजी ने मुरादाबाद में एक लोहे का कारखाना खोजा था जो आज भी अच्छी उन्नत अवस्था पर है। इस कारखाने में लोहे की बलाई के साथ २ सौ भी प्रकार का लोहे का माल तैयार किया जाता है। इसका माल अच्छा और सुन्दर होगा है जिसके लिए इस ओर यह काफ़ी मराहूर हो चुका है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स लक्ष्मणदास रामचन्द्र चावड़ी  
बाजार दिल्ली T. A. Loha

मेसर्स—लक्ष्मणदास रामचन्द्र आपन  
फैक्टरी मुपदाबाद

यहाँ पर लोहे का व्यापार तथा बकिंग का काम  
होता है।

यहाँ पर लोहे का एक कारखाना है और इस कार-  
खाने के माल के अतिरिक्त अन्य प्रकार का  
माल भी बिक्री होता है।

## चांदी सोने के व्यापारी

मेसर्स गोवर्द्धनदास शिवनारायण

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान पंजाब है पर अनुमानतया ३ सौ वर्ष से आप  
लोगों का परिवार दिल्ली में ही बस गया है। आप लोग एजी समाज के कपूर सज़न हैं।  
लगभग १२५ वर्ष पूर्व इस परिवार के लाला गोवर्द्धनदासजी ने अपना व्यापार दिल्ली में  
आरम्भ किया था। आपने सबसे प्रथम विभिन्न प्रकार के सिक्कों के विनियम का व्यापार  
आरम्भ किया पर कुछ समय बाद आपने सोने चांदी का काम भी खोल दिया। आपके बाद  
आपके पुत्र लाला शिवनारायणजी ने व्यापार भार सम्हाला आपके समय से फर्म के व्यवसाय  
ने वृद्धि करनी आरम्भ की। लाला शिवनारायणजी के पुत्र लाला भोलानाथजी ने अपने  
समय में फर्म के कार्यों को बहुत अधिक बढ़ा दिया। पर व्यापार संचालन कार्य को आप ३१४  
वर्ष तक ही चला सके थे कि आपका स्वर्गवास हो गया। आपके बाद आपके पुत्र लाला जय-  
नारायणजी ने फर्म का संचालन भार सम्हाला। आपने फर्म के व्यापार को बहुत वृद्ध अवस्था  
पर पहुँचाया। आप व्यापार सम्बन्धी सबाई के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके थे। व्यापारी  
समाज में आपका अच्छा मान था। आपका स्वर्गवास संवत् १९६४ में हुआ। आपके तीन  
पुत्र थे जिनके नाम क्रमशः लाला अयोध्याप्रसादजी, लाला श्यामसुन्दरजी तथा लाला राधा-  
मोहनजी हैं। इनमें लाला श्यामसुन्दरजी ही व्यापार का संचालन करते हैं। आपके दोने  
भाई स्वर्गवामी हो चुके हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला श्यामसुन्दरजी तथा आपके पुत्र बाबू पद्मनाथ वर्क सुन्दर  
लाल तथा आपके भाई स्व० लाला अयोध्याप्रसादजी के पुत्र बा० विश्वम्भरनाथजी और ह  
दयालसिंहजी तथा आपके छोटे भाई स्व० लाला राधामोहनजी के पुत्र हरिप्रसादजी, बा० ज  
भगवानदासजी तथा बा० रामनाथजी हैं।

इस फर्म के व्यापार का संचालन लाला श्याममुन्दरजी करते हैं और आपके पुत्र वा० पद्मनाथजी तथा आपके भतीजे लाला विश्वम्भरनाथजी और लाला हरदयालसिंहजी व्यापार संचालन में योग देते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—गोवर्द्धनदास शिवनारायण  
कटरा नौल दिल्ली

मेसर्स भोलानाथ जयनारायण  
गणेश बाजार  
हॉथ मार्केट दिल्ली

} यह फर्म चाँदी वालों की कोठी के नाम से प्रख्यात है। यहाँ सोने चाँदी की थोक विक्री और बैंकिंग का व्यवसाय होता है।

} इस फर्म पर विलायती कपड़े का थोक व्यापार होता है।

### मेसर्स रतनचन्द ज्वालानाथ

इस फर्म की स्थापना तथा चन्तवि लाला ज्वालानाथजी के हाथों से हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६८ में हो गया। आपके पुत्र लाला ज्योतिप्रसादजी का स्वर्गवास आपकी मौजूदगी ही में हो गया था। इस समय लाला ज्योतिप्रसादजी के पुत्र लाला रामप्रसादजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

रतन चन्द ज्वालानाथ  
दरोता T. A. Ratan

} यहाँ पर चाँदी, सोना जेवर और कमोरान एजन्सी का काम होता है।

### मेसर्स रामसिंह गुलासीदास

यह फर्म संवत् १९१८ में सेठ रामसिंहजी द्वारा स्थापित हुई। आपका मूल निवास-स्थान रेवाड़ी (गुड़गाँव) का है। आप अमवाल वैश्य समाज के जैनी सगजन हैं। गुरु से ही इस फर्म पर चाँदी सोना, हँडी, बिट्टी आदि का काम होता चला आ रहा है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला रामसिंहजी तथा आपके पुत्र वा० गुलासीदासजी हैं। लाला रामसिंहजी सगजन व्यक्ति हैं। वा० गुलासीदासजी अपने पिताजी के साथ व्यापार में सहयोग देते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है :—

देहली—मेसर्स रामसिंह बुलासीदास चौदनी चौक T. N. 5371 Delhi	}	यहाँ बैंकिंग चौकी, सोना तथा गिरवी का काम होता है। थोड़ा काम जवाहरात का भी होता है।
---	---	--

### मेसर्स हुकुमचन्द जगाधरमल जैन

इस फर्म के मालिक गोदाना ( जि० रोहक ) के रहने वाले हैं। आप लोग जैन अमवाल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लाला हुकुमचन्दजी जैन ने दिल्ली में सम्बन् १९४९ में की थी। इस फर्म पर आरम्भ से ही सोने चौकी का व्यवसाय होता चला आ रहा है। इस फर्म की एक दूसरी चौकी और भी है जिसपर कपड़े का व्यापार होता है। कपड़े का व्यापार यह फर्म कमीशन एजेंट के रूप में ही करती है। इसके मालिकों के आदि निवास स्थान पर अच्छी जमींदारी है जहाँ बैंकिंग का काम भी होता है। लाला हुकुमचन्दजी जैन के ४ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः लाला महदूब सिंहजी, लाला जगाधरमलजी, लाला अमृतलालजी और लाला जलकरामजी हैं।

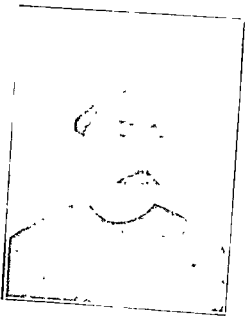
लाला अमृतलालजी अपने आदि निवास-स्थान गोदाना में ही रहते हैं जहाँ आप आनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं साथ ही लैण्ड लार्डम् एण्ड बैंकिंग का काम देखते हैं। शेष तीनों भाई दिल्ली रहते हैं और व्यापार संचालन का कार्य करते हैं। लाला हुकुमचन्दजी जैन व्यापार संचालन का कार्य अपने पुत्रों को सौंप शान्ति लाभ करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

मेसर्स हुकुमचन्द जगाधरमल चौदनी चौक दिल्ली	}	यहाँ सोना चौकी तथा जेवरात और बैंकिंग का व्यवसाय होता है।
मेसर्स महदूबसिंह जलकराम दरोषा कलां दिल्ली	}	यहाँ सभी प्रकार के कपड़ों की आड़व का व्यापार होता है।
मेसर्स हुकुमचन्द अमृतलाल गोदाना ( रोहक )	}	यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।







## वैद्य ज्योतिर हकीम

### दवाखाना हिन्दुस्तानी

भारतवर्ष के मुनमिद्ध हकीम और राष्ट्रीय नेता मसीहूनुल्मुल्क हकीम हाकिज महम्मद अजमल खाँ साहब, जिनको भारत का प्रायः सारा शिक्षित समुदाय जानता है, ने सन् १९०३ में यूनानी दिक्कत को उन्नति और सर्वसाधारण की उन्नति के लिए इस प्रसिद्ध दवाखाने की नींव डाली।

चूँकि इस दवाखाने की नींव डालने में हकीम साहब का महत्सद बहुत ऊँचा और अनुकरणीय था, इसलिए इसकी तरकी भी दिन बदिन बढ़ती गई। और आज तो यह हालत है कि हिन्दुस्तान के बड़े २ वैद्य, हकीम और डाक्टर तथा सर्वसाधारण जनता अर्थाँ मूँदकर इस दवाखाने की घनाई हुई दवाइयों को इस्तेमाल करते हैं और प्रायदा चलाते हैं।

यह दवाखाना देहली में एक बहुत बड़ी इमारत में स्थापित है। इसमें करीब १५० व्यक्ति बचापदा काम करते हैं। जिनकी वनब्राह साल भर में करीब पचास हजार दपया बँटी जाती है। इस समय इस दवाखाने की दैसियत करीब ५० लाख की कृती जाती है। इसके अन्तर्गत होने वाले ट्रान्जेक्शन का अनुमान केवल इसी बात से किया जा सकता है कि बीमारों और खरीददारों के जो राव आते हैं, उनकी औसत तादाद साल भर में करीब एक लाख के होती है। और करीब पचास हजार पासंज साल भर में खाना होते हैं। इसके सिवा मुशामी खरीददारों की संख्या करीब डेढ़ लाख से कम नहीं होती।

हम ऊपर कह आये हैं कि यह दवाखाना हकीम अजमल खाँ साहब ने किसी खास स्वार्थ भावना से प्रेरित होकर नहीं खोला था। प्रत्युत उनकी वरेश्य इस दवाखाने के द्वारा सूतप्राय यूनानी-वैद्यक को जीवित करना था। फलस्वरूप जब इस दवाखाने से अच्छी आमदनी होने लगी तब आपने बहुत प्रयत्न करके देहली में यूनानी और तिब्बती कॉलेज की स्थापना की और इस दवाखाने की कुल आमदनी इस कॉलेज के खर्च के लिए दान दे दी। फलतः इस समय इसकी कुल आमदनी उक्त कॉलेज को दे दी जाती है।

यह कॉलेज सारे भारतवर्ष में अपनी शान का एक ही है। इसमें यूनानी चिकित्सा पद्धति तथा वैद्यक की ऊँची से ऊँची शालीम दी जाती है।

खेद है कि हकीम अजमल खाँ साहब समय से पहले ही जलत नशान होगये। इस समय आपके पुत्र हकीम मौलवी महम्मद जामीज खाँ साहब हैं। आप भी बड़े योग्य और दानिरामन्द हैं। आपने बहुत योग्यता के साथ सब कामों को सम्हाल लिया है।



इस दवाखाने में सब प्रकार की उम्दा दवाइयों, जैसे अर्क, शरबत, खमीरों, माजून, गोलीयों, मुरब्बे, मसमें तथा इनके मेल से तैय्यार की हुई औषधियाँ बहुत बढ़िया रूप में मिलती हैं ।

### हमदर्द दवाखाना

लगभग २५ साल पहले हाफिज़ अब्दुल हमीद साद्व ने इस दवाखाने को शुद्ध और उच्चम यूनानी दवा तैय्यार कर उनका देश में प्रचार करने के उद्देश्य से स्थापित किया । तब से यह दवाखाना बराबर देश की सेवा करते हुए उन्नति कर रहा है और देश तथा विदेश में इसकी प्रसिद्धि हो रही है । इसके स्थापित होने के थोड़े ही दिनों बाद इसकी ईमानदारी तथा सचाई से प्रसन्न होकर दिल्ली के रईस तथा फर्ट क्लास मजिस्ट्रेट स्व० हकीम रजीउद्दीन अहमद खॉ साद्व बहादुर ने इस दवाखाने को अपने संरक्षण में ले लिया और अच्छे २ नुस्तों द्वारा इसका भंडार भरते रहे । अब उनके बाद उनके सुयोग्य पुत्र हकीम नासिरुद्दीन अहमद खॉ साद्व बहादुर रईस तथा फर्ट क्लास मजिस्ट्रेट की देख रेख में यह दवाखाना दिन २ उन्नति कर रहा है और उनके अनुभूत नुस्तों द्वारा इसका भंडार भर रहा है ।

इस दवाखाने में सब प्रकार की यूनानी दवाएँ बहुत बढ़िया और अच्छी मिलती हैं ।

#### बैंक

अलहाबाद बैङ्क लिमिटेड चान्दनी चौक  
इम्पैरियल बैंक ऑफ इण्डिया लि० कोर्टरोड  
देहली प्राञ्च  
कोम्पारटेंटिड बैङ्क लिमिटेड गारस्टन वेस्टन रोड  
मिनले एण्ड कम्पनी लिमिटेड चॉदनी चौक  
मेण्डली एण्ड कम्पनी चॉदनी चौक  
चाटंबैं बैंक आक इण्डिया, चायना, आस्ट्रेलिया  
चॉदनी चौक  
थामस ड्रुग एण्ड सन्स कारमीरी गेट  
नेरानत बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड  
चॉदनी चौक  
फोरेन्स बैंक ऑफ गार्दन इण्डिया चॉदनी चौक  
पंजाब नेरानत बैंक लि० चॉदनी चौक

मकंटाइल बैंक ऑफ इण्डिया लि० चॉदनी चौक  
लायड बैंक लिमिटेड कोर्टरोड  
वेन्यूस इन्स्यूरेन्स बैंक लि० चॉदनी चौक  
सेण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लि० चॉदनी चौक

#### बैंकर्स

मेसर्स ईश्वरोदास बनारसीदास  
” कुँवरसिंह ज्ञानचन्द खारी बाबड़ी  
” कस्तूमल हीराचन्द सीताराम बाजार  
” छुत्रामल एण्ड सन्स चॉदनी चौक  
” दीवानचन्द एण्ड कम्पनी  
” दौलतराम श्रीराम सीताराम बाजार  
” नन्नेमल जानकीदास बाबड़ी बाजार  
” बालाप्रसाद अलोपी प्रसाद धर्मपुरा

- मेसर्स ब्रजमोहनदास लक्ष्मीनारायण फाटरानील  
 " मठबालामल ठाडुरदास  
 " लाता मदनमोहनलाज कृपामाहंदास  
 " सातामुन्वानसिंह रायबहादुर करमीरीगेट

इन्स्यूरेन्स कम्पनीज

- एगस इन्स्यूरेन्स कम्पनी लि० पान्दनी चौक  
 एग्रायर ऑफ इण्डिया लाइफइन्स्यूरेन्स कम्पनी  
 पौदनी चौक  
 ओरिएण्टल गवर्नमेण्ट सिन्स्यूरिटीज लाइफ इन्स्यू-  
 रेन्स कम्पनी लि० पौदनीचौक  
 गोबडन ब्रदर्स लि० इन्स्यूरेन्स डिपार्टमेण्ट  
 कलीकुछरोट  
 ग्रेट इंडियन लाइफ इन्स्यूरेन्स कम्पनी लिमिटेड  
 पौदनीचौक  
 ट्रिप्लिन इन्स्यूरेन्स कम्पनी पौदनी चौक  
 लाबरमूल इन्स्यूरेन्स कम्पनी पौदनी चौक  
 वेनस इन्स्यूरेन्स कम्पनी पौदनी चौक  
 सिविल इन्स्यूरेन्स कम्पनी लि० इन्दीरियत  
 पैक बिल्डिंग  
 टिन्दुरथानो बोआपरेटिव्ह इन्स्यूरेन्ससोसायटी  
 लि० पौदनी चौक  
 टिन्दुरथानो बोमा कम्पनी जुम्मापरिजद

उर्वर्य

- मेसर्स इरिडियन आर्ट पैलेस बरमीरीगेट  
 " बानगोनल एण्ड सन्स पौदनी चौक  
 " बुक एण्ड बेल बेर्ड बरमीरीगेट  
 " सूदकन्द इन्सकन्द भारी बाग

- मेसर्स इरिडियन व्हालरी ट्रेडिंग कम्पनी  
 पौदनी चौक  
 " नवलकिशोर सैरावीलाज भाजीपाडा  
 " कच्चीचन्द रघुनाथदास जुम्मापरिजद  
 ( भाइयरी मर्चण्ट )  
 " बाबूमल एण्ड कम्पनी बरमीरीगेट  
 " बनारसोदास टोटेलज जुम्मापरिजद  
 " मन्नालाज क्यामलुन्दर बरीया  
 " शारदासम गोडुलचन्द पौदनी चौक  
 " सूदन लाज एण्ड सन्स  
 " रामचन्द दत्तारीमल पौदनी चौक

आयन्टरी सर्वेण्ट

- आर्ट पैलेस बरमीरीगेट  
 कच्चीचन्द रघुनाथदास जुम्मापरिजद

सिन्क सर्वेण्ट्ज

- मेसर्स पोदमल ब्रदर्स पौदनी चौक  
 " रिगुमल ब्रदर्स "  
 " बशीदास भगत "  
 " लीटाराम एण्ड सन्स बरमीरीगेट  
 " बधियानल भाबूमल

पेट्रो एण्ड मोटर एण्ड मोटर  
 गुड्स टोल्ज

- अइमिया मोटारकार्डन कम्पनी बरमीरीगेट  
 कर्नेरिजन मोटोमकार्डन कम्पनी बोमस रोड  
 एनेजेरी एण्ड कम्पनी न्यूवर्कलि हाउस  
 एण्ड नसिपर मोटर बसस बरमीरीगेट  
 इंडियन मोटर कम्पनी बरमीरीगेट



अयोध्याप्रसाद आईस फैक्टरी  
प्रभा आईस फैक्टरी  
इम्पीरियल ऑइल मिल्स

मशीनरी मर्चेण्ट्स

इयहो यूरोपियन मशीनरी मार्ट चॉदनी चौक  
पंजाब ऑइल एण्ड मिरानरी स्टोमर्स वन  
वेरटन रोड

निलाजिन एण्ड प्रेस स्टोअर सप्लायर, चावड़ी  
बाजार

मिलिंग ट्रेडिंग कम्पनी अजमेरी गेट  
रत्नजी भगवानजी मिल जिन स्टोअर सप्लायर  
चावड़ी बाजार

साइकल डीलर्स

इम्पीरियल साइकल एण्ड मोटर कम्पनी  
कार्मरी गेट

इ० एस० प्यारेलाल कार्मरी गेट  
एन० एम० किरान एण्ड कम्पनी जुम्मा मस्जिद

कोल मर्चेण्ट्स

अण्डलेई इटर्स लायट बैंक लिमिटेड  
गैलण्डर्स आरयुधनाट एण्ड कं० इम्पीरियल  
बैंक लिमिटेड

पी० सुकरजी एण्ड कम्पनी मोरी गेट  
मिदानिया कोल कम्पनी पंचकुइया रोड  
दह एण्ड कम्पनी इम्पीरियल बैंक लिमिटेड  
रामकिशन प्रेमचन्द जैन अजमेरी गेट

दांत और चमकेबाले

ए० पी० मायुर कार्मरी गेट  
कल्टन एण्ड विलियम स्निथ न्यू देहली  
सी० आर० जैन एण्ड कम्पनी चॉदनी चौक

डाक्टर फेदारनाथ अमृतनिवास न्यू देहली  
जैन एण्ड कम्पनी चॉदनी चौक  
एफ० पल० होटनफोक्त न्यू देहली  
डाक्टर रघुनाथ राजपुर रोड  
लायरेन्स एण्ड मेयो ऑस्टोसिथंस कार्मरी गेट

पत्थर के व्यापारी

देहली स्टोन ड्रेसिंग कम्पनी न्यू देहली  
दीवानचन्द एण्ड कम्पनी न्यू देहली  
महावीरप्रसाद एण्ड सन्स चावड़ी बाजार  
राधाकिशन एण्ड सन्स अजमेरी गेट  
एस० एन० सुदर्शन एण्ड कम्पनी अजमेरी गेट

कार्मरी शाल के व्यापारी

मेसर्स अमीनचन्द जीवनराम जोहरी बाजार  
" कारीराम फेरोराम चॉदनी चौक  
" जमनादास खन्ना " "  
" नगीनचन्द शौरीलाल " "  
" श्यामदास मनीराम " "  
जरी गोश किनारी के व्यापारी

मेसर्स कन्दैयालाल किरानचन्द किनारी बाजार  
" कारीनाथ बाजाप्रसाद "  
" गुलाबसिंह सुलाफीदास "  
" निहालचन्द ज्योतिप्रसाद "  
" विरामभरनाथ श्यामलाल "  
" रामभूनाथ नन्दूमल

फोटोग्राफर्स

ए० आर० इत्त न्यू कलेज हाउस  
टी० पी० पाल कार्मरी गेट  
फोटो सर्विस कम्पनी कार्मरी गेट  
रोयल फोटोग्राफिक कम्पनी कार्मरी गेट



संयुक्त-प्रान्त



UNITED PROVINCES.



## आगरा

### ऐतिहासिक परिचय—

आगरा प्राचीन शहर है। किन्तु मुसलमानों के आने और आक्रमण करने के पूर्व का आगरा सम्बन्धी इतिहास ऐसा अल्पव्यापक है कि जानने का कोई क्याप नहीं। मुसलमानों में से लोदी बंरायने ही प्रथम आगरा में आ बसे थे। सिवन्दर लोदी सन् १५१५ ई० में आगरा में शत्रु बचलित हुए। सिवन्दर के समीप बाराही प्रामाद् उन्होंने बनाया था। बाहर से यहाँ यमुना के पूर्व तट में बाग और प्रामाद् का निर्माण कराया था। पर इनका शिन्द तक अब नहीं रहा है। बाबर सन् १५६८ ई० में पलहपुर मिर्जा में जाने के पूर्व तट आगरा में थे। सन् १६०५ ई० में इनकी आगरा में शत्रु हुई। शाहजहाँ ने ५ वर्ष आगरा में बराबर बराबर के दुर्ग और राजप्रामाद् की सम्मग, रोरवर और कृष्टि की तथा भारत की सर्वोत्तम कृष्टिवा राजमहल का निर्माण कराया। उस समय आगरा का प्रभाव कर्त्तव्य की परम सीमा पर पहुँच गया था। इसके पश्चात् उन्होंने दिल्ली की रचना की। किन्तु राजधानी को पूरी तीर पर दिल्ली में हटा ले जाने के पहिले ही वे अपने दुष्ट औरकलेब के द्वारा आगरा में ही कैद कर लिए गये। आगरा में ही उनका देहान्त हो गया। उसी समय से आगरा की अकर्मि आरम्भ हुई। जाट, सराटे, मुगलमान, जिसे बना उन्होंने ही आगरा को हस्तगत किया। अन्य में सन् १८०३ ई० में आगरा अहमदों के अधिकार में आया।

### सर्वांगीर स्थल—

आगरा शीकरवपुरी है। आगरा को कबला सुन्दर शहरों में ही बनाया। शहरों के दिशि की कृष्णिकाओं में विगलितिलि कलिष्ट है—

(१) लालकाल ।

(२) जाला कालि ।

(३) दुर्गाभयल की शोरी कालि, शोरीभयल, शोरीभयल, लालकाल ।

आगरा के सन् १५६६ ई० के सर्वांगीर शहर के दुर्ग का दुर्गाभयल आरम्भ किया। दुर्ग की लाली आगरा का है। दुर्ग के अन्तर ही कालि और लाल है। दिल्ली लाल में आगे का





आगरे का शीशानेवास दिल्ली के शीशानेवास ही की तरह सुन्दर है। इसमें नाना बरों के पत्थरों को जड़कर जो फलों की रचना की गयी है, वह असामान्य शिल्पकलात्मकता की चोखक है। शीशानेवास के सामने चबूतरे पर दो सिंहासन बिद्धे हुए हैं। वे दोनों जहांगीर के बहलाने हैं। इनके बाद ही इम्बाम है।

शीशानेवास के विद्वबाइ जो फाटक है, उससे नदी की ओर के दोमखिले गृह में जाना होता है, जिसका नाम मसान बुर्ज है। यह गृह नूरजहाँ बेगम का था। आगे मुमताजमहल इसी गृह में रहती थी और इसी गृह में कैद रह कर ताजमहल की देखते देखते सम्राट शाहजहाँ का देहान्त हो गया था। जो पहिले हिन्दुस्थान में सम्राट थे, उनके पास उस कैद से मुहानुक्ति के राज्य में जाते समय शाहजहाँ जहाँगार को छोड़ कर और कोई नहीं था। उस समय दिवसान्त का सूर्य ताजमहल के सफेद कलेवर को किरणवर्ती से भागों नहला रहा था। बादशाह प्रियतमा की वस समाधि को मरुटक नियोजन करते थे। धीरे धीरे दिन का आलोक अन्धकार के प्रास में घुस कर अदृश्य हो गया। बादशाह ने अपने कपराधों के लिये विधावा से क्षमा माँग कर क्या कई बाक्यों से पुर्ण को ढाँस देकर अन्तिम सांस को छोड़ा। उनके भी जीवन का आलोक युक्त गया।

सास महल जनाने के एक भाग में है। उसके सामने थंगरी बाग पूर्वकाल के मुगलार्द नमूने का है।

जहाँगीर महल की विशेषता चार ओरों की फेरने ही देखने में आती है।

जुमा मसजिद दिल्ली के नमूने की होने पर भी उसके सौन्दर्य के सामने नहीं ठहर सकती। मीन के शिबसों में ठण्डक का मुख लटने के लिये प्रासाद में कई तहराने हैं।

स्निग्धनीती जटघारा की यमुना के तट पर सङ्गमरमर की श्वेत अट्टालिका ताजमहल का जोड़ा इस जगत में नहीं। शाहजहाँ ने नूरजहाँ के भाई भासक खाँ की बेटी नूरमहल से विवाह किया था। उस समय नूरमहल १९ वर्ष की थी और शाहजहाँ २१ वर्ष के। स्वामी के साथ युद्ध में जा बुखानपुर में नूरमहल की मृत्यु हुई। यह नूरमहल ही मुमताज महल नाम से प्रसिद्ध हुई। शोकार्थ शाहजहाँ की आशा से प्रियतमा की लारा आगरे में लायी गयी। मुमताज महल की स्मृति को स्थिर रखने के लिए शाहजहाँ ने पार कटोड़ रूपया खर्च कर ताजमहल बनाया। बीस हजार मनुष्यों ने १७ वर्षों के परिश्रम से इसका निर्माण किया। ताजमहल वास्तव में ही प्रेम की मधुरिमा का मुख स्वप्न है।

शाहजहाँ ने जब इस अट्टालिका के निर्माण की कल्पना की, तो जनका सहस्र रूप इसको सर्वाङ्गसुन्दर बनाने का हुआ। दिल्ली, बगदाद, मुगलान समरकन्द, सिराज-समी स्थानों से शिल्पकला मनुष्य बुलाये गये। जयपुर, पञ्जाब, निजाम, सिंदल, अरब, चीन, पना, इरान—

## भारतीय व्याकरिणों का परिचय

नाना देशों से सामग्रियों का संग्रह किया गया। उन सामग्रियों में सुषर्ण, रजत, मणिमाणिक्यों की कमी नहीं थी। कषर मूल्यवान मोतियों के ढकन से आच्छादित रखी जाती थी। वे सभी मूल्यवान वस्तुएँ छुट ली गयी हैं। केवल बाकी बचा है, ताजमहल—शाह-जहाँ के प्रेम का साक्षी—भारत की शिल्पकला का नमूना। ताजमहल की कविता अनुभव का विषय है—वर्णन से वह नहीं समझायी जा सकती। ताजमहल केवल अट्टालिका ही नहीं—वह स्वयं भी नहीं, वह हृदय की सुन्दर भावनाओं का दिव्य विकास।

ताजमहल को एक ही बार देखने से उसका स्वरूप ध्यान में नहीं आता बार-बार देखने से ही वह इतना पूरी हो सकती है। विशेषतः उज्ज्वल चॉदनी में उसको बिना देखे उसके माधुर्य-की वाग्मयिक दृष्टि मानों हृदय में नहीं अंकित होती। ताजमहल को देखने के लिये यूरोप और अमेरिका से भी अनेक पर्यटक भारत में आते हैं।

ताज के प्रवेशमार्ग का तोरण भी ताज के ही उपयुक्त है।

दरुना के दूगरे पार इतमाद-उद्दौला की समाधि है। इतमाद-उद्दौला नूरजहाँ बेगम के पिता थे। बेटी ने बाप की समाधि की यह अट्टालिका बनायी। इसको देखने में यह ध्यान में आता है, छि अक्षर के दिनों अट्टालिका बनाने के शिल्प की जैसी परिपाटी थी, वह शाहजहाँ के दिनों बढ़ती गयी थी। जहाँगीर महल और ताज के बनाये जाने के सम्बन्धी काल में इतमाद-उद्दौला की समाधि अट्टालिका बनायी गयी थी।

उस समाधि के समीप चीनी का रीजा और रामबाग है। चीनी का रीजा वा चीनासमाधि रायूर अक्षरजहाँ की समाधि होगी। रामबाग के साथ बाबर की स्मृति-जटित है। बाबर की स्तु के बाद इनका सब समाधि के टिये काबुल भेजा गया था। काबुल भेजा जाने के पहिले वह एनबाग में रखवा गया था। उस बाग की रचना नूरजहाँ ने की थी। उस बाग के समीप और एक बाग था, जो बाबर की बेटी शहजादी जोहरा का था।

विद्यन्ता आगरे से ५ मील दूर है। वहाँ जाने की राह में अनेक पुराने भवन और भवनों के अवशेष हैं। विद्यन्ता में अक्षर की समाधि है। अक्षर ने आप ही उस समाधि अट्टालिका की कल्पना कर स्तु में पूरे उमका निर्माण आरम्भ कर दिया था। उस अपूरे निर्माण की पूर्णता उनके बाद जहाँगीर को करनी पड़ी थी। जहाँगीर ने उस अट्टालिका की कल्पना के सम्बन्ध में भी कुछ कर कर दिया था। मुगलों की सागरण समाधि अट्टालिकाओं से इतना बहुत बेर बन जाता है। इसकी कल्पना का हिन्दू शिल्प में मेल है। बौद्ध-विहार में जैमे बुन्देरे स्तूप का दूर होने है, वैसी ही यह अट्टालिका है। फतहपुर सिक्की में अक्षर ने जो चौक अक्षर का दूर निर्माण करवाया, वह इसी नमूने का है।

व्यापारिक-परिचय

आगरा यू० पी० के अन्तर्गत व्यापार का एक प्रधान केन्द्र है। यहाँ की व्यापारिक गति-विधि और चहल-पहल देखने योग्य है। जैसे तो यहाँ पर मनुष्य की जीवनोपयोगी सभी आवश्यक वस्तुओं का व्यापार होता है। पर प्रधान रूप से रुई, गन्ना, विज्ञहन, जूते, दरियाँ इत्यादि वस्तुओं के व्यापार का यह केन्द्र है। जूते बनाने की यहाँ पर बहुतसी इण्डस्ट्रीज हैं जिनके बने हुए जूते देश के भिन्न २ भागों में जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ की दरियाँ भी सारे भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर संगमरमर की पत्थीकारी का भी अच्छा काम होता है। यहाँ से पास ही दयालबाग नामक एक गुरुकुल के ढङ्ग का विद्यालय है। इस विद्यालय की इण्डस्ट्री डिपार्टमेंट में टूंक, बाले, कैंची, चाकू, जूते इत्यादि बहुत अच्छे बनते हैं।

यहाँ के व्यापारिक बाजारों में बैलनगंज, किनारी बाजार, रावतपाड़ा, जौहरी बाजार इत्यादि उल्लेखनीय हैं। बैलनगंज में गन्ना, रुई और विलहन तथा कमीशन एजन्सी का व्यापार होता है। प्रायः अधिकांश बड़े २ व्यापारियों की दुकानें इसी बाजार में हैं। किनारी बाजार में जूते, दरियाँ, सोना, चाँदी तथा जनरल मर्चेण्डाइज की चीजें बिकती हैं। जौहरी बाजार में कुछ जौहरियों की दुकानें हैं। लोहामण्डो में लोहे का बहुत अच्छा व्यापार होता है।

फैक्टरीज़ और इण्डस्ट्रीज़

कॉटनमिल्स—

आगरा स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लि०—

(इसमें योजना ५५० व्यक्ति काम करते हैं।)

आगरा यूनाइटेड मि० लि० नं० २,३,४—

(इसमें १४५२ आदमी रोज काम करते हैं।)

आगरा यूनाइटेड मि० लि० नं० ५

(इसमें ७२ आदमी रोज काम करते हैं।)

ऑयन फैक्टरीज—

रामचन्द्र लक्ष्मणराम आपन फैक्टरी

गुलाबचन्द छोटे साज आपन एण्ड प्रास

फाक्टरी

छोलाधर कल्याणदास आपन फैक्टरी

मल्लुमल रामप्रसाद आपन फैक्टरी

अयोध्याप्रसाद रामप्रसाद ऑयन एण्ड जनरल

मैटल फाक्टरी

अपनाज ऑयन वर्क्स

पैरय फ्लोअर मिल एण्ड ऑयन फाक्टरी

ऑइल मिल्स

घनरयामदास बैलनाथ ऑइल मि०

यू० पी० आईएल को० लि० बैलनगंज

टैनेरी—

आगरा टैनेरी बाजारगंज

जीन एण्ड प्रेस

न्यू सुकरिसल को० लि० जिन एण्ड प्रेस फैक्टरी

कुलाबा प्रेस कम्पनी लि० बैलनगंज

वेल्ड्स पेटेण्ट प्रेस को० लि० मैरय स्ट्रीट

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

गणेशचन्द्र लखमीचन्द्र के नामसे स्थापित हुई। इसकी स्थापना सेठ तेजकरणीजी की माता श्रीमती जवाहर कुँवर (धर्मपत्नी सेठ साराचन्द्रजी सेठिया) और चौदमलजी की माता श्रीमती राजकुँवर (धर्मपत्नी से० हेटसिंह जी नाहटा) दोनों से सम्मिलित रूप में संवत् १९३० में की। इसके पश्चात् इसका नाम बदल कर मेसर्स तेजकरणी चौदमल रक्खा। इस फर्म की विशेष सन्मति सेठ तेजकरणीजी और सेठ चान्दमलजी दोनों के हाथों से हुई। आप बड़े धरार, व्यापारचतुर। एवं मेधावी सज्जन थे। श्रीयुत तेजकरणीजी का स्वर्गवास संवत् १९७५ में एवं श्रीयुत चौदमलजी का स्वर्गवास संवत् १९७० में हो गया।

आप लोगों के पश्चात् श्रीमती मदनकुँवर (धर्मपत्नी से० तेजकरणीजी) और श्रीमती बसंत-कुँवर (धर्मपत्नी से० चौदमलजी) इन दोनों ने अपने २ बच्चों की नाबालगी में फर्म के कार्य को बहुत ही सुचारुरूप से संचालित किया। इस समय में इस फर्म की बहुत वृद्धि हुई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ तेजकरणीजी सेठिया के पुत्र श्रीयुत लुनकरणीजी एवं सेठ चौदमलजी नाहटा के पुत्र श्रीयुत धीरचन्द्रजी हैं। आप दोनों शिक्षित मित्रनसार एवं व्यापार कुशल व्यक्ति हैं।

इस फर्म के संचालकों का ध्यान दानधर्म की ओर भी बहुत रहा है। आपकी ओर से बीकानेर में एक धर्मशाला तथा जयपुर और आगरा में एक २ जैन मन्दिर बना हुआ है। साथ ही आगरा और बीकानेर में एक २ धार्मिक पाठशाला चल रही है। रायपुर (सी० पी०) में भी आपकी ओर से एक धर्मशाला बनी हुई है। इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक संस्थाओं में आपके द्वारा धरारतापूर्वक सहायता प्रदान की जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

- |  |   |   |
|--|---|---|
| बीकानेर—मेसर्स तेजकरणी चौदमल               | } | यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, रूई, जीरा, ऊन तथा सब प्रकार की कमीशन एजेंसी का काम होता है।  |
| आगरा—मेसर्स तेजकरणी चौदमल<br>बल्लनगञ्ज     |   | यहाँ बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी, रूई, जीरा, ऊन तथा सब प्रकार की कमीशन एजेंसी का काम होता है।   |
| छाब्रलेक—मेसर्स तेजकरणी चौदमल              | } | यहाँ बैंकिंग तथा नमक का व्यापार और कमीशन एजेंसी का काम होता है।                           |
| रायपुर—मेसर्स चौदमल धीरचन्द्र<br>(सी० पी०) |   | यहाँ पद दुकान बड़ी दुकान के नाम से मशहूर है। यहाँ बैंकिंग और कमीशन एजेंसी का काम होता है। |

भारतीय व्यापारियों का परिचय :-  
( तीसरा भाग )



स्व० सेठ सेंगुप्टाजी सेठिया ( तेजकरण  
चान्दमल ) भागसा



स्व० सेठ चान्दमलजी साहू ( तेजकरण  
चान्दमल ) भागसा



साहूजी साहूजी सेठिया ( तेजकरण  
चान्दमल ) भागसा



साहू जी साहूजी साहू ( तेजकरण  
चान्दमल ) भागसा



मुंगेली (विलासपुर)—मेसर्स चॉदमल } यहाँ बैंकिंग चॉदी सोना एवं आदत का काम  
वीरचन्द्र } होता है।

इसके अतिरिक्त तहसील यलौदा बाजार सी० पी० में आपकी जमींदारी में १० गाँव हैं। जिनका चालुकु रायपुर फर्म से है। रायपुर और मुंगेली की फर्म केवल वीरचन्द्रजी नाहटा की है।

### मेसर्स तेजपाल जमुनादास

इस फर्म का हेड आफिस मिर्जापुर है। इसकी और भी शाखाएँ हैं जिसका विवरण इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में पेज नं० ३६८ में किया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ रामेश्वरदासजी हैं। यहाँ यह फर्म गन्ना, जीरा एवं कमीशन का काम करती है। इसका यहाँ का पता बेलनगंज है।

### मेसर्स तुन्दसीराम सीताराम

इस फर्म के संचालक अमवाज वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सन् १८५८ ई० में लाला तुलसीदासजी के हाथों से हुआ। आप अपने पुराने किराने के ही व्यवसाय को बढ़ाने में लगे एवं वसमें अच्छी सफलता प्राप्त की। आपका स्वर्गवास संवत् १९३६ में हो गया। आपके पश्चान् फर्म का संचालन आपके पुत्र लाला सीतारामजी तथा लाला माधोरामजी ने किया। आपके समय में भी इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास भी संवत् १९४१ में हो गया। इस समय इस फर्म के एकमात्र उत्तराधिकारी लाला माधोरामजी के पुत्र लाला कोकामलजी केवल १॥ साल के थे। आपकी बाल्यावस्था में फर्म के फारवार को हुनीम शिवनारामराजी ने अच्छी योग्यता और इमानदारी से संचालित किया। करीब १५ वर्ष की उम्र के बाद लाला कोकामलजी ने फर्म के काम को सन्हाला। संवत् १९८१ में आपने कोकामल गोपालदास के नाम से एक फर्म स्थापित की, जिसपर किराना और रंग का काम होता है।

लाला कोकामलजी ने फर्म के व्यापार को बहुत तरकी दी। आपने अपने नाम से एक बहुत सुन्दर मार्केट बनाया जो सन् १९१५ से बनना शुरू हुआ था वह सन् १९२७ में खत्म हुआ। आपकी ओर से सौराजी में एक धर्मशाला बनी हुई है। इसके साथ ही एक बगीचा भी है। आप स्थानीय सत्तातन्त्रम सभा के प्रेसिडेंट, रामलाला के मंत्री और करीब १५ वर्षों से म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। रायतपाड़ा कन्या पाठशाला के—त्रिमने ३०० बालिकाएँ विद्याभ्यस



करती है—आप तब से पाठशाला स्थापित हुई है तभी से सम्भावित हैं। इसके खोलने में भी आपका बहुत हाथ था। आपके ५ पुत्र हैं। बड़े गोपालदासजी हैं शेष चार पढ़ते हैं।

इस कर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स तुलसीदास सीताराम कोकामल मार्केट रावनगढ़ा आगरा I A ...	}	यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी तथा किराने का व्यापार एवं भारत का काम होता है।
मेसर्स काकामल गोपालदास रावनगढ़ा, आगरा I A ...		यहाँ रंग पेंट तथा कॅमिकल गुड्स का व्यापार होता है।
मेसर्स काकामल गोपालदास नमालू बटारा दहली I A ...	}	यहाँ भी रंग और कॅमिकल गुड्स का व्यापार होता है।
मेसर्स कोकामल गोपालदास जतरल गन्ज कानपुर I A ...		यहाँ रंग पेंट और कॅमिकल गुड्स का व्यापार होता है।

### मेसर्स नन्दराम टोटेलाल

इस कर्म के मानिकों का भावि निवास स्थान आगरा है। आप लोग एंग्लो-इण्डियन वैश्य समाज के सभ्य हैं। इस कर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व नन्दरामजी ने व लाला छोटे लालजी ने आगरा में की थी। इस कर्म की विशेष उन्नति लाला हीरालालजी के समय में ही आरम्भ हुई थी पर विशेष उन्नति लाला सुशीलदासजी के समय में हुई। आपने इस कर्म को यहाँ की सम्पन्न वर्गों की धैर्यी पर चढ़ाया। आपके बाद कर्म के वर्तमान मानिक राय बहादुर सेठ मुरजमानजी ने कर्म को सबसे अधिक उन्नत अवस्था पर चढ़ाया।

रायबहादुर सेठ मुरजमानजी यहाँ के प्रतिष्ठित नागरिक हैं। आपका यहाँ के सरकारी काम में सरलता प्रभाव है। आप अतिरिक्त मैजिस्ट्रेट और गवर्नमेंट ट्रेझरर हैं। आप आगरा

एलेक्ट्रिक कम्पनी आदि कितनी ही क्वाइन्ट स्टाक कम्पनियों के हायरकेटर हैं। यहाँ के व्यापारी समाज में आपका बहुत बड़ा आदर और मान है। आप मुशिक्षा प्रसार के पक्षपाती हैं। आपने अपने नाम से एक हायस्कूल स्थापित किया है। आपको इमारतों का बड़ा शौक है। आगरे की दो प्रसिद्ध इमारतें भी आपके ही अधिकार में हैं। एक में स्वयं आप सपरिवार निवास करते हैं और दूसरी जो शोरेवाली कोठी के नाम से प्रसिद्ध है एक दर्शनीय इमारत है। इसका दुवष्टे पर का बगीचा तथा इमारत पर आपका कराराया सोने का काम प्रेक्षणीय है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक राधकहादुर सेठ मुरजभानजी तथा आपके छोटे भ्राता सेठ वाराचंदजी और आपके मंजले भाई स्व० सेठ चंद्रभानजी के पुत्र सेठ मदनगोपालजी और जगन्नाथ प्रसादजी हैं। यह फर्म एक सम्मिलित परिवार की सम्पत्ति है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स—मंदराम छोटेलाळ बेलनगंज आगरा	}	यहाँ हेड आफिस है। तथा रुई, गल्ला वेलहन, का व्यापार और कमीशन का काम होता है। लैण्डलाइस एण्ड बैंक्स का काम भी यहाँ होता है। इस नाम से आपकी तीन दुकानें हैं।
सेठ चुभोजाल बेलनगंज		} यहाँ बैंकिंग तथा आइत का व्यापार होता है।
मेसर्स—वाराचंद मदनगोपाल बेलनगंज आगरा	}	यहाँ आइत और हुण्डी, बिट्टी का काम प्रधान रूप से होता है।

### मेसर्स वंशीधर शिवप्रसाद

इस फर्म का हेड आफिस जयपुर है अतः इसका सचित्र परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजस्थान विभाग में पृष्ठ ६१ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बेलनगंज में है जहाँ यह बैंकिंग, हुण्डी, बिट्टी तथा कमीशन का काम करती है। यहाँ का तार का पता Star है।

### मेसर्स माणिकचंद रामन्याय

इस फर्म का हे० आ० यहाँ है। पर इसका विरोध परिचय मन्सि में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपड़ा, बैंकिंग तथा मकानाज के धिराये का काम करती है। इसका आफिस कन्ट्रानेम्प में है तथा तार का पता Manik है।

### मेसर्स मथुरादास पदमचन्द

इस फर्म के मालिक सेठ पदमचन्दजी हैं। आप खखेलवाल जैन जाति के सज्जन हैं। आपने २८ वर्ष पूर्व इस फर्म को स्थापित किया और चञ्चलता की।

आपका व्यापारिक-परिचय इस प्रकार है।

आगरा—मेसर्स मथुरादास पदमचन्द बैलनगंज—इस फर्म पर बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।

### रायचहादुर मेसर्स मूलचन्द नेमिचन्द सोनी

यह फर्म अजमेर के सुप्रसिद्ध धनिक मेसर्स जवाहरमल गन्धीरमल सोनी की एक शाखा है। आपका विस्तृत परिचय अनेक पत्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के अन्तर्गत दिया गया है।

इसकी उपरोक्त आगरा शाखा के अन्तर्गत सेठ मगनलालजी पाटनी बैंकिंग पार्टनर हैं। आप ही इसका मैनेजमेण्ट करते हैं। आप बड़े व्यापारकुशल और बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

आपके परिवार की ओर से आपके मूल निवास-स्थान मारोठ में पाटनी दि० जैनधर्मशाला, पाटनी बोर्डिंग हाउस, पाटनी जैन-पाठशाला, पाटनी जैन लायब्रेरी तथा पाटनी जैन औपचार्य बने हुए हैं। इससे आपके जातीय प्रेम का सहज ही पता लगता है।

आपके इस समय दो पुत्र हैं। जिनके नाम श्रीयुक्त नेमिचन्दजी तथा श्री सौभागमलजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आगरा—मेसर्स मूलचन्द नेमिचन्द  
बैलनगंज  
T. A. Soni

} इस फर्म पर बैंकिंग, गल्ला, कपास और कमीशन एजन्सी का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

### मेसर्स रेलचन्द लूंकड़

इस फर्म के संघालकों का मूल निवास-स्थान फजौदी ( जोधपुर ) का है। आप ओसवाल सनात्र के सज्जन हैं। संवत् १९०५ में सेठ रेलचन्दजी के पिता मुत्तानचन्दजी यहाँ आये। तथा मेसर्स लक्ष्मीचन्द गणेशदास के यहाँ मुनीमान का काम किया। संवत् १९२४ के करीब रेलचन्दजी अपने रिता के साथ यहाँ आये। यहाँ आने के कुछ समय बाद आपने अपने ही नाम से इस फर्म की स्थापना की। इसकी विरोध चञ्चलता आप ही के हाथों से हुई। इस फर्म



श्रीयुग मगनमलत्री पाटनी भागता ।



श्रीयुग हीराचालत्री पाटनी भागता ।



स्व० सेठ बुग्दुनदासजी  
(नाश० हर०) मधुता ।



श्रीयुग मगनमलत्री पाटनी S/o मगनमलत्री पाटनी भागता । स्व० सेठ बुग्दुनदासजी





पर क्रमशः आदृत, सूत और बैकिंग का काम होने लगा। जो वर्तमान में भी चल रहा है। आपका स्वर्गवास १९८६ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक सेठ रेलचंदजी के पुत्र सेठ नेमीचन्द्रजी तथा सेठ भूलचन्द्रजी हैं। आप दोनों ही फर्म के कार्य का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—रेलचन्द्र इंद्रचन्द्र  
बेलनगंज आगरा

} बैकिंग, काटन तथा सूत का व्यापार होता है। यह फर्म कृष्णा मिल्स लि० व्यापार, महाराजा कृष्णागढ़ मिल्स कृष्णागढ़, आस्ट्रोडिया मिल्स अहमदाबाद, नहरअली मिल वज्रैन, एवं भगीरथी मिल जलगाँव के सूत की एजेंट है। सूत के व्यापारियों में यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है।

### मेसर्स वृद्धिचन्द्र इन्द्रचन्द्र

इस फर्म के मालिक ओसवाल सनाज के चोरङ्किया सञ्जन हैं। यह परिवार बहुत समय से आगरे में वास कर रहा है। बादशाही जमाने में इस फर्म के पूर्वज शाही ज्वैलर्स थे। उस समय इनको मुहम्मद की पदवी भी प्राप्त थी।

इस फर्म की वरिष्ठ वर्तमान नाम से स्थापना सन् १९७४ में सेठ इन्द्रचन्द्रजी ने की। आप बड़े व्यापारकुशल और युद्धिमान सञ्जन हैं। और यही कारण है कि इतने थोड़े ही समय में आपने इस फर्म की अत्यधिक उन्नति की, और प्रतिष्ठित फर्मों की नामावली में इसे स्थानापन्न कर दिया।

सन् १९८० में आपने कमिपानी की ही प्रेम रिनिंग परक वॉकिंग कम्पनी लिमिटेड की सोल एजन्सी ली। अतः जो बुद्धिमान यह वैपार करता है वह सब आप ही फर्म के द्वारा विकता है।

इस समय इस फर्म के मालिक स्वयं सेठ इन्द्रचन्द्रजी तथा आपके पुत्र बालू सुगनचन्द्रजी हैं। यह फर्म प्रथम रूप से सूत और रुई का व्यापार करती है। साथ ही बैकिंग का व्यापार भी होता है—

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आगरा—मेसर्स वृद्धिचन्द्र इन्द्रचन्द्र  
बेलनगंज  
T. A. Indra

} यहाँ आपका हेड ऑफिस है। वहाँ बैकिंग रुई, सूत और कमीशन एजन्सी का काम होता है।





साय्य भारोसेण्णसजी जीव ( बेनीराम उत्तमचन्द्र ) भागसा

साय्य वीनेन्द्रसारमजी जीव ( बेनीराम उत्तमचन्द्र ) भागसा



बसंदास जीव





इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आगरा—मेसर्स बेनीराम उत्तमचंद्र राजा की मण्डी T. A. Digmaber	}	यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है तथा देरी विदेरी कपड़े का योक व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है।
आगरा—उत्तमचन्द्र मोतीलाल राजा की मण्डी		बैङ्कमें, गवर्नमेण्ट कन्ट्राक्टस एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट डीलर्स तथा साड़ी फालीन, दरी, एण्ड रिपेटेड ड्रॉप मर्चेण्ट्स
आगरा—मेसर्स रामभरोसे रामनारायण राजामण्डी	}	इस फर्म पर पगड़ी, दरी आदि का योक व्यापार तथा गवर्नमेण्ट कन्ट्राक्ट का काम होता है।
आगरा—यू० बी० हाईग एण्ड प्रिटिंग ड्रॉप फैक्टरी आगरा		इसमें सभी प्रकार की रेंगई और छपाई का उत्तम काम होता है।
आगरा—आर० जे० इलेक्ट्रिक इन्जी- नियरिंग कम्पनी T. A. Bijli	}	यहाँ गवर्नमेण्ट कन्ट्राक्ट का काम होता है।
आगरा—जैनेन्द्र इम्प्राइडरी वर्क्स राजामण्डी		यहाँ पर सब प्रकार की चिकन और बूटी काटने और दमाल आदि तैयार करने का काम होता है।

### मेसर्स बंसीधर गंगामसाद

इस फर्म का स्थापन संवत् १९१४ में लाला गङ्गाप्रसादजी के हाथों से हुआ। इसके पहले लाला बंसीधरजी अपने ही नाम से सूत एवं खाड़ी का व्यापार करते थे। संवत् १९१४ से ही ला० गंगामसादजी ने कपड़े का व्यापार शुरू किया। आप ही के हाथों से इस फर्म की विशेष तरकीब मिली। आरने केवल १३ वर्ष की आयु से व्यापार शुरू किया था। आपके स्वर्गवास संवत् १९५८ के करीब हो गया। आपके पत्रानु आपके पुत्र नमोमलश्री वर्तन नारायणशामजी ने इस फर्म का संचालन किया। आपके सामने ही आपके पुत्र लाला ब्रजमोहनलालजी फर्म का संचालन करने लग गये थे। सेठ नारायणदासजी का स्वर्गवास संवत् १९७८ में हुआ। लाला ब्रजमोहनजी ने संवत् १९०४ से अपनी फर्म पर विलायती कपड़े का व्यापार बंद कर मिलों की एजन्सी का काम शुरू किया जो आज तक उपवावस्था में संचालित हो रहा है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० ब्रजमोहनलालजी एवं आपके छोटे भाई लाला विश्वरामचन्द्रजी हैं। आप दोनों सज्जन मिलनसार एवं मेधावी व्यक्ति हैं।

आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेमर्स बंसीधर गह्वारभाद  
बेलनगञ्ज, आगरा  
T. A. Satia

मेमर्स बंसीधर गह्वारभाद  
न्यू ट्राय मार्केट  
दिल्ली  
T. A. Honesty

यहाँ कपड़े एवं सूत का व्यापार होता है। यह फर्म  
महाराजा मिल बड़ौदा, महारानी मिल बड़ौदा।  
शिवाजी मिल बड़ौदा, न्यू बड़ौदा मिल बड़ौदा,  
न्यू टेक्स्टाइल मिल अहमदाबाद, भारतखण्ड  
टेक्स्टाइल मिल अहमदाबाद, सुविती मिल  
अहमदाबाद आदि मिलों के कपड़े की एजेंट है।

यह फर्म करीब ४ वर्ष से स्थापित है। यहाँ भी  
उपरोक्त मिलों के कपड़े का व्यापार होता है।

### मेमर्स बन्नीदाम बॉकेलाल

इस फर्म के मानिकों का मूल निवासस्थान आगरा ही है। आप अमवाल वैश्य जाति के  
सन्तान हैं। इस फर्म की स्थापना करीब ७५ वर्ष पूर्व लाला बन्नीदासजी के द्वारा हुई। उस समय  
मे इस फर्म पर आपने देशी कपड़ा, पगड़ी, जोड़ा, दरी, गाढ़ा इत्यादि का काम शुरू किया। ला०  
बन्नीदासजी के शिष्यों में इस व्यापार में अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवाम संवत् १९५० में हुआ।  
आपके समय से ही आपके पुत्र ला० बॉकेलालजी फर्म का कार्य संचालन करने लग गये थे।  
आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की। आप व्यापार कुराल सन्तान थे। आपका स्वर्गवाम १९५५  
में हो गया। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र लाला शोनीमलजी ने संभाला। आपने  
कैर भी कई प्रकार के कपड़े का व्यापार अपनी फर्म पर करना प्रारम्भ किया। इस व्यापार को  
आपने अच्छी उन्नति दी। आप व्यापारकुराल एवं मेधावी सन्तान थे। आपका स्वर्गवाम संवत्  
१९०६ में हो गया।

बन्नीदाम में इस फर्म के मानिक ला० शोनीमलजी के पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः लाला  
बन्नीमलजी, लाला रामकृष्णजी, लाला भगवानदासजी एवं ला० विमलदासजी हैं। आप  
जैसे सन्तान इस समय फर्म का संचालन करने हैं। इस फर्म की यहाँ अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्म के संचालकों का दानपर्व की ओर भी अच्छा लक्ष्य रहा है। आपकी ओर से  
बहुत से करों व स्तूप की दूरी पर एक गोविन्दजी का मन्दिर बना हुआ है। समकालीन  
ही एक बर्तिका लागू हुआ है। वहाँ हर साल आठन सुदी ८ को मंडाए होगा है जिसमें करीब

८००, १००० रायु-आरुण भोजन पाते हैं। इसके अतिरिक्त रामारमही के दरियानाय में भी आपकी ओर से एक देवी जी का मन्दिर बनाया हुआ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—श्रीदास चौकिलास राजामंही, आगरा T. A. Peetam	}	यहाँ सब प्रकार का देशी और विजायती कपड़े का व्यापार एवं आदत का काम होता है। यहाँ से यहाँ की पैजय भी बनाकर बाहर भेजी जाती है।
मेसर्स—श्रीनीमल रामकृष्ण राजामंही—आगरा		यहाँ देशी पगड़ी, जोड़ा, गादा दरी, खादी आदि का व्यापार होता है।

### मेसर्स मकरनलाल रामस्वरूप

इस फर्म के संचालक अमरनाथ वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लाला मकरनलालजी के द्वारा करीब ५५ वर्ष पूर्व हुई। लाला मकरनलालजी लाला नाथूरामजी के यहाँ दत्तक आए थे। नाथूरामजी साधारण स्थिति के व्यक्ति थे। लाला मकरनलालजी ने फर्म स्थापित कर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आप बड़े मिहन्ती थे। साध ही व्यापार बुजाल भी आप काफ़ी थे। यही कारण है कि आपने अपने हाथों से बहुत सम्पत्ति प्राप्त की। सन्वत् १९०६ में ७८ वर्ष की आयु में आपका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक आपके पुत्र हैं जिनका नाम क्रमशः नारायणदासजी, रामस्वरूपजी और राधेलालजी हैं। इनमें से प्रथम नारायणदासजी का अत्यायु ही में स्वर्गवास हो चुका है। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम अमरनाथजी है। आप अभी पढ़ते हैं। शेष दोनों भ्राता फर्म का संचालन करते हैं। आप मिलनसार एवं सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मकरनलाल रामस्वरूप रावतपाड़ा आगरा	}	यहाँ हेठ आदि है। इस फर्म पर बैंकिंग और कपड़े का व्यापार होता है।
मेसर्स—मकरनलाल नारायणदास लौहरी बाजार आगरा T. A. Narayan		यहाँ सूत तथा कपड़े की आदत का काम होता है।
मेसर्स—मकरनलाल राधेलाल धेलनगञ्ज आगरा T. A. Radhay	}	यहाँ रुई तथा गत्ते की आदत का काम होता है।



करीब ६ वर्ष से इस फर्म ने अपनी और एक फर्म खोल कर उसे हेड-ऑफिस बनाया। यहाँ थोक व्यापार होता है। यहाँ के माल में किसी प्रकार का बट्टा नहीं होता। यह फर्म बुलियन मार्केट में प्रधान मानी जाती है। चाँदी-सोने के व्यापारियों में होने वाले आपसी झगड़े इसी फर्म पर खप किये जाते हैं तथा इसी फर्म पर झगड़े की खोल मानी जाती है। अर्थात् किसी का कोई माल कम खोल दे तो यहाँ के खोल की ही सब व्यापारी मंजूर करते हैं।

इस फर्म के वर्तमान संचालक ला० कन्दैयालालजी हैं। उनके तीन सुपुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः रामबाबूजी, गिरधारीलालजी और राधावल्लभजी हैं।

आपकी ओर से राधवल्लभजी में राधिका धरोखटनिहारी महाराज का मन्दिर बना हुआ है। इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

आपकी ओर से राधवल्लभजी में राधिका धरोखटनिहारी महाराज का मन्दिर बना हुआ है।  
 इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—  
 आगरा—मेसर्स कन्दैयालाल धर्मा-  
 प्रसाद दे० आ० जौहरी  
 बाजार T. A. Kanhiya

यहाँ फर्म का हेड-ऑफिस है। तथा चाँदी-सोने के थोक माल की बिक्री का काम होता है। इसके प्रबंधक था० कृष्णस्वरूपजी हैं।

यहाँ चाँदी-सोने का खरीद व्यापार व बने हुए जड़ाऊ जेवर तथा टायमरह का व्यापार होता है। मोती बगैरह का व्यापार भी होता है। इसके प्रबंधक ला० दीनानाथजी हैं।

यह फर्म करीब ३० वर्ष से मार्बल का काम मेसर्स के० एन० बैरय के नाम से करता था। सन् १९२५ से इस नाम से व्यापार करता है। इस फर्म पर संगमरमर की चौकी, पटिया, राशे, मूर्तियाँ, इमारती सामान तथा पत्थरी सामान, जैसे गिताम, रक्षासी, प्याले, पुलदान, पड़ीदान, फोटोफ्रेम, टेबल लेम्प, मात्र व इव माटीय मॉडल आदि का व्यापार होता है। यह फर्म हायरवेक स्थानों से माल भंगवानी है तथा अपने कारखानों से उसे बनवा कर पाठिरा करता कर व्यापार करवाती है। आपके यहाँ के ताज में इलेक्ट्रिक-लाइट भी लगी हुई है। यह भारत का खे-राज मार्ग है तथा यह फर्म बादर गाँव जाकर मंदिर इमारत बगैरह का काम तथा टेबा भी लेती है। इसके प्रबंधक ला० रामोदरदासजी हैं।

आगरा—मेसर्स कन्दैयालाल गोवर्धन  
 दास किनारी बाजार

आगरा—जौहरी मार्बल वर्कर्स  
 जौहरी बाजार  
 T. A. Kanhiya  
 T. P. H. 165.

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आगरा—मेसर्स बंसीधर सुमेरचंद एण्ड को  
बेलन गंज  
T. A. Tubes. T. Ph. 69

यहाँ लोहे के सब प्रकार के सामान मिल, जौन  
स्टोअर आदि का व्यापार तथा गव्हर्न-  
मेंट कंट्राक्ट का काम होता है। इसके  
अतिरिक्त वारनिश और पेंट का काम  
भी होता है।

आगरा—दी वारोलिया इलेक्ट्रिकल कंपनी  
बेलन गंज  
T. A. Light.

यहाँ कंट्राक्ट्स और इलेक्ट्रिक इम्पोर्ट्स का  
काम होता है।

### मेसर्स भीकामल छोटेलाल

इस फर्म के मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के लोहिया जैन सज्जन हैं। इस फर्म का  
स्थापन सन् १८७५ में लाला छोटेलालजी ने किया। इसके पहले आप दूसरे के सामने में  
व्यापार करते थे। आपके समय में फर्म की साधारण उन्नति हुई। आपके समय से ही आपके पुत्र  
लाला लेखराजजी फर्म के कार्य का संचालन करने लग गये थे। लाला लेखराजजी बड़े चतुर,  
व्यापारकुशल, सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति थे। आपने केवल १४ वर्ष की आयु से व्यापार  
प्रारंभ किया और अपनी व्यापार-कुशल नीति से लाखों रुपयों की सम्पत्ति एवं यश उपार्जन  
किया। आपने रेलवे से बड़े २ कंट्राक्ट किये। समय २ पर गवर्नमेंट से भी बहुत से कंट्राक्ट  
लेकर समय पर काम किया। कई भारतीय राज्यों में भी आपने अपने माल को सप्लाय  
किया। इसी व्यापार में आपने बहुत रुपया कमाया। आपका ध्यान व्यापार की ही ओर रहा  
हो सो बात नहीं थी। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में भी आप बहुत योग देने थे। कई  
सार्वजनिक संस्थाओं को समय २ पर अच्छी आर्थिक सहायता प्रदान करते थे। आपके द्वारा  
कई शुभ दान भी हुए। कहने का मतलब यह कि आप बड़े प्रतिभाशाली एवं धर्मात्मा व्यक्ति  
हो गये हैं। आपका स्वर्गवास संवत् १९८१ में हुआ। आपकी मृत्यु के समय आपको किसी  
प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं हुआ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला लेखराजजी के पुत्र लाला रतनलालजी हैं। आपने  
२१ वर्ष की वय से व्यापार-क्षेत्र में प्रवेश किया। आपने अपने हाथों से अपनी फर्म की और  
भी प्रोत्साहन रोजी। साथ ही लोहे के फेन्सी इमारती सामान बनाने का एक कारखाना भी  
खोला। आपने वारनिश और पेंट की भी एक दुकान स्थापित की। आपका खयाल हमेशा



व० लाला नारायणदासजी (ब०सीधर गंगामसाद) भागसा



स्व० लाला लक्ष्मणराजजी जैन (भोन्नामल टोटेलाल) भागसा



शिचमनारजी सादानी भागसा



स्व० लाला





कर्मचारी की ओर रहता है। आप मिलनसार चतुर और व्यापारकुशल सज्जन हैं। सामाजिक क्षेत्र में भी आप दिलचस्पी लिया करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—भीकामल छोटेलाल (सतीपाड़ा) लोहामंडी आगरा T. A. Ratan	}	यहाँ हेड आफिस है। तथा पेंट, टाईल्स, लोहा एवं पैकिंग का काम होता है। यहाँ कारखाने के यने माल का व्यापार भी होता है।
मेसर्स—भीकामल छोटेलाल मेनबाजार, लोहामंडी आगरा		यहाँ टाटा कंपनी के आपरन बक्सों की तथा विलायती यने हुए लोहे के माल की विक्री का काम होता है।
श्री आपरन फैक्टरी लोहामंडी आगरा	}	यहाँ आपका फैंसी इमारती लोहे के सामान का कारखाना है।

### मेसर्स आर० जी० बांसल एण्ड को०

इस फर्म के मालिक कमलाचर वैद्य समाज के बांसल गोपीय सज्जन हैं। इसका स्थापन सन् 1८९४ में लाला रामगोपालजी के हाथों से हुआ। इसके पहले आपके पिताजी सोना चोरी एवं कपड़े का व्यापार करते थे। शुरू २ में इस कम्पनी ने मारबल, फोटो, एवं ब्रिटिश का काम जारी किया और क्रमशः संचालकों की सुविधानी एवं व्यापारकुशल नीति से इसकी अच्छी उन्नति हुई। लाला रामगोपालजी के चार भाई और हैं। जिनके नाम क्रमशः श्रीधर श्यामसुंदरलालजी की० ए०, श्री शालिग्रामजी, श्री मोठारामजी तथा बालकृष्णजी हैं। पौत्रों ही सज्जन फर्म का कार्य संचालन करते हैं। लाला रामगोपालजी तथा शालिग्रामजी मद्रास में फैक्टरी का, सोठारामजी रोडम का, बालकृष्णजी ब्रिटिश का एवं श्यामसुन्दर-लालजी जनरल मैनेजर का काम करते हैं।

इस फर्म की संगमरमर की फैक्टरी तथा छान मद्रास (जोधपुर स्टेट) में है। वहाँ संगमरमर के तरले, बीड़ी, रकबे, गोला, गलगा, मेजे आदि बस्तुओं के सुन्दरकापूर्वक बनाने की अलग २ कई मशीनें हैं। साथ ही पालिश करने की भी मशीनें हैं। इस फैक्टरी में एक देखी भी मशीन है जो १० टन वट का संगमरमर का पत्थर गदान से बटा देती है। जोधपुर स्टेट रेलवे ने इस कम्पनी की फैक्टरी की सप्लाय भी ही है। यह फर्म इस काम में मद्रास में बहुत अच्छी मानो जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स—आर० जी० बांसल एण्ड को०  
कसेरा बाजार आगरा  
T. A. Tajmodal } यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ फैक्टरी से बनी  
हुई संगमरमर की फैन्सी वस्तुओं की बिक्री का  
काम होता है। साथ ही फोटोग्राफी एवं प्रिंटिंग  
प्रेस का काम भी होता है।

मेसर्स—आर० जी० बांसल एण्ड को०  
मकराना (जोधपुर)  
J. B. Ry. T. A. "Bansal" } यहाँ फैक्टरी है। माज तैयार करवाकर बाहर सप्लाय  
किया जाता है तथा आर्डर आने पर जैसा  
चाहे बनवा दिया जाता है।

आपकी ओर से यहाँ श्री राधिका वंशीवटविहारोजी का रावतपाड़ा में मंदिर बना हुआ है।

## गोटा किनारी के व्यापारी

मेसर्स गुलाबचन्द धन्नालाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागौर है। आप लोग ओसवाज समाज के सुराना सज्जन हैं। इस परिवार को यहाँ आये करीब ३०० वर्ष हुए। पर उपरोक्त फर्म संवत् १९१४ में सेठ गुलाबचन्दजी ने एक सज्जन के सामे में खोली। उस समय इस फर्म पर मेसर्स गुलाबचन्द मोतीलाल के नाम से कारबार होता था। गुरु से ही इस फर्म पर लेस तथा गोटा किनारी का काम होता चला आ रहा है। संवत् १९४६ में साम्ना अलग २ हो जाने से सेठ गुलाबचन्दजी ने अपनी फर्म का नाम मेसर्स गुलाबचन्द धन्नालाल रक्खा। जो इस समय वर्तमान है। सेठ गुलाबचन्दजी के २ पुत्र हुए। बाबू धन्नालालजी एवं श्रीयुत बाबूलालजी इनमें से बाबू धन्नालालजी का सं० १९८५ में ही स्वर्गवास हो गया। सेठ गुलाबचन्दजी व्यापार का सारा कारबार अपने छोटे पुत्र बाबूलालजी पर छोड़कर शांतिलाभ करते हैं।

वर्तमान में इस फर्म का संचालन श्रीयुत बाबूलालजी करते हैं। आप ऊँचे विचारों के व्यापारकुशल एवं मेधावी सज्जन हैं। आपके २ पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः निर्मलचन्दजी, और नौरतनमलजी हैं।

इस फर्म के काम को देखकर लाडं चेम्सफोर्ड, लाडं रीडिंग, लाडं इरविन, बंगाल गवर्नर लाडं लिटन आदि कई हाइ युरोपियन आफिसर्स और कई दूसरे व्यक्तियों ने प्रशंसापत्र दिये हैं।



सेठ गुलाबचन्द धरालाल भागता



पद्मजी (बुद्धिमिह सोहनराज) भागता



भोजिस गुलाबचन्द धरालाल भागता



इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—गुलामचन्द घमनालाल  
किनारी बाजार आगरा  
T. A. Lacey

यहाँ गोटा, किनारी, लेस एवं कलामत्त का व्यापार होता है। इस फर्म का निज का कारखाना है। इसके द्वारा गवर्नमेंट आफिसों एवं वाइसरॉय आदि के यहाँ की बर्दियों में लगाने के लिये लेस के सत्राय का काम होता है।

### मेसर्स बुद्धिसिंह मोहनलाल

संवत् १९२८ में लाला मोहनलालजी के द्वारा इस फर्म का स्थापन हुआ। आप अमवात वैद्य समाज के सज्जन हैं। शुरू से ही यह फर्म गोटा-किनारी का काम करती आ रही है। इस फर्म की विरोध वप्रति आप ही के हाथों से हुई। आपका स्वर्गवास सम्बत् १९५३ में हुआ। आप बड़े मेधावी एवं व्यापारकुशल व्यक्ति थे। आपने आगरे में कैलाश महादेव पर एक मकान धर्मार्थ बनवाया। सौराजी में पब्लिक उपयोग के लिये एक बगीचे का निर्माण कराया। महादेव मण्डानेदर में भी आपने संगमरमर की फर्ती जड़वाई तथा सीढ़ियाँ बनवाई। तथा रावतपाड़ा में आपने एक मन्दिर राधामोहनलालजी का बनवाया। इसके रखरख के लिये आपने एक मकान खरीद कर दे दिया। इसी प्रकार कई सार्वजनिक धार्मिक कार्यों में सहयोग दिया करते हैं। आपने अपने दौहित्र को करीब ८० हजार का भात एवं मकान दिया। आपके पश्चात् फर्म के व्यापार को आपके पुत्र हरदयालदासजी ने सम्हाला। आपका भी संवत् १९६७ में स्वर्गवास होगया।

धर्ममान में इस फर्म के संचालक आपके पुत्र राजनाथदासजी हैं। आप सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके पुत्र राधामोहिन्दजी आपकी देखरेख में व्यापार का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—बुद्धिसिंह मोहनलाल रावत-  
पाड़ा आगरा

यहाँ गोटा-किनारी, जरी का बना भात एवंम आदत का काम होता है। बैंकिंग और जमींदारी का काम भी यहीं होता है।

### गन्ना के व्यापारी

मेसर्स दीतरमल रामदयाल

” वैजकरल चौदमल

मेसर्स वैजपाल अनुनादाम

” नन्दराम दौदेलाल

पुरुषोत्तमदास मकरनडाल

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

- मेसर्स मथुरादास पद्मचन्द्र  
” मूलचन्द्र नेमीचन्द्र  
” सीताराम श्रीकृष्णदास  
” सोनपाल मुन्नालाल  
” हजारीलाल गनेशीलाल  
” हरीशक्त्स सूरजमल

### शकर के व्यापारी

- मेसर्स गंगाप्रसाद रतनलाल  
” गयाप्रसाद बिहारीलाल  
” तुलसीराम शाह  
” मनोरथभगत ध्यानराम  
” स्वार्थराम रामस्वरूप

### लोहे के व्यापारी

- मेसर्स पूरनचन्द्र एण्ड को०  
” बशीधर सुमेरचन्द्र  
” भीखामल छोटेलाल  
” शीतल प्रसाद एण्ड को०

### सूत के व्यापारी

- मेसर्स वृद्धिचन्द्र इन्द्रचन्द्र  
” बशीधर गंगाप्रसाद  
” भक्खनलाल नारायणदास

- मेसर्स महारान लाल रामस्वरूप  
” शिवप्रसाद सारानी  
” सुरजमल चन्द्रलाल

### फिराने के व्यापारी

- मेसर्स गोपीनाथ विष्णुभरनाथ  
” तुलसीराम सीताराम  
” मुन्नालाल बाबूलाल  
” शीतल प्रसाद सुब्रीमल

### जीरा के व्यापारी

- मेसर्स डूंगरमीदास केशरनाथ  
” तनमुखराय अनन्दराम

### गोटे के व्यापारी

- मेसर्स बुद्धसिंह मोहनलाल  
” गुलाबचन्द्र छोटेलाल

### सोने चाँदी के व्यापारी

- मेसर्स छोटेलाल अमीरचन्द्र  
” बाँकेलाल बिहारीलाल  
” वैजनाथ सराफ  
” रामचन्द्र शंकरलाल  
” राधेनाथ बालमुकुन्द

## मथुरा

मथुरा इतिहासप्रसिद्ध और पुराणों में प्रख्यात प्राचीन नगर है। यह नगर मजमएदल के अन्तर्गत है। राधाकृष्ण की जिस प्रेमलीला ने भारत भर के साहित्य और काव्य को सम्पन्न और संजीवित कर रक्खा है, जिसकी प्रतिध्वनि भारत के घर घर में गूँज रही है उस प्रेमलीला का स्थान मथुरा ही है। यह स्थान यमुना के तीरे पर बसा हुआ है। प्राचीन आर्य्य युग की तरह बौद्ध युग में भी यह स्थान बड़ा महत्त्व-पूर्ण रहा और इसके पश्चान् सुसज्जमान आक्रमणकारियों के भी यहाँ पर बहुत से आक्रमण हुए। जिनकी वजह से, आर्य्ययुग की कई स्मृतियों नष्ट हो गईं। जिनके ध्वंसावशेष अब खोद कर निकाले जा रहे हैं। इस समय इस तीर्थ स्थान में यमुनाबाग की छतरी, होली दरवाजा तोरण, राधाकृष्ण का मन्दिर, विजयगोविन्द का मन्दिर, मदनमोहन का मन्दिर, दीर्घविष्णु का मन्दिर, विहारीजी का मन्दिर, मोहनजी का मन्दिर, विश्रामपाट इत्यादि स्थान दर्शनीय हैं।

मथुरा से करीब छः माइल की दूरी पर कृष्ण का व्याघ्र स्थान घृन्दावन बसा हुआ है। मथुरा यदि ऐश्वर्य की लीलाभूमि है तो घृन्दावन माधुर्य्य का विश्राम-स्थल है। यह वही घृन्दावन है जिसकी भूमि के रजःकण तक विद्यालयनी गोपबधूटियों के प्रेमोद्गारों से प्रेम-प्लावित हो चुके हैं। जिस समय गोपबालकों के सिंगे की ध्वनि से घृन्दावन मुखरित होता था, वह समय भारत के लिए कितना सुन्दर और मन मोहक था, वे दिन अब नहीं रहे, पर उनकी स्मृति काल के झुटिल चक्र की अबहेलना करती हुई आज भी भारतवासियों के मस्तिष्क में व्यों की व्यों अङ्कित है।

### व्यापारिक इतिवृत्त

मथुरा एक तीर्थ स्थान है। व्यापारिक क्षेत्रों में इसकी गणना नहीं हो सकती। फिर भी यहाँ सुरसंसारक कम्पनी, सुन्दर शृंगार कम्पनी, नागर मद्रस इत्यादि कई कम्पनियों ऐसी हैं जिनकी औपधियों का प्रचार सारे भारतवर्ष में है। इनकी वजह से व्यापारिक जगत् में मथुरा का अच्छा नाम है। इसके अतिरिक्त यहाँ निवार व सूत्र की रस्तियों भी अच्छी बनती हैं।



यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

### मेसर्स काशीराम जौहारमल

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० प्रमुलालजी एवं प्यारेलालजी हैं। आप खरडेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब ५० वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। इस पर पहले मेसर्स गोपीनाथ काशीराम के नाम से व्यापार होता था। इस फर्म के पूर्व संचालक ला० काशीरामजी और जौहारमलजी के द्वारा इस फर्म की बहुत वृद्धि हुई। जौहारमलजी ने अपने व्यवसाय को खूब बढ़ाया। आपने निज की जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियों भी स्थापित कीं। आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस समय फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मथुरा—मेसर्स काशीराम जौहारमल केलनत गंज T. A. Gvind	}	यहाँ हेड आफिस है। तथा रुई, गल्ला आदि का व्यापार और आदत का काम होता है।
मथुरा—मे० जवाहरमल गयाप्रसाद हालनगंज		” ” ”
मथुरा—मे० लक्ष्मीचंद प्रमुलाल शाहगंज दरवाजा	}	यहाँ जीन और प्रेस है तथा रुई का काम होता है।
फोसीकलां (मथुरा) मे० प्रमुलाल प्यारेलाल		यहाँ आपकी फॉटन जीनिंग फैक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है।

### दी गोपाल ग्रॉथ ट्रेडिंग कम्पनी

इस कम्पनी की स्थापना आज से करीब ५ वर्ष पूर्व हुई। इसकी वर्तमान मालिक यहाँ की प्रसिद्ध फर्म हैं जिनका नाम मेसर्स नारायणदास हरदेवदास, मेसर्स गनेशीलाल मीनामल एवं भरतपुर के हरसेवक बामुदेव हैं। ये तीनों फर्म बहुत समय पूर्व से ही कपड़े का व्यापार करती आ रही हैं। इस कम्पनी में छपाई का काम होता है। यहाँ की छपाई भारतप्रसिद्ध हैं। इस फर्म की आप लोगों के द्वारा अच्छी तरकी हुई है। साथ ही आप लोगों ने कई नये तर्ज के डिजाइन भी निहाले हैं। अपने माल की विरोध विक्री के लिये इसकी एक शाखा बम्बई में भी स्थापित की गई है।

वर्तमान में इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मथुरा—दी गोपाल हॉय प्रिंटिंग कम्पनी	}	यहाँ बड़िया डिम्बाइन के छपे हुए सभी प्रकार के देशी, रेशमी कपड़े तैयार होते हैं। रंग की पकड़ के लिये कम्पनी गैरंटी करती है।
बम्बई—दी गोपाल हॉय प्रिंटिंग कम्पनी		
चिन्नलाल की बाल, भोजेश्वर	}	यहाँ मथुरा का छपा हुआ कपड़ा जैसे साड़ी, धोती वगैरह की बिक्री का काम होता है।

### मेसर्स गनेशीचन्द्र मीनायल

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० लल्लोमलजी एवं ला० केशवदेवजी हैं। आप यहाँ के प्रविष्टिब रईस, जमींदार और बैंकर हैं। ला० लल्लोमलजी स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के चेयर-मैन हैं। आपका ह्रायरस के लल्लोमलज हरदेवदास नामक मीज में साम्य है। आपने मथुरा में जी० आर० पी० लार्डन के पास एक फर्मशाखा बनवाई है। वर्तमान में इस फर्म पर बैंकिंग एवं जमींदारी का काम होता है। यहाँ की गोपाल ह्राय प्रिंटिंग कम्पनी में इस फर्म का साम्य है।

### मेसर्स नारायणदास हरदेवदास

इस फर्म का स्थापन करीब १०० वर्ष पूर्व यहाँ सनातन के सेठ नारायणदासजी एवं उनके पुत्र सेठ हरदेवदासजी के द्वारा हुआ। आर लोगों के समय में फर्म की अचरबी अन्नति हुई। शुरू में आपने कपड़े का व्यापार शरूम किया था। आर लोगों का स्वर्गदान हो गया है। सेठ हरदेवदासजी के सामने ही उनके पुत्र केशवनाथजी का भी स्वर्गदान हो गया था। अचरब आरके पद्मान् इस फर्म का संधान सेठ केशवनाथजी के पुत्र कुम्हणदासजी ने संभालित किया। आरके समय में इस फर्म में बहुत प्रगति थी। आर यहाँ के नानांकित व्यक्ति हो गये हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक आरके पुत्र सेठ गोबिन्ददासजी, सेठ जननादासजी एवं सेठ लक्ष्मणदासजी हैं। आर लोग दोग्गदा से फर्म का संभालन कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मथुरा—मेसर्स नारायणदास हरदेवदास	}	यहाँ बैंकिंग, गन्ना, रई आदि का व्यापार और आर का काम होता है।
और		

मथुरा—मेसर्स नादायणदास हरदेवदास } यह फर्म इम्पिरियल बैंक मथुरा ब्रांच की ट्रेजरर है।  
 फेलाननगंज  
 इसके अतिरिक्त दी गोपाल क्लाय प्रिंटिंग कम्पनी में इस फर्म का साम्ना है।

### मेसर्स एल० पी० नागर एण्ड को०

यह कम्पनी सन् १९१० से स्थापित है। इसके स्थापक श्रीलक्ष्मीप्रसादजी नागर हैं। आप उन लोगों में से हैं जो अपने ही पैरों पर खड़े होकर सफलता प्राप्त करने हैं। आपने शुरू में १००) से अपना व्यवसाय आरंभ किया था। आपकी व्यापार-चातुरी से ही आपने इतनी छन्नति की है। आपकी विशेष छन्नति "संकट मोचन" नामक दवा से हुई। इस समय आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम कृष्णकांत, शिशिरकांत एवं रविकांत है। आपके बड़े पुत्र पुरुषोत्तमलाल का स्वर्गवास हो गया। आप यड़े होनहार थे। कम्पनी की तरफ़ी का भेय आप ही को है। वर्तमान में कम्पनी का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मथुरा—एल० पी० नागर एण्ड को० } यहाँ दवाईयों की विक्री का काम होता है। आपके  
 पीया मंडी T. A. Nagar } कई हजार एजंट हैं। इसी नामसे यहाँ आरका  
 प्रिंटिंग प्रेस भी है।

### मेसर्स बैकामल निरंजनदास

इस फर्म के मालिक लाला निरंजनदासजी ए० एम० एस० टी, बी० एस सी० हैं। यह फर्म यहाँ पर काटन का व्यवसाय करती है। यहाँ आपकी जीन प्रेस फैक्टरी भी है। इसका अधिक परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग के बन्दई विभाग पृष्ठ ७२ पर मेसर्स राय नागरमल गोभीमल के नाम से देखिये। यहाँ तार का पता Pawan है।

### मेसर्स रूपचंद्र गोवर्धनदास

इस फर्म के मालिक मादेश्वरी वैश्य-समाज के जेसलमेर निवासी सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना सेठ रूपचंद्रजी के द्वारा हुई। इसकी छन्नति का साधारण भेय आपको तथा आपके पुत्र गोवर्धनदासजी को है। मगर इसका विशेष भेय गोवर्धनदासजी के पुत्र और इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मिश्रचंद्रजी को है। आप यहाँ के प्रतिष्ठित नागरिक, रईम एवं धर्मदार हैं। आप २४ वर्षों से आन्तरेरी मेजिस्ट्रेट हैं। आप डिस्ट्रिक्ट-मोर्ड के चेयरमेन भी हैं। आपके २ पुत्र हैं बा० रूपचिंशोरजी एवं द्दगनलालजी। बा० रूपचिंशोरजी भी





क्षेत्रपालजी शमा ( सुय सचार्क कम्पना ) मधुस



सद अमृतपाल सा रत्नावाला ( अमृतपाल  
संस्थापक ) विभागाध्यक्ष



श्रीमत् अमृतपालजी ( सुंदर शंकर  
भास्कर ) मधुस



सद अमृतपालजी शर्मावाला ( अमृतपाल  
संस्थापक ) विभागाध्यक्ष

यहाँ के प्रसिद्ध व्यवस्थियों में से हैं। आप भी आपनरो मेजिस्ट्रेट एवं म्युनिसिपैलिटी के तथा कोआपरेटिव बैंक के बार्ड्स केअरमें हैं। आप प्री मेसन के भी मेम्बर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

मयुरा—मेसर्स रूपचन्द गोवर्धनदास	}	यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।
मयुरा—भीराचन्द रूपचिरोर		यहाँ स्टैंडर्ड आइल कम्पनी एवं यमरोल की मयुरा जिले के लिये तेल की एजंसी है।

### मेसर्स मुखसंचारक एण्ड को०

इस फर्म की स्थापना लगभग ४० वर्ष पूर्व मयुरा निवासी पं० क्षेत्रपालजी रामा ने की। वर्तमान में आप ही इसके प्रधान संचालक एवं मालिक हैं। आपने अपनी औद्योगिक प्रतिभा एवं व्यापार क्षमता से इस फर्म की बहुत उन्नति की। शुरू २ में आपने साबुन बनाने का काम प्रारंभ किया। इसमें आपको सफलता मिली। इसके पश्चात् आपने औषधि-निर्माण-कार्य शुरू किया। इस व्यवसाय में आपको अच्छी सफलता मिली। अपनी प्रसिद्ध औषधि मुषासिधु से आपने लाखों रुपये कमाये। इसके पश्चात् आपने विलायत से फेंसी गुड्स एवं षड़ियों का हायरेक्ट इम्पोर्ट प्रारंभ किया। इसके साथ आपने भारतीयों की अभिरुचि के अनुसार प्रामोद्येन रेकार्ड भी भर कर भेजवाये एवं प्रचार किया। इस व्यवसाय में आपको सब से अधिक सफलता मिली और धीरे २ कम्पनी की स्थिति मजबूत और सुदृढ़ होती चली गयी। आपका काम इस समय इतना बढ़ गया कि छपार्ड बगैरह के लिये प्रेस की आवश्यकता महसूस हुई और इसके प्रमाण-स्वरूप आपने एक विराज प्रेस की भी स्थापना की। इस प्रकार उन्नति करते हुए आप आजकल यहाँ के प्रतिष्ठित व्यापारियों में से हैं।

सार्वजनिक कार्यों की ओर भी आपकी बड़ी रुचि रही है। आपने यहाँ गरीबों के लिये बहुत से सुभीते किये हैं। गरीबों के प्रति आपका अच्छा व्यवहार रहता है। इतनी सम्पत्ति प्राप्त करने पर भी आपमें किसी प्रकार का अहंकार नहीं है। आप सादे, सरल एवं मिलनसार स्वभाव हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम विभ्रपालजी, शक्तिपालजी एवं त्रिनेन्द्रपालजी हैं। पं० विभ्रपालजी भी फर्म के संचालन में योग देते हैं।

पं० क्षेत्रपालजी ने यहाँ अपने आफिस आदि के लिये तीन चार भव्य इमारतें बनवाई हैं। एक में आपका आफिस है, दूसरी में मुखसंचारक पोस्ट-आफिस एवं प्रेस डिपार्टमेंट है। तीसरी बिल्डिंग में भी आपका आफिस जा रहा है। वर्तमान आफिस के नीचे आपका शोरूम भी बना हुआ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मथुरा—मुख्यसंचारक कम्पनी

यहाँ घड़ियों, दवाइयों, पुस्तकें, खियों एवं यंत्रों के तैय्यार कपड़े, म्यूजिकल इन्स्ट्रूमेंट्स, इन्फ्रा-इडरी गुब्बस, रबर स्टाम्प, प्रिंटिंग, टाइप फाउंडरी आदि का व्यापार एवं काम होता है। यहाँ इलेक्ट्रिक ट्रीटमेंट भी किया जाता है। आपके भारत के सिवा विदेशों में भी हजारों एजेंट हैं।

### सुन्दर शृंगार कार्यालय

इस कार्यालय के वर्तमान मालिक ला० जगन्नाथदासजी वैश्य एवं आपके पुत्र या० सूरजभानजी, या० चन्द्रभानजी एवं फूलचन्द्रजी हैं। फर्म संचालन आप स्वयं तथा या० सूरजभानजी करते हैं। इस कार्यालय की स्थापना सन् १८८२ में ला० जगन्नाथदासजी के द्वारा हुई। शुरु २ में आपने ठाकुरजी के शृंगार का सामान बनाना प्रारंभ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता हुई अतएव इसीको आपने और बढ़ाया। इसके पश्चात् रामलीला, रासलीला आदि के उपयोगी सब प्रकार की ड्रेस एवं सामान का काम आपने अपने हाथ में लिया। कहना न होगा कि इसमें भी आपने अच्छी सफलता प्राप्त की और कार्यालय की स्थिति को मजबूत एवं दृढ़ कर आपने अपने व्यवसाय को और फैलाया। आपने अपने यहाँ दवाइयों के बनाने का काम तथा पेटेन्ट दवाइयों बाहर से मंगवाने का काम भी जारी किया आपने अपनी प्रसिद्ध औषधि पीयूषसिन्धु से बहुत दफया कमाया। इस समय आपका काम इतना बढ़ा है कि विशासन बगैरह आपने के लिये एक प्रेस की आवश्यकता हुई और आपने एक स्टीम प्रेस स्थापित भी कर दिया। कुछ समय के पश्चात् इसमें प्रकाशन का भी काम होने लग गया।

इस समय कार्यालय का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मथुरा—सुन्दर शृंगार कार्यालय  
पिया 'डी'  
T. A. "Sundergar"

यहाँ सभी प्रकार के नाटक, रामलीला, रासलीला, एवं ठाकुरजी के शृंगार के सामान का व्यापार होता है। गोटे एवं सलमे सिवारों के हार भी यहाँ बनाए जाते हैं। इसके अलावा प्रिंटिंग का काम तथा प्रकाशित पुस्तकों की विक्री का व्यापार होता है। दवाइयों भी हमेशा मिलती हैं। इसका यहाँ शोरूम भी है।

## फिरोजाबाद

फिरोजाबाद पुरानी बस्ती है। यह ई० आई० आर० की मेनलाईन पर अपने ही नाम के स्टेशन से आधा मील की दूरी पर स्थित है। यह यू० पी० प्रांत के आगरा जिले का अच्छा व्यापारिक स्थान माना जाता है। यहाँ प्रधान व्यापार काटन और कांच का है। काटन को जीन करने एवं प्रेस करने के यहाँ कई कारखाने हैं। कांच के भी करीब २५ कारखाने हैं। सन् १९०८ के पहले यहाँ देरी डंग से चूड़ियों बनाई जाती थीं। इसी साल से यहाँ ग्लास बक्सें सुजना शुरू हुए और आज तो इनकी संख्या २५ तक पहुँच गई। इसके अतिरिक्त यहाँ २०० भट्टियों भी चलती हैं। इन कारखानों में विशेष कर रंगीन चूड़ियों तैय्यार होती हैं। इसके अलावा कांच के और भी कई प्रकार के फैंसो सामान भी बनते हैं।

यहाँ के चल-कारखाने इस प्रकार हैं—

- १ अमृतलाल गुलजारीलाल जिनिंग फैक्टरी—इसमें १३२ आदमी काम करते हैं तथा ४८ जीन हैं।
- २ अमृतलाल गुलजारीलाल प्रेस फैक्टरी—इसमें ४३ आदमी काम करते हैं।
- ३ चतुरवेदी मिस्स कं० लिमिटेड—इसमें ७० आदमी काम करते हैं तथा २० जीन चलते हैं।
- ४ वैरय फ्लोअर एण्ड जिनिंग मिस्स कं०—इसमें २० जीन एवं ३५ आदमी काम करते हैं।
- ५ रामचन्द्र मटरूमल कॉटन जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी—इसमें ४८ जीन चलते हैं। तथा १३२ आदमी काम करते हैं।

काँच के कारखाने

- १ इंडियन ग्लास वर्क्स
- २ फोरोनेरान ग्लास वर्क्स
- ३ कादिर बग्घ ग्लास वर्क्स
- ४ गोपीनाथ औहरामल ग्लास वर्क्स
- ५ प्रैण्ट ग्लास वर्क्स
- ६ मनोजलाल ग्लास वर्क्स
- ७ हनुमान ग्लास वर्क्स

तेल के मिल

- १ अमृतलाल गुलजारीलाल आईल मिल
- २ दयामल दाऊमल आईल मिल

यहाँ के व्यापारियों का परिषय इस प्रकार है—

मेसर्स अमृतलाल गुलजारीलाल

इस फर्म के वर्तमान संपादक सेठ श्रीधरजी एवं सेठ पूरनचन्द्रजी हैं। इन लोग अम-  
वाल वैरय समाज के जैनों सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्वपुरुष रानी से सुरजा गये और वहाँ  
से करीब ६० वर्ष पूर्व यहाँ आये। इस फर्म के स्थानक सेठ मानचन्द्रजी के पुत्र अमृतलालजी





मेसर्स रामचन्द्र मटरूमन्

इस फर्म का हेड आफिस फलकत्ता है। यहाँ यह फर्म प्रविष्टित फर्मों में मानी जाती है। इसका बहो कौटन मिल भी है। इसके वर्तमान मालिक सेठ होलारामजी, गौरीशंकरजी एवं चन्द्रयालालजी गोयनका हैं। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के द्वितीय भाग में फलकत्ता विभाग के पेज नं० २४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म रुई का व्यापार करती है। यहाँ इसकी एक जीनिंग फैक्टरी भी है।

मेसर्स हजारीलाल रोशनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक पं० हजारीलालजी चतुर्वेदी एवं आपका कुटुम्ब है। इस फर्म की स्थापना आप ही के द्वारा हुई। आप शिक्षित, मिलनसार एवं व्यवसायकुशल सज्जन हैं। आपके यहाँ पहले जमींदारी का काम होता था, आपने ही व्यवसाय में कदम रखा। व्यापारिक सज्जन होने से आपने अपने व्यापार की क्रमशः अच्छी उन्नति की। गुरु में आपने चतुर्वेदी काटन कं० लि० खोली। इसके पश्चात् सन् १९२६ से हनुमान ग्लास वर्क्स के नाम से एक कॉच का कारखाना खोला। इसमें करीब ८० मन कॉच रोजाना गलता है। पं० हजारीलालजी के परिवार में कई सज्जन हैं। प्रायः सभी ऊँचे शिक्षित और ऊँचे पदों पर काम कर रहे हैं। अभासंगिक होने से इनका परिचय यहाँ नहीं दिया गया है। इस फर्म का संचालन मुशीलचंदजी एवं सुदर्शनलालजी करते हैं। इस फर्म पर कॉच का काम तथा जमींदारी और बैंकिंग व्यापार होता है।

कौटन मरचेंड्स

- मेसर्स अमृतलाल गुलजारीलाल
- ” द्वारकादास प्यारेलाल
- ” पटुमल प्यारेलाल
- ” रामचन्द्र मटरूमन्

गन्ठे के व्यापारी

- मेसर्स अमृतलाल गुलजारीलाल
- ” गुलजारीलाल बेनोप्रसाद
- ” गोपीराम रामचन्द्र

- ” छेदीलाल मुन्नीलाल
- ” मधूलाल बाबूलाल

फपड़े के व्यापारी

- मेसर्स दौलतराम मोतीलाल
- ” चौहरे रामलाल
- ” मूलचन्द परसोत्तमदास

चाँदी-सोना के व्यापारी

- मेसर्स हुंजीलाल रामप्रसाद



करती है। यहाँ इसकी एक जीनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी भी है। इसके वर्तमान मालिक सेठ फूलचंदजी टिकमानी हैं। यहाँ का सार का पता Tikamani है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में पेज नं० ४४ में बम्बई में दिया गया है।

### मेसर्स चुभीलाल शिववस

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ द्वारकादासजी एवं सेठ नारायणदासजी हैं। आप लोगों के पूर्वजों ने सन् १९२५ में इस फर्म की स्थापना की। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

- |   |   |
|---|---|
| मेसर्स—चुभीलाल शिववस शिकोहाबाद<br>T. A. "Ramanand" }                    | यहाँ फर्म का हेड आफिस है। इस फर्म पर कपड़ा, गल्ला, धी और आड़त का काम होता है। |
| शिकोहाबाद—दी रामानंद द्वारकादास<br>कॉटन जीनिंग फैक्टरी<br>एलड आईल मिल } | यहाँ रुई, तेल आदि का व्यापार होता है तथा इस कारखाने के आप मालिक हैं।          |
| मैनपुरी—शिवशंकर महावीर प्रसाद }   | यहाँ गल्ला एवं आड़त का व्यापार होता है।                                       |

### मेसर्स क्षेत्रपाल चूजलाल

इस फर्म के मालिक पल्लोवाल गौड़ माझण समाज के गुट्टा (बीकानेर) निवासी सज्जन हैं। यह फर्म १९५४ में स्थापित हुई। शुरू २ में इस पर धी का व्यापार प्रारम्भ किया गया। धी के व्यापार में इन फर्म की बहुत सफलता हुई। इसके पश्चात् सन् १९१९ में इस फर्म ने एक शरीर का कारखाना खोला जिसमें शुरू २ में रंगीन कोंब का काम होता था। सन् १९२४ से इसमें कोंब के बर्तन बगैर भी बनना शुरू हो गये हैं। आजकल करीब २ लाख रुपये सालाना का माल यह कारखाना पैदा करता है। इनके वर्तमान मालिक पं० चूजलाल जी हैं। आप करीब २५ साल से आर्य-समाज के समासक हैं तथा धी मरचेन्ट्स एसोसिएशन के भी आप समासक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

- |                                      |                                 |
|--------------------------------------|---------------------------------|
| शिकोहाबाद—मेसर्स क्षेत्रपाल चूजलाल } | यहाँ धी और आड़त का काम होता है। |
|--------------------------------------|---------------------------------|

शिकोहाबाद—दी पल्लीवाल  
ग्लास वर्क्स

} यहाँ सभी प्रकार के कौच के सामान बनाने का कारखाना है ।

घी के व्यापारी—

मेसर्स कन्हैयालाल बंशीधर  
” धर्मडीलाल पुरुषोत्तमदास  
” पतोराम मनसुखदास  
” बेणीराम बंशीधर  
” क्षेत्रपाल वृजपाल  
कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स गोपालदास मनोहरदास  
” शुभ्रीलाल शिवशंकर  
” कालधन्व जौहरीमल  
” रामनारायण रामरिज  
” शंकरलाल दामोदरदास  
गल्ले के व्यापारी—  
मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र

मेसर्स धनमुखदास प्रेममुखदास  
” मुरलीधर महादेव  
” रामानन्द द्वारकादास  
” सीताराम राधेजाल

रुई के व्यापारी—

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र  
” रामानन्द द्वारकाप्रसाद

चौड़ी—सोना के व्यापारी—

मेसर्स बनवारीलाल गिरधारीलाल  
” भवानीप्रसाद दाऊदयाल

घीनी के व्यापारी—

मेसर्स धनमुखदास प्रेममुखदास  
” रामानन्द द्वारकादास

## इटावा

इटावा यू० पी० प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है । यह शहर पुराना बसा हुआ है । इसका इतिहास भी बहुत पुराना है । यहाँ एक जीर्ण-शीर्ण अवस्था में एक पुराना किला जमना किनारे स्थित है । कहा जाता है कि यह तत्कालीन कन्नौज के महाराजा जयचन्द का बनवाया हुआ है । इसके अनिश्चित एक ऊँचे स्थान पर मुनि वशिष्ठ जी का मन्दिर बना हुआ है । यह भी अपने प्राचीनता का प्रमाण दे रहा है । यह स्थान देखने योग्य है ।

इटावा ई० आई० आर० की मेन लाइन पर अपने ही नाम के स्टेशन में आधा मील पर बसा हुआ है । यहाँ यहाँ का व्यापार बड़ी उन्नतवस्था में था । यहाँ से करीब ५० हजार रुई की गौंटें बाहर एकमगौंटें होती थीं । अब १२,१२ हजार गौंटें बाहर जाती हैं । घी की बर मंडी है । करीब ५० हजार मन घी यहाँ से बाहर जाता है । गन्ना भी यहाँ से अग्ये

परिमाण्य में बाहर जाया है। विलहन घाना भी यहाँ पैदा होता है। यहाँ का तेल भी और रुई को छोड़ कर शेष का ८० रुपये भर के सेर से एवं भी और रुई का तेल १०० रुपये भर के सेर से होता है।

यहाँ निम्नलिखित जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं—

नन्दकिशोर जगन्नाथ जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी

जुगुमीलाल कमलापत " " "

वेस्टपेटेन्ट कम्पनी लि० " " "

न्यू मुफ्त्सल एण्ड डो० " " "

परसोत्तम जीनिंग कम्पनी

शास्दुल जीनिंग फैक्टरी

मन्मूलाल कन्दैयालाल जीनिंग फैक्टरी

दोरीदाल जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी

### मेसर्स जुगुमीलाल कमलापत

इसका हेड-आफिस बानपुर है अतः विरोध परिचय वहाँ दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक सेठ कमलापतजी हैं। यहाँ यह फर्म कोटन का व्यापार करती है। यहाँ इसकी एक जीन प्रेस फैक्टरी है।

### मेसर्स जवाहरलाल जगन्नाथ

इस फर्म के मालिक जिला कर्माय निशामी बुनक छत्री समाज के सचिव हैं। करीब १०० वर्ष पूर्व जवाहरलालजी एवं आनके पिता ला० रियाजसिंहजी ने स्थापित कर गङ्गा, यो, नमक इत्यादि का काम आरंभ किया था। आनका स्वर्गवास हो गया है। आनके पश्चात् फर्म के काम का संभालन आनके पुत्र ला० जगन्नाथजी ने किया। आन व्यापारबुद्धि व्यक्ति थे। आनके समय में फर्म को बहुत उत्थित हुई। आनने जमींदारी भी खरीदी थी। आनने अपने स्वकार को भीर बढ़ाया। आनने यहाँ एक सोना-चौंदा की फर्म स्थापित की। साथ ही सार्व में कोटन जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी भी खोली। आनका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के संभालक ला० बालूचण्डी तथा आनके पुत्र मदनमोहन लालजी हैं। आन दोनों ही सचिव निचनगर एवं प्याररी महानुभाव हैं।

इस फर्म का परिचय इस प्रकार है—

इटावा—मेसर्स जवाहरलाल जगन्नाथ हुसैन गंज T. A. "Jagadish"	}	यहाँ बैंकिंग, सोना, चाँदी, रुई, गन्ना, विज्ञान- बाना आदि का व्यापार एवं आदत का काम होता है।
--	---	---

### मेसर्स देवीदास माधोराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ माधोरामजी हैं। आप फर्रुद् निवासी अमरपाल बैरय-गमाज के मन्तन हैं। आप १९२० से उपरोक्त नाम से व्यापार कर रहे हैं। इसके पहले इस फर्म पर बलदेवदास देवीदास के नाम से कारबार होता था, जय आपके भाई लोग शामिल थे।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इटावा—मेसर्स देवीदास माधोराम	}	यहाँ जर्मींदारी, बैंकिंग और धोती जोड़े का व्यापार होता है।
------------------------------	---	---

### मेसर्स दिलमुन्तराय राधाकृष्ण

दशक १२५ वर्ष पूर्व लखी समाज के ला० दिलमुन्तरायजी टंडन ने अपने तथा अपने पौत्र के नाम से फर्म स्थापित की। आपके पुत्र का नाम माधोरामजी था। ला० माधोरामजी के २ पुत्र थे ला० कृष्णदेवजी एवं ला० राधाकृष्णजी। आप लोगों के पश्चात् ला० कृष्ण-बलदेवजी के पुत्र ला० शिवनारायणजी ने फर्म का संचालन किया। आपने फर्म के काम को बहुत बढ़ाया। आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपने संवत् १९४८ में अपने तीनों पुत्रों के नाम से अलग २ फर्म खोलीं। आपके पुत्रों का नाम ला० ब्रजकिशोरजी, ला० हनुमन्किशोरजी एवं ला० नन्दकिशोरजी है। संवत् १९५८ में ला० ब्रजकिशोरजी के पुत्र ला० नवनकिशोरजी ने नन्दकिशोर जगन्नाथ के नाम से जीनिंग और प्रेमिंग केबटरी की स्थापना की। आप यहाँ इन्जिनियरिंग एवं डिप्लोमेट बोर्ड के मेम्बर थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। संवत् १९६४ में सेठ शिवनारायणजी का भी स्वर्गवास हो गया। आपके पहले ही आपके दो पुत्रों का स्वर्ग-वास हो चुका था। आप लोगों के पश्चात् फर्म का संचालन ला० ब्रजकिशोरजी ने किया। आपने वर्षोंम हजार रुपये अपने तथा अपने भतीजे रामनाथजी के नाम से एकम रे हाथिस्टन को दान दिये। आपका भी स्वर्गवास सं० १९६८ में हो गया। आपके पश्चात् फर्म का संचालन हनुमन्किशोरजी ने किया। आपने अपने तथा रामनाथजी के नाम से २५०००) रुपये दिग्दू इन्जिनियरिंग बार्दी को दिये। आपके पश्चात् आपके छोटे भाई बंशीधरजी फर्म का

संभालन करने लगे। आपने अपने लड़के विशंभरनाथ द्वारकादास के नाम से एक फर्म और खोली। ला० बंशीधरजी के छोटे भाई देवकीनन्दनजी का स्वर्गवास हो गया। सं० १९७४ से ही आप सब लोग अलग २ स्वतंत्र व्यापार करने लग गये थे।

इस समय फर्म के मालिक बंशीधरजी, रूपकिशोरजी के पुत्र रामनाथजी एवं नन्दकिशोरजी के पुत्र जुगलकिशोरजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

इटावा—मेसर्स दिलसुखराय राधाकृष्ण	}	हेड आफिस है। यहाँ बैंकिंग तथा जर्मींदारी का काम होता है।
इटावा—मेसर्स वृजकिशोर कुंजकिशोर		यहाँ भी बैंकिंग तथा जर्मींदारी का काम होता है।
इटावा—मेसर्स रूपकिशोर	}	यहाँ भी बैंकिंग तथा जर्मींदारी का काम होता है।
इटावा—मेसर्स नन्दकिशोर		यहाँ बैंकिंग, जर्मींदारी, गन्ना, धी इत्यादि का व्यापार एवं आड़त का काम होता है।
इटावा—मेसर्स विशंभरनाथ द्वारकादास	}	सोना-चाँदी, जवाहरात का व्यापार एवं धी की आड़त का काम होता है।

### मेसर्स बाँकेविहारीलाल रूपनारायण

इस फर्म के मालिक अमबाल वैश्य समाज के सन्नन हैं। आपके पूर्व पुरुष पहले पहल फोड़ा, जहानाबाद आये। वहाँ से वे व्यापार के लिये गजालियर गये और वहीं रहने लगे। वहाँ वे खजांची हो गये। परबान् वहाँ से वे लोग भिंड आ गये। भिंड से यह परिवार यहाँ इटावा चला आया। इस खानदान में ला० गोपीनाथजी हुए। उन्होंने गोपीनाथ कुंजविहारी लाल के अलीगढ़ जिले के सिद्धरामऊ नामक स्थान पर शोरे की फोटी खोली। इसी शोरे के व्यापार के कारण आप लोग शोरावाल कहलाये। आपने तथा आपके भाई शीतलप्रसादजी ने नील की फोटीयाँ खोलीं इसमें आपने बहुत सम्पत्ति पैदा की। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया। शीतलप्रसादजी के स्वर्गवास के समय ४८ हजार रुपये दान किया गया। सन् १९०० में आप दोनों भाई अलग २ हो गये थे। शीतलप्रसादजी के पुत्र ला० बाँकेविहारीलालजी



हुए। आपने फर्म की अच्छी तरकी की तथा इसी समय से उपरोक्त नाम से व्यापार होने लग।  
वर्तमान में इस फर्म के मालिक प्रयागनारायणजी, ब्रह्मनारायणजी और श्यामविहारीलालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इटावा—मेसर्स बॉकेविहारीलाल रूपनारायण	}	यहाँ बैंकिंग, जमींदारी एवं गल्ला, रुई और भाद्र का काम होता है।
---	---	---

### मेसर्स मन्नुलाल कन्हैयालाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक जयलपुरवाले राजा गोकुलदासजी के पौत्र सेठ जमुनाशामजी हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ पर हुण्डो, बिट्टी और भाद्र का काम तथा रुई का व्यापार करती है। इसकी एक जीनिंग फैक्टरी भी यहाँ पर है। इसका विशेष विवरण हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बन्धई विभाग पृष्ठ ४१ में दिया गया है।

### मेसर्स श्यामविहारीलाल रमेशचंद्र

इस फर्म के मालिक कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। आप लोगों का मूल निवास स्थान त्रिजा वज्राय का है। मगर आपके पूर्व पुढय व्यापार के निमित्त भटनेर (पंजाब) नामक स्थान में बने गये थे। वहाँ में आपका स्थानदान यहाँ भया। भटनेर से यहाँ आने के कारण आप लोग भटनेर बटजाये। इस स्थानदान में बालचंद्रजी नामक व्यक्ति हुए। आपने इस स्थानदान की बहुत बत्रि की तथा बैंकिंग और जमींदारी का भी बहुत बड़ा काम कैताया। आपके तीन पुत्र हुए, पं० कृष्णचन्द्रजी, हरशंकराजी एवं जानकीप्रसादजी। जानकीप्रसादजी का स्वर्णवाम कल्याण ही में हो गया। आप नीतों ही मज्जन संवत् १९१४ में अलग २ हो गये। इनके फर्म हरशंकराजी के बेटों की है। पं० हरशंकराजी धार्मिक विचारों के पुरख थे। आप प्रकसर कारीबाम करने थे। आपका बड़ी संवत् १९९८ में स्वर्णवाम हो गया। इनके भटनेर का भी स्वर्णवाम हो गया है।

इस स्थान में इस फर्म के मालिक हरशंकराजी के पुत्र श्यामविहारीलालजी बटनेर हैं। इनके रमेशचन्द्रजी नामक एक पुत्र हैं। पं० श्यामविहारीलालजी अतिरिची मति-भूट, श्यामविहारीलाल और प्रसिद्ध इंडिय एवं जमींदार हैं। आपने सन १९०२ में काशील नाम के फर्म स्थापित की। इस पर बी, आई, एल्ल आदि का व्यापार शुरू किया गया। इनका कार्यालयिक बकों की और भी अच्छा स्थान है। आपने २५ हजार रुपये काशी दिग्गु विवर-



नीय व्यासियों का परिचय  
(निःसरा भाग)



श्री ४२० इयान सुन्दरलालजी मोदीवाल  
इटावा



श्री ४२१ केसरीचन्द्रजी (जवाहरलाल द्वारकाधरभादुर)  
करलीबाद



श्री ४२२ इत्यालालजी श्री ४२३ (विश्वनाथ भादुर बल्लभ)  
पुणेबाद



श्री ४२४ श्री ४२५ (श्री ४२५) श्री ४२६ (श्री ४२६)  
पुणेबाद

विद्यालय को एवं करीब करीब ७५ हजार रुपया स्थानीय सनातन धर्म हाईस्कूल को प्रदान किया है तथा आपकी ओर से कई कुर्ये एवं मन्दिर बने हुए हैं ।

इस फर्म को व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

इटावा—रायबहादुर श्यामबिहारी लालजी भट्टेले	}	यहाँ बैंकिंग और जर्मींदारी का काम होता है । आप १३०००) सालाना मालगुजारी गवर्न- मेंट को देते हैं ।
इटावा—मेसर्स श्यामबिहारीलाल रमेशचन्द्र गंज		यहाँ गन्ना, रुई, धी और आदत का व्यापार होता है ।

### रायबहादुर सेठ श्यामसुन्दरलाल

इस फर्म की स्थापना स्व० रा० व० श्यामसुन्दरलालजी सी० आई० ई० फे० आई० एच० ने ४० वर्ष पूर्व की । उपरोक्त रा० व० श्यामसुन्दरलालजी का जीवन प्रायः पोलिटिकल कार्य में व्यतीत हुआ । आप क्रमशः किरानगढ़, गवालियर, अलवर रियासतों में प्रधान मंत्री के पदों पर रहे और बड़ा सम्मान पाया । अपने काल में इन रियासतों में Industry बढ़ाने की चेष्टा की और अधिकांश Industrial कार्य जो इन रियासतों में चल रहे हैं आपके ही स्थापित किये हुए हैं । आप माहेस्वरी समाज में Social & Educational कार्य करनेवाले पहले व्यक्ति थे । आप अखिल भारतवर्षीय वैश्य महासभा के प्रेसीडेंट चुने जा चुके थे । आप रॉयल Royal Famine & Royal Ofiscal कमिशन के सदस्य चुने गये थे । आप इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के १५ साल तक फेलो रहे ।

आपके ४ पुत्र हुए; श्रीबालमुकुन्ददासजी, बालकृष्णदासजी, बालगोविन्ददासजी और बालगोपालदासजी । जिनमें से श्रीबालमुकुन्ददास, बालकृष्णदास का स्वर्गवास हो गया है ।

इस फर्म के मालिक इस समय बालगोविन्ददासजी और बालगोपालदासजी हैं ।

इस फर्म पर रुई, गन्ना, कमिशन और बैंकिंग का कार्य होता है । इनकी सारइल कर्टन जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी इटावा में है तथा दाल और फ्लोअर मिल है । तथा इसके अतिरिक्त इटावा जिले में आपकी जर्मींदारी भी है ।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

इटावा—रा० व० श्यामसुन्दरलाल सारइल फैक्टरी T. A. Sardool.	}	इसका मैनेजमेण्ट पंडित श्रीकृष्णदास जैपुरनिवासी बहुत काल से कर रहे हैं ।
--	---	--

श्री के व्यापारी—

- मेमर्स जयशंकरभाय कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर

श्री के व्यापारी—

- मेमर्स जयशंकरभाय कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर
- ” इन्द्रनाथ कृष्णकर

मेमर्स नागरमज श्रीकृष्ण

- ” बजरेशमहाय जगन्नाथ
  - ” मेवांताल रोषणाल
  - ” मनसुखनाथ ठाकुरदास
  - ” हुलासराय भगवानदास
- श्री-मोना के व्यापारी—
- मेमर्स जयशंकरभाय जगन्नाथ
  - ” वृजमोहनदास राधाशंकर
  - ” बाबूदास आनंदसिंह
  - ” विशम्भरदास द्वारकादास
  - ” हजारीलाल देवीकृष्ण

श्रीशंती सरभंदर—

- मेमर्स गुणा शंकर
- ” गुणा शंकर
- ” गुणा शंकर
- ” जयशंकर शंकर

## मैदपुरी

मैदपुरी का नाम ही नाम के विषय का कुछ कहेंगे हैं। यह शहर आर्य समाज की निरंतर प्रवृत्तियों का ही प्रतीक है। मैदपुरी शहर में ही जयशंकर भी हैं जो शरीर का शरीर नाम के विषय में भी हैं। इस शहर का इतिहास बहुत पुराना है। यह शहर ही है जो भारत में ही है। यह शहर ही है जो भारत में ही है। यह शहर ही है जो भारत में ही है।

मैदपुरी का ही नाम ही नाम के विषय का कुछ कहेंगे हैं। यह शहर आर्य समाज की निरंतर प्रवृत्तियों का ही प्रतीक है। मैदपुरी शहर में ही जयशंकर भी हैं जो शरीर का शरीर नाम के विषय में भी हैं। इस शहर का इतिहास बहुत पुराना है। यह शहर ही है जो भारत में ही है। यह शहर ही है जो भारत में ही है। यह शहर ही है जो भारत में ही है।

व्यापार की दृष्टि से इस स्थान पर किसी प्रकार का व्यापार नहीं है। यहाँ गल्ला घग्गैरह पैदा होता है और वह बाहर भी एक्सपोर्ट होता है मगर बहुत कम। यहाँ रोजाना व्यवहार में आनेवाली वस्तुओं की प्रधान विक्री है और ये ही बाहर से यहाँ आती हैं। आसपास के प्रांत में यहाँ की तमाखू, संदुक, खड़ाऊँ आदि प्रसिद्ध हैं।

यहाँ जैतियों का मन्दिर दर्शनीय वस्तु है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय निम्न प्रकार है—

### मेसर्स गोपीराम रामचंद्र

इसका हेड आफिस फलकत्ता है। यहाँ गल्ला तथा रुई की एरीद शिकोहाबाद वाली फर्म के लिये की जाती है। इसका विद्वत् हाल प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ ४४ पर दिया गया है।

### मेसर्स लालमन मुन्दरलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० मुन्दरलालजी के पुत्र ला० धरमदासजी, ला० नारायण-दासजी एवं ला० मूलचंदजी हैं। आप लोग बड़ेवाल दिगम्बर जैन सन्नत हैं। इस फर्म की स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व शाह लालमनजी ने की थी। आपने ही अपनी व्यापार-खानुरी से इस फर्म की शरकी की। आपके २ पुत्र हुए, शाह मुन्दरलालजी एवं ला० मिजाजी-लालजी। मिजाजीलालजी अलग होकर देहरादून चले गये। वहीं उनके बंशम व्यापार करते हैं। लालमनजी के पद्मान् इस फर्म का संचालन मुन्दरलालजी ने ही सम्हाला। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में फर्म के प्रधान संचालक सेठ धरमदासजी हैं। आप सरल एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

- |                                |   |  |
|--------------------------------|---|--|
| मैनपुरी—मेसर्स लालमन मुन्दरलाल | } | यहाँ फपड़े का थोक एवं मुटकर व्यापार होता है।     |
| मैनपुरी—मेसर्स लालमन मूलचंद    |   | यहाँ गल्ले का व्यापार और आदत का व्यापार होता है। |

पत्नी ने आरती कर्म का काम संभाला और उनके स्वर्गनाम के बाद सन् १८९९ ई० में बाबू द्वारकाप्रसादजी ने उररोक नाम से कर्म का संचालन करने लगे। आपने भी अग्नौ उन्नति की। आपके स्वर्गनामी होने पर सन् १९१९ में आपके वृत्तक पुत्र बाबू केसरीचंद्रजी कर्म के मासिक हुज और तब से आप ही कर्म का संचालन कर रहे हैं। आप होमहार नवपुत्रक हैं।

कर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

परंपरा—उत्तरनाम द्वारका-  
प्रसाद समजी } यहाँ बैंकसं तथा लैण्डवार्ड का काम होता है।

### मेमर्स तुलसीगम धर्मनारायण

इस कर्म के मासिक विभाज ( राजपूताना ) निवासी हैं। आप लोग अमवाज वैद्य-ममाज के छात्र हैं। इस कर्म के आदि संस्थापक सेठ विनोदीरामजी थे। आपने विभाज से भाकर अन्तर दिया था। आपसे बाद कर्म ने चिराने और लोहे के व्यापार में अग्रणी उन्नति की। बंगाल में बेचन जमींदारी और मनाजगी खेतखेत का ही काम यहाँ होता है। कर्म के वर्तमान मासिक सेठ धर्मनारायणजी तथा आपसे पुत्र बा० श्यामनारायणजी तथा देवकीनंदजी हैं।

इस कर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

परंपरा—मेमर्स तुलसीगम धर्मनारायण } यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।

### मेमर्स श्यामलाल मिश्रागोपाल

इस कर्म के मासिकों का आदि निवासस्थान यहाँ का है। आप लोग अमवाज वैद्य ममाज के छात्र हैं। इस परिवार के यहाँ लगभग २५० वर्षों से ईश्वर जी का आराधना और मन्त्रजो का काम होता आ रहा है। अब इस प्रान्त के प्रतिष्ठित एवं श्रीशुभप्र परिवारों में इस परिवार की मज्जा की जाती है। इसका बहुत बड़ा व्यापार प्रथम आगरे में था पर गिराही-विप्लव के बाद सन् १८०० ई० में यह काम बन्द कर दिया गया और तब से यह परिवार यहाँ पर बेचन बैंकिंग और जमींदारी का काम करता है। इस परिवार के पूर्व पुत्र लाला मिश्रागोपालजी ने सन् १८५० ई० में मन्त्रजो अग्रणी मासिक मन्त्रजो की थी। आपसे पुत्र लाला श्यामलालमिश्राजी की जन्मके समय ही प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली महाकुमार्यं थे। आप आर-सेठ हैं। आपकी संस्थापकियों में अग्रणी माग लेने में। आपसे पुत्र लाला श्यामलालमिश्राजी की जन्मके पूर्वों के समय ही ईश्वर जी के ईश्वर और प्रतिष्ठ-







प्राप्त वैकर हैं। आपका बहुत बड़ा मान है। आप आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी हैं। आप सभी अच्छे कामों में अनुराग रखते हैं। आप ही फर्म के प्रधान कर्ता धर्ता हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—श्यामलाल सिद्धगोपाल फरखावादा } यहाँ बैंकर्स एवं लैण्ड लार्डस का काम होता है।

## वैंकर्स एण्ड कमीशन एजेंट

मेसर्स द्वारकादास लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के मालिक बिसाऊ निवासी हैं। आप लोग अमवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना इसके आदि संस्थापक लाला विनोदोरामजी के स्वर्गवास के बाद उनके पुत्र लाला नन्दरामजी ने की थी। इस फर्म पर लोहे और किराने का व्यापार आरम्भ किया गया था पर धीरे धीरे फर्म ने कपड़ा, आलू और तम्बाकू का काम भी किया जो आज ऊँचे दर्जे पर कर रही है। इसके वर्तमान मालिक स्व० लाला लक्ष्मीनारायणजी के पुत्र लाला रामनारायणजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फरखावादा—मेसर्स नंदराम दृकुमबंध } यहाँ हे० आ० है तथा बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है।

फरखावादा—मेसर्स द्वारकादास लक्ष्मी- } यहाँ आलू और तम्बाकू की आइत का काम नारायण } होता है।

फरखावादा—मेसर्स लक्ष्मीनारायण } यहाँ कपड़े की आइत का काम होता है। रामनारायण }

## मेसर्स पन्नालाल वासुदेव

इस फर्म के मालिक चूरु के आदि निवासी हैं। आप लोग अमवाल वैश्य समाज के रोमका सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ पन्नालालजी लगभग १०० वर्ष पूर्व यहाँ आये और व्यापार आरम्भ किया। तब से यह फर्म बराबर उन्नति करती गयी।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ शिवदयालमलजी के पुत्र बाबू सूर्यप्रकाशजी तथा सेठ चन्देयालालजी के पुत्र बाबू गजानन्दजी हैं।



भारतीय व्यापारियों का परिचय  
(तीसरा भाग)



श्री हनुमान्प्रसाद



श्री महाश्वरजी प्रसाद





इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

फरखावाद—मेसर्स कुर्जीलाल साध  
एण्ड सन्स, सधवादा  
T. A. Bhan

यहाँ पर्दा, पलंगपोरा, टैथिलठाय, लिहाफ आदि सभी प्रकार के छपे हुए मराठूर कपड़ों का व्यापार होता है तथा आर्डर से छपाया जाता है और योरुप तथा अमेरिका को भेजा जाता है ।

### मेसर्स बाजीलाल जशवन्तराय एण्ड कम्पनी

इस फर्म के मालिक फरखावाद के ही आदि निवासी हैं । आप लोग साध समाज के सज्जन हैं । इसके संस्थापक सन् १८७४ ई० से रंगाई और छपाई का काम कर रहे हैं । इन लोगों की इस ओर अच्छी लगन है । फर्म के वर्तमान मालिक लोगों ने कितनी ही नुमाइशों में अपना माल बेजकर पदक प्राप्त किये हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

फरखावाद—मेसर्स बाजीलाल जशवन्तराय  
सधवादा T. A. Curtain

यहाँ फरखावाद के छपे हुए कपड़े का व्यापार होता है ।

### मेसर्स भूपनारायण महेशनारायण

इस फर्म की स्थापना सं० १९७८ में हुई थी । इस फर्म पर कपड़े की छपाई का काम होता है और परिचमीय देरों को भेजा जाता है । इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला महेश-नारायणजी तथा ला० हरनारायणजी हैं । आप लोग फरखावाद के आदिनिवासी साध समाज के सज्जन हैं । इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

फरखावाद—मेसर्स भूपनारायण महेशनारायण  
सधवादा

यहाँ पर कपड़े छापे जाते हैं जो विदेश को भेजे जाते हैं ।

### मेसर्स शिवनारायण जगतनारायण

इस फर्म की स्थापना सन् १९२३ में हुई; पर इस फर्म ने अल्प काल में ही अच्छी छत्रति की और विदेश की कितनी ही नुमाइशों में ख्याति प्राप्त की । इस फर्म के वर्तमान मालिक शिवनारायणजी, रामेश्वरनारायणजी, प्यारी मोहनजा तथा कैलारानायजी हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

फरुखाबाद—मेसर्स शिवनारायण जगतनारायण  
सधवाड़ा T. A. Chhabhaia

} यहाँ छपे कपड़े का व्यापार होता है ।

### मेसर्स डंगामल वालकृष्ण

इस फर्म का ~~आफिस~~ आफिस कानपुर है जहाँ विशेष परिचय दिया गया है । यहाँ यह फर्म कपड़े का काम करती है । इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला गोपालदासजी तथा लाला सुदलालजी हैं ।

### कलाथ मर्चेंट्स

मेसर्स वंसीधर गोपालदास

इस फर्म के मालिकों का यहाँ खास निवासस्थान है । आप लोग रस्तोगी वैश्य समाज के सज्जन हैं । इस फर्म का विस्तृत और सचित्र परिचय हमारे इसी मध्य के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १२८ में दिया गया है । यहाँ यह फर्म कपड़े का व्यापार करती है ।

### मेसर्स श्यामसुन्दर रामचरण

इस फर्म की स्थापना लगभग ३० वर्ष पूर्व कन्नौज निवासी लाला मुकुन्दराम ने की थी । उस समय इस फर्म पर मुकुन्दराम श्यामसुन्दर नाम पड़ता था । आपके स्वर्गवासी होने पर आपके ६ पुत्र कुछ दिन तक व्यापार करते रहे पर पीछे अलग २ हो गये । अतः आपके पुत्र लाला श्यामसुन्दरलाल तथा लाला रामचरणलाल ने सम्मिलित हो अपरोक्ष नाम से व्यापार आरम्भ किया जो आज भी पूर्ववत् हो रहा है । इस फर्म की विशेष वृद्धि इन्हीं दोनों भाइयों के द्वारा हुई । प्रथम कपड़े का काम होता था फिर कलकत्ता और बम्बई से सीधा माल मँगाने लगे और अन्त में कानपुर की मिलों की एजेन्सी ली ।

इसके वर्तमान मालिक लाला श्यामसुन्दरलालजी तथा आपके भाई लाला रामचरणजी के पुत्र लाला विरवम्भरनाथ और विशेषरूपमादमी हैं ।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

फरुखाबाद—मेसर्स श्यामसुन्दर राम-  
चरण, कटरा अहमदगंज

} यहाँ कानपुर की स्वदेरी कॉटन मिल, रिफ्टो-  
रिया मिल तथा इलमिन मिल की एजेन्सी है ।

फररवाबाद—मेसर्स मुकुन्दराम श्याम- } यहाँ हेड-आफिस है और बरतन का काम  
सुन्दर, चौक विरपोलिया } होता है।

## चाँदी सोने के व्यापारी

### मेसर्स कृष्णविहारी चौकेविहारी

इस फर्म की स्थापना लगभग ९ वर्ष पूर्व उन्नाव निवासी रायसाहब लाला अटलविहारी-लालजी मेहरोत्रा ने यहाँ की थी। वर से यह फर्म यहाँ पर सोना-चाँदी तथा तैयार जेवर का व्यापार कर रही है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायसाहब लाला अटलविहारीलालजी तथा आपके पुत्र बाबू कृष्णविहारी, चौकेविहारी, श्यामविहारी, धैरजविहारी, लालविहारी तथा रूपविहारीजी हैं। वार लोग सभी समाज के सन्तन हैं। आप लोगों का आदि निवास-स्थान उन्नाव है जहाँ रायसाहब ला० अटलविहारीलालजी ने लगभग ३० वर्ष पूर्व अपने नाम से फर्म स्थापित कर व्यापार आरम्भ किया था। रायसाहब लाला अटलविहारी लालजी उन्नाव म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन रह चुके हैं। आप वर्तमान में यहाँ के डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के सदस्य हैं। आप शिक्षा-सम्बन्धी कामों में अच्छी सहायता प्रदान करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

फररवाबाद—मेसर्स कृष्णविहारी चौकेविहारी—यहाँ बैंकिंग तथा सोने चाँदी का व्यापार होता है।  
उन्नाव—राय सा० लाला अटलविहारी लाल—यहाँ बैंकिंग तथा जर्मींदारी का काम होता है।

### मेसर्स शालिग्राम लालमन

इस फर्म के मालिक सभी समाज के टंडन सन्तन हैं। इसकी स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व लाला शालिग्राम ने की थी और सोने चाँदी का व्यापार आरम्भ किया था, जो फर्म आज भी कर रही है। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला भोलानाथजी टंडन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

फररवाबाद—मेसर्स शालिग्राम लालमन } यहाँ हेड आफिस है; सोने, चाँदी तथा बैंकिंग  
कटरा अहमद गंज } का काम होता है।

फररवाबाद—मेसर्स रूपनलाल लक्ष्मीनारायण } कपड़े का थोक व्यापार होता है।  
कटरा अहमदगंज }



## कन्नौज

कन्नौज का इतिहास बहुत पुराना है। यह स्थान ११वीं शताब्दी में तत्कालीन महाराजा जयचंदजी की राजधानी रहा है। जयचंद प्रसिद्ध राठौर वंशीय थे। इनके पूर्वज दक्षिण प्रांत से यहाँ आकर बसे थे। कई इतिहासकारों का मत है कि ये राठौर पहले सिथियन्स नाम से पुकारे जाते थे। इस स्थान पर सन् १०७७ में महमूद गजनवी ने चढ़ाई कर इसे लूटा था। इसके पश्चान् भी सन् १११४ ई० तक इस स्थान पर हिन्दुओं का ही शासन रहा। पर देरा के दुर्भाग्य से एवं आपसी फूट के कारण इस पर महमूद गोरी ने चढ़ाई कर इसे हस्तगत किया। तब से इस पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। यहाँ हुमायूँ और शेरशाह की लड़ाई हुई थी। इसके पश्चान् यह स्थान महाप्रतापी ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर आया। प्राचीन समय के कई भग्नावशेष आज भी यहाँ विद्यमान हैं।

आजकल यह स्थान गंगा नदी के किनारे बी० बी० एण्ड सी० आई० आर० की कानपुर-अपनेरा ब्रांच पर अपने ही नाम के स्टेशन से ५ मील की दूरी पर बसा हुआ है। यहाँ का व्यापार प्रधानतया इत्र, तेल वगैरह का है। यहाँ कई बड़े २ इत्र के व्यापारी निवास करते हैं। यहाँ का इत्र भारत भर में प्रसिद्ध है। यहाँ इत्र की कई फैक्टरियाँ हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ निम्नलिखित कल-कारखाने भी हैं:—

- (१) कन्नौज आईग एण्ड विविग मिल्स—इसमें कपड़े की बुनाई एवं रंगाई का काम होता है। इसमें ५० लूस हैं और ७२ आदमी काम करते हैं।
- (२) मथुराप्रसाद सूरजप्रसाद सैंडल वड आईल डिस्टिलेटोरान एण्ड यार्न वक्स—इसमें बन्दन का तेल खिंचा जाता है एवं सूत की रंगाई का काम होता है। इसमें ५९ आदमी काम करते हैं।
- (३) कोट्टोजस जीनिंग एण्ड प्रेमिंग फैक्टरी—यह सरायमीरा में है। यहाँ काटन जीन और ब्रेस किया जाता है। इसमें ५९ बरसे हैं तथा १९४ आदमी काम करते हैं।





एला शिवगुलामशमती (बेनीराम मूलवन्द) कश्रीज



शाद सुन्दरलालजी ( लालमन सुन्दरलाल ) मैतपुरी



श्रीमती ( बेनीराम मूलवन्द ) देवारी



एला शिवगुलामशमती ( बेनीराम मूलवन्द ) देवारी

## मेसर्स बेनीराम मूलचंद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान यहीं का है। आप लोग तेली समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना ला० बेनीरामजी के द्वारा हुई। इसके पहले आपके पिताजी खेतलजी खेतीबाड़ी का काम करते थे। आप लोगों की बहुत साधारण स्थिति थी। यहाँ तक कि रुपया उधार लाकर अपना काम चलाते थे। खेतलजी के स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् १९ वर्षों तक करते रहे इसमें आपको सफलता भी हुई। इसके पश्चात् आपने गल्ले और तिल-दन का काम शुरू किया। इसके १ वर्ष पश्चात् ही याने संवत् १९५६ में आपने इत्र का काम शुरू किया। इसमें आपने आराधित सफलता प्राप्त की। वर्तमान में यह फर्म यहाँ अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। ला० बेनीरामजी का स्वर्गवास सं० १९७५ में हो गया। आप व्यापारचतुर महानुभाव थे। आप इन लोगों में से थे जिन्होंने स्वयं परिस्थिति को बना कर बड़े आदमी होते हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक स्व० ला० बेनीरामजी के पुत्र ला० शिवगुलामदासजी हैं। आपने भी अपने व्यवसाय को बहुत उन्नतवस्था पर पहुँचाया। आप सादे, मिलनसार एवं धार्मिक व्यक्ति हैं। आप प्रायः सभी सार्वजनिक कार्यों में उदारतापूर्वक दान देते रहते हैं। आपके २ पुत्र हैं जिनके नाम भीयुव वामुदेवजी और भीयुव चन्द्रदेवजी हैं। आप लोग भी अपने पिताजी की देहराद में फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

फन्नीज—मेसर्स बेनीराम मूलचन्द  
T. A. "Thekedar"

} यहाँ इत्र, तेल, गुलकंद, संदल, अर्क आदि सभी प्रकार का सुगंधित सामान बड़ी मात्रा में मिलता है तथा वैप्यार होता है।

## मेसर्स मनजलाल रामनारायण

इस फर्म के मालिक यहीं के निवासी खत्री समाज के सज्जन हैं। यह फर्म सं० १९१६ में ला० मनजलालजी के द्वारा स्थापित हुई। उस समय इस फर्म पर मेसर्स मनजलाल पुसूलाल के नाम से कारबार होता था। मगर सं० १९५२ में भाई २ के अलहदा हो जाने से आप उपरोक्त नाम से व्यापार करने लगे। आप व्यापारचतुर पुरुष थे। आपने अपने यहाँ बाँदी, सोना एवं जमींदारी का काम भी बढ़ाया। आपका स्वर्गवास संवत् १९७३ में हो गया। वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० मनजलालजी के पुत्र ला० रामनारायणजी हैं।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

आप भी व्यापारचतुर सज्जन हैं। आपने भी फर्म की बहुत उन्नति की। आपने कन्नौज में कपड़े के काम को बढ़ाया। साथ ही इशायन (अलीगढ़) नामक स्थान में फूलों की खेती करवाई तथा वहाँ इत्र निकालने का कारखाना खोला। यहाँ से फूल एवं इत्र सत्राय किया जाता है। आपने यहाँ एक खत्री समाज कायम किया है जिसमें कन्याओं की शिक्षा एवं आर्ट का प्रबंध है। आप भिलनसार सज्जन हैं। आपके चार पुत्र हैं जो इस समय विद्याभ्ययन कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कन्नौज—मेसर्स मनऊलाल रामनारायण	}	यहाँ फर्म का हे० आ० है तथा इत्र का काम होता है। इसके अंदर में कपड़ा, चाँदी, सोना, बैकिंग और जर्मीदारी का भी काम होता है।
इशायन (अलीगढ़) मेसर्स मनऊलाल रामनारायण		}
रे० स्टे० रतीकानगला B. B. C. I.	}	
कोलापली० पो० ब्रह्मपुर (गंजाम) मेसर्स मनऊलाल रामनारायण		

### मेसर्स देवीप्रसाद मुन्दरलाल

इस फर्म के मालिक फरुखाबाद निवासी खत्री समाज के टंडन सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्व पुरुष ला० देवीप्रसादजी सन् १८५७ में यहाँ आये तथा पुलिस में काम करते रहे। सन् १८७० में आपके पुत्र ला० मुन्दरलालजी एवं श्यामलालजी ने फर्म स्थापित कर इनका कारबार खोला। कुछ समय पश्चात् इस फर्म की एक शाखा बनारस में खोली गई। जो वर्तमान में भी सुचारु रूप से अपना व्यवसाय कर रही है। इस फर्म को अपने माता की अच्युताई के लिये कई सुभाइशों से प्रसंशापत्र प्राप्त हुए हैं। सन् १८८४ में यू० पी० के गवर्नर सर विलियम मेरिस के द्वारा इस फर्म को अनाइष्टमेंट लेटर मिला है। ला० मुन्दरलालजी एवं ला० श्यामलालजी के स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् इस फर्म का काम ला० मुन्दरलालजी के पुत्र ला० सुशीलालजी एवं श्यामलालजी के पुत्र ला० मुखीलालजी ने सम्भाला। आप दोनों साम्राज्यों के हाथों से इस फर्म की और भी धरकी हुई। ला० मुखीलालजी का स्वर्गवास सं० १९१९ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० सुशीलालजी एवं आपके भगोजे तथा मुखीलालजी

के पुत्र वैजनायजी हैं। ला० सुभ्रीलालजी स्थानीय आनरेरी मैजिस्ट्रेट हैं। आपने यहाँ 'राम-सुन्दर' मकान के नाम से एक सुन्दर बिल्डिंग बनाई है। जो यहाँ सबसे अच्छी मानी जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

कन्नौज—मेसर्स देवीप्रसाद सुन्दरलाल T. A. Sugandh.	}	यहाँ हेरु आफिस है तथा सब प्रकार के इत्र का ब्यारर होवा है।
बनारस—मेसर्स सुन्दरलाल श्याम- लाल, कबीरराय		यहाँ सब प्रकार की सुरायू एवं तमालू का व्या- पार होवा है।

इसके अतिरिक्त कन्नौज, कासगंज, मथुरा आदि स्थानों पर आपकी दुकानें हैं जहाँ इत्र, तेल आदि का ब्यारर होवा है।

### मेसर्स मनुलाल अयोध्या प्रसाद

इस फर्म के मालिक कन्नौज निवामी बायम वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना सन् १८१८ में ला० मनुलालजी के द्वारा हुई। आप ही यहाँ कलकत्ते से संदल लाये। और उसका तैल बनाना प्रारंभ किया। आपके ४ पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः ला० अयोध्या प्रसादजी, गोपालप्रसादजी, मयुराप्रसादजी एवं प्रयागदासजी था। आप लोगों के समय में इस फर्म की एक प्रांच कलकत्ता चली गई। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० अयोध्याप्रसादजी के पुत्र ला० द्वारकाप्रसादजी, मयुराप्रसादजी के पुत्र कर्त्रीप्रसादजी, इन्दूलालजी और बनवाटेलालजी, गोपालप्रसादजी के पुत्र ललितप्रसादजी एवं प्रयागदासजी के पुत्र मनीलालजी एवं बेसीमाधवजी हैं। आप सब लोग शिक्षित, मित्रनसार एवं व्यापारी सज्जन हैं। ला० ललितप्रसादजी स्थानीय आनरेरी मैजिस्ट्रेट हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

कन्नौज—मेसर्स मनुलाल अयोध्याप्रसाद T. A. "Flowers"	}	यहाँ फर्म का हेरु आफिस है। तथा इत्र बनाने एवं बेचने का काम होता है।
कलकत्ता—मेसर्स मनुलाल अयोध्याप्रसाद ८० लोभर चितपुर रोड़		यहाँ सब प्रकार के तेल, इत्र, सेंट बगैरहकी बिक्री का काम होवा है

इस फर्म के इत्र के कारखाने जिला अलौगढ़, जिला गंजाम एवं भरतपुर स्टेट में हैं।

अलग २ हो गये । तब से लाला बालमुकुन्दजी ने उपरोक्त नाम से अपनी फर्म खोली । आप बड़े योग्य व्यक्ति हैं । आपके पुत्र का नाम बाबू दौलतरामजी है ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

हायरस सिटी—मेसर्स बालमुकुन्द दौलतराम—यहाँ, रुई, गस्ता, सरसों तथा बकिंग व्यापार होता है ।

आपकी हायरस और अलीगढ़ में जीन प्रेस फैक्टरियाँ हैं । गोवर्द्धन के श्री लक्ष्मीनारायण के मन्दिर में आपने भी बहुत सहयोग प्रदान किया है । हायरस में आपका एक बगीचा है ।

### मेसर्स मोहनलाल चिरंजीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान चुरू का है । आप अमवाल वैश्य समाज के बागला सज्जन हैं । प्रारम्भ में सेठ हरनन्दरायजी ने हायरस में फर्म की स्थापना कर नील का व्यापार प्रारम्भ किया । आपके पश्चात् सेठ फूलचन्दजी बागला ने इस फर्म का संचालन कर इसकी चन्नति की । सेठ फूलचन्दजी के चार पुत्र हुए जिनमें उपरोक्त फर्म आपके सब से छोटे पुत्र मोहनलालजी की है । सेठ फूलचन्दजी का स्वर्गवास संवत् १९५६ में हो गया । तथा आपके एक वर्ष पूर्व ही आपके पुत्र मोहनलालजी का भी देहान्त हो गया था । फलतः फर्म का संचालन मोहनलालजी के दसक पुत्र सेठ चिरंजीलालजी बागला के हाथ में आया । आपने इस फर्म की अच्छी तरफों की । आप सन् १९१६ और १९१९ में स्थानीय म्युनिमिपैलिटी के पेअरमैन निर्वाचित किये गये । इसके सिवाय आप सेकण्ड हॉस ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं । सन् १९२० में सरकार ने आपको रायबहादुर का सम्मानसूचक खिताब प्रदान किया ।

रा० ब० सेठ चिरंजीलालजी का सार्वजनिक कार्यों के प्रति भी बहुत प्रेम है । आपने करीब ५३ हजार की लागत से हायरस में चिरंजीलाल बागला डिस्पेन्सरी खुलवाई । इसी प्रकार आपने फूलचन्द्र बागला ऐग्लों संस्कृत हाईस्कूल की स्थापना करवाई । इसके अतिरिक्त आपने बन्नीनारायण के मार्ग में रुद्रप्रयाग नामक स्थान पर एक विराल धर्मशाला भी बनवाई है । और भी कई सार्वजनिक कार्यों में आप बड़ी बढावता के साथ दान देने रहते हैं ।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हायरस—मेसर्स मोहनलाल चिरंजीलाल  
T. A. "narayan"

जमींदारी, बैंकिंग, गस्ता, रुई, और कमीशन एजन्सी का काम होगा है । यहाँ पर आपको एक जीन प्रेस फैक्टरी भी है । तथा यू० पी० इंजीनियरिंग वर्क्स के नाम से लोई पीनल की टजार्स का एक कारखाना भी है ।



स्व० सेठ पण्डजी बागला ( मोहनलाल चिरंजीलाल ) हापरस



स्व० सेठ मोहनलालकरी बागला ( मोहनलाल चिरंजीलाल ) हापरस



स्व० सेठ चिरंजीलालकरी बागला ( मोहनलाल चिरंजीलाल ) हापरस





कलकत्ता—मे० हरनन्दराय फूलचन्द ७१ बड़वत्ला स्ट्रीट of A. Humectum	}	वैकिंग, कमीरान एजन्सी और कॉटन का बिजिनेस होता है। यह फर्म धाम्ने कम्पनी लि० की बेनिफिट है। इस फर्म में सेठ प्यारेलालजी बागला का साम्रा है।
बम्बई—मेसर्स फूलचन्द मोहनलाल काजवादेवी रोड T. A. Penkin		वैकिंग, रुई, गल्ला और कमीरान एजन्सी का काम होता है। इस फर्म में सेठ प्यारेलाल जी बागला का साम्रा है।
बानपुर—मेसर्स फूलचन्द मोहनलाल नयागञ्ज T. A. Piecegoods		वैकिंग, रुई, गल्ला और कमीरान एजन्सी का काम होता है। इस फर्म में सेठ प्यारेलालजी बागला का साम्रा है।
हरद्वारगञ्ज (अलौगढ़) मोहनलाल धिरजीलाल		जीनिंग फैक्टरी है तथा रुई और गल्ले का व्यापार होता है।

### मेसर्स मटरूमल शिवमुखराम

यह फर्म सेठ फूलचन्दजी बागला के द्वितीय पुत्र सेठ मटरूमलजी की है। सेठ फूलचन्दजी के स्वर्गवास के पश्चात् सेठ मटरूमलजी के पुत्र सेठ शिवमुखरामजी ने पुरानी फर्म से अलग होकर हररोट नाम से नवीन फर्म की स्थापना की। आपने अपने व्यापार कौशल से इस फर्म की वृद्धि कर्तव्य की। आप यहाँ की म्यूनिसिपैलिटि के कमिश्नर और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९६८ में हुआ। मरते समय आपने ६१००० रुपये का रकम दान में निहाता। जिसेसे हरिद्वार में एक मन्दिर तथा हाथरस में एक दुर्गाजी का मन्दिर बनवाया गया।

आपके पश्चात् आपके एक पुत्र सेठ प्यारेलालजी बागला ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आप भी यहाँ पर बड़े प्रभावशाली व्यक्ति हैं। आप बम्बई के मारवाड़ी बेम्बर ऑफिस बॉमर्स के प्रेसिडेण्ट तथा ईस्ट इण्डियन कॉटन एग्रीकल्चरल के टायरबन्डर रह चुके हैं। आपने कांठराज (जि० सुवन्दराहर) में एक फर्मस्थापना बनवाई है। तथा फूलचन्द एजेंसी संस्थान हाईस्कूल में भी अपनी मद्रासका प्रदान की है। आपके पुत्र का नाम बाबू सुशोभचन्दजी है।

आपका स्थानांतरिक परिषय इस प्रकार है।

हाथरस—मेसर्स मटरूमल शिवमुखराम T. A. Nawin	}	वैकिंग, कॉटन, सेन और कमीरान एजन्सी का काम होगा है।
---	---	--

हाथरस—मेसर्स प्यारेलाल सुबोधचन्द्र	}	गल्ले का व्यापार होता है तथा दाल की फैक्टरी है।
वसरीपुरा, कानपुर—मेसर्स प्यारेलाल सुबोधचन्द्र		कपड़े तथा गल्ले का व्यापार होता है।
फासगंज—मेसर्स प्यारेलाल सुबोधचन्द्र	}	रूई, गल्ला और कमीशन का व्यापार होता है। यहाँ आपकी दाल की फैक्टरी भी है।

इसके अतिरिक्त मेसर्स फूलचन्द्र मोहनलाल के नाम से कानपुर और बम्बई में तथा हरनन्दराय फूलचन्द्र के नाम से कलकत्ते में जो फर्में हैं जिनका परिचय मेसर्स मोहनलाल पिरंजीलाल के साथ दिया गया है। उनमें आपका साम्रा है।

### मेसर्स लल्लामल हरदेवदास

इस फर्म की स्थापना संवत् १९२१ में लाला लल्लामलजी ने अलीगढ़ में करके उस पर रूई, गल्ला और कमीशन का व्यापार प्रारम्भ किया। संवत् १९४६ में आपने इसकी भाष हाथरस में भी खोली। संवत् १९५० में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पाँच पुत्र हुए। जिनके नाम लाला मन्मदनलालजी, सरोतीलालजी, लक्ष्मीनारायणजी, रामदयालजी और बाँकेलालजी हैं। इनमें से लाला मन्मदनलालजी और सरोतीलालजी का स्वर्गवास हो चुका है।

इस फर्म की लाला मन्मदनलालजी के हाथों से खूब वृद्धि हुई। आपने कई स्थानों पर जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ खोलीं। तथा संवत् १९५९ में हाथरस में मेसर्स रामचन्द्र हरदेवदास के नाम से एक कॉटन स्पिनिंग मिल खोली। सन् १९२० से इसका नाम लल्लामल हरदेवदास कॉटन स्पिनिंग मिल्स बदला गया, जो अब भी इसी नाम से चल रहा है। आपके पश्चात् लाला लक्ष्मीनारायणजी, लाला रामदयालजी तथा लाला बाँकेलालजी ने भी इस फर्म की खूब तरकी थी। लाला बाँकेलालजी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस फर्म की ओर से कर्णवास में एक धर्मशाला तथा हाथरस और अलीगढ़ में बगीचे बनाए हुए हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

हाथरस—मेसर्स लल्लामल हरदेवदास—यहाँ पर बैंगन, रूई और गल्ले का व्यापार तथा कमीशन एजेंसी का काम होता है। इस फर्म की यहाँ, रामदयाल बाँकेलाल और बाँकेलाल रामदास के नाम से दो जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियाँ और लल्लामल हरदेवदास कॉटन स्पिनिंग मिल के नाम से एक मूल कारखाने की मिल है।





श्री हरीहरनन्दामजी ( हरीहरनन्दाम पुरुषोत्तम-  
दाम ) हाथरस



श्री किशोरीलालजी बहट्टक ( किशोरीलाल  
बहट्टक ) कासगंज



श्री पुरुषोत्तमजी ( हरीहरनन्दाम )



श्री केशुलालजी बहट्टक ( किशोरीलाल )

हायरस—मेसर्स रामदयाल रूपचिरोर—यहाँ शायर, गुड़ और कमीशन का काम होता है ।

हायरस—मेसर्स गुरुदयाल प्रसाद चुन्नीलाल—यहाँ पर धी, जनरल मर्चेण्डाइज और कमीशन का काम होता है ।

अलीगढ़—लल्लामल हरदेवदास देहला दरवाजा—यहाँ रुई, गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है ।

अलीगढ़—मेसर्स गुरुदयालप्रसाद चुन्नीलाल—यहाँ धी का व्यापार और कमीशन एजन्सी का काम होता है ।

### मेसर्स हरचरनदास पुरुषोत्तमदास

इस फर्म की स्थापना करीब ६५ वर्ष पूर्व लाला रामचन्द्रजी ने की । आप बड़े दरदर्राँ और व्यापारइलाज पुरुष थे । आपने उस काल में बढ़ते हुए मिल व्यवसाय की ओर ध्यान दिया और सन् १८९९ में पश्चिमी संयुक्त प्रांत में पहले पहल मिल की स्थापना की । आपने हायरस में रामचन्द्र हरदेवदास यद्वा मिल तथा रामचन्द्र हरदेवदास न्यूमिल नामक दो मिलों की स्थापना की । आपका स्वर्गवास सन् १९६० में हो गया । आपके परधान आपके पुत्र लाला हरचरनदासजी तथा लाला पुरुषोत्तमदासजी ने फार्म का काम सन्हाला । आप दोनों भाइयों ने अपने व्यापार की तथा मिलों की बहुत वन्नवि की । तथा आगरा और मथुरा जिलों में कई जीनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरियों की स्थापना की । आप लोग बड़े व्यापारचतुर और अनुभव हैं । लाला हरचरनदासजी सेकण्ड हाँस ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा म्यूनिसिपैलिटी के चेयरमैन हैं ।

लाला हरचरनदासजी के इस समय दो पुत्र हैं जिनके नाम पन्नालालजी तथा हीरालालजी हैं । लाला पुरुषोत्तमलालजी के भी दो पुत्र हैं । जिनके नाम चुन्नीलालजी तथा गुलाबचन्दजी हैं ।

आपकी ओर से गोवर्द्धन में लक्ष्मोनारायणजी का एक विराटल मन्दिर बनाया हुआ है, तथा उसकी व्यवस्था के लिए यहाँ की जीनिंग फैक्टरी दे दी है ।

आपका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

हायरस—मेसर्स हरचरनदास पुरुषोत्तमदास (T. A. Ram) यहाँ पर रुई, मूव, गल्ला और बैकिंग का काम होता है ।

हायरस—श्री न्यू रामचन्द्र फॉटन मिल—इस मिल में सूत की कटाई का काम होता है अथ इसमें कपड़ा बुनने के टर्म्स भी लगाये जा रहे हैं ।

अलीगढ़—मेसर्स चुन्नीलाल पन्नालाल—यहाँ कमीशन का काम होता है ।

व्यापारियों के पते—

रुई के व्यापारी—

- मेसर्स छोटेराल विश्वेश्वरदास  
 ,, नन्दराम रामदयाल  
 ,, बालमुकुन्द दौलतराम  
 ,, भोलानाथ गोपीनाथ  
 ,, मटरूमल लक्ष्मीनारायण  
 ,, मोहनलाल चिरंजीलाल  
 ,, रामजीमल बाबूलाल  
 ,, ललामल हरदेवदास  
 ,, हरचरनदास पुरुषोत्तमदास  
 ,, होतीलाल रामप्रसाद

गस्ले के व्यापारी—

- मेसर्स कल्याणदास नेताराम  
 ,, गङ्गोलमल गजानन  
 ,, धासीराम मनोहरलाल  
 ,, चन्दीलाल रामप्रसाद  
 ,, ठाकुरदास नन्हूमल  
 ,, दयाभाई जौहरभाई  
 ,, बनखण्डोमल चतुर्भुज  
 ,, बरुचीमल मूलचन्द  
 ,, रसनजी जेठामाई  
 ,, शिवदयालमल हुकुमचन्द  
 ,, रयामलाल गङ्गाधर  
 ,, सीताराम शालिग्राम  
 ,, होरालाल नारायणदास  
 ,, होवालाल रामप्रसाद

रुपये के व्यापारी—

- मेसर्स आशाधर रामप्रसाद  
 ,, चान्द्रराम मोतीलाल

- मेसर्स कन्हैयालाल गङ्गाभूषण  
 ,, बालचन्द छीतरमल  
 ,, नारायणदास गंगाशरण  
 ,, रामस्वरूप श्यामसुन्दर  
 ,, रामप्रसाद पन्नालाल  
 ,, शिवदयाल पन्नालाल  
 ,, सदानुष शिवदयाल  
 ,, हरमुखराय कन्हैयालाल

घी के व्यापारी—

- मेसर्स गुरुदयालप्रसाद चुन्नीलाल  
 ,, जोतमल रामगोपाल  
 ,, मुन्नीलाल मूलचन्द  
 ,, बसन्तलाल कचोरमल  
 ,, बनखण्डोमल चतुर्भुज

किराने के व्यापारी—

- मेसर्स गिरधारीलाल केशवदेव  
 ,, छितरमल बाबूलाल  
 ,, मुन्नीलाल मूलचन्द  
 ,, नन्दराम रामदयाल  
 ,, मोहनलाल मनेशीलाल  
 ,, रणछोड़दास राधेलाल  
 ,, रामचन्द्र पन्नालाल

लोहे के व्यापारी—

- मेसर्स ध्यारेलाल गंगाप्रसाद  
 ,, बनशीधर किरानदास  
 ,, मङ्गलसेन चम्पाराम

बाँरी के व्यापारी—

- मेसर्स जुगलकिशोर गिरधारीलाल  
 ,, भद्रराम बाँकेलाल

## अलीगढ़

### ऐतिहासिक परिचय

अलीगढ़ ई० आर्द० आर० की मेन लाइन पर दृष्टा और दिल्ली के बीच बना हुआ है। प्राचीन काल में गढ़ा और घमुना के संभाव में यह एक रानी किले के रूप में था। यह किला पहले एक हिन्दू राजा के अधिकार में था। औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् मराठे, जाट, भाग्यवान, कदले इत्यादि कई जातियों ने इस पर आक्रमण किये। सन् १७५९ में अंगरेजों ने यहाँ से जाटों को एखदे दिया। उनके कई वर्ष बाद नाजबस खाँ ने रामगढ़ दुर्ग को मरम्मत करवा कर उसको अलीगढ़ नाम दिया। सन् १७८४ ई० में महाराजा सेथिया ने अलीगढ़ को जीतकर उसमें से कई करोड़ रुपये के सोना-चाँदी तथा रत्न प्राप्त किये। इनके पश्चात् इस किले के लिए सेन्धिया और मुसलमानों में लड़ाई चलने लगी। और अन्त में लाई लेक ने उसे सेन्धिया से जीत लिया। तब से अब तक यह स्थान मिटिरा साम्राज्य के अन्तर्गत ही है।

### दर्शनीय स्थान

अलीगढ़ के दर्शनीय स्थानों में सर सैय्यद् अहमद् खाँ का स्थापित किया हुआ पेंग्लो ओरियण्टल कॉलेज प्रधान बीच है। इसे सन् १८७५ में ऊँचे घराने के मुसलमानों की अंग्रेजी सिखलाने के लिए सैय्यद् साहब ने अंग्रेजी ढङ्ग पर स्थापित किया था। आज सो इस कॉलेज ने विश्वविद्यालय का रूप धारण कर लिया है, और सारे भारतवर्ष में केवल मुसलमानों के लिए सबसे बड़ा शिक्षा का केन्द्र है। इसके सिवा यहाँ पर कैल की ऊँची मर एक मस्जिद बनी हुई है, जहाँ पर यह मस्जिद है यहाँ हिन्दू और बौद्ध युग के बहुत से ध्वंसावशेष दिखलाई देते हैं। शहर के बीच में स्वच्छ जल वाला एक सुन्दर सरोवर है। सरोवर के ऊपर शारारॉ पैलाय हुए कई बृहत् अपने बीच कई मन्दिरों को लिए हुए स्थापित हैं।

### औद्योगिक परिचय

इस शहर के औद्योगिक परिचय में यहाँ के बने हुए तालों का परिचय ही सबसे महत्वपूर्ण है। यहाँ के घाले बड़े, मजबूत, टिकाऊ, सुन्दर और उपयोगिता के मान से सबसे भी होते हैं। भारत के प्रत्येक हिस्से में यहाँ के ताले जाते हैं, और अच्छी प्रविष्टा प्राप्त करते हैं।



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

### मेसर्स गोपालराय गोविन्दराय

इस फर्म की स्थापना संवत् १९५१ में लाजा गोपालरायजी एवं लाला गोविन्दरायजी के द्वारा हुई। आपने इस पर शुरू २ में रुई और गल्ले का व्यापार आरंभ किया। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। धीरे २ आपने कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी भी खोल दी। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० गोपालरायजी के पुत्र ला० जगन्नाथजी हैं। आपके तीन पुत्र हैं बा० चिरञ्जीलालजी, बा० पन्नालालजी एवं बा० दौलतरामजी। बा० चिरञ्जीलाल जी शिक्षित एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। आजकल फर्म का प्रधान संचालन आप ही करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलीगढ़—मेसर्स गोपालराय गोविन्दराय } यहाँ हेड आफिस है। तथा इस फर्म पर रुई, गल्ला  
देहलीगेट } और आड़त का काम होता है। यहाँ इसकी  
T. A. Gopal } जिनिंग प्रेसिंग फैक्टरी भी है।

अलीगढ़—मेसर्स चिरञ्जीलाल कैलारा- } यहाँ रुई, गल्ला और आड़त का काम होता है।  
चन्द दिल्ली गेट }

जहाँ गिराबाद—मेसर्स पूरनमल } यहाँ कॉटन जीन-प्रस फैक्टरी है। तथा कॉटन का व्या-  
निरंजनलाल } पार होता है। इसमें बा० निरंजनलालजी का  
साम्रा है।

इसके अलावा चन्नीसी में भी आपकी एक फर्म है जिसपर दाल और आड़त का काम होता है।

### मेसर्स सुन्नीलाल पद्मानाथ

इस फर्म का हेड आफिस मेसर्स हरचरनदाम पुरुषोत्तमदास के नाम से हायस्स में है। यहाँ इसका एक कपड़े का भित्त भी है। इसका विस्तृत परिचय विषयों सहित यहाँ दिया गया है यहाँ यह फर्म कमीशन का काम करती है। इसका यहाँ का पता इसवर्गज है।

### मेसर्स पूरनमल निरंजनलाल

यह फर्म ५ वर्ष पूर्व था० निरंजनलालजी अप्रवाला द्वारा स्थापित हुई। वर्तमान में आप ही इस फर्म के मालिक हैं। आप यहाँ के वकील हार्दकोर्ट भी हैं। आपके पिताजी भी यहाँ के प्रसिद्ध वकील थे। इस फर्म की आपके द्वारा अच्छी उन्नति हुई। सुरक्षित होने के कारण आपने शीघ्र ही व्यवसाय को बहुत बढ़ा लिया। आपने यहाँ जीन-प्रेस फैक्टरी भी स्थापित की। सार्वजनिक कार्यों में आपका अच्छा हाथ रहता है। आपके हीराचन्दजी एवं राजेन्द्र कुमारजी नामक पुत्र हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलीगढ़-मेसर्स पूरनमल निरंजनलाल देहली गेट	}	यहाँ वैंकिंग और कॉटन का व्यापार होता है। आपकी यहाँ एक जिनिंग फैक्टरी भी है।
जहाँगिराबाद-मेसर्स पूरनमल निरंजनलाल		यहाँ रुई का व्यापार होता है। यहाँ कॉटन जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी है इसमें सेठ जगन्नाथजी का सामना है।

इसके अतिरिक्त चन्दौसी और उम्रियाली में भी आपकी फर्में हैं। जहाँ दाल का काम होता है। आदम का काम भी इन फर्मों पर होता है।

### बालमुकुन्द कॉटन-जीन एण्ड प्रेस

इस फैक्टरी के मालिक का हेंड आफिस हायरस में है। यहाँ इस प्रेस में कपास एरिदी का काम भी होता है। इसका पता दिल्ली दरवाजा है। विशेष परिचय हायरस में दिया गया है।

### मेसर्स मानसिंह जवाहरलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सेठ फूलचंदजी के पुत्र वा० साधुचंदजी, बाबू गुलाब-चन्दजी एवं वा० इन्द्रमुरारजी हैं। आप लोग एग्जेलबल वैरय समाज के जेनी सचिव हैं। इस फर्म की स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ मानसिंहजी द्वारा हुई। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ जवाहरलालजी तथा इनके पश्चात् चिरन्वीरलालजी ने किया। भाग्य रत्नदाम हो गया। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन भार सेठ फूलचंदजी पर आया। आप व्यापारचतुर पुरुष थे। आपने फर्म की बहुत करवा की। आप मयुरा एवं अलीगढ़ के ट्रेडर

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

तथा आनरेरी मजिस्ट्रेट थे। यहाँ के प्रतिष्ठित रईसों में आपका नाम था। आपको ओर से यहाँ एक लैन मन्दिर बना हुआ है। इसकी लागत २ लाख बतायी जाती है।

इस कर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलीगढ़—मेमर्न मानसिंह जवाहरराज  
गराय सिन्धो

} यहाँ बैंकिंग और जर्मींदारी का काम होता है।  
वर्तमान में यह कर्म इम्पिरियल बैंक की अलीगढ़  
ब्रांच की एजेंट गवर्नमेंट ट्रेडर अलीगढ़ है।

### मेसर्स मून्डानन्द जगन्नाथ

इस कर्म के माणिक बीकानेर के निवासी हैं। यह कर्म यहाँ कॉटन और घेन का व्यापार करती है। इसकी यहाँ एक जीनिंग और एक प्रेमिंग फैक्टरी भी है। यहाँ का पना मदारगेट है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के बीकानेर में दिया गया है।

### मेमर्न लक्ष्मणदास हरदेवदास

इस कर्म का हेड आफिस हाथरस है। यहाँ इसका एक कारखे का मील बनता है। इसका विस्तृत परिचय यहाँ दिया गया है। यहाँ यह कर्म देहली दरवाजे पर रुई, गद्दा और आदुन का व्यापार करती है। एक राधा इसकी और दे कमरे में मेमर्न गुजरवानप्रसाद शुभ्रीनाथ के नाम से भी और आदुन का व्यापार होता है। इसका पना टाकगंज है।

### मेमर्न लक्ष्मणदास गंगाराम

इस कर्म के वर्तमान माणिक रायबहादुर गंगारामराजी जटिया हैं। इसका हेड आफिस मुज्जा है। अन्तर में इसका विस्तृत परिचय यहाँ प्रकाशित किया गया है। यहाँ यह कर्म कॉटन का काम करती है। इसकी यहाँ एक कॉटन जॉन प्रेम फैक्टरी है। इसका पना दिन्नी दरवाजा है।

### मेमर्न मून्डानन्द व्यापाराज

इस कर्म का हेड आफिस मुरजा सू० पी० में है। इसके वर्तमान प्रधान मन्वाराज गंगारामराजी हैं। इसका विस्तृत परिचय यहाँ उल्लिखित किया गया है।

यहाँ यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है। इसका यहाँ एक कॉटन जीन-प्रेस है। इसका पता  
 देहली गेट है।

संयुक्त प्रांत

बैंकर्स—

दी इम्पिरियल बैंक अलीगढ़ प्रांच  
 मेसर्स लायकचंद गुलाबचंद सरायखित्री  
 " भिभीलाल चन्दालाल "

सोना-चाँदी के व्यापारी—

सेठ अम्बालाल दूधे पड़ा बाजार  
 मेसर्स गनेशलाल छप्पनलाल "  
 सेठ जड़ाबलालजी "  
 " दीपचंदजी "  
 मेसर्स भोपालदास कन्हैयालाल "  
 " श्रीलाल ज्वालामसाद "

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स बदुलगनी महमद चौक  
 " दूबीलराम सोनपाल पड़ा बाजार  
 " टीकाराम देवधीनन्दन महावीरगंज  
 " धरमदास मटरनल कनवरीगंज  
 " नाथूराम रयाजीराम पड़ाबाजार  
 " बालमुकुन्द घुमोलाल महावीरगंज  
 " बामुदेव सुद्धसेन पड़ाबाजार  
 " मोतीलाल गंगाप्रसाद महावीरगंज  
 " मोतीलाल निरंजनलाल महावीरगंज  
 " सुकुन्दलाल नारायणदास पड़ाबाजार  
 " रामस्वरूप प्यारेलाल महावीरगंज  
 " शाहिगयान गझापर चौक  
 " होत्रीलाल बाबूलाल महावीरगंज

खर के व्यापारी—

मेसर्स चैनपाल बालकृष्ण मदारगेट  
 " जमनादास आसानन्द मदारगेट  
 " लीलाधर द्वारकाप्रसाद सबजीमंडी  
 " शांतिलाल नागरमल मदारगेट

लोहे के व्यापारी—

मेसर्स जानकीप्रसाद गंगाप्रसाद महावीरगंज  
 " प्यारेलाल हरवल्लभदास "  
 " भगनौराम बुधसेन "  
 " रघुनन्दनप्रसाद मूलचंद "  
 " रामचरनलाल कसेरा "

इमारती लकड़ी के व्यापारी—

मेसर्स गोविन्दराम रामप्रसाद पड़ाव दूधे  
 " जानकीप्रसाद गंगाप्रसाद "

पड़ी के व्यापारी—

मेसर्स रायबहादुर हमराव सिंह परब  
 संस रत्नेरोह

सुकसेलसं—

पौ० सी० द्वारा भेणी परब को०  
 गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स हिरानराल मेननाथ कल्याणगंज  
 " त्रिभुमल अयोप्याप्रसाद मुमुफगंज  
 " गोपालदास बल्लभदास कल्याणगंज  
 " दिलेराम जगन्नाथ "  
 " विहारलाल शंकरलाल "

के नाम से फर्म का तथा मिल का परिचय ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में दिया गया है।)

इसी बीच इस परिवार के लोग अलग २ हो गये और सेठ अमोलकचन्दजी ने प्रथम स्वतंत्र व्यापार प्रारम्भ कर दिया। आपको सरकार ने रायबहादुर का खिताब दिया था। आपके कोई पुत्र न होने से आपने सेठ हरमुखरायजी के पुत्र सेठ मेवारामजी को दत्तक लिया। आपको भी सरकार ने रायबहादुरी का खिताब प्रदान किया। आपके भी कोई पुत्र न होने से आपने रायबहादुर चम्पाजालजी के पुत्र लाला शान्तिमलजी को दत्तक लिया।

इस समय इस फर्म के मालिक लाला शान्तिमलजी हैं। सन् १९२३ में आप जॉनरो मजिस्ट्रेट और म्यूनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन चुने गये। आप सुशिक्षित और उदार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

- |   |   |   |
|---|---|---|
| मुम्बई—मेमर्स अमोलकचन्द मेवाराम<br>T. A. Raniwala                               | } | यहाँ हेड ऑफिस है। इस फर्म पर बैंकिंग, रुई, गल्ला और कमीशन का काम होता है। यहाँ आपकी जीन प्रेस फैक्टरी है। |
| देहली—मेमर्स अमोलकचन्द मेवाराम<br>महेश्वरीदास का कटरा<br>T. A. Raniwala         |   | बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है।   |
| अजमेर—मेमर्स अमोलकचन्द मेवाराम<br>वैतन मंत्र<br>T. A. "Raniwala"                | } | बैंकिंग, रुई, गल्ला और कमीशन का काम होता है।  |
| अजमेर—मेमर्स अमोलकचन्द<br>मेवाराम<br>T. A. Raniwala                             |   | बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है, तथा जीन प्रेस फैक्टरी है।   |
| बम्बई—मेमर्स अमोलकचन्द<br>मेवाराम लक्ष्मीचिह्निंग<br>काठकदेरी<br>T. A. "Amolak" | } | यहाँ बैंकिंग, रुई, गल्ला और कमीशन एजन्सी का काम होता है।  |
| अजमेर—मेमर्स अमोलकचन्द<br>मेवाराम<br>T. A. Raniwala                             |   | रुई, गल्ला और कमीशन का काम होता है तथा जीन प्रेस फैक्टरी है।  |





बन्दीसी—मेसर्स अमोलकचन्द  
मेवाराम  
T. A. Raniwala

} यहाँ जीन प्रेस, फैक्टरी है। तथा रुई, गले का व्या-  
पार होता है।

### मेसर्स गोरखराम साधूराम

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। वहाँ यह फर्म अच्छा व्यापार करती है और भी कई स्थानों पर इसकी शाखाएँ हैं जिनका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग के पेज नं० २४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म रुई का व्यापार करती है। यहाँ इसकी ज़िनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी भी है। इसके वर्तमान मालिक सेठ बोला-रामजी, गौरीरामजी तथा बन्दीयालालजी गोयनका हैं।

### मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद

मुर्दा में इस फर्म को स्थापित हुए करीब ७० वर्ष हुए। यहाँ पर इस फर्म की स्थापना सेठ जोगीरामजी ने की। आप अग्रवाल जैन जाति के सज्जन थे। जोगीरामजी का देहान्त हुए करीब ५०-५५ वर्ष हो गये। जिस समय सेठ जोगीरामजी का स्वर्गवास हुआ उस समय आपके पुत्र सेठ जानकीप्रसादजी की अवस्था केवल १४-१५ वर्ष की थी। मगर रा० ब० सेठ जानकीप्रसादजी इतने शीघ्र बुद्धि, मेधावी और व्यापाखुशल सज्जन थे कि इस योद्धीसी अवस्था में आपने व्यापार को सम्हाल लिया। एक समय आपके जीवन में ऐसा भी आया कि आपके पास कुछ भी द्रव्य नहीं रहा। मगर उस कठिन समय में भी आप धैर्य से बिलकुल विचलित नहीं हुए। प्रयत्न आपने और भी एसाइ के साथ व्यापार चलाया और पुनः सम्पत्ति स्थापित कर ली। गवर्नमेण्ट ने आपको यू० पी० कौन्सिल का मेम्बर बनाया। तथा रायबहादुरी का सम्मानित पितृत्व प्रदान किया। दानवीर भी आप बहुत बड़े थे। आपने अपनी तरफ से जानकीप्रसाद एंग्लो संस्कृत स्कूल के नाम से एक हार्ड स्कूल बनाया। जिसमें करीब दो लाख रुपये व्यय हुआ है और ४५० छात्र उसमें पढ़ते हैं जो अब भी वही शान से चल रहा है। और भी मिन २ सार्वजनिक कार्यों में आपने हजारों रुपये दान किया। इन प्रकार अत्यन्त उन्नत जीवन व्यतीत करते हुए आपने देह त्याग किया।

संवत् १९६१ में रा० ब० सेठ जानकीप्रसादजी अपने जीवन काल ही में रायमाधव सेठ श्यामलालजी को टिग नामक ग्राम से दसक लाये थे। इस समय आप ही इसके मालिक हैं। शाखा भी यहाँ पब्लिक और गवर्नमेण्ट में बहुत बड़ा सम्मान है। आज यहाँ की यूनि-



विनैसिटी के चेयरमैन, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट तथा गवर्नमेण्ट के डिस्ट्रिक्ट ट्रेझरर हैं। आगो पद्मो जनररी मन् १९२७ में रायसाहिब का सम्माननीय खिताब प्राप्त हुआ। यहाँ के सार्व-जनिक कानों में भी आप बड़ी वशरता से ध्यान देते रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हेड ऑफिस मुर्जा—मेमर्गं जोगीराम जानकीप्रसाद (T. A. Krishna)—इस कर्म पर गन्ना और रुई का बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।

बन्नीमी—मेमर्गं जोगीराम जानकीप्रसाद—यहाँ पर भी गन्ना और रुई का व्यापार होता है।

हनुव—मेमर्गं जोगीराम जानकीप्रसाद (T. A. Shiam)—यहाँ पर भी गन्ना और रुई का व्यापार होता है।

बन्दी—मेमर्गं जोगीराम जानकीप्रसाद कालावादेवी (T. S. "Carat")—यहाँ पर भी गन्ना और जमीरान एजन्सी का काम होता है।

रोहनद—जमीरान एजन्सी का काम होता है।

बदमेण्ड स्थानों में से बम्बई को छोड़कर सब स्थानों पर आपकी जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरिया चल रही हैं।

### मेमर्गं मुगुलकिशोर मुकुटवाल

इस कर्म की स्थापना लाला मुकुटवालजी ने सन् १९१८ में मुर्जा में की। आप अपना कर्नाव के सञ्चन हैं। आपकी ने अपने व्यापार कौशल से इस कर्म को क्रमशः बढ़ाया। आपने हनुव तथा निचन्द्रगवाड़ में अपनी कर्मों स्थापित कीं। इस कर्म के वर्तमान माजिद लाला मुकुटवालजी तथा आपके पुत्र बा० मुगरीवालजी, बा० भगवती प्रसादजी, बा० हनुवरवालजी तथा बा० विठ्ठलवाड़वालजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मुर्जा—मेमर्गं मुगुलकिशोर मुकुटवाल

हनुव—मेमर्गं मुगुलकिशोर मुकुटवाल

निचन्द्रगवाड़ (बुन्दगवाड़)—मुगुलकिशोर मुकुटवाल

} इन तीनों कर्मों पर गन्ना, रुई और जमीरान एजन्सी का काम होता है।

### मेमर्गं हरजीराम लक्ष्मणदास

इस कर्म के वर्तमान माजिद भेट् लक्ष्मणदासी प्रथिया तथा आपके भाई भेट् बन्नीवासी करिया हैं। आप लोग क्रमशः कर्मों के सञ्चन हैं। आप लोग भेट् लक्ष्मणदासी के पुत्र

हैं। आपकी फर्म सुर्जें में बहुत पुरानी एवं प्रविष्टिष्ठ हैं। आपकी ओर से एक धर्मशास्त्रा श्यपी-केरा में तथा एक धर्मशास्त्रा सुर्जा अंकरान पर धनवार्दे गई है। अपने पिताजी के नाम से आपने सुर्जा में एक अस्त्रवाल भी खला रक्खा है।

आपकी फर्म पर सुर्जें में, बैंकिंग, गड्डा और कमीरान एजेंसी का काम होता है।

### मेसर्स रामदयाल म्हालीराम

इस फर्म के मालिक राय बहादुर गद्दासागरजी जटिया हैं। आप भी सेठ लक्ष्मणदासजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। मगर १९७० से आप अपना कारबार अलग कर रहे हैं। आप यहाँ के बड़े प्रविष्टिष्ठ रईस और व्यापारी हैं। गवर्नमेंट ने आपको रायबहादुरी के सम्मानसूचक पद से सम्मानित किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सुर्जा—मेसर्स रामदयाल म्हालीराम—यहाँ बैंकिंग तथा जूट मिल्स के शेअरों का काम होता है।

अजोगढ़—मेसर्स लक्ष्मणदास गद्दासागर—यहाँ बैंकिंग और कमीरान एजेंसी का काम होता है।

### मेसर्स सुखानन्द श्यामलाल

इस फर्म को करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ सुखानन्दजी ने स्थापित किया था। मगर इसकी विरोध वृत्तति आपके पुत्र सेठ श्यामलालजी के हाथों से हुई। आपने कोसी, मधुरा, डिबाई और सुर्जा में अपनी जीन प्रेस फैक्टरियाँ खोजी और बम्बई में भी अपनी फर्म की शाखा स्थापित की।

सेठ श्यामलालजी चार भाई हैं। जिनके नाम क्रमशः रामलालजी, बंशीधरजी और अयोध्याप्रसादजी हैं। इनमें से लाला बंशीधरजी और अयोध्याप्रसादजी का स्वर्गवास हो चुका है। लाला रामलालजी के पुत्र लाला चिमनालालजी शॉसी में असिस्टेंट क्लर्क हैं, और रायबहादुर भी हैं। लाला अयोध्याप्रसादजी के पुत्र लाला बाबूलालजी बी० एल० सी० एल० एल० बी० यू० पी० कॉलेज के मेंबर रह चुके हैं। आप इस समय फर्म का संचालन करते हैं। आपके भाई लाला मंगलसेनजी बी० ए० भी फर्म के संचालन में योग देते हैं और लाला बंशीधरजी के पुत्र ला० सुनीललालजी बाइस वेयरमें सुर्जा म्युनिसिपैलिटी बम्बई फर्म का संचालन करते हैं।



## हाफुड

यह मरहो ई० आर्से० आर० की दिल्ली मुरादाबाद ग्रांथ लाइन का एक जंकरान है। यहाँ से एक लाइन मेरठ से आकर सुर्जा की जाती है। यह स्थान गल्ले की एक बहुत बड़ी मण्डली है। एसा कर गेहूँ के लिये सो भारतवर्ष की बहुत बड़ी मण्डियों में इसका स्थान है। गल्ले के बहुत बड़े २ व्यापारियों और फमीरान एजेण्टों की यहाँ पर दुकानें अथवा ग्रांथेस हैं।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:—

### मेसर्स गनेशीलाल मंगतराय

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ नादिरमलजी, डेहराजजी, सम्मनलालजी और धरमदासजी हैं। आरका मूल निवास स्थान बेरी का है। यह फर्म २८ वर्ष पूर्व सेठ मंगतरायजी के द्वारा स्थापित हुई। इसकी विरोप एजन्ति सम्मनलालजी द्वारा हुई। इस फर्म का व्यापारिक परिचय नीचे लिखे सुवाचिक है—

राजुड—मेसर्स गनेशीलाल मंगतराय

पदा बाल

T. Ph. No 40

} यहाँ व्यापार और आदत का काम होता है।

बेरी (रोहतक)—मेसर्स पूरनमल

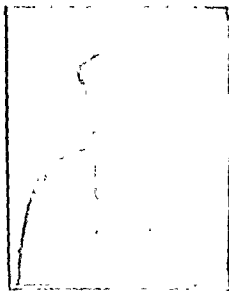
गनेशीलाल

} यहाँ बैंकिंग और आदत का काम होता है।

### मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद

इस फर्म का हेड आफिस मुरजा है। इसके वर्तमान मालिक रायसाहब श्यामलालजी हैं। इसका विलुप्त परिचय चिजों सहित मुरजा में प्रकाशित किया गया है। यह फर्म यहाँ गल्ले एवं रूई का व्यापार और आदत का काम करती है। इसकी यहाँ एक जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है।





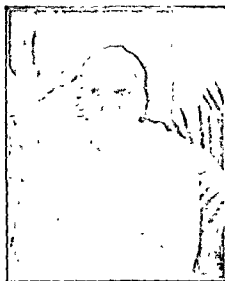
શ્રીમદ્દેવદાસજી સુભાષચંદ્ર મેરઠ



શ્રીમદ્દેવદાસજી ( શુભાષચંદ્ર દેવદાસ ) મેરઠ



શ્રીમદ્દેવદાસજી સુભાષચંદ્ર મેરઠ



શ્રીમદ્દેવદાસજી સુભાષચંદ્ર મેરઠ

4

.

- मेसर्स जगन्नाथ रामनाथ  
 " दुर्गादास नारायणदास  
 " दामोदरस्वरूप बालस्वरूप  
 " बाबुराम चेतनप्रकाश  
 " भवानीसहाय सोहनलाल  
 " मोतीलाल कन्हैयालाल  
 " मीनामल बालकृष्णदास

- मेसर्स रामगोपाल हीरालाल  
 " रामगोपाल रामेश्वरदास  
 " शंकरदास गंगाराम  
 " शोभाराम गोपालराय  
 " शंकरदास जमनादास  
 " हजारीलाल बाबूराम

## मेरठ

यह शहर नार्थ वेस्टर्न रेलवे की मेन लाइन पर दिल्ली और सहायनपुर के बीच में बसा हुआ है। यहाँ से ई० आर्द० आर० की एक मासिक सुर्जा तक जाती है। इस स्थान पर सब से प्रधान व्यापार गुड़ का है। भारतवर्ष की प्रधान २ गुड़ की मण्डियों में इसका स्थान बहुत ऊँचा है। यहाँ पर प्रतिवर्ष औसतन तीन लाख यैली तक (२॥ मन) गुड़ का जाता है। गुड़ का खास मौसिम कार्तिक से फाल्गुन तक रहता है। यह गुड़ यहाँ से पंजाब, सिंध, गुजरात और मालवे को जाता है। इस जिले में गाजियाबाद, हाउड़, बड़ौद इत्यादि मण्डियों और हैं। यह गुड़ भेजी, बरफी और लड्डुआ ऐसे तीन प्रकार का होता है। यहाँ पर गुड़ का खास व्यापार केसरगंज में होता है। गुड़ के पञ्चान् दूसरें नम्बर में यहाँ पर गल्ले का व्यापार होता है जिसमें गेहूँ, जौ और मटर प्रधान है। यहाँ की इण्डस्ट्रीय में साबुन की इण्डस्ट्री प्रधान है। साबुन यहाँ कई किस्म का बनता है। अच्छा और सस्ता होता है तथा बहुत दूर २ तक जाता है। यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

लाला रामचन्द्र स्वरूप रईस  
 आपके परिवार का इतिहास बहुत पुराना है। करीब ३०० वर्ष से तो वह शृंगलाचन्द्र रूप में मिलता है। सन् १६५८ ई० में बादशाह औरंगजेब ने इस परिवार के पूर्व पुरुष चौधरी चौखराजजी को कानूनगो का रिवाज देकर मेरठ में भेजा था। इसके पूर्व आपके पूर्वजों को बादशाह शाहजहाँ ने जिन्दतुल अनामिल की पदवी प्रदान की थी। चौधरी चौखराजजी के पञ्चान् कमरा: लाला हूँगरमलजी, किरानसिंहजी, गंगादासजी,





इन फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

मेरठ—मेसर्स सेठ अम्बानन्द  
महल्ला काननूगो } बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है ।

### मेसर्स कन्हैयालाल भगवानदास

सन् १८८० ई० में लाला कन्हैयालालजी और लाला भगवानदासजी ने इस फर्म को स्थापित कर लकड़ी का व्यापार आरम्भ किया । आप लोग जंगलों का कस्ट्रुक्स्ट लेते थे । इसमें आपको अच्छी सफलता मिली । फलतः आपने फर्म पर लोहे का व्यापार भी प्रारम्भ किया जो अब तक फर्म पर होता आ रहा है ।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला शंकरलालजी और अम्बानदासजी हैं । आपका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है ।

मेरठ—मेसर्स कन्हैयालाल भगवानदास  
स्मिथगंज } यहाँ लकड़ी और लोहे का व्यापार होता है ।  
T. A. Kanayalal

मेरठ—मेसर्स कन्हैयालाल भगवानदास  
अनामदरही } यहाँ कमीशन एजन्सी का काम होता है ।

इन फर्म के पास मेरठ जिले के लिए टाटा कम्पनी के लोहे की एजन्सी है तथा इसी कम्पनी के परिषयन बोम्स को एजन्सी भी मुजबकरनगर तथा पुण्ड्राहर के लिए इसके पास है । जो रास कन्सेशन पर यहाँ विद्यते हैं ।

### मेसर्स किरोडीमल कारीराम

इस फर्म का हेड ऑफिस रोहतक में है । यहाँ पर करीब ५० वर्ष पूर्व मेसर्स मुत्ताहोलाल जुगलकिशोर के नाम से यह फर्म खोली गई थी । जिसके व्यापार में अच्छी सफलता मिली । गत चार वर्षों से इसके मालिक अलग २ हो गये । अब: लाला जुगलकिशोरजी ने मेसर्स जुगलकिशोर कारीराम के नाम से रोहतक में फर्म खोली । तथा इसी फर्म की एक प्राथ मेसर्स किरोडीमल कारीराम के नाम से यहाँ पर खोलकर गल्ले और कमीशन का काम आरम्भ किया ।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला जुगलकिशोरजी तथा आपके पुत्र लाला कारीरामजी, लाला सानूरामजी, तथा लाला अहलानन्दजी हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेरठ—मेसर्स किरोड़ीमल काशीराम  
कैसरगञ्ज } यहाँ पर गल्ले और गुड़ की आड़त का काम होता है। इस फर्म में पं० मंशाराम क़मफ़र बाज़ों का साम्रा है।

रोहतक मण्डो—मेसर्स जुगलकिशोर काशीराम—यहाँ पर बैकिंग और आड़त का काम होता है।  
सोनीपत—किरोड़ीमल जुगलकिशोर—गल्ले और गुड़ की आड़त का काम होता है।

### मेसर्स बासूमल बसन्तराम

इस फर्म की स्थापना सन् १८७७ में लाला बासूमलजी तथा आपके भाई लाला बसन्तरामजी ने करके इस पर लकड़ी का व्यापार आरम्भ किया। इस फर्म की विशेष उन्नति बासूमलजी के पुत्र लाला बासूमलजी के हाथों से हुई। आपने लकड़ी के अतिरिक्त लोहे का व्यापार भी आरम्भ किया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बासूलालजी तथा लाला भिक्खूलालजी ( बसन्तरामजी के पौत्र ) हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेरठ—मेसर्स बासूमल बसन्तराम  
स्मिथगञ्ज } यहाँ लकड़ी तथा लोहे का थोक व्यापार होता है।  
T. A. "Timber" } यह फर्म टाटा कम्पनी का तैयार किया हुआ लोहा भी बेचती है।

### मेसर्स मामराज फ़तेचन्द

इस फर्म के मालिक आदि निवासी मावण्डा ( जयपुर ) के हैं। इस फर्म को स्थापित हुए करीब १५० वर्ष हुए। इसकी विशेष उन्नति सेठ हुलासरायजी और कन्हैयालालजी ने की। आपके पश्चात् आपके भाई भीखामलजी ने फर्म का कार्य संचालित किया और आपके अनन्तर सेठ राधेलालजी ने।

वर्तमान में इसके संचालक सेठ राधेलालजी के पुत्र बाबू नरयूमलजी, रामसरनजी और शिबराजूरजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

मेरठ—मेसर्स मामराज फतेचन्द दालमण्डी	}	यहाँ रुई की आड़त का काम होता है ।
मेरठ—मेसर्स मामराज फतेचन्द कैसरगंज		यहाँ गुड़ एवं गल्ले की आड़त का काम होता है ।
मेरठ—मेसर्स शिवराजूर मदनलाल कैसरगंज	}	यहाँ चांबल, गल्ला और शकर का व्यापार होता है ।

### मेसर्स शोभाराम गोपालराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान भिवानी है । संवत् १९२५ में सेठ शोभालालजी पाटनी तथा गोपालरामजी और छोदूलालजी बड़जात्या ने मिल कर इस फर्म की स्थापना की और आड़त का कारबार शुरू किया । इस फर्म की विरोध तरफ़ी सेठ छोदूलालजी के पुत्र सेठ छाजूरामजी ने तथा सेठ शोभालालजी के पुत्र सेठ बाडूरामजी ने की । सेठ बाडूरामजी का संवत् १९८७ में और सेठ छाजूरामजी का संवत् १९८६ में स्वर्गवास हो गया ।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ शिवनारायणजी, सेठ सुभालालजी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी और सेठ हूंगरमलजी हैं । व्याप रणहेतुबाल जैन जाति के हैं ।

इसका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

मेरठ—मेसर्स शोभाराम गोपालराम सादर T. A. "Jain"	}	यहाँ बैकिंग और गुड़ तथा गल्ले की आड़त का काम होता है ।

इसके सिवाय इस फर्म की मेसर्स शोभाराम गोपालराम के नाम से कैसरगंज, मेरठ हापुड़, और श्यामली में, तथा मेसर्स शोभाराम भीराम के नाम से खन्नीसी, और भांपला ( बरेली ) में और छाजूराम भीराम के नाम से भिवानी में दुकानें हैं । इन सब दुकानों पर बैकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है ।

### मेसर्स हरगोपाल गरीबराम

इस फर्म का व्यापार मेसर्स हरगोपाल गरीबराम के नाम से सेठ गरीबरामजी ने प्रारम्भ किया । प्रारम्भ से ही इस फर्म पर गन्ने की आड़त का काम प्रारम्भ किया गया । जो यह फर्म





शाय बहादुर लाल देवीनाथसाहूजी मुजबकर नगर



शाय बहादुर लाल देवीनाथसाहूजी मुजबकर नगर



शाय साहब लाल भावन्दरसाहूजी मुजबकर नगर



### आ० रा० व० लाला निहालचन्द्रजी का परिवार

आप अपने समय के बहुत ही प्रतिष्ठित जमींदार एवं रईस माने जाते थे। आपकी गति-विधि राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में थे। आपने संयुक्त प्रांत के जमींदारों के हितहित के लिये जहाँ सराहनीय प्रयत्न किया वहाँ वहाँ के किसानों के स्वार्थ संरक्षण के लिये भी यथेष्ट श्रम किया। आपने इन दोनों ही वर्गों के हित के लिये सरकार से भी अचछा भावों का मोर्चा लिया। आप कौंसिल में जोरदार सदस्य माने जाते थे। आपका जीवन एक क्रियात्मक जीवन रहा। आपका स्वर्गवास सन् १९०९ में हो गया। आपके तीन पुत्र थे जिनमें बड़े का नाम आनरेबल लाला मुखराम सिंहजी, उनमें छोटे लाला लक्ष्मणस्वरूपजी तथा सबसे छोटे राय साहिब लाला आनन्दस्वरूपजी ही इस समय वर्तमान हैं। शेष दोनों बड़े पुत्र स्वर्गवासी हो चुके हैं।

### स्व० आनरेबल लाला मुखदेवसिंहजी का परिवार

आपका जन्म सन् १८६८ की ५वीं जनवरी को हुआ था। आपने आगरे के सेन्ट स्टेफेन्स स्कूल तथा आगरा कालेज में अमेरीकी की शिक्षा प्राप्त की और कलकत्ता विश्वविद्यालय की सन् १८८६ में आपने प्रतिष्ठा के साथ परीक्षा पास की। आपने अपने व्यवहारिक जीवन के आरम्भ में अपने पिता जी से ही राजनैतिक साहित्य की शिक्षा प्राप्त की और अल्पकाल में ही आपने इस क्षेत्र में अच्छा अनुभव प्राप्त कर लिया। अपने पिताजी के स्वर्गवास के बाद ही आप सन् १९०९ में प्रथम बार यू० पी० कौंसिल के सदस्य चुने गये। इसी प्रकार सन् १९१२ और १९१६ में भी आप एक कौंसिल के बिना विरोध सदस्य चुने गये। सन् १९२० ई० में शासन-सुधार के अनुसार नवीन कौंसिल के चुनाव में भी आप छड़े हुए और बिना विरोध चुने गये पर आपने शीघ्र ही कौन्सिल आक स्टेट के लिये जाने का निश्चय कर प्रांतीय नवीन कौंसिल से त्यागपत्र दे दिया। आप सन् १९२० से सन् १९२७ तक कौंसिल आक स्टेट के सदस्य रहे। इसी प्रकार स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के सन् १९०९ से १९१८ तक चेयरमैन रहे। इतना ही नहीं वहाँ की म्यूनिसिपैलिटी के प्रथम नान-अफिशियल चेयरमैन आप ही थे। आप यू० पी० जमींदार एसोसियेशन के आनरेरी सेक्रेटरी सन् १९०९ से १९२७ ई० तक रहे। मेरठ कालेज के भी सेक्रेटरी आप सन् १९१२ से २१ तक रहे। अतिशुद्ध आधुनिक औप-धायक के जन्मदाता और अतिशुद्ध मन्वयवाचक के प्रेसीडेंट भी आप थे। इसी प्रकार आप इण्डिया हिन्दू महासभा के गम्पावरु एवं आजीवन जनरल सेक्रेटरी रह कर आपने हिन्दू समाज की सेवा की। आपका जीवन बड़ा ही कियाराजित रहा। आप आजीवन सौभाग्यवादी कार्यों में



## भारतीय व्यापारियों का परिषय

लगे रहे। आपका स्वर्गवास सन् १९२७ में हुआ। वर्तमान में आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमानुसार इस प्रकार हैं। श्री हरिराजस्वरूप एम० ए० एल, एल० बी०, श्री गोपाल राजस्वरूप एम० ए० बी० एस० सी० तथा श्री ब्रह्मस्वरूप बी० ए० हैं।

### लाला हरिराजस्वरूप M. A. L. L. B.

आप स्व० लाला मुखर्जी सिंहजी के प्रथम पुत्र हैं। आप उच्च शिक्षा प्राप्त महात्मा हैं। आप यू० पी० जमींदार एसोसियेशन के वर्तमान आनरेरी सेक्रेटरी हैं। आप यहाँ की कोऑपरेटिव सोसायटीज् के डायरेक्टर तथा स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के म्यूनिसिपल कमि-  
भर हैं। आप अपने पिता के समान ही सार्वजनिक कार्यों से अनुराग रखते हैं।

### लाला गोपालराजस्वरूप M. A. B. sc.

आप स्व० आनरेबल लाला साहिब के द्वितीय पुत्र हैं। आप भी मुद्रिशा प्राप्त नवयुवक हैं। आप आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी हैं। आप भी सार्वजनिक कार्यों में अच्छा भाग लेते हैं।

### लाला ब्रह्मस्वरूप B. A.

आप स्व० आ० लाला मुखर्जीसिंहजी के छोटे पुत्र हैं। आप होनहार नवयुवक हैं और अभी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

## स्व० लाला लक्ष्मणस्वरूपजी का परिवार

आप स्व० आ० रायबहादुर लाला निहालचंदजी के द्वितीय पुत्र थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है। आप आजीवन सरकारी नौकरी करते रहे। आप सुयोग्य शासक एवं मेधावी महा-  
त्मा थे, आप डिप्टी कलेक्टर के पद पर थे और आपने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट का काम भी भर्से तक किया था। आपका स्वर्गवास सन् १९२५ में हुआ। आपके दो पुत्र वर्तमान हैं जिनके नाम क्रमानुसार लाला जनार्दनस्वरूप B. A. तथा लाला रघुराजस्वरूप B. A. L. L. B. हैं।

### लाला जनार्दनस्वरूप B. A.

आप मुद्रिशाप्राप्त सज्जन हैं। आप स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के कमिभर तथा ऑनरेरी सुनमिह हैं। आप स्थानीय सनातन-धर्म हार्ड स्टून की कमेटी के सदस्य भी हैं और लगभग २० हजार रुपये के वार्षिक मात्रगुजारी तथा १५ हजार साताना के वार्षिक आमदनी पर इन-कम टैकम देने हैं। आपके परिवार की ओर से हरिद्वार और श्योकेरा में धर्मसाजाने बनी हुई हैं।



स्व० रायबहादुर सुनधरसिंहजी साहिब मुजफ्फरनगर



धीयुज हरिसाज स्वरूपजी मुजफ्फरनगर



डा० गोपाल राजस्वरूपजी मुजफ्फरनगर



डा० प्रहाराज स्वरूपजी मुजफ्फरनगर



छात्रा हनुमन्तरूपरूप B. A. L. L. B.

आप लाला जनार्दनस्वरूपजी के छोटे भ्राता हैं। आप सुरिशासम्पन्न होनहार नवयुवक हैं। आप वकील हाईकोर्ट के अतिरिक्त ऑनरेरी सेराल मैजिस्ट्रेट भी हैं। आप भी २० हजार के लगभग वार्षिक मालगुजारी देते हैं और १५ हजार वार्षिक आय पर आय कर चुकाते हैं।

### रायसाहिब लाला आनन्दस्वरूपजी

आप स्व० आनन्दराव रायबहादुर लाला निडालचंदजी के सब से छोटे पुत्र हैं। आपके दोनों बड़े भाई स्वर्गवासी हो चुके हैं। जिनका परिचय ऊपर दिया गया है। लाला आनन्दस्वरूपजी यू० पी० एमिक्लर बोर्ड के मेम्बर, एमिक्लर कॉलेज कानपुर की प्रबन्धकारिणी के मेम्बर, इण्टर मीडियेट और हाईस्कूल एक्जामिनेशन बोर्ड के मेम्बर, यू० पी० जमींदार एसोसिएशन मुजफ्फरनगर के वार्षिक प्रेसिडेण्ट, सनातनधर्म हाई स्कूल मुजफ्फरनगर के सेक्रेटरी, मेरठ कॉलेज मैनेजमेण्ट बोर्ड के तथा इन्टरम्येडियेट हाईस्कूल बोर्ड के मेम्बर हैं। इसी प्रकार और भी प्रत्येक सामाजिक कार्य में आप भाग लेते रहते हैं। यहाँ की पब्लिक पर आपका अच्छा प्रभाव है।

### छात्रा हनुमन्तरूपरूपजी

आप लाला आनन्द स्वरूपजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आप बड़े हस्ताक्षरी होनहार नवयुवक हैं। आपका स्वभाव बहुत ही मिलनसार है। आप अपने यहाँ की विस्तृत जमींदारी तथा बैंकिंग आदि का सभी काम बड़ी बुद्धिमानी एवं योग्यता से संचालित करते हैं। आप सुरिशा प्राप्त सज्जन हैं।

### मेसर्स किशोरीलाल भागीरथमन्

इस फर्म के मालिकों का निवासस्थान मुजफ्फरनगर ही का है। आप लोग अमवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ बहुत समय से व्यवसाय कर रही है। इस फर्म पर बैंकिंग तथा गन्ने का व्यापार और भारत का काम होता है। यह फर्म यहाँ की बहुत प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है। इस फर्म की उन्नति का भव्य ला० किशोरीलालजी को है। आप व्यापार-कुशल और मेधावी सज्जन थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक स्व० ला० किशोरीलालजी के पुत्र ला० परमेश्वरजी रहते हैं। आप स्थानीय स्तुतिविपन्न बोर्ड के चेयरमैन तथा सनातनधर्म एडवर्ड हाई-

स्कूल के वाइस प्रेसिडेंट हैं। इसी प्रकार आप स्थानीय चेम्बर ऑफ क्लामर्स के प्रेसिडेंट तथा मेरठ कालेज के बोर्ड आफ टस्ट्रीज की एक्जिक्यूटिव कमेटी के सदस्य हैं। आप ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट भी हैं। और भी कितनी ही सार्वजनिक संस्थाओं में आपका अहम् हाथ रहता है। आप मुजफ्फरनगर के प्रतिष्ठित नागरिक तथा सम्माननीय जमींदार एवं पुराने रईस हैं। आपके यहाँ जमींदारी तथा बैंकिंग का काम भी होना है। आपका ध्यान व्यापार की ओर विरोध रूप से है। आप बुद्धिमान तथा व्यापारकुशल सज्जन हैं।

आपके बड़े पुत्र ला० दीपचंदजी एम० ए० उच्च शिक्षाप्राप्त होनहार नवयुवक हैं। आपका स्वभाव मिलनसार एवं व्यवहार सरल है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—किशोरीलाल भागीरथमल मुजफ्फरनगर,	}	यहाँ गुड़ तथा गल्ले का व्यापार एवं आड़व का काम होता है।
मेसर्स—पीरूमल दीपचंद मुजफ्फरनगर पुरनियाँ		"
मेसर्स—किशोरीलाल पीरूमल देवबन्द ( सहारनपुर )	}	यहाँ गुड़ तथा गल्ले का व्यापार और आड़व का काम होता है।

## कमीशन एजण्टस्

### मेसर्स घासीराम कंदारनाथ

इस फर्म की स्थापना मेसर्स घासीराम सोहनलाल के नाम से लगभग ४० वर्ष पूर्व लाला घासीरामजी तथा आपके भाई लाला सोहनलालजी ने की थी। आप दोनों ही मराठु भाइयों के परिश्रम एवं उद्योग से फर्म के व्यवसाय ने अच्छी उन्नति की। इस फर्म पर आरम्भ से ही कमीशन एजेंटजी का काम दिया गया जो यह फर्म वर्तमान में अच्छे ढंग से कर रही है। इस फर्म के संस्थापकों का स्वर्गवास हो गया है। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला कंदारनाथजी हैं। आप लगभग ३ वर्ष पूर्व अपनी पुरानी फर्म में सम्बन्ध अलग कर इरोल्ट नाम से काम करने लगे हैं। अतः पुग्ने नाम से काम नहीं होता।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

मुजफ्फरनगर—मेसर्स घासीराम केदारनाथ नई मण्डी	} यहाँ प्रधान रूप से कमीशन एजेन्सी का काम हाता है ।
--	--

### मेसर्स चंदूलाल घनश्यामदास

आप लोग भिवानी पंजाब के निवासी अमवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं । इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व यहाँ पर हुई थी और इस पर दूसरे नाम से व्यापार होता था । पर लगभग १० वर्ष से यह फर्म उपरोक्त नाम से व्यापार कर रही है

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला पट्टीदासजी हैं । आप ही फर्म के व्यवसाय का संभालन करते हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मुजफ्फरनगर—मेसर्स चंदूलाल घनश्यामदास नई मण्डी	} यहाँ गेहूँ और शुद्ध, रॉइ, सफर, रुई आदि के कमीशन का और यह काम-काज भी होता है ।
मेसर्स चंदूलाल घनश्यामदास रवौली ( मुजफ्फरनगर )	} यहाँ कमीशन एजेन्सी का काम होता है ।

### मेसर्स मार्शलाल चिरंजीवाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान भिवानी ( पंजाब ) का है । आप लोग हरदोल वाल वैश्य समाज के जैनी सज्जन हैं । यह फर्म यहाँ करीब ४५ वर्ष से स्थापित है । इसकी स्थापना सेठ माधोरामजी ने ही की । आप बयोवृद्ध सज्जन हैं । आप ही के द्वारा इस फर्म की वृद्धि हुई । शुरू से ही यह फर्म आड़व का काम करती आ रही है । इस फर्म पर पहले मेसर्स गोपालराय धानूराम नाम पड़ता था । सेठ माधोरामजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः चिरंजीवाजी, कूलचंदजी तथा धैजनाथजी हैं । आप तीनों ही सज्जन व्यापार में सहयोग देते हैं । सेठ माधोरामजी की जैन मनाशन सिख धर्म के अन्तर्गत मुजफ्फरनगर के

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

चेअरमेन हैं। आप व्यापारकुशल और बुद्धिमान सज्जन हैं। ला० चिरंजीलालजी भी व्यापार-कुशल व्यक्ति हैं। आप मिलनसार एवं होनहार नवयुवक हैं।

आप लोगों का सार्वजनिक कार्यों की ओर भी बहुत ध्यान रहता है। आपने यहाँ एक जैन मन्दिर बनवाया है। तथा पूजा बगैरह करवाई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरनगर—मेसर्स माधोलाल चिरंजीलाल T. A. Jain	}	यहाँ गल्ला तथा गुड़ का व्यापार और आदत का काम होता है।
शामली—माधोलाल बैजनाथ T. A. Phool.		यहाँ गल्ला तथा गुड़ का व्यापार और आदत का काम होता है।
सहारनपुर—माधोलाल चिरंजीलाल मोरगंज		यहाँ गल्ला तथा गुड़ का व्यापार और आदत का काम होता है।

### कमीशन एजण्ट्स

मेसर्स कादराम शिवदत्तराय  
 ,, पासीराम कैदारनाथ  
 ,, चन्दूलाल धनदयामदास  
 ,, जानकीदास मुमहीलाल  
 ,, तुनसीदास हजूरसिंह  
 ,, नरसिंहदास जवाहरलाल  
 ,, विशारीलाल द्वारकाराम  
 ,, बलदेवमहाय सूरजमल  
 ,, विशारीलाल रामरिद्धपाल

मेसर्स भगवानदास दुर्गाप्रसाद  
 ,, माधौराम चिरंजीलाल  
 ,, मुन्नालाल शिवचन्द्रराय  
 ,, मूलचन्द टीकमदास  
 ,, मोलचन्द मोतोराम  
 ,, राजाराम आन्धाराम  
 ,, लेखराज राजाराम  
 ,, शिवचरणदास माईधनदास  
 ,, हरप्रसाद भगवानदास

## सहारनपुर

यह नगर ई० आई० आर० की इस ओर की मुगलसराय सहारनपुर लाइन का अन्तिम स्टेशन है। मुगलसराय से जो गाड़ियाँ छूटती हैं वे यहीं आकर रुक जाती हैं। इस स्टेशन से एन० ट्वन्ट्यू आर० की मैन लाइन भी गयी है जो दिल्ली से चल कर पेशावर में खतम होती है। इसके अतिरिक्त यहाँ दिल्ली-सादरा-सहारनपुर लाइट रेलवे भी आती है। इस प्रकार यह एक बड़ा भारी अंकरान स्टेशन है। स्टेशन के पास ही एक उत्तम धर्मशाला भी है।

यह नगर व्यापारिक दृष्टि से गुड़ और गल्ले की बड़ी मण्डी है, शकर और रुई का भी यहाँ अच्छा व्यापार होता है। यहाँ कितनी ही प्रकार की वस्त्र नकाराई का काम लकड़ी पर किया जाता है, जो यैयार करके योरोप और अमेरिका भेजा जाता है। यहाँ लकड़ी की नकाराई का यह काम बहुत ही अच्छा और ऊँचे दर्जे का होता है। यहाँ से प्याद, बीज, बल्लम और पीदे भी बाहर को भेजे जाते हैं। भारत के विभिन्न स्थानों को यह मात्रा से जाता ही है पर विदेश को भी बहुत अच्छे परिमाण में भेजा जाता है। यहाँ पीदे ऐसे अच्छे दंग से पैक किये जाते हैं कि महीनों की यात्रा कर चुकने पर भी वहाँ प्रकार हरे भरे और सुरक्षित रहते हैं। बल्लम, पीदे और फलों का उत्तम संपर्क यहाँ के कम्पनीवाग में है। यहाँ के गन्ने और लोहा प्रसिद्ध हैं।

यहाँ कई एक ऑनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं जिसमें से कुछ में शोर मिल, राइस मिल और आइल मिल भी सम्मिलित हैं। इनमें से कुछ का नाम इस प्रकार है।

- १ पटेल मिन्स लि०
- २ बेस्ट पेटेन्ट को० लि०
- ३ शाला राधाकृष्ण राइस फाटन ऑनिंग एण्ड फ्लोर मिन्स
- ४ भीगार्थी मिन्स जिन एण्ड प्रेम
- ५ सहारनपुर फाटन ऑनिंग फैक्टरी

- ६ मुगलसराय राइस एण्ड फाटन मिन्स
- इनके अतिरिक्त यहाँ पर ९ और भी बड़े बड़े कारखाने हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं।
- १ कन्नाड फाउण्ड्री एण्ड इंजीनियरिंग वर्क शाल
  - २ एन० ट्वन्ट्यू रेलवे वर्क शाल



### मेसर्स अमोलकचंद मेवाराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक या० शांतिलालजी हैं। यू० पी० की अत्यन्त प्रगत स्त्री है इस फर्म को गिनती है। कई जगह इसकी शाखाएँ हैं। इसका विस्तृत परिचय हेड ऑफिस मुरजा में प्रकाशित किया गया है। यहाँ इस फर्म की एक जीविंग पैटर्नरी है तथा इसका व्यापार होता है। इसका तार का पता "Raniwala" है।

### मेसर्स माधोलाल चिरंजीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ माधोलालजी एवं आपके पुत्र हैं। इनका हेड ऑफिस मुजफ्फरनगर है। अतएव विस्तृत परिचय वहाँ देखना चाहिये। यहाँ यह फर्म मोरारजी गस्ला, गुड़ एवं आदत का व्यापार करती है।

### व्यापारियों के पते

#### बैंक्स

भगवानदास एण्ड को०  
इम्पीरियल बैंक प्रांथ  
इलाहाबाद बैंक प्रांथ

#### गस्ले के व्यापारी

मेसर्स मामचन्द राधाकृष्ण  
" कदयराम जगन्नाथ  
" सोमचन्द नागरमल  
" दुनीचन्द सगुनचन्द  
" धरमदास चन्द्रयानाल  
" बाटूराम मूलचन्द  
" बीरराज जानकीदास  
" मामचन्द जगन्नाथ  
" माधवलाल चिरंजीलाल  
" सगुनदास दुनीराम

#### मेसर्स मुगनचन्द मामराज

फलावर मिल  
हरकिशानदास फलावर निच  
फॉटन मर्चेन्ट  
मेसर्स रा० व० अमोलकचंद मेवाराम  
" मामचंद राधाकृष्ण  
" पटेल मिश्र  
पीदा, कलम व बीज के व्यापारी  
१ मेसर्स हेन बेन नगरी  
२ " एत० आर० मद्रम  
लकड़ी की नहरारी का सामान बाने  
मेसर्स अश्वदुल गहूर एण्ड सन्स  
" नजर मुहम्मद कज्जन्दक  
" मद्रम्मद इमाम मद्रम्मद इकरान  
" सुल्तान अहमद तुकरे अहमद  
" इबीव टुमेन मजीद टुमेन

## देहरादून

देहरादून भारतमण्डल स्थान है। यहाँ से मंसूरी, लन्दीय और चक्रायता नामक हिल स्टेशनों को मोटरों जायी हैं। यह स्थान ई० आरे० आर० की लम्बर-देहरादून ग्रांथ का अंतिम स्टेशन है। यह भी हिमालय पहाड़ ही पर स्थित है। यहाँ की भाव हवा सर्द एवं स्वास्थ्यप्रद है। यहाँ की बनावट बहुत सुन्दर है। इस शहर के देहरादून नाम पढ़ने का कारण यह बताया जाता है कि दो पहाड़ों के बीच की जमीन का दून कहते हैं और देहरा मित्रों के शुभ रामराय का स्थान इसी दून में था। अतएव इसका नाम देहरादून पड़ा। यहाँ महत्त्वपूर्ण जंगल का स्थान एवं पौधों शिक्षा देने का स्थान भी है। उद्घाटन के स्थान के साथ में विषय इन्स्टीट्यूट भी है।

यहाँ का व्यापार विशेष कर बागवानी बहिया चावल, धान और घने का है। यह मान यहाँ से बायें साइड में बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त जङ्गली पैदावार में मागू, देवदार, शीशम और चीड़ के बहुत पेड़ जङ्गलों में पाये जाते हैं। इन्हीं की लकड़ी की यहाँ आमद होती है और इसका भी यहाँ व्यापार होता है। इसके निवा जङ्गली पैदावार में जो सब से ज्यादा जाता है वह "रसोई" नामक पदार्थ है इसके निवा यहाँ कोई नाम व्यापार नहीं है। हीं हिल स्टेशन को मद्रास करने वाला सेंटर होने से बाहर से रोजाना देवदार का सामान बायें साइड में आता है।

यहाँ कारखानों में एक सरकारी लकड़ी का मिल है। इसमें लकड़ी का काम किया है।

### मेनार्म भगवानदाम एण्ड सो० बैंकर्स

यह एक कार्पोरेट बैंक है। दू० सी० में यह चलता हो बैंक है जो एक बैंकिंग के द्वारा चलाया जाता है। इसकी स्थापना वर्ष 1945 ई० में ला० भगवानदाम द्वारा हुई। भगवानदाम को राज्य के समय उनके लड़के लाला जगमोहनदाम को आनु केवल 12, 13 वर्ष की थी। हम मान्य इस बैंक की बहुत सफल सिद्धि की। लाला जगमोहनदामजीने अपनी व्यापारिक प्रवृत्ति के कारण इस बैंक की बहुत तरक्की की और आज दू० सी० के प्रसिद्ध बैंकों में इसका नाम है। इसकी शाखाएँ मद्रासपुर, मंसूरी और देहरादून में हैं। जहाँ बैंकिंग व्यापार

होता है। इसके प्रधान मालिक ला० जुगमन्दिरलालजी के पुत्र ला० नैमिचन्द्रजी एवं लाला रित्तपदासजी हैं। आप लोग जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं।

बैंकर्स—

दी अलाहाबाद बैंक प्रांच  
 दी इम्पीरियल बैंक प्रांच  
 ला० उममेन वार एटला  
 ला० बलधोरसिंह  
 मेसर्स भगवानदास एण्ड को०  
 मशूत लक्ष्मणदासजी  
 मेसर्स लक्ष्मीचन्द्र रामकिशोर  
 ला० के व्यापारी और कमीरान एजेंट—  
 मेसर्स कुन्दनलाल बरलावरसिंह  
 „ कन्दैयालाल हरस्वरूप  
 „ गंगाराम दरानलाल  
 „ जगन्नाथ मिश्रमेत  
 „ जुगलकिशोर हरिधन्द्र

मेसर्स बन्नीदास आशाराम  
 „ सारनमल कन्दूमल  
 कपड़े के व्यापारी—  
 मेसर्स इंडियन इंडस्ट्रीयल कम्पनी (कैमी कपड़े)  
 „ इम्पीरियल ट्रेडिंग कंपनी (कैमी कपड़ा)  
 „ इंडूमल एण्ड संस (कैमी कपड़ा)  
 „ रामानन्द कृपाराम (कैमी कपड़ा)  
 „ विरांभरदास एंड को० (कैमी कपड़ा)।  
 चाँदी-सोना के व्यापारी—  
 सेठ शुभनलाल सराफ  
 „ मन्वालाल सराफ  
 मेसर्स मेवाराम गुरुदयाल  
 „ मुकुन्दलाल हरनारायण  
 „ सुन्दरलाल जिनेश्वरप्रसाद

## हरिद्वार

हरिद्वार हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। यह नगर लक्ष्मण-नेहरादून रेलवे लाइन पर आबाद है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य देखने की वस्तु है। हर बारहवें साल चैत्र मास में यहाँ कुंभ का भारी मेला लगता है। इसके पाम ही कनकना नामक स्थान है जहाँ सती अपने पिता दश के अवमान से भग्न हुई थी। कनकना के पाम गंगा के पाम गुरुकुल कांगड़ी है। यह भी भग्न प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ दूर दूर के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिये आते हैं। इसी प्रकार अरिचूत भी है।

व्यवहारिक दृष्टि से यह स्थान किसी प्रकार का महत्व नहीं रखता। यहाँ तो भोगे माने वाली ही स्त्रियों की संख्या में प्रति वर्ष ब्याया करने हैं अतः कहीं की आचरकता की पूर्ति के लिये जिन कानुनों की लागू होती है, कहीं का यहाँ प्रायः ब्यापार है। वहाँ की जंगली वेश-

वार में से जहाँ घूरी जो यहाँ बहुत बड़े परिमाण में होती है, आया ही करती है, पर इनका विरोध अच्छा संभव यहाँ के काली कमली वाले बाबाजी के यहाँ रहता है। शिलाजीव भी यहाँ काफी परिमाण में आती है जो यहाँ से बाहर एकत्राट होती है। छपाई का काम भी यहाँ मनोहारी होता है। छापने के लिये स्तर बगैर सब बाहर से आता है उसमें विरोधकर सुरादावाद, कारीपुर आदि स्थानों का होता है। कम्मल भी यहाँ तैयार होने हैं। यहाँ के कम्मल मजबूत और टिकारू होते हैं। वे भी बाहर भेजे जाते हैं।

शिलाजीववाले—

श्री गंगहोषो

” शिलाजीव द्विपो

” शिलाजीव कम्पनी

ऊनी कम्मलवाले—

मेसर्स अर्जुनदास दुर्गादास

” भगवानदास चौपड़ा

” सीताराम मुखदेवप्रसाद

बर्तनवाले—

मेसर्स छंगामल भगवानदास

मेसर्स नन्दमल विठ्ठलदास

” श्रीनामल बुद्धमल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अर्जुनदास दुर्गादास

” गणेशदास गुल्लामल

” गौरीशंकर दमोदरदास

” छंगामल पन्नालाल

” भगवानदास चौपड़ा

” मूलचन्द नलूलाल

” श्यामलाल बूचीमल

” सीताराम मुखदेवप्रसाद

## सुरादावाद

यह नगर ई. आई. आर. की मुगलसराय सहरानुर लाइन पर एक बड़ा जंकरान है। यहाँ से एक प्रांच हाफुड़ होती हुई दिङ्गी गयी है और दूसरी प्रांच चंदौषी होती हुई अलीगढ़ आयी है। यहाँ से छोटी लाइन की एक शाखा उत्तर की ओर रामनगर को गयी है। इस नगर के समीप से ही रामगंगा बहती है। यहाँ के कलई के बर्तन और छपे हुए कपड़े मराहूर हैं। यहाँ का प्रधान व्यवसाय इन्हीं बर्तनों का है। इसके अतिरिक्त गेहूँ, जौ, चूड़ा, मूँग और चना की यह मण्डी है। इस मण्डी में गुड़ भी बहुत आता है। यहाँ गल्ले का सेर १०० रु० भर का है।

यहाँ के क्लर्क के बर्तन भारतप्रसिद्ध हैं। यों तो यहाँ पर सभी प्रकार के बर्तनों पर मितलवर प्लेटिंग तथा निकल प्लेटिंग की पालिश की जाती है जो देखने में मनमोहक पर व्यवहार में ओझी होती है पर हाँ, यहाँ के पुराने ढंगकी मुरादावादी क्लर्क बहुत बढ़िया होती है। यह क्लर्क जितनी देखने में सुन्दर होती है उतनी ही व्यवहार में भी टिकाऊ होती है यही कारण है कि इस क्लर्क के बर्तनों को यदि उपले या लकड़ी की राग से रोज़ मत्ता जाय तो क्लर्क मान आठ वर्ष तक बराबर चलती है। यह क्लर्क रॉंगे की क्लर्क कड़गी है। रॉंगे प्रायः मिगापुर से आता है जो यहाँ व्यवहार किया जाता है। बर्तन पर प्रथम रॉंगे की क्लर्क की जाती है और फिर जमे पक्का करने के लिये आग में तपाया जाता है जिमके बाद बर्तन मगाने देखर मत्ता जाता है और फिर पालिश देकर समका जोहर उठाया जाता है जो समक को पैदा करता है तब मान बाजार में बिक्री के योग्य होता है।

मान की कानिटी बहर के भारीपन पर निर्भर करती है। इसके अनिश्चित मिंगल और दहत पालिश पर भी क्लर्क के सुन्दर और टिकाऊ होने का दारमदार रहता है। अतः मोटी बहर के मान पर ही उन्हा खराद की जा सकती है और साफ़ खराद पर ही क्लर्क भी पेटका होती है और उगी पर समक का जोहर मिलता है। इस प्रकार यही मान ऊँचे बर्तन का माना जाता है। यों तो मुरादावादी क्लर्क मय प्रकार की धातु के बर्तनों पर होती है पर जमेन मितलवर पर नहीं। हाँ जमेन मितलवर पर इलेक्ट्रो प्लेटिंग का या मितलवर प्लेटिंग का काम होता है जो पैसा टिकाऊ नहीं होता।

यहाँ जमेन मितलवर और पीतल के पुराने बर्तन भी मलाये जाते हैं और फूल नामक मिश्रित धातु भी ल्पार्ड जाती है। ये धातुयें मत्ता कर नये बर्तन ढाले जाते हैं। यहाँ रॉंगे और रॉंगे मिला कर फूल पैदा किया जाता है। यहाँ प्रायः पुराने पीतल के बर्तन मत्ता कर लोटे और मलमल ढाने वाले और बाली तथा कठोरियाँ प्रायः बहर से पैदा की जाती हैं। बहर और पुराना मान मत्ता कर समी प्रकार का मान भी बनाया जाता है। यहाँ की मिट्टी इतनी उपम है कि जिमसे ढानने के लिये बहुत अच्छे बतने हैं।

क्लर्क के समान ही बर्तनों पर घेन सूटे और रंगमात्री का काम भी यहाँ बलम बतता है। जो विदेशों में बाय में बिकता है। बागीक कलम का एकरीला काम जलमभेगी का होता है।

इस शहर के सर्वोप उद्यम में सींग का काम तथा भावदुम की लकड़ी पर नटागी का काम बहुत ही सुन्दर और अच्छा होता है जो यहाँ के कारोबार तयार करने हैं और बहरमाले मेट्र ले बिकता जाता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिषय इस प्रकार है:—

### दी मुरादाबाद स्प्रीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटेड

इस मिल की स्थापना ६० साल पहिले फाँठीवाला तथा ठाकुर द्वारा फेमिली ने की। आरम्भ में इस मिल ने तरको की और सन् १९१४ के बाद इस मिल ने डिस्से का मुनाफा रोबर की कीमत से कई गुना अपने रोबर होल्डरों को बाँटा। यहाँ तक कि भारत की तथा विलायत की कई मिलें फेल हो चुकीं और सन् १९३० में जब कि मिलों का बायकाट हो रहा था यह मिल अपने रोबर होल्डरों की बराबर मुनाफा दे रही है तथा कभी आज तक कोई गड़-बड़ नहीं होने पाई।

### मेसर्स अयोध्या प्रसाद एण्ड सन्स

इस फर्म की स्थापना सन् १८७८ ई० में बा० अयोध्याप्रसाद स्वामी ने की थी। आरम्भ से ही यह फर्म इनैमल्ड बर्क अर्थात् कलम के काम के बर्तनों का व्यापार कर रही है। इस व्यापार में इस फर्म ने अच्छी सफलता प्राप्त की। इसका माल विदेशों के बाजार में जोरों से बिकता है। इसके वर्तमान मालिक बा० हीरालालजी तथा आपके भाई जवाहरलालजी हैं। आपलोग मुरादाबाद के ही रहनेवाले हैं। फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

मुरादाबाद—मेसर्स अयोध्या प्रसाद एण्ड सन्स T. A. Brass	}	यहाँ कलम के काम के बर्तनों का बहुत बड़ा काम है। यहाँ से विदेशों को भी यह माल जाता है।
--	---	--

### मेसर्स साह किरानस्वरूप रघुवीरशरण

इस फर्म की स्थापना १७ वर्ष पूर्व साह किरानस्वरूपजी स्वामी ने की थी। इसके पूर्व आपके आदि निवाम अमरौरी में मेसर्स रामस्वरूप आनन्दस्वरूप के नाम से व्यापार होता था पर वर्तमान में वहाँ को फर्म पर मेसर्स आनन्दस्वरूप रघोदिरस्वरूप नाम पड़ता है। आपके स्वर्ग-वास के बाद फर्म का संचालन आपके पुत्र करने लगे जो वर्तमान में मालिक हैं। इस फर्म के प्रधान संचालक लाला रघुवीरशरणजी तथा लाला रामदेवानजी हैं। इसका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

मेसर्स किरानस्वरूप रघुवीरशरण गंजबाजार मुरादाबाद	}	यहाँ धरा, बैंकिंग तथा जमींदारी का काम होता है और फ्लोर मिल है।
--	---	---

मेसर्स—आनन्दस्वरूप ज्योतिस्वरूप  
अमरोहा (मुरादाबाद)

} यहाँ गल्ला, बैकिंग तथा जर्मींदारी का काम  
होता है।

मेसर्स—आनन्दस्वरूप ज्योतिस्वरूप  
धनौरा (मुरादाबाद)

} गल्ला, बैकिंग तथा जर्मींदारी का काम  
होता है।

### मेसर्स लाला जगन्नाथ प्यारेलाल

यह फर्म सन् १९१६ ई० से उपरोक्त नाम से व्यापार कर रही है। इसके पूर्व इस फर्म पर मेसर्स लालावीप्रसाद प्यारेलाल के नाम से व्यापार होता था। इसके मालिक अग्रवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप लोग मुरादाबाद के आदि निवासी हैं और आरम्भ से ही आप लोग मुरादाबादी बर्तनों का व्यापार करते आ रहे हैं जो यह फर्म वर्तमान में भी जोरों से कर रही है। इसके वर्तमान मालिक लाला प्यारेलाल जी हैं। आप व्यापारकुशल और मिलनसार सज्जन हैं। आप सार्वजनिक कामों में भी सहायता करने रहते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुरादाबाद—मेसर्स जगन्नाथ  
प्यारेलाल

} यहाँ बर्तनों का बहुत बड़ा व्यापार होता है तथा  
बैकिंग और जर्मींदारी का काम है।

### मेसर्स बनारसीदास पुरुषोत्तमदास

इस फर्म की स्थापना लाला बनारसीदास ने की और इनैमल्ड ब्रास बेयर का व्यवसाय आपने आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी कर रही है। आपके स्वर्गवास के समय आपके पुत्र बामू पुरुषोत्तमदासजी की आयु बहुत कम थी अतः फर्म का व्यवसाय आपके चचा संभालित करते रहे पर अचरक होने पर बामू पुरुषोत्तमदासजी ने फर्म का संचालन करना आरम्भ किया। आपने फर्म का पुराना नाम बदल कर उपरोक्त नाम रखा। आपने व्यापार से अलग हो १२ बयें तक स्टेशन मास्टरी की पर वसे भी आपने छोड़ दिया और आज आप पुनः अपनी फर्म का संचालन कर रहे हैं। आप शिक्षित और मिलनसार हैं। आपने व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की है। आपके दत्तक पुत्र बामू हरिरांकरजी भी फर्म का काम देखते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय यों है—।

मेसर्स बनारसीदास पुरुषोत्तमदास शाही मस्जिद मुल्ताबाद T. A. Curio.	}	यहाँ मुल्ताबादी कर्ज़ई, ट्रेन तथा इन्वैमल्ट आसवेयर का व्यापार होता है ।
---	---	--

### मेसर्स मुल्ताबादीदास सबसनलाल

इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व लाला मुल्ताबादीदासजी ने की थी । वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला गंगारामजी तथा आपके भाई लाल लालमनदासजी हैं । आपलोग मुल्ताबाद के निवासी अमवाल बैरय समाज के सज्जन हैं । आपके पूर्वज पीतल की ढलाई का काम करते थे । इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

मेसर्स मुल्ताबादीदास सबसनलाल मुल्ताबाद	}	यहाँ सभी प्रकार के वर्तनों का व्यापार होता है ।
---	---	--

### मेसर्स मिश्रीलाल गिरधारीलाल

इस फर्म के आदि संस्थापक लाला मिश्रीलालजी ने लगभग ६० वर्ष पूर्व मेसर्स मिश्रीलाल हजारीलाल के नाम से व्यापार आरम्भ किया । आपने वर्तन का व्यापार शुरू किया और फर्म ने इस काम में अच्छी सफलता प्राप्त की । आपके स्वर्गवास के बाद आपके दोनों पुत्रों ने व्यापार चलाया पर गठ वर्ष वे लोग अलग २ हो गये, अब आपके छोटे पुत्र लाला गिरधारीलालजी ने जो ३२ वर्ष तक फर्म का काम चलाते रहे थे अपनी स्वतंत्र फर्म उररोक्त नाम से खोज ली । आप ही इस फर्म के मालिक हैं, आपके दो पुत्र हैं । बाबू ललितानन्दसाहजी तथा बाबू देवीप्रसादजी । आप लोग अमवाल बैरय समाज के सज्जन हैं । इस फर्म का व्यापारिक परिचय यों है ।

मेसर्स मिश्रीलाल गिरधारीलाल मसही चौक मुल्ताबाद	}	यहाँ वर्तनों की आइव का काम होता है ।
मेसर्स गिरधारीलाल ललितानन्द मसही चौक मुल्ताबाद	}	यहाँ वर्तनों का व्यापार और आइव का काम होता है ।



### मेसर्स मुकुटविहारीलाल मदनस्वरूप

इस फर्म की स्थापना लगभग २३ वर्ष पूर्व लाता मुकुटविहारीलालजी ने उपरोक्त नाम से कर कपड़े का काम आरम्भ किया था, जो यह फर्म आज भी कर रही है। इसके पूर्व में आपके परिवार में व्यापार होता था जो लगभग १०० वर्ष का पुराना है पर आपके पिता लाता केशरीमलजी ने कपड़े का काम खोला था। आपलोग अमवाज वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के वर्तमान मालिक लाता मुकुटविहारीलालजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मुकुटविहारीलाल मदनस्वरूप  
गंजबाजार, मुरादाबाद } यहाँ सभी प्रकार के कपड़े का व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त मुरादाबाद जिले में कांठ, सरकड़ा तथा विलारी में मेसर्स मदनस्वरूप विलोकानाथ के नाम से आपकी कपड़े की दुकानें हैं।

### मेसर्स ललताप्रसाद शान्तिप्रसाद

इस फर्म की स्थापना ला० ललताप्रसादजी ने सन् १९०८ ई० में की थी। इसके पूर्व आप अपने पिता ला० केशरीमलजी द्वारा संस्थापित मेसर्स केशरीमल ललताप्रसाद नामक फर्म का काम संचालित करते थे। आप बड़े ही व्यापार कुशल महानुभाव थे अतः आपने इस कार्य में अच्छी सफलता प्राप्त कर ली। आपके बाद आपके पुत्र बा० शान्तिप्रसादजी जो वर्तमान में फर्म के मालिक हैं फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स ललता प्रसाद शान्तिप्रसाद  
गंजबाजार मुरादाबाद } यहाँ सभी प्रकार के कपड़े का व्यवसाय होता है।

### मेसर्स लक्ष्मणदास मथुरादास

इस फर्म के मालिक कांठ (मुरादाबाद) के निवासी हैं। आप लोग अमवाज वैश्य समाज के सज्जन हैं। इसकी स्थापना लाता लक्ष्मणदासजी ने प्रथम कांठ में की थी। इसके बाद करीब १५ वर्ष पूर्व आपके पुत्र ला० मथुरादासजी ने यहाँ उपरोक्त नामसे अपनी फर्म खोली जो आज अच्छी उन्नत अवस्था पर है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाता मथुरादासजी हैं। आपके तीन पुत्र हैं जो अलग हैं और अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—लक्ष्मणदास मयुरादास  
गंजबाजार मुद्रादावाद

मेसर्स—लक्ष्मणदास मयुरादास  
कांड (मुद्रादावाद)

} यहाँ गल्ला, आड़व, वैकिंग तथा जमींदारी का काम  
होता है। मुद्रादावाद स्पिनिंग एण्ड वीविंगमिल  
लि० के सूत की विक्री इसके भारपत्र होती है।  
वैकिंग, जमींदारी, गल्ला तथा आड़व का काम  
होता है।

मेसर्स श्यामलाल रघुवीरशरण

इस फर्म की स्थापना सन् १९१६ ई० में लाला श्यामलालजी ने की थी। इसके पूर्व आप  
मेसर्स श्यामलाल बनारसीदास के नाम से व्यापार करते थे। आपका स्वर्गवास लगभग ७ वर्ष  
पूर्व हो गया, तब से आपके पुत्र लाला रघुवीरशरणजी, लाला राजारामजी और लाला लक्ष्मी-  
नारायण जी करते हैं। आप लोग अमवाज वैश्य समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।  
मेसर्स—श्यामलाल रघुवीरशरण  
मुद्रादावाद

} यहाँ सभी प्रकार के धतूनों का व्यापार होता है।

- मुद्रादावादी बरुन के व्यापारी
- मेसर्स इरिडियन आर्ट इम्पोर्टियम
- " गनेसीलाल ज्ञानानसाद
- " जगन्नाथ प्यारेलाल
- " कर्त्रीदास बांकेलाल
- " बांकेलाल रापेलाल
- " मुलासीदास शान्तिनसाद
- " महसूब एण्ड को०
- " निभाशंकर गिरधारीलाल
- " मोहनलाल झोटेला
- " मोहम्मद अह्मद
- " यानानंद शान्तिनसाद

- मेसर्स श्यामलाल रघुवीरशरण
- " सक्कलनलाल बासीयम
- " सूरजमल वृजलाल
- शैमन्ट प्रामवेयर के व्यापारी
- मेसर्स अयोध्यानसाद एण्ड सन्स
- " बनारसीदास पुरुषोत्तमदास
- " आट. एन. के. शैमन एण्ड को०
- " महम्मदगार एरो
- " श्यामलाल रघुवीरशरण
- " हाजी कइल
- गल्ले के व्यापारी
- मेसर्स आनायन दानूयम

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

तथा गल्लेकी भाड़त का काम करती है। यहाँ इमकी २ जीनिंग और २ प्रेमिंग कैकिर्यों हैं तथा ट्रस्ट की जागोरी के २ गाँव भी हैं।

### मेसर्स शोभाराम श्रीराम

इस फर्म के मालिक भिवानी निवासी खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का हेड आफिस मेरठ में है। वहाँ करीब ४३ वर्ष पूर्व सेठ दिलमुखरायजी के द्वारा इस फर्म का स्थापन हुआ। इसके पश्चात् इस फर्म का संचालन सेठ धाजूरामजी, सेठ गान्धारामजी और सेठ श्रीरामजी ने किया। आप लोगों के समय में फर्म की बहुत उन्नति हुई। आप लोगों के ही समय में फर्म ने समय २ पर हापुड़, श्यामली, भिवानी, धंशौसी आदि स्थानों पर अपनी शाखाएँ स्थापित कीं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ शिवनारायणजी, सेठ मुआलालजी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी, सेठ हूंगरमलजी, सेठ वामुदेवजी, सेठ रामस्वरूपजी एवं सेठ गुलाबचन्दजी बड़जातिया हैं। आप सबलोग अपनी ब्रेंचोंपर व्यापार संचालन करते हैं। सेठ शिवनारायणजी यहाँ की चेम्बर आफ़ कामर्स के सभापति हैं। तथा आदिशेख नामक जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटो के आप मंत्री है। आप मिलनसार व्यक्ति हैं। आपके गुलाबचन्द नामक एक पुत्र हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चन्दौसी—मेसर्स शोभाराम श्रीराम T. A. Jain	}	यहाँ बैकिंग, कमीशन एजेंसी एवं गल्ले का व्यापार होता है।
मेरठ—मेसर्स शोभाराम गोपालराय T. A. Jain		यहाँ हेड आफिस है तथा गल्ला, गुड़, आदि का व्यापार और भाड़त का काम होता है।
श्यामली—मेसर्स शोभाराम गोपालराय T. A. Digambar	}	यहाँ गल्ला, गुड़ और कमीशन का काम होता है।
भांवता—(बरेली) मेसर्स शोभाराम श्रीराम		यहाँ गल्ला एवं दाज का काम होता है।
हापुड़—मेसर्स शोभाराम गोपालराय	}	यहाँ गल्ला बैकिंग एवं कमीशन का काम होता है।
भिवानी (हिमाचल)—मेसर्स धाजूराम श्रीराम		यहाँ गल्ला और बैकिंग का व्यापार होता है। यहाँ मालिहों का मूल निवास स्थान है।



शाला रामनारायणजी ( रामनारायण भारोतिराम ) बरोळी दे० नं० ११९



शाला रामनारायणजी बरोळी दे० नं० ११९



शाला रामनारायणजी ( रामनारायण भारोतिराम ) बरोळी दे० नं० ११९



गढ़ के व्यापारी—

- मेसर्स एल्लसेन ब्याजामसाद
- ” गोविन्दराम सेवाराम
- ” क्षीतरमल भौरीमसाद
- ” नाचयणदास डोरीलाल
- ” नारायणदास श्यामलाल
- ” राहु बट्टलाल
- ” बंसीधर नन्दकिशोर
- ” विहारीलाल निरपारीमल
- ” भोलानाथ बनारसीदास
- ” शोभाराम भीराम
- ” हीरालाल रामगोपाल

रुई के व्यापारी—

- मेसर्स जोगीराम जानकीप्रसाद
  - ” बसंतलाल मुन्नीमल
  - ” माजीराम लक्ष्मणदास
  - ” बेस्ट पेटेरेट प्रेस
  - ” साधुराम श्यामलाल
  - ” हीरालाल रामगोपाल
- बाँदी सोने के व्यापारी—
- मेसर्स बलदेवदास गोपीराम
  - ” वैजनाथ मोहनलाल
  - ” खनेहीलाल सैरमल

## बरेली

बरेली यू० पी० प्रांत की रहनेसंबंध कमिश्नरी के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह ६० आर० आर० की सशरानुर मुगलसराय वाली में लार्डन का जंकरान स्टेशन है। यहाँ से आर० के० आर० की छोटी लार्डन एक ओर फासगंज एवम दूसरी ओर काठ-गोशम, पिंडीभाँव आदि स्थानों पर गई है। यह शहर बरेली जंकरान स्टेशन से १॥ मील की दूरी पर बसा हुआ है। इसका दूसरा नाम बाँसबरेली है। वास्तव में यह बाँस जैसा लम्बा भी बसा हुआ है। यहाँ बाँस एवम लकड़ी का बहुत बड़ा स्टॉक रहता है जो प्रायः उत्तर हिन्दु-स्थान के सभी शहरों को सप्लाय होता है। इसके अतिरिक्त लकड़ी के काम में यहाँ मोजे, बुसियों, पलंग के पाये, तंगे, सँदूक आदि बहुत अच्छे बनते हैं और बाहर जाते हैं। तांगे तो बरेली फेरान तांगे के नाम से प्रसिद्ध हो गये हैं। माफूस के भी यहाँ कारखाने हैं। यहाँ की पैदावार में गुड़ और खोंड़ प्रधान हैं जो बाहर जाते हैं। इसके सिवाय गेहूँ, जौ, लहसुन, बगैरह भी बाहर जाती है। चावल यहाँ का अच्छा होता है। यह चावल दो प्रकार का है—सुईल, मिर्जिया एवम् बासमती। यहाँ के कालीन, दरियों और रमा भी मराहूर हैं। यहाँ का सोल सब चीजों का १०१ भर के सेर से होता है।



### मेसर्स रामेश्वरदास राधाकृष्ण

इन फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। अत्यन्त इसका विलुप्त परिचय इसी ग्रन्थ के द्वितीय भाग में कलकत्ता विभाग के पेज नं० ५२३ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कलकत्ते का व्यापार करती है। यह जंगलों से कच्चा तैय्यार करवा कर हेड आफिस को भेजती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ मदनलालजी हैं।

### मेसर्स रामनारायण रामभरोसेसाल

इन फर्म के वर्तमान मालिक ला० रामनारायणजी, रामभरोसेलालजी एवं ला० रामस्वरूपजी दोनों ही मर चुके हैं। यह फर्म करीब ५ वर्षों से जंगल नामसे व्यापार कर रही है। इसके पहले यह फर्म हमारे नामसे व्यापार करती थी। इसकी स्थापना ला० रामनारायणजी के द्वारा हुई। आर अजयराज वैद्य सनाज के सामन हैं। आरही के द्वारा इस फर्म की तरफों मो हुई। आर १० वर्ष पूर्व गवर्नमेंट से ठीका लेकर लकड़ी का कारबार करते थे। पर अब केवल नेरात सरकार के जंगलों का ठीका लेकर इसमें से लकड़ी निकालते हैं। अपना माल जंगल से निकालने के लिये करीब ३० मील तक आरही अपनी निज की रेलवे लाइन खोल रखी है। वे आरके पास रेलवे को स्तौर सहाय करने का ठीका है। अतएव इन जंगलों की सब लकड़ी रेलवे दे ली जाती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बरेली—मेसर्स रामनारायण रामभरोसे  
लाल, बंसमण्डी

बरेली—मेसर्स रामनारायण रामभरोसेलाल  
राधेश्वरजी

} यहाँ बँडिंग, जमींदागें, ठीकेदारी एवं लकड़ी की  
विजाल होती है।

} यहाँ गन्ने की आरुष का व्यापार होगा है।

गन्ने के व्यापारी—

मेसर्स गोविन्दराम लक्ष्मणराय

” गजलाल विद्याली

” गजलाल विद्याली

” महारथ लालराय

” मोदीराज लालराय

” रामनारायण रामभरोसेलाल

मेसर्स रामशिवदास मोक्षदास

” रामचन्द्र नानूराय

” रामरदनदास सदायाम

” इन्द्रासन लक्ष्मीनारायण

” शिवनारायण विद्याली

लकड़ी, बॉम और पट्टे के व्यापारी—

मेसर्स शंकरलाल रामलाल



मेसर्स जगन्नाथ भगवानदास	
” ज्वालाप्रसाद रामदास	
” रामनारायण रामभरोसेलाल	
” हुलासराय रामरतन	
” हाफिसहाजी महम्मदखॉ	
फर्मिचर के व्यापारी—	
दी अलबर्ट उड वर्क्स	सिविल लाईंस
मेसर्स इरीसर्तो एण्डसंस	”
” जमीर एण्ड सन्स	”
दी टिंजर साहाय उड वर्क्स	”
मेसर्स दुतिचंद एण्ड सन्स जं० स्टे० रोड	
” महम्मद याकुबर्तो एंड संस सि० ला०	

मेसर्स एंस० आर० मेघवा जं० स्टे० रोड	
दी सिविल फर्मिचर हाउस	”
कपड़े के व्यापारी—	
मेसर्स छोटेलाल महादेवप्रसाद	
” टन्वालाल शालिभाम	
” टन्वालाल मन्नीलाल	
” घूमामल बजाज	
” प्रभुदयाल जगतनारायण	
” प्यारेलाल मदनलाल	
” भूरीमल बजाज	
” मुरलीधर बजाज	
” मोहनलाल बजाज	

## उद्विग्नान्ती

बन्दि्यानी आर. के. आर. की कासगंज-बरेली वाली लाइन का स्टेशन है। यह एक छोटी-सी पर आबाद मंडी है। यह मंडी विरोधवान (मूज) अमचूर और पोस्ता बाहर भेजने में मशहूर है। यहाँ से करीब ५०० मन वान रोजाना बाहर जाता है। यहाँ पैदा होने वाली वस्तुओं में इनके अतिरिक्त गेहूँ, सरसों, बाजरी, चना, जौ, कपाम आदि भी होते हैं और बाहर जाते हैं। यहाँ मान प्रायः अच्छा होता है। कपाम बन्दि्या काठिटी का यहाँ पैदा होता है।

यहाँ पर आल-इटिया कॉमेस कमेटी की ओर से यू० पी० कॉमेस कमेटी ने शहर-मंडार खोज रक्खा है। यह मंडार आम पाम के देशांतों में रहने वाले देशानियों द्वारा काना कृषा मूल एक्विन कर कपड़े बनाना है और इन पर रंग एवं पातिस कर कॉमेस शहर मंडारों को मशहूर करता है। यहाँ प्युअर हाथ का बना मान वैप्यार होता है। यू. पी. प्रांत में यह सब से बड़ा शहर एक्विन कर भेजने वाला मंडार है।

यहाँ प्रेम जिनिंग एण्ड जिनिंग सिम्स के नाम से एक कपड़ा बुनने एवं मूल कानने का जिन है। इसके साथ ही इमी नाम से एक जीतग प्रेमिंग कैक्टरी भी है। इस जिन का काना अच्छा होता है।

मैसर्स गोविन्दराम तनमुखराय  
 इस फर्म का हेड-आफिस सांभर है। इसके वर्तमान मालिक रायसाहय श्रीनारायणजी हैं।  
 आप अमरनाथ बैरय समाज के सज्जन हैं। आप यहाँ आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आपकी बरेली,  
 बदायूँ, सांभर आदि स्थानों पर और भी दुकानें हैं। सांभर में भिन्न २ नामों से कई दुकानें हैं।  
 आपका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के सांभर में दिया गया  
 है। यहाँ यह फर्म गहो का व्यापार एवं आड़व का काम करती है।

मैसर्स बसंतलाल द्वारकादास  
 इस फर्म का हेड-आफिस बम्बई है। अतः इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम  
 भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ९८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गहो एवं आड़व का  
 व्यापार करती है। इसकी और भी कई शाखाएँ हैं।

इसके व्यापारों और आड़विया  
 मैसर्स गोविन्दराम तनमुखराय  
 धासीराम मेहराज  
 गया भाई जवर भाई  
 नन्धुसज बनारसीदास

मैसर्स वैजनाथ रामलाल  
 " बसंतलाल द्वारकादास  
 " मोतीलाल रामजीदास  
 " हिम्मतलाल उदयचंद  
 " हरिराम अमृतलाल

## फीलीभीत

इस नगर आर० के० आर० की मेन लाइन का बड़ा जंक्शन है। यहाँ से एक लाइन  
 जाती हुई कासगंज को गयी है और दूसरी लाइन मालानी, लखीमपुर होती हुई साँवापुर  
 को जाती है तथा तीसरी लाइन राजहर्षपुर को गयी है और चौथी उत्तर की ओर  
 नगर देरी राकर अर्यान् छोड़ कर प्रधान मण्डली है। यों तो इससे समीपवर्ती गाँवों  
 भी स्थानों पर पर २ गुड़ और राब से छोड़ तैयार करने के लिये मशीनें लगी हुई  
 हैं दो बड़ी २ गुजर कैबिनेट्स हैं जिनमें देरी राकर बहुत बड़े परिमाण में तैयार  
 । यहाँ के समीपवर्ती भूभाग की वजह से प्रधान सन, चावल और गुड़ है जो



मेसर्स पल. एच. ब्रदर्स  
पोलीभीत

} इस नाम की दो गुगल फैक्ट्रियाँ हैं। और इसके अन्तर्गत एक आइल मिल है। यहाँ का माज राजपूताना, यू. पी. और मालवा जाता है।

राय व. हरप्रसाद राजा राघारमग  
पोलीभीत

} यहाँ मैकिंग तथा जमींदारी का काम होता है। इनकी देहराइन, मंसूरी, हरिद्वार, नैनीताल आदि में फ़ोटी हैं।

### रायवहादुर साहू रामस्वरूपजी ओ. पी. ई.

आप पोलीभीत के प्रसिद्ध साहू परिवार के महातुभाव हैं। आपके पूर्वज रोहक से पोली-भीत आये थे जिसका पूर्ण विवरण अन्वय रा. व. हरप्रसाद राजा राघारमग के परिचय में दिया गया है। सेठ मधुरादासजी की ६ पीढ़ी में सेठ मुकुन्दरामजी प्रतापी महातुभाव हुए और इन्हीं के प्रथम पुत्र राय वहादुर साहू जगन्नाथजी के द्वितीय पुत्र राय वहादुर साहू राम-स्वरूपजी ओ० पी० ई० संराल मैजिस्ट्रेट दर्जा अर्जित हैं।

आप पोलीभीत के प्रतिष्ठित रईस और प्रतिभा संपन्न लैण्ड लार्ड हैं। आपने योरोपीय समर के समय सरकार को अच्छी सहायता दी अतः ओ० पी० ई० के सम्मान से सरकार ने आपको सम्मानित किया। इसी प्रकार आप सभी अच्छे कामों में भाग लेते रहते हैं। आप बहुत समय तक यहाँ के ट्रिब्यूनल बोर्ड के चेयरमैन रहे हैं और वर्तमान में यहाँ की म्यूनिसि-पैलिटी के चेयरमैन हैं। आप स्पेशल आनरेरी मैजिस्ट्रेट दर्जा अर्जित हैं। आपने स्टेशन के पास मेस्टन लाइब्रेरी बनवाई है। आपके बड़े भावा स्व० साहू रामप्रसादजी के पुत्र साहू राम-हरणजी सुशिक्षित नवयुवक हैं। आरको जमींदारी धरेली और पोलीभीत जिजे में है। आप ४० हजार के क्षरभग सातगुजारी देते हैं।

### मेसर्स रामवल्लभ रामबिन्दास

इस फर्म का हेड आफिस सांभर ( राजपूताना ) है अतः इसका विरोध परिचय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १०४ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म चावल, धोनी, गुड़ और नमक का, घरू व्यापार तथा कमीशन का काम करती है।

सोने चाँदी के व्यापारी

मेसर्स किरानलाल प्यारेलाल

” बाबूराम राधेलाल

” मंगलसेन सराफ़

” ललताप्रसाद सीताराम

” लक्ष्मीनारायण जगदीशप्रसाद

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद सीताराम

” शुभीलाल बंशीधर

” बाबूराम राधेलाल

” हजलात रामगुलाम

मेसर्स भगवानदास मंगनीराम

” राधाकृष्ण श्रीराम

” लक्ष्मणदास सीताराम

गल्ले के व्यापारी और कमीशन एजेंट

(शकर चावल आदि)

मेसर्स अयोध्याप्रसाद गोपीनाथ

” गणेशदास ईसरदास

” चिम्नराम घनश्यामदास

” जोतीप्रसाद इन्दरमेन

” देशीप्रसाद रामकिशोर

” रामचरन रामप्रसाद

## गोला गोकरननाथ

यह मंडी आर० के० आर० की लाइन पर लाखीमपुर और माताजी जंक्शन के बीच बनी हुई है। यहाँ बाबा गोकरननाथ की प्राचीन शिवमूर्ति है। अतएव यह स्थान तीर्थ माना जाता है। इस हेतु इसके दराने के निमित्त हजारों यात्री प्रति वर्ष यहाँ आया करते हैं।

यह मंडी गुड़ के लिये प्रधान रूप से मराहूर है। अतः गुड़ की फसल में यहाँ अश्ली गनि विधि एवं बहुत पहल रहती है। यहाँ की कई फर्में सिर्फ मौसिम में मुलती हैं। मौसिम निश्चल जाने पर वे बन्द हो जाती हैं। गुड़ के अनिश्चित इस मंडी में कोई व्यापार शिल्प महत्व नहीं रखता। गन्ने में गहूँ, चना और जौ प्रधान है। यहाँ का तीन गुड़ के लिये ४२ सेर एवं गन्ने के लिये ४०॥ सेर के मन से माना जाता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

### मेसर्स सुभालाल फतेहचंद

इस फर्म का हेड आफिस लखीमपुर में है। इसकी और भी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। इसके वर्तमान मालिक सा० कन्दैयालालजी, सुभालालजी एवं फतेहचंदजी हैं। इसका विशेष परिचय लखीमपुर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गन्ना एवं गुड़ का व्यापार और भाड़न का काम करती है।

### मेसर्स महामुखलाल केशवलाल

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ केशवलाल भाई हैं। इस फर्म का हेड आफिस बम्बई है। इसका विलुप्त परिचय सोलापुर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गुड़ एवं कमीशन का काम करती है। यह फर्म यहाँ सोमन में जुलवा है।

### मेसर्स लहरचन्द जुईदादास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लहरचंद हैं। इस फर्म का हेड आफिस अहमदाबाद है। वहीं मालिक लोग रहते हैं। इसका विलुप्त परिचय सोलापुर में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गुड़ का व्यापार करती है। इसका आफिस मोसिम में ही यहाँ जुलवा है।

कमीशन एजेंट और व्यापारी—

- मेसर्स जगन्नाथ गनेशीलाल
- ” विद्यारीलाल द्वारकानमाद
- ” महामुखलाल केशवलाल
- ” मन्नीलाल पतेचंद

- मेसर्स मंगलचंद कुंजविहारी
- ” लालचंद भूरामल
- ” लहरचंद जुईदादास
- ” सादरचंद भगूभाई
- ” दत्तारीलाल जगदनारायण

## लक्ष्मीसपुर-खीरी

यह शहर आर. के. आर. डॉ. मेन लाइन पीलीभीत और सोलापुर के बीच में पड़ा है। यह स्थान जूट, गन्ना, धी और गुड़ की मंडी है। पसल पर अरबी (रेडी) भी यहाँ बहुत आती है जिसकी लागत १ लाख में १॥ लाख मन तक पहुँच जाती है।

गहने में यहाँ मधा और जुबार बहुत आती है। जो कि यहाँ से एकमोर्ट होती है। इसके अतिरिक्त अरहर, गेहूँ, जौ, चना और बाजरा भी यहाँ पैदा होता है। गुड़ भी यहाँ अच्छी मात्रा में पैदा होता है। गुड़ की बालिटी गोजा के गुड़ से कुछ मरम मानी जाती है। पहले तो यह गुड़ की ही प्रधान मंडी थी मगर स्थितिनिर्देशों के टेक्स लगा देने से गुड़ की आमद परते से यहाँ कम हो गई।

जूट का व्यापार कुछ ही समय से, यहाँ आरंभ हुआ है और अपनी अच्छी दमति कर रहा है। यहाँ पसल में १ लाख मन से अधिक जूट पैदा हो जाता है। धी की रोजगार



लखीमपुर—मेसर्स भोजानाय  
शिवनारायण

} यहाँ गन्ना, नमक, रुई आदि का व्यापार होता है।  
तथा एशियाटिक पेट्रोलियम कं० की तेल की  
एजन्सी है।

लखीमपुर—मेसर्स बख्शाला  
शिवनारायण

} यहाँ चाँदी सोना एवं जेवर का काम होता है।

फरदान रो. स्टे, ( लखीमपुर )  
मेसर्स मटरुमल देवीचरण

} यहाँ गुड़ और गन्ना का व्यापार एवं कमीरान का  
काम होता है।

कुकरा—( लखीमपुर ) मेसर्स  
मटरुमल देवीचरण

} यहाँ भी गन्ना एवं गुड़ का व्यापार और कमीरान  
का काम होता है।

गोला गोकर्णनाथ—मुन्नालाल  
फतेचंद

} यहाँ गन्ना और गुड़ का व्यापार होता है।

गन्ना के व्यापारी और आइडिया—

- मेसर्स छिंदीलाल नन्दकिशोर
- ” स्वालाप्रसाद शिवप्रसाद
- ” नाथूराम बसंतलाल
- ” मटरुमल देवीचरण
- ” मुन्नालाल फतेचन्द
- ” हजारीलाल मयुरप्रसाद

घी के व्यापारी—

- मेसर्स नाथूराम बसन्तलाल
- ” मङ्गलसेन बिसैरलाल
- ” हजारीलाल मयुरप्रसाद

जूट के व्यापारी—

- मेसर्स अनरनाथ बटुकनाथ

कपड़े के व्यापारी—

- मेसर्स छोटेलाल रामचरण
- ” जोगीदत्त देवीदत्त
- ” पन्नालाल जगन्नाथ
- ” भावार्दन नानकचन्द
- ” रामचरणलाल भगवानदास

चाँदी सोने के व्यापारी

- मेसर्स कन्हूमल श्यामनारायण
- ” बाँकेलाल मुन्नीलाल
- ” रामचरण भगवानदास
- ” ललिवाप्रसाद मन्नीलाल
- ” सधारीलाल शशीप्रसाद



## सीतापुर

यह नगर आर० के० आर० की लाइन पर बरेली और लखनऊ के बीच बसा हुआ है। तथा अपने ही नाम के जिले का सदर मुकाम है। यह नगर गल्ले की अच्छी बड़ी मण्डी है। यहाँ गेहूँ, गुड़ और अरहर फसल में बहुत आती है। यह माल यहाँ से बाहर को बहुत जाता है। यहाँ का गुड़ बीनीगंज गुड़ से नाम से प्रसिद्ध है तथा कालिटी में भी ऊँचे दर्जे का माना जाता है। यहाँ अरहर की दाल बहुत बनती है जो बहुत बड़ी तादाद में बाहर भेजी जाती है। यहाँ से गुड़ तथा अरहर की दाल गुजरात की ओर अधिक जाती है। यहाँ गल्ले की तौल ४१ सेर और गुड़ की ४२ सेर के मन से होती है।

यहाँ से थोड़ी दूर पर बिस्वा नामक कस्बा है जहाँ गल्ले की मण्डी के अतिरिक्त तन्वाकू भी बहुत बड़ी मण्डी हैं। बिस्वा की तन्वाकू मराहूर है और बहुत बड़ी तादाद में बाहर जाती है।

यहाँ से कुछ ही दूर नैमिशारण्य का और मिसिरिस तथा हस्याहरण नामक तीर्थ हैं जो हिन्दू मान्य के आदरणीय स्थान माने जाते हैं।

### मेसर्स पारिख चुन्नीलाल हीरालाल

इस फर्म के मालिक नडियाद (गुजरात) के निवासी हैं। यह फर्म यहाँ ३० वर्ष से व्यापार कर रही है। इस के वर्तमान मालिक सेठ छोटालालजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स चुन्नीलाल हीरालाल सीतापुर  
T. A. Parikh

} यहाँ गुड़ गल्ला तथा अरहर की दाल का व्यापार और कमीरान का काम होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल हीरालाल  
नया गंज कानपुर  
T.A. Parikh

} यहाँ गल्ला, राकर, तथा कत्या का व्यापार और आदत का काम होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल हीरालाल बीपीबाल  
बम्बई नं० २  
Danawant

} यहाँ बैंकिंग सोने चाँदी का काम होता है।

मेसर्स विद्यारीलाल लक्ष्मणदास

इस फर्म की स्थापना ७० वर्ष पूर्व लाला दिलेरामजी रायी ने की थी। तब से यह फर्म बैंकिंग और खोने चाँदी का व्यवसाय कर रही है। लाला दिलेराम के बाद आप के पुत्र लाला लक्ष्मणदासजी ने फर्म के काम को चलाया और आपके स्वर्गवास के बाद से आपके पुत्र फर्म को चला रहे हैं। इसके वर्तमान मालिक लाला गोविंदप्रसादजी तथा आपके ३ भ्राता हैं। इसका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

मेसर्स विद्यारीलाल लक्ष्मणदास  
सीतापुर

} यहाँ सोना, चाँदी, बैंकिंग तथा जर्मादारी का काम होता है। यह फर्म इम्पोरियल बैंक मांच की सज्जोची है।

मेसर्स मगनीराम रामकिशन

इस फर्म का हेड-आफिस कुचामन रोड ( राजपूताना ) में है। अतः इसका विस्तृत परिषय इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १०१ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म सीतापुर सिटी में है। जहाँ गुड़ और गल्ले का व्यापार होता है। यहाँ का तार का पता Brajmohan है।

मेसर्स मगनीराम चिमनराम

इस फर्म की स्थापना २० वर्ष पूर्व सेठ तनमुखरायजी सूरजगढ़ ( सेप्पावाटी ) निवामी ने की थी। वर्तमान में इसके मालिक सेठ तनमुखरायजी और आपके माई सेठ मथुरादासजी हैं। इसका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

मेसर्स मगनीराम चिमनराम  
नं० ३ बैरापट्टी कलकत्ता  
T. H. Uradh.

मेसर्स मगनीराम चिमनराम  
सीतापुर  
मेसर्स मगनीराम चिमनराम  
बिस्तां ( सीतापुर )

} यहाँ हेड-आफिस है। यहाँ कपड़ा, गड्डा आदि का आदत का काम होता है यह फर्म रावालेस की मोकर हैं।  
} यहाँ गल्ला, गुड़ किराने की आदत का काम है।  
} गल्ला तथा गुड़ की आदत का काम होता है।



मेसर्स लहरचन्द जुइयादास  
 यह कर्म यहाँ ३१ वर्ष से व्यापार कर रही है इसके मालिक पाटन (गुजरात) निवासी सेठ  
 लहरचन्दजी हैं।

इसका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

- |  |   |  |
|--|---|--|
| सीतापुर—लहरचंद जुइयादास                  | } | गुह गल्ला और दाज का काम तथा आड़व का व्यापार होता है। |
| T. A. Patni                              |   | फसल पर गुह का काम होता है।                           |
| गोला गोहरणनाथ " "                        | } | पावल का काम होता है।                                 |
| नौगढ़ (बस्वी) " "                        |   | यहाँ गुह, गल्ला, और आड़व का काम होता है।             |
| धरमदापाद—मेसर्स लहरचंद जुइयादास मापवपुरा | } | यहाँ बीज और कमीसन का काम होता है।                    |
| बम्बई—मेसर्स लहरचंद जुइयादास सांवाकाटा   |   |  |

यहो के व्यापारी और कमीसन एजेंट—

- मेसर्स चिदानलाल रामचन्द्र
- " गौरीलाल मावाभसाद
- " चुन्नीलाल हीरालाल
- " जवाभाई चुन्नीलाल
- " बनेचन्द जुहारमल
- " पुलाछीराम कन्देवालाल
- " रिदाछीलाल लक्ष्मणदास
- " मगनीराम विमनराम
- " मगनलाल सबजी भाई
- " महानुखलाल केसरलाल
- " लहरचन्द जुइयादास
- " साहरचन्द भागूमार्ई

मेसर्स सूरजमल धनदयामदाम  
 " हरचन्द्रराय भगवानदाम  
 कपड़े के व्यापारी—

- मेसर्स गंगाराम गुरुप्रसाद
- " भोलानाथ सूरजमल
- " महादासराय सुन्दरलाल
- " शिवसदास हजाराीलाल
- बाँरी सोने के व्यापारी—
- मेसर्स सुरलीधर मन्नालनाथपन
- " बनशरीराल सुनसीराम
- " विशालीलाल लक्ष्मणदास
- " रामदास रामनाथ
- " सरद्वरसाद देवदोजन्दन

## शाहजहापुर

यू० पी० प्रांत की रुहेलखण्ड कमिश्नरी के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह स्थान इ. आइ. आर. की सहारनपुर-मुगलसरायवाली मेन लाइन के अपने ही नाम के स्टेशन से २ मील की दूरी पर बसा हुआ है। इसकी बसावट पुराने ढंग की एवं लम्बी है। यहाँ से एक प्रांच लाइन सीतापुर को गई है। यह शहर गुरा नदी के किनारे शाहशाह शाह-जहाँ के समय में बसाया गया था।

यहाँ का प्रधान व्यापार शकर का है। तथा देशी गुड़ की भी यह भारी मंडी है। यहाँ नकली गुड़ भी बनाया जाता है। गल्ला सभी प्रकार का होता है और बाहर एक्सपोर्ट होता है। यहाँ का तोल खांड के लिये ४०॥ सेर का मन तथा शेष वस्तुओं के लिये ४० सेर के मन से काम होता है। खांड बनाने की देहातों में छोटी २ मशीनें हैं तथा देशी ढंग से भी शकर तैयार की जाती है। इसके पास ही रोजा नामक स्थान में शकर और शराब का कारखाना है। रोजा की शराब भारत प्रसिद्ध है। शाहजहापुर में भी शराब बनती है। यहाँ के चाकू एवं सरोते प्रसिद्ध हैं। यहाँ खांड, गुड़ बगैरह का सौदा इस प्रकार होता है। जैसे नकली गुड़ का भाव ४ मन पर, खांड का सौदा ३-२५ सेर पर, शीरे का १ मन १३ सेर पर, आलू का भाव १ मन १३ सेर ५ छटॉक पर, और राव का भाव १ मन १९ से होता है।

इसके अतिरिक्त यहाँ सिल्क के कपड़े बुनने का भी काम होता है। यहाँ इमकी कई फैक्टरियों हैं। सरकारी दरजीखाना भी यहाँ है। इसमें सरकारी यूनिकार्म की ड्रेसे तैयार होती हैं। इसमें बहुत से आदमी काम करते हैं। शाहजहापुर में काजीन भी अन्धे बनते हैं। यहाँ की सिल्क फैक्टरियों के नाम इस प्रकार हैं।

- ( १ ) टंडन सिल्क फैक्टरी
- ( २ ) महाराज सिंह मुल्तार सिल्क फैक्टरी
- ( ३ ) इम्पिरियल डार्जिंग एण्ड सिल्क फैक्टरी
- ( ४ ) विघनाथ कदूर सिल्क फैक्टरी

कपड़े के व्यापारी—

- |                                 |     |
|---------------------------------|-----|
| मेसर्स बाबूराम रामाराम चौक      |     |
| " मुरलीधर जानकीप्रसाद बहादुरगंज | चौक |
| " लालराम रामभरोसे               | "   |
| " लालमन महीचीलाल                | "   |
| " लक्ष्मीनारायण मदनमोहन         | "   |
| " हजारीलाल मदनलाल               | "   |
| " हरप्रसाद कन्हैयालाल           | "   |
| " श्रीकृष्ण पालगोबिंद           | "   |

गल्ले के व्यापारी—

- |                                      |   |
|--------------------------------------|---|
| मेसर्स कन्हैयालाल दुलिचन्द बहादुरगंज |   |
| " ख्यातीराम बनारसीदास                | " |
| " गंगाराम जवाहरलाल विरियार्गज        |   |
| " गंगाराम हरनाथदास भोलागंज           |   |
| " ठाकुरदास श्याममुन्दर केशगंज        |   |
| " तुलसीराम रामकरन                    | " |
| " तुलसीराम मुकुटलाल                  | " |
| " नौबतराम भीमराज भीलागंज             |   |
| " मन्नीलाल राजाराम केशगंज            |   |
| " मंगलसेन श्यामलाल विरियार्गज        |   |

संबुद्ध-श्रावण

- |                          |            |
|--------------------------|------------|
| " मथुराप्रसाद सुखवासीलाल | बहादुर गंज |
| " राममजनलाल प्यारेलाज    | केशगंज     |
| " लक्ष्मीनारायण जगन्नाथ  | बहादुरगंज  |
| " सीताराम बाबूराम        | केशगंज     |
| " हरदयाज बिहारीलाल       | "          |

किराने के व्यापारी—

- |                                 |   |
|---------------------------------|---|
| मेसर्स अमिलाल जगन्नाथ बहादुरगंज |   |
| " नन्देमल रामनाथ                | " |
| " नागरमल परसराम                 | " |
| " लालमन मैकूलाल सञ्जीमण्डी      |   |
| " श्रीराम बंसीधर केशगंज         |   |
| " श्रीकृष्ण बनवारीलाल बहादुरगंज |   |
- चौड़ी सोने के व्यापारी—
- |                          |     |
|--------------------------|-----|
| मेसर्स धोंकेमल राजनारायण | चौक |
| " फारोनाथ सेठ            | "   |
| " सुभालाल सराफ           | "   |
| " तुलसीराम शालिगराम      | "   |
| " शालिगराम बनवारीलाल     | "   |
| " हरद्वारीलाल कुशीलाल    | "   |

## हरदोई

यू. पी. प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह ई. आय. आर. की सहा-  
रनपुर मुगलसराय बाजरी मेन लाइन पर लखनऊ के पास बसी हुई है। इस मंडी में प्रधान  
व्यापार राकर और गल्ले का है। यहाँ पैदा होने वाला माल गेहूँ, जौ, चना, सरसों, चूड़ा,  
मूँग, बाजरी, अरहर बगैरह हैं। गुड़ भी यहाँ बनवा है। यही बस्तुएँ यहाँ से बाहर जाती हैं।  
यहाँ का तौज अंग्रेजी है। गेहूँ विरोध कर कलकत्ता जाता है। चावल बंगाल और नौगढ़ से ही  
आता है। इसके अतिरिक्त जिले का प्रधान स्थान होने से यहाँ की जन संख्या में ख़ास  
नेवाला रोजाना का सामान बाहर से ही यहाँ आता है।

समय नाना प्रकार की शिल्प-कुरालता का केन्द्र हो गया था। अब उन शिल्पों की भरती हो गई है। जिस पर भी अभी तक लखनऊ शहर की मिट्टी की पुतलियाँ छँटि आदि भारत में बनें हैं।

मिर्चादियों के शहर के दिनों लखनऊ बड़ा ही चमक दमक कर नामवर हो उठा था। स्वयं स्थान के विदेशी मिर्चादियों ने वहाँ इकट्ठे होकर अद्वैतों पर आक्रमण किया था। उन दिनों लखनऊ ही लखनऊ के रसीबेण्ट थे। यहीं पर उनकी मृत्यु हो गई।

गुरु प्राण की दूसरी राजधानी के रूप में लखनऊ अब इलाहाबाद की टकर का हो गया है।

लखनऊ अब तक व्यापार का एक प्रसिद्ध केन्द्र है।

बक-कागाने

देशबाग लार्ड्स प्रॉपर्टी बक्स—पेशावाग।

रामचन्द्र गुरुमहायमल कॉटन मि० कंपनी  
लि०—नालकटोरा।

सखनऊ गुजर बक्स—पेशावाग।

मूलचंद सोमानी आईन मिन्स एण्ड ब्रोकर्स—डालीगंज।

पंजाब प्रॉपर्टी बक्स—पेशावाग।

अपर इंडिया क्लार पेपर मिन्स।

भैंसेधर कलावर मिन्स—पेशावाग।

रामचन्द्र लक्ष्मणवास—आईन कैमठरी।

यहाँ के व्यापारियों का परिषय इस प्रकार है:—

## चाँदी-सोने के व्यापारी

### मेसर्स कुंदनलाल कुंजरिशारीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान निंदर (पंजाब) का है। करीब १०० वर्ष पूर्व इस फर्म के मूल पुत्र लाला जगज्जायत्री यहाँ आये। आपके माथ आपके पुत्र लाला गोपीनाथजी भी थे। आपने यहाँ आकर व्यापार में प्रवेश किया। लाला गोपीनाथजी के पुत्र लाला कुंजरिशारी ने सन् १९०८ में टीकेशरी का काम प्रारम्भ किया। इस काम को आपने बहुत समय इस फर्म में फर्म में अकाली कर्मचारी की। आप व्यवसायकुशल व्यक्ति हैं। आपने टीकेशरी के अलावा चाँदी-सोना, मन्दा और हाथवरी का काम भी शुरू किया जो वर्तमान में कुंजरिशारी से हो रहा है। आपने इन्फेक्टिव बँकिंग और जरीशारी का भी काम शुरू किया जो वर्तमान में चल रहा है। यह फर्म यहाँ चौक की फर्मों में अकाली माली जल्दी है।

इस फर्म के वर्तमान संस्थापक लाला कुंजरिशारी तथा आपके पुत्र कुंजरिशारीलाल

भारतीय व्यापारियों का परिचय  
( नीसरा भाग )



श्री. कुन्दनलालजी मेहता ( कुन्दनलाल  
कुंजविद्यालाल ) लखनऊ



श्री. गणपतसादजी कौर (गणपतसाद शम्भूनाथ) लखनऊ



श्री. कुंजविद्यालालजी ( कुन्दनलाल  
कुंजविद्यालाल ) लखनऊ



श्री. महावीरप्रसादजी ( कुन्दनलाल  
कुंजविद्यालाल ) लखनऊ





हैं। ला० कुंजबिहारीजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः महावीर प्रसादजी, प्रसाद-चन्दजी, भिगावचन्दजी हैं। इनमें से भिगावचन्दजी पढ़ने हैं और ध्यानसे संभालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

लखनऊ—मेसर्स बुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल मंगलानी, बीरठिया—T. A. Kundan यहाँ फर्म का हेड कार्यालय है। तथा बैंकिंग, जमींदारी और मॉले मॉग को ठीकदारों का काम होता है।

लखनऊ—मेसर्स बुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल चौक—यहाँ सोना-चाँदी का और जेवर का ध्यान होता है।

लखनऊ—मेसर्स बुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल राजीगंज—यहाँ कस्ते का ध्यान और चादन का काम होता है।

लखनऊ—मेसर्स बुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल अमीनुरीला पार्क—यहाँ चाँदी-सोना तथा जेवर और मोटे का ध्यान होता है।

लखनऊ—मेसर्स अमकाश मर्से अमीनुरीला पार्क—यहाँ सोना, बनियाइन का कारखाना है, तथा इनकी विप्री का काम होता है। इस फर्म का सम्भालन महावीरप्रसादजी करते हैं।

इसके अतिरिक्त राज ही में आपने ला० माधवप्रसादजी के शारावत में मेसर्स बुन्दनलाल माधवप्रसाद के नाम से ई० आई० आर० रेलवे के केरा-कंटाक्टर के काम का ठीका लिया है। आपही सारी रेलवे लाइन के राजांषी हैं।

### मेसर्स गयाप्रसाद शम्भूनाथ

इस फर्म के मालिक यहाँ के निवासी राजी समाज के कपूर सज्जन हैं। पहले पहल ला० गयाप्रसादजी नेदलाही एवं चाँदी सोने का थोड़ा पर ध्यान शुरू किया। संवत् १९५४ में आपने फर्म की स्थापना की जिस पर सोना-चाँदी और पुराने सिक्के का काम शुरू किया गया। इस व्यवसाय में इस फर्म ने अच्छी तरकी की। वर्तमान में यह फर्म यहाँ की प्रतिष्ठित फर्मों में माना जाता है। ला० गयाप्रसादजी इस वक्त ७० वर्ष के होते हुए भी फर्म का काम सुचारु रूप से संचालित करते हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः शम्भूनाथजी, गौरीशंकरजी और बालकृष्णजी हैं। तीनों ही फर्म के व्यवसाय का संचालन करते हैं और अनुभवों हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

लखनऊ—मेसर्स गयाप्रसाद शम्भूनाथ, चौक—यहाँ बैंकिंग, जमींदारी और चाँदी-सोने का मोक और मुटकर तथा जेवर का काम होता है।

## जाहरी

### मेसर्स जवाहिरलाल मोतीलाल

आप लोग लखनऊ के आदि निवासी हैं। आप लोग श्रीमाल समाज के जैन सज्जन हैं। इस फर्म पर जवाहिरात और नौरतन का व्यवसाय यों तो बहुत असें से हो रहा है पर शाही जमाने से इस व्यवसाय को इस फर्म के संस्थापकों के पूर्वजों ने अच्छी तरकी दी और इसी क्रमादुसार समय समय पर इस खानदान ने इस व्यवसाय में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला मोतीलालजी हैं। आप नौरतन के अच्छे जानकार और कुशल व्यवसायी हैं। आपके पुत्र बाबू कुंदनलालजी, बाबू जीवनलालजी तथा बाबू मोहनलालजी व्यापार में भाग लेते हैं इसके अतिरिक्त बाबू सुंदरलालजी तथा बाबू रतनलालजी अभी छोटे हैं और शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

लखनऊ—मेसर्स जवाहिरलाल मोतीलाल बहोरनटोला, चौक T. A. Mal—यहाँ बैंकिंग, जर्मीनारी एवं सभी प्रकार के जवाहिरात एवं जेवरात का काम होता है।

### मेसर्स पन्नालाल अलैचन्द

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जयपुर का है। आप लोग श्रीमाल वैश्य जति के श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। करीब ७५ वर्ष पूर्व सेठ पन्नालालजी व्यापार के निमित्त यहाँ आये। तथा मेसर्स घुघसिंह पन्नालाल के नाम से फर्म स्थापित की। पन्नालालजी जवाहिरात के व्यापार में अच्छे जानकार थे। आप यहाँ जयपुरवालों के नाम से मराहूत थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके अलैचन्दजी नामक एक पुत्र हुए। लालामाहब के प्रधान आपही फर्म का संचालन करने लगे। आपके समय में भी फर्म की अच्छी उन्नति हुई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक ला० अलैचन्दजी के पुत्र लाला कुशनचन्दजी, शानचन्दजी, गुलाबचन्दजी और सिताबचन्दजी हैं। इनमें से शानचन्दजी का स्वर्गवास हो गया है। आपके चार पुत्र हैं। जिनके नाम पद्मचन्दजी, सो० एस० सी० नगीनचन्दजी, फूलचन्दजी और पूनचन्दजी हैं। लाला गुलाबचन्दजी लखनऊ में मुस्लिम हैं। फर्म का प्रथम संचालन लाला कुशलचन्दजी ही करने हैं। आप सरल एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

लखनऊ—मेसर्स पन्नालाल अलैचन्द बहोरनटोला—यहाँ सब प्रकार के जवाहिरात, बैंकिंग और जर्मीनारी का काम होता है।



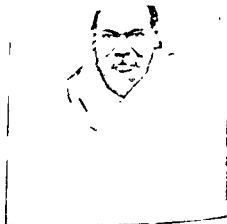


श्री ० ज्ञाना नृसिंहायकाजी तंदेरा ( सामान्य नृसिंहायकाजी तंदेरा )



श्री ० तुकारामजी तंदेरा ( तुकाराम तंदेरा )

तंदेरा



श्री ० देवीदासजी ( देवीदास तंदेरा ) तंदेरा

### मेसर्स फूलचन्द चन्देमल

इस फर्म की स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व लाला फूलचन्दजी और ला० चन्देमलजी के द्वारा हुई थी। आप दोनों सज्जनों का इसमें साम्रा है। ला० फूलचन्दजी ओसवाल श्रेताम्बर-जैन धर्मावलम्बी और ला० चन्देमलजी खत्री समाज के सज्जन थे। आप दोनों ही का स्वर्ग-वास हो चुका है।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक लाला फूलचन्दजी के पुत्र ला० गुलाबचन्दजी और स्व० ला० चन्देमलजी के पुत्र सुन्नालालजी हैं। आप दोनों ही फर्म का संचालन करते हैं। यह फर्म यहाँ जवाहरराव के व्यवसायियों में अच्छी मानी जाती है।

लाला गुलाबचन्दजी के ४ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः सिताबचन्दजी, अमृतलालजी, जीव-नलालजी और भी अमयचन्दजी हैं। इनमें से बड़े सिताबचन्दजी फर्म का संचालन करते हैं। सुन्नालालजी के रापेरयामजी नामक एक पुत्र है जो इस समय बी० ए० में विद्यापचयन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

लघनक—मेसर्स फूलचन्द चन्देमल, फूलवाली गली, चौक—यहाँ सब प्रकार के जवाहरराव बैंकिंग और जॉबिंग फ़ैक्टरियों का काम होता है।

### मेसर्स हीरान्यान्त बुन्नीन्यान्त

इस फर्म की स्थापना स्वर्गीय सेठ बुन्नीलालजी नाहर ने की। आपने केवल पन्द्रह वर्ष की आयु से जवाहरराव का काम प्रारम्भ किया और थोड़े ही समय में नौरतन की बहुत अच्छी जानकारी हासिल कर ली। आप अपने समय में इस विषय के बहुत अच्छे जानकार माने जाते थे। आपने सहायनी विकटोरिया के द्वितीय पुत्र मिन्स विकटर के आगमन के समय में कमिश्नर की आज्ञा से लघनक के बनारस बाग में जवाहरराव और पुतली कारीगरी की एक अच्छी सुमाइरा बन्दवाई थी। जिसकी बहुत प्रशंसा हुई थी। इसी प्रकार आपने जवाहरराव की शिक्षा सुलभ करने के लिए लघनक में जुबिली जवाहर स्कूल स्थापित किया था जो २५ वर्ष काम करके बन्द हो गया। आप चौथसी मंग और नौरतन के अच्छे पारसी थे। आप के पास इसका उत्तम संग्रह था। जो आज भी इस परिवार के पास अशुल्क रूप में रहता हुआ है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बुन्नीलालजी के लघु भ्राता लाला फूलचन्दजी के पुत्र लाला फतेहचन्दजी तथा लाला अमीचन्दजी हैं। आप फर्म का पूर्ववत् संचालन कर रहे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

लखनऊ—मेसर्स हीरालाल चुन्नीलाल जोहरी, नाहर-निवास, चौक—यहाँ सभी प्रकार के नरै तथा नौरतन अदित जेवरों का व्यापार होता है ।

## गोटा-किनारी के व्यापारी

मेसर्स देवीदास मदनलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान सहादरा है । आप लोग अमरात वैश्य सन के जैन धर्मावलम्बीय सन्तन हैं । इस फर्म की स्थापना बा० बन्नीदासजी द्वारा हुई । शुरू आपने चाँदी सोने का काम आरंभ किया । आप के दो पुत्र हुए—साहिबी प्रसादजी तथा देवीदासजी । आप दोनों ही भाई आज से करीब ५५ वर्ष पूर्व अलग २ हो गये । तभी से देवीदासजी ने उपरोक्त नाम से अपनी फर्म स्थापित कर इस पर गोटे-किनारी का व्यवसाय आरंभ किया । इसमें आपको अच्छा लाभ हुआ । आजकल यह फर्म इस व्यवसाय में पर मानी जाती है । इसके अतिरिक्त संवत् १९७२ में आपने एक चौकन की भी शुरू की । जो वर्तमान में भी सुचारु रूप से व्यवसाय कर रही है । आप के पाँच पुत्र हुए । जिन नाम क्रमशः मदनलालजी, शम्भूनाथजी, शीतलप्रसादजी, रामचन्द्रजी तथा जुगमन्दिराज हैं । इनमें से बड़े लाला मदनलालजी तथा शीतलप्रसादजी का स्वर्गवास हो गया है । सन् १९६१ में लाला देवीदासजी का भी स्वर्गवास हो गया ।

वर्तमान में इस फर्म के मानिक ला० शम्भूनाथजी तथा आपके भाई रामचन्द्रजी, जुगमन्दिराजजी तथा स्व० लाला मदनलालजी के पुत्र शिवरचन्द्रजी तथा हानचन्द्रजी हैं । आज सब लोग फर्म का संवाहन करते हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

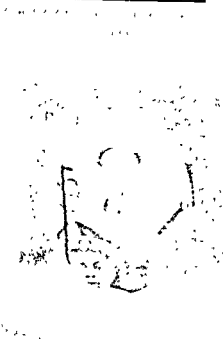
लखनऊ—मेसर्स देवीदास मदनलाल, चौक T. A. Gota—यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है यहाँ कंठना, गोटा किनारी, सनमा, मिनारा, कामरानी और जरदोजी का तथा सनमा के बने हुए हाथों का व्यापार होता है ।

लखनऊ—देवीदास मदनलाल, चौक—यहाँ चौकन के बने मान का व्यापार होता है ।

लखनऊ—मेसर्स देवीदास मदनलाल ३८९, चामराना—यहाँ चाँदी, चाँदी के बने हुए बस्तियों का व्यापार होता है ।







### मेसर्स बट्टीदास छेदीलाल जैन

इस फर्म के मालिकों का निवासस्थान लखनऊ का है। आप लोग अमवाज जैन समाज के दिगम्बर सम्प्रदाय के महातुमाव हैं। इस फर्म के आदि संस्थापक ला० बट्टीदासजी ने लगभग ५० वर्ष पूर्व मेसर्स बट्टीदास केदारनाथ के नाम से गोटे किनारी का व्यवसाय आरम्भ किया। आपने व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की और फर्म को काफी तरक्की दी। लगभग ३० वर्ष पूर्व आपके छोटे भाई ला० केदारनाथजी फर्म से अलग हो गये, तब ला० बट्टीदासजी ने अपना स्वतन्त्र व्यापार उपरोक्त नाम से छोड़ा और फर्म की अच्छी तरक्की की अवस्था पर पहुँचाया। लाला बट्टीदासजी के स्वर्गवास के बाद आपके दसठ पुत्र लाला छेदीलालजी ने फर्म के व्यापार को संभाला। आपने भी फर्म के काम को अच्छी योग्यता से सम्भालित किया। आपका स्वर्गवास लगभग ७ वर्ष पूर्व हो गया। तब से आपकी फर्म का सम्भालन आपके पुत्र लाला बनवारीलालजी करते लगे।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला बनवारीलालजी तथा आपके भाई लाला मंगलसेनजी हैं। इस फर्म का प्रधान मंचालन लाला बनवारीलालजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

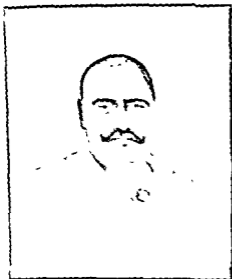
मेसर्स—बट्टीदास छेदीलाल गोटेवाले, चौक, लखनऊ—यहाँ गोटा, पट्टा, बाकड़ी किरन, मालर आदि का काम होता है तथा जर्दोजी, सजना सिंगार, ठार फटाव और गोटे का व्यापार होता है।

### मेसर्स म्यान्विटारी केदारनाथ

आप लोग अमवाज वैश्य समाज के दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्म के संस्थापक लाला केदारनाथजी ने लगभग ३० वर्ष पूर्व गोटा किनारी के व्यवसाय को उपरोक्त नाम से आरम्भ किया। इसके पूर्व इस फर्म के आदि संस्थापक लाला केदारनाथजी ने अपने भाई लाला बट्टीदासजी के साथ मेसर्स बट्टीदास केदारनाथ के नाम से गोटा किनारी का व्यवसाय लगभग ३० वर्ष पूर्व आरम्भ किया था। तब से आपकी फर्म पर यही काम हो रहा है। इस फर्म ने इस व्यवसाय में अच्छी वृद्धि की है और यहाँ की गोटा किनारी का व्यवसाय करनेवाली फर्मों में यह अच्छी फर्म मानी जाती है। लाला केदारनाथजी ने अपनी स्वतन्त्र फर्म छोपी और अच्छी सफलता प्राप्त की। इस फर्म की वृद्धि का प्रधान भ्रम लाला केदारनाथजी को ही है। आपका स्वर्गवास सन् १९२५ में हुआ। आपके दो पुत्र थे बड़े का नाम लाला छेदीलालजी और छोटे का नाम गिरवारीलालजी था। जिसमें लाला छेदीलालजी स्व० लाला



भारतीय व्यापारियों का परिचय ७  
( तीसरा भाग )



एव० सेठ गणेशप्रसादजी ( महाानन्द मूलचंद्र ) एवमइ एवम गणेशप्रसादजी वयो ( प्रभूपात्र गणेशप्रसाद ) एवमइ



एवम मूलचंद्रजी ( महाानन्द मूलचंद्र ) एवमइ



एवम मूलचंद्रजी ( महाानन्द मूलचंद्र ) एवमइ



### मेसर्स मद्रासाय मूलचंद

आय लोग माधवगढ़ ( ग्वालिनो ) जैपुर स्टेट के आदि निवासी हैं । पर लगभग ५ पुत्र मे लगनऊ रहते हैं । आय लोग माधवगढ़ी वैश्य समाज के सोमानी सखन हैं ।

सेठ मद्रासायजी ने स्वदेश से यहाँ आकर अपना व्यवसाय स्थापित किया और मेसर्स प्रमूदपाल मद्रासाय के नाम से कमीशन एजेंट तथा नमक का काम आरम्भ किया । इस व्यवसाय में लगनऊ निवासी लाला प्रमूदपालजी स्वामी की हिस्सेदारी थी जो बहुत असें तक रहा । सेठ मद्रासायजी का स्वर्गवास हो गया । उनके बाद फर्म का प्रधान संचालन आपके वीर सेठ गदादसायजी करने लगे । आपने फर्म के व्यवसाय को अच्छी तरकीबी और काम को अधिक विस्तृत रूप दिया । आप बड़े व्यवसायपुत्राल मद्रासुमात्र थे । आपने शारादुतगंज बार्जी अपनी बोटो के पास ही राधावल्लभ का एक विशाल मन्दिर बनवाया है । आपका स्वर्गवास सम्बन् १९७५ में हुआ । आपके बाद आपके पुत्र सेठ मूलचन्दजी तथा सेठ वृत्तचन्दजी ने फर्म का काम अपने हाथ में लिया । इस प्रकार इस पुराने फर्म ने बहुत प्रविष्ट और वृद्धि की पर सम्बन् १९८५ में इसके मालिकलोग अलग २ हो गये और सेठ गदादसायजी के बड़े पुत्र सेठ मूलचन्दजी ने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय अरुण नाम से स्थापित किया । और वर्तमान में आप ही व्यवसाय का संचालन कर रहे हैं । आप स्वभाव के सरल एवं मिलन-सार सखन हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मद्रासाय मूलचंद, बोटो शारादुतगंज, लगनऊ—यहाँ मालिकों का निवास-स्थान है और बैकिंग का काम होता है ।

मेसर्स—मद्रासाय मूलचन्द आयोजित शालीगंज लगनऊ—यहाँ लेन का मिल है यहाँ सब प्रकार का लेन सैवार होता है । इसके साथ आर्देन परचण्णी और अटे की बर्तों भी है ।

### मेसर्स मद्रासाय वृत्तचंद

इस फर्म के संस्थापक स्व. सेठ गदादसायजी के छोटे पुत्र सेठ वृत्तचंदजी हैं । सम्बन् १९८५ में जब पुरानी फर्म मेसर्स प्रमूदपाल मद्रासाय के सब मालिक अलग २ हो गये और आपका अपना स्वतन्त्र व्यवसाय हो करने लगे तब सेठ वृत्तचंदजी में भी आपका स्वतन्त्र व्यवसाय अरुण नाम से शुरुआत । आपके फर्म में मद्रासायों लेन देन तथा कर्मचारी एजेंट का काम होता है ।



मेसर्स सौभागचंद रिखवदास चौक  
 ,, होयलाल चुभीलाल ,,

कन्द के धारणी—

मेसर्स कालीचरन जगन्नाथ अमीनाबाद  
 ,, जमनादास मोहनलाल ,,  
 ,, देवीदास मदनलाल ,,  
 ,, नारायणदास जगन्नाथ ,,  
 ,, मोहनलाल कन्हैयालाल राजा का बाजार  
 ,, मदनलाल बद्धभद्रास विक्टोरिया स्ट्रीट  
 ,, रामप्रसाद दामोदरदान अमीनाबाद  
 ,, रामचन्द्र किरानचन्द ,,  
 ,, रामजोमल कुंजबिहारी ,,  
 ,, शिवनाथदास शिवप्रसाद ,,  
 ,, स्वदेशी भंडार ,,  
 ,, शंकरदास पुरुषोत्तमदास ,,  
 ,, हरिसिंह बालसिंह ,,

विश्व और कर्क बाटे—

मेसर्स अच्युत रईम अच्युत अजीज चौक  
 ,, गोहलचंद जयनाथदास ,,  
 ,, हंगामल रामराय ,,  
 ,, बशीराम जगन्नाथ ,,  
 ,, भैरवनाथ विधनाथ ,,  
 ,, विश्वरनाथ बाबूराम ,,  
 ,, लालबिहारी टंढन ,,

मछे के धारणी—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद बंसीधर शहादतगंज  
 ,, कन्हैयालाल दावायम डालीगंज  
 ,, कन्हैयालाल जगन्नाथ ,,  
 ,, कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल शहादतगंज

मेसर्स नन्दमल नरोत्तमदास शहादतगंज  
 ,, पोकरमल विरामरदयाल फतेगंज  
 ,, प्रभुदयाल गणेशप्रसाद शहादतगंज  
 ,, यशोदास धरवीलाल ,,  
 ,, बंसीधर जानकीप्रसाद फतेगंज  
 ,, मन्नालाल फूलचंद शहादतगंज  
 ,, भाताईन रामनारायण ,,  
 ,, मांगीलाल प्रेमसुख ,,  
 ,, रामदुलारे हरनामप्रसाद फतेगंज  
 ,, राजामल हजारीलाल डालीगंज  
 ,, लक्ष्मीनाथदास लालराम शहादतगंज  
 ,, सीताराम रामानन्द डालीगंज  
 ,, हरदयालमल बलदेवप्रसाद फतेगंज

पी भीर खेजी के धारणी—

मेसर्स अच्युत सिधंदर राजा बाजार  
 ,, जयजयराम तुलसीराम आगामीर हयोड़ी  
 ,, भोपालमल मुत्सदीलाल राजाबाजार  
 ,, रघुवरदयाल गोवर्धनदास ,,  
 ,, साहबइंन रघुवरदयाल आगामीर हयोड़ी  
 ,, होरालाल चुभीलाल शहादतगंज

बाँदी खोने के धारणी—

मेसर्स ईश्वरीप्रसाद महादेवप्रसाद चौक  
 ,, सुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल ,,  
 ,, किराँटीलाल विभुवनदास ,,  
 ,, गुनाचरण गोविन्दप्रसाद ,,  
 ,, गणपतप्रसाद रामुनाथ ,,  
 ,, दातीमल भोलानाथ ,,  
 ,, मन्नीलाल गिरधारीलाल ,,  
 ,, सुल्कीपर मन्मदनलाल ,,



इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—मन्नालाल फूलचन्द शहादतगंज लखनऊ—T. A. somam यहाँ कमीशन एजेंट और बैंकिंग का बहुत बड़ा काम होता है।

मेसर्स—मन्नालाल फूलचंद डालीगंज लखनऊ—यहाँ गूला तथा आड़त का काम होता है।

मेसर्स—मन्नालाल फूलचंद नयागंज, कानपुर—आड़त का और बैंकिंग का काम होता है।

## कागज के व्यापारी

मेसर्स वंसीधर कुन्दनलाल

इस फर्म के मालिक बहुत धर्म से यहाँ निवास करते हैं। आप अमृताल वैश्य समाज के जैन सज्जन हैं। इस फर्म को यहाँ स्थापित हुए बहुत वर्ष हो गये। गुरु से ही यह फर्म कागज का व्यापार करती आ रही है। इस व्यवसाय में यहाँ यह पहली ही फर्म मानी जाती है। इस फर्म की विशेष तरकीब स्व० सेठ वंसीधरजी के द्वितीय पुत्र लाला मुन्नालालजी के द्वारा हुई। वर्तमान में आपही इस फर्म के मालिक हैं। आप मिलनसार, व्यापार कुशल और सज्जन व्यक्ति हैं। आपने यहाँ लखनऊ जंकरान पर एक बहुत बड़ी और विशाल धर्मशाला बनवाई है। इसके साथ जैन मन्दिर भी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

लखनऊ—मेसर्स वंसीधर कुन्दनलाल, अहैयागंज, नादान महल रोड T. A -Munnay—यहाँ कागज का बड़ा व्यापार होता है।

गोटे डिगारी के व्यापारी—

मेसर्स कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल चौक  
 ,, अवाहरलाल गोविन्दप्रसाद ,,  
 ,, जानकीप्रसाद अमृताल ,,  
 ,, देवीदास भद्रनलाल ,,  
 ,, परसादीलाल कुन्दनलाल ,,  
 ,, बन्नीदास छेदानाल ,,  
 ,, रामचरन लक्ष्मीनारायण ,,

मेसर्स रामेश्वरदास गोटेवाले ,,  
 ,, लाजबिहारी फेदारनाथ ,,  
 जोड़ी—  
 मेसर्स इन्द्रचन्द खेमचंद चौक  
 ,, अवाहरलाल मानकचंद ,,  
 ,, अवाहरलाल मोतीलाल ,,  
 ,, दीपचन्द सुन्दरलाल ,,  
 ,, फूलचंद चन्दमल ,,

मेसर्स सौभागचंद रिखबदास चौक

" हीरालाल पुष्पोलाल "

करदे के व्यापारी—

मेसर्स कालीचरन जगन्नाथ अमोनाबाद

" जमनादास मोहनलाल "

" देवीदास मदनलाल "

" नारायणदास जगन्नाथ "

" मोहनलाल कन्हैयालाल राजा का बाजार

" मदनलाल वट्टभदास विक्टोरिया स्ट्रीट

" रामप्रसाद दामोदरदास अमीनाबाद

" रामचन्द्र किरानचन्द "

" रामजीमल कुंजबिहारी "

" शिवनारायण शिवप्रसाद "

" स्वदेशी भंडार "

" शंकरदास पुढपोचमदास "

" हरिसिंह बालसिंह "

बिहम और रुदं बाटे—

मेसर्स अन्दुल रहीं अन्दुल अजीब चौक

" गोकुलचंद जयनारायण "

" छंगामल रामरायण "

" बन्नीदास जगन्नाथ "

" भैरवनाथ विश्वनाथ "

" त्रिषेसरनाथ धायूराम "

" लालबिहारी टंडन "

गछे के व्यापारी—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद बंसीधर शाहादतगंज

" कन्हैयालाल दावाराज डालीगंज

" कन्हैयालाल जगन्नाथ "

" कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल शाहादतगंज

मेसर्स नन्हेमल नरोत्तमदास शाहादतगंज

" पोकरमल विशंभरदयाल फतेहगंज

" प्रसुदयाल गणेशप्रसाद शाहादतगंज

" बन्नीदास धरावीलाल "

" बंसीधर जानकीप्रसाद फतेहगंज

" मन्नालाल फूलचंद शाहादतगंज

" मातादीन रामनारायण "

" मांगीलाल प्रेममुख "

" रामदुलारे हरनामप्रसाद फतेहगंज

" राजामल हजारीलाल डालीगंज

" लक्ष्मीनारायण लादूराम शाहादतगंज

" सीवाराज रामानन्द डालीगंज

" हरदयालमल बलदेवप्रसाद फतेहगंज

पी और पीनी के व्यापारी—

मेसर्स अन्दुल सिफंदर राजा बाजार

" जयजयराम तुनसीराम आगामीर हयोड़ी

" भीष्मामल मुत्सरीलाल राजाबाजार

" रघुवरदयाल गोवर्धनदास "

" साहबदीन रघुवरदयाल आगामीर हयोड़ी

" हीरालाल पुष्पोलाल शाहादतगंज

बाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स ईश्वरीप्रसाद महादेवप्रसाद चौक

" कुन्दनलाल कुंजबिहारीलाल "

" किरोरीलाल त्रिभुवनदास "

" गुलाबराय गोविन्दप्रसाद "

" गयाप्रसाद शंभुनाथ "

" वानोमल भोजनाथ "

" मन्नीलाल गिरधारीलाल "

" सुरजीधर मकदनलाल "



## कानपुर

यह नगर ई० आई० आर० की मेन लाइन पर बसा हुआ है। यहाँ से जी० आई० पी० रेलवे की एक शाखा मगंसी को और दूसरी घोंदा को जाती है। इसके अतिरिक्त वी० एन० डब्ल्यू० आर० की कानपुर कटिहार वाली मेन लाइन का जहाँ यह नगर पश्चिमीय टरमिनस है वहाँ वी० एण्ड० सी० आई० रेलवे की छोटी लाइन अछनेरा होती हुई यहाँ से आगरा तक गयी है इस नगर के बायी ओर से भागीरथी नदी बहती है।

यह नगर ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत पुराना नहीं है। कहा जाता है कि इसे अन्तिम हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के भाई कान्ह कुँवर ने बसाया था जिसकी पुरानी बस्ती वर्तमान नगर से कुछ ही दूर पुराने कानपुर के नाम से आज भी प्रसिद्ध है। जिस समय अंग्रेजों ने मुगल सम्राट् से दीवानी ली उसी समय यह भूपदेश भी उनके प्रबन्ध में आया और राज-नैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण समझ कर ही अवध के नवाबों की राजधानी लखनऊ के समीप गंगा के इस पार अंग्रेजों ने अपनी छावनी स्थापित की। परिणामतया इसके समीप छोटे से नगर की वृद्धि हो गयी और समय पाकर इतना बड़ा नगर बस गया। यहाँ एक समय बहुत बड़ी छावनी थी जिसका प्रमाण वर्तमान नगर के महले दे रहे हैं। नगर के कितने ही मुहल्ले जैसे फौलखाना, सोपराना, रोटी मुहाम, फर्रासखाना, हुतरखाना आदि आज भी बचाते हैं कि किसी समय छावनी के विभिन्न विभाग यहाँ पर वर्तमान थे। कानपुर से कुछ ही मील की दूरी पर ब्रह्मावर्त नामक पुराना स्थान है। जिस समय दक्षिण में पेशवा लोगों के शासन का अन्त हुआ था। उस समय अन्तिम बाजीराव को ब्रह्मावर्त में जागीर दे कर रक्खा गया था। सन् १८५७ ई० के सिपाही विद्रोह के समय इसी ब्रह्मावर्त के पेशवाई परिवार के नाना साहिब ने इस नगर पर अधिकार कर लिया था पर जब शान्ति स्थापित हुई तो पुनः यह नगर अंग्रेजों के शासन में अन्वि करने लगा और १९ वीं शताब्दी के अन्तिम दशक और २० वीं के प्रारम्भ काल में यह नगर कला कौराल एवं व्यापार वाणिज्य परिपूर्ण एक विस्तृत एवं अनाकीर्ण नगर हो गया। इसकी इन्हीं विशेषताओं से इसे लोग उत्तर भारत का 'मैनचेष्टर' कहते हैं।

यह नगर उत्तर भारत के उपजाऊ भूभाग में है अतः यहाँ गन्ना बटुवापत्र से आना है और तेलहन माल का बहुत बड़ा स्टोक रहता है। इसी प्रकार यहाँ रई की प्रचुरता और



## कानपुर

यह नगर ई० आई० आर० की मैन लाइन पर बसा हुआ है। यहाँ से जी० आई० पी० रेलवे की एक शाखा मंडी की ओर दूसरी धौंदा की जाती है। इसके अतिरिक्त बी० एन० इन्ड० आर० की कानपुर कटिहार वाली मैन लाइन का जहाँ यह नगर पश्चिमीय टर्मिनस है वहाँ बी० ए० एण्ड० सी० आई० रेलवे की छोटी लाइन अङ्गरेा होती हुई यहाँ से आगरा तक गयी है इस नगर के घायी ओर से भागीरथी नदी बहती है।

यह नगर ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत पुराना नहीं है। कहा जाता है कि इसे अन्तिम हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के भाई कान्ह कुँवर ने बसाया था जिसकी पुरानी बस्ती वर्तमान नगर से कुछ ही दूर पुराने कानपुर के नाम से आज भी प्रसिद्ध है। जिस समय अंग्रेजों ने मुगल सम्राट् से शीवानी ली उसी समय यह भूप्रदेश भी उनके प्रबन्ध में आया और राज-नैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण समझ कर ही अन्ध के नवाबों की राजधानी लखनऊ के समीप गंगा के इस पार अंग्रेजों ने अपनी छावनी स्थापित की। परिणामतया इसके समीप छोटे से नगर की वृद्धि हो खली और समय पाकर इतना बड़ा नगर बस गया। यहाँ एक समय बहुत बड़ी छावनी थी जिसका प्रमाण वर्तमान नगर के महुले दे रहे हैं। नगर के कितने ही मुहल्ले जैसे पंजखाना, सोपखाना, रोटी गुराम, फरासखाना, गुतरखाना आदि आज भी बचावते हैं कि किसी समय छावनी के विभिन्न विभाग यहाँ पर वर्तमान थे। कानपुर से कुछ ही मील की दूरी पर ब्रह्मवर्त नामक पुराना स्थान है। जिस समय दक्षिण में पेशवा लोगों के शासन का अन्त हुआ था। उस समय अन्तिम बाजौराज की ब्रह्मवर्त में जागीर दे कर रक्सा गया था। सन् १८५७ ई० के सिन्हाई विद्रोह के समय इसी ब्रह्मवर्त के पेशवाई परिवार के नाना साहिब ने इस नगर पर अधिकार कर लिया था पर जब शान्ति स्थापित हुई तो पुनः यह नगर अंग्रेजों के शासन में एन्तर्गति करने लगा और १९ वीं शताब्दी के अन्तिम काल और २० वीं के प्रारम्भ काल में यह नगर कला कौराज एवं व्यापार वाणिज्य परिपूर्ण एक विकृत एवं जनाकीर्ण नगर हो गया। इसकी इन्हीं विशेषताओं से इसे लोग बरार भारत का 'मैनचेस्टर' कहते हैं।

यह नगर बरार भारत के उपजाऊ भूभाग में है अतः यहाँ गल्ला बटुवायन से आता है और तेजहन मात्र का बहुत बड़ा स्टाक रहता है। इसी प्रकार यहाँ रुई की प्रचुरता और

मिलों की अधिकता के कारण यह नगर देशी मिलों के बने कपड़े का जहाँ केन्द्र है वहाँ देशी की सुविधा के कारण त्रिलायती कपड़े का भी बहुत बड़ा केन्द्र माना जाता है। उत्तर भारत में दिल्ली के बाद किराने की यह बहुत बड़ी मण्डी मानी जाती है। यहाँ दाल के कितने ही कारखाने हैं जहाँ उत्तम दाल तैयार होती है और भारत के सभी प्रान्तों को बहुत बड़े परिमाण में भेजी जाती है। यहाँ का चमड़ा भी बहुत मशहूर है। खाल का बहुत बड़ा व्यापार होता है और साथ ही यहाँ खाज से चमड़ा पकाने और तैयार करने के भी कितने ही प्राकृतिक यांत्रिक सुविधाओं से संयुक्त बड़े बड़े कारखाने हैं। इतना ही नहीं, चमड़े से जूते, जीन, हट्टी बैग, थक्स आदि भिन्न प्रकार के चमड़े के सामान बनाने के भी इसी प्रकार के बड़े ही कारखाने हैं। यहाँ कितनी ही शुगर फैक्ट्रियों हैं जो शक्कर तैयार करती हैं। यहाँ जहाँ तम्बा आदि रासायनिक पदार्थ तैयार करने का एक बड़ा कारखाना है वहाँ शराब तैयार करने और मुरा बनाने के भी एक एक कारखाने हैं।

यहाँ भिन्न २ माल का व्यापार भी प्रायः भिन्न नाम से पुकारे जानेवाले मोहनों में प्रधान रूप से होता है। इनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं।

गल्ले	का व्यापार	कलेक्टरगंज में
तेलहन	"	कोपड़गंज में
कपास	"	"
रूई	"	"
किराना	"	नयागंज में
तम्बाकू और शीरा	"	रामगंज में
गुड़	"	हूलागंज में
कपड़ा	"	जेनरलगंज में
चाँदी सोना	"	चौक तथा नयागंज में
दाल	"	( तुअर की ) नहर किनारे दालमण्डी में ( उड़द आदि की ) पुरानी दालमण्डी में
चमड़ा	"	वेगमगंज

यहाँ की तोल प्रायः सभी बाने की ४० सेर के मन से है पर यदि अद्वियों की मापण शक्कर ली जाय तो ४८॥ सेर तथा गन्ना ४१॥ सेर के मन से मिलेगा।

यह नगर अपने व्यापार-व्यापार्य और कल-कारखानों के लिये विरोप महत्व का स्थान रखता है अतः यहाँ के कनिष्ठ प्रधान कारखानों की नाम सूची हम नीचे दे रहे हैं जो इस प्रकार है।

काठक मिस्स—

इरुगिन मिस्स कम्पनी लि०

एथर्टन मिस्स लि०

बानपुर काटन मिस्स को० काकोमी पैक्ट्री

बानपुर टेक्सटाइल लि०

बानपुर काटन मिस्स को०

जुग्गीलाल कमलानन्द स्पिनिंग बॉयिंग मिस्स

न्यू बिजटोरिया मिस्स को० लि०

सेवर मिन्स को० लि०

स्वदेरी काटन मिस्स को० लि०

काठक जॉनिंग एण्ड प्रेंसिंग फैक्टरी—

भीरुपु जॉनिंग एण्ड प्रेंसिंग मिस्स

भीराम महादेवप्रसाद काटन प्रेंसिंग फैक्टरी

कोईम काटन जॉनिंग मिस्स

गंग काटन हाइड्रोएलिक प्रेंस

जान्जान जॉनिंग मिस्स

जो. एन कोइरज जॉनिंग एण्ड प्रेंसिंग फैक्टरी

काठक जॉनिंग फैक्टरी

काठक मील्स—

बानपुर कानन मिस्स कम्पनी

दौडनाथ बालबुन्द कानन मिस्स कम्पनी

काठक काठक मिड—

काठक, अणुकाण एण्ड को० काटन बेस्ट पैक्टरी

कूट मिड—

जुग्गीलाल कमलानन्द कूट मिड

जिवाबिदी इण्डस्ट्रिया कूट मिड

काठक मिड—

काठक काठक मिड कम्पनी

काठक काठक मिड

काठक काठक मिस्स एण्ड जॉनिंग पैक्ट्री

दीनानाथ हेमराज भाइल मिस्स

नारायणदास लक्ष्मणदास भाइल मिस्स मास

एण्ड आइर्न फाउण्ड्री

प्रॉमियर भाइल मिस्स लि०

मावादीन भगवानदास भाइल मिस्स एण्ड

मास फाउण्ड्री

यू० पी० सेन्ट्रल मिस्स

भोगोपाल काटन जॉनिंग सोप एण्ड का० मिस्स

काठक के कारखाने—

बानपुर गुगर वरसं लि०

वैजनाथ बालबुन्द गुगर पैक्ट्री

यूनियन इरिडियन गुगर मिस्स को० लि०

शुभर मिस्स—

बानपुर फ्लोर मिस्स को० लि०

गंगा फ्लोर मिन्स

भीराम महादेवप्रसाद जॉनिंग रोलर एण्ड

शोर मिस्स

कोइ के कारखाने—

श्याम आपर्न एण्ड स्टील को० लि०

यू० कोठारी एण्ड को०

कोइ का कारखाना—

बानपुर एरेंटिंग गैंग को० लि०

कंठ का कारखाना—

भागीब फाउम पैक्ट्री

काठक का कारखाना—

इरिडियन डिस्टिक्टरी कम्पनी,

काठक का कारखाना—

को० काठकी एण्ड को० लि०

इरिडियन के कारखाने—

बानपुर कोइ के कारखाने एण्ड काठक (काठक)



बॉकेविहारीलालजी ने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय मेसर्स बैजनाथ बालमुकुन्द के परोक्ष नाम से खोला। आप की फर्म यों तो आरम्भ से ही कितने ही कल-कारखानों जैसे बैजनाथ बालमुकुन्द शुगर फैक्टरी कानपुर, बैजनाथ बालमुकुन्द जीनिंग फैक्टरी माधोगञ्ज तथा इलाहाबाद डिस्ट्रिलरी आदि की मालिक थी पर आपने बैजनाथ बालमुकुन्द उलन मिन्स नामक एक नया माल तैयार करने का मिला भी खोल दिया जो आज पर्यन्त सफलता से काम रहा है।

बापू बॉकेविहारीलालजी का ही यह माहस था कि जिसके प्रतिकूलस्वरूप जाने व्यापारिक क्षेत्र में एक नवीन लहर दौड़ा दी और भारतीय पूँजी द्वारा और भारतीय परिश्रम के बल भारतीयों के सम्हाजन में एक उलन मिल स्थापित कर दी। इस विरोध दृष्टि से आप शाह्म अग्रय ही सराहनीय है। इसी प्रकार आपके शकूर मिला की तैयार शकूर मो मिली परिश्रम एवं सरमता में अच्छी क्वालिटी प्राप्त कर चुकी है जिसके कारण कितने ही राजा मालिकों की धोर में फर्म को सन्देश मिली हुई हैं। फलतः राजपूताना और मध्य भारत में ही फर्म के कारखाने की शकूर की पर्याप्त माँग रहती है। इस फर्म के वर्तमान मालिक बाँकेविहारीलालजी तथा आपके पुत्र बापू मदनविहारीलालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—बैजनाथ बालमुकुन्द बटारई मोहल कानपुर T. A. Lalbanky ( लाल बॉके )  
यहाँ फर्म का हेड आफिस है। तथा सभी प्रकार के कारखानों के संभाल का काम होता है।

मेसर्स—बालमुकुन्द बॉकेविहारीलाल जेनरलमंज कानपुर—यहाँ कनी तथा सूती कनी का काम तथा अपने उलन मिला के माल की विक्री का काम होता है।

दि बैजनाथ बालमुकुन्द उलन मिन्स अनवरगंज कानपुर—यहाँ फर्म का एक बड़ा मिला है जिसमें अनुमानतया २५० मजदूर काम करते हैं। यहाँ निम्नो, कान्ची सिमना, अचोहर, काजतका, टनकापुर, हतबानी, काविगमुंग, चागरा, तथा मारोई आदि में उन आती है और उगमे बड़िया शाल, लोई, राग, कम्मल, सज, कम्मल कोट तथा पट्टी आदि तैयार की जाती हैं। इन्हींके साथ २ एक होतियरी मिला भी खोला जाने वाला है।

दि बैजनाथ बालमुकुन्द शुगर मिन्स अनवरगंज कानपुर—यहाँ शकूर का कारखाना है। जिसमें २१२ के लगभग मजदूर रोज काम करते हैं और कलम रकम देवार की जाती है।

बैजनाथ बालमुकुन्द जीनिंग फैक्टरी माधोगञ्ज ( हरदोई )—यहाँ फर्म की जीनिंग फैक्टरी है जिसमें ५० जीनिंग मशीन है और लगभग १११ मजदूर रोज काम करते हैं।



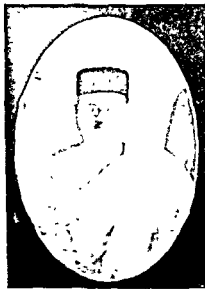


श्री गणेशगिरी महाराज

कानपुर

१९११

कानपुर



श्री गणेशगिरी ( महाराजगणेश महाराज )

कानपुर

श्री गणेशगिरी महाराज

कानपुर

इसके अतिरिक्त भागलपुर, मुजफ्फरपुर गोरखपुर, दिल्ली, आगरा, जबलपुर तथा फल-कृष्णा आदि भारत के सभी प्रधान २ नगरों में फर्म के ऊतन मिल की एजन्सियों हैं जहाँ ऊतन मिल का तैयार ऊनी माल अच्छे परिमाण में विक्रता है और इसी प्रकार राककर मिल की राककर की मॉग भी राजपूताना और मध्यभारत एवं मालवे में सुध रहती है ।

### मेसर्स जगन्नाथ धीरंराज

इस फर्म का हेड ऑफिस फलकृष्णा में है । इसके वर्तमान मालिक सेठ नारायणदासजी बी० ए० हैं । इसका विस्तृत परिवय चित्रों सहित इसी ग्रन्थ के द्वितीय भाग में पेज नं० ४९० में दिया गया है । यहाँ यह फर्म गल्ला, रुई, तेल की विक्री एवं आदत का काम करती है । इस फर्म की यहाँ एक आइल मील तथा काटन जीनिंग फैक्टरी है । इसका यहाँ का पता कोपर-गंज है । इसमें छाह्बगंज निवासी सेठ पन्नालाल धीरंराज का साम्ना है । आपका विस्तृत परिषय दूसरे भाग में बंगाल विभाग में पेज १०४ में दिया गया है । इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जमनापरजी चौधरी हैं ।

### मेसर्स नारायणदास लक्ष्मणदास

इस फर्म के आदि संस्थापक लाला रामप्रसादजी ने सन् १९०९ के लगभग इस फर्म की स्थापना कानपुर में की थी । इस फर्म ने आरम्भ से ही उन्नति की ओर पैर बढ़ाया और फलतः कुछ ही वर्षों से बाद अर्थात् आज से लगभग ४० वर्ष के पूर्व फर्म ने नारायणदास आइल मिक्स नामक तेल का एक बहुत बड़ा कारखाना खोला जो आज भी अच्छी उन्नत अवस्था में काम कर रहा है । फर्म के मालिकों की व्यापार धारुणों के कारण तेल मील की अच्छी उन्नति हुई । आज इस मील में ७०० मन तेल और १५ सौ मन खली प्रति दिन तैयार होती है । तथा आधुनिक युग की यांत्रिक समझी में सुमज्जित होने के कारण सभी प्रकार का तेल तैयार करने के अतिरिक्त यह मील 'टर्की रेड आइल' डबल वाइन्ड लिप्टसोड आइल तथा साधुन आदि सभी प्रकार के वाई प्राइवट्स भी स्वयं पर में ही तैयार करता है । इन प्रकार कच्चे तेलहन मान को शोध कर अपने यहाँ तेल, तथा खली को यह मील तैयार करता है तथा रेंगई और पेंट एवं बानिरा के काम के लिये बने हुए 'मिक्चर्स' बनाने वाले पदार्थ का भी सहाययोग कर वाई प्राइवट्स भी तैयार करता है । फलतः यह फर्म गवर्नमेन्ट के इन्डियन स्टोर्स डिपार्टमेन्ट, डायरेक्टर आफ कम्प्यूट रिमला आदि को सभी प्रकार का तेल और खली सहाई करती है और इसी प्रकार भारत की प्रधान रेलवेज को भी तेल सहाई करती है । फर्म





राजा नारसीरामजी कानोदिया (नारसीराम  
गंगाप्रसाद) कानपुर



रम० गंगाप्रसादजी दुराल कानपुर



राजा गंगाप्रसादजी कानोदिया (नारसीराम  
गंगाप्रसाद) कानपुर



बाहु शम्भेयान गुरम (भाम्बयान गुरम)  
कानपुर



इस समय फर्म की बहुत वृद्धि हुई। तभी से शेठ शादीरामजी उपरोक्त नाम से स्वतंत्र व्यापार कर रहे हैं। आप बड़े व्यापारखुशाल सम्जन हैं। आपने अपनी फर्म की भी शाखा खोली। तथा फर्म पर कई प्रकार का व्यापार प्रारंभ किया। संवत् १९१० में अंग्रेज पत्रावर मिल को खरीदा। उस समय उसकी खराब हालत थी। उसे आपने सुधार करनवावस्था पर पहुँचा दिया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला शादीरामजी हैं। आपके एक पुत्र हैं। जिनका नाम गंगाप्रसादजी हैं। आपके २ पुत्र हैं जिनका नाम कमरा: प्रजमोहनलालजी और देवीप्रसादजी हैं। बड़े पुत्र एक: १० में विद्याभ्ययन कर रहे हैं। आप भी मिलनसार एवं सम्जन महातुभाव हैं। आप भी फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—  
 कानपुर—मेंसर्स शादीराम गंगाप्रसाद T. A. Flour—यहाँ हे० आ० है। तथा गंजेब फ्लोवर मिल का काम होता है। यह मील रोजाना ३००० मन आटा, मैदा, सूजी, और बौद्धही तैयार करता है।  
 कानपुर—मेंसर्स शादीराम गंगाप्रसाद २२ बड़वडा स्ट्रीट T. A. Samganga—यहाँ सब प्रकार की भाड़व का व्यापार होता है।

### कपड़े के व्यापारी मेंसर्स गोपीनाथ छंगामल

इस फर्म की स्थापना सन् १९०१ ई० में कानपुर में हुई थी। इसके आदि संस्थापक राय साहब बाबू गोपीनाथजी मेहरोत्रा तथा बाबू छंगामलजी हैं। यह फर्म आरम्भ से ही विलायती कपड़े का थोक व्यापार करती चली आयी है अतः वर्तमान में यह फर्म कानपुर में विलायती कपड़े का थोक व्यापार करनेवाली फर्मों में प्रधान मानी जाती है। यह फर्म सभी प्रकार के विलायती कपड़े का व्यापार करने वाली प्रकार का बहुत बड़ा स्टाक रखती है कि यह फर्म सदा अपने यहाँ विलायती कपड़े का सभी प्रकार के कट्टेन, फ्रान्स, अस्ट्रिया, जर्मनी एवं इटली आदि कितने ही सभी केंद्रों को अच्छे परिमाण में मात सप्लाई करती है। विलायती कपड़े के सम्बन्ध में इस फर्म का व्यापारिक सम्बन्ध विदेश के इंग्लैंड, फ्रान्स, अस्ट्रिया, जर्मनी एवं इटली आदि कितने ही केंद्रों से है। अतः उपरोक्त विदेशी केंद्रों में तैयार होनेवाला सभी प्रकार का विलायती कपड़ा इस फर्म से तैयार या विलायती के रूप में सदा मिल सकता है। इस फर्म का दृष्ट आंकित कानपुर में है तथा इस फर्म के अन्य प्रांच आंकित दिल्ली और अमृतसर में भी हैं।



इस फर्म के वर्तमान मालिक राय साहिव बाबू गोपीनाथजी मेहरोत्रा तथा बाबू छंगामलजी कपूर हैं। आप दोनों ही महानुभाव फर्म के व्यापार संचालन में प्रधान भाग लेते हैं। आप दोनों ही खत्री समाज के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स गोपीनाथ छंगामल पुरानी चावल मंडी—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा सभी प्रकार के फैंसी विलायती माल का व्यापार होता है तथा बहुत बड़े परिमाण में मात्र सदा स्टॉक में रहता है।

दिल्ली—मेसर्स गोपीनाथ छंगामल क्लथ मार्केट—यहाँ पीसगुड्स का इम्पोर्ट आफिस है और विलायती कपड़े का व्यापार होता है।

अमृतसर—मेसर्स गोपीनाथ छंगामल सेन्ट्रल बैंक विल्डिग्स—यहाँ पीसगुड्स का इम्पोर्ट आफिस है तथा विलायती कपड़े का व्यापार होता है।

### मेसर्स गंगाधर वैजनाथ

इस फर्म के संचालकों का आदि निवास स्थान चुरू (बिकानेर) का है। आप अथवा वैश्य समाज के बागला सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब ६० वर्ष पूर्व हुई। इसके स्थापक सेठ गंगाधरजी हैं आपने यहाँ आकर कपड़े एवं गल्ले का व्यापार प्रारंभ किया। आपके दो पुत्र हुए सेठ वैजनाथजी और सेठ मदीलालजी। सेठ वैजनाथजी का अल्पायु में ही स्वर्गवास हो गया। इस समय फर्म का संचालन सेठ गंगाधरजी तथा आपके पुत्र मदीलालजी करने थे। आपके सामने ही मदीलालजी के सुपुत्र बाबू दीनानाथजी फर्म के कार्य का संचालन करने लग गये थे। आप व्यापारपुराज और चतुर सज्जन थे। आपने शुरू २ में स्वर्गीय काटन मिल की सौज एजेंसी ली। इसके पश्चात् कानपुर काटन मिल की भी एजेंसी आपने ली जो वर्तमान में भी सुचारु रूप से चल रही है। अहमदाबाद के भी कई मिलों के कार्यों की आपने एजेंसी ली। आप काटन का बहुत बड़ा व्यापार करने थे। कहने का मतलब यह है कि आप व्यापार में बहुत चतुर थे। व्यापार के साथ ही साथ सार्वजनिक कार्यों में भी आप बहुत योग देने थे। आपका यहाँ बहुत सम्मान था। आप करीब २० वर्ष तक ग्युनिभिलन कमीशर रहे। आपका सार्वजनिक कार्यों में बड़ा अनुराग रहता था। आप अगर इंडिया के चैम्बर आफ कॉमर्स और यू० पी० चैम्बर आफ कॉमर्स के जनक थे। मातृभाषी स्कूल के स्थापन करने में सब से बड़ा भाग आप ही का था। स्थानीय सनातनधर्म कर्मस्थान का संचालन में भी आप काम व्यक्तियों में से थे। शिक्षा से आपको अधिक प्रेम था। आप

भारतीय व्यापारियों का परिचय १९६२  
 ( तीसरा भाग )



सेठ दीनानाथजी बागल (गंगाधर वैजनाथ) कानपुर



बाबू गणेशप्रसादजी बागल (गंगाधर वैजनाथ) कानपुर



बाबू रामेश्वरदासजी बागल एम. एल. ए.  
 ( गंगाधर वैजनाथ ) कानपुर



बाबू हरिहर डरजी बागल ( गंगाधर वैजनाथ ) कानपुर



यहाँ की कई सार्वजनिक संस्थाओं के सभापति आदि के आसन सुरोभित कर चुके थे। तथा इन संस्थाओं को काफ़ी आर्थिक सहायता भी समय २ पर प्रदान किया करते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७४ में, सेठ गंगाधरजी का संवत् १९७३ और सेठ महीशालजी का स्वर्ग-वास संवत् १९७४ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ वैजनामजी के पुत्र सेठ गणेशलालजी तथा सेठ दीनानामजी के पुत्र सेठ रामेश्वरप्रसादजी तथा हरशंकरजी हैं। आप दोनों ही सज्जन मिलन-सार, शिक्षित एवं सुधरे हुए विचारों के हैं। वर्तमान में आपही लोग फर्म का संचालन करते हैं।

श्री० रामेश्वरप्रसादजी म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। आप यू० पी० के मुख्य २ शहरों की तरफ से मेम्बर ऑफ़ लेजिस्लेटिव एसेम्बली हैं। आप यहाँ की प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओं में भाग लेते रहते हैं। कई के आप मेम्बर तथा कई के सभापति आदि हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

मेसर्स—गंगाधर वैजनाथ जनरलर्स, कानपुर—T. A. Bagla यहाँ बैंकिंग तथा कपड़े का व्यापार होता है। इस फर्म पर स्वदेशी फाटनमिल, कानपुर फाटनमिल और अहमदा-बाद की कई मिलों के कपड़े की सोल एजेंसी है।

### मेसर्स गणेशनारायण मन्नालाल

इस फर्म का हेड ऑफिस पटवौना (गोरखपुर) है जहाँ इस फर्म के मालिक सेठ सुरज-मलजी रहते हैं। यहाँ यह फर्म इस नाम से बन्दई वाले सर करीम भाई इब्राहिम की १४ मिलों की एजेंट है तथा इन मिलों के बने हुए कपड़े की निर्यात का काम करती है। इसका सचिव परिषय पटवौना हेड ऑफिस के साथ दिया गया है।

### मेसर्स गणेशप्रसाद दलाल

इस फर्म के मालिक अमजाल वैश्य सनात्र के सज्जन हैं। आप लोगों का आदि निवास-स्थान भोजपुर (जयपुर) का है। शुरू २ में गणेशप्रसादजी यहाँ आये तथा सूत की दुकानों का व्यापार शुरू किया। इसमें आपकी अच्छी सफलता मिली। पश्चात् आपने अपनी फर्म स्थापित की। आपका स्वर्गवास हो गया है। आप व्यापार-वनपुर और मेधावी सज्जन थे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाला गणेशप्रसादजी के भाई हनुमानदासजी, रामेश्वर-दासजी और भूदानलजी और आपके पौत्र रघुनाथप्रसादजी हैं। रामेश्वरप्रसादजी सार्वजनिक कार्यों में भी अच्छा योग देते रहते हैं। मारवाड़ी स्कूल के आप आनरेरी मंत्री हैं।

मेसर्स—निहालचन्द बलदेव सहाय नारनौल—यहाँ बैंकिंग का काम होता है। यहाँ आदि निवासस्थान है।

### मेसर्स वंशीधर गोपालदास

इस फर्म के मालिक फरखावाद के निवासी हैं। आप लोग रस्तोगी समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का सचित्र परिचय हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ १२८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपड़े का व्यापार करती है।

### मेसर्स वेगराज हरद्वारीमन्

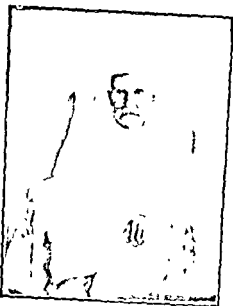
इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान भिवानी है। आप लोग अमवान वीर समाज के बागड़िया सज्जन हैं। इस फर्म के आदि संस्थापक सेठ वेगराजजी लगभग ५० वर्ष पूर्व कानपुर आये और कपड़े का व्यापार करने लगे। आपके पुत्र लाला हरद्वारीमन्जी अपने पूज्य पिताजी की देख रेख में व्यापार संचालन का काम करने लगे। आर लोकोपे फर्म को अरुद्धी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। लाला वेगराजजी का स्वर्गवास सम्बन् १९११ में हो गया तब से आपके पुत्र लाला हरद्वारीमन्जी अपनी फर्म का संचालन करने लगे। आप व्यापारकुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सम्बन् १९६७ में हुआ और फर्म के संतान कार्य को आपके पुत्र लाला बन्नीदासजी ने सम्हाला। आपने बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली कितने ही व्यापारिक केन्द्रों में अपनी फर्म खोली जो आज भी पूर्ववत् व्यापार कर रही। आपने अपनी फर्म को अरुद्धी उन्नति दी है। इस समय इस फर्म के मालिक लाला बन्नीदासजी बागड़िया हैं। आप धार्मिक व्यक्ति हैं आपने एक धर्मशाला, बगीचा, गंगाजी का घाट एवं मन्दिर आदि स्थानीय आनन्देश्वर मंदिर परमर घाट पर बनवाये हैं। आपने भिवानी में भी जलकुण्ड खेदार कराया है। यहाँ की धर्मशाला में सदात्रय की व्यवस्था भी है। आपने आनन्देश्वरजी के मंदिर का जीर्णोद्धार कराया है।

फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—वेगराज हरद्वारीमन् जेनरलमन्त्र कानपुर—यहाँ फर्म का हेड आफिस है। यहाँ बनाव और बैंकिंग का काम होता है।

मेसर्स—बन्नीदास बागड़िया जेनरलमन्त्र कानपुर T. A. Ramunkar—यहाँ कपड़े के इस्तेमाल का काम होता है।





लाल बिहारीलालजी ( बिहारीलाल रामचरण ) कानपुर



बाबू बन्नेप्रसादरायणजी गणेशोदिया ( मनोहराश रामचन्द्र ) कानपुर



महामहोदयजी महा ( बिहारीलाल रामचरण ) कानपुर



बाबू बन्नेप्रसादजी महा ( मनोहराश रामचन्द्र ) कानपुर

- मेसर्स—बट्टीदास बागदिया २०१ हरीधन रोड कलकत्ता T. A. Anandeswar यहाँ कपड़ा और आदत का काम होता है ।
- मेसर्स—बट्टीदास बागदिया न्यू हाय मार्केट दिल्ली—यहाँ विलायती कपड़े की एजेन्सी का काम होता है ।
- मेसर्स—बेगमराज जुगतकिशोर बम्बई नं० २ T. A. Punchkuti.—यहाँ कपड़े की आदत का काम होता है ।
- मेसर्स—बट्टीदास गयानसाद जनरलगंज, कानपुर—यहाँ देशी कपड़े का व्यापार होता है ।

### मेसर्स विहारीलाल रामचरन

इस फर्म की स्थापना लाला जगमूलजी ने लगभग ७५ वर्ष पूर्व कानपुर में की थी । इस फर्म पर आरम्भ से ही कपड़े का थोक व्यापार होता आ रहा है । इस फर्म के आदि संस्थापक लाला जगमूलजी ने फर्म के व्यापार को सप्रथम अवस्था में पहुँचाया पर आपके पुत्र लाला विहारीलालजी ने अपने व्यापारकौराल से फर्म को नगर की समुन्नत फर्मों की दृष्टि से धीरे धीरे पर पहुँचाया । आपके पुत्र बाबू रामचरनजी गुन भी व्यापार में अच्छा भाग लेते हैं । आप सुपरेहुप विचारों के एक होतहार नवयुवक हैं । आज यू० पी० चेम्बर ऑफ़ कासम की एक्जीक्यूटिव कमिटी के सदस्य, कानपुर कपड़ा कमिटी के सौनिपर थायस चेयर मैन, यू० पी० ट्रेड यूनियन के कैशियर तथा कानपुर म्यूनिसिपलबोर्ड के सदस्य हैं ।

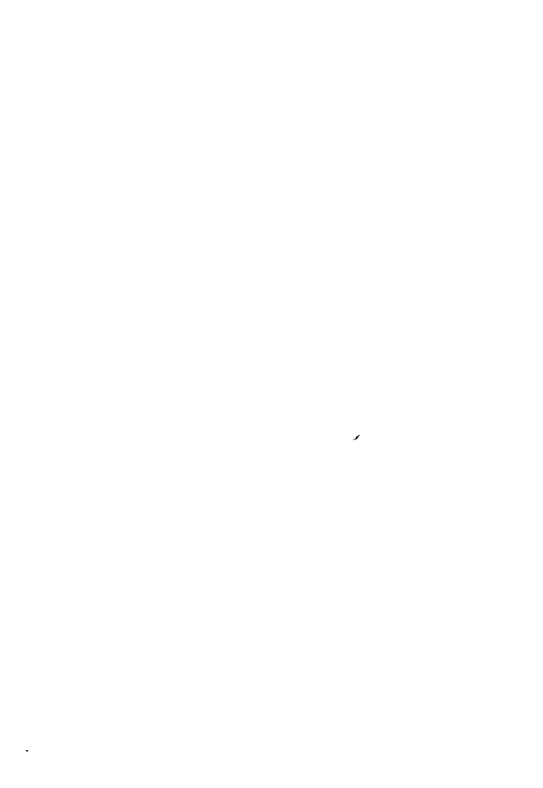
वर्तमान में इस फर्म के मालिकों में लाला विहारीलालजी, लाला रामचरनजी, और लाला रामधिरानजी ही प्रधान हैं । आप लोग अप्रवाज वैश्य समाज के सज्जन हैं और कानपुर के आदि निवासियों में हैं । इस फर्म के विलुप्त व्यापार का संचालन लाला विहारीलालजी ही प्रधान रूप से करते हैं ।

इस फर्म की देख रेख में नगर में कपड़े की ११ फर्में तथा गड्डे की १ फर्म चल रही है । जहाँ थोक व्यापार होता है । इसके अतिरिक्त कपड़े के इम्पोर्ट का एक पीसगुड्स इम्पोर्ट आफिस भी है । इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

- १ मेसर्स विहारीलाल रामचरन जनरल गंज कानपुर T. A. Gopal—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा बैंकिंग, लैण्ड होल्डर्स एवं गवर्नमेंट कन्ट्राक्ट का व्यापार भी होता है ।
- २ मेसर्स—चंद्रिकाप्रसाद रामस्वरूप जनरल गंज कानपुर—यहाँ कपड़े का थोक व्यापार होता है तथा जापानी और देशी मिलों के माल का व्यापार भी होता है । यह फर्म कमिशन एजेन्ट के रूप में काम करती है । यहाँ मलमल आदि का काम होता है ।









### मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल

इस फर्म की स्थापना सेठ गिरधरलालजी द्वारा सम्बन् १९२७ में हुई। पहले इस फर्म के संचालक मेसर्स बिहारीलाल भवानीप्रसाद के नामसे देशी कपड़े एवं सूत का व्यापार करते थे। इस समय भी इस फर्म पर अपना पुराना व्यवसाय देशी कपड़ा एवं सूत का होता है। इस फर्म की सेठ गिरधरलालजी ने अच्छी छन्नति की। आप अमवाल वैश्य समाज के सज्जन थे। आपका खास निवासस्थान टांहा ( फैजाबाद ) का है। आपके २ भाई और हैं जिनके नाम रामेश्वरप्रसादजी तथा विरामभरनाथजी हैं। सेठ गिरधरलालजी का स्वर्गवास सम्बन् १९७२ में हो गया।

आपके पश्चात् फर्म के संचालन का कार्य आपके भावा एवम् आपके पुत्र वेशारनाथजी बलभद्रप्रसादजी एवम् द्वारकानाथजी करते हैं। आप लोगों ने फर्म के व्यवसाय को बहुत सफलता में पहुँचाया। आपने सम्बन् १९७३ में कानपुर में तथा सम्बन् १९७८ में बटुवाल (नेपाल) और नेपालगंज में फर्म खोले तथा टांहा में छपाई का कारखाना खोला, जिसमें १२५ मजदूर रोजाना कार्य करते हैं। इसी प्रकार अपने व्यापार को शानैः २ छन्नति देते हुए सम्बन् १८८० में आपने कानपुर काटन मिल के कपड़े की एजेंसी ली। इसके पश्चात् रामचन्द्र काटन मिल हापरस तथा भी गन्ना काटन मिक्स मिर्जापुर के सूत की विक्री की एजेंसी इस फर्म पर हुई। इसी प्रकार अहमदाबाद के भी कई मिलों के माल की सेलिंग एजेंसी इस फर्म पर है। आप लोगों ने कानपुर में ही विराने का व्यवसाय करने के लिए एक छिराने की भी फर्म खोली। इसी प्रकार आप लोगों ने अपने व्यवसाय को बहुत छन्नतावरण में पहुँचाया। वर्तमान में आप लोग ही इस फर्म के मालिक हैं।

बा० बलभद्रप्रसादजी टांहा स्थितिभिरल कमेटो के चेयरमैन रह चुके हैं। आप वर्तमान में कॉन्फेरी मेमिब्रेंट हैं। यू. पी. चेम्बर आफ़ बामर्स के आप मेम्बर हैं। इसी प्रकार कई संस्थाओं में आपका सहयोग है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय हम प्रचार है।

टांहा (फैजाबाद)—मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल—दर्दा हेट ऑफिस है। तथा पैकिंग, जर्नीदारो, कपड़ा, सूत एवम् गन्ने का व्यापार और आइत का काम होता है। दर्दा औरका एक कारखाना है जिसमें १२५ आदमी कपड़े की छपाई का काम करते हैं।  
कानपुर—मेसर्स भवानीप्रसाद गिरधरलाल एडिफासंज, T. A. Bhawani—दर्दा पैकिंग, कपड़ा, सूत एवम् छिराने की आइत का व्यापार होता है। इस फर्म में कई मिलों की कपड़े एवम् सूत की सेलिंग एजेंसियाँ हैं।



### मेसर्स रामनारायण किशनदयाल

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई है। जहाँ इसके वर्तमान मालिक सेठ धनरामदासजी रहते हैं। बम्बई में यह फर्म मेसर्स चैनीराम जेसराम के नाम से व्यापार करती है। यहाँ यह फर्म टाटा की मिलों की एजेन्ट है अतः टाटा की मिलों का बना कपड़ा यहाँ बँचती है। इसका सचित्र परिषय मन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ ४५ पर दिया गया है।

### मेसर्स रामकुमार रामेश्वरदास

इस फर्म के मालिक नवलगढ़ (राजपुताने) के आदि निवासी हैं। आप लोग अमवाज बैरयसमाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग २६ वर्ष पूर्व सेठ रामकुमारजी के पूर्वजों ने की थी पर फर्म का प्रधान संचालन आरम्भ से आप ही करने आ रहे हैं। आप की फर्म पर यों तो सभी प्रकार के कपड़े का परू विक्री और आड़त का काम बहुत बड़ी तादाद में होता है पर साथ ही बुझानपुर की मील तथा लखनऊ की गुरुसहाय मिल के माल की एजन्सी भी है। इस फर्म के मालिक सेठ रामकुमारजी, तथा आपके भ्राता सेठ रामेश्वरदासजी तथा आपके अन्य भ्राता लोग हैं। सेठ रामकुमारजी लगभग १३ वर्ष तक स्थानीय म्युनिसिपलबोर्ड के कमिश्नर रहे हैं। आप स्थानीय फाइनेन्स कमेटियों के चेयरमैन तथा यहाँ के यूनाइटेड चैम्बर ऑफ़ कानर्स के वायस चेयरमैन, कानपुर कपड़ा कमेटियों के चेयरमैन तथा मारवाड़ी हाईस्कूल के सेक्रेटरी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

मेसर्स—रामकुमार रामेश्वरदास काहू की कोठी T. A. Newatia कानपुर—यहाँ सभी प्रकार के कपड़े की विक्री तथा आड़त का बहुत बड़ा काम होता है।

नेवदिया आइल मिस्स गाजीपुर—यहाँ इस फर्म का एक आड़त मील तथा आइस फैक्टरी है।

इसके अतिरिक्त कलकत्ता तथा बम्बई आदि अन्य स्थानों पर भी फर्म की शाखाएँ हैं। जहाँ फर्म कपड़े का काम करती है।

### मेसर्स लक्ष्मीनारायण गिरधारीदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान भिखानी (पंजाब) का है। आप लोग अमवाज बैरयसमाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब २० वर्षों से इसी नाम से कपड़े का कारबार कर रही है। इसकी स्थापना से० लक्ष्मीनारायणजी ने की। शुरू २ में इस पर



## वैङ्कट एण्ड कण्ट्राक्टर्स

मेसर्स इच्छाराम रामदयाल

इस फर्म के मूल संस्थापक स्व० बाबू इच्छारामजी हैं। आपने लगभग १५० वर्ष पहले अपने मूलनिवासस्थान भगवन्त नगर ( वज्राव ) में धतूनों का व्यापार प्रारम्भ किया था। इसमें आपकी अच्छी सफलता मिली। जिस समय अंग्रेजों ने कानपुर में अपनी धतूनी बसाई उस समय आपने भी अपनी शाखा कानपुर में खोल दी। बाबू इच्छारामजी का स्वर्गवास होने के पश्चात् इसके मालिक अलग २ हो गये। तब से बाबू देवीदीनजी और बाबू रामप्रसादजी ने अपना व्यापार उपरोक्त नाम से प्रारम्भ कर दिया। कुछ समय पश्चात् इस फर्म ने अपने घातु घाने के व्यवसाय को बन्द कर वैङ्किंग व्यवसाय को उत्तेजित किया। बाबू देवीदीनजी और बाबू रामप्रसादजी के पश्चात् इस फर्म का प्रधान संचालन बाबू गोविन्दलालजी उर्फ राजा, तथा आपके छोटे भ्राता बाबू शाहिजादा लालजी के हाथों में आया। बाबू शाहिजादा लालजी के हाथों से इस फर्म के वैङ्किंग व्यापार को बहुत तरकी मिली। आपके समय में इस फर्म ने अच्छी ख्याति प्राप्त की। इस टाइम में इस फर्म की जर्मीदारी भी बहुत विस्तीर्ण होगई। बाबू बालगोविन्द तथा बाबू शाहिजादेलाल के स्वर्गवास के पश्चात् इस फर्म का संचालन भार, बाबू बालगोविन्दजी उर्फ राजा के एकमात्र पुत्र बाबू जुगलकिशोरजी के हाथ में आया। आपके हाथों से भी इस फर्म के वैङ्किंग व्यवसाय और जर्मीदारी को बहुत तरकी मिली। आपने अपने पूज्यपिता और पत्नी की स्मृति में सनातन धर्म कॉलेज का दर्शनीय हॉल निर्माण करवाकर उसमें दोनों महातुमाओं के तैलचित्र लगवाये।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू जुगलकिशोरजी तथा आपके पुत्र बाबू मनमोहनलालजी, बाबू शिवमोहनलालजी, बाबू गुरु प्रसादजी तथा बाबू गुरु धरणीजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स इच्छाराम रामदयाल वैङ्किंग मालरोड—यहाँ पर वैङ्किंग और जर्मीदारी का बहुत बड़ा काम होता है।

### पण्डित गुरुप्रसादजी शुक्ल

आप कान्यकुब्ज-भ्राह्मण समाज के शुद्ध सज्जन हैं। आपके पूर्वज जि० वज्राव, सहस्राल सादीपुर गांव पट्टी इसमान के रहनेवाले थे। इस शुद्ध परिवार के पूर्व पुरुष पं० बर्रीनाथजी व्यापारिक क्षेत्र में पूरी गति विधि रखते थे। इस सम्बन्ध में आपने सरकारी







पं० सरधूमनाथभाई निवारी ( वैद्यनाथ प्रयागनाथपण ) बानसूर



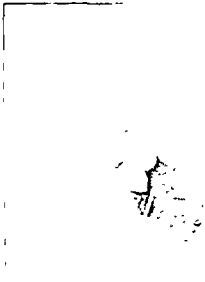
पं० देव-नाथभाई निवारी ( वैद्यनाथ प्रयाग-  
 नाथपण ) बानसूर



पं० निवारीभाई निवारी ( वैद्यनाथ प्रयाग-  
 नाथपण ) बानसूर



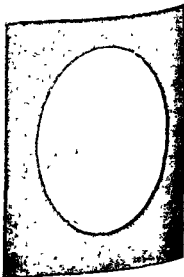




श्री १००



श्री १०० (समस्त समाज)



श्री १००

यज्जती विचारी ने फर्म के काम को संभाला और मन्दिर के अहाने में धैर्य बाजार के नाम से एक अच्छी मार्केट बनवाई। पं० शोपनारायणजी विचारी म्यूनिसिपल कमिश्नर हैं। आप अच्छे सुधरे हुए विचारों के महातुभाव हैं। पं० सरजूनारायणजी के ४ पुत्र हुए ये पं० नरनारायणजी, पं० गोविन्दनारायणजी तथा पं० फत्तुलखाननारायणजी हैं जिसमें से पं० नित्यनारायणजी का स्वर्गवास हो चुका है। आप ओइदा राज्य में चीफ मैजिस्ट्रेट थे। आप M. A. L-L. B. थे।

इस फर्म के वर्तमान मालिक महाराज सरजूनारायणजी विचारी तथा महाराज शोपनारायणजी विचारी हैं।

इस फर्म का परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—स्वर्गेश्वर प्रयागनारायण विचारी धैर्य कानपुर—यहाँ जमींदारी तथा मंदिर के मार्केट इत्यादि के संचालन का कार्य होता है।

### मेसर्स रामरतन रामगोपाल

इस फर्म को स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व बाबू रामरतनजी ने कानपुर में की थी। आप लोगों के पूर्व पुरुष राइजादपुर (प्रयाग) के रहनेवाले हैं पर जब से आपने इस फर्म की स्थापना की तब से कानपुर में रहने लगे। आप ऋषिवाला वैश्य समाज के सम्जन हैं। आप को फर्म पर आरम्भ से ही बँकिंग और जमींदारी का काम हो रहा है जो यह फर्म वर्तमान में भी कर रही है। बाबू रामरतनजी और आपके पुत्र बाबू रामगोपालजी के बाद फर्म का संचालन रायबहादुर विरामभरनाथजी तथा रायबहादुर कन्हैयालालजी करते रहे। आप लोग नगर के सभी सार्वजनिक कार्यों में अच्छा भाग लेते थे। यहाँ के नागरिक जीवन में आप दोनों ही महातुभावों का बहुत बड़ा प्रभाव रहा। आप लोगों की इन्हीं विशेषताओं पर सरकार ने प्रसन्न होकर कर आप दोनों ही को रायबहादुर की पदवी से सम्मानित किया। वर्तमान में आप दोनों ही महातुभाव स्वर्गवासी हो चुके हैं। अतः फर्म का प्रधान संचालन रायबहादुर कन्हैयालालजी के पुत्र बाबू रामशंकरजी तथा बाबू गौरीशंकरजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—रामरतन रामगोपाल मनोराम की बगिया कानपुर—यहाँ बँकिंग और जमींदारी का काम प्रधान रूप से होता है। यह फर्म कानपुर तथा जालौन के सरकारी स्वजाने की ट्रेंडर है।



भारतीय व्यापारियों का परिचय ६३  
( बीसरा भाग )



म० सेठ कालदामजी ( साहियाराम कालदाम ) बानपुर

म० सेठ उदयशामजी ( साहियाराम कालदाम ) बानपुर



श० मुचनदनहालजी ( साहियाराम कालदाम ) बानपुर

श० रामचरणहालजी ( साहियाराम कालदाम ) बानपुर





है। तथा बैंकिंग और चपड़े का व्यापार होता है। इस फर्म का संचालन बा० राम-चरनजी करते हैं।

कानपुर—मेसर्स वदयराम गोपीराम जनरलगंज, T. A. Jaishiva—यहाँ किराने का एवं आड़त का काम होता है। इस फर्म में कृष्णगोपालजी मालपाणी तथा त्रिलोकी नाथजी कार्य देखते हैं।

बम्बई—मेसर्स कन्स्टमल वदयराम फातुवादेवी रोड, T. A. Jaishankar—यहाँ किराना, कपड़ा, सूत, गल्ला, चीनी घाठवाना इत्यादि २ को आड़त का काम होता है। यहाँ हेड मुनीम रामगोपालजी कार्य देखते हैं।

कानपुर—मेसर्स कन्स्टमल सत्यनारायण नयागंज, T. A. Prakash—यहाँ किराने का थोक काम तथा आड़त का काम होता है। इस फर्म पर मेसर्स मन्नीलाल मूलजी के रंग की सोल एजेंसी भी है। इसमें बा० सत्यनारायणजी काम देखते हैं।

## चाँदी-सोने के व्यापारी

### मेसर्स गुलाबसिंह फतेसिंह

इस फर्म के संस्थापकों के पूर्व पुरुष मेसर्स ताराचंद निहाडचंद के नाम से कानपुर में ज्वैलर्स, पैरर्स तथा लैण्ड लार्ड्स का काम करते थे। परन्तु मातियों के अलग हो जाने से छेठ गुलाबसिंहजी ने अपना स्वतंत्र व्यवसाय वनरोछ नाम से स्थापित किया और तब से आजकी फर्म अपना पुरतैनी व्यवसाय सोना, चाँदी तथा जवाहिरात का कर रही है।

इस फर्म का प्रधान संचालन सेठ गुलाबसिंहजी करते हैं और आपके पुत्र बाबू फतेसिंहजी भी व्यापार के संचालन में सहयोग देते हैं। आप लोग जोधपुर (मारवाड़) के निवासी हैं परन्तु लगभग ८ पुरत से कानपुर में ही बस गये हैं। आप लोग भौमाज जैन श्रेताश्रम सम्प्रदाय के हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषद इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स एस० गुलाबसिंह फतेसिंह गुलाब निवाज चौक T. A. Gurudeoji—यहाँ मुद्रियन मर्चेंन्ट्स तथा ज्वैलर्स का काम होता है। इस फर्म की यहाँ सैण्डेड प्रान्टी भी अम्बूरी है।



भारतीय व्यापारियों का परिचय —  
(दोसरा भाग)



श्री सङ्करामचन्द्रजी अमरनाथ (शास्त्रिगणेश चन्द्रमल) कायपुर ।



श्री हर्णालालजी गुप्त बी० ए० एल०एल० बी० एड०बी०एड० (शास्त्रिगणेश चन्द्रमल) कायपुर ।



श्री विश्वेश्वरजी अमरनाथ (शास्त्रिगणेश चन्द्रमल) कायपुर ।



श्री हर्णालालजी अमरनाथ (दत्तचरण गोपीनाथ) कायपुर ।



इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स शिवसहाय सयनप्रसाद चौक सराफा—यहाँ सोना, चाँदी तथा जेवरात का काम और महाजनी लेन-देन का व्यापार होता है ।

कानपुर—मेसर्स मंगलप्रसाद शिवसहाय नयागंज—यहाँ सोना, चाँदी तथा जेवरात का काम होता है ।

गूजामलका ( जमालपुर )—मेसर्स मंगलप्रसाद रामचरण—यहाँ बैंकर्स एण्ड लैण्ड लार्ड्स का काम होता है ।

मैमनसिंह—मेसर्स मङ्गलप्रसाद रामचरण—यहाँ आपको कोठी है तथा आफिस है ।

घाटमपुर उन्नाव—यं० शिवसहायजी दीक्षित—यहाँ मालिकों का निवास स्थान है और महाजनी तथा जमींदारी का काम होता है

### मेसर्स हजारीमल सोहनलाल

इस फर्म की स्थापना स्व० लाला हजारीमलजी सराफ ने सन् १९४० में कानपुर में की थी । इस फर्म में आरम्भ से ही सोने, चाँदी, तथा जेवरात का काम होता आ रहा है और इसी के साथ रूई का व्यापार भी यह फर्म आरम्भ से ही करती आ रही है । वर्तमान में यह फर्म उपरोक्त व्यापार अर्थात् सोना, चाँदी, जेवरात और रूई का काम करती है । इसकी स्थापना स्व० लाला हजारीमलजी ने की थी पर आपके बाद आपके पुत्रों ने फर्म के व्यापार को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ रंगलालजी सराफ तथा सेठ सीतारामजी सराफ हैं । आप लोग फतेपुर (जयपुर) के धादि निवासी हैं और अमवाल वैश्य समाज के सराफ सज्जन हैं । फर्म का संचालन तीनों ही माई करते हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स हजारीमल सोहनलाल नयागंज T. A. money—यहाँ सोना, चाँदी तथा रूई का व्यापार होता है । यह फर्म कानपुर की मिलाँ की तैयार रूई सड़ाई करती है ।

कानपुर—मेसर्स हजारीमल सोहनलाल नयागंज—यहाँ सोना, चाँदी जेवरात और ज्वैलरी का काम होता है ।

## किराने के व्यापारी

मेसर्स जगन्नाथ मन्नीलाल

इस फर्म के मालिक मौजा कुलहा जिला उन्नाव के रहनेवाले हैं। करीब ८० वर्षों से लाला जगन्नाथजी यहाँ आये तथा किराने और आदत का व्यापार प्रारंभ किया। उस वक्त इस फर्म पर गयादीन जगन्नाथ नाम पड़ता था। संवत् १९३५ में जगन्नाथजी का स्वर्गतन हो गया। तब से आपके पुत्र ला० मन्नीलालजी ने फर्म का नाम बदल कर वररोज नाम रख दिया। करीब संवत् १९६० में आपने किराने का थोक व्यापार प्रारंभ किया। इसमें आपको बहुत अच्छी सफलता मिली। आपने बहुत सी जमींदारी भी खरीदी की। इस वक्त आपने अपनी स्थायी सम्पत्ति भी काफी बढ़ाई। कानपुर के लक्ष्मी आइल मित्र को भी आपने खरीदा। इसमें २२२ कोड़ तथा घान की कल है।

वर्तमान में लाला मन्नीलालजी ही इस फर्म के मालिक हैं। आपके चार पुत्र हैं। वे मदनगोपालजी आपकी देख रेख में फर्म का संचालन करते हैं। शेष अभी छोटे हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स जगन्नाथ मन्नीलाल नयागंज,—यहाँ हे० आ० है। तथा बैंकिंग और डिप्लो का व्यवसाय होता है।

कानपुर—मेसर्स मन्नीलाल मदनगोपाल नयागंज,—यहाँ भी किराने का व्यापार होता है। दो लक्ष्मी आइल मित्र भवानापुरवा कानपुर—यहाँ एक तेल की मित्र हैं।

### मेसर्स तुलसीराम त्रिपाठ्य

इस फर्म की स्थापना लगभग ६० वर्ष पूर्व सेठ त्रिपालाजी ने कानपुर में की थी। इस फर्म के मालिकों के पूर्व पुरुष लगभग ३०० वर्ष से व्यापार करने चले आ रहे हैं और कानपुर की वररोज फर्म की स्थापना के पूर्व इसके मन्नापक अपने आदि निताम स्थान बेरी (देहरादून) में अपना स्वतंत्र व्यवसाय भी करने थे।

इस फर्म के वर्तमान मालिक लाता केदाररामजी तथा आपके पुत्र लाता सोनारामजी, लाला रामनाथजी और श्रीकृष्णरामजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स तुलसीराम त्रिपाठ्य नयागंज कानपुर T. A. Beriwal—यहाँ फर्म का हेड कार्यालय है तथा डिप्लो, लक्ष्मी और डिप्लो का व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स तुलसीराम जियालाल कलेक्टर गंज—यहाँ बर्मा शेल की बेल की ऐजेन्सी है ।

कानपुर—मेसर्स तुलसीराम जियालाल मालरोड—यहाँ मोटर पार्ट्स एण्ड ऐसेसरी तथा बर्मा शेल के पेट्रोल की ऐजेन्सी है ।

आगरा—मेसर्स तुलसीराम जियालाल परवापपुरा—यहाँ पेट्रोल की ऐजेन्सी है ।

( रोहताक )—मेसर्स खजीराम केशोराम घेरी—यहाँ बेंडर्स एण्ड लैण्डलाइन्स का काम होता है ।

### मेसर्स बिहारीलाल मन्नीलाल

इस फर्म के मालिक वाराणसी ( फतहपुर ) के रहने वाले ऊमर वैद्य समाज के सज्जन हैं । करीब ४५ वर्ष पूर्व लाला बिहारीलालजी यहाँ आये तथा किराने की दुकान का काम शुरू किया । पश्चात् संवत् १९५७ में यह फर्म स्थापित की । इस पर आपने किराने का ही व्यापार प्रारंभ किया । इस फर्म की उन्नति का श्रेय आपही को है । ला० बिहारीलालजी का स्वर्गवास संवत् १९७२ में हो गया । आप के दो पुत्र हुए जिनके नाम लाला मुन्नीलालजी तथा सरयूप्रसादजी हैं । वर्तमान में आपही इस फर्म के मालिक हैं । आप लोगों ने समय २ पर अपने व्यापार की उन्नति के लिये भिन्न २ नामों से और शाखाएँ खोलीं । तथा फर्म की काफी उन्नति की । आप लोग मिलनसार, सरल, एवं सज्जन महानुभाव हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

कानपुर—मेसर्स बिहारीलाल मन्नीलाल नयागंज—यहाँ फर्म का हेड आफिस है । यहाँ बेंकिंग किराना तथा आइट का काम होता है ।

कानपुर—मेसर्स सरयू प्रसाद रामचरन नयागंज T. A. Surjoo—यहाँ किराने की आइट का काम होता है ।

कानपुर—मेसर्स बिहारीलाल रामकृष्ण नयागंज—यहाँ फूटकर किराना तथा आइट का व्यापार होता है ।

कानपुर—मेसर्स मोदीलाल मुन्नालाल नयागंज—यहाँ किराने का व्यापार होता है ।

कानपुर—मेसर्स बिहारीलाल बालकृष्ण नयागंज, T. A. Shawji—यहाँ एनि साइन्स टाईज एण्ड केमिकल & Chemical, की रंग की पत्रियाँ हैं ।





भारतीय व्यापारियों का परिचय (द्वितीय भाग)



१४० श्री श्री रामदासजी भट्टनागर (श्री रामदास  
भट्टनागर) काठनूर



१४१ श्री श्री भद्ररामजी भर्गवा (श्री भद्ररामजी  
भर्गवा) काठनूर



१४२ श्री श्री रामदासजी (श्री रामदास  
भट्टनागर) काठनूर

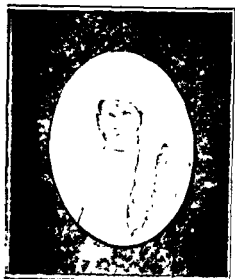


१४३ श्री श्री रामदासजी भर्गवा (श्री रामदास  
भट्टनागर) काठनूर





भारतीय व्यापारियों का परिचय —  
( तीसरा भाग )



श्री रामकृष्णप्रसाद मिश्रा (रामनगर मुख्यालय) इलाहाबाद श्री रामकृष्णप्रसाद मिश्रा (रामनगर मुख्यालय) इलाहाबाद



### मेसर्स पुरुषोत्तमदास बनारसीदास

इस फर्म की मालिक कलकत्ते की मेसर्स दामोदर चौधे एण्ड कम्पनी है। इसका आफिस हालसी रोड पर है। जहाँ यह फर्म बैंकिंग और सब प्रकार की आइत का काम करती है। इसका हेड आफिस कलकत्ता है। यहाँ इसका विस्तृत परिचय दूसरे भाग के पेज नं० १६६ में दिया गया है।

### मेसर्स मधुदयाल गनेशप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० गनेशप्रसादजी एवं ला० मुन्दरलालजी हैं। इसका हेड आफिस लखनऊ है। यहाँ यह फर्म गल्ला एवं आइत का व्यापार करती है। इसका यहाँ का पता नयागंज है। इसका विस्तृत परिचय लखनऊ में दिया गया है।

### मेसर्स फूलचन्द मोहनलाल

इस फर्म का हेड आफिस हाथरस है पर इसकी कितनी ही शाखाएँ कलकत्ता बम्बई आदि व्यापारिक केन्द्रों में हैं। इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में ९८ पृष्ठ पर तथा इसी भाग में हाथरस के साथ दिया गया है। यहाँ इस फर्म का आफिस नयागंज में है जहाँ यह फर्म सटाफी लेन देन, रुई तथा आइत एवं गल्ले का काम करती है। इसकी जमींदारी भी यहाँ है। बिना सखि परिचय के लिए हाथरस में देखिये।

### मेसर्स बसन्तलाल मुन्नालाल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास मुंमुनु (जयपुर) है। आप लोग अमवाज वैश्य समाज के सेवान सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना बा० बसन्तलालजी सेवान तथा आपके माई बाबू मुन्नालालजी सेवान ने सन् १९०४ में की। यह फर्म कानपुर में कपड़ा तथा आइत का बड़ा व्यापार करती है। इसके अतिरिक्त इस फर्म की और भी चार भाँचें गोरखपुर जिले में हैं जहाँ गन्ना, गुड़ तथा दात आदि का व्यापार और आइत का काम अच्छी छत्रत अवस्था में होता है।

इस फर्म के संस्थानकों का पारिवारिक विवरण हमारे इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग पृष्ठ १३१ में विलारपूर्वक दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक बा० बसन्तलालजी सेवान तथा आपके माई बाबू मुन्नालालजी सेवान हैं। बाबू मुन्नालालजी सेवान के चार

पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—बाबू भगवतीप्रसादजी, बाबू चरडीप्रसादजी, बाबू भवानीप्रसादजी और बाबू परमेश्वरीप्रसादजी हैं। इनमें से बाबू भवानी प्रसादजी मेंड बन्त-लालजी के यहाँ दत्तक दिये गये हैं।

इस फर्म के व्यवसाय को उत्तम अवस्था पर पहुँचाने का श्रेय इसके संस्थापकों को ही है। आप लोगों ने बड़ी योग्यता से व्यापार मंचालित कर अपनी फर्म को उन्नत बनाने में सफल हुए हैं। आप लोग सभी मिलनसार और सरल स्वभाव के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

- कानपुर—मेसर्स बसन्तलाल मुन्नालाल जेनरलगंज T. A. Mansadani—यहाँ फर्म का ही आकिम है। कपड़े के इम्पोर्ट तथा बैंकिंग और मीलों को माल सट्टाई करने का काम इस फर्म पर होता है। किराना, गल्ला, तथा कपड़े की आदत का काम भी होता है।
- चौरी चौरी (गोरखपुर)—मेसर्स मुन्नालाल चन्डीप्रसाद—यहाँ गल्ला और गुड़ का व्यापार तथा आदत का काम होता है।
- संझनवा (गोरखपुर)—मेसर्स मुन्नालाल चन्डीप्रसाद—यहाँ गल्ला, और गुड़ का व्यापार तथा आदत का काम होता है।
- रावतगंज (गोरखपुर)—मेसर्स मुन्नालाल चन्डीप्रसाद—यहाँ दाल का कारखाना है तथा इन दिसावरों को सट्टाई की जाती है।
- घुगली (जि० गोरखपुर)—मेसर्स रामविलाम रामजी बसन्तलाल—यहाँ गुड़ की खरीदों की गुड़ की आदत का काम होता है।
- मुंमुं (जयपुर)—मेसर्स बसन्तलाल मुन्नालाल—यहाँ फर्म के मालिकों का आदि निष्पत्तयान है।

### मेसर्स बाबूलाल हरिशंकर

इस फर्म के मालिक हायरम के निवासी हैं। आप लोग अमवाज वैश्य समाज के मान्य हैं। यहाँ यह फर्म कृषि, चिट्ठी तथा कमीशन का काम करती है। इसका अधिक परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग पृष्ठ १९ में दिया गया है।

### मेसर्स भगतगम रामनारायण

इस फर्म के बर्तमान संस्थापक मेंड शिवदयालजी, मेंड रामनारायणजी तथा मेंड लक्ष्मी नारायणजी ठिकनाली हैं। आप लोग अमवाज वैश्य समाज के मान्य हैं। यहाँ पर पर फर्म



मेड श्रीहार्शरी ( बम्बलाल मुञ्जाल ) कानपुर

१०५



श्री० भम्बलालमुञ्जालजी सेवान ( बम्बलाल मुञ्जाल ) कानपुर।



श्री० श्रीहार्शरीजी सेवान ( बम्बलाल मुञ्जाल ) कानपुर।





कारदान, गल्ला तथा आदत का व्यवसाय करती है। इसका सचित्र परिषय प्रथम भाग के बम्बई विभाग पृष्ठ ५७ पर दिया गया है।

### मेसर्स मन्नालाल फूलचन्द

इस फर्म के मालिक लाला फूलचन्दजी हैं। इसका हेड आफिस लखनऊ है जहाँ विरोध परिषय दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ला, आदत तथा वैद्विग का काम करती है। यहाँ यह फर्म नन्दगंज में है।

### मेसर्स रामकरणदास रामबिलास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान मुंमुनू (जयपुर) है। आप लोग अग्रवाल वैद्य समाज के रोहान सज्जन हैं। इस परिवार का व्यापार सम्बन्धी पूर्ण परिषय विस्तृत रूप से हमारे इसी मन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पृष्ठ १३१ में दिया गया है। इन फर्म की स्थापना कानपुर में सम्बन् १९३४ में हुई और कपड़ा, शकर किराना आदि की आदत का काम आरम्भ किया गया तथा गुट्टैया मील और सीवान मील की शहर की एनेन्सियों भी ली गयीं। सम्बन् १९७४ तक यह फर्म सम्मिलित परिवार की सम्पत्ति के रूप में काम करती रही पर इसी वर्ष इस फर्म के आदि संस्थापक सेठ रामबिलासरायजी व्यापारिक क्षेत्र से अलग हो गये क्यः आपके पाँचों पुत्र भी अलग २ हो गये और अपना अपना स्वतंत्र व्यापार अपनी स्वतंत्र फर्म खोल कर करने लगे। फलतः इस नाम में जो फर्म कानपुर में थी वह केवल कपड़े का व्यापार करने लगे और इसके आदि संस्थापक सेठ रामबिलासरायजी के हाथ स्वर्ण में लगती है।

इसका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स रामकरणदास रामबिलास जेवरलगांज—यहाँ कपड़े का काम होता है।

सेठ रामबिलासरायजी के पाँच पुत्र हैं। बाबू बसन्तलालजी, बाबू हुमालालजी, बा० बिरजीलालजी, बा० मदनलालजी तथा बा० लीलाधरजी। आप लोग नीचे ब्रह्मानुसार व्यापार करते हैं।

१. मेसर्स बसन्तलाल हुमालाल—मालिक बा० बसन्तलालजी और हुमालालजी
२. मेसर्स रामबिलासराय बिरजीलाल—मालिक बा० बिरजीलाल
३. मेसर्स रामबिलासराय मदनलाल—मालिक बा० मदनलालजी
४. बम्बई—मेसर्स रामकरणदासजी रोहान—इस फर्म के सभी भाई मालिक हैं क्यः बा० लीलाधरजी का ज्ञान है। इन का संस्थान बा० बसन्तलालजी करते हैं।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

सेठ रामविलासरायजी व्यापार से अलग होते समय कानपुर के जेनरलगंज बाने १२३ के फीमत का एक मकान तथा गोरखपुर के देवरिया तहसील के ३ मकान खरीदे लगा गये हैं।

### मेसर्स रामविलासराय चिरंजीलाल

इस फर्म की स्थापना बाबू चिरंजीलालजी ने सन्वत् १९८१ में कर किराने का व्यापार तथा आदत का काम आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी पूर्ववत् रीति से कर रही है। इस फर्म की यहाँ के व्यापारी समाज में अच्छी प्रतिष्ठा है। इस फर्म पर बैंकिंग का काम भी होता है।

इस फर्म के मालिक बाबू चिरंजीलालजी हैं। आप अपने आदि नियाम स्थान मुंजु में ही रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कानपुर—मेसर्स रामविलासराय चिरंजीलाल नयागंज—यहाँ किराने की बिक्री तथा आदत का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।

मुंजु (जयपुर)—मेसर्स रामविलासराय चिरंजीलाल—यहाँ मांसिकों का आदि नियाम स्थान है। यहाँ बा० चिरंजीलालजी रहते हैं।

### मेसर्स रामविलासराय मदनलाल

इस फर्म की स्थापना बा० मदनलालजी ने सन्वत् १९८१ में की थी। आरम्भ में इस फर्म ने राकर की बिक्री तथा राकर की आदत का व्यापार शोला और साथ ही कपड़े की बिक्री का व्यापार भी आरम्भ किया जो यह फर्म पूर्ववत् कर रही है। इस फर्म की एक दुकान ग्रांथ बस्ती में है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० मदनलालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कानपुर—मेसर्स रामविलासराय मदनलाल जेनरलगंज T. A. Khetan—यहाँ फर्म का आदत है। राकर की आदत तथा बेबवाजी का काम और बैंकिंग का व्यवसाय होता है।

बग्गी—मेसर्स मदनलाल खेतान—यहाँ कपड़े का काम होता है।

मेसर्स रामदयाल माधोमसाद  
 इस प्रसिद्ध फर्म का हेड आफिस सूची है। कई स्थानों पर इसकी शाखाएँ हैं। प्रा-  
 सभी स्थानों पर बैंकिंग और गल्ले का व्यापार होता है। इस फर्म का निज का शाकर क  
 कारखाना भी है। इसका विल्टव परिचय इसी ग्रंथ के दूसरे भाग में पेज नं० ४०१ में विघो-  
 सहित दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार करती है। यहाँ इसका पता कोपरगंज है।

मेसर्स सनेहीराम जुहारमल  
 इस फर्म का विल्टव एवं सचित्र परिचय हमारे इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बन्वई  
 विभाग के पृष्ठ ५८ पर दिया गया है। यह फर्म यहाँ पर बैंकिंग का व्यवसाय तथा मिलों को  
 काटन सप्लाई करने का काम करती है। इस फर्म के मालिक अमवाल वैश्य समाज के सज्जन  
 हैं। फर्म का हेड आफिस कलकत्ता में है।

मेसर्स मूरजमल हरीराम  
 इस फर्म का हेड आफिस पठरौना (गोरखपुर) में है। जहाँ इस फर्म के मालिक सेठ  
 मूरजमलजी रहते हैं। आप अमवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का परिचय हमारे  
 इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बन्वई विभाग के पृष्ठ १२४ में दिया गया है। यह फर्म यहाँ गुड़  
 तथा शाकर की आदत का व्यापार तथा कमीरान का काम करती है। विरोप परिचय पठरौना  
 में दिया गया है।

मेसर्स मूरजमल छोटेलाल  
 इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ छोटेलालजी कानोदिया हैं। इस फर्म की और भी स्थानों  
 पर शाखाएँ हैं। इसका विल्टव परिचय विघो सहित इसी ग्रन्थ के द्वितीय भाग में देखना  
 चाहिये। यहाँ इस फर्म का पता नयागंज है। यह फर्म यहाँ बैंकिंग, बोरे एवं गल्ले का  
 व्यापार और आदत का काम करती है। इसका ठार का पता है "Suraj"

मेसर्स हरनन्द्राय अर्जुनदास  
 इस फर्म का हेड आफिस दिल्ली में है। यह फर्म प्रविष्टि फर्मों में मानी जाती है।  
 इसका एक कॉटन मिल भी है और भी स्थानों में इसकी शाखाएँ हैं। जिनका परिचय  
 दूसरे भाग में पेज नं० ३२७ में दिया गया है और विल्टव परिचय इसी भाग में देहली में  
 छाता गया है। यहाँ यह फर्म बोरे का और बैंकिंग का व्यापार करती है।



जो तथा प्यारेलालजी और ला० द्वारकाप्रसादजी के मन्मथलालजी, रिखिलालजी तथा जगन्नाथ नामक पुत्र हैं। इनमें से लाला रिखीलालजी तथा जगन्नाथजी इस फर्म से अलग हो गये हैं। अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। रोय तीनों ही भाई इस फर्म के मालिक हैं। आप तीनों ही इसका संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—  
 बानपुर—मेसर्स तेजलाल दीनानाथ हालसीरोड, नई सड़क T. A. Latus—यहाँ हाईवेकर और सेंदरी गुड्स का इम्पोर्ट और टाटा कम्पनी के लोहे के माल की विक्री का काम होता है। यह फर्म ए० एफ० रेटों एण्ड कम्पनी बरलिन एजेंट हैं।

मेसर्स प्यारेलाल कन्हैयालाल

इस फर्म के मालिक हीराच नगर (सुराराबाद) के निवासी हैं। करीब ७५ वर्ष पूर्व सेठ प्यारेलालजी तथा कन्हैयालालजी ने यहाँ आकर फर्म स्थापित की। आप दोनों भाई २ थे। आप अमवाल सम्राज के महासुभाष हैं। संवत् १९५६ में से० प्यारेलालजी का स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् फर्म के कार्य का संचालन कन्हैयालालजी ने संभाला। आपके पश्चात् फर्म संवत् १९६० में टूटा। आपने कलकत्ते में भी अपनी श्रांश स्थापित की। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ नवलकिशोरजी ने संभाला। आपने इस फर्म की बहुत कन्नि की। आपके यहाँ कच्छा सम्मान था। आपने गवर्नमेंट से कई कंट्राक्ट भी लिये थे। आपके स्वर्गवास संवत् १९८५ में हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के संचालक नवलकिशोरजी के पुत्र लाला देवदुमारजी हैं। आपके पार भाई और हैं जो छोटे हैं और सिधा लाम कर रहे हैं। देवदुमारजी मिलनगर एवं सरल स्वभाव के सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बानपुर—मेसर्स प्यारेलाल कन्हैयालाल हालसी रोड, T. A. Jain यहाँ बैटिंग तथा लोहे का स्थानर होता है। यह फर्म विलाप से कार्पेट इम्पोर्ट करती है।  
 मेसर्स प्यारेलाल कन्हैयालाल ६८ राजा बटल कलकत्ता T. A. steelmark—यहाँ सोप, फादरिंग, टिपना आदि का व्यापार एवं आरुष का काम होता है।

### मेसर्स रतनजी भगवानजी एण्ड को०

इस फर्म का हेड आफिस धनवाद में है। इसकी ओर भी स्थानों में कई शाखाएँ हैं जिनका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में पेज नं० ९३ में बिहार विभाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म मिल जीन स्टोअर सप्लायर और मोटर की एजेंसी तथा ट्रैक्टर का काम करती है। इसका यहाँ का पता लादुश रोड है।

### मेसर्स लक्ष्मणदास बाबूराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान हाथरस यू० पी० है। आप लोग अथवा धैर्य समाज के जैनी सज्जन हैं। यह फर्म करीब ५० वर्षों से व्यापार कर रही है। इस पक्ष में मेसर्स लक्ष्मणदास बाबूराम नाम पड़ता था। अब उपरोक्त नाम से व्यापार होता है। इस फर्म के स्थापक ला० लक्ष्मणदासजी थे। आप बड़े व्यापारचतुर, मेधावी एवं सज्ज व्यक्ति थे आप ही की बुद्धिमानी एवं व्यापारचतुरता से फर्म ने इतनी तरक्की की है। आपका ध्यान केवल व्यापार की ओर रहा हो सो बात नहीं थी। शिवदास जी आपका व्यापार की तरक्की की ओर या उतना ही सार्वजनिक कामों की ओर भी गए थे। आपने यहाँ लाठी पथान में एक सुन्दर धर्मशाला निर्माण करवाई। इसी प्रकार हाथरस गौरह स्थानों पर कई कुएँ भी आपने बनवाये। सन् १९६४ में यहाँ होने वाले जैन दिवस के समय आपने काकोमी मिल के पास एक सुन्दर कोठी और बगीचा बनवाया था इसके आपने पत्थर कर दिया। उसमें आम पाम के देहावी आदमी विभ्राम पते हैं। आपका ध्यान गरीब ब्राह्मणों की ओर भी बढ़ता रहा है। आपने कई ब्राह्मणों की कन्याओं की शादी करने पाम से रुपये लगाकर करवा दी। इसी प्रकार गौरवमय जीवन व्यतीत करने हुए आपका स्वर्गकाम करीब १० वर्ष पूर्व हो गया।

आपके तीन पुत्र हुए, सेठ बाबूरामजी एवम् सेठ कृष्णचन्द्रजी। इनमें से सेठ बाबूरामजी अपने पिताजी के समय से करीब ६ वर्ष पहिले ही में अलग हो गये हैं। दूसरे पुत्र ला० बाबूराम का करीब ३ वर्ष पूर्व स्वर्गकाम हो गया है।

बचपन में इस फर्म के मालिक कृष्णचन्द्रजी हैं। आप ही फर्म का संभाल करते हैं। बाबूरामजी के अन्तःपुत्रजी नामक एक पुत्र हैं। तथा ला० कृष्णचन्द्रजी के संतरेराज्य हैं। ला० सन्तोहरामजी तथा अन्तःपुत्रजी भी फर्म का संभाल करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है ।  
 बानपुर—मेसर्स लक्ष्मणदास बाबूराम नई सड़क T. A. Babuniwas यहाँ सब प्रकार के लोहे का व्यापार होता है ।  
 कलकत्ता—लक्ष्मणदास चम्पाराम ४१ राजा कटरा—यहाँ लोहा घातु बाना और फिराने का व्यापार होता है ।  
 बरेली—लक्ष्मणदास बाबूराम टाउनहाल—यहाँ टाटा कम्पनी की एजेन्सी है तथा और दूसरे प्रकार के लोहे का व्यापार होता है ।

### जनरल मर्चेण्ट्स

पं० प्यारेलाल शुक्ल तथासुवाल्ले

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान कन्नौज है । करीब ८ वर्ष से आप लोग यहाँ निवास करते हैं । यह फर्म कन्नौज में सन् १८९१ में स्थापित हुई थी । इसकी स्थापना पंडितजी ने स्वयं की थी । जिस समय फर्म की स्थापना की गई उस समय आपकी साधारण स्थिति थी । आप व्यापारकुशल और मेधावी सज्जन हैं । अतएव आपने अपनी बुद्धिमानी एवं व्यापार कुशलता से फर्म की अच्छी तरफकी थी ।  
 सन् १९२७ में आपने अपने व्यापार की फर्म तथा अपना आकिस भारत के प्रसिद्ध व्यापारिक नगर बानपुर में स्थापित किया । यहाँ ही आपने अच्छी सफलता प्राप्त की । आपने बहुत बड़ी जमींदारी भी खरीदी थी । वर्तमान में आप अच्छे रहस और जमींदार हैं । आपका यह कार्य आपका कारणना इस समय बहुत अच्छी अवस्था में चल रहा है । आपका यह कार्य के प्रायः सभी राहों, करदा एवं देदाओं में तो जाश ही है इसके अलावा आपने अपने सौलोन, अरब, अजिबा आदि विदेशी स्थानों पर भी जाश है । आपने इनके फर्म की रखरखाव की है ।  
 वर्तमान में इस फर्म के मालिक पं० प्यारेलाल शुक्ल हैं ।  
 बानपुर—पं० प्यारेलाल शुक्ल तथासुवाल्ले  
 बनी हुई बनावू का बहुत बड़ा व्यापार है ।  
 इस कारणने की बनावू की है ।



गोपीराम रामचन्द्र  
रमणलाल वनदेवदाम  
परमोत्तमदाम मूरचन्द्र

शहरवाले -

मेमर्से मानाशेन भगवानदाम  
.. गनेशप्रसाद विमेशरपसाद  
.. निहानचन्द्र विशारलाल  
.. रामलाल मदनलाल  
.. बमन्तलाल मुन्नालाल  
.. रमणलाल वनदेवदाम  
.. हरणचन्द्र विहारिलाल

कच्छी

मेमर्से बशीप्रसाद गयाप्रसाद  
.. गंगानारायण गंगप्रसाद  
.. रामचरण टाडुप्रसाद  
.. हाजी जहंगीर भादम्भद इम्माइत

गुड़ केचनेवाले—

मेमर्से गुलजारीलाल दुगोप्रसाद  
.. नारायणदाम विशारीलाल  
.. नारायणदाम कन्दुमल

गुड़ की भादनेवाले—

मेमर्से मनोहरदाम रामप्रसाद  
.. मोकुचन्द नानचर्चद  
.. मोतीलाल छम्बूलाल

दिल्ली (भादने) विचरणी—

मेमर्से विशारीलाल रामकृष्ण  
.. मालीलाल मदनलाल  
.. बंसीलाल बंसीलाल  
.. शंकरलाल शंकरप्रसाद  
.. श्रीराम रामप्रसाद  
.. श्रीराम श्रीरामलाल

मेमर्से वधानाल ऊमर  
.. शंकरलाल भगवानदीन  
.. कन्दुमल मन्थनारायण  
.. भागलाल मुन्नालाल  
.. रामलाल लक्ष्मणलाल  
.. शंकरलाल तुषारीलाल  
.. शंकरलाल लक्ष्मणलाल  
.. परमोत्तम नारायणलाल  
.. रामचरण लक्ष्मणलाल  
.. तुषारीलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल

दिल्ली (भादने) -

मेमर्से लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल  
.. लक्ष्मणलाल लक्ष्मणलाल



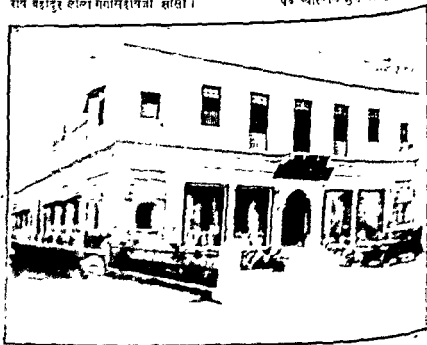
भारतीय व्यापारियों का परिचय  
( तीसरा भाग )



राय बहादुर लाल गंगामहायजी कृष्ण ।



प० प्यारेलाल मुकु बाबू



## झांसी

झांसी का इतिहास पुराना है। इस पर गुरु से ही हिन्दुओं का राज्य रहा है। यहाँ कई बार युद्ध हुए। छत्तीसवीं शताब्दी में यहाँ भारत बौरांगना महापानी लक्ष्मीबाई राज्य करती थी। यहाँ छनकी राजधानी थी। गद्दर के समय महारानी ने जो अपनी अपूर्व बीरता एवम् अद्वितीय प्रतिभा का परिचय दिया यह इतिहास के पाठकों से छिपा नहीं है। महारानी ही के पास से यह स्थान अंग्रेजों के पाम आया और तब से इन्हीं के पास है। महारानी के महल आज भी देखने की वस्तुएँ हैं। यहाँ महारानी का किला जो अपनी मजबूती में प्रसिद्ध है, देखने लायक है।

यहाँ की पैदावार चना, गेहूँ, जौ, मटर, मूंग, उर्द, चावल और दाल है। यही यहाँ से बाहर जाती हैं। इसके अतिरिक्त चौरोंजी का भी यहाँ बहुत बड़ा व्यापार होता है जो टोकम-गड् स्टेट से यहाँ आती है। आस पाम जंगल होने से गोंद एवम् कत्था भी यहाँ आता है।

यहाँ का सोल चिटौजी एवम् किराने के लिये ४२ सेर के मन से, गोंद ४२॥ सेर से, कत्था ४५ सेर से एवम् शोष सब वस्तुएँ ४० सेर मन से माना जाता है।

यहाँ की इंडस्ट्रीज में कार्बोन एवम् आसन हैं। यहाँ के कार्बोन एवम् आसन बहुत सुन्दर मजबूत और टिकाऊ होते हैं।

यह स्थान जी० आई० पी० रेल्वे की देहली बम्बई वाली मेन लाइन पर अपने ही नाम के स्टेशन से २ मील की दूरी पर स्थित है। यहाँ से इसी रेल्वे की एक लाइन कानपुर एवम् दूसरी लाइन मानिकपुर जंक्शन को भी गई है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

### मेमर्स गंगासहाय मुत्सद्दीलाल

इस फर्म के माडिक रायी समाज के आरोड़ा सज्जन हैं। इस फर्म के पूर्व पुरम ला० शील-बन्दजी तथा आरके भाई मकखनलालजी के द्वारा यह फर्म पहले पहल मुरार छावनी में स्थापित हुई। छावनी के टूट जाने से मकखनलालजी यहाँ आये तथा मकखनलाल गंगासहाय के नाम



जयलपुर—मेसर्स विरदीचंद मकरनलाल सदरबाजार T. A. Londonhouse—है० आ० है। यहाँ बैंकिंग और सराफ़ी का काम होता है। तथा मेसर्स वृद्धिचंद प्रतापचंद के नाम से एक बपड़े की दुकान है।

बरुभा सागर ( भांसी )—मेसर्स विरदीचंद मकरनलाल—यहाँ गन्ने का व्यापार होता है।

### मेसर्स भित्तमचंद रामचन्द्र

इस फर्म का देह आफिस यही है। इसके मालिक सेठ मिलापचंदजी वेद थे। मगर दुःख है कि दो महीने पहले ही उनका युवावस्था में ही शरीरान्त हो गया है। आपका विस्तृत परिचय हम इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के चौकानेर में दे चुके हैं। यहाँ यह फर्म जवाहरात, बैंकिंग और जमींदारी का काम करती है।

### मेसर्स मुन्नाचाल एण्ड सन्स

इस फर्म का देह आफिस कानपुर है अब: इसका विशेष परिचय वहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म मोटर वा काम करती है तथा स्थानीय इन्जीनियल बैंक मॉच की ट्रेजरर है। इस फर्म के वर्तमान मालिक राय खादिब लाल गोपीनाथजी तथा आपके भाई हैं।

### मेसर्स मानिकचन्द्र रामलाल

इस फर्म का देह आफिस आगरा है। आप लोग खरहेलवाल वैश्य समाज के वैष्णव सज्जन हैं। आगरा में यह फर्म पुरानी है। यहाँ इसका स्थापन ला० मानिकचन्द्र द्वारा करीब ४० वर्ष पूर्व हुआ। आपके तथा आपके पुत्र रामलालजी के समय में इसकी साधारण इन्ति हुई। आपके परपारु आपके पुत्र गंगाप्रसादजी, मधुरदासजी एवम् पुन्नीलालजी के द्वारा इस फर्म की बरबारी इन्ति हुई और मॉची तथा बरेली में इसकी शाखाएँ स्थापित की गईं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गंगाप्रसादजी के पुत्र भगवतीप्रसादजी, सेठ मधुरदासजी के पुत्र भवानीप्रसादजी एवम् पुन्नीलालजी और पुन्नीलालजी के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप सब लोग व्यापार संपालन कार्य करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मॉची—मेसर्स मानिकचन्द्र रामलाल सदरबाजार—यहाँ बरुभा एवम् जमीन खानदान का काम होता है।

से फर्म स्थापित की। शीलचंदजी के पुत्र रा० बा० गंगासहायजी व्यापारदक्ष पुरुष थे। आपने इस फर्म की बहुत उन्नति की तथा फर्म का नाम बदलकर उपरोक्त नाम से कारबार शुरू किया। आपको भारत सरकार ने प्रसन्न होकर राय बहादुर का खिताब प्रदान किया। आपके भाई भजनलालजी थे। आपका और आपके भाई का स्वर्गवास हो गया। भजनलालजी के पुत्र रोशनलालजी भी होनहार युवक थे मगर युवावस्था ही में उनका भी स्वर्गवास हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक रा० बा० गंगासहायजी के पौत्र ला० मुम्मरीलालजी हैं। आप मिलनघर व्यक्ति हैं। आप कौंसी म्युनिसिपल बोर्ड एवं कैंटोनमेंट बोर्ड के मेंबर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भ्रांती—मेसर्स गंगासहाय सुखदीलाल सदर बाजार—यहाँ बैंकिंग एवं जर्मीनारी का काम होता है। यहाँ आपकी एक बर्फ की फैक्टरी गंगा आईस फैक्टरी के नाम से है।

### मेसर्स द्वारकादास बनारसीलाल

इस फर्म का हेड आफिस बम्बई में है। वहाँ यह फर्म मेसर्स बसंतलाल गोरधराम के नाम से व्यापार करती है। अतएव इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ९८ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गन्ना एवं आदत का व्यापार करती है।

### मेसर्स बिरदीचंद मकखनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ बिरदीचंदजी के पुत्र सेठ मकखनलालजी एवं सेठ हीरालालजी हैं। आप लोग आगरा निवासी खण्डेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ सन् १८९० में सेठ बिरदीचंदजी द्वारा स्थापित हुई और इसको विशेष तरकी भी आप ही के द्वारा प्राप्त हुई। आपने इसकी और भी शाखाएँ स्थापित कीं। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके स्वर्गवासी होने के पश्चात् आपके पुत्र सेठ मकखनलालजी ने रेमसे बिपटर के रूप से एक मिनेमा खोला और इसी प्रकार और भी फर्म की तरकी की।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भ्रांती—मेसर्स बिरदीचंद मकखनलाल सदरबाजार T. A. Londonhouse—यहाँ बैंकिंग, कपड़ा एवं टेनिस का काम होता है।

भ्रांती—मेसर्स बिरदीचंद मकखनलाल हाजीगंज T. A. Sikhhar—यहाँ गन्ना एवं आदत का व्यापार होता है।

जबलपुर—मेसर्स विरदीचंद मन्सूनलाल सदरबाजार T. A. Londonhouse—दो० ब्रा० है। यहाँ बैंकिंग और सराफी का काम होना है। तथा मेसर्स वृद्धिचंद अतापचंद के नाम से एक कपड़े की दुकान है।  
 बरुआ सागर ( झांसी )—मेसर्स विरदीचंद मन्सूनलाल—यहाँ गल्ले का व्यापार होता है।

### मेसर्स भिखमचंद रामचन्द्र

इस फर्म का हेड आफिस यहीं है। इसके मालिक सेठ मिलापचंदजी वेद थे। मगर दुःख है कि दो महीने पहले ही उनका युवावस्था में ही शरीरान्त हो गया है। आपका विस्तृत परिचय हम इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के धीकानेर में दे चुके हैं। यहाँ यह फर्म जवाहराव, बैंकिंग और जमींदारी का काम करती है।

### मेसर्स मुन्नालाल पण्ड सन्स

इस फर्म का हेड आफिस कानपुर है अतः इसका विरोप परिचय यहीं दिया गया है। यहाँ यह फर्म मोटर का काम करती है तथा स्थानीय इम्पोरियल बैंक ऑफ़ की ट्रेजरर है। इस फर्म के वर्तमान मालिक राय साहिब लाला गोपीनाथजी तथा आपके भाई हैं।

### मेसर्स मानिकचन्द रामलाल

इस फर्म का हेड आफिस आगरा है। आप लोग खरहेलबाल बैरय समाज के वैष्णव सज्जन हैं। आगरा में यह फर्म पुरानी है। यहाँ इसका स्थापन ला० माणिकचन्द द्वारा करीब ४० वर्ष पूर्व हुआ। आपके तथा आपके पुत्र रामलालजी के समय में इसकी साधारण उन्नति हुई। आपके परधान् आपके पुत्र गंगाप्रसादजी, मधुरादासजी एवम् चुन्नीलालजी के द्वारा इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई और भौंछी तथा बरेली में इसकी शाखाएँ स्थापित की गईं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गंगाप्रसादजी के पुत्र भगवतीप्रसादजी, सेठ मधुरादासजी के पुत्र भवानिप्रसादजी एवम् मुन्नीलालजी और चुन्नीलालजी के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप सब लोग व्यापार संचालन कार्य करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:-

झाँसी—मेसर्स माणिकचन्द रामलाल सदरबाजार—यहाँ कपड़ा एवम् जमीन ख़ायशद का काम होता है।



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

बरेली—मेसर्स माणिकचन्द रामलाल—यहाँ भी कपड़े का व्यापार होता है। यहाँ आनका राम-श्वर रोलेर एण्ड पलोअर मिल है।

आगरा—मेसर्स माणिकचन्द रामलाल कन्टोनमेंट T. A. Manik—यहाँ कपड़ा, मकानाएँ एवम् किराये का काम होता है।

### गल्ले के व्यापारी—

- मेसर्स गणपतराव विठ्ठलनाथ  
 ,, धीवरमल नारायणदास  
 ,, जगन्नाथ रामसहाय  
 ,, द्वारकादास बनारसीलाल  
 ,, नारायणदास पन्नालाल  
 ,, पन्नालाल हाजी नूरमहम्मद  
 ,, यैजू राम उपासीराम  
 ,, गयाराम गोविन्दराम  
 ,, रामदयाल धमएडी  
 ,, शिवदयाल मन्नीलाल

### कपड़े के व्यापारी—

- मेसर्स जगन्नाथ छोटेजाल बजाजा  
 ,, जगन्नाथ गोपालदास ,,  
 ,, पदमसिंह रामनाथ ,,  
 ,, विरदीचंद मन्छनलाल सदर  
 ,, भगवानदास पनश्यामदास बजाजा  
 ,, माणिकचंद रामलाल सदर  
 ,, मानमल राजमल बजाजा  
 ,, मन्नुलाल मिशोरिया ,,  
 ,, रामदास बन्धीलाल ,,

मेसर्स गनेश सेठ गलीचा बाजे  
 बिराना के व्यापारी—

- मेसर्स रामदयाल मुत्तैया  
 ,, लक्ष्मीराम सुन्दरलाल  
 छोड़ा के व्यापारी—  
 मेसर्स गोपालदास रामचरण बजाजा  
 ,, नारायणदास जगन्नाथ ,,  
 ,, माठूमल रामलाल ,,  
 ,, मन्नुलाल मूलचन्द ,,

### चौड़ी-सोनर के व्यापारी—

- मेसर्स किशुन मनमुस  
 ,, गनपत त्रिधनाथ  
 ,, द्वारकादास बनारसीलाल  
 ,, पुनितराम सीताराम  
 ,, भगवानदास नन्नेलाल

### जवरल मर्चेन्ट—

- मेसर्स अब्दुल गनी एण्ड सन्स  
 ,, स्वादिपभति एण्ड सन्स  
 ,, जानकीप्रसाद एण्ड सन्स  
 ,, पद्मानाथ एण्ड सन्स  
 ,, परमानन्द बाबूलाल  
 ,, धैरानाथ भगवानदास

## इलाहाबाद

इलाहाबाद का पुराना नाम प्रयाग है। इसे आज भी अधिकांश हिन्दू जनता प्रयाग के नाम से पुकारती है। वर्तमान इलाहाबाद का एक और भी पुराना नाम था। इसे प्रतिष्ठानपुर भी कहते थे यह प्रतिष्ठानपुर वर्तमान मूसी नामक गाँव के समीप बसा था। इसके ऊँचे २ टोले आज भी बचा रहे हैं कि किसी समय यहाँ पर बड़ी बड़ी अट्टालिकायें और राजप्रसाद अवस्थित थे। प्रतिष्ठानपुर में चंद्रवंशी राजा राज करते थे। पुरुष्य नामक राजा यहाँ का प्रसिद्ध शासक हो गया है। कलिदास के विक्रमोर्वशीय नाटक का कथानक इसी प्रतिष्ठानपुर से सम्बन्ध रखता है।

प्रयाग और प्रतिष्ठानपुर में अंतर केवल इतना ही है कि प्रतिष्ठानपुर जहाँ गंगा के उस पार बसा था वहाँ प्रयाग इस पार था। प्रयाग का वर्तमान नाम अकबर ने सन् १५८४ में प्रसिद्ध किला बनवाकर इलाहाबाद रखवा।

इलाहाबाद संयुक्त प्रान्त की राजधानी है। यह शहर समुद्र की तल से ३४० फीट ऊँचा है। शहर के नीचेले भूभाग को गंगा की बाढ़ से बचाने के लिये अकबर के समय में एक मजबूत बाँध बाँधा गया था। शहर का दारागंज नामक महल्ला जिसे शाहजहाँ के पुत्र दारा-शिकोह ने बसाया था इसी बाँध पर बसा हुआ है।

गंगा और जमुना के संगम का उल्लेख वेद ऋग्वेद में भी है। हाँ प्रयाग का नाम वेदों में नहीं है पर रामायण और महाभारत के समान ऋषिप्रणीत ग्रंथों में अवश्य ही प्रयाग की खर्चा आयी है। इसी प्रकार बौद्धकालीन युग में भी प्रयाग की महिमा पूर्ववत् जागरूक थी ऐसे प्रमाण मिलते हैं। मसीह सन् से ५ शताब्दी पूर्व गौतमबुद्ध ने यहाँ कितने ही व्याख्यान दिये थे। कितने ही हिन्दुओं को अपने नव स्थापित धर्म में दीक्षित किया था। इसके ३०० वर्ष बाद अरौक ने कितने ही स्तूप और विहार यहाँ बनवाये थे। जिनमें से एक पत्थर का स्तम्भ आज भी किले के भीतर विद्यमान है। ईसा की सातवीं शताब्दी में यह नगर कन्नौज के राजा हर्षवर्द्धन के हाथ में था। १६ वीं शताब्दी में जयचंद को परास्त कर शाहजहाँ ने प्रयाग को अपने हाथ में किया। कुछ दिन बाद इस नगर को मानिकपुर के सूबे में मिला लिया गया।

## भारतीय व्यापारियों का परिषय

१३वीं शताब्दी में यह नगर अलाउद्दीन के हाथ लगा और सन् १५२९ में बाबर ने इसे पठानों से छीन लिया। तब से मुगल शासनकाल में यह स्थान ऐतिहासिक महत्व का रहा पर १७७१ में जब शाहआलम देहली चले गये तो अंग्रेजों ने शाहआलम के राज्य का कुछ अंश लेकर इलाहाबाद के सूबे को अपने कब्जे में किया और इसे ५० लाख रुपये पर नवान अवध के हाथ बँच डाला। १८०१ ई० में नवाब अवध ने गंगा और जमुना के बीच का देश अंग्रेजों को दे दिया। सन् १८३४ ई० में पश्चिमोत्तर-देशीय सरकार इलाहाबाद में स्थापित हुई पर साल भर बाद आगरे चली गयी। सन् १८५७ में सिपाही विद्रोह के बाद पुनः संयुक्त प्रान्त की राजधानी इलाहाबाद हुई।

### दर्शनीय स्थान—

अकबरी क़िला—यह क़िला अकबर ने सन् १५७५ में गंगा और जमुना के संगम पर बनवाया था। वर्तमान समय में इस क़िले में बहुत सा परिवर्तन हो गया है पर बनयोगिता की दृष्टि से इस परिवर्तन से क़िले का महत्व अधिक बढ़ गया है। इस क़िले में जमीन के नीचे पातालपुरी का विख्यात मंदिर है, जो प्रायः चौकोर है और जिसमें जाने का रास्ता ढाढ़ है। इसकी छत खम्भों पर सधी हुई है। मन्दिर के बीच में शिवलिंग है और वहाँ एक ओर अक्षयवट है। इसे प्रयागवाले ११००० वर्ष का प्राचीन बताते हैं। क़िले के भीतर अशोक का प्राचीन स्तम्भ है। वह ३५ फुट लम्बा और ३ फुट मोटा है। इस पर अशोक के ६ आदेश बराबर पंक्तियों में चारों ओर से अंकित हैं। अक्षर सब बराबर साफ और बहुत गहरे हुए हैं। इसकी तीसरी और चौथी पंक्ति जहाँगीर ने अपने पूर्वजों के नाम से लिखकर खराब कर दी है। इन अशोक की इन पंक्तियों के नीचे गुप्त वंशी नरेश समुद्रगुप्त का विख्यात और बड़ा लेख है। इस स्तम्भ पर बीरबल का भी एक लेख है।

सुरारो का बाग—यहाँ का एक प्रसिद्ध स्थान है। उसमें सुरारो, उसकी माता जो महाराज मानसिंहजी की बहन थी, तथा सुरारों की बहन इन सब की कब्रें हैं। यहाँ की इमारतें सारी परन्तु विराल हैं। मुख्य भवन के भीतर फूलों और चिड़ियों के बहुत सुन्दर चित्र हैं।

प्रयाग के सप्त प्राचीन पवित्र स्थान—त्रिवेणी, माघव, सोमेश्वर, भरद्वाजाश्रम, बामुक्ति, अक्षयवट और शेष।

## पेंकर्स एण्ड कंपनी लिमिटेड

मेसर्स गणपुमल कन्हैयालाल

इस फर्म को स्थापना लाला मनोहरलालजी ने जरीब ६० वर्ष पूर्व वरौक नाम में कर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया था। इस व्यापार में सफलता मिलने के पश्चात् इस फर्म पर बैटिंग व्यापार प्रारम्भ किया गया और धीरे-धीरे २ कपड़े का व्यापार बन्द कर बैटिंग व्यापार को वृद्धि दी जाने लगी। बैटिंग के साथ ही इस फर्म में बहुत सी जमींदारी भी खरीदी ली। इस व्यवसाय में इनकी तरकीबें हुईं कि, कुछ ही समय में यह परिवार बहुत बड़ा जमींदार और रईम परिवार माना जाने लगा। लाला मनोहरलालजी के स्वर्गवास के पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके दूसरे पुत्र राधकृष्णदुर रामचरणलालजी ने किया। आप बड़े देशभक्त सज्जन थे। आपका स्वर्गवास सन् १९१७ में हुआ, आपके पश्चात् आपके पुत्र लाला अयोध्याप्रसादजी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट ने तथा इनके भी स्वर्गवासी होने पर इनके पुत्र लाला मनमोहनदासजी ने इस फर्म को संचालित किया। आप ही इनके वर्तमान मालिक हैं। आप ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, स्पूनिशिपल डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सदस्य तथा कई कमनियो के डायरेक्टर्स, ट्रेजर्स और लोचल एडवाइजर हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स गणपुमल कन्हैयालाल रानीमन्दी—यहाँ बैटिंग और जमींदारी का काम होता है।

## राय बहादुर जगमल राजा

आपका भादि निवासस्थान नापौर (कच्छ) है। आप क्षत्री समाज के चौहान सज्जन हैं। आपके पिता और चाचा संयुक्त प्रांत में कन्स्ट्राक्टर का काम करते थे अतः आप भी इसी प्रान्त में काम करने लगे और कन्स्ट्राक्टर के रूप में व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किया। इस कार्य में आपका बहुत बड़ी सफलता मिली। आपने रेलवे के पुलों का कन्स्ट्राक्टर लेना प्रारम्भ किया और परिणाम यह हुआ कि आपने आगरे का 'जमुनाहृज' अलाहाबाद के दो जमुनाहृज, और गंग का ड्रैजेट हृज, बेरी-आन्तोनहृज, कोयल हृज आदि के कठिन ठेके पूरे किये। आप वयोग श्रिय भी हैं। आपने सन् १९११ में अलाहाबाद का जमुनाहृज बनवाने समय एक छोटी सी ग्लास फैक्ट्री खोलने के लिये पट्टे पर ली और कुछ समय बाद उसे खरीद लिया। आपने बहुत उत्तमनों के बाद १५ लाख की पूंजी से उस छोटे से कारखाने को वर्तमान

### मेसर्स गुरुप्रसाद नारायणदास

इस फर्म की स्थापना इसके वर्तमान मालिक लाला नारायणदासजी ने लगभग ४० वर्ष पूर्व यहाँ की थी और तभी से आप गन्ना और तेलहन का काम कर रहे हैं। आप अपने वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपके पूर्वज लाला गोकुलचंदजी दिन्डी पुराने किले से सन् १८४५ ई० में प्रयाग आये थे। तभी से ये लोग यहाँ रहते हैं। लाला नारायणदासजी के पुत्र नारणछोड़दासजी बहुत होनहार नवयुवक हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—  
अलाहाबाद—मेसर्स गुरुप्रसाद नारायणदास मुट्ठीगंज T. A. Ranchore—यहाँ गन्ना और तेलहन की आड़त, बैंकिंग और कंट्राक्ट का काम होता है।

### मेसर्स जीतमल कल्दूमल

आप लोग चूह के आदि निवासी हैं और जाति के मादेश्वरी वैश्य हैं। इस फर्म की स्थापना ८० वर्ष पूर्व सेठ जीतमलजी ने की थी तब से यह फर्म कपड़ा और गल्ले का व्यापार कर रही है। इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू रामेश्वरप्रसादजी तथा आपके पुत्र बाबू राधादत्त, बाबू गोपीकृष्ण, बाबू हरिकृष्ण तथा बाबू रामकृष्णजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

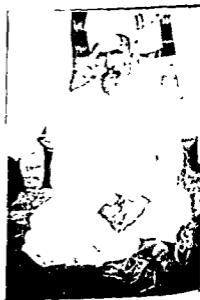
अलाहाबाद—मेसर्स जीतमल कल्दूमल महात्तनी टोला—यहाँ कपड़ा, राकर तथा आभूषण का काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जीतमल कल्दूमल ८।। सुखलाल जवेरीलेन बांसनल्ला स्ट्रीट—यहाँ चलानी का काम होता है। यहाँ आफिस और मकानादि हैं। T. A. Pragaswala

### मेसर्स जीतमल गौरीदत्त

इस फर्म के मालिक चूह के आदि निवासी हैं। आप लोग मादेश्वरी वैश्य समाज के सुखानी सज्जन हैं। चूह से ८० वर्ष पूर्व सेठ जीतमलजी प्रयाग आये और अपनी फर्म खोली। आपके स्वर्गवास के बाद आपके पुत्र सेठ गौरीदत्तजी अपने बड़े भ्राता सेठ कल्दूमल के साथ हो गये और आपना स्वतंत्र व्यापार एनरोल्ड नाम से करने लगे। आपका स्वर्गवास सन् १९०० में हुआ, तब से फर्म का संभालन आपके पुत्र सेठ इन्दुमानप्रसादजी करते हैं। सेठ इन्दुमानप्रसादजी के तीन पुत्र हैं जिनके नाम बाबू चतुर्मुंजजी, बाबू गंगाधरदासजी तथा बाबू मोहनदासजी हैं। फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—





श्री ११११ ( वृत्तान्तमयुक्त रूप )  
१९११



- अलाहाबाद—मेसर्स जीवमल गौरीदत्त चौक—यहाँ कपड़ा और चीनी का काम होता है ।  
 कलकत्ता—मेसर्स जीवमल गौरीदत्त जगमोहन मल्लिकलेन—यहाँ चीनी, चावल, कपड़ा, गल्ला  
 वेसाहन और किराने की आदत का काम होता है । T. A. Banath  
 बम्बई—मेसर्स जीवमल गौरीदत्त—यहाँ गल्ला, सोना, चाँदी, कपड़ा, किराना आदि की आदत  
 का काम होता है ।  
 प्रवाणगढ़—मेसर्स जीवमल गौरीदत्त माधोगंज—चीनी, चावल और किराने की विक्री का  
 काम होता है ।

### मेसर्स पुरुषोत्तमदास सराफ

इस फर्म की स्थापना ४० वर्ष पूर्व लाला पुरुषोत्तमदासजी ने कर चाँदी-सोने का व्यापार  
 आरम्भ किया था जो वह फर्म आज भी कर रही है । आपने व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त  
 की और अपनी फर्म की शरारण्ये बम्बई तथा कलकत्ते में खोली । आपके तीन पुत्र हुए जिनका  
 नाम लाला मुंशीलालजी, लाला सुमेरचंदजी तथा लाला फूलचंदजी हैं । आपने अपने पुत्रों को  
 व्यापार में लगाया । आपके स्वर्गवास २ वर्ष हुए हो गया है । आपके पुत्र सब अलग २  
 अपना व्यापार करते हैं । अतः इस फर्म के वर्तमान मालिक लाला मुंशीलालजी जैन हैं ।

इसका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

- अलाहाबाद—मेसर्स पुरुषोत्तमदास सराफ चौक सराफा—यहाँ फर्म का हेड-ऑफिस है । सोने-  
 चाँदी का व्यापार होता है ।  
 कलकत्ता—मेसर्स पुरुषोत्तमदास सुमेरचंद २२ सोना पट्टी—यहाँ आदत का काम होता है ।  
 यहाँ तार का पता Sitabjaini है ।  
 बम्बई—मेसर्स पुरुषोत्तमदास मुंशीलाल १९४ मोठीबाजार—यहाँ आदत का काम होता है ।  
 तार का पता—Chandani है ।

### मेसर्स पुरुषोत्तमदास सुमेरचंद

इस फर्म के मालिक अलाहाबाद के निवासी हैं । आप अमबाल जैन-समाज के सज्जन हैं ।  
 इस फर्म की स्थापना लाला पुरुषोत्तमदासजी ने की थी । आपके स्वर्गवास के बाद आपके पुत्र  
 लाला सुमेरचंदजी ने करचौक नाम से अपना स्वतंत्र व्यापार आरम्भ किया आप ही इस फर्म  
 के मालिक हैं ।



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स पुरुषोत्तमदास सुमेरचंद जैन ठठेरी बाजार—यहाँ चाँदी-सोना तथा बरिंदी का काम होता है। तार का पता—Sumer है।

कलकत्ता—मेसर्स पुरुषोत्तमदास सुमेरचंद जैन नं० २२ सोनापट्टी—यहाँ आड़त का काम होता है। तार का पता—Sitabjaini है।

यम्बई—मेसर्स पुरुषोत्तमदास मुंशीलाज १९४ मोती बाजार—यहाँ आड़त का काम होता है। तार का पता—Chandani है।

### मेसर्स बाबूलाल बृजमोहनदास

इस फर्म की स्थापना ३० वर्ष पूर्व लाला बृजमोहनदासजी ने की थी। आपने कपड़े का व्यापार आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी अच्छे ढंग से कर रही है। इस फर्म का प्रबन्ध संभालन आप ही करते हैं और आपकी देख रेख में आपके पुत्र बाबू रामारामजी, बाबू जानकी प्रसादजी तथा बाबू राजकुमारजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स बाबूलाल बृजमोहनदास चौक—यहाँ सभी प्रकार के देसी तथा विदेशी कपड़े का व्यापार होता है।

### मेसर्स भगवतीप्रसाद रामस्वरूप

इस फर्म की स्थापना ५ वर्ष पूर्व लाला भगवती प्रसादजी ने की थी। इस फर्म पर कपड़े और तेलहन का काम और आड़त का काम होता है। इस फर्म के प्रबन्ध संभालक लाला भगवती प्रसादजी और लाला महादेव प्रसादजी हैं। आप लोग वैश्य समाज के सम्मानित हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अलाहाबाद—मेसर्स भगवतीप्रसाद रामस्वरूप मुट्ठीगंज—यहाँ गन्ना तथा तेलहन का काम और आड़त का काम होता है।

### मेसर्स माधुरीदास नारायणदास

इस फर्म की स्थापना २० वर्ष पूर्व लाला नारायणदासजी ने की थी। तब से यह फर्म तेल, गुड़, धाँ तथा चाँदी का आड़त का काम कर रही है। इस फर्म के मालिक लाला पुरुषोत्तमदासजी और लाला शिवप्रसादजी हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।





स्व० पं० सङ्करलालजी भार्गव (राधाकृष्ण वेणीप्रसाद  
साङ्करलाल ) इलाहाबाद



स्व० पं० रामदासजी भार्गव (राधाकृष्ण वेणीप्रसाद  
साङ्करलाल ) इलाहाबाद



स्व० पं० बालकृष्णदासजी भार्गव (राधाकृष्ण वेणीप्रसाद



पं० कन्हैयालालजी भार्गव (राधाकृष्ण वेणीप्रसाद

अलाहाबाद—मेसर्स माधुरीदास नारायणदास मीरगंज—यहाँ भीनी का काम प्रधान रूप से होता है ।

### मेसर्स राधाकृष्ण घेनीमसाद

इस फर्म की स्थापना लाला शंकरलालजी ने सर्व प्रथम छपरोक नाम से बनारस में की थी । उस समय आपने बड़े साइस से अपना व्यापार चलाया था । रेल के न होने से आप अपना माल अपनी नावों में लदा कर सीपा कलकत्ते भेजते थे । आप अपने समय के प्रतिभाशाली नागरिक एवं प्रतिष्ठित व्यापारी थे । आपने अपनी फर्म अलाहाबाद में खोली जहाँ आज भी आपका परिवार प्रतिष्ठापूर्वक निवास करता है । आप लोग राहगाढ़पुर ( टांडा ) के आदि निवासी गौड़ ब्राह्मण समाज के भागवत सज्जन हैं । इसका अधिक परिचय इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग के कलकत्ता विभाग में पृष्ठ ४१५ में देखिये । इसके वर्तमान मासिक लाला शंकरलालजी के पौत्र लाला कालिका प्रसादजी के पुत्र लाला कन्हैयालालजी और लाला मनोहरलालजी हैं ।

### मेसर्स लक्ष्मीनारायण बन्धूलाल

इस फर्म के आदि संस्थापक लाला बन्धूलालजी का आदि निवास स्थान यहाँ का है पर छपरोक नाम से आप गोंडा और तुलसीपुर ( गोंडा ) में अपनी फर्म खोल कर बहुत असें से गल्ले का व्यापार करते थे । आपने लगभग ८ वर्ष पूर्व छपरोक नाम से यहाँ भी फर्म खोली । तब से यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार और आड़ू का काम कर रही है । इसके मासिक आप ही हैं । इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

इलाहाबाद—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बन्धूलाल मुट्टीगंज—यहाँ गल्ला, तेलहन तथा भीनी की आड़ू का काम होता है ।

गोंडा—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बन्धूलाल—यहाँ गल्ले और तेलहन की आड़ू का काम होता है ।  
तुलसीपुर ( गोंडा )—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बन्धूलाल—यहाँ गल्ले तथा तेलहन की आड़ू का काम होता है ।

### मेसर्स शिवदत्त अयोध्यामसाद ( लोहिया पॉट्टे )

इस फर्म के संस्थापक पं० शिवदत्तजी ने ९० वर्ष पूर्व अपने आदि निवासस्थान मिर्जापुर में अपनी फर्म खोल कर लोहे का व्यापार आरम्भ किया था । कुछ वर्ष बाद आपने इलाहाबाद में छपरोक नाम से व्यापार आरम्भ किया और यहाँ रहने भी लगे । आपको व्यापार में अरुन्धी

मिली। फलतः धातु धाने के अतिरिक्त लाख, गस्ता और नमक का व्यापार भी क्रमशः खोज गया और समय पाकर फर्म ने कपड़े का व्यापार भी आरम्भ कर दिया है। अतः यह सर्व उपरोक्त व्यापार को ही अपना प्रधान व्यापार मानती है।

इस फर्म के आदि संस्थापकों में से बा० जमनादासजी का स्वर्गवास हो गया है अतः फर्म के वर्तमान मालिक बा० पन्नालालजी तथा स्व० बा० जमनादासजी के पुत्र बा० छोटेदास जी, बा० लक्ष्मीचंदजी, और बा० हीरालालजी तथा बा० पन्नालालजी के पुत्र बा० कूरचंदजी हैं। आप लोग वैश्य समाज के जैन धर्मावलम्बी महानुभाव हैं। तथा एक अर्थ से मिर्जापुर में ही यह परिवार निवास करता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मिर्जापुर—मेसर्स जमनादास पन्नालाल T. A. Gunmetal—यहाँ धातु धाना, लाख और कपड़े का प्रधान काम होता है।

मिर्जापुर—मेसर्स जमनादास फूलचंद—यहाँ गस्ता, कपड़ा तथा नमक का प्रधानतया काम होता है।

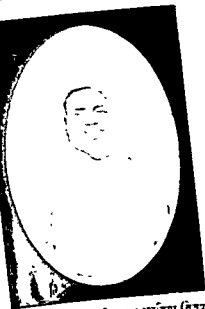
### मेसर्स तेजपाल जमनादास

इस फर्म का हेड ऑफिस यहीं मिर्जापुर में है। इसके वर्तमान मालिक सेठ राजेन्द्र दासजी हैं। यहाँ की प्रसिद्ध फर्मों में से यह एक है। इसकी और भी स्थानों पर शाखाएँ हैं। यहाँ यह फर्म कपड़े का व्यापार और बैंकिंग तथा जमींदारी का काम करती है। इसकी बड़ी बट्टन बड़ी जमींदारी है। इसका विल्टन परिव्य इसी ग्राम के द्वितीय भाग में क्षेत्र नं० ३१६ में दिया गया है।

### मेसर्स प्रयागदास पुरुषोत्तमदास

इस फर्म का हेड ऑफिस यहीं है पर इसके मालिकों का मूल निवासस्थान बाँकनेर है अतः इसका विशेष परिचय हमारे इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के राजपूताना विभाग में पृष्ठ १२१ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म खाना चोरी तथा लोहे को छोड़ कर सभी प्रकार की सामानों का व्यापार करती है।

मेरे व्यापारियों का परिचय-  
(तीसरा भाग)



सेठ रामेश्वरदासजी बजाज भरलिया (निजदान  
जमनादास) मिर्जापुर



बाबू रामेश मिहजी जायसवाल (महादेव प्रसाद  
बाणी प्रसाद) मिर्जापुर



बाबू केदारनाथजी जायसवाल (गरीबराम छेरीवाल)  
मिर्जापुर



बाबू सोनारामजी (राधवल भोजनाथ)  
बनारस



### मेसर्स वायुनाल भागीरथीराम

इस फर्म का हेड आफिस कलकत्ता है। इसके वर्तमान मालिक रायबहादुर भागीरथी-रामजी एवं गरोबदासजी हैं। आपका निवासस्थान यहीं का है। इस फर्मका विस्तृत परिषय इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म चपड़े की खरीदी का काम करती है। इस फर्म की ओर से यहाँ एक वायुनाल हायस्कूल चल रहा है।

### मेसर्स बन्देबदास सन्स एण्ड कम्पनी

इस फर्म के आदि संस्थापक बाबू हजारीलालजी सेठ ने सन् १८८५ ई० के लगभग मेसर्स हजारीलाल बन्देबदास के नाम से अपनी फर्म स्थापित कर व्यापार का सूत्रपात किया था। आरम्भ में यह फर्म नावों के कन्ट्राक्ट का काम करती थी पर जैसे २ फर्म को सफलता मिलती गयी वैसे २ फर्म ने पत्थर का व्यापार भी आरम्भ कर उन्नति की ओर अग्रसर किया। फर्म की विशेष उन्नति बाबू बन्देबदासजी सेठ के हाथों हुई। आपने फर्म के पत्थर के व्यापार को अधिक उन्नति दी। वृद्धावस्था के कारण कार्यक्षेत्र से आप वर्तमान समय में अलग हैं। अतः आपके ज्येष्ठ पुत्र बाबू केदारनाथजी सेठ के हाथों में फर्म के व्यवसाय संचालन का भार आया। आपने फर्म के व्यापार को बहुत उत्तेजन दिया।

इस फर्म के वर्तमान प्रधान संचालक बाबू केदारनाथजी सेठ हैं। आप लोग स्वर्गी समाज के सेठ साजन हैं। आप लोग बहुत पुराने समय से मिर्जापुर में रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

मिर्जापुर—मेसर्स बन्देबदास सन्स एण्ड कम्पनी गार्डपाट—यहाँ पत्थर तथा कन्ट्राक्ट का काम होता है।  
कलकत्ता—मेसर्स बन्देबदास सन्स एण्ड कम्पनी १ गौरदास पैलास स्ट्रीट—यहाँ पत्थर और बँकिंग तथा कन्ट्राक्ट का काम होता है।

पथीर (दुमका)—मेसर्स बन्देबदास सन्स एण्ड कम्पनी—यहाँ पत्थर का काम होता है। बिष्णुबल, गैरुच, बिरोही, मिर्जापुर, भिगुच, टागमगपुर में इस फर्म की पत्थर की खानें हैं।

### मेसर्स मूलचंद नारायणदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ नारायणदासजी, केदारनाथजी और कैलासनाथजी दरदेल-बान हैं। इस फर्म का हेड-आफिस कलकत्ता है। इसका विशेष हाज दूसरे भाग के पेज नं० ३२९ में दिया है। यहाँ यह फर्म बँकिंग और चपड़े का व्यापार करती है।

### मेसर्स महादेवनामाद कारीनमाद

इस फर्म की स्थापना बाबू महादेव प्रसादजी जैमनाथ ने सन् १८९२ ई० में मिर्जापुर में की थी। आपने अपनी फर्म में चपड़े का व्यापार आरम्भ किया और अपने उद्योग से फर्म के



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

व्यापार को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया। फलतः यह फर्म बंगाल, विशार, मैन तथा मध्य भारत में लाख खरीदकर अपने नहरपाट वाले चपड़े के कारखाने में चपड़ा तैयार कराती है। यह फैक्ट्री ५० हजार की लागत से तैयार करायी गयी है। इसी प्रकार एक दूसरी फैक्ट्री म्हास्दा में है। इस प्रकार अन्य स्थानों से लाख खरीद कर आती है और फर्म अपने अपने कारखानों में इसी लाख का चपड़ा तैयार कराती है और दूर विदेशों को भेजती है। फर्म के देश लन्दन, न्यूयार्क और पेरिस में हैं जहाँ फर्म द्वारा भेजे गये माल की बिक्री आदि का प्रबन्ध है।

इसके अतिरिक्त फर्म जंगल की दूसरी उपज की बिक्री का काम भी करती है और साथ ही मिर्जापुरी कालीनतथारंग का व्यापार भी यह फर्म करती है। नकली ज्वैलरी के काम में आनेवाले Corundum stone को खानों से खोद कर विदेश में बँचने का काम भी यह फर्म करती है।

इस फर्म ने चपड़े के काम में अच्छी ख्याति प्राप्त की है फलतः सन् १९०५ ई० में बनारस की गुमायश में सोने का मेडल तथा सन् १९१० ई० में इलाहाबाद की गुमायश में सर्वोच्च और चाँदी का पद्म मित्रा है। बटन स्टैम्पड शेलक तथा टकलैक (बाजू) नामक चपड़े के प्रकार को जन्म देनेवाली यही फर्म है। इसके कितने ही रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क हैं (Lion), (M), B. N. Button Lac. M. P. T Tongue Lac. इनमें से M. P. I; M. D. और M. P. V. आदि चपड़े के ऊँचे गेड हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू रमेशसिंह जैसवाल तथा बाबू केसरीसिंहजी जैसवाल हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मिर्जापुर—मेसर्स मशहूदेवमदाद कारीप्रसाद T. A. Kot'—यहाँ चपड़ा, लाख, इंडियन प्रोड्यूस तथा कोरंडम स्टोन का काम होता है।

### मेसर्स लक्ष्मीनारायण हनुमानदास

इस फर्म की स्थापना फतेपुर निवामी बाबू लक्ष्मीनारायणजी तथा बूबू निरामी बाबू हनुमानदासजी ने लगभग २० वर्ष पूर्व मिर्जापुर में की थी। आप दोनों ही महात्मियों ने सन्मिलित रूप से इस फर्म को खोला और कमीशन का काम आरम्भ किया, जो वर्तमान आज भी वही प्रकार से करनी आ रही है।

इस फर्म पर लाख, चपड़ा, बटन तथा घातु बाने के कमीशन का काम तो होता ही है पर इसके अतिरिक्त यह फर्म अन्य सभी प्रकार के मान की खरीद तथा बिक्री का काम कर्मन्ट एजेंट के रूप में करती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू लक्ष्मीनारायणजी तथा फर्म के दूसरे भागीदार बाबू हनुमानदासजी हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मिर्जापुर—मेसर्स लक्ष्मीनारायण हनुमानदास मुन्देरमन्दी—यहाँ सभी प्रकार के मान की आड़न का काम होता है।

## बनारस

### ऐतिहासिक परिचय

इस प्रसिद्ध शहर और तीर्थ स्थान का इतिहास बहुत पुराना है। आज से पचीस शताब्दी पहले मारनाथ में महात्मा बुद्धदेव ने धर्मोपदेश देकर बौद्ध मत का प्रचार किया और कितने ही शिष्य बनाये। इसी समय जगद्गुरु शंकराचार्य भी भारत में भ्रमण करते हुए काशी में आये और भिन्न भिन्न मतवालों से शाखायं कर उन्हें परास्त किया तथा अपने धर्मोपदेशों से लोगों को अपने धर्म में दीक्षित किया।

सन् १०१८ में महमूद गजनवी ने काशी के राजा बनार पर चढ़ाई की लड़ाई में वे हार गये, बनका किला तोड़ डाला गया, बचे हुए लोग इधर उधर भाग गये। इस लड़ाई में मरे हुए मुसलमान राजपाट के पास गंज राहीद नाम की मसजिद के पास गाड़े गये और वहीं के स्मारक में यह मसजिद बनाई गई।

इसके उपरांत बनारस कन्नौज के राठीर वंशीय राजा गोविन्दचन्द, राजा विजयचन्द और राजा जयचन्द के अधिभार में रहा। सन् ११९४ में कन्नौज के राजा और कुतुबुद्दीन ऐबक में इटावे के पास पोर युद्ध हुआ। इसी युद्ध में बनारस उनके हाथ से निचल गया और बाद में गहरवार जाति के लोग इसके शासक हुए। कुतुबुद्दीन मुहम्मद गौरी का सेनापति था, मुहम्मद गौरी बनारस की विजय सुन कर स्वयं आया और हजारों हिन्दू मन्दिर तथा शहर के अच्छे भागों को तोड़ वाड़ कर बजाड़ कर डाला और अपनी तरफ से एक अधिकारी को यहाँ रख सैकड़ों ऊँटों पर धन आदि लदवा कर वह अपने देश को चला गया। सन् १३९४ में सिकन्दर लोदी भी सुनार से यहाँ आया, वह भी वषा खुचा धन ले चलता हुआ। इस प्रकार सोलहवीं शताब्दी तक काशी में खूब उलट फेर रहा।

मुगल सम्राट अकबर सन् १५६५ ई० में यहाँ आये। आप के समय इस नगर में बहुत कुछ धार्मिक उन्नति हुई और कितने ही नए मन्दिर और घाट बने। मगर समय ने फिर पत्तदा स्थाया। सन् १६६९ ई० में औरंगजेब काशी में आया और निज स्वभाव के अनुगार समने कितने ही मन्दिरों को तुड़वा दिया और समके सामान में समने मसजिदें बनवाई। इसका बड़ाहरण चौधम्मा

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

मसजिद, बकरिया कुण्ड की मसजिद, लाट भैरव की मसजिद, डाई कँगूरा मसजिद, आलमगरी मसजिद आदि कितनी ही हैं, जिनमें मन्दिरों के स्तम्भ, गुम्बज और पत्थर लगे हुए हैं। डाई कँगूरे वाली मसजिद की छत में एक पत्थर के टुकड़े पर संस्कृत भाषा में एक त्रिपि सुदी हुई है जिसमें सम्वत् १२४८ में वाराणसी नगरी तथा इसके चारों ओर मन्दिर पुष्करिणी मठ आदि के बनाने का उल्लेख है। इसी प्रकार ज्ञानवाणी के पाम विश्वनाथजी का प्रसिद्ध मन्दिर तोड़ कर उसी स्थान पर मसजिद बनाई है और मदा के लिये हिन्दुओं का चित्त दुखाने के लिये मन्दिर का एक भाग मसजिद के पिछले हिस्से में उठा का ल्या रहने दिया है। यहीं तक नहीं पंचगंगा घाट पर बेनीमाधव का मन्दिर तोड़ कर उसके सामान से मसजिद तैयार हुई है जिसमें दो ऊँची मीनारें हैं और वह माधवराव के घराहरा के नाम से प्रसिद्ध है। इनमें कोई सन्देह नहीं कि मुसलमानी राजत्व काज में सब से अधिक औरंगजेब के जमाने में कारों के धार्मिक जीवन को धक्का पहुँचा। बाद में यह सूबा नवाब अवध के आधीन में आया।

सन् १७३० ई० में सआदत खाँ अवध के नवाब हुए उन्होंने मुस्तजा खाँ नाम के एक उमराव से सात लाख सालाना मालगुजारी पर बनारस, गाजीपुर, जौनपुर और चुनार के चारों परगने लेकर अपनी तरफ से आठ लाख रुपया मालगुजारी पर अपने मित्र मीर हसन अली को देकर उन्हें फौजदार बनाया, तब से रुस्म अली सब प्रबंध करने लगे, माल दौबानी और फौजदारी सभी इनके अधिकार में थी। उसके पश्चात् यह शहर जितिरा शासन के अधिकार में आ गया।

## दर्रातीय स्थान

कोन्स कालेज—जगतगंज की सड़क पर सन् १७९२ में कालेज थी यह देखने योग्य इमारत बननी है। चुनार के पत्थर से इसका बाहरी भाग और ऊपर का टावर तैयार हुआ है। कालेज का जो हिस्सा जिसके खर्च से बना है वहाँ दाता का नाम पत्थर के उभड़े हुए हिन्दी और अंग्रेजी अक्षरों में खुदा है अन्य लोगों के दान के अतिरिक्त सरकार का (१९०३५०) ४० व्यय हुआ है। पूर्व में कालेज लाइब्रेरी और पश्चिम तरफ में ग्यूसियम है जिसमें मेजर रिटो द्वारा लाई गई सारनाथ की चीजें हैं। पत्थर का सुन्दर फौवारा, झोख, धूप पड़ी और ३२ फुट ऊँचा एक स्तम्भ देखने योग्य है। यह स्तम्भ सन् १८५० ई० में गाजीपुर से लाकर यहाँ खड़ा किया गया है, पिलर पर खुदे हुए अक्षरों से यह चौथी सदी का मातृम होता है। इसमें संस्कृत कालेज विभाग भी खोला गया है।

मान मन्दिर—सवाई जयसिंह जिन्होंने १७२८ ई० में जयपुर को बसाया था उन्हीं जयसिंह के बनवाये मान मन्दिर में ज्योतिष विद्या के ग्रंथ देखने योग्य हैं। वहाँ जाने पर सबने

पहिले 'धाम्योत्तर भित्ति' यंत्र मिलता है। महाराज जयसिंह ने इस यंत्र द्वारा सूर्य की सब से बड़ी क्रांति २३ अंश और २८ कला निकाली थी। पास ही में यंत्रसम्राट, नाड़ीयंत्र, धूप पट्टी, चक्रयंत्र, दिग्शर्यंत्र आदि ज्योतिष विद्या के चमत्कार दिखलाते हैं। चार वर्ष के लगभग हुए इनकी फिर से मरम्मत कर दी गई है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि फारसी में यह स्थान देखने योग्य है।

भाषवराय का धरहरा—घाट के ऊपर औरंगजेब की बनवाई हुई १४२ फुट ऊँची एक बड़ी मसजिद है, जो वहाँ के बेनीमाधब के मन्दिर की सामग्री से बनी है। मीनार पर चढ़कर देखने से बनारस की बहार दिखाई पड़ती है। ऊपर धरहरे पर जाने के लिये चक्करदार मोड़ियाँ हैं। दो पैसा की आदमी लेकर वहाँ का मुसलमान लोगों को ऊपर चढ़ने देता है। मीनार का नाम भाषवराय का धरहरा पड़ा है।

### हिन्दुविश्वविद्यालय—

अद्वैत पं० मदनमोहन मालवीयजी की यह अमर कीर्ति है। इस विश्वविद्यालय की नींव सन् १९१६ के फरवरी मास में श्रीमान् लार्ड हार्डिन्ग ने दी थी। जिस स्थान पर नींव का शिलान्यास हुआ वहाँ पर वर्षों काल में गंगाजी बह कर आ गईं। इस कारण कुछ दूर हट कर विश्वविद्यालय के कालेज और होस्टेल बनाये गये हैं। नींव देने के समय भारत के कितने ही राजे, महाराजे, विद्वान् और सम्भ्रांत पुरुष सम्मिलित हुए थे उस समय का समारोह दर्शनीय था। फारसी नरेश की दी हुई जमीन के अतिरिक्त कई लाख रुपये की और भी जमीन ली गई है जिससे विश्वविद्यालय का विस्तार बहुत अधिक बढ़ गया है।

अद्वैत मालवीयजी ने एजे २ कर बड़े २ विद्वानों और विशेषज्ञों को यहाँ एकत्रित किया है। इस विद्यालय में इंजीनियरिंग कालेज, आर्टस् कालेज, साइंस की लेबोरेटरियों के भवन, छात्रावास, व्यायाम शाला, पुस्तकालय, अस्पताल, डाक और तार, शिद्यकों के रहने के स्थान आदि बन कर तैयार हो गये हैं। इस विद्यालय में व्याख्यान बराबर हुआ करते हैं। विश्व-विद्यालय देखने के लिए नित्य प्रति लोग आया करते हैं। इस विश्वविद्यालय का उद्घाटन श्रीमान् प्रिंस आफ वेल्स ने किया था उस समय का दृश्य देखने योग्य था।

अजमतगढ़ पैलेस—श्रीमान् राजा मोतीचंद साहय सी० आई० ई० ने इसे सन् १९०४ में बनवाया था। यह सुन्दर और दर्शनीय कोठी, इसकी चित्ताकर्षक सजावट और मोतीमौल की बहार देखने योग्य है। वर्षों श्रतु में यह स्थान बड़ा रमणीक मालूम होता है। मील के उस पार हनुमानजी का दर्शन होता है। बाहरी तरफ के शौकान प्रायः नित्य ही मील पर आया करते हैं।



इस कर्म के प्रधान मातृक बाबू किशोरीरामप्रसाद तथा आपके चाचा बाबू किरान-  
रामपुत्री के पुत्र बाबू राधायामप्रसादजी हैं। जो नायालिक होने के कारण शिक्षा प्राप्त  
करते हैं। इसका व्यापारिक परिवार इस प्रकार है।

जनम—नेसर्स कानेरवरप्रसाद गमानप्रसाद छोटी कचौड़ी गली—यहाँ हेइ आफिस है और  
बैंकर्स तथा लैण्ड लाईस का बहुत बड़ा काम होता है।

गया—नेसर्स कानेरवर प्रसाद गया प्रसाद छोटी गायत्री घाट—यहाँ बैंकर्स तथा लैण्डलाईस का  
काम होता है।

### रायबहादुर बाबू बटुकमसाद खत्री

इस परिवार के लोग खत्री समाज के सज्जन हैं। आपके मूल निवासस्थान लाहौर  
(पंजाब) का है। आपके पूर्वज पंजाब केराठी राजपूतसिंह के यहाँ पर युद्ध मंत्री के सम्माननीय  
पद पर रहे थे। मगर आप एक दीर्घकाल में यहाँ पर बस गये हैं। सर्वप्रथम इस परिवार के  
पूर्वपुरुष बाबू रामानन्दजी यहाँ पर आये, और इस नगरी की स्वर्गोपम महिमा को देख कर  
यहाँ पर बस गये। यहाँ पर आपके दो पुत्र हुए, जिनके नाम क्रम से बा० गोकुलचन्द्रजी और  
बा० मयुरप्रसादजी थे। बा० गोकुलचन्द्रजी बाल्यकाल ही से बड़े इशामयुद्धि थे। आपने  
केवल १४ वर्ष की आयु में ही विद्याध्ययन समाप्त कर व्यापार आरम्भ किया। जिसमें आपको  
अच्छी सफलता और सम्पत्ति प्राप्त हुई। आपने अपना धन जमींदारी खरीदने में लगाया।  
फिरतः आप बहुत बड़े जमींदार हो गये। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम बा० शंकरसहायजी  
और बा० बटुकप्रसादजी थे। आपने अपने पुत्रों को अच्छी शिक्षा दे शिक्षित बना दिया  
तथा विक्रम भी कर दिये। बा० शंकरसहायजी के दो पुत्र हुए। छोड़े समय पञ्चान् आपके  
बड़े पुत्र बा० शंकरसहायजी का देहान्त हो गया जिसमें आपके हृदय को बहुत धक्का लगा  
और आप सांसारिक कार्यों से दृष्टाधीन हो गये। आपने कारों के प्रतिष्ठ मनिफैक्चर पाठ  
का डिप्लोमा करवाया तथा इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक और पारिजिक कार्यों में  
सहायता दी। आपके स्वर्गवास के पञ्चान् सनन्त कारणों का भार रायबहादुर बटुकप्रसादजी के  
हाथों में आया। आपका जीवन बड़ा बहादुर और सार्वजनिक रहा। आपने कई लोकोपकारी  
और सार्वजनिक कार्यों में सुन्दरत हो सहायताएँ पहुँचाईं। सन् १९२५ में आपने एक लाख  
रुपया दान दे कर कलाकौशलसम्बन्धी विद्यालय स्थापित किया जिसमें सभी प्रकार की  
कलाकौशल सम्बन्धी शिक्षा दी जाती है। इसका सब प्रबन्ध भार आपने प्रांतीय सरकार को  
दे दिया है। इसके सिवा आपने सांख्यिक खर्चों विद्यालय को १५००० का महान् सुन्द में



माफ हुई। मन्तव्य यह कि राजा साहब कारी के कितने ही सार्वजनिक कामों में बराबर योग देते और उनकी सहायता करते हैं।

### राजा मुंशी माधोलाल साहब सी० एस० आई० कारी

आपके पूर्व पुरुष 18 वीं शताब्दी में अहमदाबाद से दिल्ली को चले आये और वहाँ से लखनऊ में अवध के नवाबों के यहाँ काम करने लगे। सब से प्रथम मुन्शी भवानीलालजी बनारस में आये। आपके कुटुम्ब के बुद्ध लोग सरकारी नौकरी करने लगे। बुद्ध लेन देन के व्यवहार से अच्छी सफलता प्राप्त हुई। मुन्शी लक्ष्मीलाल बनारस में सरकारी वकील थे, अपने समय में इन्होंने जायदाद और इलाके खरीद किये। आपके भाई मुन्शी गिरधरलाल के पुत्र मुन्शी बेनी-लालजी हुए जो कि बनारस और बलिया में मुन्सिफ थे। आपकी के पुत्र मुन्शी माधोलालजी और मुन्शी साधोलालजी हुए। मुन्शी साधोलालजी कौड़ी का काम देखने लगे और मुन्शी माधोलालजी सरकारी काम करने लगे। समय पाकर आप सब-जज हुए, आपके भाई मुन्शी साधोलालजी का बिना सन्तान के शरीरान्त हो गया तब राजा साहब को जर्मीदारी का सब भार भी लेना पड़ा। सन् 1900 में आप प्रान्तीय कौंसिल के सदस्य हुए और सन् 1906 में बड़े लाट की व्यवस्थापक सभा के सदस्य चुने गये।

आपके कुटुम्ब के लोग बीखम्मा की कौटो में रहते हैं। आपका एक बाग चेतगंज और दूसरा बाग राहर से चार मील बाहर मूलनपुर में है जिसे अब बात्तापुर भी कहते हैं। आप का यह स्थान बड़ा रमणीक है।

राजा साहब ने 25,000) 50 से सरखती भवन लाइमेरी बनवाई, अपने भाई मुन्शी साधोलाल के स्मारक में 80,000) से संरक्षित की तब शिवा में वर्तमान होने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति देने का प्रबंध किया। किंग एडवर्ड अस्पताल की सहायता की। 4000) लखनऊ में फव्वारे के लिये दिया।

आप बनारस हुए, नैनीताल हुए, ओरियण्टल हुए, कलकत्ता हुए और लखनऊ के उत्तर मंत्रालय हुए के मेंबर थे।

आपको जनवरी सन् 1909 में सी० एस० आई० का और जून सन् 1910 में राजा का सम्मानित टाइटिल मिला। आपका स्वर्गवास 28 वर्ष की अवस्था में हुआ। आप अपने बात्ता-पुर वाले बाग में ही रहने थे। कई वर्ष पूर्व से ही आपने अपने स्टेट का सब प्रबन्धभार अपने बड़े नाती राय बहादुर कुँवर नन्दलालजी को दे दिया था। इस समय कुँवर साहब ही वसुधाधिकारी



इस फर्म का जहाँ व्यवसाय बहुत विस्तृत है वहाँ स्थायी सम्पत्ति भी इसकी विस्तृत है। इसकी जमींदारी बनारस, जौनपुर, भागलपुर तथा पुरनिया जिलों में है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स मनीराम हरजीवनराम गायवाट, बंगाली बाड़ा—यहाँ सभी प्रकार के ऊँचे एवं के पैन्मी बनारसी माल, सोना, चाँदी अदित जेवरात तथा जाहिरात का काम होता है। इसके अनिच्छित लैण्ड लाईम और बैंकर्स का व्यवसाय भी होता है।

### मेसर्स मोतीचन्द फूलचन्द

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मोतीचन्दजी हैं। आपही के द्वारा करीब ३० वर्ष पूर्व इसकी स्थापना हुई। इसकी वस्तुति का श्रेय भी आप ही को है। दानधर्म आदि के कार्यों की ओर भी आपका अथवा ध्यान रहा है। आपके ६ पुत्र हैं, जिनके नाम कमरा, बाबू कुंजीनान, श्री, बा० केमरीचंदजी, बा० फूलचंदजी, बा० सूरजप्रसादजी, बा० बनारसीशामजी एवं बा० निरालचंदजी हैं। आप लोग दिगम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। बा० सूरजप्रसादजी वहाँ की फर्म मेसर्स शाङ्गमेन चन्द्रराज के यहाँ दत्तक गये हैं।

इस फर्म का व्यापार अपने वंग का निराला व्यापार है। इस फर्म पर चाँदी सोने की बचारी निहानी हुई मोटरों, गाड़ियों, सिंहासन, छत्र, खेंवर आदि कितनी ही प्रकार की पैन्मी वस्तुओं का व्यापार होता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

बनारस—मेसर्स मोतीचंद फूलचंद मोतीचंदरा T. A. Singhahi—इस फर्म पर चाँदी सोने के रख, मोटर, गाड़ियों, सिंहासन, ऐगवत हाथी, बैरी आदि बेरा-कीमती सामान वैश्यार होता है तथा बिक्री ठिया जाता है। इसके अनिच्छित जमीनान पर भी वह फर्म काम करता देती है।

बनारस—मेसर्स मोतीचंद कुंजीनान, मिन्कहाउस मोतीचंदरा—यहाँ बनारसी माल, चाँदी, लहंगे आदि पर मनमाना-बितारे का काम और जरी की वस्तुओं का व्यापार होता है। इसके अनिच्छित काशी-मिन्क का व्यापार भी यह फर्म करता है।

बनारस—मेसर्स मोतीचन्द फूलचन्द, -१,१- हरिमन रोड—यहाँ बनारस के बने हुए बारी प्रकार के जरी के वेरा-कीमती वस्तु एवं चाँदी सोने की बनी हुई बरगो-उ वस्तुओं का व्यापार होता है। यहाँ वह फर्म कर्म-जन का भी काम करती है।



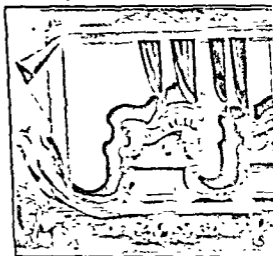
सरदार मोतीलाल बख्त (मोतीलाल बख्त) बनारस



सरदार वल्लभभाई पटेल (मोतीलाल बख्त) बनारस



मोतीलाल बख्त (सरदार मोतीलाल) बनारस



सरदार वल्लभभाई पटेल (मोतीलाल बख्त) बनारस



### मेसर्स राधाकृष्ण शिवदत्तराय

इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व सेठ राधाकृष्णजी द्विवेदीजी ने बनारस में की थी। इस फर्म पर आरम्भ में बनारसी मातृ या स्वरसाय होता था जो आज भी उसी प्रकार से होता है। स्वोन्मो फर्म ने जमिनी की स्वोन्मो गस्ता, सन (Hemp), अलसी, चीनी, चाँदी-सोना, मोटा-पट्टा तथा कारी मिल्क आदि के काम खोले गये जो आज भी पूर्ववत् ही रहे हैं। इस फर्म ने लगभग १९ वर्ष पूर्व बनारस के समीप शिवपुर में 'पार्वती हेम्प वेस्टिंग प्रेस' नामक एक मिल खोला जो आज अच्छी अवस्था में काम कर रहा है।

सेठ राधाकृष्णजी का स्वर्गवास हुए लगभग ३९ वर्ष हुए। उनके बाद आपके पुत्र सेठ शिवदत्तरायजी ने स्थापना की संभाला था। आपके समय में फर्म ने अच्छी जमिनी की। आपका स्वर्गवास सन् १९८३ में हुआ। वर्तमान में फर्म का व्यवसाय संघातन भारत के पुत्र बाबू महादेव प्रसादजी तथा बाबू रामदुमारजी करते हैं। आपके शेर से बनारस के ज्ञानवापी नामक स्थान में राधाकृष्ण धर्मराज नाम की एक अच्छी धर्मराज बनी हुई है। इसी प्रकार रामनिरंजन सेठ की पाठशाला के नाम से एक संरक्षित पाठशाला भी चल रही है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू महादेव प्रसादजी तथा रामदुमारजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स राधाकृष्ण शिवदत्तराय त्रिप्रपन्टा देवी की गली T. A. Diwaniya—यहाँ फर्म का हेड-क्वार्टर है। यहाँ बनारसी मातृ तथा अरक्षी का काम होता है तथा लख हो दूसरी फर्म पर मोटे-बट्टे का व्यापार होता है।

१—श्रीक बनारस—मेसर्स राधाकृष्ण शिवदत्तराय—यहाँ चाँदी-सोने के जेवरान, शीत, कुर्सी का काम है। यह फर्म कमीशन पर काम करती है।

२—विशेषरंजन बनारस—यहाँ विशेष नाम से बिलादली चीनी का काम होता है।

३—शिवपुर (जि० बनारस)—T. A. Gutic.—यहाँ गस्ता, सन तथा अलसी का काम होता है।

### मेसर्स वैष्णवदास जीवनदास ।

इस फर्म के मालिकों का कार्य निवासस्थान मुजराग घाग का है। यह फर्म बनारस में ही है। यह परिवार लगभग ३०० वर्ष से बनारस में निवास करता है। इस परिवार के पूर्व पुरख सेठ कुन्ददासजी ने अपने भाई सेठ अमृतदासजी के साथ मेसर्स कुन्ददास अमृतदास के नाम से फर्म स्थापित कर बनारसी मातृ का व्यापार किया। बाद लोगों ने बनारसी मातृ में शिवदत्तदास नाम का काम खोले में फर्म खोल

## भारतीय व्यापारियों का परिषय

की ओर से आने वाले बहारे व्यापारियों के हाथ कौनसाय की बिक्री का काम आप लोग करते थे। इस व्यापार में आप लोगों ने अच्छी सफलता प्राप्त की। आप लोगों के बाद आप लोगों की संतति भी यही व्यापार करती रही तथा चौथी पीढ़ी में जाकर वे लोग अलग हो गये। अतः सेठ जीवनदासजी ने अपनी स्वतंत्र फर्म मेसर्स वैष्णवदास जीवनदास के नाम से सम्बन्ध १९३० में स्थापित की और व्यापार करने लगे। तब से यह फर्म इसी नाम से व्यापार कर रही है।

सेठ जीवनदासजी के सेठ बालगोविन्ददास, रायबहादुर हरीदास, राय साहिब हरिचन्द्रदासजी, सेठ जयकृष्णदासजी, सेठ रामकृष्णदास, सेठ उदयकरणदास नामक पुत्र थे जिनमें से वर्तमान में राय साहिब हरिकृष्णदासजी, तथा सेठ उदयकरणदासजी ही विद्यमान हैं और सेठ स्वर्गवासी हो चुके हैं।

सेठ जीवनदासजी के बाद इस फर्म का कारोबार सेठ बालगोविन्ददासजी करते थे और रायबहादुर हरीदासजी ने अपना सारा जीवन सार्वजनिक कार्यों में लगाया। आप बुद्धा सराफ के नाम से सुविख्यात थे। आपने सदैव मानव हितकर कार्यों में अपनी पूरी शक्ति से सहयोग दिया। आप इतने लोकप्रिय थे कि बनारस की शानवाणी वाली मस्जिद के ऋग्ने को जो वहाँ से हिन्दू मुसलमानों के बीच बला आता था आपने सदा के लिये शान्त करा दिया जिसकी प्रशंसा ब्रिटेन की सरकार ने स्वयं प्रशंसा पत्र देकर की है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक राय हरिकृष्णदासजी, तथा आपके भाई सेठ उदयकरणदासजी और आपके भतीजे बाबू जगमोहनदासजी हैं। इस फर्म का प्रधान संचालन राय हरिकृष्णदासजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

- बनारस—मेसर्स वैष्णवदास जीवनदास गोला गली—यहाँ बनारसी माल, जवाहिरान तथा सोने चाँदी के फर्नीचर का काम होता है। इसके अतिरिक्त आप लोगों की बड़ी बहुत बड़ी जमींदारी है तथा बैंकिंग का काम होता है।
- बनारस—मेसर्स नागर ब्रदर्स गोला गली T. A. Unity—यहाँ सभी प्रकार के बनारसी मात, साड़ी, कौनसाय बगैर का काम होता है और बहुत बड़ी कार्नाट में एक्सपोर्ट किया जाता है।

भारतीय व्यापारियों का परिचय —  
( तीसरा भाग )



श्री० बाबू बहादुर हरिदासजी नागर ( वैष्णवदास  
जीवनदास ) बनारस



राजसाहेब हरिकृष्णदासजी नागर ( वैष्णवदास  
जीवनदास ) बनारस



श्री० बाबू उदयकृष्णदासजी नागर ( वैष्णवदास  
जीवनदास ) बनारस



बापू जगमोहनदासजी नागर ( नागर बहदुर )  
बनारस



### मेसर्स वैष्णवदास परसोत्तमदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान गुजरात प्रान्त का है। आप लोग नागर बीसा वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्व पुरुष मेसर्स कुमनदास अनूपनदास के नाम से व्यापार करते थे पर सन् १९३० में मालिकों के अलग २ हो जाने पर सेठ अनूपनदासजी के पौत्र सेठ परसोत्तमदासजी ने अपनी रश्तंत्र फर्म वररोक्त नाम से स्थापित कर व्यापार आरम्भ किया। आपके पिताजी का नाम सेठ वैष्णवदासजी था।

इस फर्म पर बनारसी माज, जेवरात और सोने चाँदी के फर्नीचर का काम होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सेठ परसोत्तमदासजी के तीनों पुत्र सेठ श्यामदासजी, सेठ नरोत्तमदासजी और सेठ नवनीतदासजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स वैष्णवदास परसोत्तमदास गोलागंजी—यहाँ बनारसी माज, जवाहिरात और सोने चाँदी के फर्नीचर का काम होता है, जो रजवाड़ों को खासतौर से भेजा जाता है। और बैंकिंग तथा जर्मांदारी का भी काम होता है।

### मेसर्स वृजपालदास मुकुन्दलाल

यह फर्म बनारसी माज का व्यापार करने के लिये सन् १९२३ ई० में बाबू वृजपालदास और बाबू मुकुन्दलालजी ने स्थापित की थी। यह फर्म आरम्भ से ही बनारसी माज, कारी सिन्ध, जेवरात और चाँदी के वर्तन का व्यापार करती आ रही है। इसके अतिरिक्त चाइना, आसाम, सिन्ध तथा शाल का व्यापार भी करती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स वृजपालदास मुकुन्दलाल ठठेरी बाजार T. A. Brij—यहाँ फर्म का हेड आफिस और शो रूम है।

### मेसर्स सोहनलाल गिरधरलाल पाठक

इस फर्म की स्थापना ६० वर्ष पूर्व पं० सोहनलाल पाठक ने बनारसी माज का व्यापार करने के लिये की थी। यह फर्म बनारस के कारीगरों से बनारसी माज तैयार कराती और बनारस में ही बनारस के दूकानदारों के हाथ अपना माज बेंचती है। यह फर्म बाहर को अपना माज न तो भेजती ही है और न बाहर वालों के हाथ ही माज बेंचती है। यह फर्म रेसामी याने कलाबत्त तथा चाँदी के धार का व्यापार भी करती है। इस फर्म के द्वारा २० चौक से ६०



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

शौक तक का चाँदी का तार तैयार कराया जाता है जो यह फर्म बनारस के व्यापारियों के हाथों में बँचती ही है पर साथ ही फर्म बहुत बड़े परिमाण में सूरत के समान अन्य कितने ही रेलवे कपड़ा बुनने वाले केंद्रों को भी भेजती है। चाँदी के तार सज्जा, सिवारा और गेटा धातु तैयार करने के काम आते हैं। आपके यहाँ का तैयार माल मद्रास और सीज़ोन की ओर ब्यार करने योग्य होता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक पं० गिरधरलालजी तथा आपके भाई पं० गोहरामजी, पं० महेशरामजी तथा पं० श्यामसुन्दरजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

बनारस—मेसर्स सोहनलाल गिरिधरलाल जवनबर पत्थर गल्ली—यहाँ सभी प्रकार के बनारसी माल का व्यापार होता है।

### मेसर्स सोहनलाल वसन्तलाल

इस फर्म की स्थापना बाबू सोहनलालजी लड्डा ने सन् १९१३ ई० में बनारस में की थी पर इन फर्म के मालिक इसके पूर्व मेसर्स गोपालदास नान्दमल के नाम से व्यापार करते थे। इस फर्म पर आरम्भ से ही बनारसी माल का व्यापार होता आया है। इस व्यापार में फर्म ने अच्छी सफलता प्राप्त की है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० अनन्तलालजी लड्डा, बा० वसन्तलालजी लड्डा, बा० चम्पालालजी लड्डा और बा० भैरवलालजी लड्डा हैं। आप लोग डीडवाना (बीकानेर) में रहने वाले हैं और माहेधरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। आप लोग सन् १८९३ में बनारस आये और वही से यहाँ व्यवसाय करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है। जिसे बा० अनन्तलालजी लड्डा और बा० वसन्तलालजी लड्डा संचालित करते हैं।

बनारस—मेसर्स सोहनलाल वसन्तलाल लकरी चौतरा—यहाँ बनारसी मान, सोने चाँदी का फर्नीचर तथा जेवरों का व्यापार होता है।

### मेसर्स हरिशंकरलाल रामशंकरलाल नैपाथी

इस फर्म की स्थापना सन् १८८७ ई० में बाबू हरिशंकरलालजी ने बनारस में की थी। आपके पूर्वज नैराज के काठमारुह नगर के रहने वाले वैश्य जाति के सज्जन थे। वर्तमान में कई पुरनों से यह परिवार संयुक्तान्त में ही रहता है।

भारतीय व्यापारियों का परिचय १०  
( तीसरा भाग )



हार्मो नन्दाजी ( मन्डलाक एण्ड सन्स ) बनारस



एच० बार् वैजनाथप्रसादजी सेठ ( वैजनाथप्रसाद सेठ एण्ड कंपनी ) बनारस





इस फर्म के संस्थापक बाबू हरिदासजी ने आरम्भ से ही करचूरी का व्यापार करना आरम्भ किया। विन्चत की ओर व्यवहार में आने वाली एक विशेष प्रकार की डिजाइन की कौनगाव बनारस में तैयार करवाकर यह फर्म विन्चत को भेजने और उसके बदले में विन्चत से कच्ची सीपे तौर पर मँगाने लगी। इस व्यापार में फर्म को अच्छी सफलता मिली, पलायन व्यापार अधिक विस्तृत रूप से होने लगा। वर्तमान में यह फर्म भारत के प्रायः सभी प्रांतों को कच्ची सिलाई करती है।

इस फर्म की कच्ची की दक्षमता के सम्बन्ध में फर्म को कितने ही आयुर्वेदिक सम्मेलनों से प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार इस फर्म द्वारा तैयार करायी गई कौनगाव के लिये भी फर्म को सर्वोत्कृष्ट मिला है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू हरिदासलालजी और आप के भाई बाबू रामदासलालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स हरिदासलाल रामदासलाल मैसाली चौगम्भा T. A. Nepali—इस फर्म पर करचूरी और कौनगाव का व्यापार मुख्यतया होता है। इसके अतिरिक्त चोंदर, शिलाजीत, बूबा मोती, अम्बर आदि का भी अच्छा व्यापार होता है।

## जौहरी

मेसर्स जौहरी परमोत्तमदाम भैरवनाथजी

आप लोगों का आदि निवासस्थान गुजरात राज्य का है। आप प्राग्ज समाज के मजदूर हैं। आप लोगों के पुराने जवाहिरात का व्यापार पेशवाई के समय से होता आ रहा है। बनारस का यह जौहरी परिवार प्रथम मेसर्स परमानन्द केराजी के नाम से जवाहिरात का व्यापार करता था पर मालिकों के अलग हो जाने से जौहरी परमोत्तमदासजी अपना सर्वत्र व्यापार करवात नाम से सन् १९१९ से कर रहे हैं।

इस फर्म के वर्तमान प्रधान संचारक जौहरी परमोत्तमदासजी हैं। आठ अरबी फर्म पर करने दरा के पुराने व्यवसाय अर्थात् जवाहिरात के व्यवसाय को करते हैं साथ साथ मद्रास की का नाम भी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स जौहरी परमोत्तमदाम भैरवदासजी मद्रास, —यहाँ सभी प्रकार के जौहरी का व्यवसाय तथा मद्रास की काम होता है।

### मेसर्स रघुनाथदास गोविन्ददास जोहरी ।

इस फर्म के मालिक लगभग २८ वर्ष से कपड़ोंक नाम से व्यापार करते हैं। पर ए परिवार का बनारस में व्यापार लगभग १२५ वर्ष से चला आ रहा है और इसी प्रकार लगभग ७० वर्ष से इसके मालिक जवाहिरात का काम करते हैं। यह फर्म जवाहिरात के कनिष्ठ कमिश्नर एजेंट और जेनरल मर्चेंट का भी काम करती है।

यहाँ डायमंड के कटिंग और पालिशिंग का काम होता है। इसके अतिरिक्त जेवर इमे तैयार रहते हैं और आर्डर मिलने पर जैसा चाहें वैसा तैयार करवा देते हैं। कई भारतीय राज्यों में आपका व्यापारिक संबंध है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू रघुनाथदासजी, बाबू गोविन्ददासजी और बाबू केशवजी हैं। आप लोग हीड्यवाना ( मारवाड़ ) के रहने वाले हैं। और जानि के मारुधरी बैत गमाज के शारदा सम्मन हैं पर असेसे बनारस रहते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स रघुनाथदास गोविन्ददास जोहरी रतनदाटक के सामने श्री श्री हटिया—यहाँ जवाहिरात के जेवरान सभी प्रकार के तैयार कराये जाते हैं। यहाँ कमिश्नर एजेंट तथा जेनरल मर्चेंट का काम भी होता है।

### मेसर्स जोशी शिवनाथ विश्वनाथ ।

आप लोग गुजरात प्रान्त निवासी ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। पर लगभग ३ सौ वर्ष से आप लोगों का परिवार बनारस में ही रहता है। यह परिवार पेशवार् के समय से प्रान्त जवाहिरात का व्यापार कर रहा है और इसी कारण यह परिवार बहुत पुराना जोहरी परिवार है। कलकत्ता नौरन के व्यवसाय में इमने अच्छी प्रतिष्ठा एवं ख्याति प्राप्त की है। सब से प्रथम इस परिवार के पूर्व पुत्र्य जोशी केरावजी गुजरात से बनारस आये थे और अपना बंगला जवाहिरात का व्यापार आरम्भ किया था।

वर्तमान में इस फर्म के प्रधान संचालक जोशी दामोदर कामनाथजी हैं। आप नौरन के अच्छे जानकार और कुशल व्यापारी हैं। आपकी देख रेख में आपके पुत्र एवं कान्हे वर २७ जोशी सोमनाथजी के पुत्र जोशी गौरीशंकरजी, जोशी बंतीशंकर, जोशी दामोदर तथा जोशी गोविन्दशंकरजी भी व्यापार संचालन का कार्य करते हैं। आपके दो पुत्र हैं जिनका नाम क्रमशः जोशी गंगाधरजी तथा जोशी गिरजाधरजी है।





पं० रविशंकरजी जाधवी ( एस्०  
एण्ड एनर्स ) बनारस



पं० पुरुचोत्तमदासजी शुकला ( गोपालदास  
पुरुचोत्तमदास ) बनारस



पं० महादेवजी जाधवी ( एस्० एण्ड  
एनर्स ) बनारस



पं० हेमराजजी जाधवी ( एस्० एण्ड  
एनर्स ) बनारस

यह फर्म उपरोक्त नाम से सन् १९१६ ई० से काम कर रही है। यहाँ डायमण्ड, कपीज, मैरेल्ड आदि नीरत्न की कटिंग और पालिशिंग का अच्छा काम होता है तथा नीरत्नत्रयित जड़ाऊ जेवरात भी तैयार कराये जाते हैं। जिनको मांग भारत और विदेश में पूरीनीर से रहती है। यह फर्म व्यापारिक दृष्टि से अपना सम्बन्ध भारत के देशी नरेशों तथा रहीसों से रखती ही है साथ ही योरोप के बाजार में भी अच्छा व्यापार करती है। जहाँ फारमोर, बनारस, रीवों, टीकमगढ़ आदि दरबारों के स्पेशल अप्वाइन्टमेन्ट रोल्डर यह फर्म है यहाँ यह फर्म जवाहिरात का अच्छा एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट भी करती है।

इस फर्म का व्यापारिक परिषद इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स जोशी शिवनाथ विघ्ननाथ सुलटोला T. A. Jeweller—यहाँ सभी प्रकार के नीरत्न का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

### मेसर्स एस. शंकर एण्ड ब्रदर्स

इस फर्म के संस्थापक पुरवैनी जीहरी हैं। इनका परिवार गुजरात का आदि निवासी है पर शताब्दियों पूर्व इसके पूर्व पुरुष गुजरात से मैसूर चले गये थे और बहुत समय तक वहाँ दरबार के स्टेट ज्वैलर्स रहे। टीपू सुलतान के समय जब वहाँ विद्रोह पठ खड़ा हुआ तो पं० हरिशंकरजी बनारस चले आये जहाँ यह परिवार वर्तमान में भी जवाहिरात का व्यापार करता है।

इस फर्म का प्रधान व्यापार जवाहिरात का है और साथ ही यह फर्म डायमण्ड कटिंग का काम भी कराती है। इसके यहाँ जवाहिरात के जेवरात भी तैयार कराये जाते हैं। इसी प्रकार यह फर्म जहाँ सोने-चाँदी के हौरे और कर्नीयर तैयार कराती है वहाँ बनारसी माल का व्यापार भी करती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक पं० रविरांकरजी, पं० लक्ष्मीरांकरजी, पं० प्रेमरांकरजी, तथा पं० देवरांकरजी हैं। आप लोग गुजराती ब्राह्मण-साम्राज के पौढ्या सज्जन हैं।

इस फर्म को बनारसी माल और ज्वैलरी के सम्बन्ध में सन् १९०८ ई० को नागपुर तुमा-इरा से स्वर्णपदक मिला हुआ है।

इसका व्यापारिक परिषद इस प्रकार है—

बनारस—एस. शंकर एण्ड ब्रदर्स मालुजी का परां—यहाँ जवाहिरात, बनारसी माल तथा सोने-चाँदी का सामान तैयार कराने का व्यापार होता है।



## गल्ले के व्यापारी

### मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल

इस फर्म की स्थापना लगभग १५० वर्ष पूर्व हुई थी। तब से यह फर्म बरतार का व्यापार करती चली आ रही है। इस फर्म पर प्रधान रूप से कमीशन एजेण्ट का काम है। इसका हेड आफिस बनारस के मुद्दिया नामक मोहल्ले में है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चम्पालालजी मूद्दा हैं। आप माहेरवरी वैश्य जी मूद्दा सगजन हैं। आपके पूर्व पुरुष सेठ अमेदमलजी मूद्दा श्रीकानेर के आदि स्वामी और वहाँ से आप बनारस आये थे। आपके परिवार ने बनारस में व्यापार स्थापित किया जो आज उत्तम अवस्था पर संचालित हो रहा है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बनारस—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल मुद्दिया—यहाँ फर्म का हेड आफिस है तथा प्रचार की आदत और पैकिंग का व्यापार होता है।

बनारस—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल विमेशरगंज—यहाँ गल्ला, घो तथा चीनी की व्यापार होता है।

जौनपुर—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल—यहाँ आदत तथा चाँदी सोने की बिक्री का होता है।

गिरिया (दुरांगाबाद)—मेसर्स अभयराम चुन्नीलाल—यहाँ गल्ला और रुई का व्यापार होता है। और यहाँ पर फर्म की एक जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्ट्री तथा आदत मिल है।

### मेसर्स किशोरीलाल मुकुन्दीलाल

इस फर्म का हेड आफिस भूमी (अलाहाबाद) है। यह एक प्रतिष्ठित स्थान का व्यापार करने वाली फर्म है। इसका विस्तृत परिचय विभिन्न सदिश भूमि ग्रन्थ के दूसरे अंक पेज नं० ४०१ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गन्ने एवं आदत का व्यापार करती है। इस मैनेजमेंट में भटनी एवं शिवान दोनों स्थानों पर एक २ गुजर मिल बतनी है। इसका एक पना विमेशरगंज है।

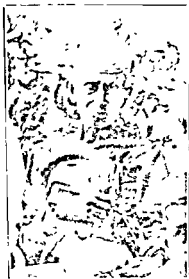
### मेसर्स नागरमठ देवकिशान

इस फर्म की स्थापना करीब २५ वर्ष पूर्व फतेहपुर निवासी अयराज वैश्य सगजन के नागरमठजी जगन्नाथ ने शिवपुर में की थी। इस वर्ष की विभिन्न मसकदों सेठ जगन्नाथजी



भारतीय व्यापारियों का परिचय :-

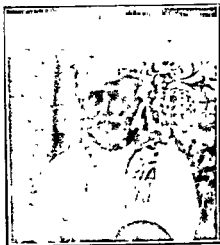
( नामरा भाग )



श्री० श्री० वक्षारामजी ( वक्षाराम रामदशरथ )  
बनारस



श्री० श्री० वक्षारामजी ( वक्षाराम रामदशरथ )  
बनारस



श्री० श्री० वक्षारामजी ( वक्षाराम रामदशरथ )  
बनारस

होते भाई सेठ देवकिरानजी के द्वारा हुई। आप मिलनसार सज्जन हैं। सेठ नागरमलजी का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ देवकिरानदासजी एवं स्व० सेठ नागरमलजी के पुत्र सेठ महाधीरप्रसादजी हैं। सेठ देवकिरानदासजी के पुत्र का नाम बाबू रघुनाथप्रसादजी है। आप सब लोग व्यापार संचालन कार्य करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

शिबपुर ( बनारस )—मेसर्स नागरमल देवकिरान T. A. Nagar—यहाँ कपड़ा, गल्ला एवं चादर का अच्छा व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामदेव नागरमल, काली गोशाम, हरिधन रोड, T. A. Dukandar—यहाँ सब प्रकार की चलानी का काम होता है।

बाबू लपुर ( बनारस )—मेसर्स रघुनाथप्रसाद महाधीरप्रसाद—यहाँ गल्ले की खरीदी का व्यापार होता है।

सैय्यदराजा ( बनारस )—मेसर्स विद्वन्नाथ देवीप्रसाद—यहाँ भी गल्ले की खरीदी का काम होता है।

### मेसर्स बख्शीराम रामेश्वरदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निरासमान नवलगढ़ ( जयपुर ) है। आप लोग अम-वाल वैश्य समाज के नवलगढ़िया सज्जन के नाम से प्रख्यात हैं। लगभग ४० वर्ष पूर्व सेठ बख्शीरामजी अपने भाइयों के साथ बनारस आये और गल्ले तथा कपड़े का व्यापार आरम्भ किया। फर्म ज्यों ज्यों उन्नति करती गई ज्यों ज्यों गल्ले और कपड़े के अतिरिक्त टैम्प, टैम्प्रेस, चाइलमिन, बैटिंग और मकानात आदि का काम समय २ पर खोला गया जो यह फर्म आज भी अच्छी रीति से कर रही है।

सेठ बख्शीरामजी के तीन भाई और धे जिनके नाम क्रमशः सेठ जीवनरामजी, सेठ पानीरामजी तथा सेठ हरजोमलजी था। इस समय सेठ हरजोमलजी, वर्तमान हैं और शेष दोनों भाई स्वर्गशासी हो चुके हैं। आप बयोदृष्ट हैं अतः शान्ति लाभ करते हैं।

इस फर्म की प्रधान उन्नति का श्रेय बाबू रामेश्वरदासजी को है। भार बढ़े व्यापारखुशाह एवं बढोती महादुयाव हैं। आपने अपनी फर्म को बहुत अधिक उत्तम अवस्था पर पहुँचाया है। आपने अपनी फर्म पर टैम्प का काम भी खोला और फर्म को टैम्प का स्ववसाय करने वाली प्रधान फर्मों की श्रेणी पर पहुँचा दिया। आपकी फर्म अच्छी



भारतीय व्यापारियों का परिचय :-  
 ( तीसरा भाग )



श्री साहब रामनरनयी ( जयदयाल मदनगोपाल ) बनारस



श्री उगनलालदासो अग्रवाल ( जयनारायण दरनारायण )  
 बनारस



श्री बिसेन्द्रप्रसादपी ( बिसेसामसाह पुरयोषमदास )  
 बनारस



बनारसी राज्य के स्वराज्यी—

- मेसर्स अजुनमल रामराम  
 " गोकुलचन्द्र रामचन्द्र लक्ष्मीचौधरी  
 " गिरधरदास जगमोहनदास, मुस-  
 लमान साहू का फटक  
 " गोपालमल पुरुषोत्तमदास, नीलकण्ठ  
 " गोकुलदास द्वारकादास  
 " गिरधरदास हरिदास रघुनाथदास  
 चौक  
 " शुभोजाल कुँवरजी चौक  
 " जयगोपाल लक्ष्मीनारायण कुँजगली  
 " जयनारायण हरनारायण नीचौबान  
 " वीरधराम सीताराम लक्ष्मी चौधरी  
 " दिलमुखाय जयदयाल गोपाल  
 साहू का मोहल्ला  
 " दुर्गादास द्वारकादास नन्दनसाहू लेन  
 " दुर्गासहाय रामलाल छोटी कुँजगली  
 " नन्दगोपाल मधुसूदनदास नन्दन-  
 साहू लेन  
 " नन्दलाल पण्डितस रानी कुर्वी  
 " नागर मद्रो सुतानाला  
 " पादमल भोलानाथ कुँजगली गेट  
 " पूरनचंद हरिनारायण लक्ष्मीचौधरी  
 परमानन्द सीताराम सतीचौधरी  
 " बन्धुलाल बनारसीदास चौधराम्मा  
 मोतीचंद पूजचंद  
 " मनीराम हरशिवनदास गायपाट  
 " नन्दमल गोवर्धनदास कुँजगली  
 " राधाचन्द्र शिवदत्तदास विश्रवटगली  
 " बैरवदास जीवन्दास गोलागली

- मेसर्स वैद्यनाथदास पुरुषोत्तम गोलागली  
 " पृथ्वीनाथदास सुकुन्दलाल ठठेरी  
 बाजार  
 " सोहनलाल गिरधरलाल जवनवर  
 " सोहनलाल बसंतलाल लक्ष्मीचौधरी  
 " हरवीरपराम दयाराम "

बनारसी राज्य के—

- गिरधरीलाल साहू अजयपुर के पास  
 भिगनसाहू नागकुर्वी  
 मेवालाल रामसहाय कम्बनी टाउनहाल पीले  
 रामेश्वर जेमचंद बड़े गनेरा

बैरव साहू के स्वराज्यी—

- मेसर्स कामेश्वरप्रसाद गयाप्रसाद कचौड़ी  
 रायपहादुर बटुकप्रसादजी खत्री चौकापाट  
 राजा मोतीचन्द सी. आई. ई. अजमव-  
 गढ़ पलेस  
 मुंशी भाषोजाल सी. एस. आई.  
 राय वैजनाथदास नीचौ ब्रह्मपुरी  
 बाबू श्रीसूरी, गोपालदास साहू का मोहल्ला  
 बाबू माधवजी, ठठेरीबाजार  
 रायकृष्णचंदजी चौधराम्मा  
 भाषोजाल बेनीप्रसाद "  
 वैजनाथदासजी B. A. मुंडिया  
 रायकृष्णजी रंगीतदास का फटक

गले के स्वराज्यी—

- मेसर्स अभयराम शुभोजाल विसेशरगज  
 " चिरोरीलाल सुकुन्दीलाल "  
 " नागरमल देवचिदान शिवपुर  
 " बशीराम रामेश्वरदास कर्पूरदा  
 " शिवनारायण धर्मदत्त साहू विला०



भारतीय व्यापारियों का परिचय

- मेमर्स श्रीराम सूरजमल नीलकंठ
- ” श्रीराम लक्ष्मीनारायण नीलकंठ
- ” वैजनाथ बिहारीशाल धिमेमरगंज
- ” अभीचंद जंगीलाल ”
- ” मोतीलाल मंगलचंद ”

ज्वेलर्स—

- मेसर्स अमीरचंद चतरसिंह चौखम्भा
- जोशी परसोत्तमदास बैरवनाथ, सूतदोला
- मेसर्स बनारसीदास काशीप्रसाद सुतई इमली
- ” बांकेलाल खत्री ”
- ” बनारसीदासजी जौहरी भाट की गली
- ” रघुनाथदास गोविन्ददास रतनफाटक
- ” जोशी शिवनाथ विधनाथ सूत दोला
- ” एस. शंकर एण्ड प्रदर्स बाबूजी का फर्श

बर्तनों के व्यापारी—

- गोकुलप्रसाद छेदीलाल ठठेरी बाजार
- जगबधू शर्मा हुंड़ीराज
- जगत महादेव ठठेरी बाजार
- गुरुप्रसाद रामचरन मानमन्दिर
- प्रयागदास जमनादास मुंडिया
- वैजनाथप्रसाद सेठ एण्ड को०
- लक्ष्मी चौतरा

बिरोसरप्रसाद पुरुषोत्तमदास पितरकुंडा  
(एल्यूमिनियम)

बिरोसरप्रसाद शोबलप्रसाद ठठेरी बाजार

रेशम वाले—

- मेसर्स जगन्नाथदास यर्मन चौखम्भा
- ” सुभालाल मदनलाल लखी चौतरा
- धौरी के तार वाले—
- मेसर्स गोपालदास सीताराम रेशम कटरा

मेसर्स पन्नालाल परसोत्तमदास भाट की गली

- ” भगवानदास रेशम कटरा
- ” गाधोलाल घेनीलाल चौखम्भा

किनिशर्स—

- अब्दुल रजाक अब्दुला मदनपुरा
- सुभाद पनाक मदनपुरा
- शमसुदीन हाजी मदनपुरा

बनारसी भाऊ के बुननेवाले—

- ताजा धारिस मदनपुरा
- मुन्ना नूर मदनपुरा
- हाजी यार महम्मद उधवपुरा (अलनैनु)

सब्जभा-सिजारावाले—

- फल्डूमल खत्री रेशम कटरा
- हाजी सिद्ध के व्यापारी—
- मेसर्स गोकुलचन्द रामचन्द, लक्ष्मी चौतरा
- ” गोपालमल पुरुषोत्तमदास, नीलकंठ
- ” के० एम० मुञ्जेव्या कम्पनी इलाहाबाद
- ” नन्दगोपाल मकनूदनदास नन्दनलापुरे
- ” बालाजी कम्पनी चौक
- ” सिल्क विठान्दर कम्पनी केशरपाट

बुकसेल्स एण्ड पब्लिशर्स—

- उपन्यास तरंग कार्यालय
- उपन्यास बहार आफिस कारा
- नागरी प्रचारिणी सभा,
- नन्द किशोर एण्ड प्रदर्स
- वैजनाथ प्रसाद बुकसेलर राजारवा
- भारतेन्दु पुस्तकालय
- भार्गेव बुकडिपो गायपाट
- मुकुन्ददास गुन एण्ड को० चौक
- मास्टर खेलाड़ीलाल कचौरी गली

लहरी पुक डिपो चौक  
हिन्दी पुस्तक एजेंसी चौक  
ज्ञानमंडल पुक डिपो कबीरचौरा  
भी बैकटेरवर पुक डिपो चौक

मिडिंग प्रेस—

- भी लक्ष्मीनारायण प्रेस
- ज्ञानमंडल प्रेस
- द्विचिन्तक प्रेस
- इंडियन प्रेस बनारस सेंट
- भागवतमूषण प्रेस
- धारा प्रेस
- लहरी प्रेस
- भूमिहार प्रेस
- जार्ज मिडिंग प्रेस
- जगन्नाथ प्रेस
- आर्ट प्रेस

पेपर पण्ड इंक मरसेड्स—

- श्री जनरल ट्रेडिंग कंपनी चौक
- ” बनारस पेपर ट्रेडिंग कंपनी
- मेसर्स भोलानाथ दत्त एण्ड संस चौक
- बनारसी तमाम् सुनी के ब्यागरी—
- मेसर्स गंगाप्रसाद विरवनाथप्रसाद चौक
- ” देवीप्रसाद सुंयनीसाहु हौज कटोरा
- ” बदलराम लक्ष्मीनारायण चौक
- ” बेनीराम माधोराम पानदरिया
- दिश्टी, गिळरबाहे—
- मेसर्स विरोरवरप्रसाद पुरुषोत्तमदास
- विवरकुंठा
- चौरी सोने के प्यागरी—
- मेसर्स कृष्णराम दिवाड़ी चौक
- ” चन्दैयालाल सराफ चौक
- ” भरवदास बडदेवदास चौक
- ” राधाकृष्ण शिवदत्तय चौक

### कलिया

बी० एन० इण्ड्यू० आर० बी बनारस-रूपरा बाली ग्राम लाइन का यह बड़ा स्टेशन है।  
यू० पी प्रान्त के अपने ही नाम के जिले का प्रधान स्थान है। गंगा नदी इसके पास से  
एर बहती है। दो बार यह शहर गंगा की बाढ़ से नष्ट हो गया है। इस बार फिर तीसरे  
सा इसे बसाया गया है। इस बार का इसका नक्सा सुन्दर बना है।  
यहाँ की पैदावार धान, गेहूँ, धी, जना एवम् शक्कर है। यहाँ की शक्कर सारे भारतवर्ष  
के व्यवसाय को विशेष उत्तेजन देने का श्रेय यहाँ की प्रसिद्ध फर्म मेसर्स मनोरथ भगत  
को है। गिराणों भी यहाँ पैदा होती है जो बंगाल में सहाय होती है।  
यहाँ की इष्टतरी में यहाँ बने जाने लोहे के बर्तन हैं। यह बार्की मरठूर है। इनके  
गले यहाँ रहते हैं। इनके अधिरिष्ठ पास ही सिध्दपुर में तेल खननी और मुलाय  
का शय निकाला जाता है जिनका अफ्फा ब्यापार है। यह भी यहाँ की मरठूर बन्तुवें है।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

कार्तिक पौर्णिमा को गंगा के किनारे बड़ा भारी मेला लगता है ।  
यहाँ के व्यापारियों का परिचय नीचे लिखे अनुसार है ।

### मेसर्स जिन्दाराम नारायणदास

इस फर्म का हेड आफिस मुजफ्फर नगर ( बिहार ) है । इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के द्वितीय भाग में बिहार विभाग के पेज नं० ३२ में दिया गया है । यहाँ यह फर्म राक्षर की आदत का व्यापार करती है ।

### मेसर्स मनोरथ भगत ध्यानराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान हनुमानगंज ( बलिया ) है । आप लोग मध्य-वैश्य समाज के सज्जन हैं । इस फर्म के व्यवसाय की स्थापना बा० ध्यानरामजी के में हुई । तथा आप के पुत्र बा० देवीप्रसादजी, बा० किशुनप्रसादजी एवम् बा० विष्णु-प्रसादजी के समय में विशेष तरक्की हुई । आप लोगों के समय में कानपुर में भी प्रांच खोजी गई । इस फर्म के मालिकों ने राक्षर के ही व्यापार की ओर विशेष ध्यान दिया और वस्तु पूर्ण सफलता भी प्राप्त की । आप लोगों ने यहाँ एक धर्मशाला, मन्दिर तथा हनुमानगंज में पोखरा एवम् मन्दिर बनवाया है । यहाँ एक संस्कृत पाठशाला भी चल रही है । आप तीनों सज्जनों का देहावसान हो गया है । यहाँ जमींदारों को छोड़कर शेष व्यापार अब अलग २ होता है ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बा० किशुनप्रसादजी के पुत्र बा० सरयूप्रसादजी, हर्ष-प्रसादजी और स्वर्गीय श्याममुन्दरप्रसादजी के पुत्र बालाप्रसादजी, तथा मुकेश्वरप्रसादजी, स्वर्गीय बा० विष्णुप्रसादजी के पुत्र शिवप्रसादजी, शिवकुमारजी तथा बर्धनारायणजी और स्वर्गीय देवीप्रसादजी के पुत्र तथा जमुनाप्रसादजी के पुत्र बा० महादेवप्रसादजी हैं । यह ध्यानराम सम्माननीय और शिक्षित ध्यानदान है । इस परिवार की बहुत बड़ी जमींदारी है । बा० महादेव प्रसादजी स्थानीय भ्रानरेरी असिस्टेंट कलक्टर हैं । आपके पिताजी भ्रानरेरी मैजिस्ट्रेट थे ।

इस परिवार का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

आगरा—मेसर्स मनोरथ भगत ध्यानराम बेलनगंज—यहाँ चीनी एवं गन्ने का व्यापार और आदत का काम होता है ।

कानपुर—मेसर्स सरयूप्रसाद बाबू जमुनाप्रसाद पुराना जनरलगंज—यहाँ किराने का व्यापार होता है ।

भारतीय व्यापारियों का परिचय :->  
( तीसरा भाग )



१२०. बाबू देवीप्रसादजी (मनोरथ भगत प्रानराम)  
बलिया



१२१. बाबू विष्णुप्रसादजी (मनोरथ भगत प्रानराम)  
बलिया



१२२. बाबू विष्णुप्रसादजी (मनोरथ भगत प्रानराम)  
बलिया



सेठ हरद्वारायजी (मनोरथ भगत प्रानराम) छररा



उपरोक्त फर्मों का व्यवसाय शामिलाल का है। इसके अतिरिक्त बलिया में आप लोगों की तीन फर्म हैं, जो तीनों भाइयों की हैं अलग २ हैं। उनपर शकर, बैकिंग एवं जर्मादारी का काम हाता है। जर्मादारी का काम भी सब शामिल ही है।

### मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम

इस फर्म के मालिक मनियर ( बलिया ) निवासी मध्य-देशीय वैश्य-समाज के सज्जन हैं। करीब १०० वर्ष यह फर्म सेठ लच्छूभगत और सेठ विद्याभगत ने सामेदारी में शुरू की। २४ वर्ष के पश्चान् आप दोनों अलग २ हो गये। तब से इसका संचालन सेठ लच्छूभगत करते रहे। आपने इस फर्म की कई शाखाएँ खोलीं तथा उन्नति की। आपके तीन पुत्र हुए सेठ किशुनराम, सेठ विशुनराम एवं सेठ रामनारायण। अपने पिता की मौजूदी में आप तीनों ही भाई शामिलाल में व्यापार करते रहे पश्चान् अलग २ हो गये। आप लोगों को अलग २ हुए करीब १४ वर्ष हुए। वर्तमान फर्म के मालिक सेठ किशुनराम के पुत्र सेठ रामेश्वरजी हैं। आपही फर्म का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

बलिया—मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम—यहाँ गल्ला, चीनी एवं घी का व्यापार तथा आदत का काम होता है।

पटना—मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम माठपगंज—यहाँ गल्ला एवं आदत का व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त इसी नाम से रमगढ़ा ( मुर्शिदाबाद ) नारायणगंज ( बंगाल ) भैरवबाजार (मैमनसिंह) में भी आपकी दुकानें हैं जहाँ गल्ला, चीनी, दाल और चॉवल का व्यापार होता है।

### मेसर्स लच्छूभगत विशुनराम

इस फर्म का पूर्व परिषय ऊपर दिया जा चुका है। यह फर्म सेठ लच्छूभगत के द्वितीय पुत्र की है। इसके वर्तमान मालिक स्व० सेठ विशुनरामजी के पुत्र बा० सुरजप्रसादजी, दयाप्रसादजी, बा० मयुरप्रसादजी, गोबुलप्रसादजी, घुन्दावनप्रसादजी और फेदारप्रसादजी हैं। इनमें से प्रथम २ भाई करीब २ साल से अपना स्वयंत्र व्यापार करते हैं। तिसपर मेसर्स लच्छूभगत सुरजप्रसाद के नाम से कारबार होता है।

आपका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

मेसर्स लच्छूभगत विशुनराम के नाम से भैरवबाजार, नाटयणगंज, पटना, बलिया आदि स्थानों पर दुकानें हैं जहाँ गल्ला, शकर और आदत का व्यापार होता है।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

मेसर्स लच्छू भगत सूरजप्रसाद के नाम से बलिया, पटना, भैरव बाजार में दुकानें जहाँ गल्ला और आदत का काम होता है।

### मेसर्स लच्छू भगत रामनारायण

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लच्छू भगत के तृतीय पुत्र सेठ रामनारायणजी हैं। का का पूर्व परिचय ऊपर दिया जा चुका है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है। बलिया—मेसर्स लच्छू भगत रामनारायण—यहाँ गल्ला, राकर आदि का व्यापार आदत का काम होता है।

फलफरा—मेसर्स लच्छू भगत रामनारायण—यहाँ भी उपरोक्त काम होता है।

इसके अतिरिक्त खगड़ा ( मुर्शिवाबाद ) नारायणगंज में भी आपकी दुकानें हैं जहाँ गल्ला और आदत का व्यापार होता है।

#### राजपुर के व्यापारी—

- मेसर्स जिन्दाराम नारायणदास
- ” नारायणदास धनरामदास
- ” शत्रीदास रामानुजदास
- ” भगवानदास केदारनाथ
- ” मनोरथ भगत ध्यानराम

#### गल्ले के व्यापारी—

- मेसर्स लच्छूभगत किशोरराम
- ” लच्छूभगत विजुनराम
- ” लच्छूभगत रामनारायण
- ” लच्छूभगत सूरजप्रसाद
- ” सरयू प्रसाद भगवतीप्रसाद
- ” हरीराम भगत दुःखीराम

#### बिराने के व्यापारी—

- मेसर्स देवीराम नारायणदास
- ” रामयाद गिरधारी

#### कपड़े के व्यापारी—

- मेसर्स कन्हू भगत हरकिशन राम
- ” खादिम अली बाजिदअली
- ” पुरुषोत्तमदास बैजनाथदास
- ” फकीरचन्द सरयूप्रसाद
- ” देवीराम बखतराम

#### चौड़ी सोदा के व्यापारी—

- मेसर्स आदित्यराम गोपानराम
- ” कामता प्रसाद राधाकिशन
- ” गौरीशङ्कर सीताराम
- ” सद्देवराम शिवनाथ प्रसाद

#### जेनरल अर्बेट्स—

- मेसर्स बेजू प्रसाद सरयूप्रसाद
- ” मालीराम हरिहरप्रसाद
- ” राधाकिशन शिवशंकर प्रसाद
- ” रामा दण्ड डो०

## छपरा

छपरा विहार प्रांत में खरने ही नाम के जिले का प्रधान सेंटर है। यह १०० पन० इन्स्यू रेस्वे लाइन का जंकरान है। यह एक पुरानी बस्ती है। यहाँ की आबादी ४२ हजार है। यहाँ की पैदावार आलू, धी, अरंडी (रेबी) लीची, सरसों आदि हैं। यहाँ तथा आस पास शकर भी बनती है। और यही माल यहाँ से बाहर एक्सपोर्ट होता है।

इसके आस पास महाराजगंज, मोरगंज, सेवान मसरक, डिपबारा आदि छोटी २ पर व्यापारिक मंडियाँ हैं। जहाँ शकर और गन्ना पैदा होता है। शकर के कारखाने भी इन स्थानों पर हैं। यहाँ अरंडी (रेबी) का तेल निकालने का भी एक मिल है। इस मिल में केस्टर आइल पैप्पार होता है।

यहाँ आस पास में निम्नलिखित शहर फैक्टरियाँ हैं।

न्यू सेवान शहर मिल

नूरमियाँ शहर मिल सेवान

सांवामड़ी शहर बक्स सेवान

साथ माई अम्बालाल शहर फैक्टरी पब्लिकली

वेक्सदरलैंड शहर आपरन मिल मड़ौरा

केस्टर आइल का मिल

यहाँ के कारखानों का परिवय इस प्रकार है—

### धर्मम मगनोराम हरद्वाराय

इस धर्म के माजिहों का मूल निवासस्थान फजहपुर (जयपुर) है। आर अमवाल वैद्य समाज के जेनो सभ्रन हैं। यह धर्म सेंट मगनोरामजी द्वारा स्थापित हुई। आरके २ पुत्र हुए सेंट केदारमज्जरी एवं सेंट हरद्वारायजी। आर लोगों के समर्थ में धर्म की बहुत प्रगति हुई। आरने यहाँ धर्मशाखा भी बनवाई। इसी प्रकार के और भी धर्म आरके द्वारा हुए। आर दोनों ही सभ्रनों का स्वर्णवाम हुआ गया है।







४५ • सेठ केशवराजजी (मगनीराम हरदुधराय) छवरा



बादु झार बाजसादजी सरावगी (मगनीराम हरदुधराय) छवरा



सेठ गिजराजन्दी सरावगी (मगनीराम हरदुधराय) छवरा



सेठ रामेधरराजजी सरावगी (मगनीराम हरदुधराय) छवरा







## गोरखपुर

गोरखपुर यू. पी. प्रांत के अपने ही नाम के जिले का हेड-क्वार्टर है। कहा जाता है कि बाबा गोरखनाथ के नाम से इसका नाम गोरखपुर पड़ा। यह राप्ती नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यहाँ गोरखनाथ का मन्दिर एवं आसिफुरीला का इमामबाड़ा देखने की वस्तु हैं। यह स्थान पी. एन. डब्ल्यू० की मेनजाइन पर बसा हुआ है। इस रेलवे का बड़ा वर्कशॉप भी यहाँ है जिसमें हजारों आदमी काम करते हैं।

यहाँ का प्रधान व्यापार गन्ने का है। यहाँ की पैदावार गेहूँ, अरहर, मसूर, सरसों, तीसी, मटर, चना, जौ इत्यादि हैं। तीसी, सरसों, गेहूँ, कलकत्ता, एवं दाल अरहर, तथा मसूर आसाम की ओर जाती है। मौसिम में यहाँ करीब १० हजार टन तक तीसी आती है।

यहाँ का तौल साबत बीजों जैसे गेहूँ, अरहर, तीसी, सरसों वगैरह का १४४ रुपया भर का सेर एवं २८ सेर के मन से और दाल की किरम का तौल १२८ रुपैया भर के सेर से २५ सेर के मन से माना जाता है। कपड़े के लिये ४० ईंच का गज माना जाता है।

यहाँ की नारंगी एवं अनन्नास अच्छे होते हैं। यहाँ गीठा प्रेस के नाम से एक संस्था है जो गीठा का प्रसार करना ही अपना मुख्य उद्देश्य समझती है। यहाँ से कल्याण नामक धार्मिक मासिक पत्र भी निकलता है जिसका पत्रा बर्तू बाजार है।

### मेसर्स बालकृष्णदास नन्दलाल

यह फर्म सुप्रसिद्ध फर्म मेसर्स वाराणसी धनश्यामदास की ओर है इसका विस्तृत परिचय बिन्नी सहित इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में प्रकाशित किया जा चुका है। यह फर्म कलकत्ता फर्म के अंश में काम करती है। इसमें मुकुन्दगढ़ (जयपुर) निवासी सेठ रामचन्द्रजी का साम्राज्य है। आप ही ने यह शायद मुजबाई। आप आपुर्षेद के अच्छे जानकार थे। आप का स्वर्गवास हो गया। वर्तमान में आपके पुत्र राधाकृष्णजी फर्म का संचालन करते हैं। आप मिलनसार एवं शिथिल स्वभाव हैं। इस फर्म पर सेल की बिक्री का काम होता है इसको निम्न स्थानों पर शाखाएँ हैं—

गोरखपुर, बस्ती, खजिमाबाद, गोंडा, बहराईच, कनेलगञ्ज, नानरा, बलान्ग पड़नी, शोहरतगंज, उस्कावाजार, प्रजमनगंज, नोतनवाँ, सिसुवाबाजार, बोपचोरी के स्थानों पर करीब ४०, ५० शाखाएँ हैं। सब पर तेल की बिक्री का काम होता है।

### मेसर्स मुरारीलाल मकसूदनदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायसाइय मुरारीलालजी एवं आपके भाई मकसूदनदास हैं। आप लोग यहीं के निवासी अप्रवाज वैश्य समाज के जैनी सम्प्रदाय हैं। इस फर्म की स्थापना आपके पिताजी अभयनन्दनप्रसादजी के द्वारा हुई। आपने इसकी बहुत कर्मियों को गोरखपुर में आप प्रतिष्ठित रखेस माने जाते थे। आपने जैन धर्म और दूसरे धर्मों में भी दान धर्म दिया। सरकार से आपको रायबहादुर की पदवी प्राप्त हुई थी। आपने जमीनों अतिरिक्त गल्ला एवं कपड़ा का भी व्यापार प्रारम्भ किया। यू० पी० कौन्सिल के भी सदस्य रहें। मतलब यह है कि आप यहाँ के अच्छे व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास हो पर इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गोरखपुर—मेसर्स मुरारीलाल मकसूदनदास उदूबाजार, साहवगंज,—यहाँ कपड़ा, का बिक्री का काम होता है। इसके अतिरिक्त सहजनवाँ, गढ़ई में खेती होती है।

### मेसर्स हरकिशनदास कन्दैयालाल

सन् १९४८ में यह फर्म सेठ हरकिशनदासजी के द्वारा स्थापित हुई और गन्ने का व्यापार खोला गया जो वर्तमान में यह फर्म कर रही है। इसकी विरोध उन्नति भी आती है। द्वारा हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक आपके पुत्र एवं शवरलालजी, द्वारकादासजी, कन्दैयालालजी और सागरमलजी हैं। आप अप्रवाज वैश्य समाज के सम्प्रदाय हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गोरखपुर—मेसर्स हरकिशनदास कन्दैयालाल—यहाँ गन्ना, तिलहन आदि का व्यापार का काम होता है।

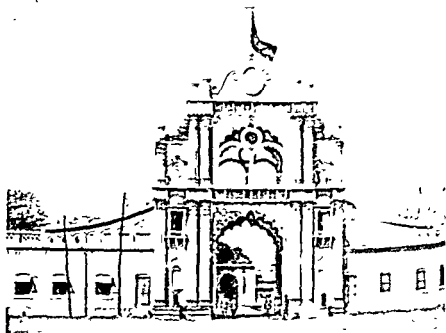
कलकत्ता—मेसर्स रामेश्वरलाल द्वारकादास ४ नारायण बाबू लेन T. A. People—यहाँ सब प्रकार की आड़त का काम होता है।

इसके अतिरिक्त हरकिशनदास रामेश्वरलाल के नाम से गोंडा, मिसुवाबाजार, बलान्ग और सहजनवाँ नामक स्थानों पर बर्मासो के तेल की एजेंसी है।





भारतीय व्यापारियों का पश्चिम —  
( तीसरा भाग )



श्रीवज्रनारायण द्वार पड़रौना गज



## पड़रौना-राजवंश

इस सुप्रसिद्ध राजवंश का इतिहास प्राचीन, गौरवपूर्ण एवं उज्वल है। इस परिवार के इतिहास का प्रत्येक दृष्ट आदर्शमय है। जिसके पढ़ने से मनुष्य की उज्वल और नैतिक मनो-वृत्तियों सहज ही में जागृत होती हैं।

इस वंश का इतिहास बड़ा मानिकपुर के निवासी सुप्रसिद्ध गहरवार क्षत्रिय वीर राय मुन्दाजराय से प्रारम्भ होता है। आप मुगल सम्राट के सेना विभाग में अफसर थे। उन्हींसे आपको "राय" का खिताब प्राप्त हुआ था। आपने अपने बाहुमन से गोरखपुर जिले के पड़रौना नामक स्थान में अपनी राजधानी स्थापित की। इस स्थान की भौगोलिक परिस्थिति के कारण मक्षिण में इस राजवंश को अपनी उन्नति करने तथा अपनी राजसीमा बढ़ाने का अच्छा सुयोग प्राप्त हो गया। इसी राजवंश में बादशाह औरंगजेब के समय में राय नाथरायजी हुए, जिनके शासन पर मुख्य होकर बादशाह ने ३३ प्रान्तों का अधिकार में दिने। इसके सिवाय समय समय पर और भी प्रान्त प्राप्त हुए। जिससे इस राज्य का विस्तार बढ़ता ही गया।

### १५ ईश्वरीप्रताप नारायणरायजी

इसी प्रसिद्ध राजवंश में सन् १८०२ ई० में राय ईश्वरीप्रताप नारायणरायजी—जिनका प्रताप प्रतापसिद्धों का—का जन्म हुआ। आप इस राजवंश में अत्यन्त प्रतापी महाराज हुए। आपका जीवन बरतकाछोर्य, वधमूर्त्य और कठिनाइयों से परिपूर्ण रहा। भूमि सम्बन्धी हादसों के कारण आपको कलकत्ते से आगरा तक की दौड़ करना पड़ती थी। क्योंकि उस समय एक जगह राजधानी थी तो दूसरी जगह हीबानी अराजक। आप एक और जर्मिष्टी का भगवान् लक्ष्मण थे और दूसरी ओर अपनी बरत काव्य प्रतिभा से बाल्यरचना भी करते थे। आपके 'रहस्य काव्य गंगा' तथा 'मच्छानल' आदि ग्रन्थ अब भी आपकी कीर्ति को उज्वल कर रहे हैं।

आपका धार्मिक जीवन बड़ा चतुष्टय रहा। हुन्दावन के समीप आपने एक मन्दिर और एक सुन्दर कुंज बनवाया जो आज भी पड़रौना कुंज के नाम से प्रसिद्ध है। पड़रौना में आपने दान-दान नाम से एक भव्य मन्दिर बनवाया। इस मन्दिर के समीप ही नदी के तीरे आपने

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

एक बृहत् तलाब सवा लाख रुपया व्यय कर बनवाया जो रामधाम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मन्दिर में श्रीराधाकृष्ण की स्थापना हुई। जहाँ सभी त्यौहार आज भी बड़े समारोह से मन्ने जाते हैं। यहाँ आपने ठाकुरजी के हिंडोले और आनन्द विहार के लिए "बृन्दावन" नामक एक उपवन भी बनवाया है। जिसमें बृन्दावन के सम्पूर्ण वृक्ष लगाये गये हैं। जिनके लेने मथुरा-बृन्दावन ही मिट्टी मंगाकर बिछाई गई है। वास्तव में आप परम भक्त थे। आपकी भक्ति का सहज ही में अनुमान किया जा सकता है।

आपका जीवन सभी दृष्टि से गौरव पूर्ण रहा। आप आनरेरी मजिस्ट्रेट भी थे। आप सन् १८६६ ई० में स्वर्गवासी हुए।

### रायमदन गोपालसिंहजी

राय ईश्वरीप्रताप नारायणजी के पश्चात् आपके छोटे पुत्र राय मदनगोपालसिंहजी गरीब । आप राधाकृष्ण के अनन्य भक्त थे। साधु, ब्राह्मण और वृजवासियों पर आपकी बहुत अधिक श्रद्धा थी। आपको सन्तान सुरा प्राप्त न था। आपने बरसाना पहाड़ी पर के श्री इंद्रीलालजी के मन्दिर पर चढ़ने के लिए ३०० पकी सीढ़ियाँ बनवायीं और उसी पहाड़ी पर बड़ी लागत के साथ एक विशाल कुँआ भी बनवा दिया जिससे जल का बहुत आराम हो गया। पडरौना और नन्दगाँव बरसाने के आस-पास अनेक कुँए, कुँज और वृष्टादि लगाये। पडरौना में आपने एक विशाल गोपालमन्दिर भी बनवाया।

आपने अपने निकट सम्बन्धी राय उदितनारायणसिंहजी को पुत्र स्वीकार कर अपनी रियासत का आधिकारी बनाया और स्वयं भगवद् सेवा में लीन हो गये। आपका स्वर्गवास सन् १८९० ई० में हो गया।

### राजा राय उदितनारायण सिंहजी—

राजा राय उदितनारायणसिंहजी बुद्धिमान् एवं विचारवान पुरुष थे। आपने अपनी सारी रियासत का नवीन संगठन किया। आप हर साल अपनी रियासत का दौरा करके स्वयं प्रजा के दुःख-सुख का निरीक्षण करते थे। देशोपकार तथा धार्मिक कामों में भी आपने पर्याप्त धन व्यय किया। आपने पडरौना में एक संस्कृत पाठशाला खोली। इस पाठशाला की वर्तमान राजा साहब के समय में बहुत उन्नति हो गई है। इसके अतिरिक्त उस समय तक गोरखपुर शहर में कोई सर्वसाधारण गृह नहीं था। इस कमी की पूर्ति के लिये एक विशाल टाउनहाल बनाने की योजना की गई और राजा साहब के विरोध सहायता से एक अत्यन्त सुन्दर भवन बनकर तैयार हुआ, लोग उसे 'पडरौना हाल' भी कहते हैं। अपने पूण्य पितामह के बनवाये हुए श्याम-धाम को आपने सजाया—इसके धरातल में आपने संगमरमर और





सहस्रस्य लक्षबाया तथा पाठक को गंगाजमुनी बान में मज्जादिपा । भार गवर्नेमेंट द्वारा मॉन-टरी मसिस्ट्रेट नियुक्त किये गये थे । सन् १९०० ई० में आरवा स्वर्गदाम होगया ।

### राजा बहादुर राजा प्रजनाभाषण मिहजी—

राजा हरिजनारायणसिंहजी के परधान्य आरके स्वेष पुत्र राजारहादुर राजा प्रजनाभाषण मिहजी ने रियासत के काम को ग्रहण किया । आरका जन्म वैशाख कृी ५ संवत् १९१२ का है । भार बड़े ही बुद्धिमत्तुदि हैं । भार पारसी भाषा के पठित्त हैं आर पारसी में बकिता भी करते हैं । हिन्दी भाषा पर भी भार का बहुत अधिक अनुगण है । गोरखपुर बाजे १९ वें हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापनकारिणी के भार सभापति थे । आरका भाषण सराहनीय हुआ था । आपने एक अच्छी रकम सम्मेलन की संवहानय के लिए प्रदान की है । आर बंधेजी तथा संरहण के भी अच्छे ज्ञाता हैं । खीशिषा के भार विशेषरूप से पद्यगी हैं । जैसा कि सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल कारी के २६वें वारिकोत्सव पर समारति की हैमिपत में भारके दिने गये भाषण से स्पष्ट है । आपने कन्या पाठशाळा को लॉय के लिए एक अच्छी रकम भी प्रदान की । अनेक कन्याएँ आपने सहायता पाकर अध्ययन करती हैं । इसके अतिरिक्त आपने बर्नाकुलर मिहिल स्कूल, कमका बोरिंग, बुर्मा, ग्राइमरी स्कूल तथा पट्टरीना की कन्या पाठशाळा आदि भी बनवाये हैं ।

आप कट्टर वैष्णव हैं फिर भी विचार बड़े उदार हैं । भारकी धार्मिक उदारता का पता महात्माजी के साथ मिस स्लेड को श्यामधाम में ले जाने की अनुमति देने ही से लागता है ।

वर्तमान शिक्षा-अण्डली-सम्बन्धी आरके विचार उलाभ्य हैं । कई शिक्षण संस्थाएँ आरने बहुत सहायता पानी रहती हैं । हाल ही में आरने अपने पुत्र्य विद्युष्य के नाम पर मदुनगोपाल अनायालय नामक एक अनायात्रय स्थापित किया है । इसके सिवाय आपने विकटोरिया मेमोरियल हामिपटल बनवाया तथा उसका कुल व्यय राज्य ही से होता है तथा पीसनेमोरियल पार्क बनवा कर उसमें सम्राट् पंचमजार्ज की मूर्ति भी स्थापित की है ।

गरीब प्रजा की सुविधा के लिए आपने "जिरायती बैंक" खोला है जिसके द्वारा दो लाख रुपया रियासत का प्रजा को कर्ज दिया जाता है । अकाल आदि कष्ट के अवसरों पर जो रियायतें दूसरे बैंक करते हैं पट्टरीना जिरायती बैंक द्वारा उनसे भी अधिक रियायतें की जाती हैं । इससे प्रजा को पूर्ण सहायता मिलती है ।

सरकार में भी आरका बहुत बड़ा विरवास है । यूरोपीय युद्ध में आपने धन, जन से सरकार को सहायता की । जिससे आरको राजा बहादुर का विवाह तथा वलवार पुरस्कार में मिली । भार तीन वर्षों तक युक्त प्रान्तीय कौन्सिल के नॉनिनेट्रेड मेम्बर रहे । भार डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के

बहुत समय से मैन्यर और पड़रीना टाऊन के स्पेशल मजिस्ट्रेट हैं। जो व्यक्ति अपने कार मिल लेता है वह हमेशा आपके शील और सौजन्य की प्रशंसा करता है। आपके लु

### रायबहादुर जगदीशनारायण सिंहजी

का जन्म संवत् १९४२ में हुआ। आपका भी हिन्दी और पारसी दोनों ही भाषण अधिकार है। साहित्य जगत् के इतिहास के तो आप विशेषज्ञ ही हैं। आपकी लेखनीय मनोहर है। चंभेजी और संरहून भाया पर भी आपका अछ्छा अधिकार है। शिल्प विद्य-कला का भी आपको शौक है। आपके महल में लगे हुए बड़े २ कई विचित्र-कला के नमूने हैं। मशीनरी का भी आपको अछ्छा ज्ञान है। आपने अपनी मरघ में पड़रीना में चीनी का एक बहुत बड़ा कारखाना खोला है। जिसका नाम पड़रीना औद्योग्य शुगर वर्क्स लिमिटेड है। आप ही इसके मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। इस कारखाने की बर्षों में बेहद उन्नति की, और आज तो यह विराल कारखाना एक लाख मन में चीनी प्रतिवर्ष तैयार करता है। यह फैक्टरी इस समय टयन की जा रही है। और सगय में टयन हो जाने के पश्चात् यह फैक्टरी भारतवर्ष की सब चीनी की फैक्टरी बड़ी और अधिक चीनी तैयार करनेवाली हो जावेगी। यह आपकी प्रथम सुद्धि, प्रेम और सुप्रबन्ध का अत्यन्त प्रमाण है।

इस फैक्टरी में भी अधिक महत्व का काम "एसी क्लिचरल पार्स" नामक नकल भी है। जिसके लिए शीम ही सामान मँगवाया गया है। और भी बल्लान अस्थाना पर ५० सी०; एम० आर० ए० एम० जिन्होंने यूरोप में भ्रमण कर इस विषय का ज्ञान हा किया है,—इसके लिये नियुक्त किया है। फल स्वरूप कई हजार एकड़ जगत हा किया गया, और इसमें ईंध की विराल रोगी प्रारम्भ की गई है। इस बात में आश्चर्य लवा हो रही है। अब इस बात का भी प्रयत्न हो रहा है कि पड़रीना में "गड्डे" में ६०० एकड़ का एक और काम बड़ाया जाय। आपका व्यवसाय ६ राजकुमार कृष्णप्रतापनारायणसिंहजी इस विभाग का मन्त्रादत कर रहे हैं। इस मन्त्र पड़रीना बाजार में विज्ञानी की रीशनी का पूर्ण प्रबन्ध कर दिया है।

आप मॉन्टेरो मुन्सिफ हैं। इतनी बड़ी सम्पत्ति और सत्ता के माली हाइर मन्त्र अविमान और आचम्य का लेरा भी नहीं है। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है।

इस सारे विराल कारोबार का प्रबन्ध राजासाहब और रायबहादुर जगदीशनारायण जी स्वयं ही करते हैं। प्रजा के कष्टों की भाव देनों सारे बड़े ही ध्यान के साथ मन्त्र बन्दे दूर करने के शक्ति उपाय करते हैं।





बहुत समय से मेश्वर और पड़रीना टाउन के होराल मजिस्ट्रेट हैं। जो व्यक्ति आगने एक बार मिल लेता है वह हमेशा आपके शील और सौजन्य की प्रशंसा करता है। आगने लघुप्राजा

### रायबहादुर जगदीशनारायण सिंहजी

का जन्म संवत् १९४२ में हुआ। आपका भी हिन्दी और फारसी दोनों ही भाषाओं पर अधिकार है। साहित्य जगत् के इतिहास के तो आप विशेषज्ञ ही हैं। आपकी लेखनशैली बड़ी मनोहर है। अंग्रेजी और संस्कृत भाषा पर भी आपका अच्छा अधिकार है। शिक्षण-विद्या और चित्र-कला का भी आपको शौक है। आपके महल में लगे हुए बड़े २ बड़े चित्र आपकी चित्र-कला के नमूने हैं। मरौनरी का भी आपको अच्छा ज्ञान है। आपने अपनी स्वाम देव रेश में पड़रीना में चीनी का एक बहुत बड़ा कारखाना खोला है। जिसका नाम पड़रीना राज भोहण्ण गुगर बर्मा लिमिटेड है। आप ही इसके मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। इस कारखाने ने थोड़े ही वर्षों में बेहद उन्नति की, और आज तो यह विराज कारखाना एक लाख मन से ऊपर चीनी प्रतिवर्ष तैयार करता है। यह फैक्टरी इस समय टवल की जा रही है। और कुछ ही समय में टवल हो जाने के पश्चात् यह फैक्टरी भारतवर्ष की सब चीनी की फैक्टरियों में बड़ी और अधिक चीनी तैयार करनेवाली हो जायेगी। यह आपकी प्रखर बुद्धि, कलाकौशल प्रेम और सुप्रबन्ध का अवलम्ब प्रमाण है।

इस फैक्टरी में भी अधिक महत्व का काम "एमी कडघरल फार्म" नामक नवीन स्कीम का है। जिसके लिए शीघ्र ही सामान मँगवाया गया है। और श्री बख्तलाज अस्थाना एम० आर० ए० सी०; एम० आर० ए० एम० जिन्होंने यूरोप में भ्रमण कर इस विषय का विशेष ज्ञान प्राप्त किया है,—को इसके लिये नियुक्त किया है। फल स्वरूप कई हजार एकड़ जंगल काट कर साफ किया गया, और इसमें ईश की विराज खेती प्रारम्भ की गई है। इस कार्य में आशाशील मकलता हो रही है। अब इस बात का भी प्रयत्न हो रहा है कि पड़रीना में २० मील दूर "मड्डे" में ६००० एकड़ का एक और फार्म बढ़ाया जाय। आपके सत्यरामरां के अनुभार राजकुमार कृष्णप्रसादनागयणसिंहजी इस विभाग का सन्पादन कर रहे हैं। इस समय आपने पड़रीना बाजार में विजली की रोशनी का पूर्ण प्रबन्ध कर दिया है।

आप अतिरिक्त मुस्लिम हैं। इतनी बड़ी सम्पत्ति और सत्ता के स्वामी होने हुए भी आपने अविमान और आतम्य का लेशा भी नहीं है। यह अवलम्ब प्रसन्नता की बात है।

इस सारे विराज कारोबार का प्रबन्ध राजासाहब और रायबहादुर जगदीशनारायण सिंह जी स्वयं ही करते हैं। प्रजा के कष्टों को आप देगों भाई बड़े ही ध्यान के साथ सुनते हैं और कन्दे दूर करने के इच्छित उपाय करते हैं।









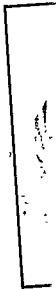
स्व० कवि हंशरीय जगजगन्नाथन सिद्धजी पद्दरीना ।

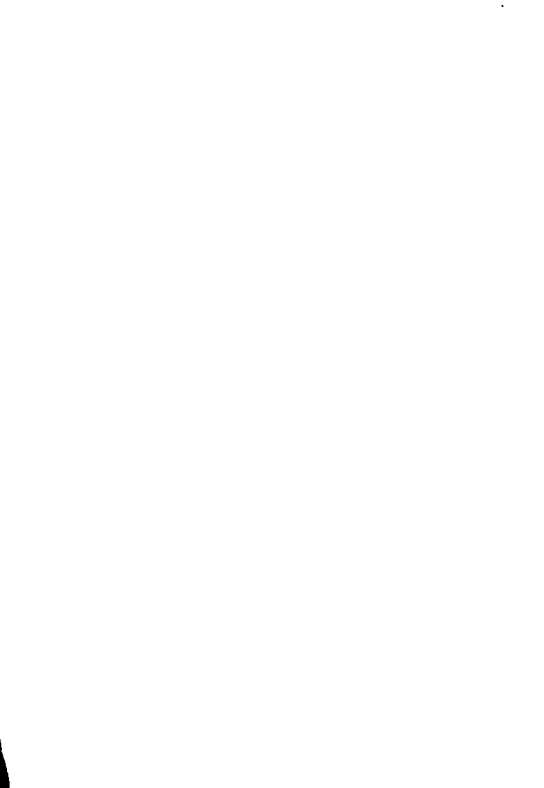


स्व० राजा उदितनारायण सिद्धजी पद्दरीना ।



भारतीय व्यापारियों का परिवर्धन  
( तीसरा भाग )





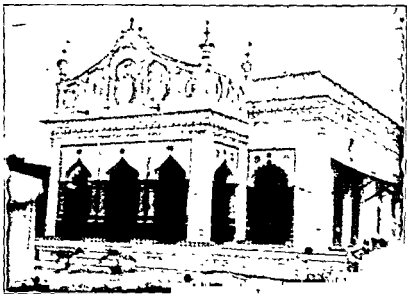




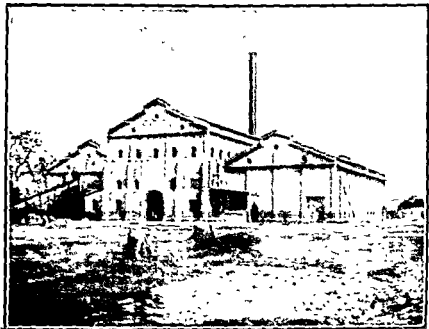
शुभाकर दत्तस्य भाग्यशास्त्रस्य विद्वान्नी पदवीना ।







श्री दुर्गाजी का मन्दिर ( देवीदत्त सूरजमल ) पडरौता



सन्तान

राजासाहब के कुल तीन और रायबहादुर जगदीशानारायणसिंहजी के छः पुत्र हुए। जिनमें सबसे बड़े—

राजकुमार कृष्णपतापनारायणसिंहजी

हैं। आपने धर्मज्ञों साहित्य और फारसी भाषा का अच्छा अध्ययन किया है। अनेक वर्षों से आप ऑनरेरी असिस्टेंट फलक्टर नियुक्त किये गये हैं और वही सावधानी से उस कार्य का सम्पादन करते हैं। जब राजासाहब और रायबहादुर साहब यात्रा में रहते हैं तब राजन का पुत्र कार्य आप ही की आज्ञानुसार होता है। आप पड़रौना राज गुरार फार्म के संचालक हैं। राजासाहब के द्वितीय पुत्र—

स्व० श्रीविष्णुनतापनारायणसिंह

ये। अगर आपका अत्यायु में ही स्वर्गवास हो गया जिससे इस राजवंश पर एकाएक ब्रह्मापात हुआ। ये राजकुमार पढ़ने में बड़े तेजस्वी और प्रतिभासम्पन्न थे। हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सेन्ट्रल हिन्दूस्कूल से इन्होंने एडमिरान परीक्षा पास की थी। इनके स्मारक स्वरूप रायबहादुर महोदय ने एक बड़ी रकम सेन्ट्रल हिन्दूस्कूल को दान देकर स्मॉलररिपन स्थापित की है और बोर्डिंग हाउस में विज्ञानी नियुक्ति करवाई है।

रायबहादुर जगदीशानारायणसिंहजी के ज्येष्ठ कुमार रुद्रप्रतापनारायणसिंह, का जन्म कार्तिक बदी ६ सं० १९११ ई० को हुआ। इस समय आप बी० ए० क्लास में अध्ययन कर रहे हैं। अर्थशास्त्र और राजनीति आपका प्रधान विषय है। संस्कृत में भी भारते प्रवेशिका परीक्षा पास की है। आप बड़े होनहार मातुम पढ़ते हैं।

रियासत के अन्य छोटे कुमार बि० रविप्रतापनारायणसिंह, बि० लक्ष्मीनतापनारायणसिंह, बि० मूर्दप्रतापनारायणसिंह, बि० रामप्रतापनारायणसिंह आदि शान्तिमान हैं। पड़रौना राजका भविष्य निर्भर है। इनके पूर्वजों का माहल, बनकी दिग्गज, बनकी प्रतिभा राजपरिवार में वर्तमान है। इनके द्वारा देस कार्य होने की बहुत कुछ आशा है।

मेगम टेड़गाम द्वारकादाम

इस फर्म के मालिकों का मूलनिवासस्थान मलखीसर (राजपुर) है। आप अमवात समाज के केंद्रिया सचिव हैं। करीब ३० साल पहले सेठ देड़गामी के द्वारा फर्म स्थापित की गई। आपके तीन भाई और ये, सेठ मूरामतजी, सेठ बगौलदास एवं सेठ मूरवमतजी। इनमें से सेठ बगौलदासजी एवं सेठ मूरवमतजी का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ देड़गामी, सेठ मूरवमतजी तथा सेठ बगौलदास

के पुत्र द्वारकादासजी एवं सूरजमलजी के पुत्र शृजलालजी हैं। सेठ बेदराजजी के पुत्र रामरतनजी तथा सेठ भूरामलजी के पुत्र नानूरामजी हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—  
 पडरौना—मेसर्स बेदराज द्वारकादास—यहाँ महाजनी लेन-देन तथा कपड़े का व्यापार होता है।  
 सिसुआवाजार—मेसर्स भूरामल रामरतन—यहाँ कपड़े तथा गल्ले का व्यापार होता है।  
 अहमदाबाद—मेसर्स द्वारकादास नानूराम T. A. Malsi-Sarka—यहाँ देशी कपड़े का घर और भाड़स का काम होता है।

इसके अतिरिक्त चनपरिया ( चम्पारन ) और घुपली ( गोरखपुर ) में आपकी फर्में हैं जहाँ गल्ले का व्यापार होता है।

### मेसर्स देवीदत्त सूरजमल

इस फर्म के मालिक अलसीसर ( जयपुर-स्टेट ) निवासी अमवाल वैश्यसमाज के खेतान सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना सेठ देवीदत्तजी ने की। शुरु २ में इस पर कपड़े का बहुत छोटे रूप में व्यापार प्रारंभ किया गया। आपके चार पुत्र हुए सेठ सूरजमलजी, सेठ रामानन्दजी, सेठ रामप्रतापजी एवं सेठ मितानन्दजी। वर्तमान सेठ सूरजमलजी को छोड़ शेष सज्जन स्वर्गवासी हैं। संवत् १९५० में सेठ देवीदत्तजी की मौजूदगी ही में इस फर्म की एक शाखा कलकत्ता में खोली गई। पश्चान् ज्यों २ कारवार बढ़ता गया त्यों २ फर्म ने बम्बई, कानपुर आदि व्यापारिक केन्द्रों में भी फर्म की स्थापना की। आप चारों भाइयों ने ही इसे उन्नतावस्था पर पहुँचाया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी तथा सेठ रामानन्दजी के पुत्र हरीरामजी, सेठ रामप्रतापजी के पुत्र सेठ सागरमलजी और सेठ मितानन्दजी के पुत्र गणेशनारायणजी तथा फेदारनाथजी हैं। सेठ सूरजमलजी के पुत्र धनश्यामदासजी का स्वर्गवास करीब २० साल पूर्व हो गया है। गणेशनारायणजी के पुत्र रामचन्द्रजी भी होनहार नवयुवक थे। आपने करीब तीन वर्ष पूर्व लक्ष्मीगंज में एक शुगर मील की स्थापना की। आपका ३ मास पूर्व स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म की ओर से यहाँ श्रीदुर्गाजी का मन्दिर बना हुआ है। तथा अलसीसर में एक स्कूल चल रहा है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

पडरौना—मेसर्स देवीदत्त सूरजमल, T. A. Khetan—यहाँ बैंकिंग, जर्मीनारी एवं कपड़े का व्यापार होता है। यहाँ आईल एजेंसी भी है। पास ही लक्ष्मीगंज में आपका एक शकर का मील है।

इसके अतिरिक्त तमकुही रोड, सिसुआ वाजार, कलकत्ता, कानपुर, बम्बई आदि स्थानों पर भी फर्में हैं इनका विस्तृत परिचय प्रथम भाग में बम्बई विभाग में मेसर्स गणेशनारायण और कारमल के नाम से दिया गया है।

भारतीय व्यापारियों का परिचय —  
( तीसरा भाग )



मैट. दत्तदासभास्करजी शेनान ( देवीदत्त मूरवमल )  
पडोसा



मैट. केदारनाथजी शेनान भा० मैत्रि० ( देवीदत्त  
मूरवमल ) पडोसा



मैट. के. के. फुले ( देवीदत्त मूरवमल )



मैट. के. के. फुले ( देवीदत्त मूरवमल )



मध्य-प्रदेश



. CENTRAL PROVINCES





## नागपुर

नागपुर सी० पी० प्रांत का प्रधान केंद्र एवम् राजधानी है। इस शहर का इतिहास बहुत पुराना है। इस स्थान पर कई राजवंशों के सिंहासन स्थापित हुए, जिनके और अन्त में काल के अनन्त स्रोत में विलीन हो गये। जिनकी कीर्ति इतिहास के पृष्ठों पर अंकित है। यह नगर बुद्ध समय पूर्व भारत के सुप्रसिद्ध भोंसला राजवंश की राजधानी था। यह भोंसला वंश उस समय भारत के पॉष मराठूर हिन्दू राज्यवंशों में से एक था। मगर देश के दुर्भाग्य से तथा आपसी दूट के कारण ये राज्यवंश अपनी स्वाधीनता को स्थिर नहीं रख सके और अंत में यह नगर महाप्रतापी ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकार में आ गया।

यह शहर जी. आई. पी. और सी. एन. आर. का जंकरान है यहाँ से जी. आई. पी. की लाइन मुसावल जंकरान होती हुई बम्बई तक गई है। तथा दूसरी ग्रॉथ लाइन इसी रेलवे की दूसरी लाइन पर इटारसी को मिलाती है। सी. एन. आर. की छोटी एवं बड़ी दोनों लाइनें यहाँ पर मौजूद हैं। बड़ी लाइन रायपुर होती हुई कलकत्ता तक गई है। एवम छोटी लाइन छिंदवाड़ा आदि होती हुई जबलपुर तक गई है। इसके अतिरिक्त रामटेक नामक स्थान पर भी यहाँ से एक ग्रॉथ गई है। रामटेक हिन्दुओं का तीर्थ स्थान माना जाता है।

व्यागरियों एवम् मुसाफिरों की सुविधा के लिये यहाँ से अमरावती, आर्वी, भण्डारा, राम-टेक, काटोल, बर्धा आदि कई स्थानों पर मोटरें जाती हैं।

यहाँ पर कपड़े के २ मिल्स तथा कई जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियां हैं बर्फ के भी यहाँ कारखाने हैं। कपड़े की मिलों में सय से बड़ी और पुरानी मिल एम्प्रेमिल है। इसकी स्थापना १ जनवरी सन् १८७७ में श्रीयुक्त जमशेदजी नसरवानजी टाटाने की। इस मिल में आरामीत सरलता हुई। सन् १९१३ के अन्त तक इस मिल की सेंट्रल इंडियन स्पिनिंग एण्ड विबिंग कम्पनी ने २९१४५००७) रुपयेया मुनाफ़ा बाँटा। तथा इस मिल की तरकी भी की। इस समय इस मिल के अंदर में बड़ी ५ और मिलें हैं जो इसी नाम से काम करती हैं।

इसके अतिरिक्त "मॉडल मिल्स" के नाम से एक मिल यहाँ पर और है। जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियां भी यहाँ बहुत हैं।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

यहां के व्यापारिक बाजारों में इतवारी बाजार ( जहां पर वैडुर्स, ज्वैलर्स, चांदी सोने के व्यापारी और कॉटन मर्चेण्ट्स की दुकानें हैं ) नई शुक्रवारी ( जहां पर गल्ले का व्यापार होता है ) और सदर ( जहां पर जनरल मर्चेण्ट्स विशेष हैं ) ये तीनों बाजार प्रसिद्ध हैं। नागपुर की कारीगरी की चीजों में यहां का बना हुआ कपड़ा, साड़ियाँ और खण्ड मराहूर हैं। यह माल यहां से दक्षिण प्रान्त में बहुत जाता है।

नागपुर का सन्तरा भारत वर्ष भर में प्रसिद्ध है। मौसिम के समय में यहां के बाजारों में ढेर के ढेर सन्तरे दिखाई देने हैं। इस प्रान्त में सन्तरे के सैकड़ों बगीचे हैं जो सारे भारतवर्ष को सन्तरा सप्लाई करते हैं। सन्तरे के पीछे भी यहां से हजारों लाखों की तादाद में एकसौट होते हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है:—

### वैंकर्स

#### मेसर्स सुशालचंद्र गोपालदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जमनाशमजी मालपाणी हैं। आपका हेड आफिस जयलपुर में है। यहाँ इस फर्म पर वैद्विग हुडी चिट्टी और जमींदारी का काम होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पंज नं० ४० में दिया गया है।

#### मेसर्स जेठमल रामकरण गोलेडा

आप लोगों का आदि निवास स्थान धोकानेर है। आप लोग ओमवान समाज के सज्जन हैं। सबसे प्रथम देश से सेठ हरहरचन्द्रजी लगभग ९० वर्ष पूर्व नागपुर आये थे और आपके पुत्र स्व० सेठ जेठमलजी मेसर्स जेठमल गोलेडा के नाम से सन्वत् १९०० के लगभग व्यापार आरम्भ कर कण्ट्राक्ट लेने लगे थे। आप अच्छे बचोगी थे अन- आपने मरवारी कण्ट्राक्ट भी लेना आरम्भ कर दिया फलतः आपकी बहुत ही शीघ्र सफलता प्राप्त हुई। और इस लाइन में आपने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। आप अपने समय के अपनी लाइन के एक खास व्यक्ति थे। आपने कितने ही काम कण्ट्राक्ट के लिये जिनमें से कनहुन विजय का आपका प्रथम कण्ट्राक्ट था। सेठ जेठमलजी का स्वर्गवास लगभग सन्वत् १९०८ के हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ रामकरणजी ने व्यापार का भार संभाला और आप सन्वत् १९३०

के सामग्य जेठमल रामकरण के नाम से अपना व्यापार करने लगे । आपने अपनी फर्म को पूर्ववत् प्रतिष्ठित अवस्था में संचालित किया । आपका स्वर्गवाम सम्बन्ध १९५६ की वैशाख सुदी १५ को हुआ ।

फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मेघराजजी सम्बन्ध १९६१ में दर० सेठ रामकरणजी के गोद आये । वर्तमान में आप ही फर्म का प्रधान संचालन करते हैं ।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मेघराजजी गोलचन्द्रा और आपके पुत्र बाबू अभयराज, बाबू शिरेमल, बाबू उमदायमल, बाबू सिरदारमल, बाबू रतनचन्द्र, बाबू विनयचन्द्र हैं ।

यह फर्म ४८ वर्ष तक बंगाल बैंक अर्थात् आज की इम्पीरियल बैंक की राजांची रही है । सेठ जेठमलजी ने इस काम को आरम्भ किया और मेघराजजी के समय तक यह रहा । सेठ मेघराजजी ने फर्म की वज्रवि में अचक्षा उद्योग किया । आपने ही बैंक की सन् १९२७ में ट्रेडरशिप छोड़ कर उसी समय नागपुर सिटी, नागपुर, मऊ ( द्वावनी ) जैपुर, जोधपुर, साम्भरलोक की पोस्ट ऑफिस ट्रेजरी का कन्ट्राक्ट लिया है । यह फर्म अचक्षा प्रतिष्ठित मानी जाती है । यहाँ आपके कितने ही मकानाव और धंगले हैं जो नागपुर और कामठी में हैं ।

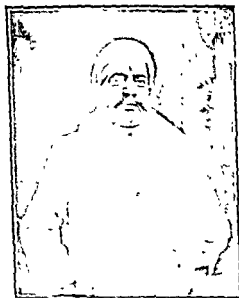
इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स जेठमल रामकरण सदर बजार, नागपुर	} बैंकिंग और लेंडिंग प्रॉपर्टी तथा पोस्ट ऑफिस ट्रेजरी कन्ट्राक्ट का काम भी है ।
कामठी—मेसर्स जेठमल रामकरण	
	} यहां बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है ।

### मेसर्स बंसीलाल अवीरचन्द्र राय बहादुर

इस फर्म का विशेष परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के धोकारे में दया गया है । इसके वर्तमान मालिक राय बहादुर सेठ विश्वेश्वरदासजी हागा हैं । यह फर्म भारतीय फर्मों में पुरानी एवम् प्रतिष्ठित है । इसकी बहुवसी शाखाएँ हैं । यह फर्म मिल धोनर्स एवम् कोलियारी प्रोप्राइटर्स भी हैं । यहाँ इस फर्म की एक शांघ और है जिस पर मेसर्स चन्द्रभान बंसीलाल, इतवारी के नाम से चॉरी-सोना और बैंकिंग का व्यापार होता है । इस फर्म पर बैंकिंग का काम होता है । इसका पता 'महाल' है ।





सेठ केशरीचंद्रजी जोशी ( रामचरण  
हीराहाल ) नागपुर



सेठ करमोदानजी चाडुवीराल ( प्रभावमल  
छोगमल ) नागपुर



बापू पानमलजी जोशी ( रामचरण हीराहाल ) नागपुर



सेठ मथुरादासजी शेट्टी ( शंकरदास मथुरादास नाग



सेठ मोतीलालजी ने सम्हाला। आपने अच्छी योग्यता से काम चलाया फलतः फर्म ने अच्छी छन्नति कर ली। आपका स्वर्गवास सम्बन् १९६३ में हो गया और फर्म का व्यापार संचालन आपके पुत्र सेठ गेंदालालजी के हाथ आया। आप बड़ी योग्यता से फर्म का कार्य संचालित कर रहे हैं।

फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गेंदालालजी हैं। आप सुयोग्य नवयुवक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स शिवलाल मोतीलाल  
इतवारी बाजार, नागपुर

} यहाँ सोना चाँदी, हुण्डी चिट्ठी एवं लेन-देन का काम होता है तथा साहूकारी एवं जवाहिरात का काम भी यह फर्म करती है।

### मेसर्स शङ्करदास मथुरादास

इस फर्म के मालिक धोक्रानेर निवासी हैं और जाति के माहेरवरी राठी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से सम्बन् १९८३ में सेठ मथुरादासजी राठी ने की थी। इसके पूर्व सेठ मथुरादासजी राठी अपने व्यक्तिगत नाम से अर्थात् मेसर्स मथुरादास राठी के नाम से सम्बन् १९५९ से व्यापार करते आ रहे थे सम्बन् १९८३ में आपने अपना व्यापार उपरोक्त नाम से स्थापित किया है।

इस फर्म के मालिकों के यहाँ बहुत पुराने समय से बैंकों की दलाली का काम होता आ रहा है। यही कारण है कि १९७० सेठ शंकरदासजी अपने समय में बहुत काल तक एक्सचेंज की दलाली का काम करते थे। इसी प्रकार सेठ मथुरादासजी राठी भी आरम्भ में एक्सचेंज की दलाली का काम करते थे। यों तो यह काम व्यापक रूप से आप करते थे पर बंगाल बैंक की दलाली का काम आप राम शीर से करते थे। सेठ जी ने अपना निज फर्म खोल कर मद्राजनी लेन-देन का काम आरम्भ किया। आपको औद्योगिक क्षेत्र में अच्छी सफलता मिली अतः फर्म ने अच्छी छन्नति कर ली। आपने यूरोपीय समय के समय परिस्थिति से लाभ उठा कर अपने यहाँ गस्ता, कपड़ा, सूत आदि कितने ही काम खोल दिये। इस कार्य में आप ऐसे गुरुप को सफलता मिलना स्वाभाविक था अतः आपने अच्छा लाभ उठाया। आपने सम्बन् १९७४ में मोना चाँदी की दुकान भी खोल दी जो आज तक बराबर चल रही है।

वर्तमान समय में यह फर्म इम्पीरियल बैंक की नागपुर ब्रांच तथा जमरोदपुर ब्रांच की सज्जानों है। इसके अतिरिक्त सोना चाँदी की बिजो का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।





सेठ मोतीलालजी ने सम्हाला। आपने अच्छी योग्यता से काम चलाया फलतः फर्म ने अच्छी छन्नति कर ली। आपका स्वर्गवास सम्बन् १९६३ में हो गया और फर्म का व्यापार संचालन आपके पुत्र सेठ गेन्दालालजी के हाथ आया। आप यही योग्यता से फर्म का कार्य संचालित कर रहे हैं।

फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गेन्दालालजी हैं। आप सुयोग्य नवयुवक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स शिवलाल मोतीलाल  
इतवारी बाजार, नागपुर

} यहाँ सोना चाँदी, टुण्डी चिट्ठी एवं लेन-देन का काम होता है तथा साइकारी एवं जवाहिरात का काम भी यह फर्म करती है।

### मेसर्स शङ्करदास मधुरादास

इस फर्म के मालिक शंकरदास निवासी हैं और जाति के माहेश्वरी राठी सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से सम्बन् १९८३ में सेठ मधुरादासजी राठी ने की थी। इसके पूर्व सेठ मधुरादासजी राठी अपने व्यक्तिगत नाम से अर्थात् मेसर्स मधुरादास राठी के नाम से सम्बन् १९५९ से व्यापार करते आ रहे थे सम्बन् १९८३ में आपने अपना व्यापार उपरोक्त नाम से स्थापित किया है।

इस फर्म के मालिकों के यहाँ बहुत पुराने समय से बैंकों की दलाली का काम होता आ रहा है। यही कारण है कि सेठ शंकरदासजी अपने समय में बहुत काल तक एक्सचेंज की दलाली का काम करते थे। इसी प्रकार सेठ मधुरादासजी राठी भी आरम्भ में एक्सचेंज की दलाली का काम करते थे। यों तो यह काम व्यापक रूप से आप करते थे पर बंगाल बैंक की दलाली का काम आप खास तौर से करते थे। सेठ जी ने अपना निज फर्म खोल कर महाजनी लेन-देन का काम आरम्भ किया। आपको औद्योगिक क्षेत्र में अच्छी सफलता मिली अतः फर्म ने अच्छी छन्नति कर ली। आपने यूरोपीय सभर के समय परिस्थिति से लाभ उठा कर अपने यहाँ गल्ला, कपड़ा, सूत आदि कितने ही काम खोल दिये। इस कार्य में आप ऐसे पुराने सफलता मिलना स्वाभाविक था अतः आपने अच्छा लाभ उठाया। आपने सम्बन् १९७४ में सोना चाँदी की दुकान भी खोल दी जो आज तक बराबर चल रही है।

वर्तमान समय में यह फर्म इम्पीरियल बैंक की नागपुर ब्रांच तथा जमरोदपुर ब्रांच की सहायता है। इसके अतिरिक्त सोना चाँदी की चिट्ठी का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।



सेठ मोतीलालजी ने सम्हाला। आपने अच्छी योग्यता से काम चलाया कतवः फर्म ने अच्छी छन्नति कर ली। आपका स्वर्गवास सम्बन् १९६३ में हो गया और फर्म का व्यापार संभालने आपके पुत्र सेठ गेन्दालालजी के हाथ आया। आप बड़ी योग्यता से फर्म का कार्य संचालित कर रहे हैं।

फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गेन्दालालजी हैं। आप सुयोग्य नरपुरुष हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है:—

मेसर्स शिवलाल मोतीलाल इतवारी बाजार, नागपुर	}	यहाँ सोना चाँदी, टुण्ड्री पिट्टी एवं लेन-देन का काम होता है तथा साहूकारी एवं जवाहिरात का काम भी यह फर्म करती है।
---	---	--

### मेसर्स शङ्करदास मथुरादास

इस फर्म के मालिक बीकानेर निवासी हैं और जाति के माहेरवरी राठी सम्जन हैं। इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से सम्बन् १९८३ में सेठ मथुरादासजी राठी ने की थी। इसके पूर्व सेठ मथुरादासजी राठी अपने व्यक्तिगत नाम से अर्थात् मेसर्स मथुरादास राठी के नाम से सम्बन् १९५९ से व्यापार करते आ रहे थे सम्बन् १९८३ में आपने अपना व्यापार उपरोक्त नाम से स्थापित किया है।

इस फर्म के मालिकों के यहाँ बहुत पुराने समय से बैंकों की दलाली का काम होता आ रहा है। यही कारण है कि २३० सेठ शंकरदासजी अपने समय में बहुत काल तक एकसपेंज की दलाली का काम करते थे। इसी प्रकार सेठ मथुरादासजी राठी भी आरम्भ में एकसपेंज की दलाली का काम करते थे। यों तो यह काम व्यापक रूप से आप करते थे पर बंगाल बैंक की दलाली का काम आप रास और से करते थे। सेठ जी ने अपना निज फर्म खोल कर महाजनी लेन-देन का काम आरम्भ किया। आपको औद्योगिक क्षेत्र में अच्छी सफलता मिली अतः फर्म ने अच्छी छन्नति कर ली। आपने यूरोपीय समर के समय परिस्थिति से लाभ उठा कर अपने यहाँ गस्ता, कपड़ा, सूत आदि कितने ही काम खोल दिये। इस कार्य में आप ऐसे पुरुष को सफलता मिलना स्वाभाविक था अतः आपने अच्छा लाभ उठाया। आपने सम्बन् १९७४ में सोना चाँदी की दुकान भी खोल दी जो आज तक बराबर चल रही है।

वर्तमान समय में यह फर्म इम्पीरियल बैंक की नागपुर ब्रांच तथा जमरोदपुर ब्रांच की छजानधी है। इसके अतिरिक्त सोना चाँदी की बिक्री का काम और बैंकिंग व्यवसाय होता है।



मेसर्स नागरमल पोद्दार—करांची, आभोरमण्डी ।

मेसर्स सोनीराम जीवमल—कलकत्ता, बराकर ।

### मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल

आप लोग धाकानेर निवासी श्रोसवाल समाज के धाड़ीवाल सज्जन हैं । आप जैन श्वैता-म्बर सम्प्रदाय के अनुयायी हैं । इस फर्म की स्थापना लगभग सन्वत् १९०५ के सेठ प्रतापचंद जी तथा आपके भाई सेठ लक्ष्मीचन्दजी ने आकर नागपुर में उपरोक्त नाम से की और अपना व्यापार आरम्भ किया । उस समय इस फर्म पर किराने का व्यापार किया गया और ज्यों ज्यों फर्म ने वृद्धि की त्यों २ किराने के अतिरिक्त सोना चाँदी का काम और साथ ही साहूकारी लेन-देन का काम किया गया फलतः फर्म वृद्धि की ओर अग्रसर हुई । और यही कारण है कि वर्तमान में इस फर्म पर साहूकारी लेनदेन, गिरवी और पुलगॉव की मिल की एजेन्सी का काम होता है ।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ करनीदानजी धाड़ीवाल हैं आपके वीन पुत्र हैं बाबू रतन-लालजी धाड़ीवाल, बाबू केरारीचन्द धाड़ीवाल तथा बाबू सूरजमलजी धाड़ीवाल । अभी सब लोग शिक्षा प्राप्त करते हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल इतवारो बाजार, नागपुर	}	पुलगॉव मिल की सोल एजेन्सी है । यहाँ महाजनी लेनदेन तथा गाँठ गिरवे का काम होता है ।
मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल इतवारो बाजार, नागपुर		यहाँ पर पुलगॉव मिल का माल विक्री होता है ।
मेसर्स प्रतापचन्द छोगमल पुलगॉव जि० बर्षा	}	यहाँ पुलगॉव मिल की एजेन्सी है ।

### मेसर्स बुलागवीराम गोपालदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपालदासजी मोहटा हैं । आपका देह आरिज दिगन्-पाट में है । यहाँ यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है । इस फर्म के पास कई जिनिंग और ड्रेनिंग पेंकटारियाँ हैं । इसके अतिरिक्त भकोला में इस फर्म का एक मिल भी चल रहा है । इसका



साहूकारी लेन-देन और हुण्डी-चिट्ठी का काम भी आरम्भ किया जो यह फर्म आज भी पूर्ण करती आ रही है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चम्पालालजी हैं। सेठ जोहारमलजी का स्वर्गवास सन् १९६६ में हुआ अतः आपके बाद फर्म का संचालन आपके भाई सेठ दोगालालजी करते रहे सेठ दोगालालजी का स्वर्गवास सन् १९८२ में हुआ। तब से फर्म का संचालन सेठ जोहारमलजी के पुत्र सेठ चम्पालालजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

- मेसर्स कादूराम बच्छराज
- नवी शुम्भारी बाजार
- नागपुर
- मेसर्स कादूराम बच्छराज
- शुवराय बाजार
- नागपुर
- मेसर्स जोहारमल दोगालाल
- हुग C. .P

यहाँ हेड ऑफिस है। तथा अनाज और आदव तथा हुण्डी चिट्ठी का काम होता है।

यहाँ गल्ले का व्यापार होता है। और गल्ले की आदव का काम है।

गल्ला, आदव और हुण्डी चिट्ठी का काम होता है।

मेसर्स नैनमुख कनीराम

इस फर्म का हेड ऑफिस कामठी है। यहाँ यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मोहनलालजी तथा गौरीशंकरजी हैं। आप दोनों का हिस्सा है। इस फर्म की और भी कई स्थानों पर शाखाएं हैं। इसका विशेष परिचय इसी संघ के इसी भाग में कामठी में दिया गया है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार करती है। इसका पता शुवराय बाजार नागपुर है।

रामनाराय गनेशराम

इस फर्म का हेड ऑफिस आजना ( निजान-स्टेट ) है इसके वर्तमान मालिक सेठ राधा हुण्डी एवं सेठ गोपीचन्द्रजी हैं। इसकी और भी स्थानों पर शाखाएं हैं। इसका विस्तृत परिचय इसी संघ में आजना में दिया गया है। यहाँ इस फर्म पर गल्ले का व्यापार होता है। इसका पता शुवराय बाजार नागपुर है।



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

का पता "Rai Bahadur" है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के धीकानेर में दिया गया है।

### मेसर्स महारामदास हजारीमल

आप लोगों का मूल निवासस्थान डीडवाना का है। आप अमवाल वैश्य जाति के सन्न हैं। करीब ७० वर्ष से यह फर्म अपना व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ महारामदामजी ने की। आपका ३०-३२ वर्ष पहले स्वर्गवास हो चुका है। आपके चार पुत्र थे। जिनके नाम क्रमशः धन्नीनारायणी, रघुनाथजी, हजारीमलजी एवं कन्हैयालालजी था। आप चारों का भी स्वर्गवास हो गया है। इस समय इस फर्म के मालिक सेठ हजारीमलजी के पुत्र सेठ किरानदासजी एवं सेठ कन्हैयालालजी के पुत्र सेठ चतुर्नुजजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

- |                               |   |  |
|-------------------------------|---|--|
| कामठी—महारामदास हजारीमल       | } | यहाँ गन्ने का व्यापार एवं आड़त का काम होता है।     |
| राजनांदगाँव—महारामदास हजारीमल |   |  |
| भाटापाड़ा—महारामदाम हजारीमल   | } | यहाँ भी गन्ने का व्यापार और कमीरान का काम होता है। |

### मेसर्स माणिकचंद प्रभुदान

यह फर्म करीब १२५ वर्षों से स्थापित है। इसके स्थापक सेठ माणिकचंदजी डीडवाना से यहाँ आये। आप अमवाल वैश्य समाज के सन्न हैं। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पश्चात् इस फर्मका संचालन क्रमशः सेठ प्रभुदानजी, पूरनमलजी, भैरोंबुधजी ने सम्हाला। सेठ भैरोंबुध के यहाँ सेठ मोतीलालजी दलक आये। वर्तमान में आप ही इसके मालिक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

- |                          |   |                                     |
|--------------------------|---|-------------------------------------|
| कामठी—माणिकचंद प्रभुदान  | } | यहाँ चाँदी सोने का व्यापार होता है। |
| तुमसर—भैरोंबुध मोतीलाल   |   |                                     |
| बागपूर—माणिकचंद प्रभुदान | } | यहाँ आपकी एक जीनिंग पैकटरी है।      |

भागीय व्यापारियों का परिचय  
( तीसरा भाग )



स्व० मेट हिरालालजी ( निरमल कराम ) कामठी



स्व० मेट मोनीलालजी चाण्ड ( गुरुदान मोनीलाल ) काटोक



मोनीलालजी ( निरमल कराम ) कामठी





## मेसर्स रामप्रताप रामदेव

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ राधाकृष्णजी एवं सेठ गोपीकृष्णजी हैं। इस फर्म का हेड ऑफिस जालना (मिज़ाम-स्टेट) में है। यहाँ यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसकी और भी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। जिनका विरोध वर्तमान इसी भाग में हैदराबाद के पोरान में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग एवं लेनदेन का व्यापार करती है।

## काटोल

सी० पी० प्रांत के नागपुर जिले का अपने ही नाम की तहसील का यह हेड कार्टर है। यह जाम नदी के किनारे बसा हुआ है। नागपुर यहाँ से ३६ मील की दूरी पर स्थित है। नदी के दूसरे किनारे का सुपवार नामक देहात इसीमें मिला लिया गया है। यहाँ के पुराने किले का भग्नावशेष और बहुत समय पहिले बने हुए पुराने मंदिर की कारीगरी के निरान भव भी शहर में मौजूद हैं। काटोल में म्युनिसिपैलिटी नहीं है। मगर यहाँ की सन्नाई और सेनिटेशन के लिये टाउनफण्ड नामक एक फंड है उससे खर्च किया जाता है।

यह इस प्रांत का आवश्यकीय फाटन का मार्केट है। यहाँ करीब ६ जीनिंग और ३ प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं। यहाँ की पैदावार में विरोध कर कपास ही है और यही यहाँ से बाहर जाता है। यहाँ के आन भी मराठूर हैं मगर वे इधर ही इधर खप जाते हैं। इसके अतिरिक्त सूंग, पकड़, जवरी भी यहाँ से बाहर जाती है।

व्यापारिक सुविधा के लिये आजकल यहाँ से मोटरों भी रन करती हैं। यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे की इटारसी नागपुर मंजरान पर अपने ही नामके स्टेशन के पास बना हुआ है।

## मेसर्स तुसायचन्द गोपालदास

इस फर्म का हेड आफिस जबलपुर में है। इसके वर्तमान मालिक सेठ कमलादासजी माल-पार्षी हैं। इसकी कई स्थानों पर शांखेज तथा फाटन जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरियाँ हैं। यहाँ भी इसकी जिनिंग फैक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है। इसका विरोध परिषद विश्वो सहित इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग के पृष्ठ नं० ४० में दिया गया है।



## धर्मा

बया सी० पी० प्रांत के बरने ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह इस जिले का प्रधान व्यापारिक स्थान है। कौटन की वो यह बहुत बड़ी मण्डी है। यहाँ से सालाना बहुत सा कपास एवं रुई बाहर जाती है। कई जीनिंग और प्रीसिंग फैक्टरियों के होने से यहाँ के व्यापारियों को रुई लोड़ने एवं उसकी गाँठें बंधवाने में बड़ी सहायियत है।

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे की मूसावल-नागपुर प्रांत का एक बड़ा स्टेशन है। यहाँ से एक और लाईन बलारशाह तक गई है।

यहाँ म्युनिसिपैलिटी है और उसका अच्छा प्रबन्ध है। रुई का सौदा सब काटन मार्केट में होता है। जहाँ मौसिम में रोजाना सैकड़ों गाड़ियों कपास की आती हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

### बैंकर्स एण्ड कौटन मरचेन्ट्स

मेसर्स जगनीराम प्रेममुख

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान लक्ष्मणगढ़ (जयपुर) है। आप अमवाल जाति के बांसल गौत्रीय ब्राह्मण सन्तान हैं। बर्षों में सेठ प्रेममुखदासजी करीब ५५ वर्ष पूर्व आये और अपना कारबार शुरू किया। आप मंत्र १९५६ में स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ रुक्मानन्दजी के हाथों से इस फर्म के कारबार की उत्तरि हुई। आप कुछ समय पूर्व बर्दा म्यु० कमेटी के वाइस चेयरमैन रह चुके हैं। आपके पुत्र का नाम भी सत्यनारायणजी है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बर्दा—मेसर्स जगनीराम प्रेममुख } यहाँ पर भारकी जीनिंग फैक्टरी है तथा रुई का  
(T. A. Rukmanand) } व्यापार होता है।

पुलगाँव—मेसर्स प्रेममुखदास रुक्मानन्द—यहाँ रुई का कारोबार होता है।



### हीरालाल रामगोपाल

इस दुकान का स्थापन संवत् १९२६ में बदाँ में सेठ हीरालालजी गनेश्वारा के हाथों से हुआ। आपका हेड आफिस बम्बई है। संवत् १९६९ तक यह फर्म मेसर्स बच्छराज जमनालाल के साथ कामकाज करती रही। उसके पत्रान अपनी पुरानी जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी बच्छराजजी सेठ की फर्म को देकर इस दुकान के मालिकों ने अपनी नई जीन प्रेस फैक्टरी खोली। इस दुकान पर भी मंत्रीलालजी गोरखरामजी संवत् १९३८ से मुनीमात्र करते हैं। यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित समझी जाती है। इस फर्म का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित इस मन्थ के प्रथम विभाग में पृष्ठ १०३ में बम्बई विभाग में दिया गया है। यहाँ का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बदाँ—मेसर्स हीरालाल रामगोपाल  
T. A. Honour.

यहाँ इस फर्म की जीन प्रेस फैक्टरी है। तथा  
कॉटन और पैट्रिंग का कारखाना होता है।

### काथ मरचेंट्स

मेसर्स जमनाथर पोद्दार

इस फर्म का हेड आफिस नागपुर है। इसके व्यवसाय का परिचय मालिकों के फोटो सहित इस मन्थ के द्वितीय भाग में कलकत्ता-विभाग में दिया गया है। बदाँ में इस फर्म की टाटा संस लिमिटेड की मिलों का कपड़ा बँचने की एजेंसी है।

मेसर्स विसेशरलाल गोविंदराम

इस फर्म के मालिक लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) निवासी अमवाल वैश्य समाज के सिंहल गौत्रीय सत्रन हैं। करीब ५० वर्ष पूर्व इस दुकान का स्थापन सेठ हरदत्तरायजी और सेठ विसेशरलालजी दोनों भ्राताओं ने किया। आरम्भ से ही आपके यहाँ कपड़े का व्यवसाय होता आ रहा है। सेठ हरदत्तरायजी के पुत्र सेठ गोविन्दरामजी भी फर्म के व्यापार-संचालन में भाग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बदाँ—मेसर्स विसेशरलाल गोविन्दराम—यहाँ कपड़े का कारखाना होता है।

बदाँ—मेसर्स विसेशरलाल गोविन्दराम—इस नाम से गल्ले की विजारात होती है।









भारतवर्ष के भिन्न २ स्थानों पर कई जांचें हैं। यह फर्म विशेष कर बैंकिंग का व्यापार करती है। इसका विरोध परिचय बिना सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बीकानेर शहर में दिया गया है। यहाँ इस फर्म का एक प्रायवेट कंपनी का मिल है। इस मिल का कंपनी इस प्रांत में बड़ा प्रतिष्ठान समझा जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ कॉटन और बैंकिंग का व्यापार होता है। इस फर्म के अंदर में और भी छोटी शाखाएँ हैं।

### मेसर्स भिखनचंद रेखचंद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान बीकानेर है। आप लोग माहेरपुरी वैश्य समाज के मोहवा सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ भिखनचंदजी के समय में इस आपके २ पुत्र हुए, सेठ लखमीचंदजी तथा सेठ रेखचंदजी। सेठ भिखनचंदजी के समय में इस फर्म की साधारण वृद्धि हुई। पश्चात् सन् १९०५ में सेठ लखमीचंदजी के पौत्र सेठ नरसिंहदासजी अपना व्यापार अलग करने लगे। इस समय तक इस फर्म का संचालन-भार सेठ रेखचंदजी सम्हालते रहे। आप बड़े व्यापार-कुशल, मेधावी एवं सज्जन व्यक्ति थे। आपने अपनी व्यापार-चातुरी से फर्म की बहुत वृद्धि की। आपने सन् १९०० में राय साहय रेखचंद मोहवा लिमिटेड एण्ड विविंग मिल्स की स्थापना की। आपका स्वर्गवास सन् १९०५ में होगया है। आपके २ पुत्र हुए, सेठ युजासोदासजी तथा सेठ नरसिंहदासजी। इनमें से सेठ नरसिंहदासजी सेठ लखमीचंदजी के पुत्र सेठ प्रयागदासजी के यहाँ दत्तक चले गये। कुछ समय पश्चात् सेठ युजासोदासजी का स्वर्गवास होगया। आप के २ पुत्र हुए, सेठ मयुरादासजी और सेठ गोपालदासजी। आप दोनों सज्जन कई वर्षों तक अपना व्यापार आईट रूप से करते रहे। अर्थात् कुछ माह पूर्व आप लोग अलग २ होगये हैं। आप नवयुवक एवं मिलनसार स्वरोक्त फर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपालदासजी हैं। आप नवयुवक एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। हाल ही में आपने अकोले का दी हुकुमचंद डालमियां मिल खरीदा है। इस मिल में ४५८ स्लैब और २२५०० टोर्डिस्स हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दिगनपाट-मेसर्स भिखनचंद रेखचंद मोहवा  
T. A. "Rekhachand"

यहाँ फर्म का हेड आफिस है। तथा बैंकिंग-ट्रस्टी, विट्टी और साठुकारी देन-लेन का व्यापार होता है। यहां आपकी एक जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी भी है।

वर्षा—मेसर्स रेखचंद गोपालदास

यहां आपकी जीनिंग और प्रेसिंग कैक्टरी है।

गोंदिया—श्रीगणेश आईज एण्ड राईस मिल

यहाँ इस नाम से आपका कारखाना है। तथा युलाखीदास गोपालदास के नाम से मिल के कपड़े की थिकी का काम होता है।

अकोला—राय साहय रेखचंद गोपालदास  
स्पिनिंग विविंग मिल्स

यह आपका प्रायव्हेट कपड़े का मिल है। इसमें ४५८ स्पिन्स और २२५०० स्पिंडिल्स हैं।

नागपुर—मेसर्स युलाखीदास गोपालदास  
इतवारी

यहाँ ब्रैकिंग, टुंडी-चिट्टी साहुकारी लेन-देन तथा कपड़े का व्यापार होता है।

### दी० आर० एस० रेखचंद मोहता मिल

इस मिल के वर्तमान मालिक सेठ मयुरादामजी मोहता हैं। पहले आपकी फर्म पर मेसर्स मिछनचंद रेखचंद मोहता नाम पड़ता था मगर करीब ५—६ माह से इसके मालिक लोग अलग अलग हो गये। तब ही से यह मिल सेठ साहिब के पार्ट में आयी। इस मिल का कपड़ा मजबूत, सुन्दर और महीन होता है। विशेषकर सी० पी० में इस मिल के कपड़े की खपत होती है। इस फर्म का विशेष परिचय इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में भीकानेर में दिया गया है।

### कॉटन मरचेंट्स

मेसर्स सुशालचन्द्र गोपालदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जमनादामजी मालपाणी हैं। आपका हेड आफिस नागपुर में है। इस फर्म की और भी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। इसका विस्तृत परिचय विज्ञो सर्दिस इसी ग्रन्थ के प्रथम भाग में पेज नं० ४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म काटन का व्यापार करती है। इसका यहाँ जिन और प्रेम भी है।

### मेसर्स जयनाथर पोदार

इस फर्म का हेड ऑफिस नागपुर है। इसके वर्तमान मालिक सेठ जीवराजजी, नागरमलजी चौपमलजी आदि हैं। इस फर्म को इसी नाम से एवम् सोनीराम जीवमल के नाम से बहुत सी शाखाएँ हैं। सब शाखाओं पर टाटा संस लि० की मालों के बने हुए कपड़े का व्यापार होता है। यह फर्म इन मालों को सोल एजेंट है। इस फर्म का विशेष परिचय चित्रों सहित हमारे इसी ग्रन्थ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग, हुंकी-चिट्टी और कोटन का व्यापार करती है। आइत का काम भी इस फर्म पर होता है।

### मेसर्स भीखमचन्द लखमीचन्द

आप लोगों का आदि निवास-स्थान बीकानेर है। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के मोहवा सज्जन हैं। इस परिवार के सेठ भीखमचन्दजी ने स्वदेश से दिगनपाट आ उपरोक्त फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व की थी। सन् १९९५ में देवचन्दजी की फर्म ने अपना फर्म अलग प्रोत्त लिया। और फर्म का संचालन सेठ नरसिंहदासजी करने लगे। आपको सर-कार ने रायबहादुर के सम्मानमूचक पद से विभूषित किया था। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में आपके दत्तक पुत्र जानक्रीदासजी इस फर्म के मालिक हैं। आप अभी नाया-लिंग हैं।

इस फर्म में प्रयानतया बैंकर्स एण्ड लैण्ड एजेंट्स का काम होता है। इस फर्म की यहाँ एक जीनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरी है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स भीखमचन्द लखमीचन्द  
दिगनपाट जि० वर्षा C. P.

रा० ब० नरसिंहदास जानक्रीदास  
वर्षा

मेसर्स प्रयागदास नरसिंहदास  
पुलगाँव ( वर्षा )

मेसर्स प्रयागदास नरसिंहदास  
बरोटा ( वर्षा )

३५

यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है तथा बैंकिंग और लैण्ड एजेंट्स का काम होता है। यहाँ आप की जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है।

रुई का व्यापार तथा बैंकिंग का काम होता है और जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी है।

बैंकिंग, लैण्डलॉर्ड, जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी एवं कोटन का व्यापार होता है।

बैंकिंग, लैण्डलॉर्ड, जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी एवं कोटन और आइलसीड का व्यापार होता है।

इस कर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स रायमल मगनमल हिंगनघाट C. P.—यहाँ कपड़ा-महाजनी लेन-देन तथा जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स चन्दनमल धनराज धारावार ( जि० यशवमल )—कपड़ा और महाजनी लेन-देन का व्यापार होता है।

मेसर्स हीराजान हजारीमल बगी (यशवमल)—कपड़ा और महाजनी का व्यापार होता है।

मेसर्स धनराज तख्तमल पोद्ना जि० बर्वा—यहाँ महाजनी का काम होता है।

मेसर्स पोखराज फांघर हिंगनघाट—कपड़े का काम होता है।

### मेसर्स श्रीराम चतुर्भुज मोहता

इस कर्म के मानिक बोकानेर निवासी माहेश्वरी समाज के मोहता सज्जन हैं। करीब ८५ वर्ष पूर्व मेठ श्रीरामजी और चतुर्भुजजी मोहता ने इसे स्थापित किया, और आपही दोनों सज्जनों के हाथों से व्यवसाय वृद्धि हुई। आपके यहाँ मेठ प्रेम सुखरामजी दत्तक आये। आपने ३५ वर्षों तक कर्म का काम संचालित किया। आप बड़े बड़े संकल्पी, उदार एवं कष्टसहिष्णु थे। आपके यहाँ श्रीयुक्त वीरनारायणजी मोहता दत्तक आये। आपही वर्तमान में इस कर्म के मानिक हैं। अगर सुवार बेमी एवं देरामण्ड सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।  
हिंगनघाट—मेसर्स श्रीराम चतुर्भुज मोहता—इस कर्म पर इजारदारी मालगुजारी व बैटिंग का कारबार होता है।

### मेसर्स रामचरन हनुमानचकम शारदा

इस कर्म के मानिक बड़ी बार्डू ( जोषपुर गांध ) के आदि निवासी हैं। आप लोग माहेश्वरी समाज के शारदा सज्जन हैं। इस कर्म की स्थापना मन्वन् १९३६ में मेठ शिवनारायणजी शारदा ने स्वदेश से आकर हिंगनघाट में मेसर्स शिवनारायण रामचरन के नाम से की और कपड़े का व्यापार आरम्भ किया। कुछ समय में ही कर्म को अच्छी सफलता मिली। मन्वन् १९७२ में इसके मानिक अलग हो गये। अतः मेठ शिवनारायणजी के भ्राता मेठ रामचरनजी के पुत्र मेठ रामदीनजी अपना व्यापार मेसर्स रामचरन रामदीन के नाम से करने लगे। और मन्वन् १९७५ में मेठ रामचरनजी के पुत्र मेठ हनुमानचकमजी ने अपना स्वतन्त्र काम मेसर्स रामचरन हनुमानचकम के नाम से शोता।

भारतीय व्यापारियों का परिचय (तीसरा भाग)



सेठ शिष्यभरणजी गोलेजा (भारतचंद्र)  
भारतचंद्र) चाँदा



याशुवंतरावजी गोलेजा (भारतचंद्र)  
भारतचंद्र) चाँदा



श्री नारायणजी खेर (भारतचंद्र)  
भारतचंद्र) दिगनपाट



सेठ रामगोपालजी भारद्वाज (भारतचंद्र)  
भारतचंद्र) दिगनपाट



सेठ निहालचंद्रजी दोशी (भारतचंद्र)  
भारतचंद्र) दिगनपाट





इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हनुमानचरसजी शारदा तथा आपके पुत्र बाबू अमरचंदजी, बाबू रतनलाल तथा बाबू पनरपामजी हैं। फर्म का प्रधान संचालन सेठ हनुमानचरसजी शारदा करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

दिगनपाट—मेसर्स रामकरन हनुमानचरस—यहाँ कपड़ा, सूत, आदत और लेन-देन का व्यापार होता है।

व्यापारियों के पते

कॉटन मरचेण्ट्स—

मेसर्स जमनाधर पोदार  
 " बंसीलाल अमीरचंद रा० ५०  
 " भिखमचन्द लखमीचन्द  
 " भिखमचन्द रेशचन्द  
 श्री रेशचन्द मोहता मित्त

मेसर्स साधुराम खोलाराम  
 " हरिचन्द बागमल

दैंदर्स—

मेसर्स धुम्रालाल चौदमल  
 " जमनाधर पोदार  
 " पूलचंद सुगनमल  
 " बंसीलाल अमीरचंद  
 " मनसाराय गनेरादास  
 " रेशचंद मोहता  
 " रायमल मगतमल  
 " लालचंद हीराजाल  
 " हरिचंद अमोलचंद  
 " हरिचन्द बागमल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स मोतीराम नन्दराम

मेसर्स रायमल मगतमल

" रामकरन हनुमानचरस  
 " रामदयाल रामचन्द्र  
 " रेशचन्द काळूराम  
 " शिवजीराम राधाकृष्ण  
 " मुजानसिंह मोहता

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स जयराम धीरजी  
 " लक्ष्मीनारायण मनसुखदास  
 " मुजानसिंह मोहता

बाँदी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स आलमचन्द शोभाचन्द  
 " मगतमल गनेरामल  
 " हेमराज जवरीमल

किराना के व्यापारी—

मेसर्स महम्मद जुसब  
 " भगवान करमसी  
 " हस्तीमल कनकमल

जतरल मरचेण्ट्स—

मेसर्स जीया भाई हाजी करीम  
 " वैप्यब अली आदमजी  
 " रहमतुन्ना हलाना



इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हनुमानचरसजी शारदा तथा आरके पुत्र बाबू अमर-चंदजी, बाबू रतनलाल तथा बाबू धनरयामजी हैं। फर्म का प्रधान संचालन सेठ हनुमानचरस-जी शारदा करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

द्विगतपाट—मेसर्स रामकरण हनुमानचरस—यहाँ कपड़ा, सूत, आड़त और लेन-देन का व्यापार होता है।

### व्यापारियों के पते

कॉटन मरचेंट्स—

- मेसर्स जमनाधर पोद्दार  
 ,, बंशीलाल अश्वरचंद रा० ब०  
 ,, भिसमचन्द लखमीचन्द  
 ,, भिसमचन्द रेखचन्द

श्री रेखचन्द मोहता मिल

मेसर्स साधुराम वोजाराम

,, हरिचन्द बागमल

बैँकर्स—

- मेसर्स चुर्नीलाल शौदमल  
 ,, जमनाधर पोद्दार  
 ,, पूलचंद मुगनमल  
 ,, बंसीलाल अश्वरचंद  
 ,, मनसाधर गनेराधर  
 ,, रेखचंद मोहता  
 ,, रायमल मगनमल  
 ,, लालचंद हीरालाल  
 ,, हरिचंद अमोलकचंद  
 ,, हरिचन्द बागमल

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स मोतीराम नन्दराम

- मेसर्स रायमल मगनमल  
 ,, रामकरण हनुमानचरस  
 ,, रामदयाल रामचन्द  
 ,, रेखचन्द काळूराम  
 ,, शिवजीराम राधाकृष्ण  
 ,, सुजानसिंह मोहता

गल्ले के व्यापारी—

- मेसर्स जयराम वीरजी  
 ,, लक्ष्मीनारायण मनसुखदास  
 ,, सुजानसिंह मोहता

शॉदी—छोना के व्यापारी—

- मेसर्स बालमचन्द शोभाचन्द  
 ,, मगनमल गनेरामल  
 ,, हेमराज जवरीमल

किराना के व्यापारी—

- मेसर्स महम्मद जुसव  
 ,, भगवान करमसी  
 ,, हस्तीमल बनकमल

जनरल मरचेंट्स—

- मेसर्स जीया भाई हाजी करीम  
 ,, तैप्यब अती आदमजी  
 ,, रहमतुल्ला हलाना

## काँदा

यह स्थान निजाम स्टेट और सी० पी० प्रान्त के बीच में स्थित है। इसका इतिहास पुराना है। पहले इस स्थान पर गोंड लोगों का अधिकार था। कई वर्षों तक इनके वंशज इसके भासपाग के स्थान पर राज्य करते रहे। चौदा उस समय उनकी राजधानी थी। आज कल भी इन लोगों की बनावे हुई कई प्राचीन वस्तुएँ मौजूद हैं। उनमें से विशेष प्रसिद्ध यहाँ का किला एवं शहर के चारों ओर बनी हुई चहारदिवारी हैं।

यहाँ होने वाले व्यापार में कपास, कोयला आदि प्रधान हैं। यहाँ की पैदावर अरंडी, अजगमी, मिर्ची, कपाम, ज्वारी, चावल, गेहूँ और धो है। गेहूँ यहाँ कम पैदा होता है। इसके अतिरिक्त यहाँ कोयले की खानें भी हैं जिनमें कोयला निकाला जाता है तथा पीली मिट्टी भी यहाँ बहुत होती है। यह मिट्टी रंगने एवं दवाइयों के काम में आती है।

बाहर से आने वाले माल में किराना, कपड़ा, चाँदी, सोना, क्लिडिंग मटेरियल्स आदि हैं। यह स्थान जी० आई० पी० रेल्वे की वर्षा एवं बलारशाह वाली लाइन का स्टेशन है। यहाँ से बी० एन० आर० की छोटी लाइन नागपुर तक गई है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

### मेमर्स अमरचन्द अमरचन्द

इस फर्म के मानिक ओसवाल वैद्य समाज के बीकानेर के निवासी सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ कलेक्ट १०० वर्षों से व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ अमरचन्दजी के द्वारा हुई। आपकी यहाँ के गौड़ राजा नागपुर से यहाँ लाये थे। आपके परचा फर्म के संचालन का भार आपके पुत्र सेठ अमरचन्दजी ने दिया। आपके समय में इस फर्म की बहुत वृद्धि हुई।

वर्तमान में इस फर्म के मानिक अमरचन्दजी के पुत्र सेठ सिद्धचरणजी हैं। फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ चण्डरत्नजी करते हैं। आप नवयुवक हैं। यहाँ की प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओं में आपका हाथ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

चौदा—मेसर्स अग्रचन्द अमरचन्द



यहाँ बैंकिंग, महाजनो देन-लेन, रुई, गल्ला, सोना चोरी आदि का व्यापार तथा आदत का काम होता है।

मेसर्स राय व० नरसिंहदास जानकीदास

इस फर्म का विस्तृत परिषय इसी विभाग के पृष्ठ ३० पर दिया गया है। यहाँ इस फर्म पर बैंकिंग, ऑइलसीड्स और आदत का काम होता है।

कपड़े के व्यापारी—

- मेसर्स फ़तेचन्द किरानचन्द
- ” हीरालाल कृष्णलाल
- ” भीमराज धनराज
- ” रूपजी हीरालाल
- ” जेठमल धनराज
- ” इन्दुचन्द ठाणचन्द

गन्धे के व्यापारी—

- मेसर्स लक्ष्मचन्द वर्धमान

- ” नाना मल्लाना वाणी
- ” सुगनचन्द रतनचन्द

चौदी-सोना के व्यापारी—

- मेसर्स अमरचन्द अग्रचन्द
- ” गम्भीरचन्द मुजानमल

किराना के व्यापारी—

- मेसर्स हाजी दादाभली

## जबलपुर

यह स्थान जी० आर्से० पी०, ई० आइ० आर० और बी० एन० आर० तीनों रेलवे का जंक्शन है। मध्य प्रांत के बड़े २ शहरों में इसकी गिनती है। ई० आइ० आर० की लाईन अज्ञातवादि में यहाँ तक आती है। दूसरी जी० आर्से० पी० यहाँ से शुरू होकर इटारसी तक गई है। यहाँ बंद मैन लाईन में जा मिलती है। तथा बी० एन० आर० की छोटी लाईन यहाँ से बालाघाट होगी हुई गोंदिया एवं नैनपुर होती हुई छिंदवाड़ा तक गई है। यहाँ से सागर, दमोद को मोटरों भी जाती हैं। कमी २ सिपनी तक भी यहाँ से मोटर का प्रबंध हो जाता है। तीनों रेलवे का जंक्शन होने से यहाँ रेलवे में काम करने वाले बहुत से व्यक्ति रहते हैं। रेलवे से एक मील के करीब में बम्बों है। स्टेशन के पास ही यहाँ के प्रमुख व्यापारी सेंट गोकुलदासजी की एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

यहाँ का प्रधान व्यापार चिड़ी का है। इसके पत्रान् सूत एवं साड़ियों के व्यापार का नम्बर है। आम पाम के देशी लोग यहाँ से सूत ले जाते हैं तथा साड़ियों बुन कर लाते हैं। यहाँ साड़ियों यहाँ के व्यापारियों के द्वारा बाहर जाती हैं। यहाँ की साड़ियों सुन्दर और मजबूत होती हैं। इसके मिठा चिड़ी के लिये तो यह शहर भारतवर्ष में मराहूर हो गया है। जिसमें काम कर "शेर छाप" का नाम तो बहुत ही मराहूर है। इसका तथा यहाँ के चोड़ी के व्यापारियों का विरोध तिरु भागे किया जायगा। इसके अलावा यहाँ मेमर्स मौजीताल एण्ड संस नामक फर्म ने हाथ के काम में जाने रबर मोहूर, आम बकर्म बगीरह की दस्तकारी में अच्छा काम किया है।

कन्न-कारखानों में यहाँ एक राजा गोकुलदास काटन मिल नामक कपड़े का मिल है। यह काठकत सुतराती सज्जन के हाथ में है तथा एक लकड़ी का मिल तिमका नाम राजा गोकुलदास सा मिल है नया खुला है। यह मिल भारत के लकड़ी के मिलों में अपना ईजा स्थान रखता है। इसके अतिरिक्त २ पाटेरी बकर्म हैं। जहाँ मिट्टी के सुन्दर बर्तन बनार जाते हैं। यहाँ एक छोटा, नेल का मिल भी है।

यहाँ के प्रधान व्यापारिक स्थान जबलपुरगंज, तिमके पत्ते लाईगंज कहने में, गोंदियागंज,

जिसे पहले मिलीनीगंज कहते थे, सदर, निनारगंज, कोतवाली बाजार आदि हैं। जवाहरगंज में विरोपकर बैंकिंग, कपड़ा और चिन्नी का व्यापार होता है। गोविन्दगंज में बड़े २ जमींदारों की हवेलियाँ हैं तथा गड़े का साधारण व्यापार होता है। कोतवाली बाजार में जनरल मरचेपेटों की दुकानें हैं। इसके अतिरिक्त सोनाहार, कमानियों आदि छोटे २ बहुत से बाजार हैं जहाँ सभी प्रकार का व्यापार होता है। सोनाहार में विरोपकर चाँदी सोने का व्यापार होता है। सदर प्रकाश को कहते हैं। यहाँ यूरोपियन बंग की दुकानें विरोप हैं। शहर में सचाई मालूम होती है। स्तुनिक्षिपैजिटा बगैरह की यहाँ अच्छी व्यवस्था है। जहाँ चारों ओर से रास्ते मिलते हैं। सुन्दरता के लिहाज से यह शहर अच्छा है। जहाँ चारों ओर से रास्ते मिलते हैं वहाँ फन्वारे बगैरह लगे हुए हैं। इससे शहर की सुन्दरता बढ़ गई है। यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

### बैंकर्स

मेसर्स राजा गोकुलदास, जीवनदास, गोविन्ददास

इस फर्म के वर्तमान मालिक देराबक बाबू गोविन्ददासजी मालपाणी हैं। आप इस समय देरा के लिये जेल गये हुए हैं। यह फर्म यहाँ की बहुत प्रतिष्ठित एवं पुरानी फर्म है। इसकी बहुत सी शाखाएँ हैं। यह फर्म जमींदारी का भी बहुत बड़ा काम करती है। इसका हेड आफिस यहाँ है। यहाँ बैंकिंग एवं जमींदारी का काम प्रधान रूप से होता है। इसके अतिरिक्त आपका यहाँ एक "राजा गोकुलदास सा मिल" नामक एक लकड़ी का मिल है। भारतवर्ष के बड़े २ लकड़ी के मिलों में इसका स्थान है। इस फर्म का विरोप परिचय चित्रों सहित देखने वाले सज्जनों को इसी मंथ के प्रथम भाग में धन्वई विभाग में देयता चाहिये।

मेसर्स चन्द्रमान बंसीलाल रा० ब०

इस फर्म का हेड आफिस कामठी है। इसके वर्तमान प्रधान मालिक सर विद्येश्वरदासजी हैं। यह फर्म सो० पी० प्रांत की मराठूर फर्मों में से है। इसकी और भी कई शाखाएँ हैं। व पर प्रायः बैंकिंग व्यापार होता है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इसी मंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के पृष्ठ ११४ में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैंकिंग का व्यापार भी है। इसको स्थायी सम्पत्ति भी यहाँ है। इसका पता कमानियों जयलपुर है।



इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स ईसाराज बख्तावरचन्द  
सदरबाजार जयलपुर

यहाँ महाजनी लेनदेन, मकान तथा बंगले के किराये का काम होता है।

## चाँदी-सोने के व्यापारी

मेसर्स चौधमल चाँदमल (भूरा)

आप लोग ( बीकानेर ) देशनोक के आदि निवासी हैं। पर लगभग १०० वर्ष पूर्व से यह परिवार जयलपुर में ही रहता है। सेठ परशुरामजी सबसे प्रथम देश से यहाँ आये और इस प्रकार यह परिवार यहाँ बस गया। सेठ परशुरामजी के दूसरे भाई लोग सीवनी चने तरे भनः जयनपुर में फेवल आर ही ठहरे रहे। आपके स्वर्गवासी हो जाने के बाद आपके पुत्र सेठ चौधमलजी ने अपना स्वतन्त्र कार्य किया और आपके बाद आपके पुत्र चाँदमलजी ने ६० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से की। प्रथम आपने अपनी फर्म पर सोने, चाँदी के व्यापार का काम आरम्भ किया। आप बड़े अनुभवी एवं व्यापारदक्ष थे अतः आपसे फर्म के काम को अच्छा उत्तेजन मिला। जिस प्रकार फर्म वृद्धि करती गई उसी प्रकार अन्य प्रकार के व्यवसाय की वृद्धि की गई। आप बड़े प्रतापी महापुरुष थे आपने फर्म को अच्छी अवस्था पर पहुँचा दिया। आपका स्वर्गवास ७० वर्ष की आयु में सम्बन्ध १९७९ को हुआ। आपके बाद फर्म का सारा कारबार आपके पुत्र बाबू राजमलजी, शिवभद्रामजी, बाबू मोतीलालजी और बा० हीरालालजी ने संचालन किया जो आज भी कर रहे हैं।

वर्तमान में फर्म के मालिक सेठ राजमलजी, सेठ शिवभद्रामजी, बा० मोतीलालजी और बा० हीरालालजी भूरा हैं।

बा० मोतीलालजी सन् १९२१ से स्थानीय यूनिवर्सिटी के सदस्य हैं तथा स्थानीय और भी सार्वजनिक संस्थाओं के आर सदस्य एवं संचालक हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स चौधमल चाँदमल  
सोना हार बाजार  
जयलपुर  
T. A. Bhura

सोना, चाँदी का थोक तथा फुटकर तथा चाँदी, सोने के सभी प्रकार के डिजाइन के जेवरान का व्यापार होता है महाजनी लेन-देन तथा गौंट गिरों के काम भी यह फर्म करती है साथ ही स्थानीय सम्पत्ति का भी काम होता है। तथा जवाहिरान और गने का काम भी होता है।

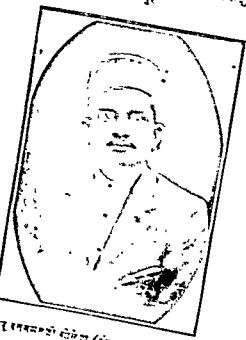
भारतीय व्यापारियों का परिचय —  
 ( तीसरा भाग )



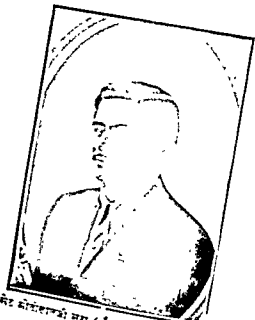
सेठ अनादप्रसादजी जोशी (हंमसाज बरनावावावा)  
 उदरपुर



सेठ चान्द्रकांतजी भूषा (बौदमन चान्द्रमठ)  
 उदरपुर



सेठ अनादप्रसादजी जोशी (हंमसाज बरनावावा)  
 उदरपुर



सेठ अनादप्रसादजी जोशी



## कपड़े के व्यापारी

मैसर्स रामचन्द्र जवाहरमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान विमाऊ ( जम्बुर-स्टेट ) का है। आज तक छपवात वैश्य समाज के सजन हैं। करीब ६० वर्ष पूर्व इसका स्थापन मेठ रामचंद्रजी व भारते पुत्र जवाहरमलजी के हाथों से हुआ। फर्म के स्थापन के कुछ समय पश्चात् सेठ साइब रोय ने पुत्र तिनका नाम कमरा: बंसीपरजी तथा प्रजलातजी या भी आ गये। आज लोग ने सम्मिलित रूप से फर्म की अर्द्धी सम्पत्ति की। शुरू से ही यह फर्म कपड़े का व्यापार करती आ रही है। आजकल कपड़े के व्यापारियों में यहाँ यह फर्म पहली ही मानी जाती है।

इसके वर्तमान मालिक सेठ जुहारमलजी के पुत्र रामदुमारजी, सेठ वृजलातजी के पुत्र सत्यनारायणजी एवं सेठ जुहारमलजी के पुत्र रदनलातजी हैं। इसका संवाजन सेठ राम-दुमारजी एवं सत्यनारायणजी करते हैं। रदनलातजी अभी पढ़ते हैं।

इस फर्म की ओर से यहाँ एक सुन्दर धनराज बना हुई है। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जबलपुर—मैसर्स रामचन्द्र जवाहरमल  
जवाहरगंज

} यहाँ कपड़े के थोक माल का व्यापार होता है।

मैसर्स रामनारायण किशनदयाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ फनदयामदासजी पोद्दार हैं। आज अभी नापालिक हैं। इस फर्मका हेड आफिस बम्बई है। इसकी और भी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं। प्रायः सभी बम्बई टाटा संस लिमिटेड की भित्तों के कपड़े का व्यापार होता है। यहाँ भी इस फर्म पर इसी कपड़े का व्यापार होता है। यहाँ इसका पता जवाहरगंज जबलपुर है। इसकी विरोध जानकारी के लिए इसी मन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में पेज नं० ४६ में चेताराम जेठवाज का परिचय देखना चाहिये।

मैसर्स शारदानसाह फूलचन्द

इस फर्म की स्थापना १८७६ ई० में हुई थी। इसके पूर्व इसका नाम नथनल शारदानसाह पड़ता था पर सन् १९२३ से छपरोह नाम से काम काज होता है सेठ नथनलजी इस समय काम काज से रिटायर हो गये हैं।

इस समय का० फूलचन्दजी स्वामी प्रथम मालिक हैं।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जयलपुर—मेसर्स शारदाप्रसाद फुलचन्द  
सरस्वातार  
T. A. Phulchand

} यहाँ कपड़ा एवं जनरल मरकेटरीय का  
व्यापार होता है ।

## सूत के व्यापारी

मेसर्स भूरामल रामदयाल

भारत लोग सुत के रहने वाले अथवा जैस्य समाज के सज्जन हैं । लगभग ६० वर्ष पूर्व जयलपुर में मेसर्स भूरामलजी ने उपरोक्त नाम से फर्म खोल सूत का व्यापार आरम्भ किया था । अपने अगली फर्म का संवाहन अशुद्धे ढंग से किया पर फर्म की विशेष उन्नति आपके पुत्र सेठ रामदयालजी के हाथों हुई ।

वर्तमान में इस फर्म का संवाहन सेठ रामदयालजी के पुत्र सेठ तुलसीदासजी और सेठ रामदयालजी करने हैं ।

वर्तमान में यह फर्म प्रधानरूप से सूत का व्यवसाय करती है और साथ ही महाजनी लेन-देन और सहायता का काम भी होता है । अहमदाबाद के पाम पेटलाद के दोनों कारखाने की, यहाँ रणई का काम होता है, यह फर्म एजेण्ट है ।

मेसर्स भूरामल रामदयाल की धार्मिक कार्यों की ओर भी अथवा अनुराग है और यही कारण है कि इससे मातियों की ओर से जयलपुर के लाईंगिंग में एक धर्मशाला बनी हुई है । वर्तमान के और आर्यापट पर भी इसकी ओर से धर्मशाला बनी हुई है ।

सेठ भूरामलजी का देहावसान सम्बन् १९०४ में तथा सेठ रामदयालजी का सम्बन् १९१८ में हुआ ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है —

मेसर्स भूरामल रामदयाल,  
संवाहन जयलपुर

} यहाँ सूत का काम होता है ।

मेसर्स भूरामल रामदयाल  
संवाहन जयलपुर एमोर् C P

} यहाँ कपड़ा, डिगला और लकड़ा का काम होता है ।





स्व. सेठ भ्रामचारी ( भ्रामचल रामदास ) प्रबलपुर



• सेठ रामचारी ( रामचल रामदास ) प्रबलपुर



सेठ रामचारी ( रामचल रामदास ) प्रबलपुर

## फ़ुटकर व्यापारी

मेसर्स रामप्रसाद गंगाप्रसाद रावत

आप लोग आदि निवासी रियासत विजावर (मुन्देल खण्ड) के रहने वाले हैं पर लगभग ८० वर्ष से आप लोग जबलपुर में रहते हैं। इस फर्म को स्थापना लगभग ८० वर्ष पूर्व सेठ रामप्रसादजी रावत ने उपरोक्त नाम से आरम्भ कर किराना, पीतल के बर्तन तथा कपड़े का काम आरम्भ किया। पर ज्यों २ फर्म ने उन्नति की त्यों २ व्यवसाय की वृद्धि की गई। और कुछ ही समय में आपने फर्म को अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचाया। आपका स्वर्गवास सम्बन्ध १९४६ के लगभग हुआ था। आपके बाद आपके पुत्र बाबू हजारीलालजी ने फर्म के कार्य को संचालित किया और उसी प्रकार अपनी फर्म को प्रतिष्ठित बनाये चले जा रहे हैं।

इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू हजारीलालजी बाबू गोविन्ददासजी तथा बाबू शारदानन्ददासजी हैं। इस फर्म का प्रधान संचालन बाबू हजारीलालजी करते हैं और आपकी देख-रेख में आपके पुत्र बाबू गोविन्ददासजी फर्म के काम काज का संचालन करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स रामप्रसाद गंगाप्रसाद रावत मिलीनी गंज जबलपुर	}	किराना तथा मत्ले का काम होता है तथा जमींदारी का काम भी होता है।
---	---	--

## मेसर्स मोहनलाल हरगोविन्ददास

आप लोग अहमदाबाद निवासी वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ३० वर्ष पूर्व सेठ मोहनलालजी तथा आपके भाई सेठ हरगोविन्ददासजी ने जबलपुर में की और बीड़ी का उद्योग आरम्भ किया। इस लाइन में फर्म ने बहुत अच्छी सफलता प्राप्त की। आरम्भ में आपने कच्चापट पर कार्य कराया और स्वयं सामान देकर बीड़ी बनवाया करते। इस प्रकार बीड़ी पैकार करके बाहर दूर २ के स्थानों में प्रजेष्ट भेज कर आपने बीड़ी की खपत का संगठित उद्योग किया फलतः थोड़े समय में ही व्यापार चला निकला और आज देश के सभी स्थानों में इनके माल की अच्छी खपत होती है। इस फर्म का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क "शेर छाप" के नाम से सुविख्यात है।

इसकी उन्नति दोनों ही भाइयों की औद्योगिक परदर्शिता का परिणाम है। सेठ हरगोविन्ददास का स्वर्गवास लगभग ८ वर्ष पूर्व हो गया। आपके बाद सेठ मोहनलालजी काम संचालित करते रहे पर दो वर्ष बाद उनका भी स्वर्गवास हो गया। दोनों के निःसन्धान होने के कारण





व्यापारियों के पते

कपड़े के व्यापारी—

- मेसर्स अच्युतलसकूर इम्राहिम, जवाहरगंज
- ” टोडरमल मानिकचन्द ”
- ” घनजी मुरारजी ”
- ” सुभ्रीलाल बप्पूलाल ”
- ” रामचन्द्र जवाहरमल ”
- ” रामनारायण किरानदयाल ”
- ” हाजीकरीम नूरमहम्मद ”
- ” हीरचन्द मानमल ”

सोना-चाँदी के व्यापारी—

- मेसर्स हुंजीलाल जानकीप्रसाद सोनाहारई
- ” चौधमल चाँदमल ”
- ” बलदेवप्रसाद नन्डूलाळ ”
- ” प्रानमुष रूचचन्द छुनीहारई ”
- ” प्रेमसुष फतेचन्द ”
- ” सुभ्रीलाल सुरालचन्द ”
- ” महेरीलाल सराळ सोनहारई ”
- ” मन्डूलाळ छकोहीलाल ”

गहने के व्यापारी—

- मेसर्स कौदूमल दशरथलाल, निवारगंज
- ” गुलाबचन्द कपूरचन्द भेंवरलाल ”
- ” टाकुरप्रसाद दशादीन ”
- ” रामदीन देबीदीन ”
- ” हीरजी गोविन्दजी ”
- ” भीगोपाल रामधर ”

बैंकर्स—

- दी अलाहाबाद बैंक लिमिटेड
- दी इम्पीरियल बैंक लिमिटेड
- मेसर्स गोकुलदास, जमनादास, गोविन्ददास
- ” भगवानदास चेतूलाळ
- दी भार्गव बैंक

विड़ी के व्यापारी—

- मेसर्स अनवरस्तौ महयूचर्यौ, हनुमानवाल
- ” मगनलाल भिखाभाई, जवाहरगंज
- ” मोहनलाल हरगोविन्दास ”
- ” राधाकृष्ण नारायणदास

सूत के व्यापारी—

- मेसर्स फूलचन्द नत्यूलाळ
- ” भूरामल रामदयाल

किराना के व्यापारी—

- मेसर्स बालिमहम्मद हाजीअली
- ” परीलाल फल्डूलाळ

जनरल मरचेण्ट्स—

- दी अकबरी शाप, कोववाली बाजार
- हा० अच्युलाभाई ”
- मेसर्स मुझेमानजी गानीभाई ”
- ” सुलेमानजी होसाभाई ”

लोहे के व्यापारी—

- मेसर्स बेनीप्रसाद हरिचन्द्र, कम्पनीगेट

### मेसर्स गुलाबचंद लखमीचंद दुल्लिचंद

इस फर्म के मालिक यहाँ के मूल निवासी हैं। यह फर्म यहाँ बहुत पुराने समय से व्यापार कर रही है। करीब ६० वर्ष पहले से इस पर मेसर्स गुलाबचंद डालचंद के नामसे व्यापार होता था। और करीब ५ वर्ष से कररोफ नाम से व्यापार हो रहा है। शुरु से ही यह फर्म महाजनी लेनदेन का व्यापार करती चली आ रही है। इसकी विशेष उन्नति युद्ध के समय में हुई। उस समय इस फर्म के पाम कई मित्तों की एजेंसी थी। आज कल सिर्फ जलगाँव मित्त की एजेंसी रह गई है। वह भी आपके खचा के पाम है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ लखमीचंदजी और सेठ दुल्लिचंदजी हैं। आप लोग दरबार बैरग जागिरे जैन सन्तान हैं। आप ही वर्तमान में फर्म का संचालन करने हैं। आप सिन्धि एवं मरोरा मण्ड सन्तान हैं। यहाँ की प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओं से आपका सम्बन्ध है। इस फर्मकी ओर से यहाँ बड़े जैन मन्दिर के पाम एक धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिषद इस प्रकार है—

व्यापार—मेसर्स गुलाबचंद लखमीचंद दुल्लिचंद T. A. Modl.	}	यहाँ बैंकिंग, टुंडी और महाजनी लेनदेन का व्यापार होता है।
व्यापार—मेसर्स गुलाबचंद दुल्लिचंद गोबीचौध	}	यहाँ चांदी-सोने का व्यापार होता है।

### वर्तमान गोपालदास बल्लभदास

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ जमनादासजी मालपाणी हैं। आपका हेड आफिस जयपुर में है। यहाँ यह फर्म बहुत पुरानी है। इसकी कई शाखाएँ हैं, जिनमें से एक शाखा यहाँ की है। यहाँ जमींदारी एवं बैंकिंग का काम होता है। इस फर्म का विस्तृत परिषद यिनो एक्टिव इन्वी संघ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पत्र नं० ४० में देखना चाहिये।

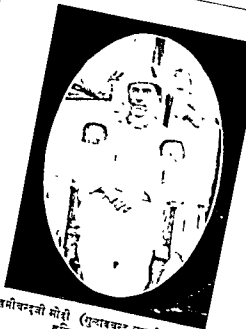
### वर्तमान बंसीदास रायरशाहूर

इस फर्म का नाम बहुत मशहूर है। इसका हेड आफिस कामठी है। सी० पी० ग्रंथ में इस फर्म की बहुत ही शाखाएँ हैं। प्रत्येक स्थान पर यह फर्म कस्टमर बैंकरो में से है। इसके वर्तमान बन्धक सेठ का विवेकदासजी काणा हैं। आपका विस्तृत परिषद राजपूताना विभाग

भारतीय व्यापारियों का परिचय  
( तीसरा भाग )



श्री० खंडपालजी (खंडपालजी कुटुंबकर)  
सागर



श्री० लक्ष्मीचन्द्रजी मोदी (गुलाबचन्द्र लक्ष्मीचन्द्र  
दुल्लिचन्द्र) सागर



खंडपालजी (खंडपालजी कुटुंबकर)  
सागर



श्री० लक्ष्मीचन्द्रजी मोदी (गुलाबचन्द्र लक्ष्मीचन्द्र  
दुल्लिचन्द्र) सागर



में पेज नं० ११४ में इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैकिंग व्यापार करती है।

मध्य

मेसर्स चिन्तामन दुर्गाप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक ला० दुर्गाप्रसाद, ला० चौखेजाल, ला० दुलारेलाल एवं ला० तुनसीराम हैं। आप चारों ही भाई इस फर्म के संचालन का कार्य करते हैं। यह फर्म १८ वर्ष से स्थापित है। इसके स्थापक सेठ चिन्तामनजी थे। आप लोग दैह्य क्षत्री समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सागर—मेसर्स चिन्तामन दुर्गाप्रसाद  
कटरा

यहाँ किराने का अच्छा व्यापार होता है।

सागर—मेसर्स चिन्तामन छोटेलाल  
बड़ा बाजार

यहाँ थोक और खुदरा दोनों प्रकार का कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स हीरालाल टीकाराम

इस फर्म के मालिक यहाँ के मूल निवासी हैं। आप लोग गोजा पूरब वैश्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब ४० वर्षों से व्यापार कर रही है। इसकी स्थापना सेठ हीरालालजी तथा आपके पुत्र सेठ टीकारामजी के द्वारा हुई। शुरू से ही यह फर्म किराने का व्यापार करती आ रही है। इसकी विशेष तरक्की सेठ टीकारामजी के द्वारा हुई। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमान में इसके संचालक सेठ शिवप्रसादजी, रोभारामजी और बालचन्द्रजी हैं। आप मलैया के नाम से संबोधित किये जाते हैं। सेठ शिवप्रसाद जी सी० पी० चौंसिल के मेम्बर थे मगर देरा-प्रेम की बजह से आपने इससे इस्तीफा दे दिया। आप मिलनसार हैं। आपके दोनों भाई भी शिक्षित एवं मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सागर—मेसर्स हीरालाल टीकाराम  
कटरा

यहाँ कपड़ा, धी और किराने का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

सागर—मेसर्स शिवप्रसाद शोभाराम हाकरगंज	} यहाँ गल्ले एवं आड़त का काम होता है।
सजिनपुर—मेसर्स हीरानाथ टीकाराम	
बनोद—मेसर्स हीरानाथ टीकाराम मोंगंज	

**व्यापारियों के पते**

**गन्धों के व्यापारी—**

- मेसर्स कन्देराणा कृष्णचन्द्र, हाकरगंज
- " कारेणान कुन्दननाथ "
- " कारेणान नाथूराम "
- " दुर्गाप्रसाद गणेशदास "
- " दुर्गाप्रसाद राजाराम "
- " नाथूरामदास बाबूनाथ "
- " कदरचंद जगन्नाथ "

**तेल के व्यापारी—**

- मेसर्स कारेणान कुन्दननाथ, हाकरगंज
- " कारेणान नाथूराम "
- " हीरानाथ टीकाराम, कटरा

**दियने के व्यापारी—**

- मेसर्स कारेणान राजीनाथ, बड़वावाजार
- " चिन्तामन दुर्गाप्रसाद, कटरा
- " पद्मोत्तमदासद शर्मिष्ठा "
- " राजाराम मुन्नालाल "
- " हीरानाथ टीकाराम "

**बनोद-बनोद के व्यापारी—**

- मेसर्स बन्दायान शर्मिष्ठा १० ब०
- " बन्दायान शर्मिष्ठा, बड़वावाजार
- " बन्दायान शर्मिष्ठा, बड़वावाजार

**कपड़ों के व्यापारी—**

- मेसर्स उदयचंद बाबूनाथ
- " कन्देयानाथ पूरनचंद
- " गणेश हीरानाथ
- " गिरधारीनाथ मुन्नीलाल
- " हाजूरचंद धरमचंद मोदी
- " नाथूराम मुन्नालाल
- श्या० ब० फकीर महम्मद खमीमा
- " मुन्नीलाल पूरनचंद
- मेसर्स राजीनाथ कमरिया
- " रामकिशन मोनीराम
- " हजारीनाथ बाबूनाथ ( गून )

**जनेरल मरचेण्ट्स—**

- मेसर्स कानिष्ठा मनिहार, बड़वावाजार
- " कृतीष्ठा मनिहार "
- " गुलाबचंद जौहरी "
- " रत्नचंद दीपचंद "
- " कृष्णचंद जौहरी "

**बोड़ी के व्यापारी—**

- मेसर्स कानिष्ठा अम्बालाल, कटरा
- " जंग दिगम्बीरदास, बड़वावाजार
- मेसर्स भगवानदास शोभालाल, बड़वावाजार
- " मोहनलाल हरालालदास
- " कन्दोभाई बचराणा

## दमोह

यह जी० आर्द० पी० रेलवे की कटनी-दीना बाजी मेंच सार्वन पर अपने ही नामके स्टेशन के पास बसा हुआ है। इनकी बसावट साक एवं सुधरी है। गंज बाजार तो यहाँ का बहुत ही अच्छा बना है। यहाँ का प्रधान व्यापार गन्ने का है। यहाँ में तीन बार स्टेशन आगे गनेसार्गज नामक स्थान पर कपास काकी माया में पैदा होता है। यहाँ त्रिनिग एवं प्रेमिंग पैकटरी भी है। यहाँ पैदा होने वाली वस्तुओं में विल्ली, गुवार, रामविल्ली, सरसों, पावल, ( बड़िया ) गेहूँ ( जलालिया ) चना, महुआ, गुल्ली, अलसी आदि हैं। ये ही वस्तुएँ यहाँ में बाहर भी जाती हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ धंगला एवं कपूरी पान और परवल भी बहुत पैदा होते हैं। पास के जंगल में गोंद, जलाऊ लकड़ी, इमारती लकड़ी, पोपला एवं पत्थर होता है। बाहर से आनेवाले माल में विशेष कर दाबेभर, किराना, कपड़ा, सूत आदि प्रधान है। यहाँ किसी किसम के कल-कारखाने नहीं हैं।

धर्मशाला बना रखी है। यहाँ से जबलपुर और सागर मोटरें जाया करती हैं। तोल यहाँ प्रायः अंग्रेजी ही है।

यहाँ के व्यापारियों का परिषय इस प्रकार है—

मेसर्स फन्दैपालाल हुकुमचंद  
 इस फर्म का हेड आफिस सागर में है। यहाँ यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसके वर्तमान मालिक एवं प्रधान संचालक मानक चौक वाले चौधरी हुकुमचन्द हैं। यह फर्म यहाँ १ साल से काम कर रही है। यहाँ पर गन्ने का व्यापार एवं आदत का काम होता है। इसका पूरा परिषय बिना सदिह इसी ग्रन्थ में सागर के साथ दिया गया है। यहाँ इस हुकान का संचालन वा० रामचन्द्रजी करते हैं।

मेसर्स भूरामल रामदयाल  
 इस फर्म का हेड आफिस जबलपुर में है। यहाँ यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित समझी जाती है।



इसके वर्तमान मालिक बाबू कन्हैयालालजी तथा आपके भाई रतनचन्द्रजी हैं। आप लोग दिगम्बर जैन परिवार जाति के सज्जन हैं।

इस फर्म की ओर से कटनी में जैन पाठशाला नामक संस्था है जिसमें सभी जातियों के बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करके उसे सार्वजनिक स्वरूप दिया गया है। इसी प्रकार इसके साथ ही एक छात्रावास भी है जहाँ छात्र विद्याध्ययन करते हुए रह भी सकते हैं। इस फर्म के उद्योग से एक कन्या पाठशाला भी अभी हाल में खोली गई है जहाँ अच्छी संख्या में बालिकाएँ आती हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स सवाई सियई कन्हैयालाल गिरधारीलाल, रघुनाथ गंज कटनी	}	यहाँ कपड़ा तथा बँकिंग का बहुत बड़ा काम होता है।
--	---	--

### मेसर्स राजाराम सीताराम

आप लोग बनारस के रहनेवाले वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म के आदि संस्थापक बाबू राजारामजी ने लगभग २५ वर्ष पूर्व कटनी में मेसर्स नारायणराम बिहारीलाल के नाम से गल्ले की भाड़त और तम्बाकू के व्यवसाय को आरम्भ किया था जो क्रमशः बढ़ति करता गया और वर्तमान में इस व्यवस्था पर पहुँचा है। लगभग १० वर्ष हुए जब बाबू राजारामजी ने अपने तथा अपने भाई के नाम से यह फर्म उपरोक्त नाम से आरम्भ कर दी। बाबू राजारामजी का स्वर्गवास लगभग ४ वर्ष हुए हो गया है।

वर्तमान में इस के मालिक स्वयं राजारामजी के भाई बाबू राधोसाहू तथा राजारामजी के भतीजे पन्नालालजी हैं।

इस फर्म का काम-काज आप दोनों ही सज्जन देखते हैं। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स राजाराम सीताराम हनुमानगंज कटनी	}	गल्ला तथा तम्बाकू का काम प्रधानरूप से होता है और सभी प्रकार की कमीरान एजेन्सी का काम करते हैं।
मेसर्स नारायणराम भैरवप्रसाद रेरामचन्द्र बनारस	}	यहाँ मद्रासजी लेनदेन का काम होता है।





श्री ज्योतीराज सराफ ( सिविलियन इन्जिनियर ) बननी ।



श्री नन्दलालजी मिश्र ( सऊद मिश्र कर्मचालक सि-  
विलियन ) बननी ।



श्री ज्योतीराज को सराफ ( सिविलियन इन्जिनियर ) बननी ।



श्री रामजी प्रसादजी सराफ ( सिविलियन इन्जिनियर )  
बननी ।

### मेसर्स राधेलाल हनुमानप्रसाद

आप लोग मिर्जापुर निवासी एण्डेलवाल जाति के महानुभाव हैं। बाबू राधेलालजी ने लगभग ३० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना उपरोक्त नाम से यहाँ की थी। इस फर्म पर आरम्भ में लाख और कमीशन एजेन्सी का काम आरम्भ किया गया जो अभी तक बराबर हो रहा है। यही कारण है कि यह फर्म लाख का प्रधान काम कर रही है और साथ ही दूसरे सभी प्रकार के माल की कमीशन एजेन्सी का काम होता है। इस फर्म के वर्तमान मालिक बाबू राधेलालजी तथा बाबू हनुमान प्रसादजी हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय यों है—

मेसर्स राधेलाल हनुमानप्रसाद  
हनुमानगंज कटनी

} यहाँ लाख का प्रधान व्यापार होता है तथा सभी प्रकार के माल की कमीशन एजेन्सी का काम होता है।

### मेसर्स शिवलाल जुहारमल

इस फर्म के वर्तमान मालिक स्व० सेठ जुहारमलजी के पुत्र सेठ जयदयालजी हैं। आप अमवाल बैरय समाज के सचिव सज्जन हैं। आपकी फर्म को करीब ५० वर्ष पूर्व आपके पितामह ने स्थापित की थी। जिस समय फर्म स्थापित की गई थी उस समय आपके पितामह की साधारण स्थिति थी। इसकी सन्नति आपके पिताजी जोहारमलजी के समय में हुई। और विरोध तरफों आने ही के समय में हुई। आने की व्यापारिक नीति ही की वजह से फर्म ने यहाँ अच्छा नान पैदा किया। आने यहाँ स्टेशन पर एक सुन्दर धर्मशाला भी बनवाई है। आपके पुत्र भी निवासजी कपड़े की दुकान का संचालन करते हैं। सेठ श्री निवासजी के ४ पुत्र हैं। बड़े बा० कमलामप्रसादजी फर्म का संचालन करते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कटनी—मेसर्स शिवलाल जुहारमल

} यहाँ गन्ना, धी, किराना, घूना, सिमेंट का व्यापार और आइव का काम होता है। यह फर्म कटनी में स्थित ब्रैड सिमेंट की सब एजेंट है।

कटनी—श्री सत्यनारायण  
शहर भण्डार

} यहाँ खादी वगैरह देशी

व्यापारियों के पते

कपड़े के व्यापारी—

- मेसर्स कन्हैयालाल गिरधरलाल
- ” गोविन्द बेणीमाधव
- ” टोडरमल कन्हैयालाल
- ” विन्नायन बलभद्रदास
- ” सीताराम जयदयाल
- ” हलकेलाल कल्दलाल

गस्ते के व्यापारी—

- मेसर्स सुरीराम किरानप्रसाद
- ” रामप्रसाद शिवप्रसाद
- ” राजाराम सीताराम
- ” रामरारण नत्थलाल
- ” रामदाम मद्दादेव
- ” हरकिशुन रामकिशुन

किराने के व्यापारी—

- मेसर्स अयोध्याप्रसाद श्रीकृष्ण
  - ” बलदेव प्रसाद कुंजविहारी
  - ” महमद उसमान कच्छी
  - ” रामचन्द्र भैयालाल
  - ” धुन्दावन नारायणदास
- घोंदी-सोने के व्यापारी—
- मेसर्स अमृतलाल शांतिलाल
  - ” मुनईलाल सरयूप्रसाद
- लाह के व्यापारी—
- मेसर्स मन्नालाल वल्लभदास
- पी के व्यापारी—
- मेसर्स प्रेममुख रामेश्वर
  - ” शिवलाल जुहारमल
- जनरल मरचेन्डिस—
- मेसर्स मुर्ता अहमद गुलाम हुमेन
  - ” छप्पेलाल रामकिरान

## विलासपुर

यह स्थान बी० एन० आर की हवड़ा नागपुर वाली मैन लाइन का जंक्शन है। यहाँ से एक मांच टाइन कटनी तक गई है। इस शहर की बसावट अच्छी है। इसके पास बहुत जंगल है। जंगली पैदावार जैसे लकड़ी, मोम, राहद, पीली मिट्टी वगैरह इस जंगल में काफी होती है।

यहाँ का प्रधान व्यापार गल्ले का है। जो यहाँ से बाहर जाता है। गल्ले में भी चॉवल का भाग ब्यादा है। यहाँ का चॉवल सस्ता एवं अच्छा होता है।

यहाँ की और आम-बास की जनसंख्या में विरोप नम्बर सतनामी और गौड़ लोगों का है। येही लोग जंगलों की पैदावार लाते हैं तथा मजदूरी करते हैं। इनके सामाजिक नियम बड़े भिन्न हैं। इनमें नैतिक चरित्र की बड़ी कमी रहती है। यहाँ का पानी स्त्रियों के लिये विरोप मुफ़्त माना जाता है।

आस-बास जंगली स्थान था जाने से पास में कोई बड़ा शहर नहीं है। अतएव आस-बास के रहने वाले अपनी आवश्यकता की पूर्ति यहाँ से पूर्ण करते हैं। अतएव यहाँ कपड़ा, किराना वगैरह काफी मिक्कदार में बाहर से आता है। सूत भी यहाँ काफी आता है। यहाँ के व्यापारियों के पास बहुत से मित्रों के कपड़े एवं सूत की एजेंसियों हैं। जिनका विरोप परिषद इस प्रकार है।

### मेसर्स बबसीराम गुरुमुखराय

आप लोग लक्ष्मणगढ़ निवासी अमवाल समाज के जालोदिया सज्जन हैं। इस कर्म की स्थापना लगभग सम्बन् १९५५ में सेठ गुरुमुखरायजी ने की थी और आपने कपड़े का काम आरम्भ किया जो अभीतक आपकी फर्म बराबर करती जा रही है। आप व्यापारकुशल एवं अनुभवी व्यक्ति थे अतः आपने अपनी फर्म को अल्पकाल में ही अच्छी अवस्था पर पहुँचा दिया। आपकी फर्म वर्तमान में विलासपुर की अग्रगण्य फर्मों में मानी जाती है।

इस कर्म पर प्रधानरूप से कपड़े का काम तथा राय सा० रेखचन्दजी मोहवा द्विगनवाट



मेसर्स बच्छराज अमोलकचन्द बजाज

आप लोग लक्ष्मणगढ़ निवासी अमवाल वैश्य समाज के बजाज सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना २० वर्ष पूर्व छेठ रामेश्वरजी बजाज ने बिलासपुर में की थी। आपने आरंभ में कपड़े और सूत का व्यापार आरम्भ किया और साथ ही गल्ले की आदत का काम भी आरम्भ किया था। इसके पूर्व इस फर्म के मालिक सेठ रामेश्वरजी कपड़े का अच्छा व्यापार करते थे जब आपने अपनी तपरोक नाम से फर्म खोली तो आपको शीघ्र ही सफलता मिली और आपने फर्म को अलकाल में ही अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया। फलतः वर्तमान में यह फर्म कपड़े की थोक बिक्री, सूत की गाँठों की बिक्री करती है तथा पेटलाद की नारायण भाई केशीलाल मिल की रंगीन सूत की एजेन्सी इसके पास है इसके सिवा मेसर्स सौंवराम राम-प्रसाद मिल अकोला की सूत की एजेन्सी तथा गल्ले की आदत का काम है जिसमें माल पाहर भेजा जाता है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामेश्वरजी बजाज तथा आपके भतीजे बाबू बच्छराजजी तथा बाबू अमोलकचन्दजी बजाज (स्व० शिव भगवान बजाज के पुत्र) हैं। सेठ रामेश्वरजी बजाज स्थानीय सभी धार्मिक कार्यों में अच्छा भाग लेते हैं और इसी फर्म से अच्छी सहायता देते रहते हैं।

इस फर्म के मालिक के भाई स्व० शिवभगवानजी लगभग ४० वर्ष पूर्व स्वदेश से आए थे आपने आकर यहाँ व्यापार का सिज़सिला जमाया। और काम आरम्भ किया इस प्रकार व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश कर लगभग २० वर्ष पूर्व बाबू रामेश्वरजी ने आरम्भ किया।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स बच्छराज अमोलकचन्द  
बिलासपुर C. P.

} यहाँ कपड़ा, सूत की थोक बिक्री और गल्ले की आदत का काम होता है।





इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ विश्वरदासजी हागा तथा आपके पुत्र सेठ शिवदासजी हागा ए० एल० सी० तथा सेठ सूरजराजनजी हागा हैं ।

सेठ शिवदासजी हागा के एक पुत्र हैं जिनका नाम बाबू स्वालदासजी है ।  
इस फर्म का प्रधान काम सेठ शिवदासजी करते हैं और आपके छोटे भ्राता सेठ सूरजराजनजी मालगुजारी का काम देखते हैं ।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स करमोरचन्द कपूरचन्द  
सदरबाजार रायपुर

मेसर्स सेठ शिवदासजी हागा  
सदरबाजार रायपुर C. P.

} यहाँ आपका हेड ऑफिस है तथा यहाँ लैण्डर्जॉर्ड्स, बैंकर्स और गल्ले का काम होता है ।  
} यहाँ आपका हरद्व विभाग है । तथा रायपुर डि० के जंगलों में हथों के सेक्टर में सीमन में एजेन्सियाँ रहती हैं ।

मेसर्स चांदमल बीरचंद

इस फर्म का हेड ऑफिस आगरा ( यू० पी० ) है । इसके वर्तमान मालिक सेठ बीरचंद जी हैं । यह फर्म यहाँ बड़ी दुकान के नाम से मराहूर है । इस फर्म की बहुतसी शाखाएँ हैं । जिनका विल्टन परिचय इसी ग्रंथ के इसी भाग में आगरा विभाग में छापा गया है । यहाँ इसका पता सदर बाजार है । इस पर यहाँ बैंकिंग, हुंडी, बिट्टी और महाजनी देन-लेन का काम होता है । इस फर्म के अंदर से बजौदा बाजार डि० के १० गाँव जमींदारों में हैं । अतएव उनका भी काम इसी फर्म पर होता है ।

मेसर्स रामचन्द्र रामराजनदास रा० व०

इस फर्म के वर्तमान मालिक सर वित्सेसरदासजी हागा हैं । यह फर्म सी० पी० में बहुत मराहूर है । इसकी कई स्थानों पर शाखाएँ हैं । इसके अतिरिक्त कई मिल, जिनिंग प्रेसिंग फैक्टरियों और कोयले की खानें आदि हैं । इस फर्म पर यहाँ बैंकिंग और हुंडी बिट्टी का व्यापार होता है । इसका पता सदर बाजार है । इसका विल्टन परिचय वि० सदिह इसी ग्रंथ के प्रथम भाग के मेसर्स बंसोलाज अबीरचन्द के नाम से राजपूताना विभाग में बाँकानेर में दिया गया है ।



एक ऑइल मिल सरस्वती ऑइल मिल के नाम से स्थापित किया। इस प्रकार सेठ दुलीचंद-जी दूगड़ ने अपनी व्यापार-चतुरता और औद्योगिक कार्य-तत्परता से अपनी कर्म की उच्च स्थानापन्न कर्मों की भेजी पर पहुँचा दिया। आप उन महाजुभावों में हैं जो सामान्य अवस्था से अपने स्वार्थपूर्ण पुरुषार्थ से व्यापार को समुन्नत अवस्था पर प्रतिष्ठित करते हैं। आप धार्मिक मनोवृत्ति के महाजुभाव हैं।

इस कर्म के वर्तमान मालिकों में सेठ दुलीचंदजी दूगड़ तथा आपके पुत्र मांगीलालजी दूगड़ हैं। कर्म का संचालन सेठ दुलीचंदजी स्वयं ही करते हैं।

इसका व्यापारिक परिषद इस प्रकार है:—

मेसर्स दुलीचन्द मांगीलाल सदर धानार रायपुर	}	यहाँ हेड ऑफिस है तथा किराने का प्रथम व्यापार होता है।
मेसर्स दुलीचन्द मांगीलाल पुड़ियारी रायपुर		किराने का काम होता है।
दि सरस्वती आइल मिल रायपुर स्टेशन के पास	}	यहाँ तिल्ली, अलसी आदि सभी प्रकार के तेल का काम तथा रास्ती का ध्यापार होता है। और धान छूट कर भावत व्यापार करने का काम भी मिल में होता है।

### मेसर्स धूदचन्द भट्ट

आज लोग जोधपुर के समीप भरात के रहनेवाले माहेश्वरी समाज के भट्ट सन्तान हैं। वरकोक नाम से लगभग ७।८ वर्ष के पूर्व इस कर्म की सेठ हनूतराम भट्टजी ने रायपुर में स्थापना की थी। इस कर्म पर रास्ते का व्यापार होता है।

सेठ हनूतरामजी भट्ट लगभग ४६ वर्ष पूर्व सी० पी० चाप थे और आपने चाकर कुद समय तक राजनाद गाँव में ध्यापार किया और फिर वहाँ से रायपुर चले आये और नेवरा (रायपुर) से खोन स्टेशन पर अपना हेड ऑफिस बनाया। उहाँ अब भी मेसर्स हनूतराम धूलचन्द के नाम से ध्यापार हो रहा है।

मेसर्स हनूतराम धूलचन्द के नाम से सेठ हनूतरामजी भट्ट ने धारम्भ से ही काम किया था। और इसी नाम से आपका प्रधान कार्य आज भी हो रहा है। आपने धारम्भ में ही रास्ते का काम धारम्भ किया और आज भी धान प्रधान रूप से बही कर रहे हैं पर इसके

अतिरिक्त भी आपने महाजनी लेन-देन, मालगुजारी, कपड़ा, किराना, सोना, चाँदी का काम भी अपने हेड कार्टर नेवरा में कर रक्खा है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हनूतरामजी भट्ट तथा यात्रू गोवर्धनदासजी भट्ट हैं। इस फर्म का संचालन सेठ हनूतरामजी करते हैं और आपकी देख-रेख में आपके दोनों ही पुत्र व्यापार कार्य करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेमर्स धूलचन्द भट्ट गंजवारा रायपुर ( राममागर पारा )	} यहाँ गल्ला तथा कमीरान एजेण्ट का काम होता है।
मेसर्स हनूतराम धूलचन्द नेवरा ( रायपुर ) सी० पी०	} यहाँ हेड ऑफिस है तथा महाजनी लेनदेन, मालगुजारी, कपड़ा, गल्ला, किराना, सूत, सोना, चाँदी आदि सभी प्रकार का व्यापार होता है।
मेसर्स हनूतराम धूलचन्द भाटापारा ( रायपुर )	} गल्ला तथा कमीरान एजेण्ट का काम होता है।
मेमर्स हनूतराम मगनीराम गंज दुदग	} यहाँ गल्ला तथा कपड़ा कमीरान एजेण्ट का काम होता है।
मेमर्स हनूतराम भट्ट बेनेवरा ( दुदग ) बेनेवरा-दुदग	} मालगुजारी, गल्ला, लेनदेन आदि का काम होता है।

### मेमर्स नैनमुल्ल कनीराम

इस फर्म का हेड ऑफिस कामठी है। यहाँ यह फर्म गन्ने के व्यापारियों में प्रतिष्ठित मानी जाती है। निम्न २ स्थानों पर इस फर्म की और भी शाखाएँ हैं। प्रायः सभी पर गन्ने एवं आहुत का व्यवहार होता है। यहाँ भी यही गन्ने एवं आहुत का काम होता है। यहाँ इसका पना गेज बनकर है। इसका रिप्टन परिचय इसी ग्रंथ में सी० पी० में ही कामठी में छापा गया है।

## वर्तनों के व्यापारी

मेसर्स भवानीदास अर्जुनदास

आज लोग बीछानेर निचामी कामवात हागा समाज के इवेनाग्रर जैन सज्जन हैं। इस को स्थापना लगभग १०० पूर्व सेठ भवानीदासजी ने रायपुर में की थी। आज ही देरा से रायपुर आये थे और फर्म की स्थापना करने ही आकर की थी। आपके यहाँ प्रथम ही से मजदूरों का काम होना आया है। जैसे २ फर्म ने उन्नति की वैसे २ व्यापार भी उन्नति करते गये और कपड़ा तथा वर्तन का काम होने लगा। इस प्रकार फर्म ने अच्छी उन्नति की और यहाँ के स्थानीय फर्मों की प्रविष्टि भेरी पर पहुँच गई। भवानीदासजी के बाद आपके पुत्र सेठ अर्जुनदासजी ने काम सन्हाला और बाद सम्बन्ध १९४० में आपके पुत्र सेठ गम्भीरमलजी ने काम संचालन किया। आरका स्वर्णवास सम्बन्ध १९५७ में हुआ। तब से फर्म का संचालन आप के पुत्र सेठ जसकरणजी हागा ने सन्हाला और आज कल आप ही फर्म का संचालन करते हैं। वर्तमान समय में फर्म पर प्रधानतया मनीलेडिंग तथा वर्तन का थोक व्यापार हो रहा है। आरकी फर्म यहाँ भी माल तैयार कराती है। इस फर्म के वर्तमान मासिक सेठ जसकरणजी तथा आपके पुत्र वानू सम्पतलालजी हैं।

अर्जुनदासजी बड़े प्रयासों से। आपके ही समय में फर्म ने प्रधान उन्नति की और गम्भीर-मलजी धार्मिक मनोवृत्ति के थे और धार्मिक कार्यों में भाग लेते थे। आपके पुत्र सेठ जसकरणजी सुपर हूए विचारों के नवयुवक हैं और एक एक शिक्षित हैं तथा सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते हैं। स्थानीय नारायणी द्वारा सहायक समिति के मंत्री भी हैं। कॉमेस कमेट्री के सदस्य भी हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

- मेसर्स भवानीदास अर्जुनदास सदर-बाजार रायपुर
  - मेसर्स अर्जुनदास गम्भीरमल राजिम (रायपुर)
- } यहाँ हेड ऑफिस है तथा मनीलेडिंग और वर्तन का काम होता है।  
 } यहाँ वर्तन तैयार करने का काम होता है।

मेसर्स भवानीदास जावनमन  
 सेठ भवानीदासजी ने लगभग १०० वर्ष पूर्व रायपुर में आकर का  
 म किया था। आपके यहाँ प्रथम गल्ला दिखाना का काम हुआ और क्रमशः जैसा उन्नति होती गई वैसे

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

कपड़ा, वर्तन तथा महाजनी लेन-देन का काम होने लगा। आपके दो पुत्र थे जिनके नाम क्रमशः जावतमलजी और अर्जुनदासजी थे। भवानीदासजी के स्वर्गवास के बाद फर्म का काम दोनों भाई सम्हालते थे। कुछ समय बाद दोनों भाई अलग हो गये अतः सेठ जावतमलजी ने अपना व्यापार अपने उपरोक्त नाम से संचालित करने लगे। आपके यहाँ मालगुजारी का काम भी होने लगा। आपके बाद आपके पुत्र सेठ योगमलजी ने फर्म के काम को सम्हाला। आर उद्यमी महातुभाव थे। अतः आपके ही समय में फर्म ने प्रधान उन्नति की और मालगुजारी का काम और भी बढ़ाया और अच्छी उन्नति कर ली। आपका स्वर्गवास लगभग सम्बन् १९२८ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र दूनकरणजी ने फर्म का संचालन किया और आपके समय में कपड़ा और वर्तन का काम भी जोरों से होने लगा। आपका स्वर्गवास लगभग सम्बन् १९५५ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ छोटमलजी ने फर्म का संचालन किया और आपके बाद आपके पुत्र सेठ जोरावरमलजी ने फर्म का काम सम्हाला जो अब भी बड़ी तत्परता से कर रहे हैं। आप स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के सदस्य हैं तथा आप मालगुजार हैं।

वर्तमान में यह फर्म महाजनी, मालगुजारी तथा वर्तन का थोक व्यापार करता है। सोना, चाँदी, गस्ता तथा किराने का काम भी होता है। वर्तमान मालिक सेठ जोरावरमलजी हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स भवानीदास जावतमल सदर बाजार रायपुर C. P.	}	यहाँ हेड आफिस है और महाजनी, मालगुजारी तथा वर्तन का थोक काम होता है।
मेसर्स छोटमल जोरावरमल बांवा ( विजासपुर )		गस्ता, सोना, चाँदी, किराना का काम होता है।
मेसर्स छोटमल जोरावरमल राजिम ( रायपुर )	}	यहाँ वर्तन तैयार कराने का काम होकर रिडी भी होता है।
कनकी ( रायपुर ) छोगमल लूनकरण मोदा हीड ( रायपुर )—यह फर्म कनकी के अखडर में है।		यहाँ मालगुजारी और महाजनी का काम होता है।

व्यापारियों के पते		मेसर्स—	बांदास वीरचन्द	सदर
मेसर्स—मेसर्स इन्दुचन्द छोगमल	सदर	„	बातचन्द रामराज	„
मेसर्स करनीरचन्द कपूरचंद	„	„	मोदीलाल कोठारी	„

मेसर्स—मुल्तानचन्द हीरचन्द सदर  
 " रामचन्द्र रामरवनदास रा० ष०  
 " शालिग्राम गोपीकिरण "

रूपरे के व्यापारी—

मेसर्स अग्रचन्द उत्तमचन्द सदर  
 " पन्नालाल चन्दनमल "  
 " पन्नालाल रामचंद्र "  
 " मुल्तानचंद हीरचंद "  
 " शालिग्राम नत्थाणी "

गस्ते के व्यापारी—

मेसर्स धार्तीराम भूलचंद गञ्ज  
 " टापुरदास आझाराम "  
 " तेजपाल साकरचंद सदर  
 " देवचरण हरदेवदास गंज  
 " भूलचंद भट्ट "  
 " नैतसुख कर्नीराम "  
 " मन्मूरामप्रसाद "  
 " लीलाधर बाबा भाई "  
 " लक्ष्मणदास शंकरलाल "  
 " लखनचंद सूरजमल सदर  
 " सोहनलाल सुरीलाल गंज

बर्देन वाले—

मेसर्स भवानीदास जाबडमल

मेसर्स—भवानीदास अजुनदास  
 " लगवासा रामचन्द्र  
 हरे के व्यापारी—

मेसर्स कल्याणदास ब्रदर्स  
 " परसोचमदास मथुरादास  
 " रवनजी शापुरजी टाटा कम्पनी  
 " शिवदास ढागा सदर  
 किराने के व्यापारी—

मेसर्स जुहारमल सूरजमल  
 " दुलिचन्द मोंगीलाल  
 " यादराम धर्तीधर  
 " राजाराम श्रीराम  
 " शालिग्राम नत्थाणी  
 " हाजी मुतेमान हमर  
 " हासम एण्ड कामम  
 चौकी-सोना के व्यापारी—

मेसर्स इन्द्रचन्द दोगमल  
 " चन्दनमल तेजमल  
 " बालचन्द रामलाल  
 " मेहराज चामल  
 " रमरालाल शंकरलाल  
 जनरल मरचेट्स—

मेसर्स अरमदजी भाई सदर  
 " जे० हुक्ला एण्ड क० "  
 " एम० गिरधारीलाल "



कामठी—मेसर्स घनजी मुरलीधर } यहाँ इसका हेड आफिस है। यहाँ मेग्नेस एवं लौहे की खदानों का काम होता है। आप कच्चा लोहा निकाल कर विलायत भेजते हैं। तुमसर के पास आपकी खदानें हैं।

### मेसर्स प्रताप रघुनाथ

करीब ८० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना प्रताप सेठ और रघुनाथजी सेठ के द्वारा कामठी में हुई। आप लोगों का निवास-स्थान सौंभर है। आप अमवाल चैरयजाति के सज्जन हैं। आप दोनों भाइयों के पश्चात् आपके पुत्र रायामोहनजी एवं सूरजमलजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आप दोनों का भी स्वर्गवास हो गया। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ रायामोहनजी के पुत्र रामविलासजी एवं सेठ सूरजमलजी के पुत्र हरिश्चन्द्रजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनौदगोव—मेसर्स प्रताप रघुनाथ } यहाँ गल्ले का व्यापार और आड़त का काम होता है।

इसके अतिरिक्त इसी नाम से कामठी, गोदिया एवं नेवरा बाजार में भी यही काम होता है।

### महारामदास हजारीमल

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ किशनदासजी और सेठ चतुरभुज जी हैं। इसका हेड आफिस कामठी में है। यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी मंथ में कामठी के साथ दिया गया है।

### मेसर्स मुकनचंद धोंकलचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ धोंकलचंदजी एवं सेठ लक्ष्मीचंदजी हैं। आप पांपौरी (जोधपुर) निवासी श्रीश्रीमाल सज्जन हैं। यह फर्म करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ मुकनचंदजी द्वारा स्थापित हुई थी।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनौदगोव—मेसर्स मुकनचंद धोंकलचंद } यहाँ गल्ले का व्यापार एवं कमीरान एजेन्सी का काम होता है।

महोदरा—मेसर्स मुकनचंद धोंकलचंद } यहाँ भी गल्ला एवं बैंकिंग काम का होता है।

भारतीय व्यापारियों का परिचय :-

( तीसरा भाग )



६०. महात्माजी भीमसेनदास ( महात्माजी ) राजकीर्ण



६१. दीनदत्तजी फोर्करा ( दीनदत्त भागवतदास ) राजकीर्ण



६२. महात्माजी ( महात्माजी ) राजकीर्ण



६३. महात्माजी फोर्करा ( दीनदत्त भागवतदास ) राजकीर्ण



मेसर्स मुखलाल सम्पतलाल

इस फर्म के मालिक लोहावट (भारवाड़) निवासी ओसतवाल समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब २ साल से इस नाम से व्यापार कर रही है। इसके पहले इस पर साह्यराम सूरजनल नाम पड़ता था। इसकी स्थापना सेठ साह्यरामजी द्वारा हुई थी। आपके तीन भाई और ये सेठ सूरजमलजी, सेठ केवलचंदजी और सेठ कस्तूरचंदजी। उपरोक्त फर्म सेठ केवलचंदजी एवं कस्तूरचंदजी के धराजों की है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मुखलालजी एवं सेठ सम्पतलालजी हैं। आप दोनों ही सज्जन क्रमशः केवलचंदजी एवं कस्तूरचंदजी के यहाँ दसक आये हैं। आप लोगों का दान-धर्म-सम्बन्धी कामों में भी अच्छा योग रहता है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजनोदगोवि—मेसर्स मुखलाल सम्पतलाल

} यहाँ सोना चाँदी एवं कपड़े का व्यापार होता है।  
कमीशन का काम भी यह फर्म करती है।

गल्ले के व्यापारी—

- मेसर्स जीवनलाल चौदमल
- ” धनजी मुरलीधर
- ” नैनमुख कनोराम
- ” प्रतार रघुनाथ
- ” महायानदास हजारालाल
- ” मुकुन्दचंद धीरूचलचंद

कपड़े के व्यापारी—

- मेसर्स भाईदान जमनालाल
- ” जीवनलाल जीवनचंद

- मेसर्स दीपचंद मगनमल
- ” सरदारमल हीरालाल
- ” मुखलाल सम्पतलाल
- ” शिवराज नेमीचंद

चाँदी-सोना के व्यापारी—

- मेसर्स जीवमल जीवनचंद
  - ” दौलतराम भोमराज
  - ” मुखलाल सम्पतलाल
- रुपाने के व्यापारी—
- मेसर्स कादूराम गनैराराम







श्व० सेठ गोपाल साहनी ( गोपालसाह  
परनसाह ) मिशनी



रायसाहब दादू रघुनाथमिहर्जी सिवनी



## सिक्किनी

बी० एन० आर० की गोंडिया जबलपुर लाइन पर नैनपुर जंक्शन से आगे अपने ही नाम के स्टेशन पर यह शहर बसा हुआ है। इसकी बसावट बड़ी सुन्दर और रमणीक है। स्टेशन से कुछ ही दूर पर दादूसाहब की एक सुन्दर धर्मशाला मुसाफिरो के ठहरने के लिए बनी हुई है। इस धर्मशाला में सकार्य तथा मुसाफिरो के आराम के लिए बहुत उत्तम प्रबन्ध है। सिक्की के अन्तर्गत दर्रातीय स्थानों में यहाँ के जैन मन्दिर बहुत उल्लेखनीय हैं। इनकी पश्चात्कार्य, सुन्दरता और विराजता देखने ही योग्य है। यहाँ की सार्वजनिक संस्थाओं में सेठ पूरनसाहजी का गोपाल जैन औपबालय, शास्त्ररचन्द जैन पाठशाला और बोर्डिंग हाऊस, गुम्नोबाई जैन सरस्वती आश्रम, गुम्नोबाई जैन महिलाश्रम तथा नेमिचन्द धर्मशाला उल्लेखनीय हैं। सिक्की की सास पैदावार गेहूँ, चावल, अजसी, चना, मूँगा, गुल्ली, हरद, लाय, सन और हरड़ हैं। ये सब वस्तुएँ यहाँ से बाहर जाती हैं। तथा बाहर से आनेवाली वस्तुओं में कपड़ा, किराना और जनरल मर्चेण्डाईय प्रधान है। यहाँ पर तौल सब अंग्रेजी है।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

### सेसर्स गोपालसाह पूरनसाह

इस प्रविष्टित फर्म के वर्तमान मालिक श्रीमान् सेठ पूरनसाहजी हैं। आप उन लोगों में से हैं जिन्होंने अपनी उदारता, दानवीरता और धार्मिकता से इतिहास के पृष्ठों पर अपना नाम अंकित कर लिया है। आप दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं।

सेठ पूरनसाहजी श्रीमान् स्वर्गीय सेठ गोपालसाहजी के यहाँ पृच्छ आये हैं। सेठ गोपालसाहजी बड़े शास्त्रानुगामी एवं धर्म-श्रेमी पुरुष थे। अतएव आपके संस्कारों का सेठ पूरनसाहजी पर भी अच्छा असर पड़ा। फल यह हुआ कि जहाँ आपने ज्ञान और अनुभव से फर्म के व्यापार और कारबार को बढ़ाया, वहाँ अपनी उदारता और धर्मप्रेम से कई ऐसी स्मृतियों भी स्थापित कर दीं जो दीर्घ काल तक आपके नाम को भारत में गौरव के साथ बनाए रखेंगी।



## भारतीय ग्यागरियों का परिचय

सेठ पूनराहजी की दोनों धर्मपत्नियों से आपके करीब ११ सन्तानें हुईं, मगर हुईं व से उनमें से एक भी जीवित नहीं है। आपके एक पुत्र शिखरचन्द्रजी तो १५ वर्ष की परिपक्व अवस्था में स्वर्गीय हुए। जिनकी वालविधवा धर्मपत्नी अभी विद्यमान है। दूसरे पुत्र नेमिचन्द्रजी १२ वर्ष की अवस्था पाकर परलोकगामी हुए। अपने दोनों प्रियपुत्रों की स्मृति में सेठजी ने बहुत सा द्रव्य खर्च करके कई सार्वजनिक संस्थाओं का निर्माण करवाया। जिनमें श्रीयुत नेमिचन्द्रजी के स्मारक में सिवनी में श्रीनेमिचन्द्र धर्मशाला नामक एक विशाल धर्मशाला तथा श्रीसम्भेद शिखर में करीब एक लाख रुपयों के व्यय से एक विशाल मन्दिर का निर्माण करवाया। जिसके प्रतिष्ठा महोत्सव में करीब ४० हजार मनुष्य एकत्रित हुए थे। इसी प्रकार श्रीयुत शिखरचन्द्रजी के स्मारक में सिवनी में श्री शिखरचन्द्र जैन पाठशाला और बौद्धि, तथा श्री शिखरचन्द्र म्यूनिसिपल प्राथमरी स्कूल का निर्माण करवाया। इसी प्रकार अपनी धर्मपत्नी श्री गुन्नीबाई के एक असाध्य बीमारी से निरोग होने के उपलक्ष्य में आपने एक लाख रुपयों का दान निकाला जिससे सिवनी में श्री गुन्नीबाई जैन सरस्वती भवन तथा एक महिलाश्रम प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त आपने एक जैन मन्दिर नामिक में, एक सम्भेद शिखर में तथा एक मन्दिर सिवनी में बनवाया जिनमें से सीवनी का मन्दिर अत्यन्त अरुद्धा और विशाल है। इसमें किया हुआ संगमरमर, कांच और पचीकारी का कार्य अत्यन्त दर्शनीय है। यह मन्दिर सीवनी की एक प्रसिद्ध दर्शनीय वस्तु है। इसके अतिरिक्त सेठ साहब ने और भी बहुत से दान किये हैं। जिन सब का उल्लेख यहाँ असम्भव है।

सेठ पूनराहजी करीब दस वर्षों तक यहाँ की डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल के मेम्बर तथा बीस वर्षों तक म्यूनिसिपैलिटी के वार्डस प्रेसिडेंट रहे हैं। सरकार ने आपको दरवारी, कुरसी नरानी फर्स्टक्वाम ऑनररी मजिस्ट्रेटी तथा रायबहादुर का अत्यन्त प्रतिष्ठासम्पन्न उपाधियाँ प्रदान की हैं। इसी प्रकार जैन समाज की ओर से आपको श्रीमान्, श्रीमन्त, सेठ, दानवीर आदि कई उपाधियाँ मिली हैं।

आपके इस समय कोई सन्तान न होने की वजह से आपने अपने स्वर्गीय पुत्र शिखरचन्द्रजी के नाम पर श्रीयुत कुँवर विरधीचन्द्रजी को दत्तक लिया है। कुँवर विरधीचन्द्रजी भी बड़े विनम्र, सुरील और बुद्धिमान युवक हैं—

धर्म का परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसमें गोपलराह पूनराह—बौद्धि और जमींदारी का बहुत बड़ा काम होता है।

### रायसाहब दादू रघुनाथ सिंह

इस परिवार का इतिहास बहुत पुराना है। आपके पूर्वज रायवरेली के रहने वाले थे। देवगढ़ के राजा की ओर से आपको "व्योहारी" का पद मिला था। सन् १७२२ में मण्डला के राजा की ओर से व्योहार फूलसिंहजी कायस्थ को यचई का इलाका मिला। याद में भैरोगढ़ का तातुका भी आपको प्राप्त हुआ। आपके पुत्र होमनसाह सन् १७२२ की लड़ाई में मारे गये, तब राजा निजामसाह ने रंगरायजी को मय उनकी जागीर और व्योहारी का पद सौंप दिया। सन् १७७९ में रंगरायजी मंडला के राजा का पञ्च लेकर सागर के मराठों से लड़े। इसमें वे काम आये। इस समय भैरोगढ़ का इलाका वजाह हो गया। तब से आपके चार पुत्र लखनाहीन में रहने लगे। पञ्चाव इनमें से भगवन्तसिंहजी और मोतीरामजी सिक्की में रहने लगे। जिस समय नागपुर के भीसलों ने रंग भारती गुसाईं को सिक्की का सूपेदार बनाया उस समय भगवन्तसिंहजी नायब का काम करते थे। तथा आपके भाई देशमुखी का काम देते थे। रंगेजी सल्तनत तक आप इसी पद पर काम करते रहे। आपके पञ्चाव आपके पुत्र भैरोंसिंहजी भी इसी पद पर रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके पञ्चाव समय में दादू गुलाबसिंहजी छोटी वय के थे। अठारव स्टेट का प्रबंध कोर्ट आरु वाहम के बंधर में था। आपके बालिग होने पर आपने अपनी योग्यता का परिचय दिया। आप बड़े प्रयापी और हदार थे। भारत सरकार ने आपको रायवहादुर की पदवी प्रदान की थी। आपने वहाँ एक मुन्दर धर्मशाला बनवाई जो आज भी वही रूप में खड़ी है और भी कई जगह आपने दान दिया। आपके स्वर्गवास सन् १९१२ में हुआ। आपके ४ पुत्र हुए। जिनमें से तीन सज्जनों का स्वर्गवास हो चुका है। जिनके नाम क्रमशः विरामनाथसिंहजी, विरामनाथसिंहजी और जयनाथसिंहजी था।

वर्तमान में इस घने के मातृक चौथे पुत्र दादू रघुनाथसिंहजी एवं विरामनाथसिंहजी पुत्र द्वारादादूरायसिंह एवं जयनाथसिंहजी के पुत्र मन्मथनाथसिंहजी और रूपनाथसिंहजी हैं। इस परिवार में सभी सज्जन पढ़े लिखे हैं। कई सज्जन रायवहादुर और रायसाहब की ही से सम्मानित हैं। यह परिवार वहाँ का अमंगल्य परिवार है। इस समय इस परिवार का नाम ९७ बीघे की जमीनार्षी है।

इसका परिचय इस प्रकार है—

दादू रघुनाथसिंह } वहाँ कैदुंग एवं जमीनार्षी का काम होता है।

### मेसर्स शिवनारायणदास प्रभुदयाल

इस फर्म के मासिक नारनोल ( पटियाला ) निवामी अमबाल वैश्य समाज के सजन हैं । इस फर्म के पूर्व पुरुष करीब १०० वर्ष पहले मजूकेंट, कामठी और कटंगी होते हुए यहाँ आये । शुरू २ में इसकी स्थापना सेठ ठाकुरदासजी ने की थी । आपके २ पुत्र हुए रायबहादुर लाला आँकारदासजी एवं ला० शिवनारायणदासजी । ला० आँकारदासजी बड़े प्रतिभा सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं । आपने तथा सेठ शिवनारायणदासजी ने फर्म की बहुत उन्नति की । व्यापार के साथ २ आपने जमींदारी भी खरीद की । सेठ आँकारदासजी आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी रह चुके थे । आप दोनों ही का स्वर्गवास हो गया है । स्वर्गवासी होने के पूर्व ही आप दोनों भाई अलग २ हो गये थे । लाला आँकारदासजी के ३ पुत्र हुए । ला० महानन्दरायजी, (दक्षक लिये हुए), नर्मदाप्रसादजी और प्रभुदयालजी । इनमें से प्रभुदयालजी सेठ शिवनारायणदासजी के यहाँ दक्षक रहे । वर्तमान में यह फर्म सेठ शिवनारायणदासजी के पुत्र प्रभुदयालजी की है । आप योग्य सजन हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

शिवनी—मेसर्स शिवनारायणदास प्रभुदयाल } यहाँ बैंकिंग हुंडी बिट्टी एवं जमींदारी का काम होता है ।

### चाँदी-सोना के व्यापारी

#### मेसर्स त्रिलोकचन्द गनेशदास

इस फर्म के वर्तमान मासिक सेठ माणिकचन्दजी और सेठ दुलिकचन्दजी हैं । आप लोग भोसवाल समाज के गजदर-देसर (बीकानेर) के निवासी हैं । करीब ७० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना आपके पितामह सेठ त्रिलोकचन्दजी के द्वारा हुई । आपके पञ्चानु फर्म का संभारन आपके पुत्र सेठ गनेशदासजी ने किया । आप लोगों के समय में फर्म की अच्छी उन्नति हुई । वर्तमान में यह फर्म यहाँ अच्छी मानी जाती है ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

शिवनी—मेसर्स त्रिलोकचन्द गनेशदास } यहाँ बैंकिंग, सोना चाँदी एवं माणिकुमारी का काम होता है ।





हेड हामयनापत्री ( हामयनाप लक्ष्मीन सायन ) गौदिवा



ए० गेट हवारी-नाकजी (नसाइरमक हवारी-नाक) त्रिदगा



ए० गेट हवारी-नाकजी (नसाइरमक हवारी-नाक) त्रिदगा



गेट हवारी-नाकजी (नसाइरमक हवारी-नाक) त्रिदगा

**मेसर्स पूनमचन्द किरानलाल**

इस फर्म के मालिक देरानोक (बाँकानेर) निवासी श्रीमशाल जाति के मन्त्र हैं। यह फर्म यहाँ करीब ७० वर्ष से अपना व्यापार कर रही है। इसका स्थापना सेठ भीरोशानजी द्वारा हुई। आपके पञ्चाइ इस फर्म के काम को समरा: गिरपारीलालजी, अगारचन्दजी, पूनमचन्दजी और किरानलालजी ने सन्हाता। सेठ पूनमचन्दजी का स्वर्गवास सं० १९९५ में हुआ। आपके २ पुत्र हैं बा० खनचन्दजी और रामचन्द्रजी। इनमेंसे खनचन्दजी गिरपारीलालजी के पुत्र हरकचन्दजी के यहाँ दसक गये हैं। सेठ किरानलालजी के भी २ पुत्र हैं। जिनके नाम समरा: कपूरचन्दजी और सूरजमलजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स पूनमचन्द किरानलाल

} यहाँ बैकिंग, जर्नाली एवं चॉरी-सोने का व्यापार होता है।

**कपड़े के व्यापारी**

**मेसर्स कपूरचंद टेकचंद**

इस फर्म का स्थापना करीब ५० वर्ष पूर्व टेकचंदजी ने की। आपका निवासस्थान यहाँ का है। आपके हाथों ही से इस फर्म का उत्पत्ति हुई। आपके २ भाई और थं जिनका नाम सेठ दुडुनचंदजी एवं सेठ पन्नालालजी था। आप दोनों का स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ टेकचंदजी एवं आपके पुत्र पुत्रोत्तलालजी, विरदचंदजी, मोतीलालजी और आपके भाई स्व० दुडुनचंदजी के पुत्र कामलचंदजी एवम मुमेरचंदजी हैं। आप लोग शिक्षित और योग्य हैं। इस फर्म का और ने दानधर्म भी काटी किया गया है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

सिवनी—मेसर्स कपूरचंद टेकचंद

} यहाँ बैकिंग और कपड़े का व्यापार होता है।

**मेसर्स बहादुरमल लखमीचंद**

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लखमीचंदजी हैं। आपकी आयु इस समय ७० वर्ष की है। इस फर्म का स्थापना आपके पिता बहादुरमलजी ने १०० वर्ष पूर्व की थी। आपका मूल

नियामस्थान करनोमाता का मठ (धोकानेर) है। सेठ लक्ष्मीचंदजी ने यहाँ मन्दिर वगैरह बनवाने में पर्याप्त समय एवं शक्ति खर्च की है। आप करीब ४० वर्ष तक न्युनिसिपैलिटी के मेम्बर रहे। तथा समय २ पर आपको भारत सरकार ने सार्टिफिकेट भी दिये हैं। आपके छोटे भाई विरदीचंदजी का छोटी उम्र में ही स्वर्गवास हो गया।

सेठ लक्ष्मीचंदजी के २ पुत्र हैं जिनके नाम सेठ केसरीचंदजी एवं ताराचंदजी हैं। सेठ केसरीचंदजी के २ पुत्र श्रीयुक्त डालचंदजी एवं कस्तुरचंदजी और श्रीयुक्त ताराचंदजी के भी २ पुत्र हैं इन्द्रचंद्रजी एवं दीपचंदजी। श्रीडालचंदजी और कस्तुरचंदजी कपड़े की दुकान का संचालन करते हैं। दीपचंदजी खदान का काम देखते हैं। यहाँ आपकी घोघरी कॉलेरी के नाम से २ कोयले की खदानें हैं मगर कोयले की बहुत मन्दी होने से कुछ समय से ये बन्द हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिवनी—मेसर्स महादुरमल लक्ष्मीचंद	}	यहाँ कपड़ा, सोना चाँदी एवं कोयले का व्यापार होता है। यहाँ आपकी घोघरी कॉलेरी के नाम से २ कोयले की खानें हैं।
----------------------------------	---	---

## गल्ले के व्यापारी

### मेसर्स शिवजीराम परमानंद

इस फर्म के मालिक बलौदा (जयपुर) के निवासी अमवाल वैश्य जाति के सप्तजन हैं। इस फर्म की स्थापना संवत् १९४० में सेठ परमानंदजी द्वारा हुई और आपही के द्वारा इस फर्म की तरफ़ी भी हुई। आपके इस समय ४ पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः परीजालजी, सुरजमलजी, चाँदमलजी और रामनाथजी हैं। प्रथम तीन व्यापार में भाग लेते हैं और एक पढ़ते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिवानी—मेसर्स शिवजीराम परमानंद	}	यहाँ सन, गल्ला और आड़त का काम होता है। यह फर्म सन का डापरकेट बिलायन एक्सपोर्ट करती है।
द्विवादा—मेसर्स शिवजीराम परमानंद	}	यहाँ गन्ने का व्यापार तथा कमीशन का काम होता है।

पलारी—शिवजीराम परमानंद  
 बम्बई—शिवजीराम परमानंद  
 कालवा देवी

} यहाँ भी गल्ले का व्यापार होता है ।  
 } यहाँ एक्सपोर्टिंग बिजिनेस होता है ।

मेसर्स सेदमल जयनारायण

यह फर्म करीब ४० वर्ष से गल्ले का व्यापार कर रही है । इसके स्थापक सेदमलजी थे आपके पञ्चान इसका संचालन आपके पुत्र जयनारायणजी तथा मुन्नालालजी ने किया । आप लोगों के समय में इसकी बहुत उन्नति हुई । आपका भी स्वर्गवाम हो गया है । वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयनारायणजी के पुत्र गेंडालालजी, पूलचंदजी एवं केसरीचंदजी तथा सेठ मुन्नालालजी के पुत्र खेमकरनजी हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—  
 सिवनी—मेसर्स सेदमल । जयनारायण

द्विदवादा—मेसर्स सेदमल  
 जयनारायण

मंडला—मेसर्स सेदमल जयनारायण

बीरार्—( द्विदवादा ) जयनारायण  
 मुन्नालाल

} यहाँ गल्ले का व्यापार और आदत का व्यापार होता है ।  
 } यहाँ शकर का कारखाना है तथा गल्ले का व्यापार होता है ।  
 } यहाँ गल्ले और किराने का व्यापार होता है ।  
 } यहाँ गल्ले का व्यापार और आदत का काम होता है ।

मेसर्स रतनचंद दीपचंद

इस फर्म के मालिक यहाँ के निवासी हैं । आप परिवार समाज के सगजन हैं । यह फर्म करीब ४०, ५० वर्षों से किराने का व्यापार कर रही है । इसकी स्थापना सेठ रतनचंदजी द्वारा हुई थी । इस समय इस फर्म के मालिक आपके पुत्र सेठ दीपचंदजी, काशरामजी और फतेचंदजी हैं ।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—  
 सिवनी—मेसर्स रतनचंद दीपचंद

} यहाँ किराने का बड़ा व्यवसाय होता है ।



## छिंदवाड़ा

छिंदवाड़ा बी. एन. आर. की छोटी लाइन का जंक्शन स्टेशन है। एक लाइन जबलपुर से नैनपुर सिवनी होती हुई यहाँ आती है। दूसरी लाइन यहाँ से नागपुर को जाती है। एवं तीसरी लाइन परसिया को जाती है। जहाँ यह जी. आइ. पी. की इटारसी-आमलावाली लाइन को मिलाती है। छिंदवाड़ा जिले का प्रधान स्थान है। यह चारों ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है। यहाँ को बसावट ऊँची नीची एवं लम्बी है। यहाँ एक सुन्दर तालाब भी है। जो इसकी सुन्दरता को बढ़ाता है। यहाँ के एक सेठ ने यहाँ घमंशाला भी बनवा दी है।

छिंदवाड़ा का प्रधान व्यापार कोयले का है। इस स्थान के पास ही कोयले की कई खानें हैं। यहाँ का कोयला उत्तम श्रेणी का माना जाता है। इसके पश्चात् यहाँ की दूसरी पैदावार हरों की है। यह करीब १ लाख मन बाहर जाती है। यह भी जंगलों ही से यहाँ आती है। इसके सिवाय गेहूँ, उर्द, चना, मूँग, ज्वार, बरवटी, तुवर, राजगिरा, गुल्ली, महुआ, कपास, सन, चांगोली ( चिरोंजी ) अरंडी, तिल्ली, जगनी ( रहमतीला ) अलसी, धी और मसूर भी यहाँ पैदा होती है तथा मौसिम एवं फसल के अनुसार बाहर जाती है। यहाँ का इम्पोर्ट व्यापार विरोध उल्लेखनीय नहीं है। कारखानों में यहाँ शावालेस कम्पनी की जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है।

यहाँ का तोल चांगोली, धी, हरें एवं सन के लिये ४० सेर के मन का होता है। अनाज का वजन १०० भर की पाई, ८ पाई का कुडो, और २० कुडों की खंडी से माना जाता है। आइल शीट्स के लिये ४ मन की खण्डी, अरंडी के लिये ३-३- मन की खंडी एवं गुनी के लिये ३ मन की खण्डी से व्यवहार होता है।

यहाँ के व्यापारियों का परिषय इस प्रकार है—

### मेसर्स कचौरीमल मुख्यालय

इस फर्म के माजिफ खण्डेलवाल जैन समाज के मारोठ ( मारवाड़ ) निवासी हैं। यह फर्म करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ कचौरीमलजी ने स्थापित की। शुरू २ में इस फर्म पर साधारण

भारतीय व्यापारियों का परिचय —  
( तीसरा भाग )



श्री० सी० सुकवाडकी पाटनी ( कबीरीमल मुमलाज )  
जिन्दापा



श्री० सी० सुकवाडकी पाटनी ( कबीरीमल मुमलाज ) जिन्दापा



श्री० सी० सुकवाडकी पाटनी ( कबीरीमल मुमलाज ) जिन्दापा



श्री० सी० सुकवाडकी पाटनी ( कबीरीमल मुमलाज ) जिन्दापा



दुकानदारी का काम होता था। इस फर्म की विरोध तरफ़ी आपके तथा आपके भाई सेठ सुखलालजी के द्वारा हुई। सेठ सुखलालजी यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप यहाँ के म्युनिसिपल मेम्बर, डिस्ट्रीक्ट बोर्ड मेम्बर, आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं ट्रेडरर थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सुखलालजी के पुत्र रायसाहब सेठ लालचन्द्रजी पाटनी हैं। आपने फर्म की बहुत उन्नति की है। आप भी यहाँ के म्युनिसिपल मेम्बर, डिस्ट्रीक्ट कौंसिल के चेअरमन, आनरेरी मजिस्ट्रेट, कोऑपरेटिव्ह बैंक के मेम्बर आदि हैं। आपका प्रायः सभी संस्थाओं से सम्बन्ध है। आपके एक पुत्र श्री देवेन्द्र कुमारजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

द्विधादा—मेसर्स कचौरीमल  
सुखलाल

} यहाँ बैंकिंग, हुंडी, विट्टी, महाजनी लेन-देन और जर्मीदारी का काम होता है। यह फर्म कोयलों की प्रदानों की बैंकर हैं।

### मेसर्स खेमचन्द्र लखमीचन्द्र

इस फर्म की स्थापना करीब १०० वर्ष पूर्व कुम्हेड़ी (टीकमगढ़) निवासी सेठ भूरा साहु के द्वारा हुई थी। इसकी विरोध उन्नति सेठ खेमचन्द्रजी के द्वारा हुई। आप व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आप सवाई सिंघई के नाम से सम्बोधित होते थे। आप धार्मिक विचारों के सज्जन थे। आपने जैन धर्म के कामों में हजारों रुपया खर्च किया। आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट, म्युनिसिपल मेम्बर आदि रहे। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके ६ माह के पश्चात् ही आपके पुत्र सेठ लखमीचन्द्रजी का भी स्वर्गवास हो गया। आप भी यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट बगैरह थे। वर्तमान में इस फर्म का संचालन सेठ लखमीचन्द्रजी की धर्म पत्नी श्रीमती द्वितिया वाई करती हैं। आपका भी धार्मिक जीवन ही विरोध है। इस फर्म पर साहुकारी लेन-देन बैंकिंग और मातृगुजारी का काम होता है।

### मेसर्स सुनकेलाल रतनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सुनकेलाल के इत्तक पुत्र सेठ रतनलालजी हैं। आप लोगों का निवासस्थान यहाँ है। यह फर्म इस नाम से करीब ३० वर्षों से काम कर रही है। इसकी उन्नति सुनकेलालजी ही के जमाने में हुई। इस फर्म पर बैंकिंग और जर्मीदारी का काम होता है।

### मेसर्स चम्पालाल गुलाबचन्द

इस फर्म के मालिक माहेरवरी समाज के कावर सज्जन हैं। यह फर्म करीब ८० वर्षों रेवासा (सीकर-राजपूताना) निवासी सेठ बिरानीरामजी द्वारा स्थापित हुई। इसकी शुरुआत उत्तेजन आपके पुत्र सेठ रामदेवजी ने किया। आपके पश्चात् श्रीयुक्त चम्पालालजी एवं गुमानचन्द हुए। आप लोगों के समय में भी अच्छी उन्नति हुई। मगर आप लोगों का देशान्तर युवावस्था में ही हो गया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक राधाकृष्णजी हैं। आप इस समय नाबालिग हैं अतएव फर्म का संचालन वा० कन्हैयालालजी जाकोटिया एवं शिवनारायणजी वापेचा करते हैं। आप दोनों सज्जनों का पश्चिम जीवन सराहनीय है। इस फर्म की ओर से सार्वजनिक कामों में अच्छी सहायता प्रदान की जाती है। आपको ओर से यहाँ एक मन्दिर बना हुआ है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

द्विद्वाङ्गा—मेसर्स चम्पालाल गुलाबचन्द	} यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, सोना, चाँदी एवं जर्मी का काम होता है।

### मेसर्स जवाहरमल हजारीलाल

इस फर्म की स्थापना करीब १००, १२५ वर्ष पूर्व सेठ गुमानीरामजी पाटनी के द्वारा आपका निवासस्थान लखनौ (जोधपुर) का था। इस फर्म पर पहले मेसर्स गुमानी रामकेस मल नाम पड़ता था। आप दोनों का स्वर्गवास हो गया है। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ जवाहरमलजी ने इस फर्म के काम का संचालन किया। आपके समय में इस फर्म की अच्छी उन्नति हुई। आपके पश्चात् आपके वक्त पुत्र सेठ हजारीमलजी ने फर्म के काम को संचालित किया। आपके जमाने में तो यह फर्म बहुत उन्नति कर गई। आप यहाँ के प्रतिष्ठित रईम, म्युनिसिपल मेम्बर, दरबारी, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और बैंकर थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हजारीलालजी के पुत्र वा० चोमूलालजी तथा हरचन्दजी हैं। आप लोग इस समय नाबालिग हैं। अतएव फर्म का संचालन सेठ हजारीनाथ के छोटे भाई वा० होगालालजी करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

द्विद्वाङ्गा—मेसर्स जवाहरमल हजारीलाल	} यहाँ बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी, छात्रकारी लेन-देन एवं सार्वजनिक और लोक-चाँदी का व्यापार होता है।





### मेसर्स नरसिंहदास गिरधारीलाल

यह फर्म इस नाम से सन् १९१० से व्यापार कर रही है। इसके पहले इस फर्म पर मोहकमचन्द नरसिंहदास के नाम से व्यापार होता था। इस फर्म के मालिक जेसलमेर के निवासी माहेश्वरी जाति के बांडरू सज्जन हैं। इन पर गुरु से ही महाजनी देन-लेन का व्यवहार होता चला आ रहा है। इसके वर्तमान मालिक सेठ कन्दैयालालजी हैं। आप अभी नाथालिग हैं। आप मोहगांव (दिन्दावा) में, जहाँ इस फर्म का हेड आफिस है, निवास करते हैं। इस फर्म का संचालन यहाँ के मुनीम भोरामकृष्णजी करते हैं। यो तौ इस फर्म की स्थापना सेठ मोहकमचंदजी ने की थी। मगर इसकी प्रधान उन्नति का श्रेय इनके पुत्र नरसिंहदासजी को तथा नरसिंहदासजी के पुत्र गिरधारीलालजी को है। आप दोनों सज्जनों के हाथ से इस फर्म ने बहुत वरष्ठी की। आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है। इस फर्म के वर्तमान मालिक इन्हीं गिरधारीलालजी के पुत्र हैं।

इस फर्म की ओर से यादमेर (राजजुताना) एवम् गिरिराज में एक २ घर्मशाला बनी हुई है। यहां आपकी ओर से नरसिंह लायनेरी चल रही है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दिन्दावा—मेसर्स नरसिंहदास गिरधारीलाल	}	यहां बैंकिंग, हुंडी, चिट्ठी और महाजनी देन-लेन का काम होता है।
मोहगांव—मेसर्स नरसिंहदास गिरधारीलाल		यहां जमींदारी एवम् बैंकिंग का काम होता है। आपकी जमींदारी करीब ४२ गांवों में है।
सावनेर (नागपुर) मेसर्स नरसिंहदास गिरधारी लाल	}	यहां कॉटन और बैंकिंग का काम होता है। यहां आपकी एक जिनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी है।

### मेसर्स प्रतापमल गनेशीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान छूलवां (जोधपुर) का है। आप लोग रायगेलवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। करीब ८० वर्ष पूर्व इस फर्म की स्थापना सेठ प्रतापमलजी के द्वारा हुई। आपके परवानू इस फर्म के काम का संचालन आपके पुत्र सेठ गनेशीलालजी ने किया। आपने फर्म की अच्छी उन्नति की। आप दोनों का स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गुलाबचंदजी बाकलीवाल हैं। आप सेठ गनेशीलालजी के सामने ही दस्तक आ गये थे। आपने फर्म की बहुत ब्यादा उन्नति की। इस समय आप



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

लोकल बोर्ड के प्रेसिडेण्ट, डिस्ट्रीक्ट कौन्सिल के वाइस प्रेसिडेण्ट, म्युनिसिपल मेम्बर आदि हैं। आप कोआपरेटिव बैंक के खजांची भी हैं। सरदर से आपको विशेष प्रेम है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

छिंदवाड़ा—मेसर्स प्रतापमल  
गनेशीलाल

} यहाँ बैंकिंग, साहुकारी देन-लेन, जमींदारी, गल्ला एवं चांदी सोने का व्यापार होता है।

### मेसर्स रामलाल शिवलाल

इस फर्म के मालिक धनवों ( जेसलमेर ) निवासी पत्तोवाल ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। इसकी स्थापना सेठ प्रेमराजजी ने जिन्हें दादू साह्य भी कहते थे, करीब १०० वर्ष पूर्व की थी। उस समय आपने भोंसलों से गांवों की ठेकेदारी का काम किया था। वही में आपने अच्छी सफलता प्राप्त की। आरके पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके भाई सेठ रामलालजी ने किया। आपके समय में भी अच्छी सफलता रही। आप धार्मिक विचारों के सज्जन थे। आप का भी स्वर्गवास हो गया है।

सेठ शिवलालजी वर्तमान में इस फर्म के मालिक हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। आप सी० पी० कौन्सिल के मेम्बर रह चुके हैं। साथ ही लोकल बोर्ड एक्म सेनिटेशन के भी आप मेम्बर रहे। आपका निवास मोहगाँव में होता है। वहीं आप जमींदारी का काम देखते हैं। इस फर्म पर उम्मेदमलजी पाटनी मुनीमात का काम करते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

छिंदवाड़ा—मेसर्स रामलाल शिवलाल

} यहाँ बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी और जमींदारी का काम होता है।

मोहगाँव—मेसर्स रामलाल शिवलाल

} यहाँ भी वपरोक व्यापार होता है। आपको जमींदारी ४२ गांवों में है।

इसके अतिरिक्त उमरेठ, चिमनखापा आदि स्थानों पर भी आपका व्यापार होता है।

### मेसर्स लाला साहु कन्हैया साहु

इस फर्म के मालिक पारासिवनी ( नागपुर ) के बरई जाति के सज्जन हैं। इसके वर्तमान मालिक लाला कन्हैया साहु हैं। यह फर्म बहुत समय से व्यापार कर रही है। इस पर पहले दसनाजी कन्हू साहु के नाम से कारबार होता था। इसकी स्थापना दसनाजीसाहु ने



सर्व० सखारं भिरई सेठ अनन्दीजी इन्दराहा ।



पं० रामलालजी (रामलाल बिबहाण) इन्दराहा ।



सर्व० सखारं भिरई सेठ अनन्दीजी इन्दराहा ।



पं० बिबहाणजी बान्नी (रामलाल बिबहाण) इन्दराहा ।



की थी। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र धन्ना साहू, लाला साहू और जगन्नाथ साहू ने किया। इसके वर्तमान मालिक लाला कन्हैया साहू यहाँ आनरेरी मैजिस्ट्रेट हैं। इस फर्म पर साहूकारी देन-लेन, बैंकिंग और जमींदारों का काम होता है। इसी नाम से आपकी २ दुकानें और हैं जहाँ पीतल के बर्तन और कपड़े का व्यापार होता है। यह यहाँ प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है।

## गल्ले के व्यापारी

### मेसर्स जयकिशानदास मूलचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मूलचंद जी एवंम् टोल्डरामजी हैं। आप लोग डीहवाना (जोधपुर) निवासी अमराज वैद्य समाज के सज्जन हैं। यह फर्म करीब २५ वर्ष से गल्ले का व्यापार कर रही है। यहाँ इस फर्म की स्थापना जयकिशानदासजी के पुत्र सेठ नरसिंहदासजी ने की। वर्तमान में इसके मालिक नरसिंहदासजी के भाई हैं। आपकी ओर से यहाँ स्टेशन के पास एक घर्मराला बनी हुई है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

द्विदवाहा—मेसर्स जयकिशानदास मूलचंद	} यहाँ गल्ले का व्यापार और आड़त का काम होता है।
---------------------------------------	--

### मेसर्स शिवजीराम परमानंद

इस फर्म का हेड आफिस सिवनी में है। इसकी और भी शाखाएं हैं। उन सब पर प्रायः गल्ले का व्यापार होता है। इसका विलुप्त परिचय इसी ग्रंथ में सिवनी में छापा गया है यहाँ यह फर्म गल्ले का व्यापार एवं आड़त का काम करती है।

### मेसर्स सैदमल जयनारायण

इस फर्म का हेड आफिस भी सिवनी ही है। यहाँ यह फर्म गल्ले एवं राकर का व्यापार करती है। इसकी और भी शाखाएं हैं। जिनका विलुप्त परिचय इसी ग्रंथ में सिवनी में छापा गया है।

भारतीय व्यापारियों का परिचय

व्यापारियों के पते—

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स फैसरीमल मुबालाल

” गोकुलप्रसाद श्यामलाञ्ज

” गुलाबचंद मोतीलाल

” चुन्नीलाल हजारीमल

” बुधमल चौदमल

” मोतीलाल चैनमुख

मैन मरचेंट्स—

मेसर्स अहमद हाजी तैव्यथ

” ताराचंदसाहू चेतारामसाहू

” पूजा भाई मूलजी

” महमदहाजी तैव्यथ

” शिवजीराम परमानंद

” सेठमल जयनारायण

चौद्री-सोने के व्यापारी—

मेसर्स जवाहरमल हजारीलाल

” पूरनलाल जीवनलाल

” प्रतापमल गनेशीलाल

” बुधमल चौदमल

फिराने के व्यापारी—

मेसर्स अलिमहम्मद ईसा

” अहमद हाजी तैव्यथ

” चेताराम साहू टीकाराम साहू

” महमद हाजी तैव्यथ

” रामवतार मुखदयाल

वैकर्स एण्ड लैंडलार्ड्स—

मेसर्स कचौरीमल मुखलात

” खेमचंद लखमीचंद

” चम्पालाल गुलाबचंद

” जवाहरमल हजारीलाल

” नरसिंहदास गिरभायीदास

” रा० ब० मथुराप्रसाद मोतीलाल

एण्ड संस

” रामलाल शिवलाल

” लालासाहू कन्हैयासाहू

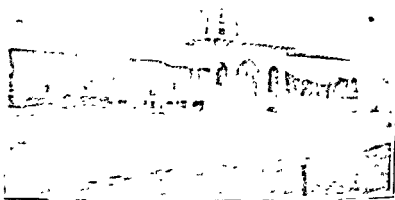
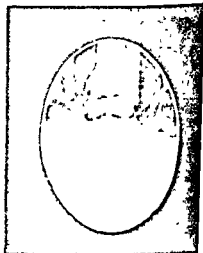
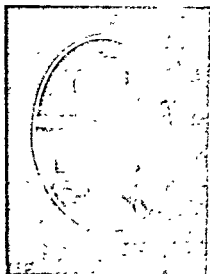
जनरल मरचेंट्स—

मेसर्स अकबर अली जमात अजी

दी मेंहदी बाग शाप

मेसर्स रघुनन्दन शिवनन्दन





## कैतूल-सिद्धनूर

सी० पी० प्रांत के अन्तर्गत ही नाम के जिले का हेड क्वार्टर है। यह जी० आर्द० पी० रेलवे की इटारसी-बामला-नागपुर वाली मेलबलाइन का बड़ा स्टेशन है। यहाँ से इटारसी बगैरह बानों पर मोटर सर्विस भी रन करती है। जिले का प्रधान स्थान होने से एवं भाषयास छोटे छोटे देशों के आ जाने से यहाँ का सब मात यहाँ के बाजार में जाता है। इस मात को यहाँ के व्यापारी प्रचण्ड कर बाहर एक्स पोर्ट करते हैं। इस जिले की पैदावार में बिरोंजी, हरे, मटुआ, गुनी, सन, गुड़ एवं सागवान की लकड़ी प्रधान है। गन्ना भी यहाँ पैदा होता है मगर कम। बिरोंजी प्रचण्ड ४००० बोरे, मटुआ, हरे ७०, ८० हजार बोरे, गुनी ३० हजार बोरे, बाहर जाते हैं। सन भी परले काफ़ी पैदा होता था मगर आजकल १५००० मन के करीब बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त गुड़ की भी पैदावार कम हो गई है फिर भी मौसिम में २० हजार मन बाहर जाता है। सागवान की लकड़ी भी इस जिले से करीब ६ लाख रुपये की बाहर जाती है। सिद्धनूरिंग स्टेशन होने से यहाँ बाहर से आने वाले मात में कच्चा, धियाता प्रधान है। सिद्धनूरिंग स्टेशन होने से यहाँ कच्चा लकड़ी विपों है। यहाँ के व्यापारियों का संश्लिष्ट परिषद इस प्रकार है -

### मेमर्स मनावनन्द खगर्भावन्द

इस प्रतिष्ठित धर्म के आतिथ्य रास ( जौधनुर-स्टेट ) के निवासी हैं। भार कोमरात बैरव की के छोटी समन हैं। करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ मनावनन्दजी के पिता शेरमजरी ने यहाँ का व्यापार प्रारम्भ किया। उनके पश्चात् उनके पुत्र सेठ मनावनन्दजी ने यहाँ की प्रतिष्ठित स्थिति को बढ़ाई। उनके पुत्र सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी हुए। भार यहाँ के जॉर्ज सिन्ड्रेट से। उनके जिन कामों एक मात था। उनके विदेश-वर्तनी मानक एक मात बन होने का सम्बन्ध हो गया। सेठ विनोदचन्द्रजी के कोई पुत्र न था।





### मेसर्स जुगलकिशोर देवीदीन

इस फर्म के वर्तमान मालिक बा० नरकिशोरजी, बा० प्रजकिशोरजी, बा० रामकिशोरजी एवं बा० रघामकिशोरजी हैं। इन फर्म का हे० आ० इटारसी में है अथवा इमका विस्तृत परिचय वहाँ दिया गया है। यहाँ यह फर्म गन्ना, महुआ और आड़त का व्यापार करती है।

### मेसर्स शेरसिंह मानिकचन्द

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ कस्तुरचंदजी डागा-ओसवाल-समाज के बाँकानेर निगामी सञ्जन हैं। यह फर्म करीब १०० वर्ष आपके विमान्ड सेठ शेरसिंहजी द्वारा स्थापित हुई थी। आपके पश्चात् फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ माणिकचन्दजी ने किया। आप लोगों के समय में फर्म की अच्छी वृत्ति हुई। वर्तमान में यह फर्म बैंकिंग, साहूकारी देन-लेन एवं माल-गुजारी का काम करती है।

### मेसर्स सुन्दरलाल लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के मालिक रेवाड़ी निवासी भार्गव-ब्राह्मण समाज के सञ्जन हैं। इस फर्म को करीब १०० वर्ष पूर्व पं० गिरधारीलालजी एवं पं० विरानसिंहजी ने स्थापित की और तर्की प्रदान की। आप लोगों के पश्चात् आपके पुत्र पं० देवकीनन्दनजी ने फर्म के काम को सन्हाला। आप प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। रेवाड़ी में आप आँनरेरी मजिस्ट्रेट और म्युनिसिपल कमिश्नर रहे। आपके तीन पुत्र हुए पं० विहायीलालजी, पं० गनेशीलालजी एवं पंडित सुन्दरलालजी। पं० विहायीलालजी रेवाड़ी में म्युनिसिपल प्रेसिडेन्ट और आँनरेरी मजिस्ट्रेट रहे। आपका एवं पं० गनेशीलालजी का स्वर्गवास हो गया है। पं० गनेशीलालजी के वंशजों का भाग सं० १९१० से अलग हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक पं० सुन्दरलालजी राय साहब हैं। आपके तीन पुत्र हैं पं० चुभीलालजी, पं० रामोदरलालजी एवं पं० गोपीनाथजी। पं० चुभीलालजी मुल्तान में आँनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय निम्न प्रकार है—

धनूल—मेसर्स सुन्दरलाल  
लक्ष्मीनारायण

} यहाँ हे० आ० है। यहाँ बैंकिंग और जमींदारी का काम होता है। आपकी जमींदारी में ५० गाँव के करीब हैं।



कपड़े के व्यापारी—

- मेसर्स नारायणदास नन्हेलाज
- ” विहारीलाज दुबीलचन्द
- ” मन्नीलाज मुन्नीलाज
- ” लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल
- ” सरदारसिंह कादराम

गहने के व्यापारी—

- मेसर्स धृजलाज हरगोविन्द
- ” सुहृन्दीलाज टीकाराम

किराने के व्यापारी—

- मेसर्स धृजलाज हरगोविन्द
- लोहे के व्यापारी—

मेसर्स शिवलाज हरगोविन्द

घोंदी सोना के व्यापारी—

- मेसर्स गोविन्दराम जगन्नाथ
- ” चुन्नीलाज बन्नीनारायण
- ” मंगलजीन बन्नीदास

## गाइडरकाड़ा

गाइडरकाड़ा साँ० पो० प्रांत के नरसिंहपुर जिले का एक तहसील है। यह जी० आई० पो० रेल्वे की इटारसी-जबलपुरवाली प्रेष लाइन पर अपने ही नाम के स्टेशन से १ मील की दुरी पर बसा हुआ है। व्यापारियों के ठहरने आदि के लिये यहां बड़ी अत्यवस्था है। जबलपुरवाले राजा गोकुलदासजी की एक धर्मशाला यहां बनी हुई अवश्य है मगर उसमें भले आदमों तो नहीं ठहर सकते। नाम मात्रके लिये वह धर्मशाला है। नरसिंहपुर जिलेकी बड़ी तहसील होने से एवं लोकल सेल की बजह से यहां का इम्पोर्ट व्यापार अच्छा है। एक्सपोर्ट व्यापार में गन्ना ही ऐसी वस्तु है जो बाहर जाती है। इम्पोर्ट में कपड़ा एवं लोहा और जनरल सामान प्रधान है। किराना बगैरह भी बाहर ही से यहां आता है। गन्ने में यहां से गेहूं, चना, वीवड़ा, ममूर, बटला, अरहर, विल्ली, अलसी, मूंग, उड़द बाहर जाते हैं। कपास भी यहां से बाहर जाता है। इन सब में वीवड़ा ज्यादा बाहर जाता है। यहां जोनिंग प्रेसिंग फैक्टरी भी है। तथा दात के कारखाने हैं। यहां से दात भी बाहर जाती है। यहां के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स रामलाल मोहनलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप यहां के प्रतिष्ठित रईस एवं जमींदार हैं। आपका मूल-निवास-स्थान मांडलगढ़ (एदयपुर) है। आप मांडेश्वरी वैश्य समाज के सज्जन हैं। भारत सरकारने आपको रायसाहब की पदवी प्रदान की है। यह

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

फर्म यहाँ बहुत पुरानी है। करीब १५० वर्ष पहले इसका स्थापन हुआ था। इस फर्म की ओर से इसके पूर्व मालिकों ने कई स्थानों पर मुसाफिर खाने, घर्मशालाएँ, कुएँ आदि बनवाये हैं।

इस समय इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गाडरवाड़ा—मेसर्स रामलाल मोहनलाल हे० आ०	}	यहाँ बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी और जमींदारी का काम होता है।
गाडरवाड़ा—मेसर्स रामलाल घासीराम		यहाँ बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी और लेनदेन का काम होता है।
गाडरवाड़ा—मेसर्स खूबचंद नर्मदाप्रसाद	}	यहाँ मालगुजारी का काम होता है।
गाडरवाड़ा—मेसर्स रामलाल छदा- मीलाल		यहाँ गल्ले का व्यापार और आड़त का काम होता है।
गाडरवाड़ा—मेसर्स घासीराम लक्ष्मी- नारायण	}	यहाँ हुंडी चिट्ठी का काम होता है।

इसके अतिरिक्त पिपरिया, करेली, गोवरगांव, साँगाखेड़ा, शरहरगंज, शिलवानी, देवरी, चौरास, रिछावर, वरेली आदि स्थानों पर भिन्न २ नामों से गल्ला एवं जमींदारी और आड़त एवं बैंकिंग का काम होता है। नरसिंहपुर जिले में यह फर्म बहुत बड़ी मानी जाती है।

### गल्ले के व्यापारी—

- मेसर्स अंकारदास गौरीशंकर
- ” फाल्दाराम हरकरन
- ” गरीबदास धन्नालाल
- ” तुलसीप्रसाद मोहनलाल
- ” विहारीलाल जेठमल
- ” भवानजी लालजी
- ” महादेव कन्हैयालाल
- ” माणकचंद बलदेव
- ” रामरतन मुखर्जी
- ” रामलाल पूनमचंद

### कपड़े के व्यापारी—

- मेसर्स अचरुलाल मन्नालाल
- ” कानजी मकनजी
- ” नानूराम बलदेव
- ” भगवानदास जगन्नाथ
- ” मूलचंद बालचंद

### चाँदी-सोना के व्यापारी—

- मेसर्स अचरुलाल मन्नालाल
- ” अमरचंद भगवानदास
- ” शिवपाल धनराज

## भोपाल

मध्य भारत में भोपाल प्रथम भोली की एक महत्वपूर्ण रियासत है। यहाँ के राज्यशासक मुमलमान हैं। इस राज्य के मूल स्थापक दोस्त महम्मद खान सन् १७०८ में खैबर प्रान्त के लोई नामक स्थान से भारत में आये थे। आपने अपने साहस, वीर्य, कूटनीति और बुद्धिमानी के बल से, दूरतः दूर मुगलसाम्राज्य के समय की परिस्थिति में लाभ उठाया और कई छोटे-२ जागीरदारों को जौरालपूर्वक जीतकर इस राज्य की स्थापना की थी जिसका इतिहास बड़ा ही विचित्र और पटनपूर्ण है। सन् १७४० में आपके देहान्त होगया। आपके पश्चात् इस राज्य की समस्त परतबारायार महम्मद खान, खैर महम्मद खान, दयाल महम्मद खान, अहमदगीर महम्मद खान, क्रम से बैठे। नवाब अहमदगीर महम्मद खान का देहान्त सन् १८४४ में हो गया। तब से इस राज्य में हमी शासिकाएँ गयीं नरानि होने लगीं। इन शासिकाओं में क्रम से मिहन्दर बेगम, शादखान बेगम और मुलतान जहाँ बेगम हुईं। भीमराव मुलतान जहाँ बेगम ने यहाँ की कृषि और शी-शिक्षा की धोर बहुत ध्यान दिया।

एतद् भारत में भोपाल सबसे बड़ी मुमलमानी रियासत है। इसका विस्तार ६८५९ वर्गमील और जनसंख्या ७२०००० से ऊपर है। इस राज्य में ७३ पंचायती हिन्दू, १३ खीसरी मुमलमान और १४ खीसरी दूसरी जातियों के लोग बसते हैं।

इस राज्य में शिक्षा और चिकित्सा का भी अच्छा प्रबन्ध है।

भोपाल शहर के ध्यातारियों का परिचय इस प्रकार है।

### दोमर्म गंधीरमज वनवमज

इस वर्ग के आदिभ मेहनत निरामी जोसवाल सनात्र के दोमो मजदूर हैं। वरीर ८० वर्ष पूर्व यहाँ सेठ गंधीरमजजी काठ ध्यातार की गई थी। उनके २ पुत्र हुए, सेठ मिरमजजी एवं सेठ वनवमजजी। मिरमजजी अपना स्वयं ध्यातार बनने लग गये थे। उनके पश्चात् इस

• भोपाल राज्य भारत में है। इसका क्षेत्रफल ६८५९ वर्ग मील है। इसका जनसंख्या ७२०००० है।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

फर्म का संचालन सेठ कनकमलजी के पुत्र सेठ नथमलजी ने सम्हाला। आप यहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप ही के समय में फर्म की बहुत उन्नति हुई है। आपका स्वर्गवाम हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ नथमलजी के पुत्र सेठ राजमलजी होती हैं। आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भोपाल—मेसर्स गंभीरमल कनकमल चौक } यहाँ बैकिंग, हुंडी, चिट्टी, आदत और रुई का व्यापार होता है।

भेलसा—मेसर्स गंभीरमल कनकमल } रुई, गन्ने का व्यापार और आदत का काम होता है।

### मेसर्स गोपालदास वल्लभदास

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी माडपाणो हैं। आपका हेड आफिस जवनपुर है। इस फर्म की कई जगह जर्मींदारी, जीनिंग-प्रेसिंग फैक्टरी और प्रांचें हैं जिनका विस्तार परिचय चिट्ठों सहित इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग के पेज नं० ४० में दिया गया है। यहाँ यह फर्म बैकिंग और जर्मींदारी का काम करती है।

### मेसर्स पूनमचंद हीरालाल

इस फर्म की स्थापना सेठ पूनमचन्दजी एवं आपके पुत्र सेठ हीरालालजी द्वारा करीब ५६ वर्ष पूर्व हुई। आप लोगों का मूल-निवास-स्थान मेड़ना (मारवाड़) है। आप लोगों ने फर्म की अच्छी उन्नति की। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मूलचन्दजी लालवानी हैं। आपको भोपाल सरकार ने राय की पदवी प्रदान की है। आप मिलनसार और धार्मिक विषयों के सज्जन हैं। आप यहाँ के आनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भोनाल—मेसर्स पूनमचंद हीरालाल चौक } यहाँ बैकिंग, रुई, गल्ला एवं आदत का व्यापार होता है।

पोमार (पिपरिया)—मेसर्स मूलचन्द मोतीलाल } यहाँ बैकिंग, रुई, गल्ला एवं आदत का व्यापार होता है।





भारतीय व्यापारियों का परिचय  
( तीसरा भाग )



सेठ बालकृष्णदासजी वज्राज स्टेट राजानची भोपाल



बाबू मन्दिरोजी चौधरी (जुगलकिशोर देवीदास) इलाहाबाद



सेठ विष्णुदासजी मिश्रा

इसके अतिरिक्त भोपाल स्टेट में शाहगंज, मनकापुर, नजीरगढ़ और चन्द्रपुर में आपकी दुकानें हैं। जहाँ जमींदारी, महाजनी देन-लेन का काम होता है। चन्द्रपुर में सरकारी खजाने का काम भी होता है।

### सेठ बन्धुदेवदास बैकर्स

यह फर्म करीब १०० वर्षों से स्थापित है। इसके स्थापक मेड़वा निवासी सेठ नंदरामजी माहेरवरी थे। आपके पश्चात् फर्म का संचालन सेठ करनमलजी ने किया। आप यहां के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आपने अपनी व्यापार-प्रतिभा के बलपर बहुत संपत्ति प्राप्त की। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ नारायणदासजी हुए। आपने अपने पिता ही की भाँति फर्म के कारबार का संचालन किया। आपको भारत सरकार ने रायसाहब की पदवी से सम्मानित किया। यहां की हिन्दू एवं मुसलिन दोनों समाज की जनता आपसे प्रसन्न थी। आपने धार्मिक कार्यों में भी बहुत रुपया खर्च किया। भोपाल-स्टेट की बेगम साहबा के आप पूर्ण विरवासपात्रों में से एक थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में आपके २ पुत्र हैं। एक सेठ बालकृष्णदासजी एवं दूसरे सेठ बलदेवदासजी। आप दोनों ही अपना अलग-अलग व्यापार करते हैं। सेठ बालकृष्णदासजी यहां के खजाने के खजान्ची हैं तथा म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर और अनायातय के प्रेसिडेण्ट हैं। विधिया में आपकी दुकानें हैं जहां गल्ला एवं कच्ची आड़ू का व्यापार होता है।

सेठ बलदेवदासजी का व्यापार जमींदारी एवं बैंकिंग हैं। भोपाल के अलावा बन्देदुल्ला-गंज, देवापुर, देहरी और बिछतौद में भी आपकी दुकानें हैं। मन्व जगद जमींदारी और लेन-देन का व्यापार होता है।

### मेमर्न दौलतराम शिवनारायण

इस फर्म का हेड आशिस सिहोर है। इसकी और भी शाखाएं हैं जिनका विस्तृत बरिबर इसी ग्रन्थ में सिहोर में जाना गया है। यहाँ यह फर्म गन्ने का एवं आड़ू का अच्छा व्यापार करती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ मांगोलालजी हैं।

### मेमर्न बनेचंद अनरचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रतनलालजी हैं। आप भोमकाल बैरन खनाब के सञ्जन हैं। आप यहाँ के अनेकरी मजिस्ट्रेट हैं। यह फर्म करीब ७० वर्षों से स्थापित है। इसके

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

स्थापक सेठ रतनलालजी के पिता सेठ अमरचंदजी थे। आप ही ने इसे वस्त्रावस्था पर पहुँचाया। आपका ध्यान सार्वजनिक दानधर्म की ओर भी अचक्षु था। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपका मूल-निवास-स्थान मेड़ता ( जोधपुर ) का था।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मोपाज—मेसर्स बनेचंद अमरचंद चौक } यहाँ बैंकिंग, जमींदारी, गन्ना एवं आड़न का व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त फतेमल रतनलाल के नाम से गोहरगंज और धारमला में जमींदारी एवं देनदेन का व्यापार होता है।

### मेसर्स संतोपचंद रत्नदास

इस फर्म को यहाँ स्थापित हुए ७५ वर्ष हुए। शुरू में ही यह फर्म हमी नाम से बँदी-राने का व्यापार करती आ रही है। इसके स्थापक ओमवाल समाज के मेड़ता निवासी सेठ रत्नदासजी थे। आपके पश्चात् इस फर्म का संचालन आपके पुत्र सेठ गौड़ीदासजी ने सम्भाला। आप यहाँ के अत्यन्त प्रतिष्ठित मन्तन हो गये हैं। आपका स्वभाव धार्मिक, मिनतनदार एवं सज्जन था। आपको शुरू से ही धार्मिक शिक्षा मिली थी। यही कारण है कि आपका आजीवन समय धार्मिक कार्यों में ही बीता। आपने छोटे २ बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने में भी कमी नहीं की। धार्मिक कार्यों में आपने हजारों रुपये व्यय किये। आप व्यापारदुरान भी काशी थे। आपने अपने हाथों से हजारों रुपैया भी पैदा किया। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गौड़ीदासजी के पुत्र सेठ अमीचंदजी हैं। आप भी अपने पिता ही की भाँति सज्जन व्यक्ति हैं। आपका यहाँ अचक्षा सम्मान है। आपने अपने पिताजी के सामने ही १० हजार रुपया पुण्यकार्यों में खर्च करने के लिये निहाला था। वह फर्म यहाँ की प्रतिष्ठित फर्मों में से है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मोपाज—मेसर्स संतोपचंद रत्न-दाम चौक } यहाँ बैंकिंग, मोता-बँदी, गन्ना, एवं आड़न का व्यापार होता है।

### सेठ यानमठ मेड़ता

इस फर्म के वर्तमान धार्मिक सेठ यानमठजी मेड़ता हैं। आप ओमवाल समाज के मन्तन हैं। आपके पिता सेठ ओमवालजी इच्छापर दुकान का संचालन करते हैं। सेठ श्री





शान्तजी व्यापारचतुर और प्रतिष्ठित सम्जन हैं। आपका पब्लिक जीवन भी अच्छा रहा है। आप इच्छावर में ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट हैं। भोपाल सरकार ने आपको लैसन्स माफी, परवानगी खास और शरकत दरबार के खिताब प्रदान किये हैं। आप प्रांतीय जैन कांग्रेस के ऑनरेरी सेक्रेटरी भी बहुत समय तक रह चुके हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं सेठ धानमलजी एवं मोतीलालजी। आपने अपने ही समय में दोनों भाइयों को स्वतंत्र व्यापार करने के लिये अलग-अलग कर दिये हैं। नीचे लिखे अनुसार व्यापारिक परिषद केवल धानमलजी का है।

भोपाल—धानमल मेहता } यहाँ बैंकिंग और गल्ले का व्यापार तथा आदत का काम होता है।  
 सुम्नेरावी }

कोठरी ( भोपाल )—धानमल मेहता } यहाँ बैंकिंग और लेन-देन का व्यापार होता है।

इच्छावर की दुकानपर सुद सेठ सौभाग्यमलजी काम करते हैं।

कपड़े के व्यापारी—

मेसर्स गनेशराम मोतीलाल

” गोइलचन्द पासीराम

” लक्ष्मीचन्द किरानलाल

” तुलाराम हजारीमल

” पन्नालाल गुलाबचन्द

” मनमोहन मयुरदास

” रणधोइलाल टीकमदास

” हीरालाल ध्यानलाल

चाँदी-सोने के व्यापारी—

मेसर्स अमरचन्द धानमल

” शुकचन्द चुभ्रीलाल

” सुभ्रीलाल रामचन्द्र

” गोइलचन्द भगवानदास

” गोइलदास पन्नालाल

” चुभ्रीलाल चन्देयालाल

” बुद्धाजी पन्नालाल

” रामरवन राधाकिशन

” लक्ष्मणदास धानचन्द

मेसर्स सुरलाल छोगमल

” संतोषचन्द रखवादास

गल्ले के व्यापारी—

मेसर्स अच्युत रहमान अच्युतगनी

” गन्धीरमल कनकमल

सेठ धानमल मेहता

मेसर्स दौलतराम शिवनारायण

” प्रेममुरदास ज्वालदास

” बागमल लक्ष्मीचन्द

” भगवानजी मदन

” रामकिशन धनमोहनदास

किराना के व्यापारी—

मेसर्स इरमाईल अहमद

” वसमान अच्युत रहमान

” चुभ्रीलाल दौलतराम

” नन्दकिशोर पुलासीचन्द

” सीलापर गयाप्रसाद

” सेनराज चुभ्रीलाल

## सिहोर

सिहोर जी० आई० पी० रेल्वे की भोपाल-उज्जैन ब्रॅच का स्टेशन है स्टेशन पर सिहोर मंडी एवं यहां से आधा मिल पर सिहोर बस्ती बसी हुई है। यह कुछ माह पूर्व तक ब्रिटिश शासन में था। यहाँ छावनी थी। अब यह भोपाल रियासत में आगया है। ब्रिटिश सरकार ने संधि के अनुसार अपनी छावनी हटा ली है। जब यह स्थान भारत सरकार के अंडर में था। यहाँ अच्छा व्यापार होता था। मगर अब यहाँ का व्यापार गिर गया है। अब यहां माझूम होता है कि यह मंडी शीघ्रगामी गति से अवनति की ओर अग्रसर हो रही है। इसके पास ही इच्छावर नाम का स्थान है। यहां कुछ अच्छे २ व्यापारी निवास करते हैं। वे लोग प्रायः खेती बगैर का काम करते हैं। यहां का व्यापार प्रधानतया गन्ना का है गन्ना यहाँ से बाहर भी जाता है। यहां माल की विशेष खपत नहीं है। सिर्फ कपड़ा थोड़ा बहुत यहां आता है। यहां किसी प्रकार के कल-कारखाने नहीं हैं। यहाँ से इच्छावर, भोपाल आदि स्थानों पर मोटरें जाती हैं। इसके पास ही अकोदिया, मुजालपुर, शाहजहाँपुर नामक मंडियाँ हैं। इनका परिचय हर गवालियर स्टेट में प्रथम भाग में दे चुके हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

### मेसर्स भागीरथ रामदयाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामदयालजी के पुत्र सेठ विष्णुदत्तजी हैं। आप परंजल (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी जाति के सज्जन हैं। यह फर्म करीब १०० वर्षों से स्थापित है। इसकी स्थापना सेठ भागीरथजी के द्वारा हुई। इसकी विशेष वज्रति सेठ रामदयालजी ने की। आप व्यापार कुशल सज्जन थे। आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

विहोर—मेसर्स भागीरथ रामदयाल } यहाँ रुई, गन्ना और आड़त का व्यापार होता है।  
सिहोरमंडी—मेसर्स भागीरथ रामदयाल } यहाँ रुई, गन्ना और आड़त का व्यापार होता है।

मेसर्स रामकिशान जसकरन

इस फर्म को करीब १०० वर्ष पूर्व डिहवाना निवासी सेठ रामकिशानजी ने स्थापित किया। इसकी विरोध क्लवि भी आप ही के द्वारा हुई। आपके पश्चात् इसका संचाजन आपके पुत्र सेठ जसकरन जी ने किया। भारत का स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जसकरन जी के पुत्र सेठ जुम्मालाजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

सिहोर—मेसर्स रामकिशान  
जसकरन

सिहोरमेंढी—मेसर्स जुम्माला  
किशानलाल

मुम्बिया (राजगढ़-स्टेट)—मेसर्स  
जसकरन जुम्मालाल

} यहाँ बैंकिंग तथा महाजनी देन-लेन का काम होता है।  
} यहाँ रुई, गल्ले का ब्यापार और आड़त का काम होता है।  
} यहाँ इस नाम से आपके फैक्टरी है। तथा आड़त का काम होता है।

मेसर्स शिवजीराम शास्त्रियाराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जयकिशानदासजी पूत हैं। इसका हंट आरिफ इन्दौर है। अबपर इसका विस्तृत परिषय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में मध्य भाग विभाग के इन्दौर में देखिये। यहाँ यह फर्म गल्ले, रुई एवं आड़त का ब्यापार करती है। इसके मुर्नाम जुगत-किशोरजी मंत्री हैं।

मेसर्स शिवनारायण बडरान

इस फर्म को यहाँ स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसकी स्थापना हीरवाना निवासी अपराजत जाति के सेठ दौलतउमजी ने की। आपके पश्चात् इसका संचाजन आपके पुत्र सेठ शिवनारायणजी एवं सेठ बद्रउमजी ने किया। आप लोगों के समय में इसकी बरती बनती हुई। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मांगी-लालजी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

सिहोर—मेसर्स शिवनारायण बडरान

} यहाँ बरत तथा आड़त का ब्यापार होता है।



## सिहोर

सिहोर जी० आई० पी० रेल्वे की भोपाल-उज्जैन ट्रेन्च का स्टेशन है। स्टेशन पर सिहोर यहां से आधा मील पर सिहोर बस्ती बसी हुई है। यह कुछ माह पूर्व तक ब्रिटिश था। यहाँ छावनी थी। अब यह भोपाल रियासत में आगया है। ब्रिटिश सरकार ने अनुमार अपनी छावनी हटा ली है। जब यह स्थान भारत सरकार के अंडर में था अर्द्धा व्यापार होता था। मगर अब यहाँ का व्यापार गिर गया है। अब यहाँ मादूम कि यह मंडी शीम्रगामी गति से अवनति की ओर अग्रसर हो रही है। इसके पास ही नाम का स्थान है। यहां कुछ अच्छे २ व्यापारी निवास करते हैं। वे लोग प्रायः खेती का काम करते हैं। यहां का व्यापार प्रधानतया गल्ले का है गल्ला यहाँ से बाहर भेजा है। यहां मात की विशेष रूपत नहीं है। मिर्क कपड़ा थोड़ा बहुत यहां आता है। यह प्रकार के कल-कारखाने नहीं हैं। यहाँ से इच्छावर, भोपाल आदि स्थानों पर मोटरो ३ इसके पास ही अक्रोदिया, मुजालपुर, शाहजहाँपुर नामक मंडियाँ हैं। इनका परि गवाजियर स्टेट में प्रथम भाग में दे चुके हैं।

यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

### मेसर्स भागीरथ रामदयाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक मेठ रामदयालजी के पुत्र मेठ विष्णुदत्तजी हैं। आप (जोधपुर) निवासी माहेश्वरी जाति के मज्जन हैं। यह फर्म करीब १०० वर्षों से स्था इसकी स्थापना मेठ भागीरथजी के द्वारा हुई। इसकी विशेष वज्जनि मेठ रामदयालजी का ही व्यापार कुशल सज्जन थे। आप दोनों सज्जनों का स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिहोर—मेसर्स भागीरथ रामदयाल } यहाँ मूँ, गल्ला और आड़न का व्यापार है

सिहोरमंडी—मेसर्स भागीरथ रामदयाल } यहाँ मूँ, गल्ला और आड़न का व्यापार है

मेसर्स रामकिशन जसकरन  
 इस फर्म को करीब १०० वर्ष पूर्व डिहवाना निवासी सेठ रामकिशनजी ने स्थापित किया  
 इसकी विरोध उन्नति भी आप हो के द्वारा हुई। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र सेठ  
 जसकरन जी ने किया। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ  
 जसकरन जी के पुत्र सेठ जुम्नालालजी हैं।  
 इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

- |  |   |   |
|--|---|---|
| सिंहार—मेसर्स रामकिशन<br>जसकरन                     | } | यहाँ बैंकिंग तथा महाजनी देन-लेन का काम<br>होता है।          |
| सिंहारमंडी—मेसर्स जुम्नालाल<br>किशनलाल             |   | यहाँ रुई, गल्ले का व्यापार और आड़त का काम<br>होता है।       |
| रसुलिया ( राजगढ़-स्टेट )—मेसर्स<br>जसकरन जुम्नालाल | } | यहाँ इस नाम से आपकी फैक्टरी है। तथा आड़त<br>का काम होता है। |

मेसर्स शिवजीराम शालिगराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ जयकिशनदासजी घृत हैं। इसका हेड ऑफिस इन्दौर  
 है। अतएव इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथ के प्रथम भाग में मध्य भारत विभाग के इन्दौर  
 में देखिये। यहाँ यह फर्म गल्ला, रुई एवं आड़त का व्यापार करती है। इसके सुनीम जुगत-  
 किरीरजी मंत्री हैं।

मेसर्स शिवनारायण बडराज

इस फर्म को यहाँ स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसकी स्थापना डीहवाना निवासी  
 अप्पल जाति के सेठ दौलतरामजी ने की। आपके पश्चात् इसका संचालन आपके पुत्र  
 सेठ शिवनारायणजी एवं सेठ बडराजजी ने किया। आप लोगों के समय में इसकी अच्छी  
 उन्नति हुई। आप लोगों का स्वर्गवास हो गया है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मांगी-  
 लालजी हैं। आप सज्जन एवं मित्रनसार व्यक्ति हैं।  
 इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

- |                        |   |   |
|------------------------|---|---|
| मेसर्स शिवनारायण बडराज | } | यहाँ कपड़ा तथा आड़त का व्यापार होता है। |
|------------------------|---|---|

भारतीय व्यापारियों का परिचय

सिहोर—मंडी—मेसर्स दीलतराम शिवनारायण	}	यहाँ गस्ला और रुई का व्यापार और आदत का काम होता है ।
सिहोर—मेसर्स रामदेव दीलतराम		यहाँ चाँदी—सोने का व्यापार होता है ।
भेलसा—मेसर्स यद्यराज मांगीलाल	}	यहाँ रुई, गस्ला और कमीरान का काम होता है ।
भोपाल—मेसर्स दीलतराम शिवनारायण		यहाँ बैंकिंग, गस्ला, हुंडी, चिट्ठी और आदत का व्यापार होता है ।
कुरावल (नरसिंहगढ़)—मेसर्स शिव- नारायण यद्यराज	}	यहाँ इस नाम से आपकी एक जीनिंग फैक्टरी है ।

चाँदी-सोने के व्यापारी—

- मेसर्स यंशीधर जगन्नाथ
- ” भागीरथ बालमुकुन्द
- ” रामचन्द्र श्रीकृष्ण
- ” हरकिरान बालकिरान

गस्ला, रुई के व्यापारी—

- मेसर्स भागीरथ रामदयाल
- ” मेघराज शिवकिरान
- ” रामाकिरान भखेराज
- ” रामाकिरान जसकरन
- ” रामदेव दीलतराम

कपड़े के व्यापारी—

- मेसर्स आसाराम नन्दलाल

मेसर्स मौजीराम रामाकिरान

- ” मेघराज शिवकिरान
- ” रामनाथ सरदारमल
- ” रामदेव दीलतराम
- ” हीराजलाल बालाबक्ष

किराना के व्यापारी—

- मेसर्स बीजराम राधाकिरान
- ” रघुनाथ म्हागरीवाला
- ” राममुख रामनारायण
- ” सूरजमल रामप्रताप

बीड़ी के व्यापारी—

- मेसर्स कन्दैयालाल भँवरलाल

वरार और खानदेश



BERAR & KHANDESH

भारतीय व्यापारियों का परिचय

सिहोर—मंडी—मेसर्स दौलतराम शिवनारायण	}	यहाँ गस्ला और रुई का व्यापार और आड़त का काम होता है।
सिहोर—मेसर्स रामदेव दौलतराम		यहाँ चाँदी—सोने का व्यापार होता है।
भेलसा—मेसर्स बद्धराज मांगीलाल	}	यहाँ रुई, गस्ला और कमीरान का काम होता है।
भोपाल—मेसर्स दौलतराम शिवनारायण		यहाँ वैकिंग, गस्ला, हुंडी, चिट्टी और आड़त का व्यापार होता है।
कुरावल (नरसिंहगढ़)—मेसर्स शिव- नारायण बद्धराज	}	यहाँ इस नाम से आपकी एक जीनिंग फैक्टरी है।

चाँदी-सोने के व्यापारी—  
मेसर्स धंशीधर जगन्नाथ  
” भागीरथ बालमुकुन्द  
” रामचन्द्र श्रीकृष्ण  
” हरकिरान बालकिरान

गस्ला, रुई के व्यापारी—  
मेसर्स भागीरथ रामदयाल  
” मेघराज शिवकिरान  
” रामाकिरान भखेराज  
” रामाकिरान जसकरन  
” रामदेव दौलतराम

कपड़े के व्यापारी—  
मेसर्स आसाराम नन्दलाल

मेसर्स भौजीराम रामाकिरान  
” मेघराज शिवकिरान  
” रामनाथ सरदारमल  
” रामदेव दौलतराम  
” हीरालाल बालाप्रसाद

किराना के व्यापारी—

मेसर्स बाँजराज राधाकिरान  
” रघुनाथ भागरीबाला  
” रामसुख रामनारायण  
” सूरजमल रामप्रताप

बीड़ी के व्यापारी—

मेसर्स चन्दैयालाल भँवरलाल

वरार और खानदेश

---

BERAR & KHANDESH



## अमरावती

यह स्थान मी० पी० और परार प्रान्त का प्रधान कौटन सेंटर है। यह जी० आर्द० पी० रेलवे की मुसावल नागपुर प्रांश के बड़नेरा नामक स्थान से ८ मील की दूरी पर बसा हुआ है। बड़नेरा से यहाँ तक रेलवे लाइन गई है। आजकल व्यापारियों की मुबिधा के लिये यहाँ चारों ओर के प्रधान २ स्थानों से मोटरे आती तथा जाती हैं।

यहाँ की मुख्य पैदावार कपास है। इसके पश्चात् जवाही, चने एवं तुवर का नम्बर आता है। रुई की प्रायः प्रतिवर्ष एक लाख से सवा लाख गॉठ तक बचती हैं। यहाँ रुई का सौदा कच्छी से होता है। यहाँ का सौत २८ रतल का मन, और २९ मन की गन्धी होती है। रुई की गॉठ १४ मन की होती है। सौदे का भाव रुई का गॉठ पर और कपास का मन पर होता है। जवाह यहाँ से विशेष पैदा होने पर ही बाहर जाती है। हों, चने एवं तुवर अत्यधः बाहर जाते हैं। यहाँ के प्यासारी इनकी दात भी यहाँ से बाहर भेजते हैं। यहाँ दात बनाने के भी कारखाने हैं। यहाँ विज्ञान बाने की ओर भी अच्छा ध्यान दिया जा रहा है। मँगसरी की मंत्री की ओर लोगों का विशेष मुकाब है। तेल निकालने की भी यहाँ २ मिलें हैं। जिनमें अलसी का तेल पैदा जाता है।

कौटन की जीन तथा सेग करने के लिये भी यहाँ बहुत से कारखाने हैं। करीब २० जॉनिंग पेंचटरियाँ है जहाँ कपास लोड़ा जाता है। कपास की गॉठ बाँजने के लिये करीब १४ प्रेंसिंग पेंचटरियाँ हैं। इन पेंचटरियों में से ८ जॉनिंग पेंचटरियाँ विकस्यती हैं। जिनमें ६ मो प्यूअर सिनेराँ हैं। शेष भारतीय हैं। मज के बिज तथा दात की पेंचटरियों का जिक्र हम कर कर ही चुके हैं। यही यहाँ कारखाने हैं।

व्यापारियों की मुबिधा एवं उनके आरामी मजदूरी की निवटाने के लिये यहाँ एक कौटन-कमेटी स्थापित है। इसमें २ राष्ट्रीय स्थानीय अनुमिनिस्ट्री के तथा शेष कौटन मरचेंट्स की बड़ी संख्या सम्मिलित रहते हैं। ये ही लोग कौटन की व्यवस्था करने हैं।

पैदावार के लिये यहाँ की जमीन बड़ी अच्छी है। इसे "कच्छ-काटन-मगदर" कहते हैं। यहाँ पानी भी बड़ी बसी है। इन्हींलिये कौटन का प्रधान सेंटर होने हुए भी यहाँ कोई मि-





## अमरावती

यह स्थान सी० पी० और वरार प्रान्त का प्रधान कॉटन सेंटर है। यह जी० आई० पी० रेलवे की मुसाबल नागपुर ग्रांच के बड़नेरा नामक स्थान से ८ मील की दूरी पर बसा हुआ है। बड़नेरा से यहाँ तक रेलवे लाईन गई है। आजकल व्यापारियों की सुविधा के लिये यहाँ चारों ओर के प्रधान २ स्थानों से मोटारें आती तथा जाती हैं।

यहाँ की मुख्य पैदावार कपास है। इसके पश्चात् जवार, चने एवं तुवर का नम्बर आता है। रुई की प्रायः प्रतिवर्ष एक लाख से सवा लाख गॉठ तक बंधती हैं। यहाँ रुई का सौदा खण्डी से होता है। यहाँ का तौल २८ रतल का मन, और २९ मन की खण्डी होती है। रुई की गॉठ १४ मन की होती है। सौदे का मात्र रुई का गॉठ पर और कपास का मन पर होता है। जवार यहाँ से विशेष पैदा होने पर ही बाहर जाती है। हों, चने एवं तुवर अलवत्तः बाहर जाते हैं। यहाँ के व्यापारी इनकी दाल भी यहाँ से बाहर भेजते हैं। यहाँ दाल बनाने के भी कारखाने हैं। यहाँ विलहन बाने की ओर भी अच्छा ध्यान दिया जा रहा है। मँगफली की खेती की ओर लोगों का विशेष झुकाव है। तेल निकालने की भी यहाँ २ मिलें हैं। जिनमें अलसी का तेल पैदा जाता है।

कॉटन फो आन तथा प्रेस करने के लिये भी यहाँ बहुत से कारखाने हैं। करीब २० जीनिंग फेक्टरियाँ हैं जहाँ कपास लोड़ा जाता है। कपास की गॉठ बाँधने के लिये करीब १४ प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। इन फेक्टरियों में से ८ जिनिंग फेक्टरियाँ विलायती हैं। जिसमें ६ तो प्यूरर विदेशी हैं। शेष भारतीय हैं। तेल के मिल तथा दाल की फेक्टरियों का जिक्र हम डपर कर ही चुके हैं। यहाँ यहाँ कारखाने हैं।

व्यापारियों की सुविधा एवं उनके आपसी झगड़ों को निपटाने के लिये यहाँ एक कॉटन-कमेटी स्थापित है। इसमें २ सदस्य स्थानीय म्युनिसिपैलिटी के तथा शेष कॉटन मरचेन्ट्स प्रोकर्स एण्ड एजण्ट्स रहते हैं। ये ही लोग कॉटन की व्यवस्था करते हैं।

पैदावार के लिये यहाँ की जमीन बड़ी अच्छी है। इसे "ब्लक-कॉटन-स्वायल" कहते हैं। यहाँ पानी की बड़ी कमी है। इसीलिये कॉटन का प्रधान सेंटर होते हुए भी यहाँ कोई रिप-

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

निंग एण्ड विविग मिल नहीं है। और न खोली ही जा सकती है। यदि यहाँ पानी की सुविधा होती तो और सब प्रकार की सुविधाएँ यहाँ मौजूद हैं।

यहाँ बाहर से आने वाले माल में चावल, किराना, हाइवेयर, कपड़ा आदि प्रधान हैं। कपड़े में विशेष कर मारवाड़ी पहनावे का कपड़ा बहुत आता है। मोटरों के विशेष व्यवहार से यहाँ इसका भी व्यापार अच्छा है। इसका भी बहुत सामान बाहर से यहाँ आता है। इसके व्यापारी मारवाड़ी ही हैं। इन लोगों का ध्यान आज कल मशिनरी लाईन में भी अच्छा जाने लगा है। बाहर से माल विरोध आने का कारण यहाँ की लोक-संख्या से नहीं है। क्योंकि यहाँ की लोक-संख्या तो सिर्फ ५० हजार ही है। मगर अमरावती के आस-पास बहुत से व्यापारिक स्थान हैं जहाँ यहाँ से माल जाता है। जैसे चांदूर बाजार, मोरशी, एलिचतु, हीयर सेंद्र, सेंदूर जऊ, बड़नेरा आदि।

यहाँ व्यापार करने वाली जातियों से विशेष कर मारवाड़ी, गुजराती एवं मुन्नेलसणी हैं। जिनका विशेष परिचय इस प्रकार है—

### काठून-मक्दूम

मेसर्स जवाहरमल बालमुकुन्द

आप लोग जोधपुर राज्य के रहनेवाले माहेधरो वैश्य समाज के वंशज सन्तान हैं। इस कर्म की स्थापना लगभग ४० वर्ष पूर्व सेठ आशारामजी ने की थी। आरम्भ में इस कर्म पर पण्य का व्यापार किया जाता था। इस कर्म की विशेष उन्नति सेठ आशारामजी के लक्षों लक्षों व्यापका स्वर्गवास २ वर्ष पूर्व हो गया है तब से इस कर्म का संवातन स्व० सेठ बालमुकुन्दजी के पुत्र सेठ रामचन्द्रजी करते हैं।

इस कर्म पर वर्तमान में रुई का व्यापार प्रधान रूप से होता है और इसके अतिरिक्त महाजती लेन-देन आदि का व्यापार भी यह कर्म करती है।

इस कर्म के वर्तमान मातृक सेठ रामचन्द्रजी वंशज तथा आपके भाई सेठ श्रीकृष्णजी वंशज हैं।

इस कर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स जवाहरमल बालमुकुन्द  
अमरावती T. A. Bajaj

} यहाँ रुई का व्यापार प्रधान रूप से होता है। भाई श्री  
} यहाँ एक जोन प्रेम फैक्टरी भी है।

### मेसर्स जयरामदास भागचंद

इस फर्म का हेड आफिस धामणगाँव है। इसके मालिक अमवाल वैश्य समाज के सज्जन हैं। आपका और भी कई स्थानों पर व्यापार होता है तथा जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरीयों हैं। यहाँ यह फर्म कॉटन का व्यापार करती है। यहाँ इसकी जिनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है। इसका विरोध परिषय इसी ग्राम में धामण गाँव के पोर्शन में दिया गया है।

### मेसर्स तखतमल श्रीवल्लभ

आप लोग पिपाड़ (जोधपुर) निवासी हैं। आप महेस्वरी वैश्य समाज के चांडक सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग ५० वर्ष पूर्व सेठ तखतमलजी ने उपरोक्त नाम से की थी। यह परिवार देरा से लगभग १५० वर्ष पूर्व अमरावती आया था

इस फर्म पर आरम्भ से ही महाजनी लेन-देन का काम होता आ रहा है। जो यह फर्म वर्तमान में भी पूर्ववत् कर रही है। इस फर्म की प्रधान कृति सेठ तखतमलजी और सेठ भीवल्लभजी दोनों ही के हाथ से हुई।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामरतनजी चांडक हैं।

इसका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

मेसर्स तखतमल भीवल्लभ अमरावती	}	यहाँ महाजनी लेन-देन का व्यापार प्रधान रूप से होता है और रुई का काम काज है।
---------------------------------	---	---

### मेसर्स धनराज पोकरमल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान रामगढ़ (शेखावाटी) है। आप लोग अमवाल समाज के गनेड़ीवाल सज्जन हैं। इस फर्म की स्थापना लगभग १५० वर्ष के पूर्व सेठ धनराजजी गनेड़ीवाल ने अमरावती में की थी।

यह परिवार रामगढ़ से निजाम हैदराबाद आया और वहाँ बस गया। इन परिवार ने वहाँ अरिष्टा प्रभाव स्थापित कर लिया और अपना सब कार्य मेसर्स महानन्दराम पूरणमल के नाम से करने लगा। इस फर्म के संचालकों ने राजकाज-सम्बन्धी डेकों का काम प्रधानरूप से करना आरम्भ किया। इसी सम्बन्ध में सेठ धनराजजी बरार प्रान्त का डेका ले अमरावती आये और उपरोक्त नाम से अपनी फर्म यहाँ स्थापित कर काम करने लगे। आप बड़े प्रबन्ध-

## भारतीय श्वासायुधों का परिचय

दुरान महाकुमार हो गये हैं। आपका स्वर्गवास सम्बन्ध १९०३ में हुआ। तब से कर्म का संवत्सर आपके पुत्र सेठ पोकरमलजी करने लगे। आपका स्वर्गवास सम्बन्ध १९३४ में हुआ अतः कर्म का संवत्सर आपके पुत्रों के हाथ में आया। जिनमें सेठ किरानन्दपालजी ने अपनी स्वतन्त्र कर्म मेगमर्ग पोकरमल किरानन्दपाल के नाम से नागपुर में शोल ली और वह वहीं रहने लगे अतः दुरानी कर्म पर सेठ किरानन्दपालजी के छोटे भ्राता सेठ रामरितामजी काम संवत्सर करने लगे। सेठ किरानन्दपालजी बड़े प्रतापी पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सम्बन्ध १९२९ में हुआ। सेठ रामरितामजी जीमे क्लायर-दुराल थे वैसे ही प्रभावशाली भी थे। आप स्वतन्त्र स्पृष्टिगोष्ठि के मेम्बर तथा आन्दोली मैजिस्ट्रेट भी रहे हैं। आपको सरकार ने रायगाह की शक्ति में सम्मानित किया था। आपका स्वर्गवास सम्बन्ध १९५९ में हुआ। तब से इस कर्म का संवत्सर सेठ भीनारायणजी गनेड़ीवाल करने हैं। आप वयोवृद्ध सज्जन हैं। आप स्वतन्त्र स्पृष्टिगोष्ठि के २५ वर्ष तक मेम्बर रहे। आप लगभग ३५ वर्ष तक फर्स्ट हाथ आन्दोली मैजिस्ट्रेट भी हुए चुके हैं। आजकल आप इन दोनों कार्यों से आरक्षित हो शान्ति-वाम कर रहे हैं। आप भगवदभक्ति-परायण महाकुमार हैं। इस कर्म का प्रधानरूप से आप ही संवत्सर करने हैं।

इस कर्म के वर्तमान मासिक सेठ भीनारायणजी गनेड़ीवाल तथा आपके पुत्र बाबू मान मोहनजी, बाबू मुरलीधरजी, बाबू गोविन्दप्रसादजी तथा बाबू हरिशमजी हैं।

इस कर्म पर प्रदान रूप से ये कर्म एण्ड लैण्ड लार्ड का काम होता है। इसकी बहुत बड़ी शक्ति सम्पत्ति भी है। यह कर्म रुई का काम भी करती है। इसकी जीर्ण कौटुंबी भी है। और कमीशन एण्ड का काम होता है।

मेम्बर—धनराज पोकरमल अनारजनी	} यहाँ ये कर्म और लैण्ड लार्ड का काम होता है। यह ज्ञान कौटुंबी है तथा आहुत का काम होता है।
मेम्बर—नाराज पोकरमल बाबू (अनारजनी)	
	} यहाँ एक ज्ञान कौटुंबी है और कमीशन एण्ड का काम होता है।

### मेम्बर मद्रास नितानारायण

इस कर्म का प्रथम कार्यकाल कर्मों में है। इस कर्म के प्रथम भगवत में कर्मों का प्रथम इस कर्म का किरानन्दजी का कर्मों में है। इस कर्म के प्रथम भगवत में कर्मों का प्रथम





High-contrast, black and white text, likely a name or title, positioned below the portrait of the man in the suit.



यहाँ पर इस दुकान का मैनेजमेण्ट सेठ सदारामजी मुंभनूवाजा करते हैं। आप सेठ चन्द्र रायजी के भाका हैं। इस दुकान के प्रधान मुनीम भीयुक्त रामचन्द्रजी ब्राह्मण हैं। व मूल निवास नारनौल में है। आप करीब २५ वर्षों से जय से यह फर्म यहाँ पर स्थापित तभी से काम करते हैं। इस फर्म की खरीदी के मैनेजर भीयुक्त गंगाराम बापू हैं। आप की खरीदी का काम ३० वर्षों से कर रहे हैं। आप दोनों बयोद्वय और अनुभवी सज्जन हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स—ममालाल शिवनारायण ( T. A. Business ) यहाँ पर रुई का बहुत बड़ा व्यापार होता है।

### मेसर्स रामरतन गणेशदास

इस फर्म के मालिकों का आदि निवास-स्थान रिवतसर ( जोधपुर ) है। आप लोग माहेश्वरी वैश्य समाज के राठो सज्जन हैं। इस परिवार के पूर्व पुरुष लगभग १५० वर्ष पूर्व मारवाड़ से बहार प्रान्त आए और अमरावती जिले के तिरसा नामक स्थान में बस गये। वहाँ इस परिवार ने अपना व्यापार स्थापित किया और अच्छी सफलता प्राप्त की। फलतः आज भी वहाँ पर इस फर्म के वर्तमान मालिकों की दो प्रतिष्ठित फर्म मेसर्स मौजीराम गंगाराम और मेसर्स मौजीराम स्वरूपचंद के नाम से व्यापार कर रही हैं। इन दो फर्म की स्थापना हो चुकने के बाद जब ये फर्म अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचीं तब सेठ गणेशदासजी राठो ने सम्बन्ध १९५८ में मेसर्स रामरतन गणेशदास के नाम से अमरावती में अपनी वर्तमान फर्म की स्थापना की जो आज अच्छी उन्नत अवस्था पर व्यापार कर रही है।

इस फर्म पर रुई का व्यापार प्रधान रूप से होता है इसकी एक जीन तथा प्रेस फैक्टरी भी यहाँ पर है। इसके अतिरिक्त यह फर्म बैंकर और लेण्ड लार्ड का काम भी करती है।

इस फर्म की प्रधान सन्निधि रायबहादुर सेठ गणेशदासजी राठो के हाथों हुई है। आपका जैसा प्रभाव यहाँ के व्यापारीजगत् पर था वैसा ही प्रभाव सरकारी अफसरों पर भी था। आप कितने ही वर्षोंतक स्थानीय म्यूनिसिपैलिटी के सदस्य एवं चेअरमैन तथा काटन कमेटी के जहाँ आप चेअरमैन रहे लगभग १०-१२ वर्षों से आप फर्स्ट क्लास आनररी मैजिस्ट्रेट भी थे। आपको सरकार ने प्रथम राय साहिब और फिर बहादुर की पदवी से सम्मानित किया। आप सी० पी० सी० निसिज के भी ३ साल तक मेंबर रह चुके थे। आपका स्वर्गवास ९-४-३० को हो गया। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम बाबू गोपीकिशन हैं। फर्म का कुल कार्य इस



लासजी का स्वर्गवास संवत् १९६८ में हुआ। आपके दो पुत्र हैं। जिनके नाम सेठ हरगोविन्दजी और सेठ श्रीवल्लभ जी हैं। इनमें से सेठ श्रीवल्लभजी बलगाँव के सेठ बट्टीदामजी के यहाँ दत्तक गये हैं।

आपकी तरफ से मौजरी (अमरावती) में एक घर्मशाला और एक सार्वजनिक डिसेन्सरी एरोली हुई है। इसके अतिरिक्त यहाँ के रामदेव जी के मन्दिर में भी आपने अच्छी सहायता दी है। आपकी तरफ से अमरावती में एक कन्या पाठशाला भी चल रही है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अमरावती—मेसर्स सीताराम रामविलास—इस फर्म पर रुई और बैंकिंग का काम होता है।

मोजरी—मेसर्स सीताराम रामविलास—यहाँ आपकी जीन है। तथा मातंगुजारी और काम लेनदेन का होता है। खड़की, गोईवाड़ा आपके गाँव हैं।

### मेसर्स श्रीराम रूपराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान पोकरन (जोधपुर-स्टेट) है। आप मा खरी जाति के बजाज सज्जन हैं इस खानदान को बरार में आये करीब ८० वर्ष हुए। पर पहले सेठ तिलोकचन्दजी बजाज यहाँ पर आये और आपने कारबार शुरू किया। आप पश्चान् आपके पुत्र सेठ श्रीरामजी ने इस फर्म के कारबार को तरकी दी। सेठ श्रीरामजी बाद सेठ रूपरामजी ने कारबार सन्हाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९८४ में हुआ। आप पुत्र श्रीयुत मदनगोपालजी का स्वर्गवास आपके पहले ही हो चुका था। इसलिए सेठ मदन गोपालजी के नाम पर श्रीयुत मोहनजालजी को गोद लिया गया। इस समय आप ही फर्म मालिक हैं। आप इस समय हीवर खेड में ही रहते हैं।

आपकी ओर से हीवर खेड में एक घर्मशाला बनी हुई है।

फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

हीवर खेड (मोरसी)—मेसर्स तिलोकचन्द श्रीराम—यहाँ पर आपका हेड ऑफिस है। पर पहले सेठ तिलोकचन्दजी ने यहीं से व्यापार शुरू किया। यहाँ पर आपकी जीनिंग फैक्टरी है। तथा बैंकिंग, रुई और लोदी बाड़ी का काम होता है।

अमरावती—मेसर्स श्रीराम रूपराम, यह फर्म यहाँ करीब ५० साल से स्थानित है। यहाँ भी आपकी जीनिंग फैक्टरी है। तथा बैंकिंग, और रुई का व्यापार होता है।

बरूड़— यहाँ पर आपकी जीनिंग फैक्टरी है तथा रुई का व्यापार होता है।

भारतीय व्यापारियों का परिचय :-  
( तीसरा भाग )



भाई मोहनलालजी बघात्र ( भीराम रूपराम ) भमरावणी  
( सी० पी० वेंच नं० १० )



सेठ ललचंदरामजी बहा ( भवानीदास भजुनदास ) रायपुर  
( सी० पी० वेंच नं० ११ )



दासजी ( प्रभुजी मुरलीधर ) राजवाडेगांव  
( सी० पी० वेंच नं० ११ )



सेठ विनयक रामचंद्र खराडू बागार  
( सी० पी० वेंच नं० ११ )





हेड ऑफिस—फेलसी ( रत्नागिरी ) मेसर्स नवलमल चाँदमल, इम दुकान पर बैंकपड़ा और किराने का व्यापार होता है ।

इश्वरला—( रत्नागिरी ) मेसर्स मानमल गुलाबचन्द—यहाँ भी कपड़ा, किराना, बैंक का काम होता है ।

बम्बई—मेसर्स मानमल गुलाबचन्द प्रिन्सेस स्ट्रीट बम्बई नं० २—यहाँ पर कर्म एजन्सी का काम होता है ।

अमदावाद—मेसर्स धनराज अनराज रेलवे पुरा प्रेमचन्द केदारदास मार्केट—यहाँ कपड़े की कमीशन एजन्सी का काम होता है ।

अमरावति—मेसर्स रतनचन्द, छगनमल—यहाँ पर कपड़े का व्यापार होता है । फर्म जलगाँव मिल की कमीशन एजण्ट है ।

गुलेजगुड़ (बीजापुर) मेसर्स धनराज भगनमल—यहाँ पर रेसामी कपड़े का व्यापार होता है इसके सिवा पंजाब के अन्दर मोघा, वरनाला और कैथल इन तीनों मण्डियों में सूरमिश्रीमल के नाम से आपकी फर्म है जहाँ का तार का पता ( Suraj ) है । इन तीनों डु पर गल्ले का व्यापार होता है ।

### कॉटन मरचेंट्स

- मेसर्स जगन्नाथ करनीदान
- ” जवाहरमल बालमुकुन्द
- ” जयरामदास भागचन्द
- ” तख्तमल श्रीवल्लभ
- ” धनराज पोकरमल
- ” बालकदास शिवनाथ
- ” मानमल गुलाबचन्द
- ” मन्नालाल शिवनारायण
- ” रामरतन गनेशदास
- ” शिवलाल शालिग्राम
- ” सीताराम रामविलास
- ” साधुराम तोलाराम
- ” श्रीराम रूपराम

### कपड़े के व्यापारी

- मेसर्स आत्माराम हरिदास
- ” कुँवरजी लखमीदास
- ” गनेश स्टोअर
- ” जेठा भाई कालीदास
- ” जोशी देशपांडे
- ” शम्भरमल राठी
- ” पूरनलाल बंसीलाल
- ” फतेचंद मोंगीलाल
- ” बंसीलाल पन्नालाल
- ” मोतीराम तुलाराम
- ” रतनचन्द छगनमल
- ” हाजी कासम हाजी इसाक





## दलगांव

यह अमरावती के पास एक छोटा सा रोड़ा है। मगर यहाँ बड़े बड़े बैंकर्स की पाँच सात दुकानें होने से गुन-धनन मालूम होता है। यहाँ के व्यापारी कृषि तथा महाजनी लेन-देन का काम करते हैं। यहाँ की खास पैदावार कपास है जो अमरावती के बाजार में विक्रता है। अमरावती तथा यहाँ के बीच में हमेशा मोटरें जाया करती हैं। यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

### मेसर्स चतुर्भुज शिवनारायण

इस फर्म के मातृकों का मूल निवासस्थान मेड़वा ( मारवाड़ ) में है। आपके परिवार को सी० पी० में आये हुए करीब १३० वर्ष हुए। पहले पहल आपकी फर्म सिवण गाँव और दलगाँव में स्थापित हुई। सब से पहले सेठ चतुर्भुजजी लड्डा यहाँ पर आये और आपने मेसर्स चतुर्भुज शिवनारायण के नाम से अपना फर्म स्थापित किया। सेठ चतुर्भुजजी का स्वर्गवास हुए करीब ७० वर्ष हुए। आपके पञ्चान् आपके दत्तक पुत्र सेठ शिवनारायणजी ने इस फर्म के काम को सम्हाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९५७ में हुआ। शिवनारायणजी के पुत्र श्रीयुत गोपीनाथजी थे आपके बहुत शान्त और सरल होने की वजह से सेठ शिवनारायणजी के परचान् फर्म का काम आपके पौत्र श्रीयुत बर्दानाथजी ने सम्हाला। आपने इस फर्म की बहुत वसूली की। श्रीयुत बर्दानाथजी का स्वर्गवास संवत् १९७५ के आदिवन में हो गया। इस समय इस फर्म का काम आपके दत्तक पुत्र सेठ श्रीवल्लभजी करते हैं।

इस फर्म का दान-धर्म और सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अथवा लक्ष्य है। दलगाँव में आपके ओर से एक धर्मशाला और एक चतुर्भुजनाथ का मन्दिर बना हुआ है। इनमें करीब लाख सवा लाख की लागत लगी है। इसके सिवा कहीं भी आपके ओर से एक अन्नश्रेय भी चल रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दलगाँव-मेसर्स-चतुर्भुज शिवनारायण—यहाँ पर मुख्यतया बैंकिंग और मोटो का काम होता है।



इस फर्म के मारवाड़ में बहुत से मकानात हैं तथा अमरावती में बट्टीनाथ श्रीराम के नाम से फर्म और बंगला है।

### मेसर्स चौधमल शिवनाथ

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान शिवसर ( जोधपुर स्टेट ) में है। आग मारोपी जाति के राठी सज्जन हैं। आपकी फर्म को यहाँ पर स्थापित हुए करीब ८०-९० वर्ष हुए। पहले पहले सेठ जेठमलजी राठी ने बहुत साधारण स्थिति में अपना काम शुरू किया। सेठ जेठमलजी के दो पुत्र थे, जिनके नाम सेठ स्वरूपचन्दजी और सेठ चौधमलजी था। सेठ जेठमलजी के पश्चात् सेठ चौधमलजी ने फर्म के काम को सम्भाला। आपके हाथों से इस फर्म की रूप वृद्धि हुई। सेठ चौधमलजी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ शिवनाथजी ने फर्म के काम को सम्भाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९४४ में हुआ। आपके कोई पुत्र न होने से आपने स्वामीनारायणजी राठी को चुनकर लिया। तब से आप ही इस फर्म का संचालन करते हैं। आपके इस समय चार पुत्र हैं। उनके नाम क्रम से श्रीयुग राष्ट्रलालजी, माणिकलालजी, रत्नलालजी और हीरालालजी हैं।

इस फर्म के मालिकों की सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि रखी है। आपकी ओर से बनगौर में एक ए० बी० स्कूल चल रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनगौर—मेसर्स चौधमल शिवनाथ यहाँ पर बैंकिंग विजिनेस और देन-लेन का काम होता है।

एकन—मेसर्स चौधमल शिवनाथ—यहाँ पर स्त्री का काम होता है।

### मेसर्स रघुनाथदास चतुर्भुज

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रैन ( जोधपुर-स्टेट ) है। आग मारोपी जाति के मारवाड़ सज्जन हैं। इस फर्म को बनगौर में आगे करीब १०० वर्ष हुए। पहले पहले सेठ रघुनाथदासजी ने इस फर्म को स्थापित किया। रघुनाथदासजी के भाई भीयुग चतुर्भुजजी थे। चतुर्भुज चतुर्भुजजी के बाद भीयुग पाण्डुरंगजी ने इस फर्म के काम को सम्भाला। सेठ पाण्डुरंगजी के पश्चात् सेठ स्वामीनारायणजी ने इस फर्म के काम को सम्भाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९११ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ हरिदासजी ने इस फर्म के काम को सम्भाला। आपका स्वर्गवास संवत् १९१९ ई० में हो गया। इस समय इस फर्म के

मालिक श्रीमंत हरिरामजी के लघुभाऊ श्रीमंत राधाकृष्णजी सारदा हैं। आर बड़े कुशल युवक हैं। आपका जन्म संवत् १९६५ का है।

आपकी ओर से बलगाँव में अन्नक्षेत्र है जिसमें हमेशा सदायत बँटवा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१—बलगाँव-मेसर्स एगुनायदास चतुर्मुख—यहाँ पर बैंकिंग, लेनदेन और खेती का काम होता है।

### मेसर्स राममुख पूरनमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान संतवाप ( जोधपुर ) में है। आप माहेधरी जाति के देहा मजून हैं। इस खानदान को बलगाँव में आये करीब ७० वर्ष हुए। सब से पहले सेठ राममुखजी देरा से बलगाँव में आये और आपने फर्म स्थापित किया। राममुखजी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ पूरनमलजी हुए। आपके हाथों से इस फर्म की बहुत वृद्धि हुई। पूरनमलजी का स्वर्गवास हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके छोड़े पुत्र न होने से आपने सेठ राधा-बहमजी को दत्तक लिया। अभी आप नावालिग हैं। इस लिए फर्म का संचालन मुनीम करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बलगाँव—मेसर्स राममुख पूरनमल—इस फर्म में बैंकिंग, लेनदेन और कृषि का काम होता है।

## मिल ऑफिस

मेसर्स सावतराम रामप्रसाद

इस फर्म के वर्तमान मालिक यादू किरानलालजी गोयनका अमराज बैरव सा गोयल सज्जन हैं। आपका खास निवासस्थान बलारा (नवलगढ़-जयपुर स्टेट) में इस फर्म का स्थापन करीब १०० से अधिक वर्ष पूर्व सेठ सावंतराम जी के हाथों से व (आछोट ताडुका) में हुआ था। उस समय सेठ सावंतरामजी, हैदराबाद स्टेट के रिमार्सद सार्जेंट करने का काम करते थे। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ रामप्रसादजी ने। में करीब ५०।६० साल पहिले अपनी फर्म स्थापित की। अकोला दुकान की तरफी और। का प्रधान श्रेय आपके मुनीम श्री जयकृष्ण बगाजी नाइक को है। श्री नाइकजी के। फर्म के व्यवसाय की बहुत वृद्धि हुई। सेठ रामप्रसादजी करीब ३५ साल पहिले हार हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ ओंकाररामजी ने कार्यभार ग्रहण किया। सेठ अं रामजी बड़े मितनमार, सरलश्रभाव के व्यापार दक्ष सज्जन थे। सन् १९१२ में आपने राम रामप्रसाद डॉटिन मिन्स को जन्म दिया। इस मिल के अधिकांश शोहर आप के ही हैं। तीन साल तक मिल का कार्य दक्षता पूर्वक संचालन कर आप १९७१ के काब्युन मा स्वर्गवासी हो गये। आपकी अकाल मृत्यु से मिल के उज्वल भविष्य में बहुत घटा व सेठ ओंकाररामजी के स्वर्गवासी होने के समय उनके एक मात्र पुत्र बाबू कृष्ण गोयनका १३ वर्ष के थे। अब फर्म का व्यवसाय संचालन सेठानी श्रीमती करती करती रही। और अब भी मिलकी मैनेजिंग डायरेक्टर आपकी हैं।

श्रीयुक्त कृष्णलालजी गोयनका उन्नत एवं सुधरे विचारों के नवयुवक हैं। इनके आप विनायक बाना करके वापस आये हैं। आपको शुद्ध न्यायी पहिनेने का शौक है। के सर्वजनिक कामों में आप भाग लेने रहते हैं। अपने विवाही के श्रमणार्थ आपने श्री प्रो। राम भोवराजय स्थापित किया है। आपकी फर्म आच्छोटे एवं बरार प्रांत में बहुत म् एवं प्रसिद्धि मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिषद इस प्रकार है।

आच्छोटा—मेसर्स सावंतराम रामप्रसाद साहू—पेशवा, लीडर, मिन एजंसी एवं करी। का काम होता है।

एच्छोटा (आच्छोट) मेसर्स सावंतराम रामप्रसाद—यहाँ आप का प्रधान निवास है एवं। का बहुत बड़ा काम काय होता है।

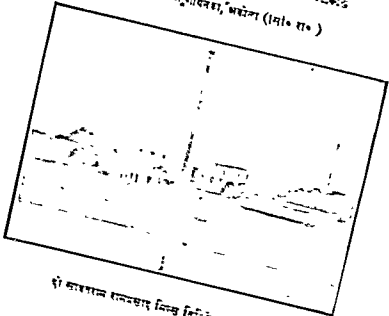
इन्दौर केन्द्र—मेसर्स सावंतराम रामप्रसाद—आपकी निवृत्त का काम होता है।

बेकम्प (इन्दौर स्टेट) किरानकराय इंकारकराय—श्रीमती केवरी दे कवा केती का काम होता है।

भारतीय व्यापारियों का परिचय '७  
( तीसरा भाग )



सेंट कृष्णगारमं, सोपनहा, अहमदनगर (मि० रा० )



श्री साहयराज राजगुहाद विन्सु निर्माते, अहमदनगर







## केसर्स

### मेसर्स बर्दीदास रामराय सरावगी

इस फर्म के मालिक नवलगढ़ ( जयपुर स्टेट ) निवासी अमबाल वैश्य समाज के सरावगी सज्जन हैं। संवत् १९२८ के कतीय सेठ बर्दीदासजी देरा से अकोला आये, यहां आप मामूली काम काज करते रहे। सेठ बर्दीदासजी के पिता पन्नालालजी एवं पितामह सेठ बम्जूरामजी थे, सेठ बम्जूरामजी बहुत सम्पत्तिशाली एवं प्रतिष्ठित सज्जन थे।

सेठ बर्दीदासजी के पुत्र थायू रामरायजी, लश्मीनारायणजी एवं पुंगीलालजी के हाथों से फर्म के व्यापार की विरोध वृद्धि हुई। बर्दीदासजी १९४७ में और रामरायजी १९६१ में स्वर्गवासी हुए। आनका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अकोला—मेसर्स बर्दीदास रामराय—सराची लेनदेन का काम होता है।

अकोला—सरावगी जॉन प्रेस फेक्टरी—इस नाम से आपकी कॉटन जीनिंग और प्रेसिंग है।

### मेसर्स मानमल आईदान

इस फर्म के मालिक जेसलमेर निवासी माहेरवरी वैश्य समाज के टावरी ( मोहवा ) सज्जन हैं। कतीय १०० वर्षों से धामनगौव में इस फर्म का जयसिंहदास हंसराज के नाम से कारबार होता था। संवत् १९५३ में जसराज धीराम, नैनसुन्ददास गोकुलदास, मानमल आईदान एवं विसनसिंह हरीसिंह के नाम से इस फर्म की ४ शारयाएँ हो गईं। तब से उपरोक्त फर्म अपना स्वतंत्र व्यापार कर रही है। सेठ सांगीदासजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार की विरोध वृद्धि हुई। आप बड़े दृढ़प्रतिष्ठ एवं चरित्रवान् सज्जन थे। आप ही के समय में अकोला, हिंगोली आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियों खोली गईं। संवत् १९७६ में आप स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सांगीदासजी के पुत्र सेठ आईदानजी एवं सेठ लोला-रामजी हैं। आपका कुटुम्ब माहेरवरी समाज में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है, सेठ आईदानजी ने अकोला एवं धामनगौव में होनेवाले माहेरवरी महासभा अधिवेशन के स्वागतार्थ्य का पत्र सुरोभिध किया था। आपके पुत्र भांपुत्र सुरालसिंहजी कारबार में भाग लेते हैं।

आनका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स मानमल आईदान } वैद्विग, जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी एवं कॉटन का  
व्यापार होता है।

नीमगौव ( नांदूरा ) मुन्धरसिंह सांगीदास—दृष्टि का कारबार होता है।





भारतीय व्यापारियों का परिचय —  
(सोसरा माल)



सेठ रघुनाथदासजी गोपनीवाल (रघुनाथदास  
रामनारा) भरोला



सेठ रामप्रसादजी गोपनीवाल (रघुनाथदास  
रामनारा) भरोला



सेठ राधाहृदयजी गोपनीवाल (रघुनाथदास  
रामनारा) भरोला



सेठ कन्हैयालालजी गोपनीवाल (राधाहृदय पन्ड बग्दनी) भरोला

भारतीय व्यापारियों का परिचय

कारंजा—मंसर्स मानमल ओइदान—आइत और रुई का व्यापार होता है।

आहोट— " " — " " "

बारासि— " " — " " "

बारीदांरुली ( अकोला )—गोपीकिरान गोपालराम—जीन फेक्टरी है।

द्विगोली ( निजाम ) द्विगोली जीन कंपनी—जीन फेक्टरी है।

**मेमर्स रघुनाथदास रामनाराय**

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान लक्ष्मणगढ़ ( सीकर ) है। आठ मार्च १९०० साल के तोगनीयान सज़न है। इस फर्म का स्थापन सेठ रघुनाथदासजी के हाथों में वर्ष १०० साल के पूर्व हुआ था। आपने सेठ रामनारायजी एवं सेठ मन्नालालजी से पुत्र हुए, सेठ रामनारायजी के हाथों में इस फर्म के कारबार की शक्ति हुई, आगे अकोला में एक घर बनाई। आठ मंथ १९१४ में स्वर्गवामी हुए।

सेठ रामनारायजी के यहाँ सेठ लक्ष्मीनारायणजी दत्तक लिये गये तथा सेठ लक्ष्मीनारायणजी के यहाँ सेठ राधाकृष्णजी मंथ १९३१ में दत्तक लिये गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बालू राधाकृष्णजी तोगनीयान हैं। आपने फर्म के स्थापना को निम्न २ सज़नों में बाँट दिया है। १,७ साल पूर्व आपने कोटन ज़ोनिंग फेक्टरियों स्थापित कीं। बरार प्रांत में बढ़ते हुए मोटर व्यापार से लाभ कमाने के लिये अभी २ साल पूर्व से कोई मोटर का व्यापार आरंभ किया। हाल ही में प्रताप थियेटर के नाम से आपने एक नया थियेटर स्थापित करवाया है। व्यवसायिक दृष्टि के साथ २ सामाजिक एवं व्यापारिक ज़ातों में भी आपका अथवा सम्मान है। आप साठेवर्षी महाममा के अकोला अधिवेशन के स्थापना सचिव हैं। अकोले के कोटन मार्केट के सभापति एवं इन्डिस्ट्रियल कौन्सिलर भी आप हैं। आप बरारगढ़ कंपनी लिमिटेड के डायरेक्टर हैं। आपकी आठ मंथ १७ वर्ष हुए हुए बरारगढ़ बनी है। सहर में ७ मील की दूरी पर आपका सुन्दर बंगला ११ सज़ाना बनी है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेमर्स रघुनाथदास रामनाराय

I. No 17

} वैदिक एवं कोटन का व्यापार स्थापना

अकोला—मेमर्स राधाकृष्णजी तोगनीयान—इस नाम में वर्ष १९३१ साल १०००

अकोला— " " — " " "









अकोला—मेसर्स राधाकृष्ण कम्पनी—कोई मोटर की एजेंसी है। यहाँ मोटर नगरी से व  
क्रिस्ट से बेची जाती है। इसके अलावा मोटर एसेस-  
रोड, वाड़ी बिस्बर्स, इंजिनियर्स एवं पेट्रोल का व्यापार  
होता है।

नांदूर—राधाकृष्ण कम्पनी—यहाँ भी उपरोक्त व्यापार होता है।

यवतमाल— " " " "

इस फर्म के मोटर व्यवसाय में सेठ राधाकृष्णजी के बड़े भावा बाबू कन्हैयालालजी धोप-  
नीवाल का भाग है।

### मेसर्स मोतीलाल बंशीलाल

इस फर्म के मालिक रायपुर (सारंगपुर यू० पी०) के निवासी अमवाल वैश्य समाज के  
जिंदल गौरीय सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १०० साल पूर्व सेठ बंशीलालजी के  
द्वारा हुआ। आने इस फर्म में बैंकिंग व्यापार, लेन-देन एवं खेती में बहुत संपत्ति एकत्रित  
की। अकोले में आपरी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा थी। आपने ७० वर्ष पूर्व श्रीलक्ष्मीनारायणजी का  
मंदिर बनवाया एवं इस मंदिर के स्थाई प्रबंध के लिये ५।६ लाख की संपत्ति एक ट्रस्ट के  
जिम्मे की। करीब ५० वर्ष पूर्व आप स्वर्गवासी हुए।

सेठ बंशीलालजी के २ पुत्र हुए, सेठ मोतीलालजी एवं सेठ बालचंदजी। इन दोनों भाइयों  
का कारबार करीब ३५ साल पहिले अलग २ हो गया। सेठ मोतीलालजी भी बड़े धर्मात्मा  
सज्जन थे। आपने श्रीनारायण, देवप्रयाग, इलाहाबाद तथा नारिक में धर्मशालाएँ बनवाईं।  
इसी प्रकार कई धार्मिक कामों में आपने आजीवन योग दिया। आप ६-१०-२५ की स्वर्गवासी  
हुए हैं। ६ साल पूर्व आने अकोले में लोकमान्य थियेटर बनाया है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मोतीलालजी के पुत्र भीयुन् लक्ष्मचंदजी हैं इस समय  
आपकी वय १० वर्ष की है। आप अपने पिताजी के स्मरणार्थ एक सुन्दर संगमरमर की छवती  
बनवाने की योजना कर रहे हैं। आपका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स मोतीलाल बंशीलाल } अमीदारी, लेन-देन, स्थाई संपत्ति एवं कपास  
की आइस का व्यापार होता है।

खामगाँव—मेसर्स मोतीलाल बंशीलाल—लेन-देन का काम होता है।



### मेमर्स रामानंद दानमल

इस फर्म का स्थान १०० सान पहिले सेठ रामानंदजी के हाथों से हुआ। इस समय सन १९०० में और गन्ने का व्यापार होता था। सेठ रामानंदजी के चार सेठ दानमाजी के हाथों से फर्म के व्यापार की वृद्धि हुई, आने के वर्षों एक श्री गोपीचर का मंदिर बनवाया। वर्तमान में फर्म के मालिक सेठ रामगोपालजी हैं। आप मार्कटराम रामप्रसाद कौटिल मित के इन्वोल्मेंट हैं। आपके वर्षों बैंकिंग, रेहन गिरणी, आहुत, गस्ती तथा रुई का व्यापार होता है।

## कॉटन मरसेंट्स एण्ड कमीशन एजेंट्स

### मेमर्स किशनदास मंतोषीदास

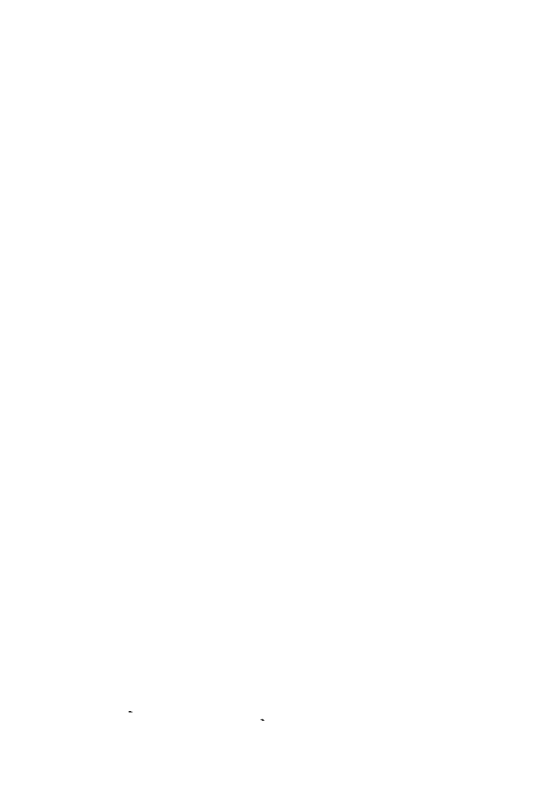
इस फर्म के मालिक अंगूठा खत्री समाज के मालिक हैं। आपका मूल निवास पंजाब है। १९११ में आपका कुटुम्ब नागौर और तागौर में करीब १०० वर्ष पूर्व आना मंतोषीदासजी के समय में बर्दा आया। आपके पुत्र लाया किशनदासजी ने व्यवसाय-वृद्धि की। आपने इस फर्म में अच्छी प्रतिष्ठा पाई। आप १९०६ में स्वर्गवास हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक आना किशनदासजी के पौत्र (आना मण्डलदासजी के पुत्र) श्रीमल प्रमदराम खत्री हैं। आप सिविल इंजीनियर हैं। वर्तमान में आप राष्ट्रीय कॉलेज का प्रेसिडेंट एवं यूनिवर्सिटी मेंबर हैं। आपने फर्म के वैदिक व्यापार पर लार्ड एम्बेस्सी में विशेष वृद्धि की है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

- अहमदाबाद—मेमर्स किशनदास मंतोषीदास—वैदिक और कपास की आहुत का व्यापार होता है।
- अहमदाबाद—मेमर्स प्रमदराम मण्डलदास—कपास का व्यापार होता है।

### मेमर्स गुलाबराज गोविंदराज

इस फर्म के मालिक अहमदाबाद (मोहर) निवासी अहमदाबाद के गुलाबराज गोविंदराज हैं। सन १९०० में सेठ गुलाबराजजी के पुत्र सेठ अहमदाबादी अहमदाबाद आने से। गुलाबराज गोविंदराजजी के पुत्र गोविंदराजजी के हाथों में फर्म के व्यवसाय की वृद्धि हुई। सेठ गोविंदराजजी के पुत्र गुलाबराजजी, गुलाबराजजी तथा गोविंदराजजी हैं। सन १९०० में अहमदाबादी सेठ गुलाबराजजी का कुटुम्ब अहमदाबाद में आकर आया है।





सेठ पन्नालालजी वगडेलवाळ ( पन्नालाल  
हिरालाल ) भट्टोजा



सेठ नीरंगरायजी हंसनूवाळा (नीरंगराय  
पन्नालाल ) भट्टोजा



सेठ हिरालालजी वगडेलवाळ ( पन्नालाल  
हिरालाल ) भट्टोजा

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ सुरजमलजी एवं सेठ सीतारामजी के पुत्र श्रीरामजी  
 ५ सुरजमलजी के पुत्र लक्ष्मीचंदजी तथा राधाकिरणजी एवं श्रीरामजी के पुत्र वृज-  
 ति भी व्यापार संचालन में भाग लेते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—  
 १—मेसर्स गुलाबराय गोविंदराम—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा बैरिंग और कौटन  
 का व्यापार होता है।

६—मेसर्स सुरजमल श्रीराम—यहाँ कौटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

७—मेसर्स गुलाबराय गोविंदराम— " " "

८—मेसर्स लक्ष्मीचंद वृजमोहन— " " "

९—मेसर्स राधाकिरण वृजमोहन— " " "

### मेसर्स गुलाबराय हरदयाल

इस फर्म का स्थापन करीब १०० साल पहिले सेठ गुलाबरायजी ने किया। आपके पुत्र सेठ  
 लालजी, गोविंदरामजी और बाताप्रसादजी गुलाबराय गोविंदराम के नाम से कारबार करते  
 संवत् १९५५ में गुलाबराय गोविंदराम और गुलाबराय हरदयाल के नाम से इनकी दो  
 ति गई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ हरदयालजी के पुत्र गुरुप्रतापजी हैं। आपके पुत्र  
 वरायजी व्यापार संचालन करते हैं। सेठ गुरुप्रतापजी सनावन घर्मसमा अकोला के समापति  
 भावकी ओर से यहाँ एक घर्मसाला बनी है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१—मेसर्स गुलाबराय हरदयाल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है, तथा सराफी और रुई का  
 व्यापार होता है।

२—मेसर्स गुलाबराय हरदयाल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और रुई का व्यापार होता है।

### मेसर्स नौरंगराय वंशीधर

इस फर्म के मालिक चिदाबा (सीकर) निवासी अमवाल बैरय समाज के मूँझनूवाला सज्जन  
 सेठ नौरंगरायजी ५० साल पूर्व अकोला आये। एवं ४० साल पूर्व आपने बाबू पद्मालाल-  
 हंडेलवाल के भाग में नौरंगराय पद्मालाल नामक फर्म स्थापित की। अभी २ संवत् १९८६  
 आप दोनों सज्जनों की फर्म अलग २ हो गई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ नौरंगरायजी है। आपके पुत्र वंशीधरजी तथा नयमल-  
 र्म का कार्य-संचालन करते हैं।

साहब ने मिल की दिन प्रति दिन उन्नति कर दिमाई। आपने १७ वर्ष तक मिल व संघालन कर इमर्ची साम्प्रतिक स्थिति को अच्छा दृढ़ बनाया। सन् १९८३ में आपने स्थान पर रा० व० रामचन्द्र विष्णु उर्फ दादा साहब महाजनि की नियुक्ति कर नि मैनेजिंग टायरेक्टर पद से इस्तीफा दिया

ऑइल मिल की उन्नति कर रा० व० भागवत साहब ने अपने नानी को रसायन की शिक्षा देने एवं घरवां रहित सावुन तयार करने के लिये शंगनोर गवर्नमेन्ट सोन फेस दाखिल कराया और स्वयं ७० वर्ष की अवस्था में आपने भी उपरोक्त फेक्ट्री के उमरी में अपना नाम लिखाया। वहाँ से ज्ञान प्राप्त करके जर्मनी मशीनों के लिये आर्डर और अपनी मिल में सावुन बनाने का विभाग खोजा। गत वर्ष आठके यहाँ के बने सात ४० हजार की डिस्ट्री हुई।

यह मिल १ लाख ५ हजार की पेंजी से प्राइवेट लिमिटेड की गई है। ३ लाख रिजर्व फंड है। गत वर्ष इस मिल ने २७७७ टन सीटम का तेल निकाला। सन् २०११ ११४२ टन तेल और १६८० टन खज्जी आपने बाहर भेजा। रा० व० भागवत साहब सेठ साधव दसायय भागवत ने नियमपूर्वक इंजीनियरिंग शिक्षा प्राप्त की है। आप को सेलिंग प्रांच वाजनापेट अकोला में है।

### मेसर्स विमुनदयाल सीताराम

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सीतारामजी के पुत्र बाबू जगन्नाथजी छावचरिया आर छावमरी ( रोम्बावाडी ) के निवामी अमराव वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म स्थापन ६० साल पूर्व सेठ विमुनदयालजी ने किया। आप १९६२ में स्वर्गवासी हुए। इस पुत्र सीतारामजी भी सन् १९६३ में स्वर्गवासी हुए। यह फर्म भारत में ही गया और का कारवार करती है। सेठ सीतारामजी के पश्चात् श्रीहनुमतरामजी छावचरिया फर्म व्यापार संघालित करने हैं। आपका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

अकोला—मेसर्स विमुनदयाल सीताराम—

T. A. Chawcharia

} यहाँ आदम, गन्ना तथा तेन बाप होगा है।

इस नाम से आपका ऑइल मिल है। इस फर्म मेसर्स सनेहीराम जुहारमन के साने में बंधन व्यापार होता है, इनके यहाँ "टोयो मेनका फेक्ट्री" पत्रमां है। इस फर्म की कार्टन मोजन में बंधे इतिवृत्त में कई पथेय पत्रभियां भुन जाती हैं।

भारतीय व्यापारियों का परिचय :-  
( तीसरा भाग )



श्री गजधरजी गोपनका ( बन्धारास रुद्रमठ ) भडोला



श्री राजवहादुर भार० एही० महामनि भडोला



श्री प्रगन्नाथजी चावरीया (विष्णुनन्द्याल सेनाराम) भडोला



श्री० श्री० कुंजीलालजी (सिकलाल कुंजीलाल) भडोला



### मेसर्स शिवलाल कुंजलाल

इस फर्म के मालिक अमवाल समाज के गोयल गौत्रीय सज्जन हैं। आप मोमा-रामगढ़ ( सोकर ) के निवासी हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ शिवलालजी के हाथों से ४० साल पहिले हुआ। सेठ शिवलालजी के ३ पुत्र हुए, सेठ कुशीलालजी, सेठ गंगारामजी एवं शिवप्रसादजी। सेठ कुशीलालजी बहुत होनहार सज्जन थे। आपके द्वारा फर्म के व्यापार को अच्छी तरकी मिली थी। आप ४० वर्ष की आयु में चैत्र १९८६ में स्वर्गवासी हुए। वर्तमान में आपके शेष दोनों भ्राता व्यापार संचालित करते हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—शिवलाल कुंजलाल } यहाँ पर कपास और सरकी का व्यापार होता है और  
T. No 35 } ऑइल मिल है।

अकोला—कुशीलाल रामेश्वर—इस नाम से एक जीनिंग फेक्टरी है।

नसरुलामंज ( भोपाल ) शिवलाल कुंजलाल—कपास का व्यापार होता है।

### हॉथ मरसेट्स

#### मेसर्स जमनाधर पोदार

इस फर्म का हेडऑफिस नागपुर है। भारत भर में टाटा की मिलों का कपड़ा बेचने की यह फर्म सोल एजेंट है। इसके व्यापार का विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थ के दूसरे भाग में कल-कत्ता विभाग में दिया गया है। अकोले में इस फर्म पर कपड़े के व्यापार के अलावा मोटर और पेट्रोल का व्यापार भी होता है।

#### मेसर्स शिवजी जीवनदास

इस फर्म का स्थापन सेठ शिवजी जीवनदास के हाथों में २१ साल पहिले हुआ। आप मूंदरा-कच्छ के निवासी भाटिया वैष्णव समाज के सज्जन हैं। आपकी फर्म अकोले में कपड़े का बड़ा कारबार करती है। बम्बई, अहमदाबाद एवं बरार की मिलों से आपका डाय-रेक्ट सम्बन्ध है।

#### दि बरार ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड

इस लिमिटेड फर्म का हेडऑफिस अकोले में है। यह सभी तरह के कपड़े का व्यापार करती है। इस फर्म की प्राचेन एनप्लॉयी एवं वर्तमान में है।









सेठ रामगोबाळजी चौधरी ( रामचंद्र  
रामगोपाल ) अहमदाबाद



सेठ सांवनरामजी पुरोहित ( बीजाबाज मुरलीधर )  
मलकापुर ( १८ ७९ )



सेठ मुकुंदजी चौधरी ( रामचंद्र रामगोपाल )  
अहमदाबाद ( १८ ७९ )



सेठ दादुरदास जी M. L. C. ( बन्ना मर्दाने  
गोविन्दजी ) बुरानपुर ( १८ १२२ )

### मेसर्स हाजी दाउद उसमान

इस फर्म का हेड ऑफिस बम्बई में है। सी० पी० बरार में इसकी १०।१२ प्रांचेज हैं जिन पर गल्ले और किराने का बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसका वित्तुत परिचय धामगौर में दिया गया है।

### मेसर्स रामचन्द्र

#### मेसर्स रामचन्द्र रामगोपाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामगोपालजी एवं मुखदेवजी कोठारी हैं। आप माहेश्वरी समाज के बोर्डानेर निवासी चौपनीवाल कोठारी सज्जन हैं। सेठ रामगोपालजी के विवाह सेठ धनसुरदासजी करीब ५०-६० साल पहिले अकोला आये थे। आपके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी ने यैहों की दलाली का व्यापार आरम्भ किया। आज इस लाइन में आपकी फर्म अच्छी और प्रविष्टि मानी जाती है। सेठ रामचन्द्रजी १९१६ में स्वर्गवासी हुए।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स रामचन्द्र रामगोपाल—यैहों और व्यापारियों के साथ हुंडी पिट्टी की दलाली का व्यापार होता है।

धामगौर—मेसर्स चिरखीलाज मुखदेव—यैहों की दलाली का व्यापार होता है यहाँ मुखदेवजी पार्टनर रूप में काम करते हैं।

### फोल्-मर्चेंट्स

#### मेसर्स सुगनचंद एण्ड कम्पनी

इस फर्म का स्थापन सन् १९१७ में बाबू सुगनचंदजी तापड़िया के हाथोंसे हुआ। आपका मूल निवासस्थान लाहमदेसर (बोर्डानेर) है। आप माहेश्वरी वैद्य समाज के सज्जन हैं। बाबू सुगनचंदजी शिक्षित एवं एक विद्यार्थी के सज्जन हैं। आपके निवासी सेठ मुखदेवजी ३२ साल पहिले अकोले में आये थे। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स सुगनचंद एण्ड कम्पनी } मीत्र जॉन स्टोर सहायक एण्ड कोल मर्चेंट  
T. No 52 कार का पता Tapadia } का व्यापार होता है।



सेठ रामगोबिन्धी कोठारी ( रामचंद्र  
रामगोपाल ) अहोला



सेठ सावनरामजी पुरोहित ( बीतराज मुरलीधर )  
मलकापुर ( वृष्ट ०९ )



सेठ गुरुभद्रजी कोठारी ( रामचंद्र रामगोपाल )  
अहोला ( वृष्ट २९ )



सेठ दत्तुराम जी M. L. C. ( नारायण  
गोविन्दी ) पुढानपुर ( वृष्ट १०१ )

### मेसर्स राजी दाउद उसमान

इस फर्म का हेड ऑफिस बम्बई में है। सी० पी० बरार में इम्फो १०।१२ प्रांजेज हैं जिन पर गल्ले और किराने का बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसका विस्तृत परिचय धामगोत्र में दिया गया है।

### मेसर्स रामचन्द्र

#### मेसर्स रामचन्द्र रामगोपाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामगोपालजी एवं मुखदेवजी कोठारी हैं। आप माहेश्वरी समाज के बीकानेर निवासी सोपनीवाल कोठारी सज्जन हैं। सेठ रामगोपालजी के पितामह सेठ धनमुखदासजी फरोख ५०-६० साल पहिले अकोला आये थे। आपके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी ने यहाँ की दलाली का व्यापार आरम्भ किया। आज इस लाइन में आपकी फर्म अच्छी और प्रविष्टित मानी जाती है। सेठ रामचन्द्रजी १९६६ में स्वर्गवासो हुए।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स रामचन्द्र रामगोपाल—यहाँ और व्यापारियों के साथ हुंही चिट्ठी की दलाली का व्यापार होता है।

धामगोत्र—मेसर्स चिरञ्जीवल मुखदेव—यहाँ की दलाली का व्यापार होता है यहाँ मुखदेवजी पार्टनर रूप में काम करते हैं।

### कोल-मर्चेंट्स

#### मेसर्स सुगनचंद एण्ड कम्पनी

इस फर्म का स्थापन सन् १९१७ में धाबू सुगनचंदजी तापड़िया के हाथों से हुआ। आपका मूल निवासस्थान लालमदेसर (बीकानेर) है। आप माहेश्वरी वैद्य समाज के सज्जन हैं। धाबू सुगनचंदजी शिक्षित एवं उच्च विचारों के सज्जन हैं। आपके पिताजी सेठ मुखदेवजी १२ साल पहिले अकोले में आये थे। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकोला—मेसर्स सुगनचंद एण्ड कम्पनी } मील जीन स्टोर सप्लायर एण्ड कोल मर्चेंट  
T. No 52 तार का पता Tapadia } का व्यापार होता है।



जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरीज़

- दि अहोला कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 मेसर्स कुंजीलाल रामेश्वर जीनिंग फेक्टरी  
 मेसर्स गंगेरादास गुलाबचंद जीनिंग प्रेसिंग  
 फेक्टरी  
 दि गामडिवा प्रेसिंग फेक्टरी  
 मेसर्स गुलाबराय गोविंदराय जीनिंग प्रेसिंग  
 फेक्टरी  
 ,, गुलाबराय हरदयाल जीनिंग प्रेसिंग  
 फेक्टरी  
 दि पुष्पोलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 दि जारान जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 दि मनमाड जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी लिमिटेड  
 दि मूलराम खटाऊ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 ,, मूलजी जेठा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 दि आर० एच० समापति प्रेसिंग फेक्टरी  
 लिमिटेड  
 दि राधाष्टम्य कोपनीवाल जीनिंग फेक्टरी  
 दि बाली मदन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 रत्नधर मूलजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 सरावगी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 सावंतगाम खानदेशी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 साधूराम बोन्नायाम जीनिंग फेक्टरी

ऑइल मिल्स

- दि लक्ष्मी ऑइल रिफ़ाइनरी लिमिटेड  
 मेसर्स विजुनराम खंजराय ऑइल मिल  
 ,, टिकराल इंडेलात ऑइल मिल

बैंकर्स

- दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड  
 को आर्बरेटिच्य सेंट्रल बैंक लिमिटेड  
 मेसर्स चम्पेदीराम शिवप्रसाद  
 ,, किरानलाल संतोषीराम  
 ,, गंगेरादास गुलाबचंद  
 ,, गुलाबराय गोविंदराय  
 ,, गुलाबराय हरदयाल  
 ,, बट्टीदास रामराय  
 ,, बन्नीराम रुक्मल  
 ,, मोतीलाल धरालाल  
 ,, मंगनीराम जानकीराम  
 ,, मानमल आर्इदान  
 ,, रघुनाथदास रामप्रताप  
 ,, रामानंद धानमल  
 ,, शारंगराम रामप्रसाद

फाटन मरचेन्ट्स

- दि अहोला मिल लिमिटेड  
 मेसर्स गानेशराय गुमहराय  
 ,, पुष्पोलाल रामचन्द्र  
 ,, गुलाबराय गोविंदराय  
 ,, जयनारायण ग्दानाराम  
 ,, दिगमुनराय बानाराम  
 ,, पन्नालाल दीवलाल ( मोहन )  
 ,, मानमल आर्इदान  
 ,, रघुनाथराम रामप्रताप  
 ,, साधवराम बनारसी  
 ,, बोन्नायाम कुंजीनार





हाई वेजर मरचेन्ड्स

- मेसर्स अन्तुलभती बोइनभाई  
 " अन्तुलभती मानूजी  
 " करीमभाई मानूजी  
 " जांबाजी हुसनाइत  
 " दादुरभाई कादरभाई

मोटर, मोटर गाड्स एन्ड पेट्रोल डीजल  
 मेसर्स केजा कम्पनी

- " जननाथर पोदार ( रोवरेजेट एजेंसी )  
 " राधाकृष्ण कम्पनी ( घोई एजेंसी )  
 " हकीमिदां शाह ( चौथ एजेंसी )

मिड जिन स्टोर एन्ड कौट मरचेन्ड्स  
 मेसर्स सुगनचंद एन्ड कम्पनी ( मिड जिन  
 स्टोर, कोत )

- ' यू० डी० पटेल एन्ड कम्पनी ( मिड जिन  
 स्टोर )

आर्निंग एन्ड अन्वुनिमिपन डीपर्स  
 जेस अकरभती सुन्ता अन्तुल हुसैन  
 ' कादरभाई हुसैनभती  
 ' इन्ड टेलर

केनिस्ट एन्ड टर्गिस्ट  
 मेसर्स इन्ड टेलर एन्ड कम्पनी  
 " पटेल एन्ड कम्पनी

मिडिंग प्रेस

अन्नासी धारखाना  
 प्रजापञ्च धाराखाना ( प्रजापञ्च सानाईक )  
 राजरथान मिडिंग एण्ड लियो वर्क्स  
 तिमिटेड  
 बदनदार धारखाना  
 लोकसेवक धारखाना ( लोकसेवक  
 सानाईक )

धर्मशाला

सुनाबराय हरदयाल धर्मशाला  
 खुनायदास रामदास धर्मशाला

टोपी के व्यापारी

मेसर्स कच्छी ब्रदर्स  
 " रदनसी अन्नायन

चाँदीसोने के व्यापारी

मेसर्स केरवलात लातचंद  
 " छप्पारात्र रदनजात  
 " सुन्देव शिवनारायण

सार्वजनिक संस्थाएँ

सत्री हिंदी हिन्दी पुस्तकालय  
 नैटिव्हा अनलस सावत्रेरी  
 काठकाड़ी कोरडल संस्था  
 सनदन धर्मसना

### मेसर्स जसराज श्रीराम

इस फर्म के मालिक जेसलमेर ( राजपूताना ) के निवासी माहेरवरी वैश्य समाज के द्वारा मोहता सज्जन हैं । करीब १०० वर्षों में यह फर्म मेसर्स जयसिंह दाम हंमराज के नाम से प्रसिद्ध कर रही थी । इधर संवत् १९५३ से इस फर्म की ४ अलग अलग शाखाएँ हो गईं । तर में उल्लेख फर्म जसराज श्रीराम के नाम से अपना स्वतंत्र व्यापार कर रही है । इसके व्यापार को सेठ श्रीरामजी एवं सेठ इन्द्रसिंहजी के हाथों से विशेष तरकी प्राप्त हुई । सेठ श्रीरामजी संवत् १९५७ एवं सेठ इन्द्रसिंहजी संवत् १९८४ में स्वर्गवामी हुए ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ श्रीरामजी के पुत्र सेठ हरीशमजी एवं सेठ इन्द्रसिंहजी के पुत्र श्रींकारदामजी एवं नवलकिरोरजी हैं । सेठ इन्द्रसिंहजी के बड़े पुत्र सेठ शंकरदामजी छोटी अवस्था में ही स्वर्गवामी हो गये थे अतः इनके यहाँ श्रींकारदामजी वरत गये हैं । यह फर्म व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित एवं मानवर सज्जगी जाती है । अनेक व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

व्यापारों—मेसर्स, जसराज श्रीराम } जीनिंग प्रेंसिंग फेक्टरी है तथा वैट्रिंग एवं कटन का व्यापार होता है ।

बम्बई—सेठ श्रीराम मोहता }  
गोपाल भवन मुन्धेर }  
T. A. Vell. } कटन का व्यापार वैट्रिंग और कटन का काम होता है ।

इसके अलावा मुम्बैन में आप ही एक आइज मिल चलती है । तथा फैजपुर, बम्बई एवं अन्य जगहों की जीनिंग प्रेंसिंग फेक्ट्रियों में आपका भाग है ।

### मेसर्स टीकमदास मदनदास

इस फर्म का पूरा इतिहासिक परिचय मेसर्स विद्यासागर रामगोपाल फर्म के अधीन लिखा गया है । सेठ मदनदासजी के पुत्र सेठ रामदासजी एवं श्रीनारायणजी का कृष्ण फर्म का मालिक है । सेठ मदनदासजी के छोटी बहनजी ( सेठ श्रीनारायणजी के वरत ) का कृष्ण फर्म से पुत्र हुए । सेठ टीकमदासजी के हाथों में फर्म के व्यवसाय की जिम्मेदारी बड़े-बड़े मालिकों के मालिक टीकमदासजी के पुत्र श्रीमदनदासजी हैं । अनेक व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

व्यापारों—मेसर्स टीकमदास मदनदास—जीनिंग प्रेंसिंग फेक्टरी है, तथा कटन का व्यापार और वैट्रिंग काम होता है ।

भारतीय व्यापारियों का परिचय —  
( तीसरा भाग )



एव० मेट इन्द्रजिदजी मेहता (जसराज धीराम) व्यामर्गाव एव० मेट शिकंददासजी (शिकंददास मदनलाल) रामनगर



मेट रामगोपालजी राठी (धिरामदास)





रामगोपाल के नाम से इस फर्म की दो शाखाएँ हो गईं। इन फर्मों का संचालन सेठ टीलम-दासजी, सेठ प्रोजराजजी एवं सेठ रामगोपालजी करते थे। आप तीनों क्रमशः सेठ गनेशदासजी के पुत्र सदारामजी, गुलाबचंदजी, एवं विहारीलालजी के पुत्र थे।

करीब १० साल पूर्व इन तीनों भाइयों का कारबार भी अलग हो गया, वर से सेठ रामगोपालजी की फर्म उपरोक्त नाम से अपना व्यापार कर रही है। वर्तमान फर्म के मालिक सेठ रामगोपालजी एवं उनके पुत्र दाउलालजी और नंदलालजी हैं। आपके कुटुम्ब की ओर से मयुरा में एक कुंज तथा पोकरन में शिवश्याम नामक एक देवल और बगीचा बना है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रामगांव—मेसर्स विहारीलाल रामगोपाल—जीन फेक्टरी और कॉटन का व्यापार होता है।  
 मजफापूर—मेसर्स नंदलाल अचलदास—प्रीट्रिंग, जीनिंग प्रेमिंग और कॉटन का व्यापार होता है।  
 जामोद—विहारीलाल रामगोपाल—आसामी लेन-देन का काम होता है। इसके अलावा, दिनोड़ा हरमोड़ा, अंतरगांव, मोटा, तेलारा स्थानों में लेन-देन का काम होता है। अकोला तथा उमर खेड़ के जीन प्रेमों में आपके भाग हैं।

### मेसर्स मंगुलदास चुन्नीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामलालजी के पुत्र जेठमजजी दुग्गाली हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ मुखलालजी के हाथों से हुआ था। आपके बाप बनारस सेठ मंगुलदासजी, चुन्नीलालजी एवं रामलालजी ने फर्म का व्यवसाय संचालन किया। सेठ मंगुलदासजी ने इसके कारबार की वृद्धि की थी आपके हाथों से एक श्री नरसिंहजी का मंत्र भी बनवाया गया था।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धामगाँव—मंगुलदास चुन्नीलाल—सराफी लेन देन होता है।

बामगाँव—जे० आर० दुग्गाली—सूनी का काम होता है, आप सभी धरती खेती की विक्री लाटरी द्वारा कर रहे हैं।

### मेसर्स श्रीगण शास्त्रिगण

इस फर्म सेठ गुलाबचंदजी के छोटे भाग मूलचंदजी की है। इसका पूर्व स्थापन नन्देय (नरसिंह) में हुआ था। सेठ शिवलालजी (मूलचंदजी के पुत्र) के २ पुत्र हुए, एकलाल रामजी और बालकृष्ण लाल जी। इन दोनों भाइयों का कारबार १० साल पहिले अलग हो

हो गया। तब से शालिग्रामजी का हुटुम्ह अमरावती तथा घामन गाँव में अपना अलग व्यवसाय करता है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ बालकृष्णदासजी एवं आपके पुत्र घनश्यामदासजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

खामगाँव—मेसर्स भीराम शालिग्राम—सराफी लेन देन होता है, एवं बालकृष्णदास भागचंद जीनिगम्रेसिंग में आपका पार्ट है।

सेलारा—शिवलाल घनश्यामदास—जीनिग फेक्टरी तथा कपास का काम, इसके अलावा मोफ, बरोट ( बरार ) तथा नीमोन ( नाशिक ) में कृषि का काम काज होता है।

### मेसर्स मन्नालाल शिवनारायण

इस फर्म का हेड ऑफिस लक्ष्मी विल्डिंग बम्बई में मेसर्स सनेहीराम जुहारमल के नाम से है। इसके व्यवसाय का विस्तृत परिचय मालिकों के फोटो सहित हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग में दिया गया है। इसकी रामगाँव शांख का स्थापन संवत् १९८१ में हुआ। इस फर्म के अधीन पुलठाणा वाडुका में, जलगाँव, म्हेकर, चीकली, नांदुरा तथा पिंपल गाँव में मन्नालाल शिवनारायण के नाम से तथा चम्पैन और रतलाम में सनेहीराम जुहारमल के नाम से तथा भरूच और अहमदाबाद में रामकुंवर शिवचंद्राय के नाम से रुई का व्यापार होता है।

इस फर्म के रामगाँव के बर्किंग पार्टनर सेठ शिवजी रतनसी भाई हैं। आप १९८१ से इस फर्म की ओर से जापान की यात्रा कर अभी ३ मास पूर्व वापस आये हैं। यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रविष्टि मानो जातो है।

### मेसर्स भवनूलाल गंगाराम

इस फर्म के मालिक इटावा ( यू० पी० ) के निवासी हैं। यहाँ से आप करीब २०० साल पूर्व नाशिक मिले में गये तथा व्हर से सेठ भवनूलालजी ६०।६२ साल पहिले खामगाँव आये। आप पुरवार बैरय समाज के बॉसिल गौत्रीय सज्जन हैं। सेठ भवनूलालजी उन्न भर बहुत भानुली हालत में गुजारा करते रहे। आपने करीब ४८ साल पहिले उपरोक्त फर्म स्थापित की। संवत् १९०५ में आप स्वर्गवासी हुए।

सेठ भवनूलालजी के पुत्र सेठ मोहनलालजी ने इस फर्म के व्यवसाय की चमकाया। वर्तमान में आप ही फर्म के मालिक हैं। श्रीसुव मोहनलालजी पुरवार अच्छे उदार विचारों के सज्जन हैं। आपकी के मोत्याहन से खामगाँव में वित्तक राष्ट्रीय विद्यालय स्थापन हुआ था।



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

आपने उसमें एक मुरत ८ हजार रुपया दिया, एवं आरंभ से अभी तक १०१ प्रतिमास देते हैं। करीब २५ हजार की सहायता आप भय तक उक्त संस्था को पहुँचा चुके हैं। इसी प्रकार कामगाँव फीमेल हास्पिटल के इन्चार्ज के समय अपनी मातेश्वरी गंगाबाई के नाम से आपने १५ हजार रुपया दिया। कामगाँव म्युनिसिपैलिटी के आप ९ सालों से मेम्बर हैं। कामगाँव के व्यवसायिक समाज में यह कर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कामगाँव—मेसर्स भयनूनाल गंगाराम—रुई की लोकरल आइट का काम होता है।

कामगाँव—मेसर्स मोहनलाल भयनूनाल—यहाँ वैट्रिग, लैंडलार्ड एवं शेती का काम होता है।

---

### मेसर्स रामचंद लालचंद

इस कर्म का स्थापन सेठ रामचन्द्रजी कावरा के हाथों से करीब ४५ वर्ष पूर्व हुआ। आपकी पत्नी दिगोली में बहुत समय से व्यापार कर रही है। आरंभ से ही इस कर्म पर लोकरल आइट का काम होता है तथा वर्तमान में अपनी लाइन के व्यापारियों में यह कर्म अच्छा काम करती है। सेठ रामचन्द्रजी करीब २०।२२ साल पहिले स्वर्गवासी होगये हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कामगाँव—मेसर्स रामचंद लालचंद—रुई की लोकरल आइट का काम होता है।

दिगोली—किरानदान सीनाराम—जीनिंग प्रेसिंग केन्द्रटी तथा शेती का काम।

---

### मेसर्स हीरालाल दीपचंद

इस कर्म के वर्तमान मालिक सेठ गोपीलालजी राठी पोचरन के निवासी हैं। इस दुकान का स्थापन करीब ५० साल पहिले सेठ दीपचंदजी के हाथों से हुआ था। आप करीब ५ साल पहिले स्वर्गवासी होगये हैं। आरंभ से ही इस कर्म में आइट का काम काज होता है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कामगाँव—मेसर्स हीरालाल दीपचंद—आइट तथा रुई की खरीदी का काम होता है। वर्तमान में आपकी गोपीलाल इन्चार्ज नामक जीन केन्द्रटी है।



भारतीय व्यापारियों का परिचय

फलकक्षा—शाहीदाद उसमान

११ अमरकला लेन

वार का पता—अम्बरमोगरा

इसके अलावा हिन्दुस्तान में कई स्थानों पर इनकी खरीदारी की दुकानें हैं।

} सुपारी, शहर, बारदान, किराना  
खरीदी और बिक्री का काम  
होता है।

## मोटर गुड्स एण्ड पेट्रोल डीलर्स

मेसर्स केला कम्पनी

इस फर्म के मासिक बाबू सीताराम मुगतानचंद केला हैं। आप पोछरत निगमो मारेण बैरय समाज के सभन हैं। इस फर्म का स्थापन श्रीयुग सीतारामजी के हाथों से करीब १९१८ साल पहिले हुआ था। घीरे २ आपकी फर्म ने अच्छी वृत्ति की है। सर्व प्रथम आप ने केला प्रोड शेवर बेन्डिंग, लुक्रिकेटिंग आइल तथा त्रिनामोर के इम्पोर्ट करने का व्यापार आरंभ किया करीब ६ साल पहिले हाज और फोर्ड की एजेंसी भी इस फर्म पर आई। तीसरा भाग आपने यहाँ जनरल सामान का है। फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सामग्री—मेसर्स केला कम्पनी—कोई मोटर की एजेंसी, पेट्रोल का व्यापार, बेन्डिंग, त्रिनामोर और जनरल सामान का बहुत बड़ा स्टॉक रखा है और विक्रय दे।

उत्पन्न—मेसर्स केला कम्पनी—हाज की एजेंसी एवं जनरल व्यापार होता है।

कच्चा—मेसर्स केला कम्पनी—हाज की एजेंसी एवं जनरल व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स केला कम्पनी } मोटर, एमेसीज, बेन्डिंग वगैरा का कम्प्लिट  
नेत्रिमिष्ट मेसर्स सट्टमंट रोड } से इम्पोर्ट तथा अपनी प्रोडेंट पर प्रेरण  
T. No 123. } का काम होता है।

### मेसर्स श्रीनिरामदास वाट्टुगदास

इस फर्म का स्थापन सन् १९१८ में हुआ। यह मेसर्स मारगण्ड पत्तणमसम कम्पनी के फर्म है। इस फर्म का परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बहुत विस्तृत रूप से दिया जा चुका है। इसका बुन्दारा (बजार) का स्टैंड अशिम सामग्री है तथा प्रोडेंट बेन्डिंग, लुक्रिकेटिंग तथा त्रिनामोर का काम करता है। इन पर एम्पोर्ट मोटर की एजेंसी, पेट्रोल, बेन्डिंग वगैरा

मोटर गुड्स का व्यापार होता है। इन फर्मों का मैनेजमेंट मेसर्स गोबर्द्धनदास भगवान-  
केंदिया करते हैं। फर्म का तार का पता Seth Kedia है।

धरार और ल

## उपेक्षालय

### आधुनिक औपधि कार्यालय

इस कार्यालय के मालिक डाक्टर बासुदेव केराव गोइचोले हैं। आप जिला रत्नगिरी मु०  
निकय सुर्द के निवासी हैं। डाक्टर गोइचोले पनवेल में वैद्यक शिक्षा प्राप्त कर २५ साल पूर्व  
रामगोवि आये। यहाँ आकर आपने कृषि एवं वैद्यक लाइन में अच्छी प्रतिष्ठा पाई। रामगोवि  
के सार्वजनिक कामों में एवं कॉलेज के कामों में आप सहयोग देते रहते हैं। करीब ८ साल से  
आपने चन्द्रवामा ( इन्दौर स्टेट ) में गोइचोले खेती संस्था के नाम से कृषि का बहुत सा  
काम चलाया है। रामगोवि में आपके औपधालय में शास्त्रोक्त अनुभविक औपधियाँ तयार की  
गयी और विक्रय होती हैं।

### जीनिंग फेक्टरीज़

- |                                      |                                      |
|--------------------------------------|--------------------------------------|
| १—अय्यकर अट्टुल रहमान जीनिंग फेक्टरी | १६—नन्दे ब्रदर्स जीनिंग फेक्टरी      |
| २—ईमुकझली शोष जाकरजो एण्ड कम्पनी     | १७—विहारीलाल रामगोपाल जीनिंग फेक्टरी |
| ३—रामगोवि जीनिंग फेक्टरी लिमिटेड     | १८—वंशीलाल चिरंजीलाल जीनिंग फेक्टरी  |
| ४—रामगोवि कॉटन प्रेसिंग कम्पनी लि०   | १९—आर० धी० देरामुण जीनिंग फेक्टरी    |
| ५—रामगोवि जीनिंग कम्पनी लिमिटेड      | २०—रायजी ब्रदर्स जीनिंग फेक्टरी      |
| ६—गनपत जूया जीनिंग फेक्टरी           | २१—लक्ष्मीनारायण शिवनारायण जीनिंग    |
| ७—गजानन जीनिंग फेक्टरी               | २२—विक्टोरिया जीनिंग फेक्टरी         |
| ८—गोपीलाल ईश्वरदास जीनिंग फेक्टरी    | २३—याज्ञकट प्रेस कम्पनी लिमिटेड      |
| ९—घाससी भार एण्ड कम्पनी              | २४—विरवनाथ नागसा जीनिंग कम्पनी       |
| १०—जसराज श्रीराम जीनिंग फेक्टरी      | २५—बालकिरानदास भागवन्द जीनिंग फे०    |
| ११—टीकमदास मदनलाल जीनिंग फेक्टरी     | २६—दुरोई एण्ड सभापति जीनिंग फेक्टरी  |
| १२—न्यू सुप्रसिन्न कम्पनी लिमिटेड    | २७—सरदारमल तापूराम जीनिंग फेक्टरी    |
| १३—न्यू धरार कम्पनी लिमिटेड          | २८—स्वदेशी जीनिंग फेक्टरी            |
| १४—न्यू मिस आक वेल्स कम्पनी लिमिटेड  | कॉटन प्रेसिंग फेक्टरीज़              |
| १५—दि नेटिव जीनिंग फेक्टरी           | १—रामगोवि जीनिंग कम्पनी लिमिटेड      |
|                                      | २—रामगोवि कॉटन प्रेसिंग कम्पनी       |

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

जी यहाँ आये थे, आपने यहाँ आकर घी सरकी आदि का परचूनी व्यापार आरंभ किया। सेठ गुलराजजी ४२ साल पहिले स्वर्गवासी हुए।

सेठ गुलराजजी के २ पुत्र हुए। यावू मूलचन्दजी एवं पन्नालालजी। इतमें से यावू मूलचन्दजी ने इस फर्म के व्यापार को विशेष रूप से बढ़ाया। व्यवसायिक उन्नति के साथ २ धार्मिक एवं सार्वजनिक क्षेत्र में भी आपने अच्छी प्रतिष्ठा पाई। आप के हाथों से करीब १० कुएँ भिन्न २ स्थानों पर बनवाये गये। यवतमाल के हर एक सार्वजनिक कामों में आपका प्रदान हाथ रहता था। आप शुद्ध खररधारी एवं सदाचारी सज्जन थे। आपका स्वर्गवास ४९ वर्ष की आयु में ता० १।९।२७ को हुआ। आपकी व्यथा से व्यथित होकर कॉन्ग्रेस कमेटी, नगरसभा, म्युनिसिपैलिटी आदि कई संस्थाओं ने एवं कई सामयिक पत्रों ने आपके मार्गों के पास समवेदना सूचक संवाद भेजे थे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक यावू पन्नालालजी एवं मूलचन्दजी के पुत्र श्रीयुव गनेश-लालजी, हनुमानदासजी एवं यजरंगलालजी हैं। सेठ पन्नालालजी के पुत्र महादेवजी, श्रीनिवासजी एवं रामनिवासजी हैं। इन सज्जनों में से गनेशलालजी और महादेवजी शिक्षित नवयुवक हैं। एवं व्यापारिक कामों में भाग लेते हैं। श्रीपन्नालालजी चोखानी वर्तमान में सेन्ट्रल बैंक, मुम्बई मंडल के डायरेक्टर एवं म्युनिसिपैलिटी, कॉटनमाकेंट, डिस्ट्रिक्ट एसोसिएशन और सैन के मेम्बर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—मेसर्स गुलराज मूलचन्द—यहाँ आपकी जीनिंग फेक्टरी है तथा प्रधानतया कलक का व्यापार होता है। कपास की खरीदी के लिये रा० ब० वंशीलाल अर्बोरचन्द हिंगनघाट, विजला प्रान्त बम्बई, माडलमिल नागपुर, सर माणिकजी दादाभाई आदि की एजंसियों हैं। विजला प्रान्त की ओर से निकाली गई रिच फील्ड ऑयल कम्पनी के यवतमाल जिले के आप एजेंट हैं।

### रा० ब० भीखानी रामचन्द्र द्रविड़

इस फर्म के मातृक रायचहादुर भीखानी रामचन्द्र द्रविड़ हैं। आप बाई (मद्रासके के समीप) के निवासी मद्रामी द्रविड़ ब्राह्मण समाज के सज्जन हैं। रायचहादुर भीखानी द्रविड़ १८६४ में बाई में केवल १४ वर्ष की आयु में निकले एवं अपने बड़े भाई गणपत द्रविड़ के साथ रेलवे इंजीनियरिंग का काम करने रहे। उस समय रेलवे पानीम गॉब लव

भारतीय व्यापारियों का परिचय :-  
 ( तीसरा भाग )



स्व० सेठ गगननाथ बंधारी द्विविध यवनमाल



सेठ चौहलालजी मोर (नरसिंहदास हनुमानदास) यवनमाल



बहादुर बिशाजी बंधारी द्विविध



सेठ राम



आई थी। राँहवा, इन्दौर, मॉसी, आनंजपुर, विरपुनी (मद्रास) आदि के रेलवे के कंट्रैक्ट लेने के बाद सब से अंत में आपने मैसूर सोने की खान का रेलवे का ठेका लिया। एवं पश्चात् १८९९ में आप यवतमाल आये। और यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी खोली। धीरे २ आपको इस काम में सफलता मिलती गई और आपने आस पास कई जीनिंग प्रेषिंग खोली।

रायबहादुर द्रविड़ साह्य को सन् १९२७ में गवर्नमेंट से रायबहादुरी का खिताब प्राप्त हुआ है, आप यहाँ के आनररी मजिस्ट्रेट, म्युनिसिपल मेम्बर आदि रह चुके हैं। आपके बड़े भ्राता गणपत व्यंकटेश द्रविड़ १९०२ में अजमेर से पेराना पाकर यहाँ चले आये। एवं १९११ में यहाँ स्वर्गवासी हुए। आपको और से बाई में गणपत व्यंकटेश के नाम से एक हाई स्कूल चल रहा है। यवतमाल पीमेंट हास्तील में आपने एक बार्ड बनवाया है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—रायबहादुर भोखाजी रामचन्द्र द्रविड़—२ प्रेस एवं १ जीन है।

पांडर कबड़ा (यवतमाल) " " —२ जीन १ प्रेस है।

बोटी (यवतमाल) " " —१ जीन फेक्टरी है।

दारपदा (यवतमाल) " " —२ जीन १ प्रेस फेक्टरी है।

### मेसर्स होरमसजी हीरजीभाई

इस फर्म का स्थापन यवतमाल में करीब ४० साल पहले हुआ था। सब से प्रथम टाटा संस लिमिटेड के एजेंट होकर सर दोराबजी टाटा यहाँ आये एवं आपने यहाँ एक जीनिंग एण्ड प्रेषिंग फेक्टरी खोली। २ साल बाद सर दोराबजी टाटा यह काम सेट होरमसजी नवरोजजी बलगाम वाला की छोंप कर बन्दई चले गये। होरमसजी सेठ ने टाटा संस के पार्ट में यवतमाल और हुबली में जीनिंग प्रेषिंग फेक्टरियाँ खोलीं। पीछे से आपका पार्ट अलग हो गया। एवं तब से आप टाटासंस की यवतमाल की एवं हुबली की जीनिंग फेक्टरी के एजेंट हैं।

होरमसजी सेठ के २ पुत्र हुए, सेठ हीरजी भाई होरमसजी एवं नवरोजजी होरमसजी। होरमसजी सेठ सन् १९२० में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के माजिक सेठ हीरजी भाई हैं। आपके पुत्र सेठ जमरोजजी हीरजी भाई एवं पेरुजजी हीरजी भाई भी व्यापार में भाग लेते हैं। हीरजी भाई के छोटे भ्राता सेठ नवरोजजी होरमसजी सन् १९१० तक आपके साथ काम करते रहे, पश्चात् आप बन्दई चले गये, वर्तमान में आपके "बन्दई समाचार" नामक गुजराती दैनिक और सामाजिक एवं बाल्ये प्रानिकल नामक हिंदी दैनिक पत्र निकलते हैं जिनसे भारत का शिक्षित समाज भली भाँति परिचित है।



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

होरमसजी सेठ यवतमाल के व्यापारिक समाज में बहुत प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आंग्लिक एवं उन्नत विचारों के पारसी सज्जन हैं। स्थानीय कॉटन मार्केट के बहुत समय तक आंग्ल सभापति रह चुके हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—एम्प्रेस मिल नागपुर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी—आप इसके एजेंट हैं।

दुधली—स्वदेशी मिल बम्बई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी—इसके आप एजेंट हैं।

यवतमाल—सेठ होरमसजी हीरजी भाई—यहां कॉटन का व्यापार होता है।

संजा ( यवतमाल ) होरमसजी हीरजी भाई—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।

## कपड़ा और गन्ना के व्यापारी

### मेसर्स नरसिंहदास हनुमानदास

इस फर्म के मालिक दादा ( लोसल—जयपुर स्टेट ) निवासी अग्रवाल समाज के देवरा गौत्रीय सज्जन हैं। आरंभ में ६० साल पहले सेठ नरसिंहदासजी ने यहां आकर कलाश व्यापार शुरू किया था। आपके ४ पुत्र हुए। सेठ हनुमानदासजी, छोटालालजी, सूरजमलजी, एवं रामगोपालजी। आप लोगों के समय में दुकान के काम को विशेष उन्नति मिली। सेठ हनुमानदासजी २ साल पहिले एवं रामगोपालजी ५१६ साल पहिले स्वर्गवासी हुए हैं। इन फर्म की ओर से २३ कुएँ बनवाये गये हैं।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ छोटालालजी, सूरजमलजी एवं सूरजमलजी के पुत्र नगरमलजी ( दत्तक हनुमानदासजी ) तथा सेठ रामगोपालजी के पुत्र नयमलजी और हैं। सेठ सूरजमल जी के पुत्र निहारीलालजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

यवतमाल—मेसर्स नरसिंहदास हनुमानदास—कपड़े का व्यापार, सराफी लेन-देन एवं इति का काम होता है। आपके यहाँ एग्जेंस निरवे कपड़े की एजेंसी है।

यवतमाल—सूरजमल रामगोपाल—गन्नेका व्यापार होता है।

यवतमाल—श्री नरसिंह जीनिंग फेक्टरी—इस नाम से कॉटन जीनिंग फेक्टरी है।

निवाश—नरसिंहदास हनुमानदास—इस नाम से आपकी जीनिंग फेक्टरी है।

भारतीय व्यापारियों का परिचय :->  
( तीसरा भाग )



श्री० मूढचंद्नी बंभानी (गुन्दराज मूढचंद्) यवनमाल



श्री० नरसिंहराव रमवसा रावन कारंजा



श्रीचौपनन्दनी मेहर



श्रीछन्नुलालचंद्नी मेहर (छंनुलल चंरमल) यवनमाल



मेसर्स फाल्द्राम नारायण

इस फर्म के मालिक लोमल ( जयपुर स्टेट ) निवासी अमवाल समाज के गोयल गौत्रीय मोर सम्जन हैं। सेठ फाल्द्रामजी के हाथों से ४० साल पहिले इस फर्म का स्थापन हुआ। भारत से ही भारत के यहाँ गन्ने, सोना, चाँदी तथा ची का व्यापार होता है। सेठ फाल्द्रामजी २० साल पूर्व स्वर्गवासी हुए। उनके पुत्र सेठ नारायणजी के हाथों से फर्म के कारबार को विरोध करवा मिली। नारायणजी सेठ की अवस्था अभी ६५ साल की है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक नारायणजी सेठ के पुत्र बाबू चौधनलजी मोर हैं। आप स्थानीय म्युनिसिपल मेम्बर, इनुमान अखाड़ा के मैनेजर तथा हिन्दू समा के सेक्रेटरी हैं। आपका ध्यानारिक परिषय इस प्रकार है।

वर्तमान—मेसर्स फाल्द्राम नारायण—गन्ने की भाङ्ग, लोमल व्यवसाय एवं विद्युत का काम होता है।

मेसर्स श्रीकृष्ण टोरमल

इस फर्म के मालिक बाबू चन्देयालालजी मोर लोमल ( जयपुर ) निवासी अमवाल पौर समाज के गोयल गौत्रीय सम्जन हैं। यह बुद्धि करीब २० साल पहिले यहाँ आया। इस फर्म का स्थापन सेठ श्रीकृष्णजी के पुत्र टोरमलजी के हाथों से करीब ४० साल पहिले हुआ। भारत के यहाँ कारख से ही हाटवेभर और जनरल व्यापार होता है। सेठ टोरमलजी १५-१६ साल पहिले स्वर्गवासी हुए हैं।

श्रीपुत्र बाबू चन्देयालालजी मोर जहाँ विचारों के सुधारक नरमुक्क हैं। मुक्त मंडल को बनाने में अपने अच्छी सहायता दी है, इस समय आप उनके कोषाध्यक्ष हैं। भारत का ध्यानारिक परिषय इस प्रकार है।

वर्तमान—मेसर्स श्रीकृष्ण टोरमल—यहाँ हाटवेभर, विन्डिंग मशीन, स्टेशनरी, जिनमोटर एवं लिफ्ट बॉयलर का व्यापार होता है। इसके अलावा लिफ्ट बॉयलर एवं म्युनिसिपैलिटी के बच्चारट सवार होते हैं।

जॉनिंग मैनिंग पेंचरटों  
मेसर्स जॉनिंग पेंचरटों  
जयपुर इन्डियन कॉलेज जॉनिंग पेंचरटों

श्रीपुत्र डॉ. ए. जॉनिंग पेंचरटों  
मेसर्स जयपुर इन्डियन कॉलेज  
जॉनिंग पेंचरटों

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

जयरामदास भागचन्द प्रेसिंग जीनिंग फेक्टरी  
टीकमदास परमानन्द जीनिंग फेक्टरी  
नरसिंहदास हनुमानदास जीनिंग फेक्टरी  
धूँटी जीनिंग फेक्टरी  
माडल जीनिंग फेक्टरी  
रायबहादुर भीष्माजी व्यंकटेश द्रविड़ १ जीन  
२ प्रेस फेक्टरी  
रणछोड़दास गांगजी लक्ष्मीदास जीनिंग प्रेसिंग  
फेक्टरी  
लालचन्द नारायणदास जीनिंग फेक्टरी

### कॉटन मरचेन्ट्स

मेसर्स कीलाचन्द देवचन्द  
" गुलराज मूलचन्द चोखानी  
" गोविंदराव पूनाजी बाटी  
" जयनारायण म्हालीराम  
" जयरामदास भागचन्द  
" नरसिंहदास हनुमानदास  
" मन्नालाल शिवनारायण  
" सर माणिकजी दादा भाई  
दि मॉडल मिल नागपुर  
मेसर्स मुख्देव रामदेव  
" हीरजी भाई होरममजी बलराम बाला

विदेशी कम्पनियों की कॉटन पर्वेंट एजेंसियों  
गोसा काबूमो केरा निमिटेड  
जागन कॉटन ट्रेडिंग कम्पनी निमिटेड  
मुम्बैन कम्पनी  
रायजी ब्रदर्स निमिटेड

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेंट  
मेसर्स आसाराम शिवजी राम  
" फाल्दाराम नारायण  
" डायामाई मावजी  
" बाबाजी दौलतराव  
" सूरजमल रायगोपाल  
" हुकमीचन्द गंगाधर  
कपड़े के व्यापारी

मेसर्स गुलाबचंद चम्पालाल  
" नगीनचंद परमानंद  
" नरसिंहदास हनुमानदास  
दि बरार ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड  
सेठ रामगोपाल मालानी  
मेसर्स बल्लभदास कम्बलाल  
" हाजी उमर अलान  
किराना के व्यापारी  
मेसर्स आसाराम शिवजीराम  
" डायामाई मावजी  
" हाजी उमर अलान कच्छी  
" हेमराज केरावजी  
गोल्ड सिन्थर मरचेन्ट्स  
मेसर्स रामनारायण रामहुँवर  
" सेरमल सूरजमल  
जनरल मरचेन्ट्स  
मेसर्स आमाराम शिवजीराम  
" टीकाराम एण्ड को  
" सरक बनी बनी मरूम  
" श्रीकृष्ण टोरमन

## एलिचपुर

जी० आर्द० पी० रेलवे की मुसावल नागपुर लाइन के मध्य मुर्विजापुर जंक्शन से एलिचपुर के लिये एक ब्रांच लाइन जाती है। यह स्थान अमरावती से ३४ मील दूर बरार प्रान्त की उत्तरी सीमा पर स्थित है। किसी समय यह शहर निजाम हैदराबाद स्टेट की छावनी के रूप में था। विराल पुराना शहर फोट, किला तथा बूल्हा रहमानराह की दरगाह आदि स्थान इसके पुराने वैभव का पता दे रहे हैं। इस शहर का क्षेत्रफल बहुत बड़ा है। ५२ पुरों की बस्ती में इसको आबादी फैली हुई है। कार्तिक बंदी ११ को यहाँ बरहम की यात्रा भरती है। इस स्थान से योद्धी ही दूरी पर जेनियों का श्रीमुष्कगिरी तीर्थ है।

फरीब २५-३० वर्षों पूर्व एलिचपुर कम्प ( जो परतवाड़ा के नाम से मराहूर ) से अंगरेजी छावनी हटा ली गई है। इस शहर के शतरंजी, सूसी, मुसलमानी रूमाल अच्छे बनते हैं। कपास की पैदावार अपेक्षाकृत मध्ययार से कम होती है। इस स्थान पर काटन जीनिंग ३ और ३ प्रेसिंग फेक्टरियों एवं १ कोटन मिल है। जिसका नाम दि विदर्भ मील बरार लीमिटेड है—यह मील सन् १९२३ में रजिस्टर्ड हुई एवं सन् १९२६ में चालू हुई। इसकी पूंजी ११ लाख रुपयों की है, तथा इस समय इस मिल में ११ हजार स्पेडिल्स और २५० लूम्स काम करते हैं। मिल में रोजाना काम करनेवाले मनुष्यों की संख्या ६०० है। सन् १९२६ से यह मील सूत काटने का एवं १९२९ से कपड़ा धुनने का काम कर रही है। नागपुर में इस मील का सूत बेचने की एजंसी है। इसकी मनेजिंग एजंट मेसर्स देरामुख एण्ड कम्पनी है। बाबा साहब देरामुख मिल के डायरेक्ट एवं अमलनेर के प्रताप शेट डायरेक्टरों के प्रेसिडेण्ट हैं। सतपुड़ा पहाड़ समीप आ जाने से यहाँ घास प्रचुरता से पाया जाता है। यहाँ के व्यापारियों का संज्ञित परिचय इस प्रकार है।

## मिल एजेंट एण्ड बैंकर्स

मेसर्स देशमुख एण्ड कम्पनी

इस फर्म के मालिक दक्षिणी ब्राह्मण समाज के भारद्वाज सज्जन हैं। आपका मूल निवास एलिचपुर ही है। ७१८ पीढ़ी से आपके यहां जमींदारी का काम होता है। यादराव चौगतेर के समय से गुगलाई की ओर से इस कुटुम्ब को जागीरी प्राप्त हुई। श्रीमान् भगवंतराव देशमुख के हाथों से इस जागीरी की व्यवस्था हुई। आप परगने के आफिसर थे। आपके पुत्र हनुमंतराव देशमुख थोड़ी ही अवस्था में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक देशमुख हनुमंतराव के पुत्र व्यंकटराव देशमुख वर्तमान साहब हैं। आपके पिताजी के स्वर्गवास के समय आपकी आयु केवल २ वर्ष की थी। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद फर्म की जागीरी का भार आप पर आया। आप बड़े इन विषयों के स्वदेशी मिय सज्जन हैं। सन् १९२२ में आपने २१ लाख की पूंजी से "दि रिजर्व मिज बरार लिमिटेड" को जन्म दिया। आपने अपने कपास के व्यापार की बहुत सफलता की। आपने अपनी मातेश्वरी के नाम से श्रीराधानाई आयुर्वेदिक घर्माय औषधालय स्थापित किया है, इसके लिये ४५ हजार की रकम आपने ट्रस्ट के जिम्मे की है तथा दस हजार की लागत से एक औषधालय की बिल्डिंग बनवाई है।

बाबा साहब देशमुख के इन समय ६ पुत्र हैं, जिनके नाम क्रमशः पादुरंग देशमुख, नारायण देशमुख, मेवदयाम देशमुख, राजेश्वर देशमुख, भगवंत देशमुख एवं गोविंदा देशमुख हैं। इनमें पादुरंग देशमुख फर्म के ब्रेकिंग, जीनिंग, प्रेसिंग तथा कौटन का व्यापार संचालित करते हैं। आप यहां के भानरेशी मजिस्ट्रेट एवं म्युनिसिपल मेम्बर हैं। नारायण देशमुख ड्रीडरिंग का काम करते हैं। एवं मेवदयाम कृषि कार्य देखते हैं शेष सब पढ़ते हैं। बाबा साहब देशमुख विदर्भ मिन के मैनिजिङ्ग हायरकेटर हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एलिचपुर—मेसर्स देशमुख एण्ड को—ब्रेकिंग लेनी एवं जागीरी का काम होता है। यह भी विदर्भ मिन की मैनेजिंग एजेंट है।

एलिचपुर—श्रीपादुरंग जीन प्रेस केप्टरी—इस नाम से कौटन जीनिंग प्रेमिङ्ग केप्टरी एवं का व्यापार होता है।

अमरावती—श्रीगो देशवाडे—इस दुकान पर कपड़े का व्यापार होता है। इसमें कपड़े का व्यापार होता है।

### मेसर्स लालासा मोतीसा

इस कुटुम्ब का मूल निवास बंगोरिया ( बृहन्पुर स्टेट ) है। संवत् १७१४ में सेठ लालासा इधर आये। कहा जाता है कि सरकारी नदरों से अपसन्न होकर कई सौ कुटुम्ब वह प्रांत छोड़कर इधर आ गये और बुरहानपुर एवं निजाम प्रांत में बस गये। वही सिलसिले में सेठ लालासा भी बुरहानपुर आये। वहाँ से जिन्नूर ( निजाम स्टेट ) में गये। एवं जिन्नूर से पलिबपुर आये। सेठ लालासा के पुत्र मोतीसा के समय से इस फर्म पर बैङ्किंग व्यापार की प्रवृत्ति आरंभ हुई।

सेठ मोतीसा के ३ पुत्र हुए। हीरासा, मानिकसा एवं राजानी उर्फ हरप्रसा। इनमें से सेठ हीरासा के हाथों से इस फर्म के व्यापार, मान एवं प्रतिष्ठा में बहुत अधिक वृद्धि हुई। इन दोनों भाइयों में हरप्रसा के पुत्र पामूसा एवं भगवानसा हुए। सेठ हीरासा १९४० में एवं आपके दोनों छोटे भावा आनसे ४१५ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। सेठ पामूसा एवं भगवानसा भी २ मास के अंतर से संवत् १९५५ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ पामूसा के पुत्र सेठ नरयूसा हैं। आप यहाँ के अत्यन्त प्रतिष्ठित सज्जन हैं। करीब ३० सालों से आप म्युनिसिपल मेम्बर एवं सभापति का आसन सुरोभित करते हैं। एवं २० सालों से स्थानीय आन्दोलन मजिस्ट्रेट हैं। आपका कुटुम्ब जैन धर्मवाला दिगम्बरी समाज का है।

इस कुटुम्ब की ओर से श्री मुष्तागिरी वीर्य अस्त्र में संवत् १९४८ में १ लाख रुपये की सम्पत्ति लगाई गई है। वहाँ आनकी ओर से मंदिर तथा धर्मशाला बनी है अभी हाल में आपने सादर से श्री मुष्तागिरीजी की जो ४५ हजार में जमीन खरीदी गई है उसमें २० हजार आपने दिये हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पलिबपुर—मेसर्स लालासा मोतीसा—बैङ्किंग व्यापार होता है। अमरावती जिले में आपका बहुत सा खेती का काम होता है।

पलिबपुर—नरयूसा पामूसा—रूपड़े का व्यापार होता है।

बाँदूर बाजार ( पलिबपुर ) लालासा मोतीसा—बैङ्किंग तथा रूपड़े का व्यापार होता है।

### मेसर्स अमरचन्द्र लादूराम

इस फर्म के मालिक अलेख भूलेड़ा ( लदपुर ) के निवासी शंभेलवाल वैष्णव समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन १०० वर्ष पूर्व सेठ अमरचन्द्रजी के हाथों से हुआ था। आप अपने पुत्र गिरधारीलालजी के साथ में यहाँ आये थे। सेठ गिरधारीलालजी के हाथों से ही इस फर्म के व्यापार की तरकी मिली।



### मेसर्स हुकुमचंद मुंशीजाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ चंदूलालजी हैं। आप अल्होड़ा (जयपुर सेट) निरु अभवाल समाज के सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सेठ हुकुमचंदजी के हाथों से बरेल्य वर्ष पूर्व हुआ। तथा सेठ हुकुमचंदजी के पुत्र सेठ मुंशीजालजी के हाथों से इस फर्म के रूप की विशेष उत्पत्ति हुई। आप २० साल पूर्व स्वर्गवासी हुए। आपके समय में मिलीटरी को र सहाई करने का काम इस फर्म पर होता था।

सेठ चंदूलालजी विदर्भ मिल के हायरैक्टर एवं परतवाड़ा मुनिसिपैलैटी के बरत हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

एजिप्टुर केम्प—मेसर्स हुकुमचंद मुंशीजाल—कपास, बँडिंग व जमींदारी का व्यापार होता बनोसा—हुकुमचंद मुंशीजाल—कपास की खरीदी होती है। यहां की सहायन बँटो जौनिंग में आपका पाट है।

#### बैंकर्स

कोम्पारटिब्ल सैंट्रल बैंक  
किरानलाल मोदीजाल  
गोपालदास हीरालाल  
मोदीजाल चम्पालाल  
हुकुमचंद मुंशीजाल

#### कॉटन मरचेंट्स

किरानलाल मोदीजाल  
हुकुमचंद मुंशीजाल

#### कपड़े के व्यापारी

बालदेवान मोदीजाल  
जंटेचंद जेठानाई  
मूलचंद बंसटोचंद

#### गन्ने के व्यापारी

मदनलाल नारायणराम  
सुखजी रिद्धपाल

#### किराने के व्यापारी

करीम हाजी शरीफ  
नारायण लोत्ताराम  
महम्मद हाजी शरीफ कच्छी

#### जनरल मरचेंट्स

किरानलाल मोदीजाल  
मुत्तानमोहन बोइय

कैरोमिन ऑट्टन एन्ड पैट्रोन मरचेंट्स  
लारचंद बेबरदास  
श्री निरुधरराम बालदेवानराम  
श्री मोदी सुनन परंतोचंद



तीर्थ व्यापारियों का परिचय ( तीसरा भाग )



सेठ हीरालालजी बटुवालया ( मोतीलाल  
बम्बालाल ) मुल्तानपुर



रायमाधव सेठ मोती संगई (राम संगई  
मोती संगई) अंतर्गाँव



सेठ लखनलालजी बटुवालया ( मोतीलाल



सेठ राम संगई मोती संगई, अंतर्गाँव

### मेसर्स एम् संगई सोना संगई

इस फर्म के मालिक एम् संगई बरेलवाली दिगम्बर जैन समाज के सञ्जन हैं। सेठ अभय संगई के समय से आपके यहाँ साहूकारी एवं खेती का कार्य आरंभ हुआ। आपके पुत्र सेठ सोना संगई के हाथों से विशेष रूप से व्यवसाय वृद्धि हुई। सेठ सोना संगई संवत् १९४९ में स्वर्गवासी हुए। आपके पहिले ही आपके पुत्र बाबू संगई स्वर्गवासी हो गये थे एतदर्थ आपके धर्मपत्नी श्रीमती सुराला बाई ने सेठ एम् संगई को १९५२ में दत्तक लिया। एम् संगई ने १५ हजार लगाकर श्री जिनेरवर को पूजा की। आप सोना बाई संगई ५० व्ही० स्कूल के सेक्रेटरी हैं। आपके पुत्र शांति संगई एवं नीमा संगई हैं। शांति संगई एडवर्क कालेज में पढ़ते हैं। आपके यहाँ श्रमि एवं साहूकारी लेनदेन का व्यवसाय होता है।

### मेसर्स रत्न संगई मोती संगई

इस फर्म के वर्तमान मालिक रायसाहब मोती संगई हैं। आपके कुटुम्ब करीब २५० साल पूर्व बड़पुत्र की ओर में इधर आया था। करीब ७८ पीढ़ी में आप यहीं निवास कर रहे हैं। सेठ मोती संगई के समय से इस कुटुम्ब के व्यवसाय का परिचय प्राप्त होता है। आपके नीमा संगई, पानू संगई एवं पद्मा संगई नामक ३ पुत्र हुए। इनमें से नीमा संगई के एक पुत्र सेठ रत्न संगई हुए आप संवत् १९५१ में स्वर्गवासी हुए। आपके मोती संगई एवं उमासंगई नामक २ पुत्र हुए। उमा संगई संवत् १९५१ में ही गुजर गये।

रायसाहब सेठ मोतीसंगई पर छोटी अवस्था से ही भार भार आ गया। आप ने फर्म के व्यवसाय और मान में विशेष वृद्धि की। आप बरेलवाली जैन दिगम्बर मंत्रदाय के संगई सञ्जन हैं। ४ जून सन् १९२८ में आपके गवर्नमेंट द्वारा रायसाहब की पदवी मिली है।

रायसाहब सेठ मोतीसंगई ने संवत् १९६५ में जैन महात्म्य की पूजा में करीब १५ हजार रुपये लगाये १९७० में यहाँ एक जैन-मन्दिर बनवाने में ४०।५० हजार रुपये खर्च किया। ज्वारी बाग (बंगाल) के पार्श्वनाथ तीर्थ में एक जैन-मन्दिर २५।१० हजार की लागत से बनाने बनवाया। अंजन गौड़ में आपके भावेषरी के नाम से सीता बाई संगई ७ व्ही. स्कूल की स्थापना कर २० हजार रुपये विन्दिग बनाने में दिया। इसी प्रकार १० हजार मुद्रातिरी की की परिदा खरीदने में दिया गया। स्थानीय जैन पाठशाला व्यायामशाला आपके ही परिचय में चलती है। आपके ६ पुत्र हैं जिनमें सब से बड़े पानू संगई, इन्दौर कॉलेज में एच. ए. में पढ़ते हैं तथा छोटे रत्न संगई मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं। आपके व्यावसायिक परिचय इस प्रकार है।

फलतः फर्म को सफलता मिली और उसने उन्नति की ओर पैर बढ़ाया। आपका स्वर्गवास संवत् १९४३ में हुआ और तभी से फर्म का संचालन सेठ खुरालचन्दजी के हाथ में आया। आपने अपनी पूर्व परम्परा के अनुसार ही फर्म की व्यवस्था संचालित की और फर्म को यहाँ की अग्रगण्य फर्मों की श्रेणी पर पहुँचा दिया। आप जितने व्यापार चतुर हैं उतने ही व्यवहार कुशल भी हैं अतः यहाँ के व्यापारी वर्ग पर आपका अच्छा प्रभाव है।

इस फर्म के मालिकों में सेठ खुरालचन्दजी जाजू और आपके पुत्र बाबू बुलाकीदासजी जाजू तथा बाबू जमनादासजी जाजू हैं। फर्म का व्यापार संचालन सेठ खुरालचन्दजी जाजू ही प्रधानरूप से करते हैं। आपके पुत्र बाबू बुलाकीदासजी होनहार नवयुवक हैं और आप भी व्यापार के संचालन में भाग लेते हैं।

इस फर्म का प्रधान व्यापार रुई, बैडिंग और जमींदारी का है। सेठ बुलाकीदासजी मूनि-सिपल कमिश्नर हैं। सेठ खुरालचन्दजी स्थानीय गौराला के प्रेसिडेण्ट हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स ईश्वरदास खुरालचन्द आरबी डि० वर्षों	}	यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है। तथा कौटन, महाजनी लेनदेन और जमींदारी का काम होता है। वर आपकी दो जिनिंग और एक प्रेसिंग फैक्टरी हैं।
--	---	---

### मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द गांधी

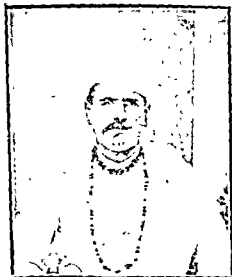
आप लोगों का आदि निवास-स्थान पोकरन जि० जोधपुर के रहनेवाले हैं। आप तो माहेश्वरी वैश्य समाज के गांधी सज्जन हैं।

इस फर्म की स्थापना लगभग १०० वर्ष पूर्व सेठ गुलाबचन्दजी गांधी ने की थी। आरम्भ में कपास का व्यापार और महाजनी लेनदेन का काम आरम्भ किया। आप व्यापार चतुर थे अतः आपने अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास संवत् १९६० में हुआ। आप यहाँ सेठ उत्तमचन्दजी दत्तक आए। अतः आपने फर्म का व्यापार संचालन अपने हाथ लिया और फर्म को बहुत अच्छी उन्नत अवस्था पर पहुँचा दिया। आज कल यह फर्म यहाँ की अग्रगण्य फर्मों की श्रेणी में मानी जाती है।

इस समय फर्म के मालिक सेठ उत्तमचन्दजी गांधी हैं। आप ही फर्म का संचालन करते हैं। आप यहाँ की गोरक्ष संस्था, खादी मण्डी एथंम कांभेस के सज्जान भी हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :-

मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द आरबी (जि० वर्षों)	}	यहाँ फर्म का हेड ऑफिस है। और रुई, महाजनी लेनदेन तथा जमींदारी का काम होता है।
---	---	--



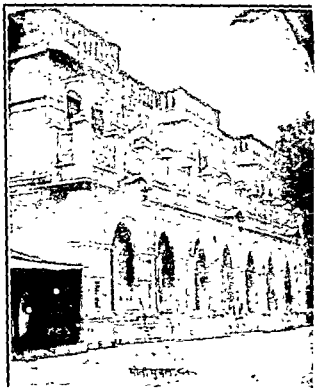
मेरु सुमालचंदजी जानू ( ईश्वरदास सुमालचंद ) भार्यी



सेठ टलमचंदजी गांधी ( गुलाबचंद टलमचंद ) भार्यी



बा० गुलाबीदास जी जानू ( ईश्वरदास सुमालचंद ) भार्यी



मोदीपुस्तकालय

मोदीमदन ( मोदीलाड चण्डीदास ) भार्यी



मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द रामगोँव (जि० अमरावती)	}	रंगतो और लेनदेन तथा जमींदारी का काम होता है।
मेसर्स गुलाबचन्द उत्तमचन्द मेंदी (जि० अमरावती)		रंगतो और लेनदेन तथा जमींदारी का काम होता है।
उत्तमचन्द गोडुलदास आर्वी	}	यहाँ इन्टर नेरानल तथा फ्रीनलर की मोटर एजन्सी है। इसमें आपका ३ हिस्सा है।

### मेसर्स जयरामदास भागचंद

इस फर्म के वर्तमान संचालक सेठ भागचंदजी तथा आपके पुत्र बा० दुल्लिचन्दजी हैं। आप लोगों का हेड आफिस धामनगाँव में है। इस फर्म का विरोध परिचय वहाँ दिया गया है। यहाँ यह फर्म कपास का अच्छा व्यापार करती है। इसकी यहाँ २ जिनिंग तथा १ प्रेसिंग फैक्टरी भी है।

### मेसर्स नारायणदास बट्टीदास

आप लोग सीकर राज्य के परशुराम पुरा के रहनेवाले हैं। आप लोग अमवाल वैश्य समाज के मितल गोत्रीय सज्जन हैं। सब से प्रथम इस स्थान में लगभग ५० वर्ष पूर्व सेठ नारायणदास जी इस स्थान पर आये थे अतः यह परिवार एक लम्बे असें से आर्वी में निवास करता है।

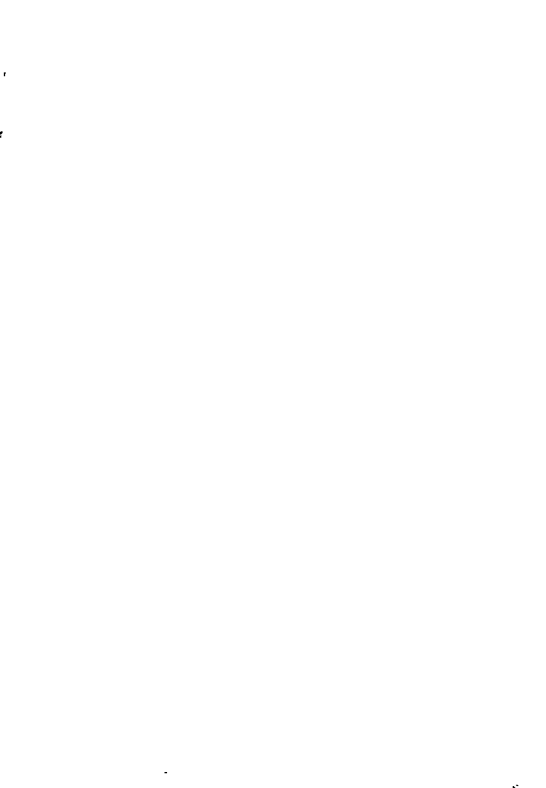
इस फर्म की स्थापना सेठ नारायणदास जी ने मेसर्स नारायणदास बट्टीदास के नाम से व्यापार आरम्भ कर आपने कपास और महाजनी लेनदेन का काम आरम्भ किया गया। इस फर्म की प्रधान उन्नति का श्रेय नारायणदासजी के पुत्र सेठ बट्टीदासजी को ही है। सेठ नारायणदासजी का स्वर्गवास सम्बन् १९६८ के लगभग हुआ। अतः फर्म का संचालन सेठ बट्टीदासजी के हाथ में आया। आपने फर्म के व्यापार को अधिक उन्नत अवस्था पर पहुँचाया और आज यह फर्म यहाँ की प्रतिष्ठित फर्मों में मानी जाती है।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ बट्टीदासजी, गणेशराम, प्रतापचंदजी म्हाडूरामजी और सोहनलालजी हैं। फर्म का प्रधान संचालन प्रधान रूप से सेठ बट्टीदासजी करते हैं और आपकी देख रस में आपके सभी भाई व्यापार का संचालन करते हैं।

इस फर्म पर वर्तमान में रुई अनाज, सोना, चांदी कपड़ा, लेन देन का काम होता है तथा जमींदारी और खेती का भी काम होता है। इसी प्रकार यहाँ फर्म की दो जीन फैक्टरियों तथा एक प्रेस फैक्टरी है।







## भारतीय व्यापारियों का परिचय

अमरावती—मेसर्स जयरामदास भागचन्द	}	यहां भी आपका जीन और प्रेस है। तथा रुई का व्यापार होता है।
यवतमाल—मेसर्स जयरामदास भागचन्द		यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है। तथा कारखाने हैं।
आर्ची—मेसर्स जयरामदास भागचन्द	}	यहां २ जीन और एक प्रेस है। तथा कपान का व्यापार होता है।
वग्वई—मेसर्स जयरामदास भागचन्द केपेट्रोल स्ट्रीट T. A. "Godess"		यहां रुई के वायदे तथा हाजर का व्यापार होता है।

### मेसर्स विरदीचन्द चुन्नीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान नांद (मारावाड़) का है। सी. पी. में इस वर्ष दान को आये हुए करीब १०० वर्ष हुए। सब से पहले सेठ बुधमलजी लूणावन ने कान (C. P.) में आकर अपना काम प्रारम्भ किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र विरदीचन्दजी ने फर्म के कामको सम्हाला। इस समय भी आप ही इस फर्म के मालिक हैं आपकी आयु इस समय करीब ७३ वर्ष की है। आपके एक पुत्र श्रीयुत् चुन्नीलालजी हुए, जिनका स्वर्गवास मई १९७६ में हो गया। इस समय आपके २ पौत्र अर्थात् श्रीयुत् चुन्नीलालजी पुत्र श्रीयुत् मुगनचन्दजी तथा श्रीयुत् इन्द्रचन्दजी फर्म के काम को संचालित करते हैं। आप दोनों ही योग्य और व्यापारकुशल सज्जन हैं।

इस फर्म की दानधर्म तथा सार्वजनिक कार्यों की ओर भी अच्छी रुचि है। श्रीयुत् इन्द्रचन्दजी के विवाह के उपलक्ष्य में ११००० रुपये भिन्न २ कार्यों में दान किये थे।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

- १ धामक—मेसर्स बुधमल विरदीचन्द—यहाँ पर बैंकिंग और खेती बाड़ा का काम होता है। यहाँ पर आपकी एक जीनिंग फेक्ट्री है।
- २ धामलगाँव—मेसर्स विरदीचन्द चुन्नीलाल—यहाँ पर बैंकिंग, मोना-बाँरी और रुई रान एजन्सी का काम होता है।





मैसर्स श्रीराम शालिगराम

इस कर्म के मालिक मूल निवासी पोकरन ( जोधपुर ) के हैं। आप मादेश्वरी जाति  
राठी सज्जन हैं। इस खानदान के पूर्वपुरुष सेठ सुरालचन्द्रजी तथा आपके छोटे भा  
सेठ मूलचन्द्रजी हैं। इसमें से सेठ सुरालचन्द्रजी के परिवार की दुकानें शिवालीला राम  
गोपाल और टीकनदास मदनलाल तथा गणेशदास गुलाबचन्द्र के नाम से जकोला, एमगॉर्वा  
और विलोरा में चल रही हैं। तथा सेठ मूलचन्द्रजी के परिवार का व्यवसाय विरोप कर  
श्रीराम शालिगराम के नाम से ही चलता है।

सेठ मूलचन्द्रजी के स्वर्गवास के पश्चात् इस परिवार के कारबार को आपके दत्तक पुत्र सेठ  
शिवलालजी ने सम्भालित किया। सेठ शिवलालजी के दो पुत्र हुए उनके नाम सेठ शालिगराम  
जी और सेठ बालकिरानदासजी थे। इनमें से उत्तम कर्म सेठ शालिगरामजी के बंशजों की  
है। सेठ शालिगरामजी के भी दो पुत्र हुए। सेठ फतेलालजी और सेठ सुन्दरलालजी। इनमें  
से सेठ फतेलालजी बड़े दूर, प्रसिद्ध और नामाङ्कित पुरुष हो गये हैं। आपने व्यापारिक जगत्  
में सफलता प्राप्त कर लायें रुपये का द्रव्य अर्जित किया तथा सामाजिक-जगत् में बड़े  
कीर्ति लाभ की। आप द्वितीय मादेश्वरी महासभा के प्रेसिडेण्ट रहें, तथा जाति के अत्यन्त  
प्रभावशाली नेता रहें। एक बार पोकरन में टाडुर साहब और मादेश्वरी खनाज में गणप  
हो गया था, उसको भी आपने बड़ी चतुराई से निपटाया। राज्य में भी आपका बहुत बड़ा  
प्रभाव रहा। आप राज्य पोकरन टिकाने में सेठ के सम्मान सूचक नामों में सम्बोधित  
किये जाते थे। आपके हाथ में दान-धर्म और सार्व जनिक कार्य भी सूब हुए। आपने करीब  
तीन लाख रुपये का एक दृष्ट बापम दिया जिससे मारवाड़ में शिक्षा-प्रचार, खनाज-महापता,  
गो-रक्षा और अज्ञान पीढ़ियों की मरद होतो है। इसके सिवा नासिक में आपने करीब  
एक लाख की लागत से एक धर्मशाला और सहायक, तथा व्यामवाट में भी एक धर्मशाला  
और महावर्त मुनबाया। तथा आपने अपने पुत्र श्रीजुग लालचन्द्रजी जिनका स्वर्गवास केवल  
१९ साल अल्पवय में हो गया—के अन्तर्गत में धानसगौर में एक चारिटेबल टिम्पेसरी,  
और एक मो रक्षा भवन बनवाया। आपके पूर्वजों की ओर से पोकरन में एक भी मोहद्वेन-  
नायकी का विज्ञान मन्दिर बना हुआ है। इस मन्दिर के लिए लायें रुपये की रकम ही हुई  
है। पर आपके पुत्र बानों का अक्षिप्त परिषदनाय है।  
सन् १९०४ में आप संसार में कीर्तिलाल कर स्वर्गशामी हो गये, और १९०५ में भारत  
तथा सेठ सुन्दरलालजी तथा बालकिरानदासजी की धर्म अल्प २ हो गई। इस समय इस कर्म के  
मालिक स्वर्ग-पुत्र श्रीजुग लालचन्द्रजी के दत्तक पुत्र श्रीजुग सुरसेनदासजी हैं।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

वर्ष के हैं। इसलिए सेठ फतेलालजी के पश्चात् उनके सालेकलोदी निवासी श्रीयुत हीराराम जी मैथ्या ने काम सन्हाला। आप ५० वर्ष से इस फर्म का काम करते थे। आपका स्वर्गशाम करीब १५ साल पूर्व ही गया। इस समय श्रीयुत लीलाधरजी भूतड़ा फर्म का काम योग्यता पूर्वक संचालित कर रहे हैं। आप बड़े शिक्षित और समझदार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धामणगॉव-मेसर्स श्रीराम शालिग्राम—यहाँ पर आपका एक जीन प्रेस है तथा कृषि, बैंकिंग और कमीशन एजन्सी का काम होता है। तथा सय प्रकार का व्यापार होता है।

जलगॉव-मेसर्स शिवलाल शालिग्राम—यहाँ पर आपकी एक प्रेसिंग फेक्टरी है। इसके अतिरिक्त यवतमाल, अकोला वगैरह स्थानों में कई फेक्टरियों में आपका सामा है। इसके सिवा ऋङ्गगॉव और बोडरवा वगैरह स्थानों पर आपकी बहुतसी जमींदारी है।

### मेसर्स श्रीकिशन मण्डारी

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान पाटवा ( जोधपुर-स्टेट ) में है। आप माहेधरी समाज के मण्डारी सज्जन हैं। श्रीयुत् श्रीकिशनजी मण्डारी इन व्यक्तियों में से हैं, जिन्होंने अपने हाथों से अपने पैरों पर खड़े होकर, अपने व्यापार को जमाया, द्रव्य उपाजित किया और व्यापारी समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपका व्यापारिक साहस बहुत बड़ा हुआ है। पहले आप बहुत साधारण स्थिति के पुरुष थे। मगर २५ वर्ष पूर्व आपने अपनी फर्म स्थापित किया और क्रमशः उन्नति करते २ ससे इतनी उन्नत अवस्था को पहुँचाया।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः श्रीयुत् जयनारायणजी, श्रीयुग रामकिशनजी, और रामेश्वरजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

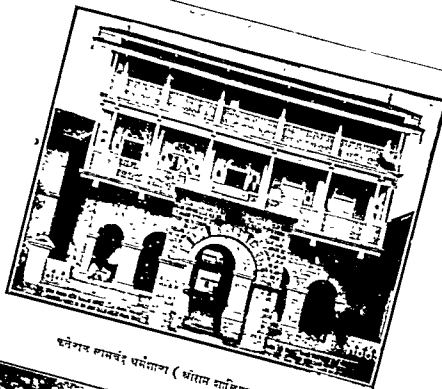
धामणगॉव-मेसर्स श्रीकिशन मण्डारी—यहाँ पर आपकी एक जीनिंग फेक्टरी है। तथा कई का व्यापार होता है। यहाँ पर आपका निजी मकान और खेती भी है।

### व्यापारियों के पते

बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स—  
मेसर्स जयधामराम माणिकन्द  
,, श्रीनारायण देवनाजी

” विरवीचन्द सुश्रीलाव  
” सुगरीजी माणिकजी  
” श्रीराम शालिग्राम  
” श्रीकिशनजी मण्डारी

भारतीय व्यापारियों का परिचय :-  
( तीसरा भाग )



एनेंगल लामबर्द घमंसाज ( श्रीराम कालिगाम ) नासिक



दुसरा नेमसें श्रीराम कालिगाम घानसगई ।



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

वर्ष के हैं। इसलिए सेठ फतेलालजी के पश्चान् उनके सालेफनोदी निवासी श्रीगु जी भैया ने काम सम्हाला। आप ५० वर्ष से डम फर्म का काम करते थे। आप करीब १५ साल पूर्व हो गया। इस समय श्रीयुत लीलाधरजी मूनडा फर्म का पूर्वक संचालित कर रहे हैं। आप बड़े शिक्षित और समझदार सज्जन हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धामणगॉव—मेसर्स श्रीराम शालिग्राम—यहाँ पर आपका एक जीन प्रेस है तथा और कमीशन एजन्सी का काम होत प्रकार का व्यापार होता है।

जलगॉव—मेसर्स शिवलाल शालिग्राम—यहाँ पर आपकी एक प्रेसिंग फैक्टरी रिक्त यवतमाल, अफोला वगैरह स्थानों में आपका सामान है। इसके सिवा क वगैरह स्थानों पर आपकी बहुतसी

### मेसर्स श्रीकिशन भण्डारी

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान पाटवा ( जोधपुर-स्टेट ) है समाज के भण्डारी सज्जन हैं। श्रीयुत् श्रीकिशनजी भण्डारी इन व्यक्ति अपने हाथों से अपने पैरों पर खड़े होकर, अपने व्यापार को जमाया, और व्यापारी समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपका व्यापारिक साहम प पहले आप बहुत साधारण स्थिति के पुरुष थे। मगर २५ वर्ष पूर्व आपने किया और क्रमशः वृद्धि करते २ वसे इतनी वृद्धत अवस्था को पहुँचाया।

आपके इस समय तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः श्रीयुत् जयनारायणः किशनजी, और रामेश्वरजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धामणगॉव—मेसर्स श्रीकिशन भण्डारी—यहाँ पर आपकी एक जीनिंग फैक्टरी है। व्यापार होता है। यहाँ पर आपका निजी : खेती भी है।

व्यापारियों के पते  
 बैंकर्स एण्ड कॉटन मरचेंट्स—  
 मेसर्स जयरामदास भागचन्द  
 ,, श्रीनारा। पेरतनजी

” विरदीचन्द चुन्नीलाल  
 ” सुरारजी भागवती  
 ” धीराम शालिग्राम  
 ” श्रीकिशनजी भण्डारी

## कारंज

जी० आई० पी० रेलवे की मुसावल-नागपुर लाइन के मुर्तिजापुर जंक्शन से इस स्थान के लिये एक लाइन जाती है। वरार प्रांत की कपास की मंडियों में इसका भी अच्छा स्थान है। यहाँ कई प्रतिष्ठित गुजराती फर्मों की प्रांचेज हैं। इसके भलावा विदेशी फर्मों की एजंसियाँ हैं। यहाँ करीब ५० हजार गॉठ कई प्रतिवर्ष बँधती है। यहाँ करीब १५ जीनिंग फेक्टरियाँ हैं। प्रसिद्ध स्थान—

- (१) कस्तूरी की हवेली—किम्बदन्ति है कि इस इमारत के बनवाने में ६० ऊँट कस्तूरी नाँव में ढाली गई थी। और उसके बदले में इस हवेली के निर्माता धनिक कुटुम्ब ने एक ही सिक्के के रुपये दिये थे। उक्त परिवार “संगई” के नाम से यहाँ सम्बोधित किया जाता है।
- (२) जैन सम्प्रदाय के ३ प्राचीन मंदिर भी यहाँ विद्यमान हैं—१—सेनगग २—बाला-त्कार और ३—काष्टा संगई। उपरोक्त स्थानों से पता लगता है कि कारजा बहुत ऐतिहासिक स्थान है। और बहुत समय पूर्व यह एक समृद्धिराली माना जाता था।
- (३) भीमहावीर ब्रह्मचर्याभ्रम—इस आभ्रम का जन्म वीर सं० २४४४ की अक्षय तृतीया को हुआ। इसमें करीब १२५ विद्यार्थी शिक्षा लाभ करते हैं। इसमें व्यायाम शाला, पुस्तकालय, वाचनालय, व्याख्यान समिति सभी आवश्यक विभाग हैं। इसका प्रोव्वाफण्ड (८५५००) है जिससे सात घाट हजार रुपये वार्षिक की आमदनी होती है। इसके अध्यक्ष श्रीयुव जयकुमार देवीदास चँवरे और मंत्री रामलाल दुलासा कावरी हैं। संस्था सक्षीपमान है।

मैसर्स गोपायदास अम्बादास चँवरे

स फर्म के मालिक बहुत लम्बे समय से कारंजा में निवास करते हैं। इसके पूर्व आप कोटा के ओर से इधर आये थे। सेठ गंगासा चँवरे के हाथों से इस कुटुम्ब के व्यापार को लेली। आपके ४ पुत्र हुए सेठ देवीदास चँवरे, सेठ अम्बादास चँवरे, सेठ जिनवरसा

-----



सेट भगवादास गंगाजी खंबरे—धारंजा



एव. पद्माकर भगवादास खंबरे—धारंजा



सेट गोदादास खंबरे—धारंजा



सेट रामदास पद्माकर खंबरे—धारंजा

)

.

देवमं जम्बूदाम देवीदास

बतार और

एक पत्र संघ जिनवरमाजी के बड़े भाग्य सेठ देवीदासजी की है। सेठ देवीदासजी सर्वत्र १९०३ के आरम्भ मात्र में स्वर्गवासी हुए। आपके ५ पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः प्रदासजी, जयजुमारजी, जम्बूदामजी, बट्टमानजी, एवं बानचंदजी पंवर हैं। उरोष्ठ राजनी से जयजुमारजी १९८५ में और बट्टमानजी १९७७ में गुजर गये हैं। भीमपुमारजी पंवर प्रसिद्ध बर्डीज हो गये हैं। अब आपके छोटे भाग्य बानचंदजी अछों में बर्डीजी का काम करते हैं। इन भाइयों में से सेठ जम्बूदामजी उरोष्ठ नाम से अपना अलग व्यापार करते हैं। सेठ जम्बूदामजी में सहायक सहकायोंक्रम को ५० हजार रुपया भिन्न २ मसों में प्रदान किया है। आपने भाग्य जम्बूदामजी में भी बरीब २६ हजार रुपया एक भाग्य को दिया है। सेठ जम्बूदासजी बहुत बाल प्रवृत्ति के राजन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बर्डीज—मैसर्स जम्बूदाम देवीदास—एरॉ देविग, कपडा तथा गेरी का व्यापार होता है।

देवमं नरसिंहमा स्वदामा रावत

इस पत्र के मालिक भौली (हुन्देण्ट) निवासी लीज सहायन राजन के दिवाकर लीज राजन हैं। बरीब १५०—१७५ वर्ष पूर्व सेठ नरसिंहमाजी के हाथों में इस पत्र का व्यापार हुआ था। सेठ हसबसावजी के समय में इस कुटुम्ब के व्यापार को बृद्धि प्राप्त हुई। एक बने पुत्र नरसिंह सावजी ने व्यापारको विरोध किया। सेठ नरसिंह सावजी बड़े बतार विचारों के लीब थे। आपने बर्डीज में लीजेंडर दिवाकर लीज बन्नेयें हुए हैं। लीजेंडर बंदि के अन्तर्गत ही गरी के लु व्यापार काय ही थे। आपके छोटे भाग्य जम्बूदामजी ने वर्ष १९०५ में एरॉ एक लीजिंग केली। सेठ नरसिंह सावजी वर्ष १९१३ में स्वर्गवासी हुए। बर्डीज के आपके पुत्र सेठ हसबसावजी एक व्यापारकायें राजन पत्र के मालिक हैं। उरोष्ठ राजनी काय २० साल में कुम्भिलित होकर हैं। आपके तकल्प, लीजेंडर एवं लुण्णकट लुण्णक ३ पुत्र हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बर्डीज—मैसर्स नरसिंहमा स्वदामा—बतार, लुि बर्डीज एवं लीजेंडर का काय होता है।

बर्डीज—लीजेंडर नरसिंहमा स्वदामा—इस पत्र के मालिक हैं।

### मेसर्स मोतीलाल ओंकारदास

इस फर्म के मालिक मेठ ओंकारदास के पुत्र सेठ मोतीलालजी एवं धर्ममाताजी हैं। आप बखेरवाल जैन सम्प्रदाय के सज्जन हैं। स्थानीय प्रथमवर्षीयक्रम में आप की खीर से भी मदद दी गई है। आपके यहाँ धन्नुलाल ओंकारदास के नाम से रुपये का और मोतीलाल ओंकारदास के नाम से रुपिया और लेन-देन का काम होता है।

### मेसर्स मूलजी जेटा एण्ड कम्पनी

इस फर्म का विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में बम्बई विभाग में पृष्ठ २२ में दिया जा चुका है। यह फर्म कारंजा के न्यू इम्पेट्रिण्डिया प्रेमिंग कम्पनी की मैनेजिंग पार्टनर है। १९०४ में इस प्रेमिंग कम्पनी की स्थापना की गई। कारंजा के अतावा मुर्तिजापुर, अछोना, बाधिम, अजगौर आदि कई स्थानों पर इस फर्म की जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरीयों हैं। बम्बई के व्यापारिक क्षेत्र में यह बहुत प्रतिष्ठामय फर्म समझी जाती है।

### मेसर्स रामजी नाइक काण्णर

इस प्रतिष्ठित कुटुम्ब का लक्ष्मी अवधि में यहाँ नियाम है। सेठ रामजी नाइक के आजा के हाथों से इस कुटुम्ब में व्यवसाय आरम्भ हुआ। आप दक्षिणी ब्राह्मण समाज के गौतम श्रुति गौत्रिय सज्जन हैं। आपके पश्चात् क्रमशः श्रीतुकाराम काण्णर, श्रीकृष्णाजी काण्णर, श्रीगणेश काण्णर ने फर्म का व्यवसाय संभालन किया। सेठ तुकाराम काण्णर ने इस फर्म के व्यवसाय की विरोध उन्नति की। आपने यहाँ एक धर्मशाला का भी निर्माण कराया। इसके अतावा इस कुटुम्ब की ओर से यहाँ एक श्रीरामजी मन्दिर बना है। तथा मंगलन का प्रबंध है। यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म बहुत पुगती तथा प्रतिष्ठा-मय फर्म मानी जाती है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक मेठ मंगलन राव काण्णर हैं। आप सेठ रामजी काण्णर के नाम पर कुछ भाग्य हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कारंजा—	रामजी नाइक काण्णर—	यहाँ जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी है। तथा वैदिक व्यापार होता है।
अजगौर—	”	—जीनिंग फेक्टरी तथा ऑइल मिल है।
बाधिम—	”	—ऑइल मिल है।
नागपुर—	”	—जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी है।
मोहा—	”	—जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी है।

### मेसर्स रामधन रघुनाथ

इस फर्म के मालिक मूढवा ( मारवाड़ ) निवासी मादेश्वरी सम्राज के सज्जन हैं । करीब १२५ वर्षों से यह दुकान यहाँ फारवार करती है । पहले इस दुकान पर साजगराम विरदीचंद नाम पड़ता था ।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ शिवप्रतापजी हैं । आपके यहाँ फारंजा में रामधन रघुनाथ के नाम से खेती तथा साहुकारी व्यवहार एवं मोहनडाल बालकिरान के नाम से रई का फारवार होता है ।

### मेसर्स रामचन्द्र चन्दनमल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान फलोदी ( जोधपुर स्टेट ) है । आप ओसवाल शैवाम्बर जैन धर्मावलम्बीय गुलेदा गौत्रीय सज्जन हैं । इस फर्म का स्थापन संवत् १९१३।१४ में सेठ इन्द्रचन्द्रजी के हाथों से हुआ । सेठ रामचन्द्रजी के ५ पुत्र हुए । १ सेठ कल्याणमलजी, २ इन्द्रधन्वजी, ३ अमोलकचन्दजी, ४ सरदारमलजी तथा ५ चन्दनमलजी । इन सब भाईयों का फारवार २५ साल तक शामिल होता रहा और उसके बाद से सेठ चन्दनमलजी का कुटुम्ब अपना स्वतंत्र व्यापार कर रहा है । आप १९५७ में स्वर्गवासी हुए ।

सेठ चन्दनमलजी के ४ पुत्र हुए । मूलचन्द्रजी, सोभागमलजी, पूनमचन्द्रजी तथा दीपचन्दजी इनमें से दीपचन्दजी १९५७ में स्वर्गवासी हो गये हैं । संवत् १९५९ में आपकी ओर से बम्बई में दुकान खोली गई । आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

बम्बई—मेसर्स मूलचन्द्र सोभागमल (बदामका म्हाड़) कालवादेवी—यहाँ आदत का काम होता है ।  
फारंजा—मेसर्स रामचन्द्र चन्दनमल—बैङ्किंग कपड़ा चोरी सोना का व्यापार होता है ।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़  
मेसर्स दि अक्बर प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड  
" फारंजा जीनिंग कम्पनी  
" नरसिंह शिवजी जीनिंग फेक्टरी  
" नरेन्द्र जीनिंग फेक्टरी  
" मरकेंटाइल प्रेसिंग कम्पनी  
" मारिकुसा रुसवमा जीनिंग फेक्टरी

" न्यू शुक्रसिल जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड  
" न्यू ईस्ट इण्डिया प्रेस कम्पनी लिमिटेड  
" रामजी नाइक काण्णव जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड  
" रामकिरान लॉकड़ जीनिंग फेक्टरी



श्रीय व्यापारियों का परिचय

**कपास के व्यापारी**

- मेसर्स अर्जुन खीमजी एण्ड कम्पनी
- तनसुन्दराम धंशीधर
- बालमुकुन्द चांडक
- मूलजी जेठा कम्पनी
- मोहनलाल बालकिशान
- रघुनाथ भागीलाल
- रामजी नाइक काण्णव

**हार्ड वेअर मरचेंट**

- मेसर्स अब्दुलकय्यूम अब्दुलअली
- अमानत हुसेन हफीमुद्दीन
- इस्माइलजी महम्मदअली
- गुलामहुसेन ईसुफअली

” दिपतुल्ला भाई अब्दुलअली

**विदेशी कम्पनियों की एजमियाँ**

- मेसर्स गोसो कानूमी केरा लिमिटेड
- जापान ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड
- टोयो भेनरा केरा लिमिटेड
- वाल कट ब्रदर्न लिमिटेड

**कपड़े के व्यापारी**

- मेसर्स नारायण प्रागजी सम्मत
- मोतीलाल आंकारदास
- रामचन्द्र चन्दनमल
- हाजीमहम्मद शाहमहम्मद

**सेमर्स**

यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे को मुसावळ नागपुर लाइन पर जलम्ब और मूर्तिजापुर जंक्शन के बीच राम गांव नामक राहूर के समीप है। यहाँ कपास की ६ जीनिंग और ६ प्रेसिंग फेक्टरियां तथा १ ऑइल मिल है। प्रति वर्ष ३०१४० हजार गांठ रुई की औसत आमद इस स्थान पर है। कपास की यह छोटी सी और अच्छी मंडी है। रामगांव से प्रति दिन सैकड़ों मोटरों एवं लारियों की आमदरफ्त यहाँ रहा करती है। यहां से विनोले (सरकी) पंजाब, बम्बई एवं काठियावाड़ के लिये रवाना किये जाते हैं। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

**कॉर्टन मरचेंट्स**

मेसर्स सुखदेव रामदेव

इस फर्म के मालिक राम निवासी राहपुर (जयपुर स्टेट) है। आप अम्बाल समाज के सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन सेठ सुखदेवजी के हाथों से संवत् १९२३ में हुआ। इस फर्म

के व्यापार की विशेष उन्नति सेठ सुखदेवजी के पुत्र रामदेवजी एवं भावरमलजी के हाथों से हुई। आप ही दोनों वर्तमान में फर्म के मालिक हैं। आपकी ओर से देश में एक सुंदर धर्मशाला बनी हुई है। सेठ रामदेवजी को १९२४ में रायसाह्य की पत्राधि मिली है। यहाँ के आप आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। सेठ रामदेवजी के पुत्र सेठ गग्गुलालजी कोर्टन मार्केट के प्रेसिडेंट हैं। आपकी फर्म का प्रधान व्यापार कपास का है। इनका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।  
 शोगांव—मेसर्स सुखदेव रामदेव—यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा रुई का व्यापार होता है।  
 राम गांव—मेसर्स सुखदेव रामदेव—रुई का व्यापार होता है।

### मेसर्स राय बहादुर हरदत्तराय रामप्रताप चमड़िया

इस फर्म का हेड ऑफिस फलकत्ता है। फलकत्ते के व्यापारिक समाज में यह फर्म बहुत प्रविष्टित एवं प्रधान धनिकों में समझी जाती है। इसके व्यापार का विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के द्वितीय भाग में चित्रों सहित दिया गया है।

संवत् १९५८ में इस फर्म को शोगांव में जीनिंग और १९६५ में प्रेसिंग फेक्टरी खोली गई। इस दुकान का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

शोगांव—राय बहादुर हरदत्तराय रामप्रताप जीनिंग प्रेसिंग तथा न्यूजीन फेक्टरी। इस दुकान पर भीजुहारमलजी कमलिया संवत् १९६६ से काम करते हैं।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़		
जयनारायण म्हालीराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी		” जयनारायण म्हालीराम
न्यू सुफ्रिसल कम्पनी लि०	” ”	” माणिकजी परबत
न्यू जीन फेक्टरी	” ”	” सुखदेव रामदेव
राली मद्रस लिमिटेड	” ”	कपड़े के व्यापारी
सुखदेव रामदेव	” ”	फेदारमल भत्रालाल
रा. व. हरदत्तराय रामप्रताप	” ”	गणपतलाल धत्रालाल
धीराम शालिग्राम	” ”	गणेशदास भीमराज
ऑयल मिन्स		किराना के व्यापारी
न्यू सुफ्रिसल कम्पनी ऑइल मिन्स		मेसर्स वमर हासम
कपास के व्यापारी		” गोंदूराम मंगलचंद
मेसर्स केवलराम रामेश्वर		” बलदेवदास लक्ष्मीनारायण
		” हाजी अली अब्दुहा

## आकोट

इस स्थान अकोला के समीप उत्तर की ओर बसा हुआ है। प्रति वर्ष ३०।३५ हजार रुई की गाँठें यहाँ बँधती हैं। यहाँ १३।१४ कांटेन जीनिंग प्रेसिंग पेट्रटरीयों हैं। यहाँ के बहुत से व्यापारियों का परिचय अकोला आदि स्थानों में पहिले दिया जा चुका है।

### सेठ लालजी विठोबा पाटील

इस कुटुम्ब का करीब १३ पीढ़ी से सावरा ( आकोट-धरार ) में निवास है। आपके मूल श्री जयसिंह राव समझे जाते हैं। आप मराठा ( पाटील ) सज्जन हैं। इस कुटुम्ब के व्यापार को सेठ विठोबा पाटील के समय से उन्नति आरम्भ हुई। सेठ लालजी पाटील ने इसके काम-काज को विशेष धमकाया। आकोट अंजनगाँव में आपने जीनप्रेस छोले, कई मिलों एवं इर-रंस कम्पनियों के आप शेअर होल्डर हैं। धरार प्रान्त में आपकी बहुत बड़ी कारख होती है। आप अकोला सेंट्रल बैंक के डायरेक्टर एवं डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर रह चुके हैं। लालजी सेठ की अवस्था इस समय ६२ वर्ष की है। आप व्यापारिक काम अपने पुत्रों पर छोड़ कर तीर्थ यात्रा में रूढ़ करते हैं। आपने सावरा में एक ए. व्ही. स्कूल एवं धंडरपुर में एक धर्मशास्त्र धनवाई है।

लालजी सेठ के इस समय ४ पुत्र हैं। श्रीयुव मारुतोलालजी, श्री केशोरावलालजी, श्री माधवलालजी एवं हरीलालजी पाटील हैं। इनमें से श्री केशोराव पाटील अभी इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, स्वीटजरलैंड एवं स्कॉटलैंड की यात्रा कर के आये हैं। आप अभी फिर अमेरिका जाने का विचार कर रहे हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।  
सावरा ( आकोट ) लालजी विठोबा पाटील—कृपि एवं लेन-देन का काम होता है।

आकोट—धरंसी जीनिंग प्रेसिंग पेट्रटरी } इन नामों से कारखाने हैं।  
लालबानी प्रेसिंग पेट्रटरी }

अंजनगाँव—लालजी पाटील जीनिंग पेट्रटरी—जीन पेट्रटरी है।

### जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि आकोट कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी लि०  
 सेठ अरयाराम अनंतराम जीनिंग फेक्टरी  
 कारीनाथ अण्णालालजी पाटील ( लालबानी )  
 प्रेसिंग फेक्टरी  
 गिरघाचोलाल दामोदरदास जीनिंग फेक्टरी

न्यू बरार प्रेम कम्पनी लिमिटेड  
 न्यू आकोट जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी लिमिटेड  
 ( परंसी जीनिंग प्रेस )  
 भादती नारायण जीनिंग फेक्टरी  
 रामदत्त किरानदयाल जीनिंग फेक्टरी  
 लादूराम बालकिरानदास जीनिंग फेक्टरी  
 सुरजमल श्रीराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

### मुक्तिजापुर

यह स्थान जी० आई० पी० की मेनलाइन पर बरार प्रांत के मध्य में अकोला के समीप बसा है। यहाँ से पंजाबपुर एथं यवतमाल के लिये ब्रॉच लाइन जाती है। यहाँ का रुई का व्यापार प्रधानतया भादिया व्यापारियों के हाथ में है। मेसर्स मूलजी जेठा फर्म का परिचय हम जल-गॉब में दे चुके हैं।

### जीनिंग प्रेसिंग फेक्ट्रीज़

गोकुल होसा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 जमनादास नरसी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 मूलजी जेठा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 न्यू मुफ्तिल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 कपड़े के व्यापारी  
 गोबर्दनदास अमरचन्द

ढायालाल हरजीवनदास  
 पुरुषोत्तमदास गोकुलदास  
 सुंदरजी लक्ष्मीचंद  
 गन्ना किराना  
 तनमुखराय बंशीधर  
 हाजी दाउद उसमान  
 शिवराम राधाकिरान  
 निर्भयराम बेचरभाई ( किराना )

### भलकापुर

यह स्थान जी. आई. पी. रेलवे की मुमाबल नागपुर लाइन की मेनलाइन पर बरार प्रांत के बुलठाणा जिले में स्थित है। यहाँ करीब ९ कॉटनजीनिंग ४ प्रेसिंग फेक्टरी एवं ३ ऑइल मिल है। कपास की ३०१५ हजार गौठों का पाक प्रतिवर्ष यहाँ पकवा है। करीब ४० हजार पस्ता ( १२० घेर का पस्ता ) मुंगफली की यहाँ प्रतिवर्ष आमद होती है। यहाँ का वेल कान-पुर, मिर्जापुर, बम्बई आदि स्थानों में एवं खती विलायत और बम्बई जाती है।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

कॉटन मिल—खानदेश प्रांत में जलगाँव, चानीसगाँव, अमननेर और बुलिये में मिलारू काटन मिलें हैं। सबसे प्रथम सेठ मूलजी जेठाभाई ने सन् १८७३ में पूर्व खानदेश स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स की स्थापना की। उसके पश्चात् १९०६ में अमननेर में, उसके पश्चात् चानीसगाँव में, सन् १९२१ में जलगाँव में तथा १९०६ में बुलिये में मिलों का उद्घाटन किया गया।

व्यापारिक वस्तु—इस शहर की जन सन्ख्या लगभग ३० हजार है। व्यवसायिक दृष्टि से मारवाड़ी, गुजराती और कच्छी प्रधान हैं। इनमें भाँ व्यवसाय में सर्वाधिक बड़ा भाग मारवाड़ी व्यापारियों का है।

बैंक—जलगाँव शहर में २ बैंक हैं।

(१) इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड—इस प्रसिद्ध बैंक की शाखा जलगाँव में है।

(२) पूर्व खानदेश सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक—इस बैंक को स्थापना सन् १९१६ में हुई। खानदेश में इस बैंक की कई ही शाखाएँ हैं। इन अधिकारों को एवं अन्य रोजगारियों को बहुत स्वल्प व्याज पर ऋण उधार देता है। इस बैंक ने अपने जीवन काल में आशातीत उन्नति कर दिखाई है। बैंक का इन्फ्रामिनिम जलगाँव में है।

## व्यवसायिक एसोसिएशन—

दि जलगाँव क्लापमचेंड एसोसिएशन—इस सभा का उद्देश खानदेश विज्ञान में होने वाले कपड़े के व्यवसाय की उन्नति करना, तथा कपड़े के व्यापार में पैदा होने वाले नुक़ानों को दूर करने का प्रयत्न करना है। इस एसोसिएशन ने कपड़े को विक्री पर अपना टैक्स लगा रखा है और मेम्बरों की फीस अलग लगाई है। इसकी मैनेजिंग कमेटी के चेयरमैन सेठ मारवाण सुगलचंद हैं। एसोसिएशन के अध्यक्ष सेठ जयकिशन रामविलास, उपाध्यक्ष सेठ मारवाण गनेशराम तथा मंत्री राज साहय रूपचंद मोतीराम और शंकरलाल गुलाबचंद हैं।

## कॉटन यिन्स—

दि खानदेश स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लिमिटेड—इस कम्पनी की स्थापना सन् १८८३ में हुई। यह मिल भारत की बहुत पुरानी मिलों में से है। आरम्भ में इसकी स्थापना ७ लाख ५० हजार की पूंजी से की गई। पर इस मिल की आर्थिक परिस्थिति बहुत बुरी है। इसकी मैनेजिंग एजेंट मेंमरी मूलजी जेठा कम्पनी है। और आरम्भ में इसकी पूंजी ५० लाख ५० हजार की थी।





रेमिण्ड लेन फॉर्म में है। इस समय इस मिल में २२६६४ स्पेडिस्स और ४५९ लूम हैं। ३४९ लूम मोटा सूत तयार करने के हैं। इसके अलावा ब्लेकेट के २८८ स्पेडिस्स और १६ लूम हैं। मिल में प्रति वर्ष करीब २० लाख पौंड कपड़ा, २० लाख पौंड सूत और २ लाख ३५ हजार पौंड ब्लेकेट तयार होता है। इसमें १५३९ आदमी काम करते हैं। मिलने अन्तिम डिबिडेंट १२५ और ७५॥ बाँटा है। मिल की ओर से जलगाँव, नांदेड़, परमनी तथा पूर्णा (नांदेड़) में रूई की खरीदी होती है। तथा फरजापुर (निजाम) जलगाँव, बेल्लूर, कागवड़, कसंड-वड (सदर्न मराठा कंट्री) और चांदा में ५ जॉनिंग एवं ४ प्रेसिंग फैक्टरियों हैं। इस मिल ने अपने ५० वें वर्ष की गोल्डन ज्युबिली के उपलक्ष में ४ मेटरनिटी वेड रखे हैं। मिल में घुलाई व रिंगार्ड के अलग अलग कारखाने हैं। मिल का कपड़ा बेचने की नीचे लिखी जगहों पर शाखाएँ हैं।

१ सागर—एजप्ट हालचन्द धरमचन्द

२ आगरा—एजप्ट राय बहादुर सूरजभान सेठ

३ दिल्ली—सेठ चतुर्भुज गोवर्द्धन दास लक्ष्मी काय मारकांट

४ कानपुर—सेठ चतुर्भुज गोवर्द्धनदास काहू कोठी

५ अमृतसर—साजा लक्ष्मी साठी

६ अंशोरणी (मद्रास)—मूलजी जेटा कम्पनी

७ अमरावती—एजेंट रतनचन्द द्दगनसाज

८ कलकत्ता—मूलजी जेटा एण्ड कम्पनी २३ पोलक स्ट्रीट

इस मिल के लोकल एजेंट मि० पुठपोत्तम जेटाभाई अंजारिया हैं। आपका जन्म १८७६ में अंजार में हुआ। आरम्भिक शिक्षा विंगोरला में प्राप्त करने के बाद १८९४ में आगने पंथ में मैट्रिक पास की। तथा १८९५ से आपका सेठ मूलजी जेटा फर्म के साथ सम्बन्ध हुआ। आप भाटिया मित्र मण्डल के प्रधान मंत्री थे। आप जलगाँव मिल के असिस्टेंट एजेंट पद पर भेजे गए। १८९८ से १९०४ तक आप मद्रास मिल के असिस्टेंट एजेंट पद पर काम करते रहे। वहाँ से १९०८ तक आप कटांची सिन्ध पञ्जाब कॉटन प्रेस में काम करते रहे। एवं तत्पश्चात् जलगाँव में मिल एजेंट पद पर कार्य करने लगे। इस बीच मन् १३ से १६ तक आपने कच्छमांहरवी में निवास किया। आपने जलगाँव म्युनिसिपैलेटी में १९१० से २५ तक मेम्बर पद पर और तब से आज तक प्रेसिडेण्ट पद पर काम किया। इसी प्रकार आप ताडुछालोछल बोर्ड के वाइस प्रेसिडेंट, डिस्ट्रिक्टबोर्ड के वाइसप्रेसिडेंट, मॅट्रन बोम्बारप्रेसिडेंट बैंक के हायरेक्टर का पद सुरूभित करते रहे। वर्तमान में आप सरकार की ओर से बैंक के हायरेक्टर, इण्ट ग्वानदेशा नरसिंह पत्तोमिरान तथा लेडी विलसन मेटरनिटी एम्प्लोयरमेन्ट बोर्ड के मेम्बर और कलकत्ताम बालजी वाचनराय और गुजरात बन्धु समाज के प्रेसिडेंट रहे।



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

जलगाँव के आप अन्ध प्रतिष्ठित मज्जन हैं। आपको १९१२ में सितम्बर कोरोनेशन ट्रं-  
बार मेडल मिला। आप यहाँ के सेकण्ड क्लास आनरेरी मजिस्ट्रेट बेंच के चेयरमैन हैं। आप  
१९०४ से फ्री मेनशन हैं। और लॉज के पास्ट मास्टर और चेपटर के पास्ट प्रिंसिपल जेड (Z)  
हैं। आपके ५ पुत्र हैं जिनमें बड़े श्री उदयसिंह पढ़ते हैं।

### दि भागीरथ म्युनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लिमिटेड

इस मिल की स्थापना ३० लाख की पूजा में मन् १९०१ में हुई। इसकी मैनेजिंग एजेंट  
मेसर्स भागीरथ रामचन्द्र एण्ड कम्पनी है। इस समय मिल में ७२०० स्पेडिक्स और १११  
लूम हैं। शीश्र ही ३८०० स्पेडिक्स और डाले जा रहे हैं। नया लूम सख्या भी ३०० की जा  
रही है। १९२३।२४ में यह मिल चालू हुई। इस समय मिल में ५५० आदमी काम करते  
हैं। मिल की अपनी एक जीनिंग फेक्टरी भी है।

## मिल ऑफ़िस

### मेसर्स मूलजी जेठा एण्ड कम्पनी

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय इसके सम्भाषक श्रीमान स्वर्गीय सेठ मूलजी मार  
के चित्र सहित हमारे मन्थ के प्रथम भाग के बम्बई विभाग में दिया गया है। इस फर्म ने १८७३ में  
जलगाँव में एक मिल की स्थापना की। खानदेश में यह सब से पहिली मिल थी। बम्बई के व्या-  
पारिक क्षेत्र में इस फर्म की गणना ख्याति प्राप्त व्यवसायियों में माना जाता है। बम्बई के प्रसिद्ध  
मूलजी जेठा मार्केट (न्यू पीस गुड्स बाजार कः लिमिटेड) की मैनेजिंग एजेंट भी यही फर्म है।

इसके अलावा खानदेश और बरार में इस फर्म के जनगाव, कारंजा, मुर्तजापुर, अहोला,  
वारिम आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। तथा कौटन का व्यापार होता है।

### मेसर्स रामचन्द्र हुक्मीचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्री सेठ भागीरथजी माहेश्वरी समाज के मंडोरा मज्जन हैं।  
आपका मूल-निवास मांडल ( उदयपुर स्टेट ) में है। मांडल में करीब १२५।१५० वर्ग पूर्व सेठ  
होगाजी धामनगाँव (जलगाँव) आये थे। सेठ हुक्मीचंदजी के हाथों में इस फर्म के व्यापार की  
विशेष उत्पत्ति मिली। सेठ हुक्मीचंदजी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी ने इस फर्म के

व्यापार का संभालन किया। आपने धाननगौर में एक जीनिंग फेक्टरी खोली। सन् १९६२ में आप स्वर्गवासि हुए।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ रामचन्द्रजी के पुत्र सेठ भागीरथजी हैं। आपने सन् १९१७ में दि भागीरथ स्पीनिंग एण्ड वीविंग-मिल्स कम्पनी लिमिटेड का स्थापन किया। आपकी ओर से जलगाँव में "भागीरथ स्लून" नामक एक कंपनी स्लून चल रहा है। यहाँ के टाउनहाल में आपकी माताजी के नाम से एक जीमखाना सन् १९२५ में बँधवारा गया है। स्थानीय अरब-साल में भी आपकी ओर से ५ हजार रुपये दिये गये हैं। आपके शिवनारायणजी, रामनारायणजी एवं लक्ष्मीनारायणजी नामक ३ पुत्र हैं, जिनमें शिवनारायणजी कारवार में भाग लेते हैं।

आपका ध्यारारिक परिचय इस प्रकार है।

धामनगौर (जलगाँव)—मेसर्स रामचन्द्र लक्ष्मीचंद—रेड ऑफिस है। यहाँ आपकी जीनिंग फेक्टरी है तथा माट्टकारी लेंदेन और खेती का काम होता है।

जलगाँव—मेसर्स भागीरथ रामचन्द्र—इस नाम से आपकी फर्म भागीरथ मिल की मैनेजिंग एजेंट है। इसके अविरिष्ठ गन्ने का व्यापार और लक्ष्मी-ओइल मिल के कंट्राक्टिंग का संभालन होता है। यहाँ से धामनगौर और किनगाँव तक आपकी प्राइवेट टेलीफोन सर्विस है।

किनगाँव (पूर्व खानदेरा)—मेसर्स शिवनारायण भागीरथ—इस नाम से जीनिंग फेक्टरी है और कपास का व्यापार होता है।

## गोल्ड सिल्वर मरचेंडिस

मेसर्स राजमठ लक्ष्मीचंद

इस फर्म का हेड ऑफिस जामनेर (पूर्व खानदेरा) में है। आप ओसवान स्थानकवासी जैन समाज के सज्जन हैं। इस फर्म की जलगाँव तथा खानदेरा के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठा है। इसके मालिक बाबू राजमठजी ललवानी हैं। आपका विस्तृत परिचय विन्न सहित जामनेर में दिया गया है। जलगाँव में आपकी फर्म पर प्रधानतया चाँदी-सोना तथा बैकिंग व्यापार होता है। सेठ राजमठजी ललवानी जलगाँव के सार्वजनिक कामों में भाग लेते रहते हैं। आप भागीरथ मिल के टायरेक्टर हैं।

## कॉटन मरचेण्ट्स

### मेसर्स कानजी शिवजी

इस फर्म के मालिक कच्छ यागोर्ड ( मुँदरा ) के निवासी हैं। आप बीसा औसवाल स्थानक-वासी जैन समाज के सज्जन हैं। सन् १९४३ में लालजी सेठ ने देदा से आकर मसावद (जल गॉव) में दुकान की। शिवजी सेठ के ४ पुत्र हुए। लालजी सेठ, कुँवरजी सेठ, कानजी सेठ और शिवजी सेठ। इस समय इन सब भाइयों का कार वार अलग २ होता है। लालजी सेठ एवं कानजी सेठ का व्यापार संवत् १९६४ में अलग २ हुआ। कानजी सेठ ने कपास गल्ले के व्यापार में अच्छी उन्नति की है। आपने सेंदुरनी में १९७५ में जीनिंग और प्रेसिंग १९७९ में जल गॉव में जीनिंग प्रेसिंग, १९८३ में नीम्बोरा में प्रेसिंग एवं १९८५ में मसावद में जीनिंग फेक्टरी खोली। ये सब कारखाने आपके घर हैं। आपके २ पुत्र हैं जिनके नाम रावजी कानजी एवं जादवजी मानजी हैं। ये दोनों व्यापार में भाग लेते हैं। आपका तार का पता Sunoom आपका हेड आफिस जलगाँव में है। जलगाँव के कपास के व्यापारियों में आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलगाँव—मेसर्स कानजी शिवाजी—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा कॉटन का व्यापार होता है।

सेंदुरणी— " " " " "

नीम्बोरा—कानजी शिवजी—कॉटन प्रेसिंग फेक्टरी है।

मसावद— " —कॉटनजीनिंग फेक्टरी है।

### मेसर्स जयकिशन रामविलास

इस फर्म के मालिक कुधेरा ( जोधपुर स्टेट ) के निवासी हैं। आप साकही ( माणण ) समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन ९०।७० वर्ष पूर्व सेठ रामविलासजी ने किया था। आप यहां हुंकी और सट्टे की दलाली का काम करते थे। संवत् १९५९ में सेठ जयकिशन जी ने उपरोक्त नामसे दुकानका स्थापन किया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयकिशनजी एवं सेठ हुलीचंदजी दोनों भ्राता हैं। आपके २ छोटे भ्राता राधाकिशनजी एवं लक्ष्मी नारायणजी संवत् १९७६।७७ में स्वर्गवास हो गये हैं। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भारतीय व्यापारियों का परिचय  
(तीसरा भाग)



सेठ कानूजी शिवजी (कानूजी शिवजी) जधव



सेठ आनंदजी कानूजी



सेठ रामेशजी कानूजी (कानूजी शिवजी) जधव



जलगांव—मेसर्स जयकिशन रामविलास—गन्ना और आड़त का काम होता है ।

जलगांव— " " —कपड़े का थोक व्यापार होता है ।

जलगांव— " " —जीनिंग एवं प्रेसिंग फैक्टरी है ।

धूलिया—जयकिशन रामविलास—गन्ना एवं आड़त का व्यापार होता है ।

पलास खेड़ा—( मुफलाई )—साहुकारी लेनदेन का काम काज होता है ।

इसके अलावा बोददेस, श्रीकृष्ण जीनिंग फैक्टरी और ओईल मिल में भी आपके भाग हैं ।

### मेसर्स लालजी केशवजी

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान कच्छ ( राठुरी ) में है । लालजी सेठ देश से करीब ३० वर्ष पूर्व जलगांव आये थे । आरंभ से ही आपके यहां कमीशन का काम होता आ रहा है । लालजी सेठ जलगांव पांजरा पोल के प्रेसिडेंट हैं । आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के मंदिर मार्गाय सज्जन हैं । लालजी सेठ के पुत्र भी हीरजी, शामजी एवं भेंवरजी हैं । आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

जलगांव—मेसर्स लालजी केशवजी—यहां पंजाब, मालवा, सी० पी०, दरार, मद्रास, गुजरात, ग्वालियर आदि भारत के सभी प्रांतों से कमीशन का व्यवसाय होता है ।

### हॉफ मरचेन्ट्स

#### मेसर्स गिरधारीचाल गनेशराम

इस फर्म के मालिक हींदवाना ( जोधपुर स्टेट ) निवासी अथवाज वैश्य समाज के गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं । इसकी स्थापना करीब ७५ वर्ष पूर्व सेठ गिरधारीलालजी के हाथों से हुई । आरंभ से ही इस फर्म पर कपड़े का व्यापार होता चला आ रहा है । सेठ गिरधारीलालजी के पुत्र जयनारायणजी एवं गनेशरामजी के हाथों से इस फर्म के कारबार को तरकी मिली । संवत् १९६१ में आप दोनों भाइयों का कारबार अनग २ हो गया । तब से सेठ गनेशरामजी का कुटुम्ब इन फर्म का मालिक है । सेठ जयनारायणजी के पौत्र जयनारायण गोबर्द्धन के नाम से अपना अलग व्यापार करते हैं ।

सेठ गनेशरामजी ने जलगांव में कई धार्मिक कामों में भाग लिया, आपने पुच्छर के भीरधु-



भारतीय व्यापारियों का परिचय  
( नौवरा भाग )



सेठ लक्ष्मी नारायण प्रसाद



सेठ दत्तबहादुरजी धी भीमल (जीमल दत्तबहादुर) प्रसाद



सेठ दत्तबहादुरजी (दत्तबहादुर सुभाष) प्रसाद



सेठ दत्तबहादुरजी (दत्तबहादुर सुभाष) प्रसाद









•  
•  
•  
•



### मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय

इस फर्म के मालिकों का मूल-निवास-स्थान बाँवठ ( जयपुर स्टेट ) में है । आप अमवाज वैश्य-समाज के बाँसल गौत्रीय सज्जन हैं । इस फर्म का स्थापन सेंट शिवसहायजी के हाथों से संवत् १९३६ में हुआ । आपका स्वर्णवाम संवत् १९५३ में हुआ । आरंभ से ही यह फर्म आड़त का व्यापार करती आ रही है ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक भी सेंट चुन्नीलालजी बाँसल हैं । आप बड़े समझदार एवं व्यवसाय कुशल सज्जन हैं । फर्म के व्यापार की आपने विशेष वृद्धि की है । करीब १॥ साल पूर्व आपने पाचोरे में एक ऑइल मिज़ बाड् किया है । आप एतद्वारा अमवाज समा के धूलिये वाले अधिवेशन के समझपत्र निर्वाचित हुए थे । आपके पुत्र श्रीयुन् धानूलालजी भी बड़े समझदार नवयुवक हैं तथा फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं । इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

धूलिया—मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय—यहाँ प्रधानतया आड़त एवं सराफ़े लेनदेन का व्यापार होता है ।

मालेगौब—चुन्नीलाल शिवसहाय—आड़त एवं सराफ़े लेनदेन का काम होता है ।

पाचोरा—मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय—ऑइल मिज़ है ।

### मेसर्स जीवणराम जोधराज

इस फर्म के मालिक राधाकिरानपुरा ( जयपुर स्टेट ) निवासी अमवाज वैश्य-समाज के मंगल गौत्रीय सज्जन हैं । सेंट जोधराजजी ने करीब ७५।८० वर्ष पूर्व इस फर्म का स्थापन किया था । आरंभ में आपके यहाँ मक्के का कारवार होता था । आप संवत् १९५७ में स्वर्ण-वासी हुए ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेंट जोधराजजी के पुत्र सेंट जीवणरामजी हैं । आप बड़े उदार प्रकृति के दानी सज्जन हैं । आप ने धूलिये की जोधराज रामलाल सिटी हाई स्कूल की १५ हजार रुपये दिया । इसी प्रकार स्वदारक विद्यार्थीगृह, प्राथमिक आयुर्वेदिक औषधालय, धूलिया हिन्दू वया मुसलमान धर्मशाला, श्री इग्लिस हाई स्कूल, स्काउटिंग संस्था, लेडी डफरिन हासिटल आदि संस्थाओं को हजारों रुपये नकद तथा भूमि प्रदान की । आप यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं । आप के पुत्र भीरांकरलालजी पढ़ते हैं । आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

इसके अलावा मालेगांव, शिरपुर, दोंडापचा, धरनगांव, चोपड़ा तथा शायदा में गुलाबचन्द हीरालाल के नाम से कपास की खरीदी का काम होता है। शायदा में इन्दौर वाले बहमदास रामेश्वर की प्रेसिंग फेक्टरी में आपका पार्ट है।

## ऑइल मिल ऑनर्स

### मेसर्स पापालाल शिवचन्द

इस नाम की ऑइल मिल का स्थापन संवत् १९७९ में हुआ। यह फर्म करीब ३० साल पहिले सेठ पापामलजी के हाथों से खोली गई। इसके वर्तमान मालिक सेठ सोहनलालजी एवं पूसमलजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स पापालाल शिवचन्द—सराफी व्यवहार होता है तथा ऑइल मिल है।

### मेसर्स विजयराम देहराज

इस फर्म के मालिक डिगपुर ( जयपुर स्टेट ) के निवासी अमवाल वैश्य समाज के मिस्रज गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म को सेठ विजयरामजी और देहराजजी दोनों भाइयों ने मिलकर करीब ५० साल पूर्व स्थापित किया था। आप दोनों सज्जन क्रमशः १९५९ तथा १९७६ में स्वर्गवासी हुए। सेठ विजयरामजी के पुत्र जीवनरामजी एवं पन्नालाल जी हुए, धारू पन्नालालजी ने सन् १९१२ में धूलिये में एक ऑइल मिल का स्थापन किया, उस समय खानदेश में कोई ऑइल मिल नहीं थी। आरंभ में आप सोलापुर की ओर से सींगदाणा मँगाने थे। धीरे-२ इस प्रांत में मूंगफली की पैदावार बहुत बढ़ी एवं इस समय आपकी मिल तेल और रज्जों का बहुत पड़ी विजारत करती है।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जीवनरामजी एवं सेठ पन्नालालजी के पुत्र सेठ पूस-  
चंदजी मिस्रज हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स विजयराम देहराज—ऑइल मिल है, तथा सींगदाणा एवं रज्जों का व्यापार होता है। इस मिल का माल १० पी०, ५० पी०, बरार तथा गुजरात में जाता है।  
धरनगांव (पूर्व खानदेश)—मेसर्स विजयराम देहराज—इम नाम से २॥ साल पूर्व आपने एक ऑइल मिल स्थापित की है।

भारतीय व्यापारियों का परिवर्धः-  
( तीसरा भाग )



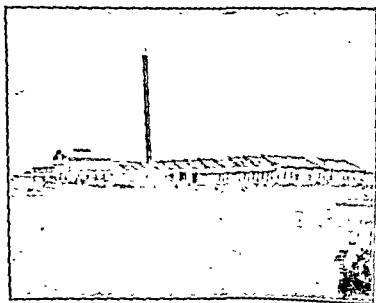
सेठ ज. रामजी ( विजयराम देडराज ) पृथिया



सेठ पञ्चालजी  
( विजयराम देडराज ) पृथिया



सेठ पृथंजी ( विजयराम देडराज ) पृथिया



दी म्यू प्रकार मिल् पृथिया ( पश्चिम बंगाल )





## कम्पिशन एजेंट्स

### मेसर्स गोविन्दराम मोहराम

इस फर्म के मालिक टेहंगधनाय (मेवाड़) निवासी भोसवाल स्थानकवासी जैन समाज के श्री श्री माल सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ मोहरामजी के हाथों से इस फर्म का स्थापन हुआ था। तथा सेठ गोविन्दरामजी ने इसके व्यापार को बढ़ाया।

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ सुरजमलजी एवं मोतीलालजी हैं। सेठ सुरजमलजी धूलिये के आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। यह फर्म धूलिये के कमीशन के व्यापारियों में बहुत पुरानी तथा प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्म की आदत में यंजाव, मश्रम, दम्बई, यंगाल, शी० पी०, सू० पी० आदि गारे भारत में व्यापार होता है।

### मेसर्स जयकिशन रामविनाय

इस फर्म का हेड ऑफिस जलगाँव (पूर्व खानदेश) में है। यत्र: इसके व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित एक स्थान पर दिया गया है। खानदेश में गन्ना एवं कपास का व्यापार करने के लिये इस फर्म की कई शांखें हैं।

धूलिया शांख के इस फर्म पर प्रधानतया गन्ने का व्यापार एवं आदत का काम होता है।

### मेसर्स भोगाराम तुहाराम

इस फर्म के मालिक अण्णवान वैश्य समाज के पोहार सज्जन हैं। यह फर्म ४५ वर्ष पूर्व सेठ भोगारामजी के हाथों में स्थापित की गई। इसके वर्तमान मालिक सेठ रामेश्वरदासजी पोहार हैं। आर बड़े सन्तुष्टकारी एवं रोशनद सज्जन हैं। कामिग-सम्बन्धी कामों में बहुत दिखवासी होते हैं। आरबा व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धूलिया—मेसर्स भोगाराम तुहाराम—यहाँ प्रधानतया गन्ने का व्यापार होता है।

रोहावठा (पश्चिम खानदेश) भोगाराम तुहाराम—यहाँ खैर बिराने का व्यापार होता है।

### मेसर्स गंगाधर गाराकिशन

इस फर्म का स्थापन सन् १८३० में गंगाधरजी और गाराकिशनजी दोनों भाइयों के हाथों में हुआ था। तथा इनके व्यवसाय को इन्हीं दोनों भाइयों ने बढ़ाया, आरबे यहाँ अपना सब

जवाहरात का काम होता था। आपके पत्रात क्रमशः सेठ शिवबक्षारामजी एवं बालकिशानजी ने व्यवसाय को संचालन किया। सेठ शिवबक्षारामजी ने एक धर्मशाला धूलिया में बनवाई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ व्यंकटलाल बालकिशान हैं। आपके यहाँ प्रधानतया चाँदी-सोना तथा जवाहरात का व्यापार होता है।

### कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि अकबर कॉटन प्रेस कम्पनी  
दि ईस्टर्न कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
दि इण्डिया कॉटन लिमिटेड प्रेसिंग फेक्टरी  
सेठ इमाहीम किदाबली जीनिंग फेक्टरी  
सेठ गुलाबचंद कालूराम जीनिंग फेक्टरी  
सेठ गोविंदजी दामजी प्रेसिंग फेक्टरी  
सेठ गुलाबचन्द हनुमानदास जीनिंग फेक्टरी  
दि ग्रीन एण्ड कॉटन कम्पनी जीनिंग फेक्टरी  
सेठ चन्द्रमूज शौजपाल जीनिंग फेक्टरी  
सेठ जीवनराम जोधराज जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
सेठ जमशेदजी हस्तमजी कोलावावाली जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

दि टोयो मेनका केरा लि० जीनिंग फेक्टरी  
दि पटेल कॉटन कम्पनी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
दि पेनडर कॉटन जीनिंग फेक्टरी  
दि बालकट प्रदर्भ प्रेसिंग फेक्टरी  
सेठ भवानजी कानजी जीनिंग फेक्टरी  
सेठ बख्तराम नानूराम दिल्ली जीनिंग फेक्टरी  
दि मनमाड मेन्सूरेकरिंग कं० लिमिटेड जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
सेठ महम्मदअली ईसाभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
सेठ भोर्नपान कारीराम जीनिंग फेक्टरी  
दि न्यू दिम आर वेम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

दि न्यू जमशेदजी जीनिंग फेक्टरी  
दि न्यू मोकस्मिल कम्पनी लिमिटेड जीनिंग फेक्टरी  
दि न्यू महालू जीनिंग फेक्टरी  
सेठ हस्तमजी धनजी साह जीनिंग फेक्टरी  
सेठ रामनारायण प्रेममुख जीनिंग फेक्टरी  
सेठ रामनारायण बलदेवदास जीनिंग फेक्टरी  
सेठ रामगोपाल जगन्नाथ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
सेठ सूरजमल शंकरलाल जीनिंग फेक्टरी  
साठे भास्कर वामुदेव जीनिंग फेक्टरी

### ऑइल मिल्स

सेठ आंकारलाल कनाराम ऑइल मिल  
" गुलाबचन्द कालूराम ऑइल मिल  
" जीवनराम हुकमीचन्द ऑइल मिल  
" पापालाल शिवचन्द ऑइल मिल  
" पदमसी प्रेमजी ऑइल मिल  
" भवानजी कानजी ऑइल मिल  
" विजयराम देकराज ऑइल मिल  
" सूरजमल शंकरलाल ऑइल मिल  
" शानीराम वृत्तलाल ऑइल मिल  
" बैकर्स

दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड  
दि बाम्बे प्रांसिपियल कोम्पारटिव बैंक लि०  
दि धूलिया आरबन कोम्पारटिव बैंक लिमिटेड

कम्पनियों की एजेंसियां

नाम कम्पनी	नाम एजेंट
आरान कॉटन कम्पनी—	रामलाल हीरालाल
गोसी कापुसी केरा—	रामदास रोमजी
मुमान कॉटन कम्पनी—	रामदेरा ट्रेडिंग कम्पनी
रायची मर्से—	धनजी अजुन मोरम
बालकट मर्से—	" " "
पटेल मर्से—	" " "
फारवस कम्पनी—	रामगोपाल जगन्नाथ

कॉटन मरचेन्ट्स

- मेड गोविन्दराम मोडूराम
- " सुभीलाल शिवमहाय
- " धनलाल साहबराम
- " जानकीराम मधुराधाम
- " भवानजी धानजी
- दि न्यू प्रथाप मित्र लिमिटेड
- सेठ रामगोपाल जगन्नाथ
- " सुरजमल पन्नालाल
- " हीरालाल रामलाल

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेंट

- सेठ कन्होठम खीरपत्र
- " गोविंदराम मोडूराम
- " अतुमुज पांडुरंग
- " जयकिशन रामविनाम
- " पन्नालाल नारायणधाम
- " मोलाराम जुहाराम
- " हेमराज धृषीराज
- " हरनाथपथ प्रेममुन्य

किराने के कम्पनी

- कनीराम खीरगड
- धमालाल पांडुरंग
- राजद गनी हसन
- रघुनाथ शिवकमल
- लालचन्द खीरमल
- हाजी अहमद ईम

गन्नाय मर्चेन्ट्स

- अजुन कन्हू कनारंग
- मुवाडरान त्रिदुर्ग
- एच. त्रिदुर्ग
- हरिदुडा अजुन कन्हू

कापड़े के व्यापारी

- मालकचन्द मोदीराम पाट मल
- बागदाबरेल मोडूर
- लालापर वेदराम
- खुलनदास बनारस

उकड़ी के व्यापारी

- भवानजी कनरंग
- संवत रामरंग
- चौरी सोने के व्यापारी
- काशीराम मूरख
- कन्होठम कनरंग
- सेवराज मूरख
- मंगरे के कनरंग
- मूरखल पन्नालाल बनारस
- लक्ष्मीचन्द हरिदुडा मूल वृषिक

१०१



मील नहीं थी। इस मील ने अपने जीवनकाल ने उत्तरोत्तर अधिकाधिक वृद्धि की। सन् १९२२ में इस मील के मुनाफे में एक गाँव मीन और खोली गई। वर्तमान में मील में ३८ हजार स्पेडिन्स और ९३६ टून्स काम करते हैं। मील के एजेंट मेसर्स माणकचन्द रवीराम एंड सन्स हैं। मीन का तयार हुआ कपड़ा और मूत बँपने को शागाएँ एवं एजिनियाँ नीचे लिखे स्थानों पर हैं।

१-ग्रन्थई—दि प्रताप मिस्स ऑफिस, १४ इम्मान स्ट्रीट पर्टे। T A Pratap—यहाँ मील का रजिस्टर ऑफिस है।

२-ग्रन्थई—दि प्रताप मील क्लाय शाप, मूलजी जेठा मारकोट गोविंदगली नं० ६३२-मिल के बपड़े की दुकान है

३-अहमदनगर—प्रताप मील हाय शाप—एजण्ट पन्नाजी दौलतराम भण्डारी नशा कानड़ धाजार।

४-जलगाँव—प्रताप मील शाप—एजण्ट व्यंकटलाल चौपमल।

५-जालना (निजाम)—एजण्ट—सूरजमल गुलाबचन्द।

६-खामगाँव ( बरार ) प्रताप मील एजेन्सी—एजेण्ट रंगूलाल राधाकिरान।

७-नारिक—प्रताप मील एजेन्सी—एजेण्ट मणोलाल दामोदरदास सुगंधी, रविवार पैठ।

८-कानूर—प्रताप मिस्स शाप—एजेण्ट बसंतलाल केराकाल पटवा जनरलगंज।

९-बलकृष्ण—प्रताप मिस्स शाप—एजेण्ट फतहसिंह भैरवलाल पटेल ४१ अर्मेनियन स्ट्रीट।

### मेसर्स माणकचंद श्रीराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान भोमाघोपुर ( जयपुर स्टेट ) में है। आप अमवाल वैश्य समाज के एरन गोत्रीय सज्जन हैं। देश से सेठ जूंगरसीदासजी करीब १००।१२५ वर्ष पूर्व खोपड़ा ( पूर्व खानदेश ) आये थे। इनके पुत्र रवीरामजी के समय में यहाँ मामूली लेन-देन का व्यवहार होता था। रवीरामजी के पुत्र सेठ माणकचंदजी ने खोपड़े में एक जीनिंग फेक्टरी खोली। आप संवन् १९५० में स्वर्गवासी हुए।

सेठ माणकचंदजी के कोई पुत्र नहीं था, अतएव आप कालाहेरा ( जयपुर स्टेट ) से संवन् १९४४ में सेठ मोतीलालजी को जो इस समय प्रताप सेठ के नाम से खानदेश में विख्यात हैं, गोद लाये। श्री प्रताप सेठ ने इस फर्म के सम्मान और प्रताप को बहुत बढ़ाया। आप खानदेश के नामी गरामी व्यापारी माने जाते हैं। आपने सन् १९०६ में प्रताप कॉटन मिल का स्थापन किया। इस मिल ने अपने जीवन काल में इतनी उन्नति कर दिखाई की सन् १९२२ में आपको एक गाँव मुनाफ़ मिल के रूप में और खोलना पड़ी। अमलनेर मिल में

## जामनेर

पूर्व स्थानदेरा के जामनेर ताण्डके का यह प्रधान स्थान है। पाचोरे से रेलवे प्रांच यहाँ तक आती है। इस स्थान पर ६ जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरियाँ हैं। तथा १० हजार गाँठ कचाम की पैदावार हो जाती है। ३० हजार बोरी सींगदाणा की यहाँ वार्षिक आमद है। यही २ व्यवसाय यहाँ प्रधान रूप में होते हैं। यहाँ का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

### मेमर्ग मोनीयाल लक्ष्मणदास

इस कर्म का कोटुम्बिक परिचय मेमर्ग राजमठ लक्ष्मीचन्द्र कर्म के परिचय में दिया गया है। सेठ रामचन्द्रजी के ३ पुत्र हुए। सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी, सेठ हरकचन्द्रजी एवं किरानवालजी। इनमें सेठ हरकचन्द्रजी के पुत्र सेठ लक्ष्मणदासजी की यह कर्म है। आपके यहाँ मोनीयालजी बन्धुपुर (बगर) से दण्ड आये हैं। सेठ लक्ष्मणदासजी १२ साल पहिले स्वर्गीय हो गये हैं। आपकी कर्म पर साठुकारी लेन देन-एवं कृषि का काम होता है।

### मेमर्ग राजमठ लक्ष्मीचन्द्र

इस प्रतिष्ठित कर्म के मानिकों का मूल निवासस्थान बड़ु (जोधपुर) है। जून १९५५ एवं पूर्व बनती सेठ जामनेर आये थे। आप स्थानिक वामी तीन समाज के आंगण्य मन्त्री हैं। बनती सेठ के समय इस कर्म पर किराने का व्यापार होता था इसके बाद क्रमशः रामचन्द्रजी एवं लक्ष्मीचन्द्रजी के समय में यहाँ गले और मगरी लेन-देन का व्यापार हुंता था। सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी के हथों में इस कर्म के व्यापार का विवेक कृषि मिली। आप मई १९१२ में स्वर्गीय हुए। आपके यहाँ श्रीमन्त्रमन्त्री, सूरी (अमनेर) में मई १९१० में दण्ड लेने लगे। आपके हथों से भी कर्म के व्यवसाय एवं स्वमान में विवेक वृद्धि हुई। आपने मई १९१५ में स्थानदेरा एन्ड देवन भोगपुरी एन्ड देवन का स्थान दिया। वे ५ वर्षों तक यहाँ रहकर, ३० मा० कोम्बका ५ मन्त्रमन्त्र, ३० मा० मन्त्रमन्त्र कृषिाँदर के स्थानों में व्यवसाय करके बड़े उद्योग हैं। व्यवसाय श्रीमन्त्रमन्त्र ने आपकी सेवा के कारण से अपना भोगपुर

भारतीय व्यापारियों का परिचय १०  
( तीसरा भाग )



सेठ रामलालजी लखवानी ( लक्ष्मीचंद रामलाल ) जामनेर



श्री मतापसेठ भण्डारे



सेठ सागरमलजी शीरेड ( सागरमल नयनल ) उज्जैन





बन्दूपाटन कर सम्मानित किया है। आपकी मातेधरी के नाम से जामनेर से श्रीमती जैन सोस-  
वाल भागीरथी बाई लायमेरी चल रही है। इसके अलावा राजमल लम्बरोचंद नामक एक  
धार्मिक औपधालय स्थापित है। इसके अलावा जामनेर एधिकलचर फर्म, फेटल मिडिंग  
फर्म, एवं एजूकेरान सोसाइटी की स्थापना आपके द्वारा की गई है। खानदेश एजूकेरान  
सोसाइटी जामनेर के आप वाइसप्रेसिडेंट हैं। जनता के हृदयों में आपके प्रति बहुत प्रेम है।  
आप सन् १९२६ में सर्व सम्पत्ति से १४ हजार वोटों से बम्बई कौंसिल के मन्बर निर्वाचित  
हुए। आप शुद्ध गृहधारी एवं कामेस की आशाओं में विश्वास रखने वाले सज्जन हैं। अभीर  
आपने कामेस निर्णय के अनुसार बम्बई कौंसिल से इन्वीटा दे दिया है। आपकी फर्म खानदेश  
की मातबर फर्मों में मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जामनेर—मेसर्स राजमल लक्ष्मीचन्द—यहां मैडिंग एवं छेवी और साहुकारी लेन-देन का काम  
होता है।

जहगांव—मेसर्स राजमल लक्ष्मीचन्द—मैडिंग एवं खांरी लेने का व्यापार होता है।

## फॉर्टन गेरबेट्स

मेसर्स रूपचंद शिवजीराम

इस फर्म के मालिक मांडल ( बद्रपुर स्टेट ) निवासी माहेधरी जानि के सज्जन हैं। इसके  
व्यापार को सेठ रूपचंदजी ने विशेष तरकी दी। आप १९७८ में स्वगंवासी हुए। वर्तमान में  
इस फर्म के मालिक सेठ रूपचंदजी के छोटे भावा जगन्नाथजी हैं। आपके यहाँ करारा का  
व्यापार एवं लेन-देन का काम होता है।

## मेसर्स हीरानाथ औंधारदास

इस फर्म के मालिक बरेला ( बद्रपुर ) निवासी माहेधरी धैरव-नामाज के सज्जन हैं।  
वर्ष ६ वीं पूर्व सेठ लक्ष्मणदास आनसिंह ने इस फर्म का स्थापन किया। इसके बाद  
को विशेष तरकी सेठ औंधारदासजी ने दी। इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ हीरानाथजी  
हैं। आपने १९७६ में जीनिग एवं १९८० में प्रैक्टिस केन्टरी बनाई की है। भारत का व्या-  
पारिक परिचय इस प्रकार है।

जामनेर—मेसर्स हीरानाथ औंधारदास—यहाँ जीनिग प्रैक्टिस, सेमी कथा कलाय का व्यापार  
होता है।

## कालीस गंधक

जी. आई. पी. रेलवे की मैन लाइन पर जलगाँव और मनमाड के मध्य यह स्थान पूर्व खानदेश का एक तालुका है। इस स्थान पर १० कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टोरियों, २ कॉल्ट मिल एवं १ कॉटन मिल है। १३।१४ हजार गॉठ रुई की प्रतिवर्ष यहाँ बँधती है। कपास के व्यापार के अलावा ७०।७५ हजार पल्ला सींगदाणा की (१२० सेर का पल्ला) यहाँ सालाना आमद हो जाती है। यहाँ से तेल सी० पी०, बरार, नाशिक की ओर एवं खली धम्बई के लिये रवाना की जाती है। विनोले का तौल २८ मन की खण्डी से तथा तेल का तौल बंगाली मन से व्यवहार में लाया जाता है। यहाँ के व्यापारियों का संश्लिप्त परिचय इस प्रकार है।

दि न्यू जीनिंग प्रेसिंग एण्ड मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड—इस कम्पनी की स्थापना सन् १९०७ में १ लाख ३२ हजार की पूंजी से सूक्ष्म रूप में हुई। थोड़े समय तक यह कम्पनी जीनिंग प्रेसिंग का काम करती रही। परन्तु सन् १९२२ में कम्पनी की पूंजी २० लाख कर दी गई। वर्तमान में यह कम्पनी ३ प्रधान कार्यों का संचालन करती है।

१ श्री लक्ष्मीनारायण कॉटन मिल्स—सूत और कपड़ा बनाना। सन् १९२५ की २७ मई को यह मिल चालू हुई। इसमें २० लाख रुपये साल का सूत और कपड़ा तयार होता है। मिल में ६०० मनुष्य प्रतिदिन काम करते हैं। १०० एकर जमीन में मिल का घेरा है। इसमें १४ हजार तकिए और ४०० लुम्स हैं। इसके मैनेजिंग एजेंट मेसर्स नारायण व्यंकट है। तथा मिल में तयार होने वाले कपड़े की सोलसेलिंग एजेंट मेसर्स हुकुमचन्द नारायण एण्ड कम्पनी है।

- २ श्री लक्ष्मीनारायण बकरीशाप—कारण्डरी एण्ड फिनिशिंग तथा मेकेनिक एण्ड मोर्सिंग शाप  
३ श्री लक्ष्मीनारायण जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी—जॉनप्रेस करना

### मेसर्स नारायण व्यंकट

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान मुम्बईपुर, जिला मांभी (बुंदेलखंड) में है। आप गहोई वैश्य जाति के सज्जन हैं। करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ मूलचन्दजी ने मोहाड़ी (पूरिया) नामक गांव में आकर गल्ला एवं लेन-देन का काम-काज शुरू किया। आपके भंजू सेठ और



भारतीय व्यापारियों का परिचय  
( तीसरा भाग )



सेट नारायण शंकर चालीमर्गो



सेट गुलाबचंदजी गंगवाल (रामनाथ हीराबाल) फुलिया



सेट गानेशरामजी भरनिवा (गानेशराम रामचन्द्र) फुलिया



सेट शंकरलाल कारदिकार (देवराज कारदिकार) फुलिया

विद्यारी सेठ नामक २ भाता और थे। मूलचन्द सेठ संवत् १९३९ में स्वर्गवासी हुए। आपके यहाँ गुनाधचन्दजी जो इस समय नारायण सेठ के नाम से बोले जाते हैं, संवत् १९४५ में मोहाड़ी से इत्तक लाये गये। आपके इत्तक आने के बाद संवत् १९५३ में आग लग जाने से आपकी सारी स्टेट नष्ट हो गई थी अतः व्यवसाय द्वारा आपने सम्पत्ति अपने हाथों से उपाजित की और प्रतिष्ठा को मुट्ठ किया। आपने संवत् १९६३ में १३२८०० की पूँजी से एक प्रेस कम्पनी स्थापित की एवं संवत् १९७९ में श्रीलक्ष्मीनारायण मिल को जन्म दिया। इस मिल में वर्तमान में २१ हजार स्टील्स एवं ४०० लुम्स काम करते हैं। मिल चालू करने के २ साल पूर्व आपने मशीनरी बर्क शाप खोला।

व्यवसायिक उन्नति के अलावा सेठ नारायण व्यंकट ने श्रीलक्ष्मीनारायण का मंदिर बनवाया। आपने स्थानीय आनंदी बाई व्यंकट हाई स्कूल को स्थापित कर उसमें २१ हजार रुपये दिये हैं। इसी प्रकार यहाँ आपकी एक लायब्ररी स्थापित है। सेठ नारायण व्यंकट यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं, आप कई वर्षों तक स्थानीय म्युनिसिपैलिटी एवं लोकलबोर्ड के प्रेसिडेंट रहे हैं। आपके पुत्र श्रीहनुमचन्द पढ़ते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बालीस गाँव—मेसर्स नारायण व्यंकट—श्री लक्ष्मीनारायण मिल एवं दूसरे कारखानों की एजेंसी तथा सराफी लेन-देन और कृषि का काम होता है।

बालीस गाँव—मेसर्स हनुमचन्द नारायण—अपने मिल के माल बेचने की एजेंसी हैं।

### मेसर्स गोवर्द्धनदास जयदेव

इस फर्म के मालिकों का खास निवासस्थान लोमज ( जोधपुर स्टेट ) में है। आप अम-वाल बैरय समाज के गौरव गौरीय सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन ४० साल पहिले सेठ गोवर्द्धनदासजी और जयदेवजी दोनों भाइयों ने किया। सेठ गोवर्द्धनदासजी ने इसके व्यापार को सँभाली थी। आप ८ साल पूर्व स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयदेवजी एवं सेठ गोवर्द्धनदासजी के पुत्र सेठ मोतीलालजी हैं। सेठ जयदेवजी ने ७ साल पूर्व यहाँ एक ऑइल मील तथा एक साल पूर्व जोनिंग फेक्टरी खोली है। आपके पुत्र किरानतलजी भी व्यापार में सहयोग लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बालीस गाँव—मेसर्स गोवर्द्धनदास जयदेव—इस नाम से ऑइल मील तथा जोनिंग फेक्टरी है। तथा तेल गुँगफलों और खजों का व्यापार होता है।

बालीस गाँव—मेसर्स गोवर्द्धनदास जयदेव—इस नाम से सराफी लेन-देन तथा चाँदी सोने का व्यापार होता है।

**जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरीज़**

अलादीन सोमजी जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी  
 इसुफ अली मुहम्मद धगरुद्दीन जीनिंग फैक्टरी  
 गोवर्द्धनदास जयदेव जीनिंग फैक्टरी  
 तेजपाल गोविंदजी जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी  
 मनमाड मेन्युफैक्चरिंग जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी  
 लक्ष्मी नारायण कॉटन मिल जीनिंग प्रेसिंग  
 फैक्टरी

**कपड़े के व्यापारी**

मूलचंद भोपालचंद  
 रामकिशन पन्नालाल  
 सतोपचंद छोटोराम  
 हुकुमचंद नारायण एण्ड कम्पनी

**अंनान किराने के व्यापारी**

गनेशराम शिवबल्लभ  
 गोवर्द्धनदास मांगीलाल  
 रूपचंद रघुनाथ

**चाँदी सोने के व्यापारी**

गोवर्द्धनदास जयदेव  
 जसरूप सुरताजी

**ऑइल मिल्स**

गोवर्द्धनदास जयदेव ऑइल मिल  
 महम्मद हुसेन ऑइल मिल

**जनरल मरचेंट**

इसुफ अली मुल्ला बदरुद्दीन

**कोण्डा**

पूर्व खानदेश के उत्तरी किनारे पर होकर स्टेट का पहाड़ी नेमाड़ी प्रांत इस शहर से ५ मील उच्च से आरंभ होता है। यहां पास तथा इमारती लकड़ी की आमद अधिक है। यहां करीब १० कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियां एवं ३४ ऑइल मिल हैं। कपास के अलावा जुवार, बाजरी, गेहूं तथा मूंगफली को पैदावार होती है।

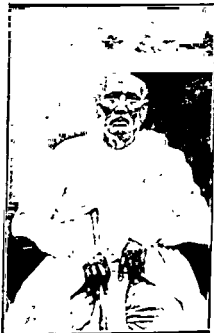
यह शहर धनवानों का शहर माना जाता है। खेती का कारबार करनेवाले बड़े बड़े साहूकार लोगों का यहां निवास है। यहां के व्यापारियों का संश्लेष परिषद इस प्रकार है।

**मंसम गुलाबचंद हीरायल**

इस फर्म का हेड ऑफिस मूंबिया में है। अतः इसके व्यापार का विस्तार परि  
 में बिना उचित ध्यान गया है। आपड़े में यह फर्म नई की खरीदी का व्यापार करण







सेट मधुसा मोनीराम चौधरी स्वानदेश



### मेसर्स गिरधर मोतीराम

इस फर्म के मालिक नागल (अलवर) निवासी अमरनाथ वैश्य समाज के गर्ग गोपीय्य सम्जन हैं। सेठ मोतीरामजी के हाथों से इस फर्म के व्यापार को विशेष उन्नति मिली। आपके पार पुत्र हुए सेठ सुंदरलालजी, पीताम्बरदासजी, गिरधरलालजी एवं जानकी रामजी। संवत् १९४१ में आप लोग अलग २ हो गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ गिरधरजी एवं इनके पुत्र मंदलालजी हैं। आपके यहां वृषि का बहुत बड़ा काम-बाज होता है। इसके अलावा सरासरी लेन-देन का व्यापार होता है।

### मेसर्स जानकीराम मोतीराम

यह फर्म गिरधर सेठ के छोटे भाग सेठ जानकीरामजी की है। आपके यहाँ भी सेवी एवं साठुवासी लेन-देन का व्यापार होता है। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जानकीरामजी के पुत्र धीरु परिवारणजी गये हैं।

### मेसर्स नरधूमा मोतीराम

इस फर्म के मालिक आदि निवासी अहमदाबाद (गुजरात) के हैं। वरीब ४१५ पौनों पूर्ण यह बुद्धि यहाँ आया। नरधूमा सेठ ने इसके व्यापार को विशेष रूप से बढ़ाया। आपने योर्क में अच्छी ख्याति प्राप्त की। संवत् १९५६ में आपने यहाँ एक जॉनिंग फेक्टरी खोली। आपका वर्तमान संवत् १९७३ की भाँडा बंदी ७ की हुआ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक नरधूमा सेठ के पुत्र नवीनदास सेठ एवं सगनराज सेठ हैं। सेठ नवीनदासजी के पुत्र सगनराज सेठ इन्डियनिरिजिटी के ब्रांड प्रेसिडेंट हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बोवडा—मेसर्स नरधूमा मोतीराम—यहाँ सेवी तथा सरासरी लेन-देन का काम होता है। हमी काम की यहाँ एक जॉनिंग फेक्टरी है।

### मेसर्स मानकचंद रफीराम

इस फर्म का सिद्ध व्यापारिक परिचय अहमदाबाद में दिया गया है। इस फर्म का व्यापार सेठ इंदरमोदासजी ने वरीब १८८१-१८९५ तक चलाया था। आपके प्यारू अहमदाबाद सेठ इंदरमोदासी एवं मानकचंदजी ने व्यापार सम्भाला। सेठ मानकचंदजी के बच्चे इनके एक

ऑइल मिल्स

गंगाधर बन्नीदास  
दत्तात्रय घामन  
नरोत्तम कारीदास  
शंकर घोंड़

ब्राथ मरचेट्स

कन्हैयालाल गोवर्द्धनदास  
गोवर्द्धनदास भिष्मारीदास  
छतरमल बहादुरमल  
देवचन्द हरीपाटील  
कुलचन्द अगरचन्द

मतीदान फूलचन्द

गल्ला और किराना के व्यापारी  
गोपालसा निमडसा ( गल्ला )  
नय्यूलाल गोयूलाल ( किराना )  
नगोिनदास नरसिंहदास ( किराना )

कॉटन मरचेट्स

गुलाबचन्द हीरालाल  
डोंगरसी देवराज  
भूखनदास सावरलाल  
मूलजी केरावजी

पाचोरा

जी. आई. पी. रेलवे की मेन-लाइन पर मुसाबल और मतमाड के मध्य में यह स्थान है। यहाँ से जामनेर के लिये एक गांच जाती है। इस स्थान पर करीब ७ जीनिंग और ५ प्रेमिंग फेक्ट्रियों तथा २।२ आइल मिल हैं। सींगदाणा तथा कपास का व्यापार इस स्थान पर मुख्य रूप से होता है। यहाँ के मेसर्स चावड़ा प्रर्स ने मुंगफकी के बढ़ते हुए व्यापार से लाभ उठाने के लिये इनको फोड़ने की नई मशीन ईजाद कर अच्छी ख्याति एवं सम्पत्ति प्राप्त की है। यह स्थान पूर्व खानदेशा प्रांत का एक ताडुका है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

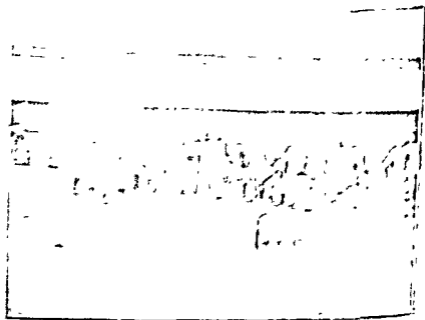
मेसर्स कपूरचंद बच्छराम

इस फर्म के वर्तमान मासिक सेठ कपूरचन्दजी भोसवाज स्थानचवासी जैन-समाज के मजदूर हैं। आपका मूल निवास-स्थान भगवानपुरा (उदयपुर स्टेट) में है। इस फर्म का स्थापन करने ६० साल पूर्व सेठ बच्छरामजी ने श्रीदुर्गा ( पाचोरा ) में किया था। पहिले भाग सावरण जैनदेन का काम काज करने थे। व्यवसाय को तरकी मी आपके ही हाथों से प्राप्त हुई। आपने १८ हजार की लागत से पाचोरे में एक जैन पाठशाला का स्थापन किया। करीब ३ मजदूर पहिले आपने बच्छराम रूपचन्द जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी की स्थापना की। आपका स्थापन ७।८ साल पूर्व हुआ।





PLATE I



सेठ बच्छराजजी के पुत्र श्री कपूरचन्दजी जैन फर्म के वर्तमान संचालक हैं। आपके से भी यहाँ और बरतौड़ी में जीन प्रेस स्थापित किये गये हैं। आप पाचोरे में अच्छे प्रति व्यक्ति समझे जाते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पाचोरा—मेसर्स कपूरचन्द बच्छराज—यहाँ कॉटन कमीशन का व्यापार होता है। तथा बच्छराज रूपचन्द एवं पूरनमल सुगनमल के नाम से जीनि प्रेसिंग फैक्टरियों हैं।

बरतौड़ी ( पाचोरा )—मेसर्स कपूरचन्द बच्छराज—इस नाम से आपकी जीन फेक्टरी है।

मेसर्स चुन्नीलाल शिवसहाय इस फर्म का हेड आफिस धुलिये में है। अतः इसके व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों के विरों सहित उक्त स्थान पर दिया गया है। धुलिये में यह फर्म बम्बई, कानपुर, अहमदाबाद, इन्दौर आदिकों मिलों के लिये कॉटन एरीरी एवं आइस का काम करती है। एरीरी १॥ साल पूर्व इस फर्म ने यहां एक ऑइल मिल खाल की है तथा सकलता के साथ त समय मिलका संचालन कर रही है। इस मिल का माल सी० पी०, कलकत्ता आदि नों में जाता है।

### मेसर्स चावड़ा ब्रदर्स

इस फर्म का स्थापन सेठ कल्याण सिंह गांडाभाई चावड़ा वर्क कलामाई के हाथों से सन् १९२१ में हुआ। आप पच्छोगांव (वेस्टर्न एजेंसी-काठियावाड़) निवासी क्षत्रिय समाज के सज्जन हैं। श्री कलामाई अपने बड़े भावा श्रीरामसिंहजी चावड़ा के साथ सन् १९०२ में एगन देरा में एवं सन् १९११ में पाचोरे में आये। इंजनियरिंग की ओर आपकी रुचि भी आपके बड़े भाई के कारण ही हुई। सन् १९१८ में भीयत कलामाई बम्बई के नामी व्यक्ति सर पुरुषोत्तमदास टाडुरदास के ० टी० सी० आर्ड० की ओर से इंजनियरिंग का काम सौलाने के लिये आफ्रिका भेजे गये। वहां से शिक्षा एवं अतुल्य प्राप्त कर आपने १९२१ में मुंगलती फेड़ने की नई मशीन ईजाद की। तथा पाचोरे में अपना निजका वर्कशाप आरंभ कर मशीनें बनाना आरंभ किया। ज्यों ज्यों खानदेश में ऑइल मिल्स बढ़ने लगे त्यों त्यों आपकी मशीनें विशेष विक्री होने लगीं। कभी तक आप खंराजन ५०० मशीनें सेल कर चुके हैं। आपको अपनी मशीन के जज्जुती, कमी वावर एवं ब्यादा ऑइलिंग के लिये दि ऑल इण्डिया इंडस्ट्री एजेंसी, सूरत, मिजलघर एण्ड फेटल शो जलाजपुर ( नवसारी ) एवं नवानगर (जाम-स्टेट) से सार्टिफिकेट आपमेरिट एवं फर्टे ड्रास मेडल्स मिले हैं। पंजिन एवं बायलर की इट फ्ट डुरस

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

करने के लिये आपका एक स्टॉक हमेशा सफर करता रहता है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पाचौरा - मेसर्स - चावड़ा ब्रदर्स - यहां सींगदाणा फोड़ने की मशीन, बैल से एवं पावर से चलने वाली थकी, रहट, चने की ढाल साफ करने की मशीन एवं जुवारी निकालने की मशीन तयार की जाती है, एवं विक्री है। श्रीराम आयरन वर्कस के नाम से कृष्णापुरी पर आपका वर्कशाप है।

### जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

- मेसर्स कपूरचंद बच्छराज प्रेस फेक्टरी  
 " गोविन्दजी वीरमजी जीनिंग प्रेसिंग-फेक्टरी  
 " कीलाचन्द देवचन्द प्रेसिंग फेक्टरी  
 " बच्छराज रूपचंद जीनिंग फेक्टरी  
 " भीकचन्द साकलचन्द फेक्टरी  
 " रतनजी धीरम जीन फेक्टरी  
 " शंकर सोताराम जीनिंग फेक्टरी  
 " सोला कोठी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 " हीरालाल रामनारायण जीनिंग फेक्टरी

### ऑइल मिस्स

- मेसर्स शुभ्रीलाल शिवसहाय ऑइल मिस्स  
 " हीरालाल रामनारायण ऑइल मिस्स

### बैंकर्स

दि पूर्व खानदेशा कोम्पारेटिव बैंक  
 दि सैंड मार्गेज कोम्पारेटिव बैंक

### कपास के व्यापारी

- मेसर्स कपूरचंद बच्छराज  
 " आनन्द हेमराज

### मेसर्स जेवत तेजपाल

- " नथमल दामाजी  
 " लालजी पासू  
 " बालजी दामजी

### ग्रेन मर्चेण्ट्स

- मेसर्स केरावलाल मूलचन्द  
 " पासीराम हरगुलाज  
 " छोटेलाल सूरजमल  
 " लखू माईचन्द ( किराना )

### कपड़े के व्यापारी

- मेसर्स कन्हैयालाल उदयराम  
 " नथमल साकलचन्द

### फैक्टरी

- मेसर्स रमूच भाई कप्ययभजी  
 " बन्तमदाम गिरधारीजान

### मिशनरी मर्चेण्ट

- मेसर्स चावड़ा ब्रदर्स (सींगदाणा मशीन)  
 " एस. एम. पटेल एण्ड कम्पनी (प्रिन्ट ऑइल मिन प्रेस)  
 " नथमल बनराज एण्ड कम्पनी

## भुसावल

यह स्थान जो० आई० पी० रेलवे का बड़ा भारी जंक्शन है। यहाँ रेलवे का बहुत बड़ा वर्कशाप है। यहाँ से बम्बई, पंढवा, नागपुर एवं अमलनेर की ओर गाड़ियाँ जाती हैं। इस स्थान पर करीब ४१२ जॉनिंग प्रेसिंग फैक्टरियों एवं २ ओहिल मिल हैं। यह राहबर बरार, खानदेश तथा नौनाड़ खानों प्रान्तों की हद पर बसा है। यहाँ से बम्बई इलाका आरंभ होता है। रेलवे वर्कशाप के कारण ही यहाँ के व्यापार में गति विधि रहती है यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप विवरण इस प्रकार है।

### मेसर्स गुलाबचंद नारमल

इस फर्म के मालिक पीदी (जोधपुर स्टेट) निवासी ओसवाल श्वेताम्बर समाज के स्थानक वासी जैन सज्जन हैं। सेठ नारमलजी के हाथों से करीब १०० वर्ष पूर्व इस फर्म का स्थापन हुआ। सेठ नारमलजी के पञ्चाग उनके पुत्र सेठ गुलाबचन्दजी ने इस फर्म के व्यापार को विशेष तरकी पर चलाया। आपदा स्वर्गवास सन् १९२४ के मार्च मास में हुआ। आप अपने स्वर्गवासी होने के समय १९१२० हजार का दान कर गये थे। इस रकम में से ५१६ हजार की लागत से एक धर्मशाला पीदी में बनवाई गई।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक बाबू नारमलजी के छोटे भ्राता श्रीपन्नालालजी बंध एवं सेठ गुलाबचन्दजी के पुत्र भरुलालजी एवं सारूपचन्दजी बंध हैं। श्रीभेरुलालजी बंध ८ सालों से म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर हैं। आपकी ओर से भूरावाई भाविदाभम एवं पद्मावाई कन्या शाला को भी सहायता दी गई है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुसावल—मेसर्स गुलाबचन्द नारमल—साठकारी लेन देन और खेती का काम होता है।  
मुसावल—मेसर्स पन्नालाल नारमल—सापत्नी दुकान है।

### मेसर्स पूनमचन्द ओंकारदास

इस फर्म के मालिक जेठारण (जोधपुर) निवासी ओसवाल समाज के स्थानकवासी जैन सज्जन हैं। करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ ओंकारदासजी के पितामह बामगोड़ (मुसावल) आये सेठ ओंकारदासजी के समय में फर्म को व्यापारिक वृद्धि हुई।



वर्तमान में इस दुकान के मालिक बाबू पूनमचन्दजी हैं। आप एगनदेश ओसका शिक्का संस्था के महामंत्री तथा म्युनिसिपैलेटी के वाइस प्रेसिडेंट हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुसावल—मेसर्स पूनमचन्द ओंकारदास—यहाँ साहुकारी लेनदेन एवं कृषि का काम होता है।

### मेसर्स मानमल चाँदमल

इस दुकान के मालिक श्री केसरीचन्दजी पर्यंतसर ( जोधपुर स्टेट ) निवासी ओसका स्थानकवासी जैन समाज के सज्जन हैं। यह दुकान जी० आई० पी० रेलवे के चारू होने के समय से यहाँ चालू है। मानमलजी एवं चाँदमलजी के समय में इस दुकान ने अच्छी बिक्री की थी। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुसावल—मानमल चाँदमल—लेन देन का काम होता है।

फैजपुर—चाँदमल केशरीमल—कपास अनाज और आदत का कारबार होता है।

योद्वड़—मानमल चाँदमल—आदत और कपास का व्यापार होता है।

### जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी

इण्डिया कॉटन प्रेस फैक्टरी

गामडिया जीन प्रेस फैक्टरी

मेहता भोराम कम्पनी जीन फैक्टरी

### ऑइल मिल्स

पूताराम दगनजात ऑइल मील

मदनमोहन ऑइल मील

### कपड़े के व्यापारी

ओंकारदास लक्ष्मीचंद

केशरीचंद पूनमचंद

वृष्णीराज लक्ष्मीचंद

राजमल चाँदमल

### गन्ठे के व्यापारी और भाड़िया

अमरचंद हजारीमल

मूलचंद रामदयाल

रवनजाल हरभागत

### फटवरी

इसमाइलजी गुलामट्टैयन

इसनभली मोहम्मदअली

चाँदी सोने के व्यापारी

ओंकारदास बन्तभदास

कन्देयालाल विठ्ठलराम

पन्नालाल नारमल

किराने के व्यापारी

जयनारायण कन्देयालाल

रघुनाथ भोजराज राठी

## कुरहानपुर

जी० आई० पी० रेलवे की मेन लाइन पर लंडवा और भुमावल के मध्य बसों द्वारा यह बहुत पुरानी बस्ती है। सन् १४०० ईस्वी के लगभग फारूसी वंश के द्वितीय बादशाह नासिर खान ने अपने गुरु मुरदानुरीन की आज्ञा से इन शहर को नीचे ढाली थी। ३०० वर्षों तक यह शहर अमीर सम्राज्यों, नवाब, शाहजादों, विद्वानों और पंडितों का विज्ञान स्थान रहा। उन दिनों इस स्थान को "दाऊर गुरख" अर्थात् आनन्दराज्य के नाम से पुकारते थे। उस समय यहाँ का बना कलाबख्श कारपोर तथा बिनलाब का सामान और ऊनी मात्र, अरबस्तान, पेरसिया, यूरोप, सीरिया आदि देशों में जाता था।

वर्तमान में टूटी पूटी बहारदीवारी से घिरा हुआ यह ऐतिहासिक नगर अपनी वृद्धावस्था के दिन देख रहा है। आरंभ से ही सुमत्तमानी आधिपत्य रहने के कारण आज भी सुमत्तमान समाज का यहाँ बहुत दौरपोर है। शहर के बीचो बीच बनी हुई जुम्मा मस्जिद की विज्ञान इमारत दर्शनीय है।

इस शहर की ध्यासायिक जातियों में प्रधानता बोहरा और मुजर्रात्री समाज है। इस समय यहाँ रई का व्यापार प्रधान है। १ कॉटनमिल १३ जॉनिंग और ५ प्रेसिंग फैक्टरियाँ इस शहर में हैं। रई के अलावा कुरहानपुरी हाथ की बनी साड़ियाँ और कलाबख्श का सामान भी बाहर जाता है। इपर ३१४ सालों से मुंगरनी की पैदावार यहाँ बट्टानव से होती है। गन्ना यहाँ व्यापार नीमाफ, पंजाब, सी० पी० आदि से आता है। इस शहर की मनुष्य संख्या ३५ हजार के लगभग है। यहाँ के ध्यासायियों का संघर्ष परिषद इस प्रकार है।

### मेगम नानामाई गोविंदजी

इस वर्ग के पूर्वज बरोबर २०० वर्ष पूर्व मुजर्रात्र मे यहाँ आये थे। करीब ५-६ पीढ़ी पूर्व से इस कुटुम्ब के व्यवसाय का विकास आरंभ होता है। सेंट डीकनदासजी के समय से इस वर्ग के व्यापार की शोभाएत मिली। सेंट गोवर्द्धनदासजी तथा सेंट डीकनदासजी दोनों भाई भाई थे। आप दोनों सभ्यता का स्वर्णकाल हो चुका है।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

वर्तमान में इस फर्म के मालिक गोवर्द्धनदास सेठ के पुत्र सेठ ठाकुरदासजी एम० एल० सी०, सेठ बालचंदजी तथा सेठ टीकमदास सेठ के पुत्र सेठ श्रीकृष्णदास हैं।

सेठ ठाकुरदासजी एम० एल० सी० के हाथों से इस फर्म के व्यापार की बहुत बड़ी ठरकें हुई है। आपकी फर्म बुरहानपुर में कॉटन तथा वैद्विङ्ग व्यवसाय करने वाली फर्मों में अच्छी आदरणीय समझी जाती है। इस फर्म के सकल संचालक ठाकुरदास सेठ सामाजिक एवं गवर्नमेंट के कार्यों में भी अच्छी प्रतिष्ठा रखते हैं। सन् १९१८ से आपका सार्वजनिक जीवन आरंभ होता है। उन दिनों बुरहानपुर में होनेवाली प्राविशियल कान्फ्रेंस की स्वागत-कारिणी समिति के आप अध्यक्ष रहे थे। असहयोग आन्दोलन के समय भी आपने विशेष भाग लिया था। सन् १९२६ में आप नीमाड़ की ओर से सी० पी० कौंसिल के मेम्बर निर्वाचित हुए हैं। वर्तमान में आप वहाँ के सेकंड हास ऑनरेरी मजिस्ट्रेट पद पर हैं, तथा स्थानीय म्युनिसिपैलिटी में गवर्नमेंट की ओर से मेम्बर चुने गये हैं। इसके अलावा बुरहानपुर लोकल बोर्ड एवं नीमाड़ डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के आप वाइस चैयरमैन हैं। आपके छोटे भ्राता सेठ बालचंद, वानी निज बुरहानपुर के डायरेक्टर हैं।

आपकी फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

- |  |   |  |
|--|---|--|
| बुरहानपुर—मेसर्स नानाभाई गोविन्द जी धौक              | } | यहाँ प्रधानतया वैद्विङ्ग व्यापार होता है।                                |
| बुरहानपुर—श्रीकृष्ण राधाकिशान कम्पनी                 |   |  |
| बुरहानपुर—श्रीकृष्ण जीनिंग प्रेसिडेंट केक्टरी        | } | इस नाम से आपकी कॉटन जीनिंग प्रेसिडेंट केक्टरी सन् १९०१ से काम कर रही है। |
| बुरहानपुर—बालचन्द गोवर्द्धनदास—सराफी कामकाज होता है। |   |  |
| संख्या—श्रीकृष्ण गोपातदास—रई का व्यापार होता है।     |   |  |
| हरमूर (नीमाड़) बालचन्द ठाकुरदाम—                     | ” | ”  |
| जलगाँव—मोहनलाल नानाभाई—                              | } | कॉटन तथा सराफी का व्यवसाय एवं बालकारी का काम होता है।                    |
|  |   |  |

मेसर्स टीकमदास हरीदास

इस फर्म के मालिक १५०११७५ वर्षों से यहीं निवाम करते हैं। हरीदास सेठ के समय इनके यहाँ रेशम का व्यापार होता था। इनके पश्चात् क्रमशः सेठ टीकमदास तथा सेठ लखमीदास ने कार्य संभाला। वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मथुरादास और सेठ गोबर्द्धनदास हैं। सेठ मथुरादास चाली मित्त के टायरेक्टर हैं। भारतका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

- पुरदानपुर—टीकमदास हरीदास राजपुरा—वैदिक व्यापार होता है।
- पुरदानपुर—भीमलदेव जीनिंग फेक्टरी—कोटन जीनिंग होता है।
- इन्दौर—गोबर्द्धनदास लखमीदास बजान राना—करड़े का व्यापार होता है।
- बम्बई—गोबर्द्धनदास लखमीदास नारवाही बाजार—आड़त का काम होता है।

मेसर्स मोहम्मद अली ईसा भाई

इस फर्म का हेड ऑफिस धरनगांव स्टेशन इरहोल रोड में है। भारतकी संवत् १९७२ में यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी स्थापित हुई। यह फर्म प्रधानतया रुई का व्यापार करती है। धरनगांव में इस फर्म की स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए।

मेसर्स हीराचंद नंदराम

इस फर्म का स्थापन १०० वर्ष पूर्व सेठ हीराचंदजी के हाथों से हुआ था। आप सरावगी जैन समाज के सज्जन हैं। आरंभ से ही यह फर्म गल्ला तथा आड़त का काम कर रही है। इसके वर्तमान मालिक सेठ यशोलाज जी हैं। भारतका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

पुरदानपुर—मेसर्स हीराचंद नंदराम चौद—गल्ला और आड़त का काम होता है।

फेक्टरीज़ एण्ड इंडस्ट्रीज़

काटनमिल

श्रीवार्ती स्पीनिंग एण्ड बीविंग मिल्स कंपनी लिमिटेड—पर्जेंट फानसजी दीनशा एण्ड बर्दर्स बम्बई

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

श्रीकृष्ण जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

भीमलदेव जीनिंग फेक्टरी

नोमानभाई मुल्ला बद्रुद्दीन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

महम्मदअली ईसाभाई जीनिंग फेक्टरी

किरानदास टाडुदास जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

रामकृष्ण जीनिंग फेक्टरी

अकबर कोटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

फर्ग्युसन मुल्ला मोटाभाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी लाजगाँव



हैदराबाद और हैदराबाद स्टेट



HYDRABAD  
&  
HYDRABAD STATE



# हैदराबाद

## ऐतिहासिक परिचय

जिस विस्तृत स्थान में इस समय हैदराबाद का राज्य है, अत्यन्त प्राचीन पात्र में वहाँ द्रविड़ राजाओं का राज्य था। पर इस सम्बन्ध में अब तक ठीक २ ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिले हैं। इसकी सन् पूर्व २७२ से २३१ वर्ष तक इस प्रान्त पर सम्राट् अशोक का अरण्य शासन था। इसके बाद यहाँ एक के बाद एक तीन हिन्दू साम्राज्यों ने राज्य किया। खेरहवाँ सदी के अन्त में अलाउद्दीन खिलजी की अधीनता में मुसलमानों ने इस प्रान्त पर हमले शुरू किये। वे लगावार दक्षिण के हिन्दू राजाओं से लड़ते रहे। आखिर में सम्राट् औरङ्गजेब ने अपनी साकत के जौहर दिखलाए और उसने दक्षिण हिन्दुस्तान का बहुत सा हिस्सा फतह कर लिया और दक्षिण में आसफ खॉ नामक अपने बहादुर सिपहसालार को "निजामउल-मुल्क" का खिताब देकर दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आसफ खॉ जंग के मैदान में जैसे बहादुर थे, वैसे ही बुद्धिमान और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ भी थे।

सम्राट् औरङ्गजेब की मृत्यु के बाद जब मुगल साम्राज्य अन्तिम छॉसों गिन रहा था, जब वह मृत्यु की शाय्या पर पड़े २ आखिरी हम ले रहा था, उस समय उस स्थिति का फायदा उठा कर आसफ खॉ ने अपने स्वातन्त्र्य की घोषणा कर दी। इस समय दिल्ली की हुकुमत बहुत कमजोर पड़ गई थी। उधर दिल्ली के बादशाह ने खानेदरा के सूबेदार को हुकम दिया कि वह आसफ खॉ पर खैजा बजाई कर दे। ऐसा ही हुआ। लेकिन हमने बादशाह को बतटे मुँह की खानी पड़ी। लड़ाई में आसफ खॉ की जीत हुई। वस उनको स्थिति और भी मजबूत हो गई। आसफ खॉ ने हैदराबाद की अपने राज्य की राजधानी बनाई। उन्होंने अपने निज का राज्य कायम कर दिया। वर्तमान हैदराबाद निजाम उन्हीं आसफ खॉ के वंशज हैं।

इसकी सन् १७४८ में आसफ खॉ की मृत्यु हो गई। इनकी मृत्यु के बाद इनके भतीजे मुजफ्फरजंग प्रेम्ब लोगों की महापता से गरी पर बैठे। पर बुद्ध ही समय बाद ये मार जाते गये।



इसके बाद फ्रेंचों ने निजाम-उल-मुल्क आसफ़ ख़ाँ के तीसरे पुत्र सलायतजंग को हैदराबाद का निजाम घोषित कर दिया ।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि, जत्रसे सलायतजंग हैदराबाद की मसनद पर बैठे तब से वहाँ फ्रेंचों का लूट-दौरा था । वहाँ जो कुछ वे चाहते थे वही होता था । पर झाड़व की तेज गतिविधि ने फ्रेंचों का ध्यान उन प्रान्तों की ओर विरोध रूप से खींचा, जो उन्होंने पहले फतह किये थे ।

ईसवी सन् १७८० के लगभग कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं, जिन्होंने हैदराबाद के मखिय पर बड़ा प्रभाव डाला । उन घटनाओं का संक्षिप्त सारांश इस प्रकार है—“मैसूर के मुल्तान हैदरअली की मृत्यु हो जाने पर उनका पुत्र टिपू मुल्तान गद्दी-नशीन हुआ । इसने आमरण के उस मुल्क पर जिन पर अंग्रेजों ने अधिकार कर रक्खा था तथा हैदराबाद राज्य के प्रान्तों पर हमले करने शुरू करदिये । इसमें टिपू के खिलाफ अंग्रेज और हैदराबाद के निजाम मिल गये । दोनों ने टिपू को अपना दुरमन मान कर उस पर संयुक्त आक्रमण ( Combined attack ) करने का निश्चय किया । पर टिपू के पास भी बहुत बड़ी सेना थी, इसके अतिरिक्त वह एक कुशल भी था । अतएव बहुत दिनों तक वह ज्यों ज्यों मुकाबला करता रहा । पर चारों ओर उसके दुरमन थे । एक ओर तो मराठे उसके नाकों दम कर रहे थे, दूसरी ओर अंग्रेज और हैदराबाद के निजाम उसकी छाती पर मूँग दल रहे थे । अन्त में ईसवी सन् १७९८ में टिपू मुल्तान अंग्रेजों से हार गया और वह लड़ता हुआ एक बहादुर सिपाही की तरह युद्ध में मारा गया । इस समय विजेताओं के हाथ जो मुल्क लगा, उसमें २४०००००० प्रति सत्त आमदनी का मुल्क हैदराबाद निजाम के हिस्से में आया । लॉर्ड वेलेस्ली, जो उक्त युद्ध में ब्रिटिश फौजों का सञ्चालन कर रहे थे । लिखते हैं—“It would have been impossible to conquer the dominions of Tippu had it not been for the active support and co-operation of Nizamah. अर्थात् अगर निजामअली की सहायता और सहयोग न मिलता तो टिपू मुल्तान का मुल्क जीतना असम्भव होता ।

पाठक जानने हैं कि टिपू का बहुत सा मुल्क निजाम माद्व के हिस्से में आया था । पर यह उनके हाथ में न रहने पाया । ब्रिटिश कूटनीति ( British Diplomacy ) ने उसे उनके हाथ से ले लिया । निजाम पर अतिरिक्त फौजी व्यर्ष का भार लाद कर उनमें वह मुल्क ले लिया गया जो टिपू से उन्हें प्राप्त हुआ था । इस तरह सत्त ही में कोई २४००००० आमदनी का मुल्क निजाम के हाथों में चला गया ।

इसके तीन वर्ष बाद निजाम ने परार के राजा के भिनाक अंग्रेजों की मदद की । इसके बदले में उक्त राजा से आने हुए मुल्क का एक टिप्पसा निजाम को भी मिला ।

इस प्रकार कई प्रकार के बड़ाव उत्तार गया परिवर्तन देय कर हैदराबाद के तत्कालीन निजाम अर्थात् ३० सन् १८०३ में देहान्त हो गया। इसके बाद मिर्जान्दर खाँ गरीब पर बैठे। इनको शासन के लिए अयोग्य समझ कर अफिजों ने राज्य-शासन का सूत्र चबाने के लिए बन्दूलाज नामक कायस्थ को नियुक्त किया।

३० सन् १८२९ में निजाम मिर्जान्दर का देहान्त हो गया। उनके बाद उनके सबसे बड़े पुत्र नासिहुरौला मसनद पर बैठे। इस वक्त बन्दूलाज ही हैदराबाद के प्रधान मन्त्री थे। उन्होंने कर बमूली का काम अपने ही भाइयों के सुदूर रखा था। इसमें राजाने में हानि पहुँचने लगी। थोड़े ही समय के बाद बन्दूलाज को मृत्यु हो गई। बन्दूलाज का नाम आज भी हैदराबाद में मराहूर है। कहा जाता है कि उन्होंने एक प्रकार हैदराबाद पर राज्य किया। आज भी वहाँ "बन्दूलाज का हैदराबाद" की कहावत मराहूर है। यद्यपि बन्दूलाज के शासन में कई दोष थे, उनका कई बानें मिन्दारबद थीं, पर उन्होंने कुछ ऐसी सुद्धिमत्ता के काम भी किये थे, जिन्हें उनके बाद आनेवाले मन्त्रियों ने प्रशंसा की दृष्टि से देखा है।

३० सन् १८५३ में हैदराबाद के तिस्रमे अंग्रेज सरकार ने एक बड़ी रकम पावना निकाली और इसके बदले में निजाम सरकार को वरार प्रान्त अंग्रेज सरकार के पास गिरवी रखना पड़ा। इस सम्बन्ध में अधिक प्रचारा वर्तमान निजाम महोदय के उस पत्र में मिलेगा, जो अभी उन्होंने प्रकाशित किया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि वरार के चले जाने से निजाम को हार्दिक दुःख और असाधारण मानसिक कष्ट हुआ।

३० सन् १८५३ में हैदराबाद के दिन कुछ फिर और सालारजंग नामक एक अल्पन्त अनुभवी और योग्य सज्जन वहाँ के दीवान बनाये गये। सर सालारजंग ने राज्य के भिन्न २ शासन-विभागों को सुसङ्गठित किया। इन्होंने राज्य का इतना अच्छा इन्तजाम किया कि पहले की गड़बड़ और अशान्ति बहुत कुछ मिट गई। पारों और अशान्ति और अव्यवस्था के बदले शान्ति और व्यवस्था का साम्राज्य हो गया। उन्होंने पुलिस-विभाग को इतना सुधारा कि वहाँ जो चोरियों और लकैतियों नित्य की घटनाएँ हो गई थीं, वे बहुत कुछ मिट गईं। रिश्वतखोरी भी पहले से कम हो गई। उन्होंने बड़ी मजबूती के साथ खोर और डाकू क्रौमों को हैदराबाद रियासत में बसने से रोका। आपके मुरासन की वजह से राज्य की आमदनी भी बढ़ी। लोगों की सुख-समृद्धि में भी बहुत वृद्धि हुई। ये सब बानें देय कर निजाम साहब ने आपके अधिकार बहुत कुछ बढ़ा दिये। इसी समय हैदराबाद के तत्कालीन निजाम नासिहुरौला का देहान्त हो गया और उनके पुत्र आसतुहुरौला मसनद पर बैठे। इनके मसनद पर बैठते ही सन् १८५७ के प्रख्यात सिपाहीविद्रोह की आग ने सारे भारतवर्ष में सनसनी पैदा कर दी। ब्रिटिश राज्य की जड़ हिलने लगी। ऐसे कठिन और

वित्त के समय में निजाम महोदय ब्रिटिश सरकार के मित्र बने रहे। उन्होंने इस समय अपनी फौजों द्वारा ब्रिटिश सरकार की पूरी सहायता की। इस पर प्रसन्न होकर ब्रिटिश सरकार ने निजाम के साथ एक नयी सन्धि की। इसमें नालडंग और रायपुर का दुभाङ्ग प्रान्त, जिसकी आमदनी लगभग २०००००० है, निजाम महोदय को वापस लौटा दिया गया। इसके अनतिरिक्त उन्हें ५०००००० का कर्ज भी माफ कर दिया गया। हाँ, बरार प्रान्त लौटाने की इस समय भी उदारता न दिखाई गई। उसे ब्रिटिश सरकार ने बतौर ट्रस्ट दे रखा !! जब शिरोहात्मि शाक्त हो गई, तब तत्कालीन बड़े लाट लॉर्ड केनिंग ने तत्कालीन निजाम और उनके सुयोग्य वीवान सर सालारजंग को उस महान् सहायता के बदले में, जो उन्हें इस भीषण विपत्ति के समय ब्रिटिश सरकार को दी थी, हार्दिक धन्यवाद दिया और उनके दो आभार माने। इतना ही नहीं, लॉर्ड केनिंग ने भारत सरकार की ओर से निजाम को (१०००००) भेट किये तथा उच्च उपाधियों द्वारा उनका और सर सालारजंग का सम्मान दिया। सर सालारजंग को भी ब्रिटिश सरकार की ओर से (३००००) का पुरस्कार मिला।

इंगली सन १८९९ में निजाम आम्बुदोजा साहब की भी मृत्यु होगई। आप के का देहान्त के मृत्यु पर निजाम सिन्धु महारुज अलीखां यकार देहान्त की समस्त पर वै? इस समय आपकी अवस्था केवल तीन वर्ष की थी। अतएव भारत सरकार ने देहान्त के समय का सारा भार सर सालारजंग पर रखा। आपकी सहायता के लिये "दीवाना ऑफ़ सिन्धी" भी रचनी गई।

यहाँ फिर यह बात कह देना आवश्यक है कि देहान्त के शासन-कार्य में सर सालारजंग ने जिस अत्यन्त योग्यता, असाधारण राजनीतिज्ञता और असीमिष्ट बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है उसे सर वै? ने अत्यन्त राजनीतिज्ञ होने अमुनी बताया है। एक सुप्रसिद्ध अंग्रेज राजनीतिज्ञ ने दो दर्जे तक कह दिया कि, समस्त में अब तक सर सालारजंग और सर ० टी० सालारजंग जैसे राजनीतिज्ञ पैदा नहीं हुए। निजाम महोदय ने भी भारत का आप के गोपबन्धुत्व ही सहाय और सम्मान रक्खा।

इसकी सन १८८१ की ५ फरवरी में श्रीमान निजाम महोदय का राज्य के पूर्ण अतिरिक्त राज्य हुए।

सन् १९११ के अगस्त मास में इन निजाम महोदय की अस्वस्थता बढ़ने पर आप को देखते हुए अत्यन्त दुःख में विपन्न हुए।

आपके बाद इन्सान निजाम राज्य अस्वस्थ हो गये और अत्यन्त पर वै?। अगस्त सन १९१६ में मृत्यु हो गई। आप का अन्तम अन्त अस्वस्थ हो गये। आप के अन्तम अन्त अस्वस्थ हो गये। आप के अन्तम अन्त अस्वस्थ हो गये।

Egerton) नामक एक उच्च-कुलोत्पन्न अंग्रेज के हाथ सौंपा गया। निजाम महोदय ने अंग्रेजों की अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। नवाब इमाद-उल-मुल्क नामक एक विद्वान मुसलमान सभ्रन से आपने फारसी, अरबी और हिन्दुस्थानी भाषाओं में भी अच्छी पारदर्शिता प्राप्त कर ली।

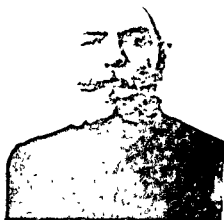
ई० स० १९२६ में निजाम महोदय ने वरार का प्रश्न बढ़े जोर से उठाया और इस सम्बन्ध में उन्होंने समाचार पत्रों में अपना एक लम्बा चौड़ा धक्कन्य प्रकाशित किया। तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड रीडिंग ने इसका कड़ा उत्तर दिया, जो समाचार पत्रों में यथासमय प्रकाशित हो चुका है।

#### व्यापारिक और औद्योगिक परिषद

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि, प्राचीन काल से अद्भुत फला-फौराल के लिये इस प्रान्त की कीर्ति ठेठ मिश्र, मोस और इरान तक फैली हुई थी। इस प्रान्त में सोने और चाँदी के काम किये हुए बढ़िया बस्त्र, बढ़िया मजमलें, मुलायम रेशम आदि कई काम बनते थे। इनकी सुन्दरता से तरछालीन संसार मोहित था। यद्यपि कालचक्र के परिवर्तन से इस बस्तु यहाँ इतनी बढ़िया चीजें तैयार नहीं होती हैं, पर फिर भी समयानुसार यहाँ उद्योग-धन्धों और कटाकौशल को सन्तोषकारक उन्नति हो रही है। इस बस्तु हैदराबाद राज्य में रुई की बॉई ८० जीनिंग केन्टरियों हैं। तीन बड़े २ कपड़ों के मिल्स हैं तथा ६२ गाटे की मिल्स हैं। इसके अतिरिक्त ३३ चांबल निकालने के मिल्स, एक मिल्स के केवडु बनाने की तथा एक बर्क की केन्टरी है। यहाँ एक भायनं फाउण्डरी भी है। तथा वाटरपर्विंग स्टेशन भी है। यहाँ सोने और चाँदी के बढ़िया तार तैयार होते हैं। कर्मादे का काम भी यहाँ गजब का होता है। विशम्बर की कौमन ५००) तक रहती है। और भी कई प्रकार के यहाँ बढ़िया काम होते हैं।

हैदराबाद राज्य के उद्योग-धन्धों को उत्तेजन देने के सद्दुद्देश से भीमान् निजाम ने ई० सन् १९१७ में यहाँ तैयार होनेवाली बस्तुओं की एक प्रदर्शनी की थी। इसी समय हैदराबाद के कई अनुभवी सभ्रनों ने इस विषय पर कई पुस्तिकाएँ प्रकाशित की थीं कि यहाँ चीन चीन से उद्योग-धन्धों के सापन हैं और वे किस प्रकार सकलगावूर्वक बन सकते हैं। इसी समय यह बात भी प्रकाश में आई थी कि, सारा भारतवर्ष अितना दिनहन विदेशों को भेजता है वसता उ हिस्सा केवल हैदराबाद से जाता है।

हैदराबाद से प्रति साल ७,००,००,०००) रुपये की रुई बाहर जाती है। इतना होने हुए भी वह एक साल में २,२३,३८,०००) रुपये का रुई का तैयार और परका मात्र भी बाहर भेजता है। यहाँ से प्रति साल लगभग ४००) रुपये की रुई भी यूरोप को भेजी जाती है। अगर इसी रुई का यही परका मात्र तैयार किया जावे तो रियासत को बहुत बड़ा फायदा हो सकता है।



### देवगं गुप्तानीगम हरिगम खटोड़

इस फर्म के माजिबों का मूल निवासस्थान नागौर (मारवाड़) है। आप पारिव्य व्याप्त ब्राह्मण-जाति के खटोड़ सन्तन हैं। इस फर्म का स्थानन सेठ गननगमजी व्यास ने करीब १२५ वर्ष पूर्व किया था। आरम्भ में आप के यहाँ किराना एवं लेनदेन का काम होता था। सेठ रामब्रह्मजी निजाम गवर्नमेंट के कर्मीगमने एवं अस्तबल को रमद सलाई करने का काम करते थे। आपके दो पुत्र हुए, सेठ जगन्नाथजी खटोड़ एवं सेठ हरिगमजी खटोड़। सेठ जगन्नाथजी के हाथों से इस फर्म के स्थानन को विरोध उपनि मिली।

सेठ जगन्नाथजी ने इस फर्म पर निजाम स्टेट के रूमों एवं जागौरदारों के साथ लेन देन का व्यवहार आरम्भ किया आपका रसगंशस हो चुका है। वर्तमान में इस फर्म के माजिब सेठ हरिगमजी खटोड़ है। आप सेठ जगन्नाथजी के नाम पर दत्त हैं। आपने सेठ जगन्नाथजी के स्मरणार्थ ६० हजार रुपये की लागत से एक अनायासम की स्थापना की है। आप दो सालों तक हैदराबाद लेजिस्लेटिव कौमिल के मेम्बर रह चुके हैं। इम्पीरियल पोस्ट आफिस की बिल्डिंग आप ही की है। अभी २ आपने अपनी चारकमान बाजी मुन्दर पत्थर की बिल्डिंग में श्रीकृष्ण अपैराहाइस की बिल्डिंग बनवाई है। यहाँ के व्यापारिक समाज में आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद (इकिशन)—मेमसं गुप्तानीगम हरिगम खटोड़ } यहाँ प्रधानतया वैदिक व किराये  
 चारकमान— T. No 294 कार का पता Khatod } का काम होता है।

### मेसर्स सुन्नीलाल नारद प्रसाद

इस फर्म के माजिब आपल (जोधपुर स्टेट) के मूलनिवासी हैं। आप अन्धवाल वैद्य समाज के मंगल गौत्रीय सन्तन हैं। सेठ जेठमलजी ने यहाँ आकर सर्वप्रथम यह दुकान स्थापित की तथा इस फर्म के व्यापार की सेठ सुन्नीलालजी के हाथों से बहुत अधिक उन्नति हुई। आपने इन्दौर, मन्डसोर, बम्बई आदि स्थानों में बहुत सी दुकानें स्थापित कीं। आप हैदराबाद स्टेट की अर्चीन सलाई करने एवं बन्दूके सलाई करने के लिये कंट्राक्टर थे। आपका विस्तृत परिचय मेसर्स सुन्नीलाल मुरलीप्रसाद नामक फर्म में दिया गया है।

सेठ सुन्नीलालजी के २ पुत्र हुए—सेठ नारदप्रसादजी एवं सेठ मुरलीप्रसादजी। इन दोनों भाइयों का व्यापार सन् १९२५ में अलग २ हो गया है। तब से यह फर्म अपना अलग कारोबार कर रही है। इसके माजिब सेठ नारद प्रसाद जी संवत् १९७९ में स्वर्गवासी हुए।

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

आपके यहाँ १९७९ में घांसा ( उदयपुर स्टेट ) से श्री सुखदेवप्रसादजी दत्तक लाए गये। सेठ चुन्नीलालजी ने जो कपड़े का व्यापार स्थापित किया था, वह इस फर्म के सन्ने में आया है।

जायल में इस फर्म की ओर से सुरमागर नामक एक कुर्मी खुदवाया गया है। जायल में इस फी स्थाई सम्पत्ति भी है। इसके अलावा रेंसिडेंसी, विकारावाद में आपके बनीये बँगले एवं मिस्कियत है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स पापामल चुन्नीलाल शाहगंज सिटी।	}	यहाँ बैङ्किग व्यापार होता है।
हैदराबाद—मेसर्स नारदप्रसाद सुखदेवप्रसाद लाड बाजार।		यहाँ कपड़े का थोक व्यापार होता है।
हैदराबाद—रेंसिडेंसी—मेसर्स चुन्नीलाल नारदप्रसाद T. No. 370	}	यहाँ प्रधानतया बैङ्किग व्यापार होता है।

### मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीप्रसाद

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जायल ( जोधपुर स्टेट ) में है। आर अग्रज वैश्य समाज के मंगल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ जेठमलजी आरंभ में बने आये थे। आपने सराफी लेनदेन का कारबार शुरू किया। आपके तीन पुत्र हुए—सेठ श्यामलालजी, सेठ पापामलजी एवं सेठ रामदयालजी। सेठ पापामलजी के समय में इस फर्म के बैङ्किग व्यापार की वृद्धि हुई। सेठ पापामलजी के पश्चात् सेठ श्यामलालजी के पुत्र सेठ चुन्नीलालजी ने इस फर्म के व्यापार तथा सम्पत्ति में विशेष वृद्धि की। आप हैदराबाद स्टेट का अफीम सप्लाय करने के लिये कन्ट्रान्टर थे, इस व्यापार के लिये आपने मालवे में इन्दौर, उज्जैन, मन्दमोर आदि स्थानों में दूकानें स्थापित कीं। इसके अलावा बम्बई, मद्रास आदि भिन्न २ स्थानों में भी आपकी दूकानें थीं। अफीम के कन्ट्रैक्ट के अलावा आप हैदराबाद स्टेट के रिसालों एवं कीलों को बन्दूकें बनवाकर सप्लाय करते थे, इसके अलावा टकसाल का काम भी आपके यहाँ था। पापामल चुन्नीलाल के नाम से आपने अपनी फर्म पर कपड़े का व्यापार भी आरंभ किया। इन ठरर दुकान के व्यापार को कई भिन्न २ लाइनों में सेठ चुन्नीलालजी के हाथों से उन्नति मिली। आप हैदराबाद के व्यापारिक समाज में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखते थे। आपके २ पुत्र हुए—सेठ नारदप्रसादजी एवं सेठ मुरलीप्रसादजी। इन दोनों माइयों का कुटुम्ब इधर सन् १९२५ से प्रारंभ अलग २ व्यापार करने लगा।



। एव० सेठ नारदप्रसादजी ( बुधीलाल नारदप्रसाद )



धी० सुन्दरप्रसादजी ( बुधीलाल नारदप्रसाद )



एव० सेठ मुरलीप्रसादजी ( बुधीलाल मुरलीप्रसाद )



सेठ मोहनप्रसादजी ( बुधीलाल मुरलीप्रसाद )



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

आपके यहाँ १५ ५५ में नामा ( उद्योग स्टेट ) से श्री सुरदेवप्रसादजी दत्तक तार गये।  
सेठ चुन्नीलालजी ने जो करड़े का व्यापार स्थापित किया था, वह इस कर्म के माते के  
आया है।

जायन में इस कर्म की ओर में मुख्यतः नामक एक कुश्नों सुदनाया गया है। अतः  
इस की स्थापना मन्वलि भी है। इसके अलावा रेसिडेन्सी, विहारवाह में आपके कर्मों  
के गते एवं मिनिस्टर है। इस कर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

देवगाव-मममें पापामल चुन्नीलाल शाहगंज मिर्चा।	}	यहाँ वैदिक व्यापार होता है।
देवगाव-मममें नारदप्रसाद सुरदेवप्रसाद गाड़ बाजार।		यहाँ कपड़े का थोक व्यापार होता है।
देवगाव-मममें चुन्नीलाल नारदप्रसाद L. N. 110	}	यहाँ प्रधानतया वैदिक व्यापार होता है।

### मममें चुन्नीलाल मुन्नीनसाद

इस कर्म के मातेका का मूल निवासस्थान जायल ( जोधपुर स्टेट ) में है। आर अतः  
वैदिक मममें के मगन गौवाय मज्जन हैं। इस कर्म के स्थापक सेठ जेटमलभी आर में यहाँ  
आय व। आपन मगला नन्दन का कारवार शुरू किया। आपके तीन पुत्र हुए—सेठ श्यामलाल  
जी, सेठ पापामलजी एवं सेठ रामदयालजी। सेठ पापामलजी के समय में इस कर्म के वैदिक  
व्यापार की वृद्धि हुई। सेठ पापामलजी के पश्चात् सेठ श्यामलालजी के पुत्र सेठ चुन्नीलालजी ने  
इस कर्म के व्यापार तथा मन्वलि में विशेष वृद्धि की। आप देवगाव स्टेट को आर में सार  
कर्म के लिये कन्ट्राक्टर थे, इस व्यापार के लिये आपने मालों में इन्दौर, उज्जैन, मन्वली आदि  
स्थानों में दुकानें स्थापित की। इसके अलावा मन्वली, मगल आदि निम्न स्थानों में भी आपने  
दुकानें थीं। आर के कन्ट्राक्टर के अलावा आप देवगाव स्टेट के मालों एवं वीलों को  
बन्दूक बनवाकर मन्वली करने थे, इसके अलावा टटमाल का काम भी आपने करवा था। आपने  
चुन्नीलाल के नाम से आपने अपनी कर्म पर कपड़े का व्यापार भी आर में किया। इस कर्म  
दुकान के व्यापार को वरिष्ठ निम्न २ स्थानों में सेठ चुन्नीलालजी के द्वारा मगल १५५५। आप  
देवगाव के व्यापारिक मममें के बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखते थे। आपने १५५५। आपने  
नारदप्रसादजी एवं सेठ चुन्नीलालजी। इन दोनों आर का कुटुम्ब इस मम में १५५५। मगल  
आर के व्यापार कर रहे हैं।



श्री १०८ श्री गणेशाय नमः (सुप्रसन्न, सुप्रसन्न)



श्री १०९ श्री गणेशाय नमः (सुप्रसन्न, सुप्रसन्न)



श्री ११० श्री गणेशाय नमः (सुप्रसन्न, सुप्रसन्न)

॥१॥ (१५) कल्याणजी का परिवार—

( अगस्त १९११ )



१९०० में कल्याणजी की अपनी औरही ईश.बाबूजीसिंहजी



सेठ अमरनाथजी की अपनी औरही ईश.बाबू देविदेवी



सेठ रामकाजी की अपनी औरही ईश.बाबू दे

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मुरलीप्रसादजी के पुत्र सेठ मोहनप्रसादजी हैं। आप भी यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आप सेठ मुरलीप्रसादजी के यहाँ संवत् १९६४ में जयपुर से दत्तक आये हैं। सेठ मुरलीप्रसादजी संवत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद रेसिडेंसी—मेसर्स खुन्नीलाल मुरलीप्रसाद } यहाँ वैद्विग व्यापार होता है।  
T.No 357 तारका पता Newsila

हैदराबाद रेसिडेंसी—मुरलीप्रसाद मोहनप्रसाद—पेट्रोल का व्यापार होता है।

मद्रास— मेसर्स मुरलीप्रसाद मोहनप्रसाद } यहाँ वैद्विग कमीशन एवं बान्से  
साहूकार पैठ कम्पनी की एजेंसी का बहुत बड़ा कारबार होता है।

### मेसर्स जमनालाल रामलाल कीमती

इस फर्म के मालिक आदि निवासी रामपुरा (इन्दौर स्टेट) के हैं। आप ओसवाल स्थानक-वासी जैन समाज के सज्जन हैं। रामपुरा से यह श्रद्धुम्ब इन्दौर और मन्दसोर गया और वहाँ सेठ पन्नालालजी कीमती अपने भाई पन्नालालजी से पृथक् होकर संवत् १९४८ में हैदराबाद आये। यहाँ आप बम्बई के धातू पन्नालालजी जोहरी के साथ काम काज करते रहे। इसी समय सेठ पन्नालालजी के पुत्र जमनालालजी और रामलालजी कीमती हैदराबाद में जवाहरात बगैरा का अपना स्वतंत्र कारबार करते रहे आप लोग अपने पिताजी की मौजूदावस्था में अपना कारबार जमा चुके थे। सेठ पन्नालालजी संवत् १९७४ में ७२ वर्ष की आयु में हैदराबाद में स्वर्गवासी हुए।

हैदराबाद में कारबार जमने पर आपने अपनी एक शाखा इन्दौर में भी खोली। इस समय सेठ जमनालालजी और रामलालजी दोनों धाता व्यवसाय कार्य संचालित करते हैं। सेठ जमनालालजी के पुत्र सुखलाल जी का ३१४ साग पहिले स्वर्गवास हो गया, अतः इनके नाम पर श्रद्धुम्ब मदनलालजी दत्तक लिये गये हैं। सेठ रामलालजी कीमती के दत्तक पुत्र रोशनलालजी का भी स्वर्गवास हो गया। ऐसी स्थिति में सेठ जमनालालजी ने अपने वसत्राधिकारी अपने छोटे भ्राता सेठ रामलालजी को बनाया है। आप लोगों ने सेठ पन्नालालजी एवं सुखलालजी के स्मरणार्थ रामपुरा में संवत् १९८४ में जमनालाल रामलाल कीमती लायब्रेरी का ध्द्वाराटन किया है। सेठ पन्नालालजी ने अपनी मौजूदगी में ८० हजार रुपयों की रकम शुभ कार्यों में लगाई थी। श्री सुखलालजी और रोशनलालजी के स्वर्गवासी होने के समय ६० हजार के रोषर्स शुभ कामों के लिये निहाले गये हैं।

यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अन्धरी प्रतिष्ठित मानी जाती है। हैदराबाद और इन्दौर में आपके मकानात आदि हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी—मेसर्स जमनालाल रामलाल कीमती  
हसमतगंज तार का पता Pannali  
फोन नं० 465

} यहाँ जवाहरात और प्रोमेटरी  
नोट रोअर्स का तथा बैंकिंग  
व्यापार होता है।

इन्दौर (सो० आई०)—जमनालाल रामलाल कीमती  
२७ राजूरी बाजार तार का पता  
Kimati

} जवाहरात का तथा बैंकिंग  
व्यापार होता है।

### मेसर्स जयनारायण लक्ष्मीनारायण

इस फर्म के मालिक श्रीचन्द्र ( जोधपुर ) निवासी माहेश्वरी समाज के कलंत्री मन्त्र हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ सदानुष्यजी करीब संवत् १९२५ में हैदराबाद आये थे। आपके ४ पुत्र हुए, जिनमें सेठ राधाकिशानजी एवं जयकिशानजी की यह फर्म है। सेठ सदानुष्यजी का स्वर्गवास संवत् १९५४ में हुआ तथा सेठ राधाकिशानजी का १९५२ में एवं जयनारायणजी १९७६ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ जयनारायणजी के पुत्र सेठ लक्ष्मीनारायणजी बनचौ हैं। आप सेठ राधाकिशानजी के नाम पर दत्तक आये हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेंसी, मेसर्स जयनारायण लक्ष्मीनारायण-यहाँ बैंकिंग व्यापार होता है।

### मेसर्स नारायणलाल बंशीलाल

इस फर्म के मालिक श्रीयुग नारायणलालजी निजी हैं। आप हैदराबाद की प्रसिद्ध फर्म राजा बहादुर मोतीलाल बंशीलाल के मालिक राजा बहादुर सेठ परीशानजी निजी के पुत्र हैं। आप बड़े कमाठी एवं सुद्धिमान नरपुत्रक हैं। बम्बई के कई सार्वजनिक कार्यों में आपका भाग रहा करता है। आपके यहाँ बम्बई और हैदराबाद में प्रचलित बैंकिंग व्यापार होता है। इन कार्यों पर आपकी बहुत ही सारी सामग्री भी है। निजामस्टेट के परिशानजी व्यापारिक कृत्यों में आपका बहुत्म्व भागता जाता है। आपकी फर्म का पता निम्न है। रेसिडेंसी हैदराबाद है।









सर्वप्रथम सेठ पुरुषोत्तमदासजी ने यहाँ शाही घराने से जवाहरात और वैद्विग व्यापार शुरू किया। आपके ३ पुत्र हुए—सेठ किरानदासजी, सेठ हरीदासजी एवं सेठ हरजीवनदासजी। इन सज्जनों में से सेठ किरानदासजी ने राजा पांमुई के चौदा, मादेपुर और बलार शाह जंगलों के गुत्ते लिये, इन जंगलों की लकड़ी “केड़ी” ट्रेडमार्क से आप हैदराबाद, मछलीपट्टम और पार्सी की जहाजी कम्पनियों को बेचते थे। आप निजाम सरकार के १४ त्रिजों के आन्तरी ताडुकेदार नियत हुए, इस परिश्रमस्वरूप आपको निजाम सरकार से जागीरी प्राप्त हुई। सेठ हरीदासजी, राजा पन्डूलाल प्राइम मिनिस्टर के समय में पंचमय्या कमेटी के प्रेसिडेंट थे। यह कमेटी राज्य के फाइनेशियल विभाग व आय व्यय का प्रबंध करती थी। आपका स्वर्गवास संवत् १९१४ में हुआ।

सेठ हरीदासजी के ४ पुत्र हुए—राजा बहादुर सेठ भगवानदासजी, सेठ गुलाबदासजी, सेठ बालकिशानदासजी एवं सेठ गिरधरदासजी। इनमें से सेठ भगवानदासजी और गुलाबदासजी ने विशेष रूपसे व्यापार सम्हाला। सेठ भगवानदासजी ने निजाम सरकार की मद्रुब अती रॉ को लाखों रुपये के जवाहरात सहाई किये, आप हैदराबाद कानून-कार्यशाह कमेटी के मेम्बर थे। आपसे प्रसन्न होकर सरकार ने आपको “राजा बहादुर” का खिताब इनाम किया। आपका एवं गुलाबदासजी का कारबार २५ वर्ष पूर्व अलग अलग हो गया। आप संवत् १९६९ में स्वर्गवासी हुए।

राजा बहादुर सेठ भगवानदासजी के ४ पुत्र हुए—सेठ आनन्ददासजी, सेठ परमानन्ददासजी, सेठ गोपालदासजी एवं सेठ मुकुन्ददासजी। सेठ आनन्ददासजी का स्टेट के प्रारैट और पोलिटिक्ल डिपार्टमेंट से बहुत सम्बन्ध रहता था। आपके स्मारकस्वरूप नाबझरे में विदुष नायजी के मंदिर में धर्मशाला बनाई गई है। आप १९७७ में स्वर्गवासी हुए। सेठ परमानन्ददासजी हैदराबाद चेम्बर आफ कामर्स के प्रेसिडेंट और बैंकों के डायरेक्टर थे। जवाहरात के व्यापार में आपकी अच्छी निगाह थी, आप संवत् १९७४ में स्वर्गवासी हुए।

सेठ मुकुन्ददासजी हैदराबाद चेम्बर आफ कामर्स की आपरेटिव बैंक एंड कंटेन सीजों के डायरेक्टर एवं सरकारी लॉमेम्बर और रेमिडेंसी लोक्ल कड के मेम्बर थे। पत्रिका कामों में भी आप सहयोग लेते थे। आप संवत् १९८४ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इन फर्म के मागिक सेठ परमानन्ददासजी के पुत्र सेठ निरानदासजी, सेठ गोपालदासजी के पुत्र सेठ किरानदासजी, सेठ मुकुन्ददासजी के पुत्र सेठ झारदासजी, सेठ बालकिशानदासजी, रामोदरदासजी एवं गोविन्ददासजी हैं। इनमें से सेठ निरानदासजी एवं किरानदासजी फर्म का व्यवसायिक एवं राजकीय कारबार सम्हालते हैं। रंग मच चदने हैं। पर मुकुन्द हैदराबाद के व्यापारिक समाज में बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। निरान सेठ





स्व० मेड रूपचंदनी कीचर ( मदनचंद रूपचंद ) हैदराबाद रेमिडेंसी



मेड मेनकाबेनी कीचर ( मदनचंद रूपचंद )  
हैदराबाद रेमिडेंसी



मेड मोहनबायनी लाली ( मदनचंद रूपचंद )  
हैदराबाद रेमिडेंसी

से इस कुटुम्ब के बहुत तास्तुकान आरंभ में चले आते हैं। आरका व्यापारिक परिवय इस प्रकार है।

हैदराबाद (दक्षिण)—मेसर्स भगवानदास हरीदास एण्ड संस  
रेसिडेन्सी T. No. 347 तार का पता  
Krishna } यहाँ वैकिंग व जवाहरात का  
व्यापार होता है।

### मेसर्स मदनचंद रूपचंद

इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ मेपरजजी कोबर हैं। आप बीकानेर-निवासी भोसवात इन्तेन्सिभर जैन समाज के सज्जन हैं। करीब १०० साल पूर्व सेठ मदनचंदजी वैदल मार्ग द्वारा हैदराबाद आये थे। आपके पुत्र सेठ बदनमज्जजी आपकी मीशूदगी ही में स्वर्गवासी हो गये थे। एतदर्थ आपके यहाँ सेठ रूपचन्दजी बीकानेर से दत्तक लाये गये। इस फर्म के व्यवसाय की नींव सेठ मदनचन्दजी के हाथों से ही जमी। आपने अच्छी प्रतिष्ठापूर्वक जीवन बिवाया।

सेठ रूपचंदजी कोबर बड़े लोग प्रिय सज्जन थे, कानून की आरफो आरफी जानकारी थी, कुपपाक सीधे के जीमोडार करने वाले ४ सज्जनों में से एक आप भी थे। आप संवत् १९६६ में स्वर्गवासी हुए। आपके नामपर आपके भतीजे सेठ मेपरजजी संवत् १९६६ में गोद लिये गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मेपरजजी कोबर हैं। आप शिक्षित एवं बन्त विचारों के सज्जन हैं। आप इस्लामगुदा के भी इनुमानजी के प्रधान ट्यूटो एवं मारवाड़ी मण्डल के अध्यक्ष हैं। हैदराबाद के मारवाड़ी नवयुवक समाज द्वारा होने वाले कार्यों में आप सद्बोध दते रहते हैं। आपके व्यापारिक परिवय इस प्रकार है।

हैदराबाद-रेसिडेन्सी-जोसम मदनचन्द रूपचन्द } वैकिंग मन्ड जवाहरात का व्यापार होता है।

### मेसर्स मनीराम रामरतन राठी

इस फर्म के मालिक मन्गेर ( जोधपुर स्टेट ) निवासी मन्गेरजी समाज के राष्ट्रीय सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन १५० वर्ष पूर्व सेठ सादरतनजी ने किया। इसके पहले मिरब और इन्दौर में कारबार करते थे। आपके बाद सेठ मनीरामजी एवं सेठ रामरतनजी के जमाने में इस दूकान के उद्वेगार की लरबी हुई। सेठ रामरतनजी ने मुदिपाड़ ( जोधपुर स्टेट ) में २ धर्मरतनजी तथा मन्गेर में एक मन्दिर बनवाया। आप ४० साल पहिले स्वर्गवासी हुए।

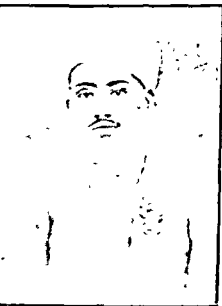
सेठ रामरतनजी के २ पुत्र हुए, सेठ मुम्दरजी और द्वावारासजी। सेठ द्वावारासजी का मन्व १९०५ में स्वर्गवास हुआ।







स्व० राय साहब सेठ घाम्नीरामजी ( रामदयाल घाम्नीराम ) हैदराबाद



स्व० देवदयालजी ( रामदयाल घाम्नीराम )  
हैदराबाद



स्व० नारायणदासजी तिवारी ( श्रीदुलाल नारायणदास )  
हैदराबाद

## मेमर्न रामदयाल घासीराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास-स्थान मीठड़ी ( हीडवागा-जोपुर स्टेट ) है। आप काकावाल वैश्य समाज के वांछल गोत्रीय मन्त्रण हैं। इस फर्म के संस्थापक सेठ मोतीराम जी संवत् १९२९ में देरा में ईश्वरदास आये। उस समय आपके पुत्र सेठ रामदयाल जी एवं घासीरामजी कमरा: १४ और ११ वर्ष की अवस्था में आपके साथ थे। सेठ मोतीराम जी ५ साल तक यहाँ मामूली काम काज करते रहे, पश्चात् संवत् १९३५ में आपने उत्तरोत्त फर्म की स्थापना की। सेठ मोतीराम जी के दूसरे पुत्र सेठ घासीराम जी बहुत उपयुक्ति के प्रतापी पुरुष हुए। आपने एरंडी और ननक के व्यापार में बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। इन व्यापारों के अतिरिक्त जवाहरात एवं अनाज के व्यवसाय में भी आपने अच्छी वृत्ति की थी। इन सब व्यापारों के अलावा आपने निजाम स्टेट के आवकारी का कंट्रॉक्ट करीब १५ वर्ष पूर्व लिया, एवं इस काम के लिये निजाम स्टेट के कई स्थानों में अपनी दुकानें खोलीं।

रायसाहब सेठ घासीराम जी बड़े साहसी एवं सरल प्रकृति के महाबुध्द थे। एक बार आपने एक जवाहरात के बंद यन्त्र को चारह लाख पंद्रह हजार रुपयों में खरीद कर उपस्थित जीहरी समाज में बड़ा आश्चर्य पैदा कर दिया था। एक बार संवत् १९५८ में जब आप एरंडी का पेमेंट करने के लिये २० हजार रुपये लेकर गाड़ी में जा रहे थे तब अचानक आप पर ७-८ अरबों ने हमला किया, तब बड़ी मुश्किल से अपनी आत्मरक्षा कर घावों पर टोंके लगवाने के लिये आप स्वयं अस्पताल गये। संवत् १९६५ में क्रुह के समय एवं महासमर टाइम में अनाज की महंगी के कंट्रोल लेकर आपने जनता की बहुत मदद की थी, १५ वर्ष पूर्व आपने श्री वेकटेश्वर गौरीनाथ का स्थापन किया और तब से अभी तक आपकी फर्म करीब १० हजार रुपयों प्रतिवर्ष उक्त गौरीनाथ के लिये कार्य करती है। यूरोपीय युद्ध के समय एक बड़ी रकम गवर्नमेंट को लोन के रूप में देने के कारण आप सन् १९१८ में राय साहब की पदवी से सम्मानित किये गये। इस प्रकार गौरवमय जीवन बिताने हुए आप संवत् १९८३ की पीपबर्दी २ को स्वर्गवासी हुए। आपके यहाँ इन्दौर से ( आपके काका सेठ कनकमलजी के पुत्र ) सेठ गोपीकिशानजी संवत् १९४७ में दत्तक लाये गये। आप भी धार्मिक प्रवृत्ति के महाबुध्द हैं। इस समय आपके तीन पुत्र हैं जिनमें श्रीव्यङ्कटलालजी व्यापारिक कामों में भाग लेते हैं तथा चंशीलालजी एवं नल्यूलालजी विद्याध्ययन करते हैं। श्री व्यङ्कटलालजी में आपने पितामह रायसाहब सेठ घासीरामजी के सद्गुणों की बहुत अधिक परछाई आई है। आप बहुत सरल प्रकृति के निरभिमानी नवयुवक हैं। इस समय आपकी आयु २४ वर्ष की है। इतनी स्वल्प आयु में आप फर्म का व्यापार बड़ी तत्परता से संवाहित करते हैं। नवयुवकों





कन्हैयालालजी सेन्ट्रल बैंक रेसिडेंसी में ट्रेझरर हैं। तथा रामानुजदासजी के नाम से १२ साल से बैङ्किग व्यापार चालू किया गया है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स रामचन्द्र हनुवतलाम  
बेगम बाजार } किराने और गले का व्यापार होता है।

हैदराबाद—रामानुजदास बैंकर्स  
बेगम बाजार T. NO 307 } बैङ्किग व्यापार होता है।

### गोस्वामी लालगिरि विनोदगिरि

इस पानदान के पूर्वेज महंत इलायचीनाथजी ज्वालामुखी ( पंजाब ) में निवास करते थे। आप कांगड़ी जिले के पहाड़ी रजवाड़ों के साथ लेन देन करते थे। आपने दसनाम गोस्वामियों में कई भंडारे किये और अच्छा नाम पाया। आपके बाद क्रमशः कंसरगिरिजी, रामकिरान-गिरिजी एवं नरपतगिरिजी हुए। गोस्वामी नरपतगिरिजी सन् १२४४ हिजरी में भादशाह नासिर-हौला के जमाने में हैदराबाद आये। आपके समय में बैङ्किग और शाज दुशालों का व्यापार होता था। आपके चले प्रभातगिरिजी के हाथों से व्यवसाय पर्य सम्मान की विरोध वृद्धि हुई। आपने रामेश्वर यात्रा करने वाले अभ्यागतों के लिये लोटा, धाती पर्य कम्पत का सदावर्त जारी किया। आपके पश्चात् रत्नगिरिजी, घूमागिरिजी एवं हरनामगिरिजी ने क्रम का व्यवसाय सम्हाला। वर्तमान में परम के प्रधान मालिक गोसाई हरनामगिरिजी के चले भीतालगिरिजी हैं। आप यहाँ के बहुत प्रतिष्ठा-प्राप्त सज्जन हैं। हिन्दी भाषा से आपको विरोध स्नेह है। सन् १९२० में कई हजार रुपये की लागत से आपने एक यज्ञ किया। पनारस में आपकी एक परमसाला बनी है, जिनमें २० विद्यार्थी प्रतिदिन भोजन पाते हैं। आपके चले भीविनोदगिरिजी स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमान में परम का व्यवसायिक एवं राज दरबारी कार्यभार भीविनोदगिरिजी के चले महेशगिरिजी एवं आपके चले भीमुषनेरगिरिजी संभालित करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स लालगिरि विनोदगिरि  
बेगम बाजार  
T. No 207

} इस परम में बैङ्किग व्यापार तथा नशाब जमींदारों और जागीरदारों के साथ लेन देन का व्यवहार होता है। कम्बई तथा हैदराबाद में इस परम की कई बोटियों का किराया आता है।

द्वैतवादा—रेसिडेंसी-मेसर्स महेशगिरि सुवनेशगिरि } वैदिक तथा पार्सी पर रूप्य देने का  
 व्यापार होता है ।  
 तांडूर ( गुजराती ) मेसर्स लालगिरि विनोदगिरि—उपरोक्त व्यापार होता है ।

राजा बहादुर विमेशगिरि वीरभानगिरि

इस स्थानदान के पूर्व राजा गोस्वामी नरपतगिरिजी जालामुखी ( पंजाब ) से सन् १२४४  
 दिवसी में द्वैतवादा आये । आपके ३ बेटे हुए, महेशगिरिजी, प्रभानगिरिजी एवं सुभगा  
 गिरिजी । इन में से सुभगागिरिजी से इस कुटुम्ब का ऐतिहासिक सम्बन्ध है । सुभगा  
 गिरिजी के पश्चात् कमरा शिवगिरिजी, पुत्रगिरिजी, संगमगिरिजी रगतगिरिजी,  
 वामेश्वरगिरिजी एवं राजा बहादुर विमेशगिरिजी हुए । गोस्वामी पुत्रगिरिजी के समय में इस  
 कुटुम्ब के व्यवसाय की विशेष उन्नति हुई ।

राजा बहादुर विमेशगिरिजी की निजाम सरकार बहुत इज्जत करने थे । आपने भूपति  
 निजाम की महदूषणा बहादुर गुजरात दूत के कलकत्ता और इतली में जीतने समय को  
 जलसे किया था, इसमें मुगल होकर आपका सरकार ने सन् १२५० दिवसी में राजा बहादुर का  
 निजाम और उद्धार रूप्य नकद दिया । तथा १२५० सन् १२५० का प्रतिपादक बनाया ।  
 निजाम सरकार की वर्यायत के उपलक्ष्य में इममान जो बहुत बड़ा जलमा पत्रिक की तरह से  
 द्वैतवादा में हुआ करता था, उसके आप समायोजन व आप १२५० में भाग्यशाली हुए ।

वर्तमान में इस काम के मासिक राजा बहादुर विमेशगिरिजी का वन भाग्यशाली बीरभान  
 गिरिजी हैं । आपने हमसमयत । रामदुला के मासिक रूप्य का मुनि उदात्त की है ।  
 आपने वन में दुःखमान नरपुत्रक है । आप अति शीघ्रतर १२५० में भाग्यशाली व द्वैतवादा की  
 वन दुःखमान के सम्बन्ध है । आपने वन भाग्यशाली जो उदात्त उदात्त के विरुद्ध  
 वन समजन है । आपका व्यापारिक जीवन इस उदात्त है ।

द्वैतवादा—राज्यामी राजा विमेशगिरि } यहाँ १२५० तथा १२५० के उदात्त उदात्त,  
 बीरभान-गिरि वन न. १२५० } वनभागी का मुद्रा व वन न. १२५० के उदात्त उदात्त  
 वन का काम होता है ।

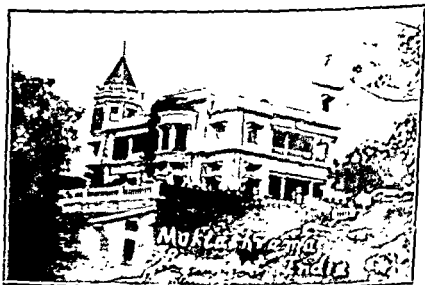
विमेशगिरि, सुभगा — वनभागी राजा विमेशगिरि १२५० आपने उदात्त है ।  
 वन न. निजाम मुद्रा — बीरभानगिरि वन न. १२५० इममान व वन न. १२५०

के भाग्य १२५० में वन न. १२५० वन न. १२५० के उदात्त वन न. १२५० के उदात्त वन न. १२५० के उदात्त  
 वन न. १२५० के उदात्त वन न. १२५० के उदात्त वन न. १२५० के उदात्त वन न. १२५० के उदात्त  
 वन न. १२५० के उदात्त वन न. १२५० के उदात्त वन न. १२५० के उदात्त वन न. १२५० के उदात्त





सेठ वामन रामचंद्र नाइक (वामन रामचंद्र नाइक) हैदराबाद    सेठ वामन नाइक (वामन रामचंद्र नाइक) हैदराबाद



मुखाधम रिजिडेंट ( वामन रामचंद्र नाइक ) हैदराबाद

सेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक जागीरदार

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्री वामनराव नाइक जागीरदार हैं। आप के पूर्वज बापूजी नाइक बीजापुर में वैदिक व्यापार करते थे। श्री बापूजी नाइक ने दौराबाद के नारायण पेट नामक स्थान में अपना साहुकारी लेनदेन का काम जारी किया। आप के पुत्र श्री वमाकांत जी नाइक को दौराबाद स्टेट के संस्थानिक राजा साहब गदवाड ने अपनी स्टेट में साहुकारी व्यापार करने के लिये आमंत्रित किया, श्री वमाकांतजी नाइक के पौत्र ( श्री बंकोबा नाइक के पुत्र ) श्री गोविन्दनाइक एवं श्री बंकोबा नाइकने इस कुटुम्ब में सबसे अधिक मान मर्यादा प्राप्त की। आप दोनों मजनों ने "गदवाल" एवं "वनरती" स्टेट के दीवान का पद सुरोभित किया। इस समय लारों रूपों की सन्धि इन स्टेटों में इस फर्म की साहुकारी व्यवसाय में लगी रहती थी। आप दोनों भावाओं को एक स्टेटों ने जागीरी देकर सम्मानित किया। व्यवसायिक एवं राजकीय कार्यों के अलावा श्रीमान् गोविन्द नाइक एवं श्रीमान् बंकोबा नाइक ने गुल्मा नदी पर एवं जी० हार्डिंगों के स्टेशन पर दो धर्मशास्त्रों बनवाई, रामेश्वर तथा कारी जाने वाले यात्रियों के लिये भोजन तथा भस्त्राव का प्रबन्ध किया, कई यज्ञ किये, एवं तीन बार देवालियों का निर्माण कराया, वनरती राजा साहब से "व्यापारला" नामक माम को बुद्ध जनों सहित कर अग्निशेष प्राप्तियों को दिया। इस प्रकार आप दोनों सज्जन कर्मजः १९२३-१९-१८९५ एवं जून सन् १८८२ ईस्वी को स्वर्गवासी हुए। श्रीमान् गोविन्द नाइक के २ पुत्र हुए, श्रीरामचन्द्र नाइक एवं श्रीनिवाम नाइक। इनमें श्री रामचन्द्र नाइक अपने पांचा बंकोबा नाइक के स्वर्गवासी होने के २७ दिन बाद ही ३६ वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हुए। श्रीमान् बंकोबा नाइक के पुत्र श्रीवामदेव नाइक बकीली करने थे, एवं श्रीगोविन्द नाइक परानर इन्फेक्टर जनरल आरु रंवेन्स्यू दौराबाद हैं। श्रीगोविन्द नाइक के बड़े पुत्र श्रीरामचन्द्र नाइक के ३ पुत्र हुए श्रीश्यामि नाइक, श्री श्रीश्यामि नाइक एवं श्रीबानन नाइक। इन सभनों में श्रीबानन नाइक विद्यमान हैं। श्रीश्यामि नाइक के पुत्र श्रीरामचन्द्र नाइक दौराबाद के प्रसिद्ध वैरिक्टर हैं। श्रीगोविन्द नाइक के छोटे पुत्र श्रीबनाकांत नाइक के २ पुत्र हैं जिनमें बड़े बंकोबा नाइक व्यापार करने हैं एवं छोटे कृष्णजी नाइक इंफेक्टर दौराबाद हैं। श्रीबनाकांत नाइक के पुत्र श्रीरामचन्द्र नाइक के पौत्र श्री वामन रामचन्द्र नाइक वर्तमान में इस फर्म के संवालक श्रीमान् गोविन्द नाइक के पौत्र श्री वामन रामचन्द्र नाइक हैं। आप दक्षिणी प्रांत्य समाज के देशग्य सज्जन हैं। आप विद्यादेवी, देवानक एवं मरज समाज के सज्जन हैं। विदुष कारी से आप को विराय रतेह है। आपकी धोर से दौराबाद विरुद्ध बहिनी पत्रालिका के नाम से एक हार्ड मून बन रहा है जिनमें ८०० छात्र शिक्षा

लाभ करते हैं। इसके साथ कन्या पाठशाला एवं बोर्डिंगहाउस भी है। बोर्डिंग में छात्रों के लिये भोजनदि का प्रबन्ध है। पुंग एवं इन्प्ल्यूएजा के समय जनता की बहुत आपने सेवाएँ की थीं। इस समय आप हैदराबाद म्युनिसिपैलैटी के मेम्बर, सनातन धर्म सभा और सोशियल सर्विस लीग के प्रेसिडेंट हैं। आप के पुत्र श्रीयुक्त श्रीवर वामन नाइक हैदराबाद हाईकोर्ट में बैरिस्टर करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक जागीरदार  
गमलीगुदा, वेगमपैठ।  
T. No. 135, 375

यहाँ "गदवाज" एवं "बनवनी" संस्थान की जमींदारी एवं वैदिक काम होता है।

इसके अलावा परभनी, नांदेड़, निजामाबाद, मेदक और कामारडी में आपकी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीय एवं राइस मिल हैं।

### मेसर्स सदामुख जानकीदास

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान श्रीकानेर है। आप माधेधरी वैश्य समाज के हागा सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ सदामुखजी हागा के हाथों से निजाम स्टेट के डेगलूर नामक स्थान में १५० वर्षों से अधिक समय पहिले हुआ था। करीब ४० सालों तक आप डेगलूर में व्यापार संचालित करते रहे, आपही के समय में हैदराबाद में भी दुकान खोली गई। सेठ सदामुखजी एवं श्रीलालजी अबीरचंदजी का बहुत सन्निकट कौटुम्बिक सम्बन्ध है। आपके पञ्चम आपके पुत्र सेठ जानकीदासजी ने व्यवसाय सम्हाला, आप दोनों सत्रों के समय व्यवसाय बराबर बढ़ता गया। सेठ जानकीदासजी के २ पुत्र हुए। सेठ गंभीरचंदजी हागा, फैसरहिन्द सर कस्तूरचंदजी हागा, तथा सेठ मुगनचंदजी हागा। इन सत्रों में सर कस्तूरचंदजी हागा मेसर्स श्रीलाल अबीरचंद फर्म में रक्तक गये, तथा शेष दोनों भागा फर्म का व्यापार संचालन करते रहे। फैसरहिन्द कस्तूरचंदजी हागा ने मेसर्स श्रीलाल अबीरचंद के नाम और व्यापार का बहुत धमकाया, आपका विल्लुन परिषय हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में दिया जा चुका है।

सेठ गंभीरचंदजी एवं सेठ मुगनचंदजी दोनों भागाओं में सेठ गंभीरचंदजी ४० वर्ष की आयु में संवत् १९४१ में स्वर्गवासी हुए। आपके पञ्चम फर्म का सारा कारबार सेठ मुगनचंदजी ही देखने रहे। श्रीकानेर की पंच पंचायती एवं गावैतनिक कामों में आपका अत्यंत हाथ रक्ता था, हैदराबाद के शाहीपराने एवं नवाबों के साथ आपने देन देन का व्यवहार आरंभ किया जो पूर्ववत् इस फर्म पर चला आया है। मेड़ना में आपने धर्मशाखा बनवाई एवं













दीवान बहादुर ( सरदारमल मुगनमल ) हैदराबाद



सेठ मुगनमलजी की पत्नी (सरदारमल मुगनमल) हैदराबाद



सेठ इंदरमलजी की पत्नी (सरदारमल मुगनमल) हैदराबाद

एवं सन् १९१९ में दीवान यद्वादुर की पदवी देकर आपका सम्मान किया है। बीकानेर दरबार ने भी आपको दोनों पैरों में मोना, ताजम, हाथी, पालकी एवं लड़ी बलसी है।  
 आपकी ओर से केसरियाजी में एक धर्मशाला तथा मल्लिनाथजी में एक मकान बना हुआ है। आपके ४ पुत्र हुए पर चारों स्वर्गवासी हो गये। आपके बड़े पुत्र श्रीयुक्त सरदार मलजी एवं सुगनमलजी के नामों से उपरोक्त दुकान है। श्रीयुक्त सुगनमलजी के नाम पर श्री-इन्द्रमलजी अजमेर से दसक लाये गये हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दैदरायाद—रेसिडेंसी कोठी—मेसर्स सरदारमल सुगनमल—यहाँ जवाहरान का व्यापार तथा वैदिक व्यापार होता है।

### मेसर्स सीताराम रामनारायण

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास छोटी खादू ( जोधपुर स्टेट ) में है। आप माहेश्वरी वैद्य समाज के लोया सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ रामनारायणजी लोया ( सेठ धनरूपजी के पुत्र ) केवल ५ वर्ष की अल्प आयु में यात्रियों के साथ संवत् १९०१ में दैदरायाद आये थे। ११ साल बाद आप शिवकरण रामदास की दुकान पर नौकर हो गये, आपने वहाँ ऐसी प्रतिभा दिखाई कि धीरे २ वस दुकान पर नौकर हो गये, आपने वहाँ दुकान का शाही घराने के साथ कपड़े का लेन देन था। इस प्रकार कपड़े के व्यापार में अनुभव प्राप्त कर आपने संवत् १९२६-२७ में अपनी स्वतंत्र दुकान की।

सेठ रामनारायणजी लोया ने अपनी स्वतंत्र दुकान की। इस प्रकार कपड़े के व्यापार में अनुभव प्राप्त कर आपने संवत् १९२६-२७ में अपनी स्वतंत्र दुकान की।  
 श्रीरंगम में एक धर्मशाला बनवाई। दैदरायाद में नदी के किनारे धर्मशाला बनवाई, आपने के मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया, सीताराम याग में धर्मशाला बनवाई तथा लकड़ी का विशाल रथ चढ़ाया। इसी प्रकार महाराजगंज, सोमाजी, गुदा एवं अलवाल के मंदिर में काम करवाये तिरपती बालाजी में आपने कोठियाँ, हाल तथा दीवारें बनवाई, नल की व्यवस्था की, आपकी ओर से थितानूर, पद्मावती, बालाजी तथा विष्णुकोंची में सदावर्त का प्रबन्ध है। आपका स्व-वास संवत् १९७७ की चैत्रवदी ८ को हुआ। आपने मीर मद्दयू अली पातराह के सा-देहली और काशी की यात्रा की थी। आपके पुत्र सेठ रामधनजी आपकी मौजूदगी में ही सं-१९७६ की आपाद् मुद्दी १२ को स्वर्गवासी हो गये थे।

पर्वगान में इस फर्म के मालिक सेठ रामधनजी के पुत्र सेठ व्यंकटलालजी लोया दैदरायाद में सन् १९२६ के अ० भा० वैष्णव सम्मेलन के आप उपसभापति निर्वाचित हुए







स्व० सेठ रामनारायणजी शोया (संताराम रामनारायण)



स्व० सेठ श्यामधनजी शोया (संताराम रामनारायण) श्री० सेठ श्यामधनजी शोया







आपके परिश्रम से चैलापुरा में राजस्थानी हिन्दी विद्यालय तथा लाइवानार में सरस्वती हिन्दी पुस्तकालय खोला गया है। इस समय आप रेसिडेंसी-मारवाड़ी पाठशाला के वादम प्रेसिडेंट हैं। आपने छात्रों में श्रीसोवल्जों के मंदिर की प्रतिष्ठा एवं जीर्णोद्धार कराया, इसी प्रकार के धार्मिक कामों में आप सहयोग देते रहते हैं। आपके पुत्र श्रीनिवासजी हिन्दी पढ़ते हैं।

आपकी फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। गेट राम-नारायणजी के समय से इस फर्म की एक प्रांच बम्बई में स्थापित है। इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है—

हैदराबाद—मेसर्स सीवाराम रामनारायण, चौक  
T. No. 56

बम्बई—मेसर्स सीवाराम रामनारायण  
कालवादेबोरोड

} यहाँ देत आगिम है, तथा पैट्रिंग एवं  
कपड़े का व्यापार होगा है।

} यहाँ आदत का काम होगा है।

मेसर्स सूरतराम गोविन्दराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवास स्थान नागौर (मारवाड़) है। आप मालिकों के परामर्श से हैदराबाद आये हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ गोविन्दरामजी अठारहवीं शताब्दि में द्वितीय निजाम अलीगो बहादुर के समय में हैदराबाद आये थे। आपके पुत्र सेठ सूरतरामजी ने इस फर्म पर पैट्रिंग व्यापार कार्य किया। आपने इस फर्म की बाहरी छतों में बड़े शानदार खोली। आपका स्व १८२० में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ गोविन्दरामजी ने व्यवसाय सहाया। आपने मद्रास एवं तिमलपुरा में फर्म खोली। बन्बई एवं इन स्थानों पर मद्रास में एक जगह सर्विस शोर्षा, जो सहाय एवं मात्र हो जाने का कार्य करती थी, इस व्यवसाय में भी आपने बहुत सफलता प्राप्त की। बड़ा जगह है कि सेठ गोविन्दरामजी ने एक फर्म सेठ राम ने एक बार १ लख रुपये माँगा, तो आपने मुठ हो एक लाख रुपये की सहायता इस फर्म का कार्य ७५ करोड़ लक्ष माँगी गयी। सेठ सूरतरामजी की भी मुठकी कार्य के समय में प्रतिष्ठ थी। आपने हैदराबाद के धार्मिक जगह में बहुत बड़ा काम किया। सेठ गोविन्दरामजी के बाद बन्बई जयपुरामदासजी एवं पन्डरामदासजी ने व्यवसाय सहाया। इस फर्म के बन्बई मालिक सेठ सुन्दररामजी हैदराबाद में एक कार्य







२३० राजारामदुस लाला मुखदेव महायत्री  
जीवरी—देवरावाद रमिदेवी



२३१ बाबा रामनारायणजी देवरावाद देविदेवी



२३२ श्री बाबा ए.व. महादेवरावजी देवरावाद देविदेवी

लाला रामनारायणजी वड़े क्त्साही और साहसी व्यापारी थे। आपके समय में इस फर्म के व्यापार और सम्मान की विशेष वृद्धि हुई। आप हैदराबाद स्टेट के वड़े प्रतिष्ठित जीहरी थे। लालों रुपयों के जवाहरात आपने निजाम सरकार को सप्लाई किये। दरवार में आपकी अच्छी इज्जत थी। कानोड़ में आपने सदावर्त चालू किया। तथा और भी जैन धर्म के कार्यों में अच्छी सहायताएँ दीं। आप ८४ वर्ष की अवस्था में अपने पुत्र लाला मुखदेवसहायजी पर कारभार छोड़कर स्वर्गवासी हुए।

लाला मुखदेवसहायजी ने करीब १ लाख रुपया खर्च कर जैन धर्म की कई पुस्तकें तथा बालब्रह्मचारी जैनमुनि श्रीमोलक श्रुतिद्वारा अनुवादित ३२ जैनग्रंथों की एक हजार प्रतियाँ खरीदकर बटवाईं। आपने फलकत्ते में दुकान की एक शाखा खोली। आपकी सेवाओं से प्रसन्न निजाम सरकार ने आपको राजाबहादुर का खिताब इनायत किया। आप संवत् १९८४ में स्वर्गवासी हुए।

राजा बहादुर लाला मुखदेवसहायजी के पश्चात् आपके पुत्र लाला ज्वालाप्रसादजी ने इन फर्मों का कार्यभार सम्हाला। आप ही वर्तमान में इस फर्म के मालिक हैं। आपको पटियाला नरेश की तरफ से ४ कांस्टेबल और १ सार्जेंट की गार्ड आरिंर मिली है। आप पटियाला स्टेट के प्रतिष्ठित रईसों में माने जाते हैं। आपके ही समय हैदराबाद में चारकमान से रेंसिडेसी में कारवार शुरू किया। हैदराबाद के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी मातबर मानी जाती है। आपके पुत्र माणकचंदजी ३ वर्ष के हैं। आपके कारवार का हाल इस प्रकार है।

हैदराबाद—(रेंसिडेसी) राजा बहादुर लाला मुखदेव-  
सहाय ज्वालाप्रसाद बैंकर्स  
शार का पता Lala Poon 569

बैङ्किंग, जवाहरात और  
आदत का काम  
होता है।

फलकत्ता—ज्वालाप्रसाद जगदम्बाप्रसाद  
७१ बड़वड़ा स्ट्रीट, शार का पता  
Gulab Pul फोन नं० 2769 B.B.

यहाँ गन्ना, कारदाना, भाइन,  
फिराना का काम  
होता है।

कानोड़—महेन्द्रगढ़ ( पटियाला स्टेट ) लाला नेत्रधाम  
रामनारायण लाला भवन

यहाँ आपका काम निवाम-  
स्थान है।

## मेसर्स हरगोपालदास रामलाल

इस फर्म के मालिकों का आदि निवासस्थान गनेड़ी ( सीकर ) है। यहाँ से यह कुटुम्ब महाराजा लक्ष्मणसिंहजी के समय में लक्ष्मणगढ़ आकर निवास करने लगा। आर क्रमशः वैश्य समाज के सिंहाल गोत्रीय गनेड़ी वाला सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ महानंदरामजी देश से पैदल मार्ग द्वारा संवत् १८६२ में हैदराबाद आये। एवं आप ही के हाथों से यहाँ फर्म की स्थापना हुई।

सेठ महानंद रामजी यहाँ सरकारी पोतदारे का काम महानंदराम पूरनमल के नाम से करते थे इसके अलावा आपने राज्य के साथ लेनदेन का सम्बन्ध भी जारी किया। कलकत्ता बंधन आदि बड़े शहरों उस समय आपकी बहुत सी दुकानें काम करती थीं। आपके पुत्र सेठ पूरनमलजी इस कुटुम्ब में बहुत प्रतापी एवं मेधावी पुरुष हुए, आपने इस फर्म के सम्मान सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा में विशेष रूप से वृद्धि की। आप निजाम स्टेट के ख्याति प्राप्त साहुकार माने जाते थे। सरकारी पोतदारे के अलावा आपने फर्म के वैदिक व्यापार की भी विशेष वृद्धि की।

व्यापारिक उन्नति के साथ २ हैदराबाद का प्रसिद्ध सीताराम बाग आपने बनवाया। इस मंदिर की प्रतिष्ठा संवत् १८८२ की ज्येष्ठ सुदी २ को की गई। यह मंदिर हैदराबाद के प्रसिद्ध हिन्दू देवालयों में गिना जाता है। इसके स्थाई प्रबंध के लिये निजाम सरकार आपका वादशाह ने ७५ हजार सालाना की जागीर निकाल कर सेठ पूरनमलजी का शक्ति सत्कार किया था। इसकी जागीर पानगाँव, बलगाँव, आठोली आदि स्थानों में है। इसके अलावा एक श्रीरंगजी का मंदिर पुल्कर में भी बनवाया, इसकी प्रतिष्ठा संवत् १९०० में की गई। इस मंदिर के स्थाई प्रबंध के लिये राजपूताने में सीकर दरबार की ओर से १५००) सालाना की जागीर प्राप्त है।

सेठ पूरनमलजी के पश्चात् इस फर्म का व्यापार भार क्रमशः सेठ प्रेमगुणदासजी सेठ हरगोपालदासजी एवं सेठ रामलालजी ने सम्हाला आप तीनों सज्जनों में से प्रेम गुणदासजी संवत् १९१२ में एवं सेठ हरगोपालदासजी संवत् १९४० में स्वर्गवासी हो गये हैं। तथा वर्तमान में यह साहच सेठ रामलालजी विद्यमान हैं, एवं आप ही फर्म के प्रधान मालिक हैं।

राजसाहब सेठ रामलालजी गनेड़ी वाला—आपका जन्म संवत् १९०५ में हुआ। सेठ पूरनमलजी के पश्चात् फर्म के सम्मान में आपके हाथों से विशेष वृद्धि हुई, काल्पनिक वित्त के अभाव में विशेष जानकारों इन्होंने हैं। आपने निजाम सरकार से बरगों तक मुहूरतमा लपट्टा बर्गों तक की रचन ली, आप अ० आ० मारवाड़ी व्यापार महामन्त्र के विशेष अधिकार के बंधन में एवं





सामाजिक व्यासंगियों का परिचय:—  
( संसद भवन )



श्री रामदास शेट्टी रामदासजी गजेंद्रबाबा  
( हरमोचलदास रामदास )



श्री० शेट्टी मुरलीधरजी गजेंद्रबाबा  
( हरमोचलदास रामदास )



श्री शेट्टी ददासाहेबजी गजेंद्रबाबा  
( हरमोचलदास रामदास )

४० भा० मा० अमवाल पंचायत के कलकत्ते वाले अधिवेशन में समापित निर्वाचित हुए थे। आप हैदराबाद लेजिस्लेटिव् असेम्बली के मेम्बर रह चुके हैं। आपसे प्रसन्न होकर भारत गवर्नमेंट ने सन् १९१० में आपको राय साहब की पदवी दी। आप भी सीवाराम याग के सुतम्बली हैं, आप यहाँ के मारवाड़ी पंचायती के पंच माने जाते हैं। आपके २ पुत्र हुए, सेठ मुरलीधरजी एवं सेठ लक्ष्मीनिवासजी। सेठ मुरलीधरजी स्वर्गवासी होगये, एतदर्थ आपके नाम पर श्रीलक्ष्मी निवाधजी दत्तक हैं। वर्तमान में रायसाहब सेठ रामलालजी फर्म का व्यापारिक काम अपने सुयोग्य पौत्र सेठ लक्ष्मीनिवासजी पर छोड़कर शांति लाभ करते हैं।

सेठ मुरलीधरजी—आप २० वर्ष की उम्र से ही लक्ष्मणगढ़ में निवास करने लगे थे, यहाँ की जनता में आपने बहुत दयावि पाई। आपका स्वर्गवास संवत् १९८५ की पौष वद्री ३ को हुआ, आपके सम्मानस्वरूप लक्ष्मणगढ़ की जनता ने आपके स्वर्गवास के दिन हड़ताल बनाई एवं आपके द्वादशी में स्वयं सीकर महाराज ने आकर अमंग्य रूप से भाग लिया। लक्ष्मणगढ़ की जनता आपकी जीवनी पुस्तकाकार रूप में अलग प्रकाशित करा रही है। सीकर दरबार में इस बुद्धि को कुर्सी प्राप्त है, लक्ष्मणगढ़ में आपकी बहुत सी स्थाई सम्पत्ति है।

वर्तमान में इस फर्म के प्रधान संचालक सेठ लक्ष्मी निवासजी गनेड़ी बाला हैं। आप बहुत गंभीर सरल स्वभाव के पदार नवयुवक हैं। लक्ष्मीविलास तथा पद्माविलास नामक आपकी यहाँ मुंदर विस्किंग्ज बनी हुई है। अभी हाल ही में आपने लक्ष्मी बैंक की स्थापना की है। इसमें नवीन पद्धति से बैङ्किग व्यापार किया जाता है। तथा कुछ मास पूर्व आपने येजवाड़ा में एक कॉटन मिल खरीदा है, इस प्रकार अपनी फर्म के व्यवसाय को विस्तृत करने के लिये आप यहाँ तत्परता से व्यापारिक कामों में दक्षिण रहते हैं। नवयुवकों द्वारा होने वाले योग्य कार्यों में आप विशेष दिलचस्पी रखते हैं।

आपका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

हैदराबाद—नेसिडेसी—मेसर्स हरगोपालदास  
रामलाल T. No. 181 वारका  
पना Laxmi } यहाँ बैङ्किग, फंड्राइजिंग एवं  
आइतका कारबार होता है।

सिन्धुदराबाद—हरगोपाल दास रामलाल  
लक्ष्मीविलास T. No.  
574 वारका पना Bilas } यहाँ निवाम एवं बंगला है।

- वेजवाड़ा—दि क्लृण स्प्रीनिंग एण्ड वीविंग  
मिस्स कम्पनी लिमिटेड } अभी आपने इस मिल को खरीदा है। इसके  
सब शेअर आपके पाम हैं।
- वेजवाड़ा—दि लक्ष्मी राइस मिल } इस नाम से एक राइस मिल है।
- हैदराबाद—दि लक्ष्मी बैंक T. No. 181  
तारका पता Laxmi } इस बैंक में नये पद्धति से बैंकिंग व्यापार होता  
है, इसे आपने अभी कुछ समय पूर्व खोला है।

### राजा बहादुर ज्ञानगिरि नरसिंहगिरि

इस फर्म के वर्तमान मालिक श्रीमान् गोस्वामी बनराज गिरिजी हैं। आप हैदराबाद के बहुत बड़े धनिक एवं प्रतिष्ठा प्राप्त महानुभाव हैं। आपके यहाँ प्रधान रूप में निजाम स्टेट के रईसों, नवाबों एवं जागीरदारों को उनकी पापटी पर रुपया देना तथा बैंकिंग काम होता है। आपने एक बहुत विशाल अस्पताल बनवाया है। आपकी फर्म के द्वारा लाखों रुपये धार्मिक एवं शिक्षा के कार्यों में खर्च हुए हैं, आपका ज्ञानवाग दर्शनीय इमारत है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

- हैदराबाद—राजा बहादुर ज्ञानगिरि  
नरसिंहगिरि ज्ञानवाग } यहाँ निजाम स्टेट के रईसों-नवाबों को पापटी  
पर रुपया देनेका व्यापार तथा इतर बैंकिंग कारबार  
होता है।

## जौहरी

### मेसर्स जिदामल हीरालाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नारनोग (पंजाब) है। आप अमरान वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १०० वर्ष पूर्व मेठ गुजरातीजानजी के हाथों से हुआ था। आपका स्वर्गवास संवत् १९२२ में हुआ। आपके पयान् आपके पुत्र मेठ जोग-ध्यानजी एवं जिदामनजी ने फर्म के व्यापार को विरोध रूप से बढ़ाया। राजा जोगपदानजी की जवाहरान के व्यापार में अर्द्धी निगाह थी। आप दोनों भाइयों का क्रमः संवत् १९१० और संवत् १९४४ में स्वर्गवास हुआ।

लक्ष्मी है कि संश्लिष्ट करने पर भी भारतका परिचय एवं कोसे नहीं प्राप्त हो सके।





स्व० राजाबहादुर सेठ मोतीलालजी जोड़री  
( मोतीलाल रामचन्द्र-हैदराबाद )



सेठ गोविंद नारायणजी भूल (रामबगम जयचंद हैदराबाद)



सेठ बंजीलालजी कानोरिया ( जूबकनम  
हंकोमल-हैदराबाद )



भंजीलालजी भूल ( रामबगम जयचंद-हैदराबाद )

वर्तमान में इस फर्म के मालिक लाता जिन्दा मनजी के पुत्र सेठ हीरालालजी जोहरी हैं। आरंभ में ही आरंभी फर्म जवाहरात का व्यापार करती आ रही है। आपके पुत्र श्रीकेशरी-चंदजी व्यापारिक कामों में भाग लेते हैं। आरंभ का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेमर्स जिन्दा मल हीरालाल  
चारकमान

} यहाँ हीरा, मोठी एवं जवाहरात का  
व्यापार होता है।

### राजा बहादुर मोतीलाल रामचन्द्र

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान चरगोदादरी ( फ़िद ) है। आप अमवाज वैश्य समाज के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन करीब १२५ वर्ष पूर्व सेठ सुरालीरामजी के हाथों से हुआ था। आरंभ से ही आपके यहाँ जवाहरात का व्यापार होता आ रहा है। सेठ सुरालीरामजी के पुत्र सेठ मुरलीधरजी एवं बंशीधरजी के हाथों से फर्म के व्यापार की उत्पत्ति हुई। आप दोनों का स्वर्गवास क्रमशः संवत् १९२९ एवं संवत् १९३२ में हुआ। सेठ मुरलीधरजी के पुत्र रामचन्द्रजी एवं बंशीधरजी के राजा बहादुर सेठ मोतीलालजी हुए।

राजा बहादुर सेठ मोतीलालजी जोहरी व्यापारिक समाज के बड़े हिमायती, पञ्चपातरहित एवं निजामस्टेट में आदर पाये हुए व्यक्ति थे। आपने १० साल तक बिना किसी भावने के सरकारी जवाहरात का काम देखा था। इसलिये सन् १९१४ में आपको राजाबहादुर का सम्माननायक खिताब हासिल हुआ। आपका स्वर्गवास संवत् १९७० में एवं रामचन्द्रजी का स्वर्गवास संवत् १९८२ में हुआ।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ मोतीलालजी के पुत्र हीरालालजी एवं सेठ रामचन्द्रजी के पुत्र श्रीनृवलस्मोनारायणजी B. S. C. H. C. S. ( सिविल हैदराबाद सर्विस ) हैं। आप हैदराबाद के पहिले भारवाड़ी मेजुपट्ट हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—मेमर्स राजानबादुर मोतीलाल  
रामचन्द्र चारकमान

} यहाँ जवाहरात तथा वैद्विग  
व्यापार होता है।

## कपड़े के व्यापारी

### मेसर्स शॉम्हीराम करोड़ीमल

इस फर्म के मालिक बेरोड़ (अलवर) निवासी श्रोसवाल समाज के सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन ६० साल पहिले सेठ शॉम्हीरामजी ने किया। सेठ शॉम्हीरामजी के पश्चात् सेठ करोड़ीमलजी ने जवाहरात आदि के व्यापार में विरोध सन्पत्ति पैदा की। आप १५ वर्ष के पूर्व स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ पूनमचंदजी गंधी हैं। आपको निजाम सरकार से मंसूब प्राप्त है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—चौक, मेसर्स शॉम्हीराम करोड़ीमल—बैङ्किंग व कपड़े का व्यापार होता है।

### मेसर्स नूनकरण ठंडीराम

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान कानोड़ (पटियाला) है। आप अमवान वैश्य समाज के कानोड़िया सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १८८५ में सेठ नूनकरणजी के हाथों से हुआ था। आरंभ से ही इस फर्म पर कपड़े का व्यापार होता आ रहा है, सेठ नूनकरणजी संवत् १९४२ में स्वर्गवासी हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र ठंडीरामजी ने फर्म के कारवार को विशेष बढ़ाया, आप भी १९७२ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ ठंडीरामजी के पुत्र सेठ श्रीलालजी कानोड़िया हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हैदराबाद—(दक्खिन) मेसर्स नूनकरण ठंडीराम  
अफजल गेट T. No. 210

} यहाँ बनारसी, सूती, ऊनी तथा  
रेशमी वस्त्रों का थोड़ा पत्र परचूदन  
व्यापार होता है।

हैदराबाद—मेसर्स नूनकरण ठंडीराम  
चौक T. No. 552

} यहाँ भी ऊरोष्ठ व्यापार होता है।

दारापट्टी दुहदुह—(मद्रास) राजारशानुर  
भैरममुखदाम दाराचंद

} इस नाम की राशुन निा में  
आपका दिग्मा है।

मेसर्स रामवगस जयचंद

इस फर्म के मालिक जयपुर निवासी मादेश्वरी वैश्य समाज के धूल सज्जन हैं। इसका स्थापन सेठ रामवगसजी के हाथों से हुआ। आपके बाद आपके पुत्र सेठ जयचंदजी ने व्यापार को तरकी पर पहुँचाया। आपने इस दुकान से शाही घराने एवं अमीर उमरावों के साथ व्यापार और लेन-देन आरंभ किया। आप संवत् १९४५ में स्वर्गवासी हुए। आपने अपनी फर्म को एक प्रांच संवत् १९३० में बनारस में खोली।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ जयचंदजी के पुत्र गोविंदनारायणजी धूर्त हैं। आपने इस दुकान के व्यापार को विरोध बमकाया है। आप राक के बशसक हैं। आपके पुत्र भीदुत भीदुतजी धूल समझदार नवयुवक हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

देहरादू—मेसर्स रामवगस जयचंद लाठ बाजार	}	यहाँ विरोधकर बनारसी, रंजामी, जरीन मान का व्यापार और पैटिंग काम होता है।
बनारस—मेसर्स रामवगस जयचंद श्रीरामा		यहाँ से बनारसी कपड़ा तय्यार परवाकर दिमारों के लिये भेजा जाता है।

मेसर्स रामनारायण श्रीदुतजी पिर्सी

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागौर (जयपुर स्टेट) है। आप भयवात वैश्य समाज के रिषी सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ रामनारायणजी पिर्सी करीब ८० मान पहिले घरों आये थे। आरंभ में आपने राजा वहादुर शिवराज गोशिंगात की फर्म पर ४० बरों तक काम किया। आपने इस दुकान पर अच्छी इज्जत पाई। इसी अवधि में आपके पुत्र भीदुतजी पिर्सी ने सराही और गले का कारबार आरंभ किया। आपने १५ मान पहिले मराठ में भी स्थापनों का कारबार आरंभ किया।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सेठ भीदुतजी पिर्सी हैं। आपके पुत्र भीदुत नारायण दासजी पिर्सी भी फर्म का व्यापारिक काम संभालते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

देहरादू—मेसर्स रामनारायण श्रीदुतजी कपूर हटा	}	यहाँ पैटिंग व्यापार होता है।
--	---	------------------------------

• आप की ओर से कथन में कुछ त्रुटि और तय्यार कर है।





देहराबाद—(दक्खिन) मेसर्स शिवनारायण जयनारायण  
चारकमान

धनारस—मेसर्स वंशीलाल हरिकिरान  
चौखम्बा

} यहाँ पर धनारस का रेशमी एवं  
अमृतसर का ऊनी माल बिकता है ।  
धनारसी माल का व्यापार होता  
है । यह दुकान १९६४ में सेठ जय-  
नारायणजी ने स्थापित की ।

## आधरन एण्ड टिम्बर मरसेंट

मेसर्स लालजी मेघजी

इस फर्म के मालिक एस निवासी कच्छ ( बालाघर ) के हैं । आप कच्छा दशा ओस-  
वाले जाति के जैन मतावलम्बी सज्जन हैं । इस फर्म के वर्तमान मालिक सेठ लालजी मेघजी  
अपने धावा सेठ भवानजी कानजी धूलिये वालों के साथ धम्बई की लकड़ी की बजार में  
सर्विस करते थे । जिस दुकान पर आप सर्विस करते थे, उनकी देहराबाद प्रांच पर आप मुक-  
रंर होकर आये, पीछे वह दुकान उठा ली गई और संवत् १९५१ में आपने यहाँ अपनी स्वतंत्र  
दुकान खोली । इस व्यापार में सफलता प्राप्त करने पर आपने १५ वर्ष पूर्व स्टील पत्थर एवं  
फर्श का ब्यवसाय भी आरंभ किया । इन व्यापारों में आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी  
जाती है ।

सेठ लालजी मेघजी "जीव-रक्षा-ज्ञान-प्रचारक-मंडल" नामक संस्था के आरंभ से ऑन-  
रेंट्री सेक्रेटरी पद का कार्य संचालित कर रहे हैं । यह संस्था श्री जैनाचार्य इसविजयजी महा-  
राज के शिष्य श्री दौलत विजयजी एवं उनके शिष्य श्री धर्म विजयजी के प्रबोध से संवत् १९७१  
में स्थापित हुई थी, इस संस्था का बड़ेस मिश्रत के नाम पर बंध होने वाले पदुओं का बंध  
बंध करवाना तथा इन प्रांत में जाति-रिवाजों में होने वाले बंधों का बंध करवाना है ।  
संस्था ने सेठ लालजी के सहयोग से भजन-मंडली, मेजिक लैटर्न आदि के द्वारा जनता में  
सदुपदेश प्रचार का बहुत परिश्रम उठाया है, इस संस्था का विस्तृत परिचय इसके आरंभ में  
दे चुके हैं ।

वर्तमान में सेठ लालजी की वय ६० वर्ष की है आप के पुत्र प्रेमजी लातजी भी व्यापार  
में भाग लेते हैं । आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

देहराबाद—मेसर्स लालजी मेघजी गुन्टा रोड  
T. No. 386 तारका वान Prem.

} यहाँ टिम्बर, राहवादी स्टोन, स्टील,  
गंगलोरी फब्रेड, लोहा, गार्स एवं  
कंटाक्टिंग का काम होता है ।





सेठ हाजी मेवजी ईशरामद



सेठ लक्ष्मीनारायणजी भासावा  
( गिस्थारीलाल रघुनाथदास ईशरामद )





## डिपॉजिटारियों के फते

बैंक्स

- दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड रेंसिडेंसी रोड
- फोआपरॉटिन्ड सेंट्रल बैंक लिमिटेड स्टेशन रोड
- सेंट्रल बैंक लिमिटेड रेंसिडेंसी रोड
- आंग्ल बैंक लिमिटेड
- जी. खुनायमल बैंक्स चाररपाट रोड
- दि लक्ष्मी बैंक

बैंकर्स

- मेसर्स अमरसी सुजानमल बेगम बाजार
- " गुनाबदास हरिदास रेंसिडेंसी रोड
- " गुनानीराम हराराम पटोई, चाररमान
- " जी. खुनायमल बैंक्स चाररपाट रोड
- " सुमीलाल नरदत्तसाद रेंसिडेंसी बाजार
- " सुमीलाल सुरलीनसाद रेंसिडेंसी रोड
- " राजा खुनुजदास एण्ड संस रेंसिडेंसी रोड
- " जयनारायण लक्ष्मीनारायण रेंसिडेंसी चौकी
- " जमनालाल रामलाल चौमठी हममत गंज—रेंसिडेंसी
- " नारायणलाल बंशीलाल गोवालबाग रेंसिडेंसी
- " निरानचंद पूनमचंद हसनत गंज—रेंसिडेंसी

- मेसर्स राय बहादुर बंशीलाल अचीरचंद बाग रेंसिडेंसी बाजार
- " राजा बहादुर बंशीलाल मोतीलाल पिचो, रेंसिडेंसी, बेगम बाजार
- " राजा बहादुर भगवानदास हरीदास रेंसिडेंसी रोड
- " महेशगिरि भुवनेशगिरि रेंसिडेंसी बाजार
- " मनीराम रामरतन सेठी बेगम बाजार
- " रामदयाल धासीराम महदूष गंज
- " रामनारायण कुन्दैयालाल बेगम बाजार
- " रामनाथ धर्मीनाथ महाराजगंज
- " राममुख हारानंद महाराज गंज
- " लाजगिरि त्रिनोदगिरि बेगम बाजार
- " त्रिसेसरगिरि धीरमानगिरि बेगम बाजार
- " सदामुख जानकी दास रेंसिडेंसी
- " सरदारमल सुगनमल रेंसिडेंसी
- " राजाबहादुर लाला मुखदेवसहाय बालानसाद रेंसिडेंसी
- " सुरवराम गोविंदराम मूँदड़ा बेगम बाजार
- " सीताराम रामनारायण लाल बाजार चौक
- " हरगोपालदास रामलाल रेंसिडेंसी
- " राजाबहादुर क्षान्तिगिरि नरसिंहगिरि
- " श्रीरंग नारायणदास निमी

मेसर्स

उद्योग

इन्द्रजीत रामलाल चाररमान



## बैंकफारियों के फते

बैंकस

- दि इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया  
लिमिटेड रेंसिडेंसी रोड  
कोआररेटिव्ह सेंट्रल बैंक लिमिटेड  
स्टेशन रोड  
सेंट्रल बैंक लिमिटेड रेंसिडेंसी रोड  
जांभ्र बैंक लिमिटेड  
जी. रघुनाथमल बैंकर्स चादरपाट रोड  
दि लक्ष्मी बैंक

बैंकर्स

- मेसर्स अमरसी मुजानमल बेगम बाजार  
" गुलामदास हरिदास रेंसिडेंसी रोड  
" गुमानोराम हरीराम खटोडे, चारकमान  
" जी. रघुनाथमल बैंकर्स चादरपाट रोड  
" चुम्नालाल नारदप्रसाद रेंसिडेंसी बाजार  
" चुम्नालाल सुखलप्रसाद रेंसिडेंसी रोड  
" राजा चतुर्भुजदास एण्ड संस रेंसि-  
डेंसी रोड  
" जयनारायण लक्ष्मीनारायण रेंसि-  
डेंसी कोठी  
" जमनालाल रामलाल कामठी हसमठ  
गंज—रेंसिडेंसी  
" नारायणलाल बंशीलाल गोपालबाग  
रेंसिडेंसी  
" निहालचंद पूनमचंद हसमठ गंज—  
रेंसिडेंसी

- मेसर्स राय बहादुर बंशीलाल अमीरचंद बाग  
रेंसिडेंसी बाजार  
" राजा बहादुर बंशीलाल मोर्वालाल  
पिती, रेंसिडेंसी, बेगम बाजार  
" राजा बहादुर भगवानदास हरीदास  
रेंसिडेंसी रोड  
" महेशगिरि भुवनेशगिरि रेंसिडेंसी  
बाजार  
" मनोराम रामरवन सेठी बेगम बाजार  
" रामदयाल धासीराम महयूष गंज  
" रामभवाप कन्हैयालाल बेगम बाजार  
" रामनाथ धत्रीनाथ महाराजगंज  
" रामसुख हीरानंद महाराज गंज  
" लालगिरि विनोदगिरि बेगम बाजार  
" बिसेसरगिरि वीरभानगिरि बेगम बाजार  
" सरसुप जानकी दास रेंसिडेंसी  
" सरदारमल सुगनमल रेंसिडेंसी  
" राजाबहादुर लाला मुखदेवसहाय  
ज्वालाप्रसाद रेंसिडेंसी  
" सूरतराम गोविंदराम मूंदडा बेगम  
बाजार  
" सीवाराम रामनारायण लाठ बाजार चौक  
" हरगोपालदास रामलाल रेंसिडेंसी  
" राजाबहादुर शानगिरि नरसिंहगिरि  
" श्रीकृष्ण नारायणदास पिती

मेसर्स

ज्वेलर्स

इन्द्रजीव रामजस चारकमान



मेसर्स	सुरीराम कालूराम चारकमान
”	जोगीलाल मनोहरलाल चारकमान
”	जिंदामल हीरालाल चारकमान
”	जमनालाल रामलाल कीमती हंसमत गंज
”	चोवारां रामजस चारकमान
”	दीवान बहादुर सेठ धानमलजी लूणिया रेसिडेंसी कोठी
”	भगवानदास बनारसीलाल
राजा बहादुर लाला मुन्नादेवसहाय ज्वालाप्रसाद रेसिडेंसी	
राजा बहादुर मोतीलाल हीरालाल	

**क़ाय मरचेंट्स**

मेसर्स	जगनप्रसाद मातादीन लाइ बाजार चौक
”	गोपालजी परमानंद लाइ बाजार
”	जगन्नाथ बलदेव लाइ बाजार
”	जमनदास नंदलाल पथरपट्टी
”	भगंभीराम फरोड़ीमल लाइ बाजार
”	नूनकरण ठंडोराम पथरपट्टी
”	फारुखमल चुन्नीलाल लाइबाजार
”	भीखराज बंशीलाल मार्केट
”	मौजीराम बंसतीलाल पथरपट्टी
”	भगदत्त शिवनाथ लाइबाजार
”	रामबगस जयचंद लाइबाजार
”	रामदयाल सेठमल लाइबाजार
”	रामनारायण हीरालाल पथरपट्टी ( ऊजनमात )
”	रामप्रसाद रामजीवन पथरपट्टी
”	रामदयाल पोकरमल पथरपट्टी
”	रामगोपाल हंसराम चौक

मेसर्स	रामप्रताप रामविलास चौक
”	शिवनारायण जयनारायण चौक
”	शिवकरण रामदास चौक
”	सीताराम रामनारायण चौक
”	श्रीकृष्ण नारायणदास चौक
—	
	गोल्ड एण्ड सिल्वर मर्चेन्ट
मेसर्स	केवल कृष्ण मोतीलाल चार कमान
”	पासीराम ताराचंद ”
”	जमनादास नंदलाल ”
”	बुलसीराम शिवनारायण ”
”	बद्रीप्रसाद नानकराम ”
”	भगवानदास बनारसीलाल ”
”	महानदराम संवराम ”
”	रघुनाथदास जवाहरलाठ ”

**गोटे के व्यापारी**

मेसर्स	अहमद इस्माइल
”	अब्दुल लतीफ अलीमइम्मद
”	कन्हैयालाल मोतीलाल चौक
”	कालूराम रामकरण ”
”	रामकिरण राजाराम ”
”	रामकरण रामबन्ध ”
”	शिवनारायण रामदयाल ”
”	हाजी दादा ”

जरी, कारचोत्र व जरीन टोपी के व्यापारी	
मेसर्स	अब्दुल गफूर कारचोत्र बाग चौक
”	मेसर्स चुन्नीलाल ईशाराम ”
”	ठाकुरराम भगवानदास ”

- मेसर्स नगीनदास चुन्नीलाल (नकलीगोटा) चौक
- " मोमिन साहब फारचौष वाले चौक
- " रामकिरान राजाराम (नकलीगोटा) चौक
- " शिवनारायण रामदयाल " "
- " सत्यनारायण चन्द्रप्या " "
- " हाजी दादा हाजी अय्या " "

- मेसर्स रामरतन राधाकिरान महबूबगंज
- " रामगोपाल दामोदर महबूबगंज
- " रामनाथ धरिनाथ छोटा महाराजगंज
- " रामकरण सदाराम वसमानगंज
- " सीवाराम रामगोपाल वसमानगंज
- " हाजी जुसुक अली महम्मद वसमानगंज
- " हीरानंद रामसुख छोटा महाराजगंज
- " श्रीकृष्ण मुस्तुदास महाराजगंज

बनारसी रेशमी कपड़े के व्यापारी

- मेसर्स लालचंद रामसुख लाड बाजार
- " भीखराज धरिीलाल "
- " फाट. फार. गोपाल "
- " रामबगस जयचंद "
- " शिवनारायण जयनारायण, "
- " हरिकिरान राधाकिरान, "
- " हाजी दादा "
- " हाजीजी आली "

किरियाणा के व्यापारी

- मेसर्स अहमद अब्दुल्ला बेगमबाजार
- " गनेशलाल गोपीलाल बेगमबाजार
- " गिरधारीलाल खुनायदास लाडबाजार
- " जमनालाल मोहनलाल बेगमबाजार
- " दाउद अब्दुल्ला बेगम बाजार
- " पोकरमल भभूतमल पीलजाना (खामेदा)
- " महम्मद यासम महम्मद फासम बेगमबाजार
- " रामलाल रामनाथ "
- " सोभाचंद शिवजीराम "
- " सदाराम रामलाल "

ग्रेन मचेंट एण्ड कमीशन एजेंट

- मेसर्स कोडारथ लक्ष्मी नरसप्या वसमानगंज
- " गोविंद गोपाल वसमानगंज
- " गंगाविरान मोहनलाल वसमानगंज
- " चुन्नीलाल कांचानी छोटा महाराजगंज
- " चन्दनमल गुलाबचंद वसमानगंज
- " जेटनल गंगाविरान महबूबगंज
- " टाकरसी धारसी वसमानगंज
- " वमान अलप्यावमेवार छोटा महाराजगंज
- " नानकराम हनुवराम महाराजगंज
- " पूनमचंद गनेशनल चौप का संघा
- " निरिपाल रामलिंगम वसमानगंज

लौकट घी के व्यापारी

- मेसर्स पन्नालाल हीरालाल नगरखाना
- " सीवाराम रामगोपाल "

जनरल मरचेंट्स

- मेसर्स वनर अब्दुल करीम जवेरी फादरपाट रोड
- " इष्टर नेरानज जनरल स्टोर "
- " ए० ए० हुसेन एण्ड कम्पनी "



## हाई वेअर मर्चेण्ट्स

अब्दुल लतीफ साहब अकजलगाथ  
कं० आर० चरी एण्ड कम्पनी रैसिडेन्सी रोड  
गुलाम हुसैन शेख अब्दुल करीम कम्पनी  
अकजलगाथ

डी० एमाजी अकजलगाथ

महम्मद नूरुल्ला पेशू शिवराजप्या अकजलगाथ

बेल्जर लिंगन्या

एस० एच० इस्माइलजी इस्माइल विल्डिंग "

एच० महम्मद अजी एण्ड कम्पनी "

हाजी हमार नियॉ "

पाइप सिनेटरी कंस्ट्रक्शन्स, फिटर्स

कं० आर० चरी एंड कम्पनी रैसिडेन्सी रोड

माईर लप्पबजी अर्षाह शाण

पालनजी एदलजी चादरपाट रोड

बर्मन ब्रदर्स चादरपाट

एस० एच० इस्माइलजी अकजलगाथ

मिशनरी मर्चेण्ट

क्रोसेल ऑइल एंजिन एजन्सी स्टेशन रोड

कं० आर० चरी एण्ड कम्पनी चादरपाट रोड

वाल्डट ब्रदर्स एजन्सी स्टेशन रोड (किजी

डियर, रंगवेगटर्स स्टोर)

कॅमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

जेम्स एण्ड कम्पनी स्टेशन रोड

बसीर एण्ड कम्पनी "

मुत्पला एण्ड कम्पनी "

## हैदराबाद और रैसिडेन्सी

सय्यद अब्दुलरजाफ एण्ड कम्पनी चारकमान  
सय्यद हाक एण्ड कं० चादरपाट  
लेसलीगेर्ड एण्ड कम्पनी "

मिचिगन स्टोर

अहमदिया ट्रेडिंग कम्पनी अकजल गेट

पेटेन्ट मेडिसियन हेंरी एण्ड कं० "

टी सिडिकेट सालरजंग विल्डिंग

स्टेशनर्स

फासिम हॉ हाजीहयावअली चारमीनार (फागज)  
डकन बुक डेपो स्टेशनरी स्टोर चादरपाट

टोवेको मर्चेण्ट्स

दि चार मीनार सिगारेट कम्पनी लिमिटेड  
बुपुस्वामी मुहलीयार टोवेको मर्चेण्ट  
हैदराबाद टोवेको कम्पनी लिमिटेड

आर्टिस्ट एण्ड फोटो ग्राफर्स

किलेदार फोटोग्राफर रैसिडेन्सी

अलवंडीकर फोटोग्राफर "

दक्खन आर्ट स्टूडियो "

ब्यास एड कम्पनी "

होटल्स

अजीज कम्पनी तुरप बाजार

निजामिया होटल चादरपाट

निस होटल स्टेशन रोड

बाम्बे रेस्टोरेंट

बीकाजी होटल चादरपाट

लानूर में भी इस फर्म की शाखाएँ हैं। इसकी सिन्दुराबाद दुकान का व्यापारिक परिषद इस प्रकार है।

सिन्दुराबाद—मेसर्स दयाराम सूरजमज

T. No 325

} वैश्विक व आदत का कारबार  
} होता है।

### मेसर्स दाराबजी ब्रदर्स एण्ड कम्पनी

इस प्रसिद्ध चिनारि पारसी कुटुम्ब का पूर्ण नियामस्थान जानना था। वहाँ इस कुटुम्ब का चीन के साथ मिल्क रेसाम आदि का कारबार चलता था। पेशवाजी सेठ जानना में रहने से और उनके दूसरे भाई पूना में निवास करने से। सन् १८३५ में ब्रिटिश रेजिमेंट के साथ सेठ सोराबजी पेशवाजी जानना में सिन्दुराबाद आये। आप सिन्दुराबाद मिलादरी, लारकर एवं निजाम स्टेट के अमीर उमराओं को जनरल मान सद्कार्द करने से। इस प्रकार यहाँ जाने के २१ साल बाद आप बर्दिस नगरीन हुए।

सेठ सोराबजी चिनारि के नगरवानजी, एदलजी एवं दीनशा सेठ नामक तीन पुत्र हुए। इनमें से इस कुटुम्ब का सम्बन्ध एदलजी सेठ से है। सोराबजी सेठ के गुजरने के ३१४ साल बाद आप तीना भाई अलग २ हो गये। एदलजी सेठ ने इस फर्म के व्यापार में बहुत प्रयाग किया। आपको भारत सरकार ने खानबहादुर का खिताब दिया। आपने जम्मा स्टोट पर कोयल भाई एदलजी पारसी धर्मशाला बनवाई। इस प्रकार ९४ वर्ष की लम्बी उमर बाद आप सन् १९१० के मई मास में बर्दिस नगरीन हुए। नगरवानजी सेठ के पुत्र रामाभाई समानांतर शास्त्र निम्नतर के सेक्रेटरी थे।

खान बहादुर एदलजी सेठ के ५ पुत्र हुए। जमगेदजी सेठ, सातुजी सेठ, कामजी सेठ और बाबूजी सेठ। इनमें से सातुजी सेठ को भी खान बहादुर का खिताब था। इन सभी भाइयों का कारबार भी एदलजी सेठ के गुजरने पर अलग २ हो गया।

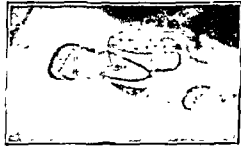
बर्दिस में इस फर्म के सांख्यिक जमगेदजी सेठ के पुत्र सोराब नानक जगतजीजी सेठ, रामजी सेठ, कान्हाजी सेठ, कान्हाजी सेठ और दादाजी सेठ हैं।

इस कुटुम्ब ने सन् १९०० में दादाजी ब्रदर्स के नाम से संश्लिष्ट वैश्विक वैश्विक को ही क्या वैश्विक व्यापार स्थपित किया। सेठ सोराबजी एदलजी के लड़के एदलजी सेठ निजाम में। आपको नानक जीजी सेठ का खिताब मिला। एदलजी सेठ आप निजाम बर्दिस में बर्दिस हुए और बर्दिस में निवास हैं।





१६०. सेठ भीरजी बोचर ( भीरजी  
बोदिमल सिकंदराबाद )



१६०. सेठ बोदिमलजी बोचर ( भीरजी  
बोदिमल सिकंदराबाद )



सेठ गुरुजमलजी बोचर ( भीरजी बोदिमल सिकंदराबाद )

जहाँगीरजी सेठ ने इस फर्म का व्यवसाय स्थापित कर उन्नति की। आपने पारसी धर्म-शाला में जमरोद बिनाई हाल और एदलजी बिनाई पबेलियन बनाया। तथा आपकी मातु भी रतनबाई के नाम से रतनबाई बिनाई डिस्पेंसरी और धर्मपत्नी रतनबाई के नाम से रतनबाई बिनाई स्कूल बनाया। आपकी मातेरवररी रतनबाई जमरोदजी ने देवलाजी ( नाशिक ) में एक जगियारी ( पारसी टेम्पल ) बनवाया।

घोसरे भाई हस्तमजी निजाम टेरिटरी के पोस्ट मास्टर जनरल हैं और होरनसजी सेठ निजाम मेडिकल सुपरिटेन्डेन्ट हैं और रतनजी पायगा में काम करते हैं। इस दुकान पर सेठ सुरालदास केरावदास ५२ सालों से और डिगम्बरदास केरावदास मेइता १५ सालों से मुनीमान करते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

- |  |   |
|--|---|
| १ भेंसा ( निजाम ) मेसर्स दाराबजी प्रदर्स एण्ड कं०<br>हार का पता—Dorabji Bras Basar | } वैश्विग व्यापार होता है इसके अण्डर में भेंसा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और बिनाई जीन फेक्टरी है। |
| २ भेंसा ( नांदेड ) जहाँगीरजी जमरोदजी बिनाई फर्मजी—                                 |   |
| ३ सिहन्दरावाद—दाराबजी प्रदर्स एण्ड कं० पार्क लेन                                   | — " " "   |
| ४ चौड़ी ( नांदेड ) " " "   | —जीन और वैश्विग व्यापार होता है   |
| ५ पलसी ( नांदेड ) " " "  | — " " "   |
| ६ धरमावाद " " "  | —एजेंसी का काम होता है।   |

### मेसर्स पीरजी चौदमन

इस फर्म के मातृजी का मूल निजामस्थान कारोड़ी ( मारवाड़ ) है। आर भोगराज शेलावर जैन समाज के कोषरमूका सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक पीरजी सेठ मन् १८४१ में देरा से आये। चौड़े दिनों तक अपने अपने बहनोंजी के घरों में रहते थे और फिर अपना एक काम-काज करने लगे। चौड़े ही समय बाद आर चौड़ी को नारा मग्राई करने का काम करने लगे, इसी सिलसिले में अपने चौड़ी के साथ बाहुन और लखननियों की भी पाजा की। आरके पुत्र सेठ चौदमनजी ने संवत् १९१९ में सिहन्दरावाद में दुकान स्थापित की। १० सालों तक आर भी कारोड स्थान पर रहे हुए संवत् १९४९ में स्वयंदाजी हुए।

सेठ चौदमनजी के घरों सेठ सुरजमनजी २३ वर्ष की उमरका में कारोड़ी से हलक आये। आर ही इस समय फर्म के मालिक हैं। आरके पुत्र भीपुत्र पूनमचंदजी एवं प्रभारचंदजी की व्यापारिक कामों में आर हैं। आरकी स्त्री में काली एवं चंदापुरीजी में एक एक



शरी समाज में भी आपका अच्छा सम्मान है। आपके पुत्र श्रीयुत मुकुन्ददासजी मालानी हैं। आप पढ़ रहे हैं।

इस समय इस दुकान के व्यापार का वर्णन इस प्रकार है:—

सिकन्दरावाद—मेसर्स शुभकरण गङ्गाविशान जेम्स स्ट्रीट	}	यहाँपर हेड आफिस है तथा वैट्टिंग व्यापार होता है
सिकन्दरावाद—मेसर्स गङ्गाविशान मोहनलाल सिकन्दरावाद—मेसर्स रामकिशान मोहनलाल सिकन्दरावाद—मेसर्स मोहनलाल मुकुन्ददाम		}
हैदरावाद—मेसर्स गङ्गाविशान मोहनलाल उसमानगञ्ज	}	
गंनूर—मेसर्स गङ्गाविशान मोहनलाल		

### मेसर्स शुभकरण श्रीराम

इस प्रतिष्ठित फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान नागौर (मारवाड़) है। आप मारवाड़ शरी वैश्य समाज के मालानी सज्जन हैं। सर्व प्रथम देश से सेठ शुभकरणजी पैदल मार्ग द्वारा करीब ११० वर्ष पूर्व निजाम स्टेट के राजुरा नामक स्थान में आये। राजुरा से आरम्भ कुटुम्ब लगभग संवत् १९०४ में सिकन्दरावाद आया, और यहाँ कपड़े का व्यापार स्थापित किया। सेठ शुभकरणजी के ४ पुत्र हुए। सेठ श्रीरामजी, सेठ जगन्नाथजी, सेठ गंगाविशानजी एवं सेठ रामगोपालजी। सेठ जगन्नाथजी के कोई मतान नहीं हुई। संवत् १९४७-४८ तक यह कुटुम्ब शामिल कारखाने करता रहा। पश्चात् सेठ गंगा विशानजी का कुटुम्ब अपना स्वतंत्र व्यापार अलग करने लगा। और सेठ श्रीरामजी तथा रामगोपालजी का व्यवसाय शामिल होने लगा। दोनों फर्मों का व्यवसाय अलग होने के १० वर्ष बाद करीब १९५७ में सेठ श्रीरामजी के पुत्र सेठ सुखदेवजी का २५ वर्ष की अस्थायु में स्वर्गवास हो गया। उस समय आपके पुत्र श्रीयुत श्रीकृष्णजी केवल ८ मास के थे। ऐसी हालत में सेठ रामगोपालजी को अपने एक हीन-हार मदद्गार एवं दिय भतीजे का कठिन वियोग-दुःख सहना पड़ा। तथा व्यापार का नाश कार-वार आपही को सम्हालना पड़ा।

वही वा० सेठ रामगोपालजी मालानी ने अपने हाथों से व्यापार में लाभों रुपये की सम्पत्ति उत्पन्न कर इस दुकान के नाम प्रतिष्ठा, एवं सम्मान को बहुत अधिक बरसाया। आपने



स्व० सेठ गंगाविद्याजी मालानी (सिद्धरागढ़)



स्व० दीवान बहादुर सेठ रामगोपाळजी मालानी (सिद्धरागढ़)



स्व० सेठ मोहनलालजी मालानी (सिद्धरागढ़)



स्व० दीवान बहादुर सेठ लक्ष्मीनारायणजी मालानी (सिद्धरागढ़)





११) श्री श्रीगणेशजी मठवाडी (वि. १९१५-१६)      श्रीगणेशजी मठवाडी (वि. १९१५-१६)



१२) श्री श्रीगणेशजी मठवाडी (वि. १९१५-१६)



निजाम स्टेट रेलवे, पब्लिक वर्क डिपार्टमेंट, फ्लाकनुमा, सरकरास, टकरास, लोकोवर्कशाप, डिंगटोटी, पुरानी हवेली, मूसी नदी का पुल आदि के बनवाने के कंट्राक्ट लिये, एवं इस काम में लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। इसके साथ २ एरंडी और कपड़े के व्यापार में भी आपकी अच्छी सफलता मिली। आपका जन्म संवत् १९०६ में हुआ था।

व्यापार में बहुत सम्पत्ति पैदाकर दीवान बहादुर सेठ रामगोपालजी मालानी ने दात-धर्म परीपकार, सार्वजनिक एवं जनहित के कामों में भी लाखों रुपयों की सम्पत्ति उदारता पूर्वक खुले हाथों खर्च की। हैदराबाद स्टेट के आप बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। सिर्कंदराबाद में आपने ६० खाल पूर्व श्री जगदीराजी का मंदिर बनवाया अपने भतीजे सुखदेवजी के स्मरणार्थ संवत् १९५९ में भी भीमल्यनारायण जी का मंदिर, एवं श्रीहनुमानजी का मंदिर इस प्रकार ३ प्रसिद्ध मंदिर बनवाये। एवं इनके स्थाई प्रबंध के लिये १० मकान दिये। जिनकी किराये की आमद से इनका खर्च चलता है। इसके अलावा बेजवाहा, मयुरा एवं बांसल (निजाम) में ३ धर्मशालाएँ बनवाई गईं जिनमें यात्रियों के लिये सदावर्त का प्रबंध है। श्रीनाथद्वारा में ११ लाख रुपयों की भारी लागत से बनास नदी का मजबूत पुल बनवाया। संवत् १९५६ के अकाल के समय नागोर में एक दिन के अंतर से लोगों को भोजन दिया एवं स्टेशन से कथान तक पकी सड़क बनवाकर दोनों ओर झाड़ू लगवाये। इसी प्रकार पास के अकाल के समय भी नागोर में सोलापुर की तरफ से हजारों रुपयों का धान भिजवा कर पशुओं की मदद की। अकाल पीड़ितों की मदद करने के बल्लस में आपको सरकार ने "कैसरे दिन्द" की उपाधि दी। इसी प्रकार सार्वजनिक कामों में भी आपने बहुत भाग लिया। आपने हैदराबाद फतह मैदान में स्पोर्ट्सिंग बनवाया। त्रिनलगिरी में होम आर्क डि सोलजर्स बनवाया। जेम्स स्ट्रीट टावर में बहुत सी मदद दी। श्रीकृष्ण गौराशा का स्थापन कर उसमें भी बहुत सी सहायता दी। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर भारत सरकार ने रायबहादुर एवं दीवान बहादुर का सिवाब देकर आपकी इज्जत की। इस प्रकार परम प्रतिष्ठामय जीवन बिताते हुए आप सा० १-६-१९२१ को स्वर्गवासी हुए। आपके सम्मानार्थ हैदराबाद, सिर्कंदराबाद एवं बरंगल के सब आफिसमें, कारखार एवं बाजार बंद रहते गये। आपकी रयी के जुद्धस में ३५।४० हजार आदिमियों की भारी भीड़ आपके प्रति अपने पूज्यभाव बताने को एकत्रित हुई थी। स्वर्गीय दी० बा० सेठ रामगोपालजी की स्मृति चिरकाल तक रहने के लिये सिर्कंदराबाद की जनता ने पब्लिक सड़क के मध्य सर बारटोन साइड के हाथों से आपके मुँदर धके स्टैच्यू का उद्घाटन १५ मार्च १९२९ को किया। इसी प्रकार आपके मित्त में भी एक बस्ट स्टैच्यू स्थापित किया गया। आपके यहाँ भीलक्ष्मीनारायणजी मालानी संवत् १९४५ में नागोर से दसक साये गये।

दी० बा० सेठ लक्ष्मीनारायणजी मालानी १६ वर्ष की अवस्था से ही अपने पूज्य पिताजी





सेठ एनमचंदजी पठाणी ( हीराचंद एनमचंद )  
सिकंदराबाद



सेठ मोतीलालजी कोशरी ( जोशारमल  
मोतीलाल ) सिकंदराबाद



मधुसूदनजी इकर सिकंदराबाद



सेठ रामकृष्णजी...



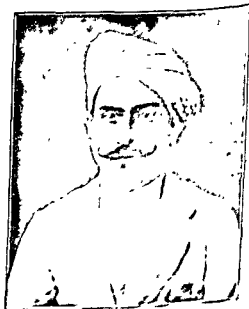
भारतीय व्यापारियों का परिचय (तीसरा भाग)



सेठ मोहनलालजी बट्टवा (मुरलीधर भुशीलाल)  
ईदराबाद



सेठ गिरधरलालजी सांकला (मागरमज गिर मोहनजी)  
मिडनदराबाद



सेठ महानंदजी सांकला (मागरमज गिर मोहनजी)

श्री सेठ हीराचन्द्रजी छल्लानी के हाथों से हुआ था। आपने आरम्भ में यहाँ सर्विस की, एवं पीछे से ही० बा० सेठ रामगोपालजी के भाग में हीराचन्द्र जगन्नाथ के नाम से कपड़े का व्यापार शुरू किया। करीम नगर की दुकान भी आपही के समय में खोली गई।

श्री सेठ हीराचन्द्रजी के पश्चात् आपके पुत्र सेठ पूनमचन्द्रजी छल्लानी के हाथों से इस फर्म के व्यवसाय सम्मान एवं प्रतिष्ठा की विरोध रूप से वृद्धि हुई। आपने बरंगल, पेट्टापल्ली तथा गंधनी में रुई और एरण्डी का व्यापार शुरू किया तथा जीनिंग फेक्टरी और राइस मिल खोली। व्यवसायिक उन्नति के अलावा धार्मिक कामों में आपके हाथों से एक बड़ा स्मरणीय कार्य हुआ। हुलपाकजी तीर्थ के श्वेताम्बर जैन मन्दिर के जीर्णोद्धार में आपने बहुत परिश्रम उठाया एवं अपनी ओर से भी बहुत सी सहायता दी। लक्ष्मी मन्दिर की विल्डिङ्ग आदि बनवाने एवं न्यायि वृद्धि करने में हैदराबाद के ४ सज्जनों में से आपने भी प्रधान रूप में भाग लिया था। आपका स्वर्गवास सम्बन्ध १९७४ की भादों यद्वा ८ को हुआ। आपके यहाँ श्री लक्ष्मीचन्द्रजी छल्लानी ग्वालियर से संवत् १९७२ में दत्तक लाये गये।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक श्री सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी छल्लानी हैं। आपकी आयु २३ वर्ष की है। आप बड़े शांत प्रकृति के समझदार एवं विवेकशील नवयुवक हैं। इतने अल्पवय में फर्म का व्यापार बड़ी उत्तरदा से सञ्चालित करते हैं। हुलपाकजी तीर्थ की न्यायि वृद्धि करने में आपके पिताजी की तरह आपके भी उन्नत विचार हैं। यह फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस समय फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है:—

- |  |   |  |
|--|---|--|
| १. सिध्दन्तराबाद—मेसर्स हीराचन्द्र पूनमचन्द्र<br>जेम्स स्ट्रीट, T. No. 395 | } | यहाँ हेड आफिस है, तथा प्रधान तथा<br>वैकिङ्ग व्यापार होता है।                         |
| २. बरंगल—मेसर्स हीराचन्द्र पूनमचन्द्र                                      |   | यहाँ कौटन और एरंडी की आड़त का<br>व्यापार एवं वैकिङ्ग काम होता है।                    |
| ३. करीम नगर—मेसर्स हीराचन्द्र पूनमचन्द्र                                   | } | वैकिङ्ग व्यापार होता है।   |
| पेट्टापल्ली (बरंगल)—मेसर्स हीराचन्द्र<br>पूनमचन्द्र                        |   | राइस मिल तथा जीनिंग फेक्टरी है तथा इसी नाम<br>से दूसरी दुकान पर आड़त का काम होता है। |
| गंधनी (निजाम)—मेसर्स हीराचन्द्र<br>पूनमचन्द्र                              | } | आड़त, वैकिङ्ग राइस एवं कौटन का व्यापार<br>होता है।                                   |

### मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल

इस दुकान का हेड आफिस बरंगल में है। अतः इसके व्यापार का परिचय वहीं किया गया है। बरंगल में यह फर्म सेठ श्रीकृष्णजी के समय से करीब ६० सालों से व्यापार कर रही है।

सिकन्दराबाद के व्यापारिक समाज में यह फर्म करीब २० वर्षों से व्यापार कर रही है। तथा अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस फर्म के व्यापार का परिचय इस प्रकार है:—

बरंगल—मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल	}	यहाँ हेड आफिस है तथा बैंकिंग एवं आइव का कारबार होता है।
सिकन्दरा बाद—श्रीकृष्ण चुन्नीलाल T. No. 333		बैंकिंग हुण्डी विट्टी तथा आइव का कारबार होता है।

### जनरल मर्चण्ट्स

#### मेसर्स अयादीन एण्ड संस

इस फर्म के मालिकों का स्वाम बनन सम्बन्ध है। यहाँ से सेठ अयादीन भाई मानजी सन् १८८२ ईस्वी में सिकन्दराबाद आये, तथा छोटे रूप में रेतने को मात्र साराई करने व बरक आदि का कारबार करने लगे। इस प्रकार व्यापार को जमा कर सन् १९०४ में आप बनिन्दनराीन हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ अयादीन भाई के पुत्र सेठ अब्दुल्ला भाई, लाल बहादुर सेठ अहमद भाई, सेठ गुलाम हुसैन भाई तथा सेठ कामिस आजी भाई हैं। आप लोगों ने अपने फर्म के व्यापार को भिन्न २ कई लाइनों में तरकीबी दी है। आपने सादाबाद मिमेंट कम्पनी लि० और मिगनेटो कनिरीज बरंगल की एजमिणर्स ली०, तथा बरुन बंके रूप में बरक और सोडा लेमन का कारबारता होता है। तथा १०।१२ प्रकार के एसेस ईसाई कर भाग में प्रचलित हैं। इस समय सेठ अब्दुल्ला भाई फर्म के कारबार का भार अपने छोटे भ्राताओं पर छोड़ कर शान्ति स्वाम करने हैं।

व्यापारिक लक्ष्यों के लक्ष्य ३ इस फर्म के मालिकों ने वार्षिक एवं राष्ट्रीय कामों में अच्छी कामगरी पैदा की है। लाल बहादुर सेठ अहमद भाई को भाग्य सरकार ने लाल सार

तथा रान बहादुर का विनाश प्राप्त हुआ है। निजाम स्टेट के दुष्काल के समय जनता को सला अनाज आपने सप्लाई किया था। इसी प्रकार त्रेग के समय भी आपने पब्लिक की बहुत मदद की थी। सप्राइज किंग जार्ज के स्वास्थ्य-लाभ करने के उपलक्ष्य में प्रसन्नतास्वरूप आपने विद्यार्थियों की मदद और शिक्षा-संचार के लिये १ लक्ष रुपयों का दान किया है। इस समय आर शाहाबाद सिमेंट कम्पनी लिमिटेड, उस्मान शाही मिल लिमिटेड, चाम्ने मोटर साइकल एंजंसी लि० के डायरेक्टर और रेलवे एडवायजरों पोर्ब तथा सिक्न्दराबाद कन्स्ट्रूमेंट कम्पनी के मेम्बर हैं। सेठ गुलाम हुसेन भाई ने एसेंस का इंतजाम किया है। आगही फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

सिक्न्दराबाद—मेसर्स अलादीन एण्ड संस  
फ़ारसपोर्ब स्ट्रीट  
T. No 300 कार का पता Alladin

यहाँ शाहाबाद सिमेंट कम्पनी और सिंगनेटी  
कॉलरी की एंजिनियों तथा आइम और एंटेड  
वाटर फेक्टरी है। इसके अलावा १०१२ तरह  
के एसेंस तयार करके भारत भर में भेजे जाते हैं।

### मेसर्स जोरावरमन् मोर्तीयाल

इस फर्म के मालिक बगदाई ( बोगदुर स्टेट ) निशामी बोगदुर जैत समान के कोठारी मजदूर हैं। इस फर्म का स्थापन कोत्तारम में सेठ धानमत्तरी ने किया था। भारत के पश्चात् सेठ जोरावरमन्जी व्यवसाय संघालन करते हैं।

इस फर्म के व्यवसाय एवं व्यापार की वृद्धि भारत के पुन सेठ मोर्तीयालजी कोठारी के हाथों से विशेष रूप से हुई। भारत सिद्धि एवं नूतन उन्नत विचारों के मजदूर हैं। सन् १९१९ में ब्यापन ब्यापार में योग देना कार्रम किया तथा विन्तूनिरि, सिक्न्दराबाद और हैदराबाद में ८ मिनेस वाडू दिये। ब्यापन हैदराबाद हुंटेडिन लम्बक एक छोटी देनिह पत्र जारी किया। बर्मी हाज ही में विनेस व्यवसाय को उन्नत करने के लिये हैदराबाद के पुन सिद्धि एवं बम्बारी वाडूओं ने १० हास की वूजी ने दि महापीर फंडो त्रेव एण्ड विन्ट्रिकल कम्पनी लिमिटेड की स्थापना की है। इस संघा का उद्देश्य भारतीय शिक्षा उद्देश्य एवं विन्म तयार कर उनका में सपुर्देश का प्रचार कर इन्म प्राप्त करना है। इस फर्म की मेन्ट्रिग एंजंटे वेगारों जोरावर मोर्तीयाल एण्डसंग है। इस संघ आरहा व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

सिक्न्दराबाद—मेसर्स जोरावर मोर्तीयाल  
हुंटेडिन फ़ारिस

T. No. 51 कार का पता Miratid

यहाँ में हैदराबाद हुंटेडिन लम्बक छोटी  
देनिह एवं बर्दिह लम्बक व्यापारिक पत्र  
निकलता है।

मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल

इस दुकान का हेड आफिस बरंगल में है। अतः इसके व्यापार का परिचय यहीं दिया गया है। बरंगल में यह फर्म सेठ श्रीकृष्णजी के समय से करीब ६० सालों से व्यापार कर रही है।

सिकन्दराबाद के व्यापारिक समाज में यह फर्म करीब २० वर्षों से व्यापार कर रही है। तथा अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस फर्म के व्यापार का परिचय इस प्रकार है:—

बरंगल—मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल	}	यहाँ हेड आफिस है तथा बैंकिंग एवं आइव का कारवार होता है।
सिकन्दरा बाद—श्रीकृष्ण चुन्नीलाल T. No. 333		बैंकिंग हुण्डी चिट्ठी तथा आइव का कारवार होता है।

**जनरल मर्कण्टाइल**

मेसर्स अब्दुलीन एण्ड संस

इस फर्म के मातृघो के नाम बदन बम्बई है। यहाँ से सेठ अब्दुलीन भाई मारजी सन् १८८२ ईस्वी में सिकन्दराबाद आये, तथा छोटे रूप में देने को बात साराई करने व बरक आदि का कारवार करने लगे। इस प्रकार व्यापार को जमा कर सन् १९०४ में आग बलिदानशानि हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मातृघ सेठ अब्दुलीन भाई के पुत्र सेठ अब्दुल्ला भाई, शान बहादुर सेठ अहमद भाई, सेठ गुलाम हुसैन भाई तथा सेठ कामिम अजी भाई हैं। आग लोगों ने अपनी फर्म के व्यापार को भिन्न २ कई लाइनों में तरकी दी है। आगने शाशाबाद मिमेट कम्पनी लि० और मिगनेटी कालिरीय बरंगल की एजन्सियों लीं, तथा बहुत बड़े रूप में बरक और मोडा लेमन का कारवाला होता। तथा १०१२ प्रकार के लुमेंस ईताइ कर भारत में प्रचलित किये। इस समय सेठ अब्दुल्ला भाई फर्म के कारवार का भार अपने छोटे भ्राताओं पर छोड़ कर शांति लाभ करने हैं।

व्यवसायिक मजदूरी के साथ २ इस फर्म के मातृघो ने धार्मिक एवं राजकीय कामों में अच्छी लगभगी देना की है। शान बहादुर सेठ अहमद भाई को भारत सरकार से मान सम्मान

तथा एगन बहादुर का रिवाज प्राप्त हुआ है। निजाम स्टेट के दुष्काल के समय जनता को सस्ता अनाज आपने सहाई किया था। इसी प्रकार ड्रेग के समय भी आपने पब्लिक की बहुत मदद की थी। संप्राट किंग जार्ज के स्वास्थ्य-लाभ करने के उपलक्ष्य में प्रसन्नतास्वरूप आपने विद्यार्थियों की मदद और शिक्षा-अपार के लिये १ लक्ष रुपयों का दान किया है। इस समय आप शाहाबाद सिमेंट कम्पनी लिमिटेड, उस्मान शाही मिल लिमिटेड, बाम्बे मोटर साइकल एजेंसी लि० के डायरेक्टर और रेलवे एडवायजरी बोर्ड तथा सिद्धन्द्राबाद कन्स्ट्रूट कमेटी के मेम्बर हैं। सेठ गुलाम हुसेन भाई ने एसेंस का ईजाद किया है। आपको फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिद्धन्द्राबाद—मेसर्स अलादीन एण्ड संस  
आक्सफोर्ड स्ट्रीट  
T. No 300 वार का पता Alladin

} यहाँ शाहाबाद सिमेंट कम्पनी और सिंगनेटी कॉलरी की एजेंसियाँ तथा आइस और एरेंटेंड वाटर फेक्टरी है। इसके अलावा १०।१२ तरह के एसेंस तयार करके भारत भर में भेजे जाते हैं।

### मेसर्स जोरावरमल मोतीलाल

इस फर्म के मालिक बगड़ी ( जोधपुर स्टेट ) निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाज के कोठारी सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन बीजोरम में सेठ यानमलजी ने किया था। आपके पश्चात् सेठ जोरावरमलजी व्यवसाय संचालन करते हैं।

इस फर्म के व्यवसाय एवं गति की वृद्धि आपके पुत्र सेठ मोतीलालजी कोठारी के हाथों से विशेष रूप से हुई। आप शिक्षित एवं नूतन उन्नत विचारों के सज्जन हैं। सन् १९१९ से आपने ध्याहार में योग देना आरंभ किया तथा विरनूलगिरि, सिद्धन्द्राबाद और हैदराबाद में ८ सिनेमा थ्याट्र किये। आपने हैदराबाद युनिटिन नामक एक अंग्रेजी दैनिक पत्र जारी किया। अभी हाल ही में जिनेमा व्यवसाय को उन्नत करने के लिये हैदराबाद के कुछ शिक्षित एवं बहादुरी सज्जनों ने १० लाख की पूँजी से दि महाश्वर फोटो ट्रेड एण्ड थियेट्रिकल कम्पनी लिमिटेड की स्थापना की है। इस संस्था का उद्देश्य भारतीय शिक्षामय ड्रामा एवं किताब तयार कर जनता में सद्बुद्धि का प्रचार कर द्रव्य प्राप्त करना है। इस फर्म की मेनिजिंग एजेंट मेसर्स जोरावर मोतीलाल एण्ड संस है। इस समय आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिद्धन्द्राबाद—मेसर्स जोरावर मोतीलाल  
युनिटिन थ्याट्रिस

T. No. 51 वार का पता Miraid

} यहाँ से हैदराबाद युनिटिन नामक अंग्रेजी दैनिक एवं थियेट्रिकल नामक साप्ताहिक पत्र निकलता है।

सिंहदरावाद—दि महावीर फोटो ड्रेज एण्ड  
थियेट्रिकल कम्पनी  
लिमिटेड

बम्बई—दि महावीर फोटो ड्रेज एण्ड थियेट्रि-  
कल कम्पनी लिमिटेड तथा जोरावर-  
मल्ल मोतीलाल एण्ड मंस गोवर्द्धन  
विहिंडग, गिरगांव बैकरोड नीयर  
माध्याह्नम पो० नं० ४

इसकी एजेंट मेसर्स जोरावरमल्ल मोतीलाल  
एण्ड संस है। यह कम्पनी उच्च भारतीय ड्रामा  
एवं सिनेमा फिल्म तयार करने का काम करती  
है। इस समय इस कम्पनी के ८ सिनेमा यहाँ  
काम करते हैं।

यहाँ फिल्म रजिस्टर कराने का काम होता  
है। तथा बाहर से फिल्म मँगवाई और भेजी  
जाती है।

### सेठ नन्धूलालजी गुतेदार

सेठ नन्धूलालजी का मूल निवासस्थान माध्यापुर ( कच्छ ) हैं। आप कश्मिर-वैद्य समाज  
के सत्रन हैं। नन्धू सेठ के पिता भी लालजी सेठ सन् १९०० के लगभग हैदराबाद आये तथा  
हैदराबाद मीटर गेज रेलवे लाइन के बनाने के कुछ भाग का कंट्राक्ट लिया। इन कार्य में  
सम्पत्ति प्रशिक्षित करने के बाद आपने अपना यहीं निवास बना लिया। आपके पुत्र श्रीगुण नन्धू  
सेठ का जन्म सन् १८८७ में हुआ। आप १६ वर्ष की अवस्था में ही अपने पूज्य पिताजी के  
समर्थ कंट्राक्टिंग के काम में भाग लेने लगे तथा धीरे २ इस लाइन में शिक्षा प्राप्त करने पर  
आपने अच्छी उन्नति कर दिखाई।

श्रीगुण नन्धू सेठ सिद्धन्दरावाद तथा हैदराबाद के प्रतिष्ठित कंट्राक्टर माने जाते हैं। आपके  
हस्तों में लाखों रुपयों के कंट्राक्टिंग के काम हुए। परभनी परती लाइन आप ही के द्वारा बन कर  
नगर हुई, इसी प्रकार पी० कच्छ्यू० ही० एवं शाली महलों के बनाने में भी आपने बहुत काम  
दिये। अभी २ आपने हैदराबाद में यूनानी अस्पताल बनाने का १० लाख का कंट्राक्ट लिया  
है। नन्धू सेठ बड़े शक्ति स्वभाव के शीघ्र सत्रन हैं। आपके पिता सेठ लालजी की अवस्था  
इस समय ६० वर्ष की है। आपके पुत्र श्रीविश्राम भाई रघुभाई भी काम-काज में भाग लेते हैं।  
कच्छ बना इस प्रकार है।

सिद्धन्दरावाद—सेठ नन्धूलालजी एंजिनियरिंग,  
कंट्राक्टर

यहाँ भालका निवास है, एवं कंट्राक्टिंग  
का काम होता है।

राजा दीनदयाल एण्ड संस

इस फर्म के मालिक मेरठ (यू० पी०) निवासी अमवाज वैश्य समाज के जैन धर्मावलम्बी सञ्जन हैं। इस फर्म के स्थापक राजादीनदयाल साह्य १५ वर्ष की अवस्था में सन् १८६५ में इन्दौर आये। आरंभ से ही आपको फोटोमाफ़ी का शौक था। आपके फोटो को सर लेफ्टिनेन्ट मिर्किन साह्य एजेंट सेंट्रल इण्डिया ने पसंद कर सम्राट् के पास भिजवाये थे। आने भारत के दर्रांनीय एवं प्राकृतिक स्थानों के दृश्यों का बहुत बड़ा संग्रह दिया था। इसी तिलसिले में आप एजेंट सेंट्रल इण्डिया का परिचय पत्र लेकर १८७५ में निजाम सरकार के पास आये। सत्कालीन निजाम सरकार मोर महबूब अलीखॉ बादशाह ने आपके अर्ट से मुरा हो आपको ५००) माहवार पर अपना दर्बारी फोटोमाफ़र बनाया। सन् १८८७ में महाराणी विक्टोरिया द्वारा रायल चार्टर पाने वाले सबसे पहिले भारतीय व्यापारी आप ही थे। आपकी फोटोमाफ़ी की प्रिन्स आरु वेल्स, लार्ड डफ़रिन, मिटो, कर्जन, हार्डिज, व्यूक आरु कनाट आदि उच्च यूरोपियन महानुभावों ने प्रशंसा कर आपको अपार्टमेंट दिये हैं। सन् १८८८ में आपने अपनी एक प्रांच स्थापित कर उसे ऊंच दर्जे के कारखाने का रूप दे दिया था। आपको निजाम सरकार ने राजा मुमन्नरजंग का शिवाय इनायत किया। इस प्रकार ख्याति प्राप्त कर १९०५-१९०५ को आप स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र ज्ञानचंद्रजी १९१७ में एवं धरमचंद्रजी १९०६ में गुजरे।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक श्रीज्ञानचंद्रजी के पुत्र बाबू विजोचंद्रजी, हुडमचंद्रजी एवं अमीचंद्रजी हैं। आप सब बड़े सञ्जन व्यक्ति हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है। यहाँ आपका शौरूम तथा स्टूडियो है। एवं सारे भारत के राजा महाराजाओं, दर्रांनीय विल्डिंगों एवं प्राकृतिक दृश्यों के चित्रों का अनुपम संग्रह है। करीब ४० हजार नेगेटिव आपके पास मौजूद हैं।

सिद्धन्दाबाद—राजादीनदयाल एण्ड संस  
नीपर आक्स फोर्ड स्ट्रीट

सौ. बर्द्धराम सुदनीयार

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान कोयम्बटूर है। वहाँ से ५१६ पाँड़ों पहिले यह पानदान सिद्धन्दाबाद आया। आप सुदितियार समाज के सञ्जन हैं। इस फर्म का स्थान सौ. बर्द्धराम सुदनीयार के हाथों से सन् १८४० में हुआ। पहिले आपका व्यापारिक सम्बन्ध निजदरों के साथ था। इसके साथ आप कंटाक्ट का काम भी करते थे। आपका स्वर्गशाम



भारतीय व्यापारियों का परिचय

सन् १८७० में हुआ। आरके पुत्र सी. वर्द्धराज मुदलीयार ( पिता-पुत्रों का एक ही नाम था ) हुए। इन्होंने राइस, विल्डिंग आदि के कंट्राक्ट में बहुत सी सम्पत्ति कमाई। आप सन् १९१९ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सी. वर्द्धराज मुदलीयार साह्य के पुत्र सी. पदमारान साह्य और सी. विठ्ठलराज मुदलीयार साह्य हैं। आप दोनों सज्जन ऊँचे दर्जे के शिक्षित हैं। मिर्च-दराबाद के शिक्षित समाज में आप बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखते हैं। सी. पदमारान साह्य हैदराबाद चेम्बर आफ कामर्स, गल्लू स्कूल, हिन्दू वायस होस्टल तथा डॉम्रेस छामेस स्कूल के प्रेसिडेंट और मद्रास कॉलेज के आनरेरी सेक्रेटरी हैं। तथा विठ्ठलराज साह्य फर्म के व्यापार को बड़ी तपस्या से सम्भालते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गिहन्द्रगवाह-( वरिष्ठ ) मेगर्स सी.  
वर्द्धराज मुदलीयार  
T. A. mudaliar

यहाँ वर्म्भोरोल की एजेंसी तथा मिरानरी की एजेंसी तथा विल्डिंग कंट्राक्ट का काम होता है। इसके स्थान २ पर आइल सज्जाई करने के आपके डेपोज हैं।

**बैंकर्स**

- दि इम्पेरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
- दि स्टेट बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
- दि कमर्शियल एण्ड वैस्टिंग कम्पनी
- मेम्बर्स अमीन कुन मुमय्या
- ” आचार्य बन्द्योपा
- ” आचार्य नरसिंहराम
- ” काट्यम गोभायम
- ” श्रीरामायण श्रीनारायण
- ” सुन्दरी लक्ष्मीनारायण
- ” बन्धुवामराम द्विवेदी
- ” बन्धुवाम सुन्दर
- ” बन्धुवाम सुन्दर
- ” बन्धुवाम सुन्दर

- मेगर्स धीरजी चौधरी
- ” पूतमचंद बल्लुचरमन
- ” बृह्म महोदय
- ” बंशीनाथ अमीरचंद डामा रायवशाहुर
- ” मिस्त्रान बंधुचंद लक्ष्मण
- ” शुभकरण श्रीराम
- ” रामगोपाल लक्ष्मीनारायण श्रीराम बन्धु
- ” शुभकरण गंगाधर
- ” गणेशम मिस्त्राजी
- ” सुन्दर मेठी बन्धुवाम रानीयत
- ” श्रीरामचंद पूतमचन्द
- ” श्रीराम सुन्दरी

कल-कारखाने

- उसमान शाहीमिल नदिह (आफिम)
- एय्यम मंसन एण्ट कं० आइम फेक्टरी हैदराबाद
- खलादीन एण्ट संस आइम एण्ट सोडावाटर
- फेक्टरी सिद्धन्द्राबाद
- गुलबर्गा मद्रयूव शाहीमिल (आफीस)
- दीनान बहादुर रामगोपाल मिल
- हैदराबाद स्टीमिंग एण्ट वीविंग मिल

प्राय मरचेट्स

- मंसर्स अनन गुल इरफ्रा बिश्वनाथम्
- " अमीनगुल लिगप्या कैरावद
- " अमीनगुल लक्ष्मप्या
- " अमीनगुल राजप्या
- " कैतान सरवप्या
- " कैलाश बोरप्या
- " चापम शिबन्ना
- " दुन्नर गोपाज
- " गुलबर्गा मद्रयूव शाही मिल शाव
- " गंगाविशान मोहनजाल
- " रामबहादुर दिग्गंध वामुदेव
- " जमनाथर सोरा
- " नरसिंहगिरिमिल राय
- " फेस्टूडर बीरफ्रा
- " सुरजीपर मोर्चकिरान
- " मोहनजाल दुईइराम
- " दुणरडी मोडुलराम मिलराव
- " शान्तिराम मोहनराव
- " हाथराम गिन्नु शिवन्धम्
- सोकराजप्या

- मंसर्स बेलदे जगदीशवरप्या
- " समाला कुंडप्या
- " गुमकरण रामगोपाल
- " मुखदेव धीराम

यार्न मरचेट्स

- मंसर्स कैतारा सरवप्या
- " अमीनगुल मुत्ताप्या पुषीतिरप्या
- " मथल्ला रमफ्रा
- " मोहूर रायवन्द

प्रेन मचेट एण्ट कपीशन एजंट

- " टीरसीराम सोडाराम
- " बन्दा राजफ्रा
- " दयाधाम सूजमल
- " दुदित्त जगदीशवरप्या भामेत्पावप्या
- " रामचन्द्र राममुत्त
- " छान बहादुर होरमनजी मागछजी
- " भीष्टण्य पुर्माहाता

किराना के व्यापारी

- मंसर्स अमीनगुल नगप्या
- " बङ्गनूर पारप्या
- " कुंजल राज्जा निगप्या
- " गुन्नाल्या कुंडप्या
- " गदि रामफ्रा
- " दाबा रानन्वा इरफ्रा
- " दाबा बन्दप्या
- " पयननूर रानचन्द्रप्या
- " तिरी लक्ष्मप्या

भारतीय व्यापारियों का परिषय

सन् १८७० में हुआ। आरके पुत्र सी. वड्ढराज मुदलीयार ( पिता-पुत्रों का एक ही नाम हुआ। इन्होंने राइम, विन्डिंग आदि के कंट्राक्ट में बहुत सी सम्पत्ति कमाई। आर सन् १९०० में स्वर्गवामी हुए।

वर्तमान में इस फर्म के मालिक सी. वड्ढराज मुदलीयार साहब के पुत्र सी. परमागर साहब और सी. विठ्ठलराज मुदलीयार साहब हैं। आप दोनों सज्जन ऊँचे दर्जे के शिक्षित हैं। पिता परमागर के शिक्षित समाज में आप बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखते हैं। सी. परमार साहब हीराबन्द चम्बर आर काममें, गार्स स्कूल, हिन्दू वायम होम्स तथा डीप्रेस छामेस स्कूल के प्रेसिडेंट और मद्रास कॉलेज के आनरेरी सेक्रेटरी हैं। तथा विठ्ठलराज साहब फर्म के व्यापार को बड़ा व्यापार में सम्भावते हैं।

इस फर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

मि. परमार ( प्रिन्सिपल ) मराम सी  
 वड्ढराज मुदलीयार  
 I. A. Mudaliar

यहाँ चम्बरौशल की एजेंसी तथा मिरानरी की एजेंसी तथा विन्डिंग कंट्राक्ट का काम होता है। इसके स्थान २ पर आइत साराई करने के आगे डेपोज हैं।

वेदम

१० इन्डिया १०० वेंड आर. इन्डिया लिमिटेड  
 ११ इन्डिया १०० वेंड आर. इन्डिया लिमिटेड  
 १२ इन्डिया १०० वेंड आर. इन्डिया लिमिटेड  
 १३ इन्डिया १०० वेंड आर. इन्डिया लिमिटेड  
 १४ इन्डिया १०० वेंड आर. इन्डिया लिमिटेड  
 १५ इन्डिया १०० वेंड आर. इन्डिया लिमिटेड  
 १६ इन्डिया १०० वेंड आर. इन्डिया लिमिटेड  
 १७ इन्डिया १०० वेंड आर. इन्डिया लिमिटेड  
 १८ इन्डिया १०० वेंड आर. इन्डिया लिमिटेड  
 १९ इन्डिया १०० वेंड आर. इन्डिया लिमिटेड  
 २० इन्डिया १०० वेंड आर. इन्डिया लिमिटेड

- मराम सी. वड्ढराज
- " पूनमचंद बलराजराज
- " पूरगू मशरफन
- " परीशान अलीचंद डागा रावबहादुर
- " मिस्त्रान अचरुट कु. पुण्या
- " सुभकरण श्रीगम
- " रामगोपाल अकमोन्नायकण देशा बहादुर
- " सुभकरण गंगाविगत
- " माणसरा मिश्रभागी गान
- " मुहम मेडी चन्द्रका रानीरत
- " हाशचंद पूनमचन्द
- " भीरुग पुत्र गान

कल-कारत्वाने

- वसमान शाहीमिल नादेइ (आफिम)
- एप्यम मेसन एण्ड कां० आरम फेक्टरी हैदराबाद
- अलादीन एण्ड संस आदस एण्ड सोझावाटर
- फेक्टरी सिद्धन्द्राबाद
- गुलबर्गा महबूब शाहीमिल (आफीस)
- दीवान बदादुर रामगोपाल मिल
- हैदराबाद स्पीनिंग एण्ड वॉविंग मिल

ग्रथ भरचेंदूस

- मेसर्स अमन मुल इरशा विदरनाथम्
- " अमीनमुल लिंगप्या केरावळ
- " अमीनमुल सधमप्या
- " अमीनमुल राजप्या
- " कैडास सरवप्या
- " कैलास बोरप्या
- " कायम शिवप्या
- " गुजर गोपाल
- " गुलबर्गा महबूब शाही मिल राव
- " गंगाविरान मोहनजात
- " रायबदादुर फिदकांव बापुरेब
- " जमनापर बीरार
- " नरविर्गिरिमिल राव
- " फोर्टूदर बीरशा
- " गुर्जापर गोपेविरान
- " मोहनजात गुर्जुराम
- " गुर्जुराई मोहुनशाम मिलराव
- " शानविरान मोहनराज
- " राबतराम लिंग् विरगप्यम्
- " मोनासप्या

- मेसर्स बेलदे जगदीश्वरप्या
- " समाला कुंडप्या
- " शुभकरण रामगोपाल
- " मुखदेव श्रीराम

यार्न भरचेंदूस

- मेसर्स कैलारा सरवप्या
- " अमीनमुल मुत्तप्या धुपौलिरप्या
- " मपल्ला रमभा
- " मोहूर रायवळ

- ग्रेन मर्चेट एण्ड कर्मीगान एन्ड
- " खीपसीराम सीवाराव
- " पन्दा राजभा
- " दपाराव सूत्रमल
- " हुदिराज जगदीश्वरप्या भागेत्पावप्या
- " रामचन्द्र राममुग
- " रान बदादुर शेरमवर्जी मानकजी
- " श्रीकृष्ण मुभांशा

किराना के व्यापारी

- मेसर्स अमीनमुल नागप्या
- " बडनूर वावप्या
- " कुंभल रावभा लिंगप्या
- " गुमाले कुंडप्या
- " गौंदे राजभा
- " दाबा रामप्या इरशा
- " दाबा चन्द्रप्या
- " दधननूर शानचन्द्रप्या
- " विरी लदमप्या





स्वामी वेद विद्यावाचस्पती (द्वयाराम  
सूर्यमल-गुरुवर्यां )



स्व० वेद विद्यावाचस्पती (द्वयाराम  
सूर्यमल-गुरुवर्यां )



स्व० वेद विद्यावाचस्पती (द्वयाराम  
सूर्यमल-गुरुवर्यां )



वेद विद्यावाचस्पती (द्वयाराम सूर्यमल-गुरुवर्यां )

व्यापारियों का परिचय

के ६०० शोअरों में विभक्त है। तथा शोअर का भाव १५०० का है। इसका बनाव विशेष कर निजाम स्टेट में थिकी होता है। यह मिल प्रति दिन ६ हजार रु हजार रत्तल कपड़ा तैयार करती है। इसकी मैनेजिंग एजेंट मेसर्स दयाराम सू मिल में आधे से ऊपर शेअर्स इम फर्म के हैं।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स छोगमल हीरालाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रीयां सेठजी की ( जोधपुर स्टेट ) ओमवाल जैन शैताम्बर समाज के भलगढ़ सज्जन हैं। सेठ छोगमलजी ने आरंभ में बाजे सेठ महानंदराम पूरनमज के यहाँ गुलबर्गा बुकान पर सर्जिम की। पश्चात् संवत् १९ में अपना घर कपड़े और सराफी का कारखार शुरू किया। आप १९०० में रणकान सेठ छोगमलजी के दो पुत्र हुए—सेठ चुभीलालजी और सेठ हीरालालजी। इनमें से हीरालालजी का कारखार संवत् १९६७ में अलग हो गया। तब से सेठ हीरालालजी का कारखार इपरोक्त नाम से अलग कारखार करने हैं। आपके यहाँ भीयुग र्प्रति दिन सूणी ( मारवाड़ी ) में दसक लाये गये हैं। गुलबर्गा के व्यापारिक प्रीतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

मेसर्स—मेसर्स छोगमल हीरालाल—कपड़े का व्यापार तथा हुंडी बि  
 मेसर्स—मेसर्स हीरालाल माला—कपड़े का व्यापार होता है  
 मेसर्स—मेसर्स हीरालाल माला—कपड़े का व्यापार होता है

ममम दयाराम सू

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान  
 मेसर्स—मेसर्स हीरालाल माला—कपड़े का व्यापार होता है  
 मेसर्स—मेसर्स हीरालाल माला—कपड़े का व्यापार होता है  
 मेसर्स—मेसर्स हीरालाल माला—कपड़े का व्यापार होता है

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ हीराजालजी लाहोटी तथा मूरजमलजी के पुत्र व्यंकटलालजी, पूरनमलजी सेठ मोतीलालजी के पुत्र संकरलालजी और किसनलालजी के पुत्र पूयालालजी हैं। इन सबजनों में सेठ हीरालालजी इस कुटुम्ब में सब से बड़े हैं। सेठ हीरालालजी के पुत्र पन्नालालजी और यश्रीलालजी हैं।

सेठ हीरालालजी लाहोटी ने सन् १९२६ में गुलबर्गा का महनूपराही मिल खरोदा है। आपके पास आने के बाद मिल ने अच्छी वज्रति कर दिखाई है। इस मिल की १॥॥ लाख की रकम निशाम कराई गिरी ( फस्टम ) में जमा थी वह भी आपके मिल गई है। आपके मकानात आदि लानूर, गुलबर्गा आदि स्थानों में फार्मों संख्या में हैं। गुलबर्गा में फार्मों और से सदावर्त का प्रबंध है। इस फर्म का व्यापारिक परिवय इस प्रकार है।

गुलबर्गा—मेसर्स दयाराम मूरजमल—यहाँ पैट्रिंग, टुंकी, बिट्टी और मिल एजंसी का काम होता है।

गुलबर्गा—मेसर्स दयाराम मूरजमल—इस नाम से महनूपराही मिल के बपड़े की दुकान है।

मिहन्द्राबाद—मेसर्स दयाराम मूरजमल—पैट्रिंग और फार्म का कारबार होता है।

लानूर—मेसर्स दयाराम मूरजमल—ऑनिंग प्रैसिंग फेक्टरी, फार्म, पैट्रिंग व काटन का व्यापार।

बगवई—मेसर्स धिरानलाल हीरालाल  
कालबादेवी रोड } पैट्रिंग व फार्म का कारबार होता है।

मुलावेठ ( गुलबर्गा ) दयाराम मूरजमल—ऑनिंग है, कपास और फार्म का व्यापार होता है।

### मेसर्स परशुराम जाली एण्ड संम

इस कुटुम्ब के मालिकों का मूल निवासस्थान हुमनाबाद ( निशाम स्टेट ) है। वहाँ में १५० साल पूर्व लक्ष्मणा सेठ गुलबर्गा आये। तथा किराने का व्यापार शुरू किया। फार्म लोग शेरव समाज के साजन हैं। लक्ष्मणा सेठ के पन्ना, कमरा: निगदा सेठ और परशुराम सेठ ने फर्म का व्यापार संभाला। सेठ परशुराम जाली के समय में इस दुकान के दरखास्त की वज्रति कार्रवाई हुई। फार्म सन् १८२१ की माय बरी ८ की शर्तोंवाली हुए।

सेठ परशुराम जाली के ३ पुत्र हुए सेठ लक्ष्मणा जाली, बाराण जाली और संगप्पा जाली। इनमें से संगप्पा सेठ १० साल पूर्व शर्गोवाली हो चुके हैं। सेठ परशुराम जाली के बाद इस फर्म के व्यापार की सेठ लक्ष्मणा जाली के हाथों में शिफ्त वज्रति हुई है। फार्म सन् १८२३ में खन्वी दुकान की शर्तों बगवई में स्थानी। फार्मके पुत्र सेठ गिजल जाली और रामचन्द्र जाली व्यापार संभालने में माय लेते हैं। और बसुंरव जाली ( निशाम )





वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ हीराबालजी लाहोटी तथा सूरजमलजी के पुत्र व्यंकटलालजी, पूरनमलजी सेठ मोवीलालजी के पुत्र संकरलालजी और किसनलालजी के पुत्र पूशालालजी हैं। इन सज्जनों में सेठ हीराबालजी इस कुटुम्ब में सब से बड़े हैं। सेठ हीरा-लालजी के पुत्र पन्नालालजी और यश्रीलालजी हैं।

सेठ हीराबालजी लाहोटी ने सन् १९२६ में गुलबर्गा का महबूबराहो मिल खरीदा है। आपके पास आने के बाद मिल ने अच्छी वज्रवि कर दिखाई है। इस मिल की १॥॥ लाख की रकम निजाम कराइ गिरी (कस्टम) में जमा थी वह भी आपको मिल गई है। आपके मकानाव आदि लानूर, गुलबर्गा आदि स्थानों में काफी संख्या में हैं। गुलबर्गा में आपकी ओर से सदावर्त का प्रबंध है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गुलबर्गा—मेसर्स दयाराम सूरजमल—यहाँ वैडिंग, हुंडी, बिट्टी और मिल एजेंसी का काम होता है।  
 गुलबर्गा—मेसर्स दयाराम सूरजमल—इस नाम से महबूबराहो मिल के कपड़े की दुकान है।  
 सिरुन्दराबाद—मेसर्स दयाराम सूरजमल—वैडिंग और आइत का कारबार होता है।  
 लानूर—मेसर्स दयाराम सूरजमल—जोनिंग प्रेसिंग फैक्टरी, आइत, वैडिंग व काटन का व्यापार।

बम्बई—मेसर्स किरानलाल हीराबाल कालवादेवी रोड } वैडिंग व आइत का कारबार होता है।  
 गुलापेट (गुलबर्गा) दयाराम सूरजमल—जोनिंग है, कपास और आइत का व्यापार होता है।

मेसर्स परशुराम जाजी एण्ड संस

इस कुटुम्ब के मालिकों का मूल निवासस्थान दुपनाबाद (निजाम स्टेट) है। वहाँ से १५० साल पूर्व लक्ष्मण्या सेठ गुलबर्गा आये। तथा किराने का व्यापार शुरू किया। आप लोग बैरय समाज के सज्जन हैं। लक्ष्मण्या सेठ के पश्चान् क्रमराः लिंगया सेठ और परशुराम सेठ ने फर्म का व्यापार संभाळा। सेठ परशुराम जाजी के समय से इन दुकान के व्यवसाय की वज्रवि आरंभ हुई। आप सके १८२१ की भाप बरी ८ की स्वर्गवासी हुए। सेठ परशुराम जाजी के ३ पुत्र हुए मेंट लक्ष्मण्या जाजी के हाथों से हुए हैं। सेठ परशुराम जाजी के बाद इन फर्म के व्यापार को मेंट लक्ष्मण्या जाजी के हाथों से वितोय वज्रवि हुई है। आपने सके १८२२ में अपनी दुकान को शाखा बम्बई में खोली। आरके पुत्र मेंट शिवप्पा जाजी और रामप्पन्ना जाजी व्यापार संभाळन में भाग लेते हैं। और वासुदेव जाजी (त्रिवह्मण)

## भारतीय व्यापारियों का परिषय

संगठ्या सेठ के यहाँ दत्तक गये हैं। काश्या सेठ के पुत्र माणिकराव १२ सात पूर्व गुजर चुके हैं, उनमें छोटे बालचन्द्रराव हैं। श्रीयुग् रामचन्द्रराव के पुत्र बाल गंगाधर हैं।

इस कुटुम्ब का गुलबर्गी में भित्त २ लाइनों में कई प्रकार का व्यापार होता है, तथा यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपकी ओर से गुलबर्गी में एक धर्मशाला बनी है, तथा मदारत चाखू है। संगम केतकी में भी आप एक धर्मशाला बनवा रहे हैं। गुलबर्गी में आपकी वैश्य वेद पाठशाला चान्द्र है।

इस कर्म का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

१. गुलबर्गी—सेठ परगुराम जाजी—इस नाम से किराने का व्यापार होता है।
२. गुलबर्गी—सेठ लक्ष्मण जाजी—टुंडो, चिट्टो, आइन और खरीदी का काम होता है।
३. गुलबर्गी—सेठ परगुराम काश्या जाजी—आइन खरीदी और चिट्टो का काम होता है।
४. गुलबर्गी—सेठ माणिक रामचन्द्र जाजी—रुपड़े का व्यापार होता है।
५. गुलबर्गी—सेठ काश्या जाजी—किराने का व्यापार होता है।
६. गुलबर्गी—सेठ संगठ्या जाजी—किराने का व्यापार होता है।
७. गुलबर्गी—संगठ्या काश्या जाजी—जोह और हाडवेअर का व्यापार होता है।
८. गुलबर्गी—माणिक रामचन्द्र जाजी के—रेडोमड हाव टापी कौरह का व्यापार होता है।
९. बम्बई—परगुराम लक्ष्मण जाजी } कमीशन का काम होता है।  
विमम स्ट्रीट १५१।

१०. रायपुर—लक्ष्मण काश्या जाजी—कमीशन का काम होता है।
११. लखनऊ (निजाम) शिवाजी संगठ्या जाजी— " " "
१२. हुन्नर ( गुलबर्गी ) शिवाजी जाजी— " " "
१३. रीयपुर ( गुलबर्गी ) लक्ष्मण काश्या जाजी—कमीशन का काम होता है।
१४. गण्डापुर ( गुलबर्गी ) लक्ष्मण जाजी— " " "

### संगम मद्रुन्दनाम दामकानाम

इस कर्म का एक आर्थिक हेतुवाद में संगम मद्रुन्दनाम लोडिनाम के नाम से है। संगम मद्रुन्दनाम आर्थिक का विस्तृत परिचय माणिको के बिना सदिन एक खत पर दिया गया है। हेतुवाद के कारण बम्बई, मद्रास, नांदेड, कर्गोमनाथ, मिडिरी, अण्डापीट आदि स्थानों पर इस कर्म को गणना है किंतु यह वेदुग और आइन का व्यापार होता है। गुलबर्गी में इस कर्म पर कानून और वेदुग व्यापार होता है।

भारतीय व्यापारियों का परिचय:—  
( तीसरा भाग )



श्री. ए. र. श्रीनिवासन



श्री. ए. र. श्रीनिवासन





मेसर्स हरखराम अन्नराज  
 इस फर्म का स्थापन ५० साल पूर्व सेठ जीवराजजी ने किया। आपके पिता सेठ काजू-  
 रामजी सोलापुर में कपड़े का व्यापार करते थे। वर्तमान में सेठ काजूरामजी के पुत्र जीवराज-  
 जी, माधवराजजी और हरखराजजी का कुटुम्ब इस फर्म का मालिक है। सेठ हरखराजजी के  
 पुत्र सम्पतराजजी गुलबर्गे में व्यापार सहायते हैं और जीवराजजी के पुत्र गजराजजी देश में  
 रहते हैं। आप सोजत निवासी ओसवाज जैन समाज के सिंगवी सज्जन हैं। आपका व्यापारिक  
 परिचय इस प्रकार है।

- गुलबर्गा—हरखराज अन्नराज
- काजूराम जीवराज
- माधवराज चिन्नराज
- धन्वई—अन्नराज सम्पतराज पायधुनी—कर्मीराम का काम होता है।

बैंकर्स

- मेसर्स अंड्रुनन कोआपरेटिव बैंक लिमिटेड
- " सरस्वती बैंक लिमिटेड
- " दयाराम सूरजमल
- " कल्लार्जी सूमाजी
- " सुन्दरदास द्वारकादास
- " लम्बाजी दानमल

जीनिंग प्रोसिंग फेक्टरीज

- मेसर्स महयूव शाही मिल जीनिंग फेक्टरी
- " लक्ष्मण्याराजी जीनिंग फेक्टरी
- " शिबानन्द ऑइल मिल

ग्रेन मर्चेण्ट एन्ड कर्मीशन एजेंट

- मेसर्स कुंवरजी सोदाराम
- " कल्लार्जी सूमाजी
- " सेण सिद्धप्पा सुरेण्णो नाराजी

मेसर्स बिनवसप्पा संगणवासप्पा कनेपुर

- " युक्त्पा शिवप्पा गुणमटकल
- " शामजी कुंवरजी
- " पराराम काराप्पाजाजी
- " सुन्दरदास द्वारकादास
- " माठाळप्पा महाकृष्ण खेणी
- " मदिअप्पा नागप्पा काङ्गारी
- " स्वरूपचंद लक्ष्मीनारायण
- " रामसुख जेटमल
- " लक्ष्मण्याराजी
- " शिव शारङ्गप्पा रेवावा गंरीयुडी
- " संकरप्पा खेनी
- " शिव शारङ्गप्पा स्वामी
- " शांभुमलप्पा सूबा
- " हीराजाल रामनमाद
- " भीराम शिवनाथ

कपड़े के व्यापारी

- मेसर्स अब्दुल वाहद अली  
 " अब्दुल करीम खोजा  
 " कन्हैयालाल नरसिंहदास कम्पनी  
 " कबूला साहब भोगतूम साहब महागानी  
 " काचूराम जीवराज  
 " होंगमन हीरालाल  
 " दयाराम मूरजमत  
 " माणिक रामचन्द्र जात्री  
 " माधवराज किरानराज  
 " शैलया कुमार स्वामी अतपुर  
 " शिवाया देवर्णी  
 " शिवाया सदानंदया  
 " हरमचंद अन्नराज  
 " हाजी देवमा मीशगर

चौकी मोने के व्यापारी

- मेसर्स कलात्रय गुरुनाथ कमलापुर  
 " कृष्णचंद परममी कोठारी  
 " लक्ष्मीनारायण पुष्पागम  
 " लक्ष्मीनारायण पुष्पागम स्वर्ण हाट बंकिपु

किराणा के व्यापारी

- मेसर्स नरायण राव परछेटी  
 " परशराम जात्री  
 " संगव्या जात्री  
 " सुरैया नागपा गुनमटकल  
 " सुरगव्या शिवरारणया गंदीगुडी  
 " संगव्या रामुर मुलव्या गुलमटकल

हाई वेमर मरचेंद्रस

- मेसर्स याकूब अली हासम सा  
 " महबूब याकूब सा  
 " संगव्या काराया जात्री

जनरल मरचेंद्रस

- मेसर्स उमरमा पटवेगार ( औपधि )  
 " तुकाराम कारी काचड़े  
 " परागम जात्री ( औपधि )  
 " सत्यन भद्रमच मीशगर

- मेसर्स बसव्या व्यंकया भोमारप्री मोटर मर्चि  
 " हाजी देवर साहब ( बंदापटगं )

## रायचूर

निजाम स्टेट के एकदम दक्षिण भाग में रायचूर जिले का यह प्रधान स्थान है। यहाँ लंबनान होकर हैदराबाद और बम्बई की गाड़ियाँ यहाँ आती हैं। यह स्थान जी० आई० पी० रेलवे का अंतिम स्टेशन है। यहाँ से मद्रास एण्ड मद्रने मराठा रेलवे शुरू होती है। मद्रास और रामेश्वर जानेवाले यात्री इसी राह होकर जाते हैं। इस प्रांत के एक किनारे बम्बई एवं दूसरे किनारे मद्रास इलाका है। इस जिले की पच्छिमी सीमा कृष्णा और दक्षिणी तुंगभद्रा नदी बनाती है। इसका क्षेत्रफल ८॥ हजार वर्गमील और लोक संख्या ६॥ लाख है। जिले में गाँवों की संख्या ११३८ और उत्पन्न १५॥ लाख है। बम्बई, मद्रास और हैदराबाद के किनारों पर आगाने से यहाँ की भाषा फानड़ी, चट्टे, मराठी, तेलंग और तुलुक है। रायचूर के समीप कृष्णा नदी का मुन बहुत विराल एवं द्रशीनीय है। यहाँ देवदुर्ग के हिन्दू राजा ने केसरिया हस्तक किया था।

**पैदावार और तौल**—इस स्थान पर कपास और सींगफली का व्यापार विशेष होता है।

**सुंगफली**—अच्छी मौसिम में १० लाख पैली तक इसकी पैदावार होती है। इस साल इसकी पैदावार बहुत कम हुई। तौल १२ सेर का मन और ८ मन पर भाव, इसके दाने बम्बई तथा मारणोवा जाते हैं।

**कपास**—इसकी २ पींठ होती है तथा ३०, ४० हजार गाँठें प्रतिवर्ष पैदा होती हैं। बारह सेर के मन से कपास की १२ मन की रंडी और सरकी की २० मन की रंडी बानी जाती है।

**बरड़ी**—तीस चालीस हजार मैना प्रतिवर्ष आता है तौल नाना से है।

**गडा**—सब तरह का होता है तौल १२८ सेर के पक्ले पर है। भाव से बीता जाता है। परंही साधारण पैदा होती है।

**कल-कारखाने**—यहाँ ७ जॉनिंग फैक्टरियां, ६ प्रोमिंग फैक्टरियाँ और सींगदाना बघेड़ने की मशीनें हैं। यहाँ के व्यापारियों का संझिन परिषद इस प्रकार है



### सेसर्स किरानलाल गिरधारीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान रोल (मारवाड़) है। आप माहेरवरी वैश्य समाज के वृष सज्जन हैं। हैदराबाद स्टेट के मदनूर नामक स्थान में करीब १०० साल पूर्व मूंडवे के सेठ मयारामजी मूलचंदजी मोदानी और रोल के सेठ खुनायदासजी वृष ने मिलकर मित्रतावरा दुकान स्थापित की। सेठ मयाराम मूलचंद का परिचय हमारे ग्रन्थ के प्रथम भाग में पृष्ठ २०३ में राजपूताना विभाग में दे चुके हैं। हैदराबाद, बम्बई और मदनूर में इन दोनों फर्मों का व्यापार अभी तक भली भौंति शामिल होता आ रहा है। सेठ खुनायदासजी के पुत्र सेठ तुलसीरामजी ने अपनी प्राइवेट फर्म रायचूर में मुलराई। आप संवत् १९६७ में स्वर्ग-वासी हो गये। आप बड़े धर्मात्मा व्यक्ति हो गये हैं। आपने रोल में श्रीरंगनाथजी का मंदिर और घुन्दावन में एक धर्मशाळा बनवाई है।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ तुलसीरामजी के पुत्र किरानलालजी और गिरधारीलालजी वृष हैं। आपने १९७४ में एक दुकान येजवाड़ा में भी खोली है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. रायचूर—सेठ किरानलाल गिरधारीलाल T. A. Rolwala यहाँ बैङ्किंग आइत व गल्ले का कारवार होता है।

२. येजवाड़ा—सेठ किरानलाल गिरधारीलाल—बैङ्किंग आइत व गल्ले का कारवार होता है।

३. फृण्णा—किरानलाल जीनिंग फेक्टरी—जीनिंग और मुंगफली फोड़ने की कारखाना है।

४. हैदराबाद—रामनाथ बन्नीनाथ महाराज गंज  
 ५. मदनूर (धरमाबाद)—मयाराम मूलचंद—  
 ६. बम्बई—नंदराम मूलचंद, बन्नीनाथ रामरतन

इन तीनों फर्मों परबराबरी, गल्ला तथा आइत का कारवार होता है। इनमें हैदराबाद के सेठ नंदराम मूलचंद के साथ आपकी भागीदारी है।

### सेसर्स गिरधारीदास दामोदरलाल

इस दुकान का हेड आफिस व्यावर है। इसके व्यापार आदि का सशिम परिचय हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में भी दिया जा चुका है। व्यापार में ५० साल पूर्व सेठ ठाकुरदासजी राठी पोरकरन (जोधपुर स्टेट) से आये थे। आप माहेरवरी वैश्य समाज के राठी सज्जन हैं। सेठ ठाकुरदास जी के पश्चात् उनके पुत्र सेठ खीबराजजी ने इस फर्म के व्यापार को विशेष बढ़ाया। आपने ४० साल पहिले रायचूर में फर्म का स्थापन किया। आपके २ पुत्र हुए, सेठ गिरधारीलालजी

और दामोदरदासजी । सेठ दामोदरदासजी ने संवत् १९५९ में रायचूर में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी खोली ।  
 वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ दामोदरदासजी के पुत्र विठ्ठलदासजी राठी हैं । आप शिक्षित एवं व्यापारदृष्ट नवयुवक हैं । व्यावर में आपकी फर्म कृष्णा मिल और महा-लक्ष्मी मिल की मैनेजिंग एजेंट है । इन मिलों में सेठ विठ्ठलदासजी के हाथों से बहुत सफलता हुई । आपकी फर्म व्यावर, रायचूर, आकोट आदि स्थानों पर ऊँचे दर्जे की प्रतिष्ठित एवं मातृवर मानी जाती है । सेठ दामोदरदासजी के समय से रायचूर दुकान पर सदावर्त का प्रबंध है । इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

१. व्यावर—मेसर्स ठाडूरदास रॉयवराज

२. रायचूर—मेसर्स गिरपारंगल दामोदरदास  
 T. No 1&वार का पता Rathiji

३. आकोट—मेसर्स रॉयवराज दामोदर दास—जीन प्रेस फेक्टरी है और वैद्विग और आद्रव का कारखाना होता है ।

४. वजैन—मेसर्स विठ्ठलदास तुलाकादास—वैद्विग और आद्रव का कारखाना होता है ।

५. पोकरन—ठाडूरदास रॉयवराज—वैद्विग व्यापार होता है ।

} यहां वैद्विग व्यापार होता है, तथा यह फर्म यहां के कृष्णामिल और महालक्ष्मीमिल की मैनेजिंग एजेंट है ।  
 वैद्विग व्यापार होता है । तथा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और मूंगरुली पोड़ने की मशीन ( डिकाटो फेक्टर्स ) है ।  
 वैद्विग और आद्रव का कारखाना होता है ।

मेसर्स राममुख जयगोपाल

इस दुकान के मालिक रोल ( मारवाड़ ) निवासी भाद्रेधरी समाज के ईनानी सज्जन हैं । इस दुकान का स्थापन ६०/७० साल पहिले सेठ राममुखजी के हाथों से रामधन राममुख नाम से हुआ था । तथा आप ही के हाथों से इसके कारखाने को विरोप सफलता मिली । आरंभ से ही यह दुकान कर्मोराज का काम कर रही है । सेठ राममुखजी के पुत्र जयगोपालजी, जयनारायण जी एवं लक्ष्मीनारायणजी हैं । इनमें से जयगोपालजी १२ साल पहिले गुजर चुके हैं । आप तीनों भाइयों के क्रमशः ज़ुलखीरामजी, तुलसीरामजी एवं देवकिरामजी पुत्र हैं । आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

T. No 43

रायचूर—मेसर्स राममुख जयगोपाल  
 गन्गीर ( रायचूर ) देवकिराम तुलसीराम

} आद्रव, वैद्विग, गडा तथा शई का कारखाना होता है

## वरंगल

निजाम स्टेट के पूर्वी किनारे पर वरंगल जिले का यह प्रधान स्थान है। इसके पूर्वी किनारे पर गोदावरी तथा दक्षिणी किनारे पर कृष्णा नदी बहती है। इस जिले की भूमि विरोप कर पर्वतीय है। इसमें तालाब और एनिज पदार्थों की विशेषता है। इस प्रान्त के एक और मध्य-प्रदेश और दूसरी ओर मद्रास है।

पैदावार—हीरा एनिज—कृष्णा नदी के किनारे केशरा और पर त्याळ स्थानों में मिलता है।

कोयला—वरंगल, मुपावरम् और सिगारनी में फयर के कोयले की खाने हैं।

अभ्रक तथा याकृत भी इस जिले में मिलता है।

एरंडी—इसकी पैदावार अन्दाज २-२॥ लाख धैली होती है। तौल ४० सेर का मन, २० मन की खण्डों।

चावल—धान का तौल माप से और चावल का पल्ले से है। माप १४ सेर की हंडी, ४ हंडी का मन तथा २० मन की खंडों। तौल १२० सेर बंगाली का पल्ला।

विस्ली—पैदावार २-२॥ लाख बोरी, तौल माप पर।

कपास—इसकी २ फसलें होती हैं। बरसाती (भासोज में) करीब १५, २० हजार गाँठें और धेनी बीच ५ हजार गाँठ की पैदावार होती है।

तौल, कपास—१२ सेर का मन २० मन की खंडों। रुई १२ सेर का मन और १० मन का बोम्बा। सरकी ५० रतल की खंडों पर माप।

गरला—जुवारी, चना, मूंग, तूवर आदि पैदा होती है, तौल माप पर होता है।

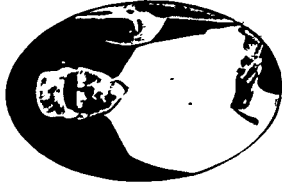
बमड़ा—इसके १०-१२ कारखाने हैं। यहाँ से बमड़ा मद्रास भेजा जाता है।

गलीचा, दर्री—इसके बनाने वाले ३००-४०० घर हैं, गलीचा विरोप मात्रा में यहाँ में बाहर जाता है, तथा ५) से ५००) तक का भार तैयार होता है।





११० सेठ सूरदासाईं पदुलजी इटाळिया बरंगल (दिवाण)



सेठ दीनसाजी सूरदासाईं इटाळिया बरंगल



धीजसरोदजी दीनसाजी इटाळिया बरंगल

बानी बम्बल—यहाँ की ग्यार की दूरे कमने सोलापुर और भमरावनी की ओर जाती हैं। इसके अलावा देशी रेशम के बन्प भी यहाँ बन्दे बनने हैं।

घादर जानेवाना मान—घाँहों, मिर्चों, घारन, कपान, सरकी, रुई, मिरची और घाँहों का खेत।

घाने बाग़ा मान—नियाना, गुफ, राधर, फेंनी गुड्डर, कपडा और केरोगेटेड शीट्स से कामी पैठ बरंगत होनी दूरे एक साइन पेनपाडा जागी है। अभी २ निग्राम गार्डनेमेंट ने कामी पैठ से बलाखराद तक लाइन बाडू की है, उन पर, मेंट टूंक एक्सप्रेस मट्रास से लाहौर तक दौड़नी है।

व्यापारिक स्थान—भोनगीर, जनगीर, बरंगत तथा एम्भमपेट—यहाँ विशेषकर घाँहों ग्यादा पैदा होवी है। इनमहुंदा में हज़ार तर्भों का मन्दिर दर्शनीय है।

बल कारखाने—यहाँ करीब २२ जीनिंग फेक्टरियो, ३ प्रेंसिंग फेक्टरियो, १६ राइसमिल, २ आइरन मिल और १ पाँहसमिल है। यहाँ के व्यापारियों का परिचय इस प्रकार है।

### मेंसर्स शूमरलाल सूरजकरण

इस फर्म के वर्तमान माजिक सेठ शूमरलालजी के पुत्र सूरजकरणजी और भीरुप्यजी हैं। आपकी फर्म संवत् १९५५ से व्यापार कर रही है। आप माइधरी बैश्य समाज के जायल ( जोधपुर स्टेट ) निवामी सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बरंगत—मेंसर्स शूमरलाल सूरजकरण—यहाँ आदत सोना चाँदी और गन्ने का कारखार होता है

पेदापही—शूमरलाल सूरजकरण—उपरोक्त कारखार होता है।

### मेंसर्स दादाभाई पदलजी इटालिया

इस घानदान का खास निवास स्थान चौकली ( सूरत ) है। आप पारसी समाज के इटा-लिया सज्जन हैं। चौकली से दादाभाई सेठ ५०।६० साल पहले सोलापुर होकर हैदराबाद आये। यहाँ कुछ समय तक आप सर्विस करते रहे। परचान् थिनार्द फेमिली के सोराव नवाग-जंग के साथ बरंगत गये। इस स्थान को आप ने व्यवसाय के कपयुक्त समक ४५ वर्ष पूर्व

अपनी फर्म की धरंगल में नींव रखी। आप के समय में ही इस फर्म पर आधिकारी कंट्राक्ट का व्यापार आरम्भ हो गया एवं इस व्यवसाय में आप ने अच्छी दौलत पैदा की। आप के कोई पुत्र नहीं था, आप ने अपने भतीजे सेठ दीनशाजी को १० महीने की अवस्था से ही पाल कर बड़ा किया था, और पीछे से उन्हें हीनहार समझ अपना उत्तराधिकारी बनाया। आप सन् १९२२ में ८० वर्ष की अवस्था में बहिरत नशीन हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ दीनशाजी दादाभाई इटालिया हैं। आप धरंगल के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं। आप प्रति वर्ष २५ लाख रुपयों का निजाम स्टेट का आयकारी का कंट्राक्ट लेते हैं। इसके अलावा आप ने ६ जीनिंग फेक्टरियों खोली हैं। इस समय आप धरंगल डिस्ट्रिक्ट लोकल बोर्ड, रेलवे एडवाइजरी बोर्ड और आन्ध्र बैटु की एडवाइजरी बोर्ड के मेम्बर हैं। आप की ओर से श्रीखली में सभ जातियों के लिये एक हाई स्कूल और कन्या पाठशाला चल रही है। आप के पुत्र श्रीयुन जमशेदजी दीनशाजी की वय इस समय २२ साल की है। आप विलायत में पढ़ रहे हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

- |  |  |
|--|--|
| १ धरंगल—मेसर्स मीसाजी दादाभाई एण्ड कम्पनी<br>घर का पता—Bhikaji | } यहाँ हेड आफिस है और कंट्राकिंग का काम होता है। |
| २ धरंगल—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और राइस मिल है।                |  |
| ३ निजामाबाद—   | ” ” ”  |
| ४ पेल्लापल्ली ( धरंगल )—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है।            |  |
| ५ राममेट ( धरंगल )—जीनिंग और राइस मिल है।                      |  |
| ६ एरपल्ली ( निजामाबाद )—राइस फ्लोअर मिल है।                    |  |
| ७ नदीगॉड ( बेंगलूर )—जीनिंग फेक्टरी है।                        |  |

मेमर्न नय्यूभाई मेघनी एण्ड संम

इस फर्म के मालिक कच्छ—जागलपुर निवासी खोदरा—मुस्लिम समाज के सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ नय्यू भाई मेघनी करीब ५० साल पहिले धरंगल आये। आरंभ में आपने हीन टेनेरी ( चमड़े का कारखाना ) खोली। परान् आर कंट्राक्ट का काम करने लगे। निजाम स्टेट के वर्गन डिस्ट्रिक्ट कारेट के बहुत से कंट्राक्ट आपके द्वारा हुए। आपने हांग सन्तारम का मराठूर लानाच लक्षार हुआ। व्यापारिक कामों के मिला मराठ के कामों में भी आपका अच्छा ख्याल था। आपने धरंगल में एक जमानताना बनसाकर आगलान







साह्य को भेंट किया। इसी प्रकार अलीगढ़ यूनिवर्सिटी और हैदराबाद फ्लड के समय भी एक मुश्किल रकम दान की। आपने अपने कई रिश्तेदार कुटुम्बों को लारकर निजाम स्टेट में आयाद करवाया। इस प्रकार इज्जतपूर्वक जीवन बिताते हुए ता० ७-६-१९१५ में आप यहिरत नशीन हुए। २० साल पहिले बरंगल में आपने एक जीनिंग खोली।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ नल्यूभाई मेपत्री के पुत्र सेठ कासिमभाई और सेठ जूसुफभाई हैं। आप लोगों के हाथों से बरंगल और आमपास ६ जीनिंग प्रेसिंग फैक्ट-रियों और १ बाँडस फेसिंग मिल खोला गया है। यह कर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. बरंगल—मेसर्स नल्यूभाई मेपत्री एण्डसंस } यहाँ कर्म का हेड ऑफिस है  
T. No 20

काररवाने:—

२. बरंगल—कासिमभाई नल्यू बाँडस मिल
३. बरंगल—कासिम जूसुफ नल्यूभाई जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
४. अमीरुंटा (करीम नगर) जूसुफ भाई नल्यू जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
५. मानिकगढ़ (आसिकाबाद) कासिम भाई नल्यू एण्डसंस जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी
६. परभनी—कासिम व जूसुफ नल्यूभाई खोजा जीनिंग फैक्टरी

### मेसर्स नथमल हरीकिशन

इस फर्म के मालिक सेठ नथमलजी नागोर (मारवाड़) निवासी ननवाणा (बोहरा) जाति के सज्जन हैं। आपके हाथों से २० साल पूर्व कपास, सरकी, एरंडी, गहू आदि की आदत का कारबार शुरू हुआ और थोड़े ही समय में आपने व्यवसाय की सतति कर फर्म की अच्छी प्रतिष्ठा बढ़ाई है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बरंगल—मेसर्स नथमल हरीकिशन } यहाँ सब प्रकार की आदत का कारबार होना है,  
सार का पना— } इन समय आपके पास मेसर्स बातकट प्रर्स की  
Nathamal, T. No 20 } एरंडी और कपास सरिदी की एजेंसी है।

### मेसर्स शुभमल जुहारमल

इस दुकान का हेड आफिस औरंगबाद (निजाम स्टेट) में है। वहाँ वद फर्म १३५ वर्षों से स्थापित है। इसको शाखाएँ बम्बई, जामनगर, नंदेड़, भिकन्द्राबाद प्रभृति स्थानों में हैं, इनके



मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान पोंगढ़ ( जोधपुर स्टेट ) में है। आप माहे-  
 स्वर्गी वैश्य समाज के मिगियार राजन हैं। सर्व प्रथम संवत् १९५३ में सेठ चुन्नीलालजी  
 बंगल काये और रामचरण चुन्नीलाल दुकान के साथ रायली प्रदर्स की बनीशन का काम  
 करने लगे। कुछ समय बाद आपने कुछ फर्म से अपना भाग निकाल कर अच्युल साह्य चुन्नी-  
 लाल के नाम से रालिप्रदर्स की एजेंसी का काम किया। पश्चात् जब रायली एजेंसी का  
 काम कम हुआ तो १९६८ में श्रीकृष्ण चुन्नीलाल के नाम से आपने स्वतंत्र दुकान की। आपने  
 २० साल पहिले गिरन्दरा बाद में भी अपनी दुकान खोली है।  
 वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ चुन्नीलालजी, बिरदोचंदजी, बनेचंदजी और राम-  
 धनजी चारो भाया हैं। आप लोगों ने फर्म के व्यापार को अच्छा बनाया है। सेठ रामधनजी  
 के पुत्र जेठमलजी और बरदीचंदजी के पुत्र लक्ष्मीनारायणजी भी कारपार में भाग लेते हैं।  
 आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वरंगल—मेसर्स श्रीकृष्ण चुन्नीलाल

T. A. Shree kishan, T. No 5

} यहाँ कपास, परंही आदि का व्यापार  
 वैद्विग व आइत का काम होता है।

सिकन्दराबाद—श्रीकृष्ण चुन्नीलाल T, No 333—वैद्विग व्यापार होता है।  
 गणपुर—श्रीकृष्ण चुन्नीलाल—परंही की फेक्टरी और मरु व्यापार होता है।  
 रगनापल्ली—श्रीकृष्ण चुन्नीलाल—तेल की फेक्टरी और मरु व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़ राइस एवं  
 आइल मिन्स

- आहार वरंकम्रा जीनिंग राइस मिल
- कासिम भाई जूसुफ भाई नयू जीनिंग प्रेसिंग  
 फेक्टरी
- गुमइली आनकीराम जीनिंग राइस मिल
- सार महम्मद जान आइल जीनिंग फेक्टरी
- निरला नरसिंहम् जीनिंग फेक्टरी
- पिंगले व्वांकट रामरद्वी जीनिंग फेक्टरी प्रेसिंग  
 और राइस मिल

- पिंगले प्रताप रद्वी जीनिंग फेक्टरी
- बंदेली राजपार आइल जीनिंग फेक्टरी
- प्रमद्वेव आनंदम् आइल जीनिंग फेक्टरी और  
 राइस मिल
- भीराजी दादामाई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी,  
 राइस और आइल मिल
- दीवान यशदुर रामगोपाल श्रीकृष्ण जीनिंग  
 प्रेसिंग फेक्टरी राइस और आइल मिल
- रामनारायण रामरवन जीनिंग फेक्टरी और  
 राइस मिल



- मेसर्स निरमिन्दा नरमिन्दु रमनन्दा  
 " मुंदापुत्र विमान  
 " गौरंटप्ला विन्कनाथम् (गोवर्द्धा वरदा)  
 " पुन्दर राजागम (गुल)  
 " मुम्बईरण रामगोपाल

दरी गन्धीया के व्यापारी

- मेसर्स भूपति धीरप्या  
 " सावजी भानजी  
 " रषा रामनाथम्  
 " सारगस राप्या

ऑर्डर एजेंट

- मेसर्स व्याहारव विमया  
 " कारमदम्भद जानू  
 " सी. वट्टराज मुद्दलीयार

हार्ड वेंचर मरचेन्ट्स

- मेसर्स वारमदम्भद जानू  
 " पुन्दर मल्लप्या  
 " पुनमारी रामना  
 " हासम इनादिम

नरुद्धी के व्यापारी

- मेसर्स अजुलो गोविन्दू  
 " नेपजा नरसिम्मा रामल्लो  
 " समुद्रला नरसप्या

एजेंसी

- मेसर्स नोरिया कम्पनी (भीर्याजी दादाभाई एजेंट)  
 " रायली मरर्स (भीरुन्ण पुर्भालाज एजेंट)  
 " बालकट मरर्स (नयमल हरीशंकर )  
 " सट्रास कम्पनी (बुधमज जुहारमल )



सूकर की दान—इसका भी जबरदस्त पाठ होता है।  
 नोट—इस स्थान पर व्यापारिक गति विधि विशेष रहा करती है। यहाँ की जनता सपन  
 ब सुगरी है। गन्ने का प्रधान वाजार महबूबगंज है। यहाँ के व्यापारियों का संघिन  
 परिषय इस प्रकार है:—

मंगमर् गोवर्द्धनदाग गोकुलदास

इस फर्म का हेड आफिस कुषामन ( जोधपुर ) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाज के  
 वापरा सज्जन हैं। इस फर्म का हेड आफिस कुषामन में है। संवत् १९७८ से निजामाबाद  
 में इस दुकान का व्यापार आरंभ हुआ।  
 कुषामन में इस फर्म के व्यापार को सेठ शिवलालजी के समय में बहुत अधिक तरकी  
 मिली। आपने जोधपुर स्टेट में भच्छी प्रतिष्ठा पाई। आपको जोधपुर सरकार से जागीरी प्रा  
 हुई। कुषामन टिकाने में आपका कुटुम्ब नामों माना जाता है। आपके पुत्र अशुभ किरानलाल  
 जी का स्वर्गवास संवत् १९६४ में हो गया। आपकी ओर से कई स्थानों पर धर्मशालाएँ बनवाई  
 गई। लक्ष्मणनूना पर आपकी ओर से धार्मिक प्रबंध है। कुषामन में आपकी एक धर्मशाला  
 एवं संलुच पाठशाला है जहाँ विद्यार्थी भोजन एवं शिक्षा पाते हैं।

सेठ किरानलालजी के ४ पुत्र हुए। सेठ परमानंदलालजी, सेठ गोवर्द्धनलालजी, सेठ मदन-  
 लालजी एवं सेठ गोकुलदासजी। इन सज्जनों में से सेठ परमानंदलालजी का संवत् १९६८  
 में स्वर्गवास हो गया है, अव: आपके नाम पर गोवर्द्धनलालजी दत्तक आपके हैं। वर्तमान में  
 आप ही तीनों सज्जन इस फर्म के मालिक हैं। माहेश्वरी समाज में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा है।  
 आपकी फर्म यहाँ के व्यापारिक समाज में बहुत मातबर मानी जाती है। इस फर्म का व्यापा-  
 रिक परिचय इस प्रकार है।

१. कुषामन—मंसस शिवलाल किरानलाल—वैद्विग व जागीरदारों सेलेन-देन का व्यापार होता है।
  २. जोधपुर—मंसस शिवलाल किरानलाल—
  ३. अहमदाबाद—मंसस मदनमोहन किरानलाल—
- |   |   |   |
|---|---|---|
| काङ्गपुरा पोस्ट<br>वार का पत्ता Damodarji<br>मदनमोहन किरानलाल—सराफी,<br>गोवर्द्धनलाल गोकुलदास<br>वार का पत्ता Girirai | } | सराफी, आइत व मौजों के कपड़े का व्या-<br>पार होता है।<br>आइत व कपड़े का व्यापार होता है।<br>जीनिंग, राइस पेंकटरी, वैद्विग, आइत और<br>सराफी का व्यापार होता है। |
|---|---|---|



भारतीय व्यापारियों का परिचय

६. धरमाबाद—गोवर्द्धनलाल गोकुलदास—यहाँ जीनिंग फेक्टरी है। इस दुकान के अंदर में और भी जीनिंग हैं।

मेसर्स वंशीलाल अवीरचंद रायवहादुर

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में ( निजाम स्टेट ) है। निजामाबाद में इस दुकान का स्थापन श्री सेठ मुगनचंदजी डागा के हाथों से हुआ। निजाम स्टेट के व्यापारिक समाज में यह फर्म बहुत मातबर एवं ऊँची श्रेणी की मानी जाती है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—सेठ वंशीलाल अवीरचंद  
रायवहादुर  
वार का पता Raibahadur

} जीनिंग और राइस मिल है। तथा हुंडी, चिट्टी, बैङ्किंग, कॉटन, गन्ना और राइस की सरीरी-विक्री तथा आइत का काम होता है।

मेसर्स भीखाजी दादाभाई एण्ड कम्पनी

इस फर्म का हेड आफिस बरंगल में है। वहाँ यह फर्म लाखों रुपयों का प्रति साल आर कारी का कंट्रैक्ट लेती है। बरंगल के अलावा इस फर्म की जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियों राइस ए आदल मिल्स, पेदापल्ली, नंवीगाव आदि स्थानों में हैं। इन सब स्थानों पर यह फर्म अच्छी मा वर मानी जाती है। इसका निजामाबाद का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—मेसर्स भीखाजी दादाभाई एण्ड कम्पनी  
वार का पता Bhikaji

} जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी तथा राइस फ है। और कॉटन का व्यापार होता

मेसर्स राममुख बालमुकुंद

इस फर्म के व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मेसर्स हीरानंद राममुख के नाम से बाद में दिया गया है। हैदराबाद में इस फर्म पर गन्ने का बड़ा कारबार होता है। इसके इस दुकान की शाखाएँ निजामाबाद, काचीनडा, मदनूर आदि स्थानों में हैं। निजामा व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

निजामाबाद—मेसर्स हीरानंद राममुख  
T. A. Mani

} बड़ा बैङ्किंग, गन्ना और आइत का काम होता है।

मेसर्स रामदयाल घासीराम  
 इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। हैदराबाद में यह फर्म प्रति वर्ष लाखों रुपयों का आवकारी का कंट्राक्ट लेती है। इसके अलावा वैद्विग व्यवसाय करती है। कंट्राक्टिंग काम की व्यवस्था के लिये परभनी, धौड़, निजामाबाद, नादेड, महबूब नगर, सेइम, साँडूर, मंथनी, नलगुंडा, मोमिनाबाद, मजने गाँव, हिंगोली, मंदक, विकाराबाद आदि स्थानों पर दुकानें हैं। इसके अलावा इसकी भयंदर ( बम्बई ) गाँव पर नमक का व्यापार होता है। हैदराबाद का गण्यमान्य दुकानों में इस फर्म को भी गणना है। इसका निजामाबाद का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।  
 निजामाबाद—मेसर्स रामदयाल घासीराम—वैद्विग एवं कंट्राक्टिंग का व्यापार होता है।

मेसर्स दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण  
 इस फर्म का हेड आफिस सिहन्दराबाद में है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित सिहन्दराबाद में दिया गया है। यहाँ यह फर्म वैद्विग, मित्र घानस एवं कपड़े का बहुत बड़ा ट्रेड करती है तथा सिहन्दराबाद का प्रशासक बनने वाली जाती है। इसके अलावा बरंगल, बेदायल्ली, सेइम, भेला आदि स्थानों पर इसकी जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी है तथा परु व्यापार होता है। इस फर्म का निजामाबाद का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।  
 निजामाबाद—दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण

} यहाँ जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी तथा राइस मिज है तथा वैद्विग आइस प चावल और कॉटन का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरीज  
 हय्या जीनिंग राइस फेक्टरी  
 मोबल्लेहाम सोडुल्लहाम जीनिंग फेक्टरी और  
 राइस फेक्टरी  
 नरगा रौड़ निगा रौड़ जीनिंग राइस फेक्टरी  
 बंदीगन अरौरबन्द जीनिंग राइस फेक्टरी

भीसाजी हादाभाई एण्ड बं जीनिंग प्रेमिंग  
 एण्ड राइस फेक्टरी  
 मंडुर हय्याजी जीनिंग राइस फेक्टरी  
 राउबन्द भजनलाल जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी  
 और राइस मिज

लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण जीनिंग फेक्टरी और  
 राइस मिल  
 वामन नायक मचल्ला सव्यन्ना जीनिंग राइस  
 फेक्टरी

वैफर्स एण्ड कमीशन एजेंट्स  
 मेसर्स गोवर्द्धनदास गोकुलदास

- ” जगन्नाथ बट्टीनाथ
- ” शूरमलाल गोवर्द्धन
- ” वंशीलाल अवीरचन्द राय बहादुर
- ” रामरतन श्रीराम
- ” रामसुख बालमुकुन्द
- ” दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण
- ” व्यंकटलाल बट्टीनारायण (लोकल आदत)
- ” रामदयाल घासीराम
- ” शिवनारायण लादूराम
- ” सुरज करण सीताराम

सीह्स और मिरची के आड़तिया

- मेसर्स सुरजकरण सीताराम ( मिरची )
- ” वामनदास एण्ड कम्पनी ( मिरची )
- ” हनुमंतराय भेरोवट्टा ( भेन )

कपड़ों के व्यापारी

- मेसर्स कोरटवती बंकोबा नाइक
- ” गोटल गंगाराम
- ” महम्मद अमीन
- ” बत्तीमहम्मद हासीमूसा
- ” यलकंठ रंगव्या

जनरल मरचेंट्स

- मेसर्स भायवा राज लिंगम्
- ” कोंबा नरसिंहू
- ” जलाल मियाँ अब्दुल कादर
- ” नारला नरसिंहू
- ” टी० राजाराम

रई के व्यापारी

- मेसर्स गोवर्द्धनलाल गोकुलदास
- ” शूरमलाल गोवर्द्धन
- ” वंशीलाल अवीरचंद राय बहादुर
- ” भीष्वाजी दादाभाई
- ” रामरतन श्रीराम
- ” रामसुख बालमुकुन्द
- ” सुरजकरण सीताराम
- ” शिवनारायण लादूराम

किराने के व्यापारी

- मेसर्स अब्बास महम्मद
- ” जयनारायण जीतमल
- ” बत्तीमहम्मद राजीमूसा
- ” खानबहादुर होरमसजी माणकजी (नमक)
- ” हुसेन तारमहम्मद

चाँदी सोने के व्यापारी

- मेसर्स वपत घंटव्या
- ” बट्टू रामव्या लक्षव्या
- ” बालकिशन हरीधिरान

## नांदेड़

गोदावरी नदी के वीर निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर यह शहर आयात है। इसके तीन ओर निजाम स्टेट और एक ओर वरार प्रांत है। यहाँ की भाषा मराठी, उर्दू, तेलंग और कन्नाड़ी है। इस प्रान्त में घालाबों की संख्या विशेष है, जिनमें बिलोली, देगळूर, कंदाहार, शहापुर, तलेगाँव, सिंदी और म्हेसा प्रधान हैं। इस प्रान्त में नांदेड़, उमरी, करकेली, मुदखेड और म्हेसा आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। नांदेड़ में १८ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ व १ फाटन मील है।

पैदावार—गल्ला आदि—हलदी, गेहूँ, ज़ुयारी, सूवर, चना, मसूर, मूँग, उड़द, करई, अलसी तथा अम्बारी हैं। वील ४ सेर की पायली और १६ पायली का मन है।

कपास—६५६ सेर की रंडी पर भाव होता है।

सरकी—३२८ सेर की रंडी पर भाव होता है।

हई— १४० सेर के पल्ले पर भाव होता है। कपास की पैदावार ४०, ५० हजार गॉट है। घी किराना शुद्ध शकर का तोल १२ सेर के मन से है।

श्रीसिक्ख गुरु द्वारा मंदिर—इस गुरु द्वारा का निर्माण महाराज रणजीतसिंहजी ने संवत् १७६४ में गुरुगोविंदसिंह साहब के समाधिस्थान पर करवाया। इस गुरुद्वारे का गुम्बज स्वर्ण का है। यहाँ करीब ४००—५०० सिक्ख निवास करते हैं। यह सिक्खों का पवित्र एवं प्रधान तीर्थस्थान माना जाता है।

यहाँ के व्यापारियों का संश्लेष परिचय इस प्रकार है।

### मेसर्स पूनमचंद वरलावरमल

इस फर्म के व्यापार का विलूत परिचय मालिकों के चित्रों सहित औरंगाबाद में दिया गया है। नांदेड़ में इस दुकान का स्थापन २५२६ साल पहिले हुआ। नांदेड़ के अलावा इस दुकान

लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण जीनिंग फेक्टरी और  
राइस मिल  
वामन नायक मचल्ला सप्यन्ना जीनिंग राइस  
फेक्टरी

वैकर्स एण्ड कमीशन एजेंट्स

मेसर्स गोवर्द्धनदास गोकुलदास  
" जगन्नाथ धत्रीनाथ  
" शूरमरलाल गोवर्द्धन  
" वंशीलाल अवीरचन्द राय बहादुर  
" रामरतन श्रीराम  
" रामसुख बालमुकुन्द  
" दीवान बहादुर लक्ष्मीनारायण श्रीकृष्ण  
" व्यंकटलाल धत्रीनारायण (लोकलभादव)  
" रामदयाल घासीराम  
" शिवनारायण लादूराम  
" सूरज करण सीताराम

सीड्स और मिरची के आड़तिया

मेसर्स सूरजकरण सीताराम ( मिरची )  
" वामनदास एण्ड कम्पनी ( मिरची )  
" हनुमंतराय भेरोवल्स ( भेन )

कपड़े के व्यापारी

मेसर्स कोरटवली चंकोषा नाइक  
" गौडल गंगाराम  
" महम्मद अमीन  
" बलीमहम्मद हासीमूसा  
" यलकंठ रंगय्या

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स आयता राज लिंगम्  
" फोंडा नरसिंहू  
" जलाल मियाँ अब्दुल फादर  
" नारला नरसिंहू  
" टी० राजाराम

रई के व्यापारी

मेसर्स गोवर्द्धनलाल गोकुलदास  
" शूरमरलाल गोवर्द्धन  
" वंशीलाल अवीरचंद राय बहादुर  
" भीष्वाजी दादामाई  
" रामरतन श्रीराम  
" रामसुख बालमुकुन्द  
" सूरजकरण सीताराम  
" शिवनारायण लादूराम

किराने के व्यापारी

मेसर्स अब्बास महम्मद  
" जयनारायण जीतमल  
" बलीमहम्मद राजीमूसा  
" खानबहादुर होरमसजी भाणकजी (नमक)  
" हुसेन तारमहम्मद

चाँदी सोने के व्यापारी

मेसर्स षपल घंटय्या  
" बट्टू रामय्या लक्षय्या  
" बालकिरान हरीकिरान

## नांदेड़

गोदावरी नदी के तीरे निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर यह शहर भाया है। इसके तीन ओर निजाम स्टेट और एक ओर वरार प्रांत है। यहाँ की भाषा मराठी, उर्दू, तेलंग और कन्नड़ी है। इस प्रान्त में तालाशों की संख्या विशेष है, जिनमें बिलोली, देगडूर, कंदाहार, राहापुर, तलेगाँव, सिंदी और म्हेसा प्रधान हैं। इस प्रान्त में नांदेड़, उमरी, करकेली, मुदखेड और म्हेसा आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। नांदेड़ में १८ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ व १ काटन मील है।

पैदावार—गल्ला आदि—हलदी, गेहूँ, जुवारी, तूवर, चना, ममूर, भूंग, उड़द, करई, अलसी तथा अम्यारी हैं। सील ४ सेर की पायली और १६ पायली का मन है।

कपास—६५६ सेर की रंडी पर भाव होता है।

सरकी—३२८ सेर की रंडी पर भाव होता है।

रई— १४० सेर के पत्ते पर भाव होता है। कपास की पैदावार ४०, ५० हजार गॉठ है। पी किराना गुड़ राकर का सील १२ सेर के मन में है।

सोसिकर गुरु द्वारा मंदिर—इस गुरु द्वारा का निर्माण महाराज रणजीवसिंहजी ने संवत् १७६४ में गुरुगोविंदसिंह साहब के समाधिस्थान पर करवाया। इस गुरुद्वारे का गुम्बज स्वर्ण का है। यहाँ करीब ४००—५०० गिजर निवास करते हैं। यह सिक्खों का पवित्र एवं प्रधान तीर्थस्थान माना जाता है।

यहाँ के व्यापारियों का संश्लेष परिषद इस प्रकार है।

### मेगम पूनमचंद्र धरलावरमज

इस पत्र के व्यापार का विस्तृत परिषद मातृकों के बियोंछदित औरंगाबाद में दिया गया है। नांदेड़ में इस दुकान का स्थान २५।२६ मातृ पहिले हुआ। नांदेड़ के अलावा इस दुकान

## भारतीय व्यापारियों का परिचय

की शाखाएँ बम्बई, सिकुन्दराबाद, बरंगल आदि स्थानों में हैं, जिन पर वैट्टिंग व कमीशन का काम होता है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. नांदेड़—मेसर्स पूनमचंद बख्तावरमल } गन्ना, कपास तथा आड़त का काम और वैट्टिंग  
तार का पता Garnet } व्यापार होता है।

२. नांदेड़—निहालचंद उच्चमचंद—इस नाम से लोकज आड़त का काम होता है।

३. नांदेड़—निहालचंद देवड़ा— " "

### मेसर्स मुकुन्ददास मूँदड़ा

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में है। अतः इसके व्यवसाय आदि का सुविल्लत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। नांदेड़ के अलावा बम्बई, मद्रास, गुलबर्गा प्रभृति स्थानों में इस फर्म की शांखे हैं जिन पर वैट्टिंग और कमीशन एजेंसी का काम होता है। नांदेड़ फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स मुकुन्ददास मूँदड़ा } वैट्टिंग, आड़त तथा रुई का व्यापार होता है।  
T. A. Hedmen }

### मेसर्स वेजतजी वीरामजी कम्पनी

इस फर्म का हेड आफिस जालना है। अतः इसके व्यापार आदि का विल्लत परिचय पेरवन्जी मेरवानजी के नाम से जालना में दिया गया है। जालना के अलावा इस फर्म की शांखे, जीलिंग प्रेसिंग फेक्टरीज बम्बई, ऊमरी, करकेली, परभनी, सेलू सातोना, धामनगांव, देवलगांव ( वरार ) वुतगांव ( पूना ) तथा गुंटकेल ( मद्रास ) है। नांदेड़ शांख का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स वेजतजी वीरामजी कम्पनी } यहाँ जोनिंग प्रेसिंग फेक्टरी हैं तथा आड़त और  
कपास का व्यापार होता है।

### मेसर्स रामदयाल घासीराम

इस फर्म का विल्लत व्यापारिक परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। नांदेड़ में इस फर्म पर वैट्टिंग और भावकारी कंट्राक्टिंग का व्यापार होता है इसके अलावा निजाम स्टेट की १२,१५ स्थानों में कंट्राक्टिंग की सुविधा के लिये इस फर्म की शाखाएँ हैं।

## मेसर्स शंकरलाल मालीवाल

इस दुकान का स्थापन सेठ फतेरामजीके हाथों से दांती में हुआ। आप मोड़ी (जोधपुर स्टेट) निवासी मादेश्वरी समाज के मालीवाल सज्जन हैं। सेठ फतेरामजी के ३ पुत्र हुए—जगन्नाथजी, हरधगसजी तथा भारमलजी। सेठ हरधगसजी के किरानलालजी और भारमलजी के रामचन्द्रजी हुए। इन सज्जनों में से सेठ जगन्नाथजी और किरानलालजी के हाथों में इस दुकान के रोजगार को विरोध तरफ़ी मिली। सेठ किरानलालजी १९६० में और रामचन्द्रजी १९६२ में स्वर्गवासी हुए। सेठ रामचन्द्रजी के यहाँ शंकरलालजी कड़ेरा से दत्तक लाये गये।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ शंकरलालजी हैं। आपके पुत्र श्रीयुक्त मदनलालजी भी कारबार में भाग लेते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।  
दांती (परमनी) मेसर्स फतेराम भारमल—जिरायत तथा लेन-देन का काम होता है।  
नांदेड़—शंकरलाल मालीवाल—साहुकारी लेन-देन का काम होता है।

## मेसर्स हरनारायण रामप्रताप

इस दुकान के मालिक बूडूस् (धोरावड़) निवासी मादेश्वरी समाज के कावरा सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन ७५।८० साल पहिले सेठ हरनारायणजी कावरा के हाथों से हुआ। आपके पुत्र मेठ रामप्रतापजी कावरा के हाथों से इस दुकान के व्यापार और सम्मान की विरोध सज्जति हुई। रुई के व्यवसाय में आपका बहुत बड़ा हियाव था। नांदेड़ के व्यापारिक समाज में आप अच्छी प्रतिष्ठा की निनाह से देखे जाने थे।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ राम प्रतापजी कावरा के पुत्र रामदेवजी, जगन्नाथजी एवं श्रीकृष्ण जी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।  
नांदेड़—मेसर्स हरनारायण रामप्रताप—बैङ्किंग तथा कॉटन का व्यापार होता है।  
नांदेड़—मेसर्स रामप्रताप कावरा—गद्दा तथा आड़व का व्यापार होता है।  
नांदेड़—मेसर्स जगन्नाथ श्रीकृष्ण—आड़व का कारबार होता है।

## मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म के व्यापार का विलुप्त परिचय परमनी में दिया गया है। नांदेड़ में इस दुकान पर आड़व का तथा रुई आदि का व्यापार होता है।



की शाखाएँ बम्बई, सिकन्दराबाद, वरंगल आदि स्थानों में हैं, जिन पर वैङ्किंग व कमीशन का काम होता है। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. नांदेड़—मेसर्स पूनमचंद वल्तावरमल } गन्ना, कपास तथा आड़त का काम और वैङ्किंग  
तार का पता Garnet } व्यापार होता है।

२. नांदेड़—निहालचंद उत्तमचंद—इस नाम से लोकत आड़त का काम होता है।

३. नांदेड़—निहालचंद देवड़ा—

### मेसर्स मुकुन्ददास मूँदड़ा

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद में है। अतः इसके व्यवसाय आदि का सुवित्त परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। नांदेड़ के अलावा बम्बई, मद्रास, गुलबर्गा प्रभृति स्थानों में इस फर्म की शांखें हैं जिन पर वैङ्किंग और कमीशन एजेंसी का काम होता है। नांदेड़ फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स मुकुन्ददास मूँदड़ा

T. A. Hedmen

} वैङ्किंग, आड़त तथा रुई का व्यापार होता है।

### मेसर्स बेजनजी घेरामजी कम्पनी

इस फर्म का हेड आफिस जालना है। अतः इसके व्यापार आदि का वित्त परिचय परतनजी मेरवानजी के नाम से जालना में दिया गया है। जालना के अलावा इस फर्म की शांखें, जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज बम्बई, ऊमरो, करकेली, परभनी, सेल् सातोना, धामनगांव, देवलगांव ( वरार ) बुतगांव ( पूना ) तथा गुंटकेल ( मद्रास ) हैं। नांदेड़ शांख का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नांदेड़—मेसर्स बेजनजी घेरामजी कम्पनी } यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी हैं तथा आड़त और  
कपास का व्यापार होता है।

### मेसर्स रामदयाल घासीराम

इस फर्म का वित्त व्यापारिक परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। नांदेड़ में इस फर्म पर वैङ्किंग और आशकारी कंट्राक्टिंग का व्यापार होता है इसके अलावा निजाम स्टेट की १२,१५ स्थानों में कंट्राक्टिंग की सुविधा के लिये इस फर्म की शाखाएँ हैं।

### मेसर्स शंकरलाल मालीवाल

इस दुकान का स्थापन सेठ फतेरामजीके हाथों से दांती में हुआ। आप मोड़ी (जोधपुर स्टेट) निवासी मादेरवरी समाज के मालीवाल सज्जन हैं। सेठ फतेरामजी के ३ पुत्र हुए—जगन्नाथजी, हरधगसजी तथा भारमलजी। सेठ हरधगसजी के किशानलालजी और भारमलजी के रामचन्द्रजी हुए। इन सज्जनों में से सेठ जगन्नाथजी और किशानलालजी के हाथों से इस दुकान के रोजगार की विशेष तरफ़ी मिली। सेठ किशानलालजी १९६० में और रामचन्द्रजी १९६२ में स्वर्गवासी हुए। सेठ रामचन्द्रजी के यहां शंकरलालजी कड़ेल से दत्तक लाये गये।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ शंकरलालजी हैं। आपके पुत्र भीधुर् मदनलालजी भी कारवार में भाग लेते हैं। इस फर्म का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।  
दांती (परमनी) मेसर्स फतेराम भारमल—निराचर तथा लेन-देना का काम होता है।  
नांदेड़—शंकरलाल मालीवाल—साठुकारी लेन-देन का काम होता है।

### मेसर्स हरनारायण रामनारायण

इस दुकान के मालिक बूड़मू (घोरानड़) निवासी मादेरवरी समाज के काबरा सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन १९१८० साल पहिले सेठ हरनारायणजी काबरा के हाथों में हुआ। आपके पुत्र सेठ रामनारायणजी काबरा के हाथों में इस दुकान के व्यापार और सम्मान की विशेष वज्रति हुई। उन्हें के व्यवसाय में आपका बहुत बड़ा दियास था। नांदेड़ के व्यापारिक समाज में आप बच्यो प्रतिष्ठा की निनाद से देखे जाते थे।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ राम नारायणजी काबरा के पुत्र रामदेवजी, जगन्नाथजी एवं भीदण्ड जी हैं। आपके व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।  
नांदेड़—मेसर्स हरनारायण रामनारायण—बैङ्किंग तथा कौटन का व्यापार होता है।  
नांदेड़—मेसर्स रामनारायण काबरा—गडा तथा आदत का व्यापार होता है।  
नांदेड़—मेसर्स जगन्नाथ भीदण्ड—आदत का कारवार होता है।

### मेसर्स धीराम शारदाशाम

इस फर्म के व्यापार का विस्तृत परिचय परमनी में दिया गया है। नांदेड़ में इस दुकान पर आदत का तथा रुई आदि का व्यापार होता है।

## मेसर्स शमन नायक जागीरदार

इस फर्म का हेड आफिस हैदराबाद है। इसके अलावा इमफी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियों और राइस मिल परभनी, निजामाबाद, मेदक, कामारही आदि स्थानों में हैं। इसके व्यापार का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। यह कुटुम्ब हैदराबाद के व्यापारिक समाज में अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। नांदेड़ में इस फर्म की जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

### जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि अकबर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 दि गामडिया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 चन्द्रमान गिरि वासुदेव गिरि जीनिंग प्रेसिंग  
 फेक्टरी  
 बेजन्जी बेरामजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 महम्मद जूसुस जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 रमजान अली लालजी साजन जीनिंग प्रेसिंग  
 फेक्टरी  
 वामन नायक जागीरदार जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 वाडिया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

### बैंकर्स

दी इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड  
 मेसर्स अक्षयचरण धनसौराम  
 ,, कल्याणजी केशवजी  
 ,, पूनमचंद बरजावरमल  
 ,, बालकिरणदाम रामलाल  
 ,, बानाराम शिवनारायण  
 ,, सुकंदराम मूंदड़ा  
 ,, रामदयाल धामीराम

मेसर्स शंकरलाल माजीवाल

,, हरनारायण रामप्रताप

### कपड़े के व्यापारी

मेसर्स अब्बासा महम्मद

,, उसमान शाही मिल ठाय राण

,, मूसा अब्दुल्ला

,, मौलवी महम्मद अली गुलाम महम्मद

,, रहमतुल्ला मूसा

,, हाजी लतीफ हाजीमूसा

### ग्रेन मचेंट एण्ड कमीशन एजेंट

मेसर्स गोकुलदास तुलसीदाम

,, शंकरलाल गोयद्वंद

,, पूनमचंद बरजावरमल

,, भीमराज कस्तूरचंद

,, सुकंदराम मूंदड़ा

,, रामनाथ कोइताल

,, रामप्रताप कायरा

,, शमजी धारमी

,, हाजी लतीफ हाजी मूसा

मेसर्स हीरालाल सुभ्रीलाल  
" श्रीराम द्वारकादास

फॉटोन प्रॉपर्टी

मेसर्स मूमरलाल गोबिंदन  
" कल्याणजी केरावजी (भरकी)  
" पूनमचंद पण्जारमल  
" हरनारायण रामनाराय

किराने के व्यापारी

मेसर्स अरुणारायण मद्रमद

मेसर्स कासम सय्यब

" परमरती बेलजी (जनरल मरफेट)  
" मद्रमद हासन सय्यब  
" हबीब हममान नूरमद्रमद सागा  
" हाजीतगीक हाजीनूमा

घांड़ी सोने के व्यापारी

मेसर्स गनेगवान हरीलाल  
" हाजीब लखनग  
" बान्किरामदास रामनाथ  
" मिर्झागन ईशरनाथ

## पूर्णा

निजाम स्टेट रेलवे के मनमाड़ सिकंदराबाद लाइन के मध्य यह जंक्शन है। यहाँ से हिंगोली के लिये एक ग्रांच लाइन जाती है। स्टेशन के समीपही यह एक छोटी सी मंडी है। इस स्थान पर कपास, गह्ना तथा किराने का व्यापार प्रचलन रूप से होता है।

तौल—कपास—१२ सेर का मन व २० मन की खंडी।

रई—१३२ सेर का पस्ला माना जाता है। करीब २० हजार गॉड रई प्रति वर्ष यहाँ बँधती है।

बिनोले—२४० सेर की खंडी पर भाव होता है।

गस्ला—गस्ले का तौल माप पर है। करीब ४॥ सेर की पायली व १६ पायली का मन माना जाता है।

पैदावार—मुंगफली, जुवार, मूँग, तूर, चना, लाउ, करई आदि हैं।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

### मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय परमती में दिया जा चुका है। पूर्णा में इस फर्म की एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है तथा कॉटन का व्यापार होता है।

### मेसर्स वंशीय्याल अरीरचंद रायवहादुर

इस फर्म का विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में बीकानेर विभाग में दिया गया है। इसके अलावा निजाम स्टेट तथा सी० पी० में जहाँ २ इस फर्म की शाखाएँ हैं उन सब स्थानों पर इस फर्म का परिचय प्रकाशित किया है। हर एक स्थान पर यह दुकान बहुत बड़ा कारबार करने दे। पूर्णा में इस फर्म की एक जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा कपास मशीनी का व्यापार होगा है। यह दुकान हैदराबाद फर्म के अंदर में है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़  
 राजा बहादुर शानगिरि नरसिंहगिरि जीनिंग  
 प्रेसिंग फेक्टरी  
 राय बहादुर बंशीलाल अचीरचंद जीनिंग  
 प्रेसिंग फेक्टरी  
 नोलोवा रामजीवन जीनिंग फेक्टरी  
 भीराम द्वारकादास ( कमलाजीन ) जीनिंग  
 प्रेसिंग फेक्टरी

गन्धे के व्यापारी और आड़निया

मेसर्स उसमान नूर महम्मद  
 " कन्हैयालाल द्वारकादास  
 " गनेशलाल रंगलाल  
 " जोधराज मोहनलाल  
 " बंशीलाल अचीरचंद रा० १० १०

फपास के व्यापारी

मेसर्स राय बहादुर बंशीलाल अचीरचंद

मेसर्स राजा बहादुर शानगिरि नरसिंहगिरि  
 " भीराम द्वारकादास

किराने के व्यापारी

मेसर्स अच्युता महम्मद  
 " इरवंता धाजू  
 " करीम मुलेमान  
 " महम्मद अहमद  
 " हाजी यूसुफ अली महम्मद

फपट्टे के व्यापारी

मेसर्स अच्युता महम्मद  
 " नूरमहम्मद हाजीनूसा  
 " पूर्णा सोभानरेड्डी सोसायटी लि०  
 " यूसुफ अली महम्मद  
 " याननिवास रामयसाद

उमरी

निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर नॉर्ड और निजामाबाद के मध्य कजाम की एक एक छोटी सी मंडी है। शिरौर कर इस स्थान पर कजाम का व्यापार प्रचलन है। यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

राजा बहादुर बिगेमर गिरि बीरमान गिरि

इस जर्म का विस्तृत परिचय देरवाबाद में बिगेम गिरि दिया गया है। देरवाबाद में अतिरिक्त अनेक जर्मों में इसकी भी शुरुआत है। इस जर्म की यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी है। तथा कजाम का व्यापार होता है।

### मेसर्स जमनाथर पोद्दार

इस फर्म का हेड ऑफिस नागपुर है। भारत में टाटा संस की मिलों का कपड़ा बेचने के लिये भारत के कई शहरों में इस दुकान की शाखाएँ हैं। उमरी में यह फर्म बहुत समय से स्थापित है। यहाँ सेठ जीवराजजी पोद्दार बहुत समय तक रहे थे। यहाँ आपकी स्थापित की की हुई गौशाला आदि है। आपने यहाँ जमींदारी भी खरीदी की। इस दुकान के अंदर में निम्बू, टिगलूर आदि स्थानों में जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। नागपुर मिल की एजेंसी इस फर्म के पास है। कुछ समय पहले सिकंदराबाद में भी इसकी एक प्रांच खोली गई है। उमरी में इस फर्म की देखरेख में एक कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी काम करती है। इसका विस्तृत परिचय हमारे ग्रंथ के दूसरे भाग में कलकत्ता विभाग में पृष्ठ ३८० में दिया गया है।

### मेसर्स विनोदीराम वाल्चंद

इस फर्म का हेड ऑफिस मालरापाटन (मालावाड़ स्टेट) है। मालवे की प्रतिष्ठा प्राप्त धनिक फर्मों में इसकी गणना की जाती है। इस दुकान के अंदर में भिन्न २ स्थानों पर १५ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। तथा करीब १९ स्थानों पर काटन व वैट्रिंग कारखाने होता है। बजैन में इस फर्म के अंदर में एक मिल काम करती है।

निजाम स्टेट में उमरी में इस फर्म की कई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है तथा कॉटन का व्यापार होता है। उमरी दुकान की मातहत में दो तीन स्थानों पर जीन प्रेस है। यहाँ के व्यापारिक समाज में यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसके व्यवसाय का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हमारे ग्रंथ के प्रथम भाग में राजपूताना विभाग के पृष्ठ १८३ में दिया गया है।

# हिंगोली

यह स्थान परभनी जिले का एक अवाद कस्बा है। पूर्ण जंकरान से निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन की प्रांच यहाँ तक आई है। पहिले यहाँ छावनी थी। यह स्थान निजाम स्टेट की सीमा पर है। यहाँ से खामगाँव, कासिम, पूसद और अकोला तक मोटर जाती हैं। यहाँ की मनुष्य संख्या करीब १४ हजार के लगभग है।

पैदावार—गल्ला—जुवार, त्वर, गेहूँ, चना, मूँग आदि अनाज हैं। अनाज का तौल मापी से है। १॥ सेर की मापी और १६ मापी पायली की रंडी।

फपास—३२८ सेर धंगाली की खंडी पर भाव होता है।

रूई— १५६ सेर का थोम्मा, थोम्मा पर भाव होता है। २५—२० हजार गॉठ रूई पैदा होती है।

जॉनिंग प्रेसिंग—यहाँ ७ जॉनिंग और ३ प्रसिंग फैक्टरियों हैं।

दर्रांनीय स्थान—प्राणी बाबा का स्थान, नागनाथ का क्षेत्र और दत्तात्रय मंदिर।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

## मेसर्स किरानदास सीताराम

इस दुकान के मालिक बूझू बोरावड़ ( जोधपुर स्टेट ) के है। आप माहेधरी वैश्य ममाज के काबरा सज्जन हैं। इस फर्म के स्थापक सेठ किरानदासजी काबरा ७५—८० साल पहिले हिंगोली आये थे। आपके ५ पुत्र हुए, रामचन्द्रजी, सीतारामजी, धनराजजी एवं गनेशलालजी। इन भाइयों में से सेठ रामचन्द्रजी, सीतारामजी और धनराजजी की यह फर्म है। वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ चतुरसुजजी और सेठ मोतीलालजी हैं। आपके व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हिंगोली ( निजाम )—मेसर्स किरानदास सीताराम—यहाँ जॉनिंग प्रेसिंगफैक्टरी है। और वैद्विग व्यापार होता है।



खामगाँव—मेसर्स रामचन्द्र लालचन्द्र—लोकल आदत का काम होता है ।

### मेसर्स किशनदास गनेशलाल

इस दुकान के मालिक सेठ किशनदासजी के पुत्र सावंतरामजी और गनेशलालजी हैं । इनमें से वर्तमान में सेठ गनेशलालजी विद्यमान हैं । आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।  
हिंगोली—मेसर्स किशनदास गनेशलाल—इस नामसे वैद्विग और आदत का काम होता है ।

### मेसर्स मोतीराम बीजराज

इस फर्म के मालिक धनकोली रसीदपुरा ( जोधपुर स्टेट ) निवासी मादेश्वरी वैश्य समाज के भूँदड़ा सज्जन हैं । सेठ मोतीरामजी भूँदड़ा देश से करीब १०० साल पहिले यहाँ आये थे । आप यहाँ साधारण काम काज करते रहे । आपके पुत्र सेठ बीजराजजी के हाथों से इस दुकान के व्यापार को विरोप उन्नति प्राप्त हुई । आप संवन् १९५६ में स्वर्गवासी हुए । आपके पुत्र बालमुकुंदजी आपकी मौजूदगी में ही गुजर चुके थे ।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ बालमुकुन्दजी के पुत्र सेठ हेमराजजी भूँदड़ा हैं । आप बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति के उदार सज्जन हैं । अपने संवन् १९७९ में श्री दत्तात्रय का सुंदर मंदिर करीब १। लक्ष रुपयों की लागत से तयार करवाया है । इसके स्थायी प्रबंध के लिये बीजराज हेमराज के नाम से जो कपड़े की दुकान थी वह दुकान और बहुतसी जमीन दी है । बड़नेरा (बरार) में भी सीताराम महाराज के संस्थान में आपकी एक धर्मराजा बनी है । आप यहाँ के अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन माने जाते हैं । आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।  
हिंगोली—मेसर्स मोतीराम बीजराज—वैद्विग, खेती तथा आदत और रुई का व्यापार होता है ।  
बामुदेव दत्तात्रय हिंगोली—यह श्री दत्तात्रय मंदिर की कपड़े की दुकान है ।

### मेसर्स वामन रामचन्द्र नाइक डोहीफोड़े

इस दुकान के मालिक दक्षिणी ब्राह्मण समाज के माध्वदिनी गौत्रीय शांठिस्य मज्जन हैं । आप १०० वर्षों से व्यापार कर रहे हैं । सेठ वामनराव डोहीफोड़े के हाथों से इस दुकान का स्थापन हुआ । आपने रुई में विरोप सम्पत्ति उपार्जित की । आप १९०२ में स्वर्गवासी हुए । वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ रामचरण वामन बर्के बापू साह्य डोहीफोड़े हैं । आपकी

ओर से यहाँ श्रीराधाकृष्णजी का मंदिर बना हुआ है। इसमें कुछ छात्रों के लिये भोजन का प्रबंध है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

द्विगोली ( निजाम ) मेसर्स धामन रामचन्द्र नाइक  
वारका पता Dohiphode

यहाँ कृषि, लैंडलार्ड, वैदिक, कॉटन व आइत का काम होता है। रायली तथा जापान फॅट का भारके पास एजेंसी है तथा मिला की कारीदी रहती है।

द्विगोली—श्रीराधाकृष्ण जीन—जीनिंग फेक्टरी है।  
पूर्णा—धामन रामचन्द्र—लेनेदेन का व्यापार होता है।

जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज

- कमलननन केशवदेव जीनिंग फेक्टरी
- द्विरानदास सीताराम जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
- गंगेराजराज सूरजमल जीनिंग फेक्टरी
- देवडा जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
- न्यू कॉटन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
- राधाकृष्ण जीनिंग फेक्टरी
- द्विगोली जीनिंग फेक्टरी

ईकर्म

- मेसर्स द्विरानदास गंगेराजराज
- ” द्विरानदास सीताराम
- ” गोविंदराम भीरुप्पा
- ” बन्धुभान हीराजराज
- ” मोदीराम बीजराज
- ” मोदीराम रामचिंताम
- ” ग्यागीराम शूरभन
- ” धामन रामचन्द्र होराकेडे

- ” शंकरराम रामानंद
- ” सुमरकरदास रामानंद

फाट्टे के व्यापारी

- मेसर्स जमनादास हनुमानदास
- ” नेपराज शुन्दावन
- ” किरवनाथ स्वयमे
- ” लक्ष्मण गोएपा

कॉटन के व्यापारी

- मेसर्स द्विरानदास गंगेराजराज
- ” द्विरानदास श्रीधरराम
- ” गोविंदराम शिवकिरण
- ” बरदोषीद नंदकिरण
- ” बट्टीराम नारायणदास
- ” रामनारायण गंगेपा
- ” धामन रामचन्द्र

गन्धे के व्यापारी और आड़तिया

- सर्से चतुर्भुज जेठमल  
 " गनपत गोविंद बासठवाल  
 " बाजमुकुन्द नथमल  
 " विठ्ठलदास हनुमानदास  
 " मोतीराम श्रीजराज  
 " मानमल गौरीरक्ष  
 " राधाकृष्ण मूरजमल  
 " शंकरदास गनेरादाम
- 

किराने के व्यापारी

- मेसर्स अन्वास महम्मद  
 " करीम सुजेमान  
 " पंडरीनाथ बैजनाथ  
 " रामकृष्ण गणपत बासठवाल  
 " हथीय जीया
- 

जनरल मरचेण्ट्स

- मेसर्स पारा सोया जीनाजी  
 " रंगनाथ गंगाराम  
 " रामकृष्ण गनपत
-

## परभनी

निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर पसा हुआ मराठवाड़ा प्रांत के परभनी जिले का प्रधान स्थान है। यह शहर हैदराबाद और मनमाड के बीच में है। यहाँ से रेलवे का १ मॉच परली तक और दूसरी पूर्ण होकर द्विगोली तक जाती है। इस जिले के एक ओर वरार प्रांत है। तथा शेष ३ ओर नांदेड़, बीदर, बीड़ और औरंगाबाद जिले हैं। यहाँ की भाषा उर्दू और मराठी है। जिले को आबादी पौने आठ लाख और गाँवों की संख्या १२३६ है। पैदावार—ज्वारी, गेहूँ, बाजरी, ऊख, लाख, अजसरी, चना, करई, जव आदि गल्ला है। गल्ले का तेल मापी से है। ४॥ सेर की पायली और १६ पायली का मन। कपास तथा सरकी (विनोला) २४० सेर बंगाली की एक रंड़ी, रंड़ी पर भाव होता है।

रुई—१३२ सेर का पल्ला।

गुड़, शकर, धों का तेल १२ सेर के मन पर है।

जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरीज—यहां ७ जीनिंग एवं ५ प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। प्रति वर्ष करीब १५।२० हजार गोंठों की पाक होती है। परभनी के अलावा इस जिले में पर-तूर, सेदु, मानवत, अष्टी, द्विगोली, अजगांव, पोरी, जिनूर, गंगा-येड़, पूर्णा आदि स्थानों पर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

### मेसर्स नारायणदास चुद्धीवाल

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय मालिकों के पित्रों सहित जातना में दिया गया है। इस फर्म का जीनिंग प्रेसिंग का व्यापार बहुत जबरदस्त है। स्थान २ पर इस फर्म की करीब ३२ जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं। मद्रक में एक प्रॉपेट कंपनी का मित है। इस फर्म के मालिक स्वर्गीय सेठ मोर्शलालजी बहुत बड़े व्यापारिक मस्तिष्क के पुत्र थे। बाप ही

के द्वारा फर्म का व्यापार इतना फैला था। परभनी में इस फर्म का व्यापारिक-परिचय इस प्रकार है।

परभनी—मेमर्स नारायणदास चुभ्रीलाल } यहाँ आपही कौटन जीनिंग-प्रेमिंग  
T. A. Hirakhan } फेक्टरी है।

### मेमर्स नत्सूभाई मेचरी एण्ड संस

इस फर्म का हेड अफिस बरंगल में है। अब: इसके व्यापार का विस्तृत परिचय माणिकों को यहाँ मल्लि बरंगल में दिया गया है। बरंगल में इस फर्म की जीनिंग प्रेमिंग-फेक्टरी तथा बँडग मिला है। इसके अलावा जमीरुटा ( करीम नगर ) माणिकगढ़ ( आमिकावाड़ ) में भी इस दुकान के कारखाने हैं। परभनी में इस फर्म को काभिम व जूसुक भाई नत्सू शोभा जीनिंग फेक्टरी के नाम से एक जीनिंग फेक्टरी है।

### मेमर्स वालरन्द गंभीरमज

इस फर्म के ध्यातक मेठ वालरन्दजी गोटी करीब १२५ वर्ष पूर्व रिवाड़ा ( जोधपुर स्टेट ) से यहाँ आये थे। आप आंग्रान शेराम्बर जैन समाज के सज्जन हैं। आपके बाद आपके पुत्र गंभीरमजजी गोटी ने फर्म का व्यापार सम्हाला। आप १९५१ में गुजरे। तथा इस फर्म के ध्यातक को सेठ गंभीरमजजी के पुत्र मोहनलालजी ने विशेष तरफ़ी दी। वर्तमान में सेठ मोहनलालजी गोटी ही इस फर्म के माणिक हैं। परभनी में आपही देखरेख में श्रीगणेशनाथ शोभा-धर जैन मंदिर बन रहा है। आपके पुत्र श्रीयुव नैमीरन्दजी फर्म के व्यापार को सम्हालने हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

परभनी—मेमर्स वालरन्द गंभीरमज—रीटिंग, भाड़न, कपड़ा, गण्ठा तथा गारगी लेन-देन होगा है।

दिल्ली—गंभीरमज संदरगाह—आड़न, कपड़ा, लेन देन का काम होगा है।

### मेमर्स वेतनजी वेगपती कम्पनी

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय जयपुर में दिया गया है। जयपुर स्टेट, बरंगल फेक्टरी प्रभो में इस फर्म की कई जीनिंग-प्रेमिंग फेक्टरीयें हैं तथा बँडग का व्यापार होता है। परभनी में भी इस फर्म की कौटन प्रेमिंग फेक्टरी है तथा कई का व्यापार होता है।

## मेसर्स रामदयाल घासीराम

इस फर्म का विस्तृत व्यापारिक परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। वहाँ यह फर्म आवकारी बंटूकट का लाखों रुपयों का काम प्रति वर्ष करती है। तथा इसकी व्यवस्था के लिये निजाम स्टेट के बहुत से स्थानों में शाखाएँ हैं। इस फर्म का कारवार अच्छी उन्नति पर है। इसकी परभनी प्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

परभनी—मेसर्स रामदयाल घासीराम—यहाँ वैद्विग व आवकारो कंट्रैकिटिंग की व्यवस्था का काम होता है।

## मेसर्स लक्ष्मणदास शिवलाल

इस फर्म का स्थापन साठे गॉंव में करीब १०० साल पहिले सेठ लक्ष्मणदासजी के हाथों से हुआ था। आप थोसवाल देवाम्बर जैन समाज के सांपला सज्जन हैं। सेठ लक्ष्मणदासजी के पुत्र शिवलालजी ने इस दुकान के कारवार को बढ़ाया, आपके हाथों से ही परभनी में दुकान खोजी गई। आप संवन् १९७६ की भगसर बरी ९ को स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ शिवलालजी के पुत्र हेमराजजी सखाला हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

- १ साठेगॉंव—मेसर्स लक्ष्मणदास शिवलाल—यहाँ लेन-देन और कृषि का काम होता है।
- २ परभनी—मेसर्स लक्ष्मणदास शिवलाल—कपास, गल्ला, आदत और वैद्विग व्यापार होता है।
- ३ घोरी (परभनी) लक्ष्मणदास शिवलाल—जीनिंग फेक्टरी है और कपास का व्यापार होता है।

## मेसर्स वामन रामचन्द्र नादक जागीरदार

इस फर्म का देह आफिम हैदराबाद है। अतः इसके व्यापार आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। इस कुटुम्ब की गद्दवाल और वतर्नी संस्थान में जागीरी प्राप्त है। इसके अलावा इसको शाखाएँ, जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरियों, राइस मिल आदि म्देइ, निजामाबाद, मेदक और कामारडी में हैं। परभनी में भी इस फर्म की एक जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी है।

**मेसर्स श्रीराम द्वारकादास**

इस फर्म में सेठ श्रीरामजी और सेठ द्वारकादासजी इन दो सज्जनों का भाग है। सेठ श्रीरामजी बड़ ( मारवाड़ ) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के तोतला सज्जन हैं। तथा सेठ द्वारकादासजी माहेश्वरी वैश्य समाज के जेतारण ( जोधपुर स्टेट ) निवासी सोनी सज्जन हैं। आप दोनों सज्जनों ने मिलकर २८।३० साल पहिले भागीदारी में आदत की दुकान स्थापित की। वैसे आप दोनों का कुटुम्ब वोन सौ वर्षों से यहाँ निवास कर रहा है। आपकी ओर से परभनी स्टेशन पर हिन्दू और मुसलमानों के लिये एक विद्यालय धर्मशाला बनी हुई है। सेठ श्रीरामजी के पुत्र शालिग्राम भी व्यापार संचालित करने में भाग लेते हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१. परभनी—मेसर्स श्रीराम द्वारकादास  
T. A. Shriram

} यहां आदत, बैकिंग, सराफी, रुई और गज का व्यापार होता है

२. सेढू—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है।

३. पूर्णा—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है तथा जीनिंग प्रेसिंग है।

४. नादेड़—श्रीराम द्वारकादास—आदत, रुई और गज का कारबार होता है।

५. बोरी—( परभनी ) श्रीराम द्वारकादास—जीनिंग फेक्टरी है तथा आदत का कारबार होता है।

६. अजयगॉव ( परभनी ) श्रीराम द्वारकादास— " " "

७. परली—श्रीराम द्वारकादास— " " "

- जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
- गामड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
  - खोजा जीनिंग फेक्टरी
  - नारायणदास चुन्नीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
  - बेज्जन्नी बेरामजी एण्ड कं० जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
  - विष्णु जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
  - बामन रामचन्द्र नारिक जागीरदार जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी
  - लक्ष्मी जीनिंग फेक्टरी

- फण्डे के व्यापारी
- मेसर्स अव्यास महुम्मद
  - " चंदनसा उमनसा
  - " बालचंद गंभीरमान
  - " बाळचंद पन्नाताल
  - " बलीराम संतोषा
  - " शिवजीराम घीमूजाल
- गजे के व्यापारी और आदतियां
- मेसर्स गिरधारीलाल गोरधनदास
  - " चन्द्रमान गुलाबचंद

- मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल  
 " बालचंद्र गंभीरमन  
 " राजमल गुलाबचन्द्र  
 " लक्ष्मणदास शिवलाल  
 " श्रीराम द्वारकादास

जनरल मरचेण्डिस

- मेसर्स अशुभा जीवा  
 " हरीश जीवा

किराने के व्यापारी

- मेसर्स अशुभा मद्रास  
 " अशुभा जीवा बचली  
 " बाबू श्रीधराम भारद्वाज  
 " बलीराम बलीश  
 " हरीश जीवा बचली  
 " दासो मद्रास दासो मद्रास

बैंकर्स

- मेसर्स गिरधारीलाल फतेचंद्र  
 " प्रेमराज पन्नालाल  
 " बालचंद्र गंभीरमन  
 " रूपचंद्र हनुमतराम  
 " रामदास पाण्डुराम  
 " लक्ष्मणदास शिवलाल

फैक्टन मरचेण्डिस

- मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल  
 " बगलजी पट्टा  
 " बालचंद्र गंभीरमन  
 " रूपचंद्र हनुमतराम  
 " लक्ष्मणदास शिवलाल  
 " श्रीराम द्वारकादास



### मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म में सेठ श्रीरामजी और सेठ द्वारकादासजी इन दो सज्जनों का भाग है। सेठ श्री रामजी बडू ( मारवाड़ ) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के तोतला सज्जन हैं। तथा सेठ द्वारकादासजी माहेश्वरी वैश्य समाज के जेवारण ( जोधपुर स्टेट ) निवासी सोनी सज्जन हैं। आप दोनों सज्जनों ने मिलकर २८।३० साल पहिले भागीदारी में आड़त की दुकान स्थापित की। वैसे आप दोनों का कुटुम्ब पौन सौ वर्षों से यहाँ निवास कर रहा है। आपकी ओर से परभनी स्टेशन पर हिन्दू और मुसलमानों के लिये एक विशाल धर्मशाला बनी हुई है। सेठ श्रीरामजी के पुत्र शालिग्राम भी व्यापार संचालित करने में भाग लेते हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

- |  |  |
|--|--|
| १. परभनी—मेसर्स श्रीराम द्वारकादास<br>T. A. Shriram                              | } यहां आड़त, वैडिंग, सराफी, रुई और गज का व्यापार होता है |
| २ सेदू—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है।                               |  |
| ३ पूर्णा—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है तथा जीनिंग प्रेसिंग है।      |  |
| ४ नदिङ्ग—श्रीराम द्वारकादास—आड़त, रुई और गज्जा का कारखार होता है।                |  |
| ५ बोरी—( परभनी ) श्रीराम द्वारकादास—जीनिंग फेक्टरी है तथा आड़त का कारखार होता है |  |
| ६ अजयगॉव ( परभनी ) श्रीराम द्वारकादास—   | ” ”  |
| ७ परली—श्रीराम द्वारकादास—   | ” ”  |

#### जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

#### फण्डे के व्यापारी

गामडिया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
खोजा जीनिंग फेक्टरी  
नारायणदास चुध्रीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
वेशनजी धरामजी एण्ड कं० जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
विष्णु जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
बानन रामचन्द्र नाईक जागीरदार जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
लहनी जीनिंग फेक्टरी

मेसर्स अब्बास महम्मद  
” खंनसा बमनसा  
” बालचंद गंभीरमल  
” बालचंद पन्नालाल  
” बलीराम संतोबा  
” शिवजीराम धीमूलाज  
गळे के व्यापारी और आड़तिया  
मेसर्स गिरधारीलाल गोरधनदास  
” चन्द्रभान गुनाधचंद

- मेसर्स प्रेमराज पत्रालय  
 ,, बालचंद्र गंभीरमल  
 ,, राजमल गुणारचन्द्र  
 ,, लक्ष्मणदास शिवराज  
 ,, भीराम द्वारकादास

जनरल मरचेट्स

- मेसर्स अब्दुल्ला जीया  
 ,, हबीब जीया

किराने के व्यापारी

- मेसर्स अब्बास महम्मद  
 ,, अब्दुल्ला जीया बख्शी  
 ,, बाबू भीवाराम भरहर  
 ,, बलीराम संतोषा  
 ,, हबीब जीया बख्शी  
 ,, हाजी सखूर हाजी नूमाग्यावा

बैंकर्स

- मेसर्स गिरधारीदास फलेचंद्र  
 ,, प्रेमराज पत्रालय  
 ,, बालचंद्र गंभीरमल  
 ,, रूपचंद्र हनुतराम  
 ,, रामदयाल घासीराम  
 ,, लक्ष्मणदास शिवराज

फौटन मरचेट्स

- मेसर्स प्रेमराज पत्रालय  
 ,, बगनजी वडा  
 ,, बालचंद्र गंभीरमल  
 ,, रूपचंद्र हनुतराम  
 ,, लक्ष्मणदास शिवराज  
 ,, भीराम द्वारकादास

### मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म में सेठ श्रीरामजी और सेठ द्वारकादासजी इन दो सज्जनों का भाग है। सेठ श्री रामजी बहू ( मारवाड़ ) निवासी माहेश्वरी वैश्य समाज के तोतला सज्जन हैं। तथा सेठ द्वारकादासजी माहेश्वरी वैश्य समाज के जेतारण ( जोषपुर स्टेट ) निवासी सोनी सज्जन हैं। आप दोनों सज्जनों ने मिलकर २८।३० साल पहिले भागीदारी में आइत की दुकान स्थापित की। वैसे आप दोनों का कुटुम्ब पौन सौ वर्षों से यहाँ निवास कर रहा है। आपकी ओर से परभनी स्टेशन पर हिन्दू और मुसलमानों के लिये एक विराज्ज धर्मशाला बनी हुई है। सेठ श्रीरामजी के पुत्र शालिगराम भी व्यापार संचालित करने में भाग लेते हैं। आप का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

- |  |   |
|--|---|
| १. परभनी—मेसर्स श्रीराम द्वारकादास<br>T. A. Shriram                              | } यहां आइत, बैङ्किंग, सराफी, रुई और गज का व्यापार होता है |
| २. सेल्लु—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है।                            |   |
| ३. पूर्णा—श्रीराम द्वारकादास—उपरोक्त व्यापार होता है तथा जीनिंग प्रेसिंग है।     |   |
| ४. नांदेड़—श्रीराम द्वारकादास—आइत, रुई और गज्जा का कारवार होता है।               |   |
| ५. थोरी—( परभनी ) श्रीराम द्वारकादास—जीनिंग फेक्टरी है तथा आइत का कारवार होता है |   |
| ६. अजयगँव ( परभनी ) श्रीराम द्वारकादास—  | ” ”   |
| ७. परली—श्रीराम द्वारकादास—  | ” ”   |

#### जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी

- गामड़िया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
खोजा जीनिंग फेक्टरी  
नारायणदास चुश्रीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
येजनजी धेरामजी एण्ड कं० जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
विष्णु जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
यामन रामचन्द्र नाईक जागीरदार जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
लक्ष्मी जीनिंग फेक्टरी

#### फपड़े के व्यापारी

- मेसर्स अश्वास महम्मद  
” चंदनसा वमनसा  
” बालचंद गंभीरमल  
” बाळचंद पत्रालाल  
” बशीराम संतोबा  
” शिवजीराम धीमूअल  
गले के व्यापारी और आड़निया  
मेसर्स गिरधारीलाल गोरधनदास  
” चन्द्रमान गुलाबचंद

- मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल  
 ,, बालचंद गंभीरमल  
 ,, राजमल गुज्जारचन्द  
 ,, लक्ष्मणदास शिवलाल  
 ,, भीराम द्वारकादाम

जनरल मरचेट्स

- मेसर्स अब्दुहा जीवा  
 ,, हबीब जीवा

किराने के व्यापारी

- मेसर्स अज्वास महम्मद  
 ,, अब्दुल्ला जीवा कच्छी  
 ,, बाबू सीताराम मरखर  
 ,, बलोराम संतोषा  
 ,, हबीब जीवा कच्छी  
 ,, हानो सशूर हाजीनूसामाया

बैंकर्स

- मेसर्स गिरघारोजाल फतेचंद  
 ,, प्रेमराज पन्नालाल  
 ,, बालचंद गंभीरमल  
 ,, रूपचंद हनुतराम  
 ,, रामदयाल घासीराम  
 ,, लक्ष्मणदास शिवलाल

फौंडन मरचेट्स

- मेसर्स प्रेमराज पन्नालाल  
 ,, बगनमी इया  
 ,, बालचंद गंभीरमल  
 ,, रूपचंद हनुतराम  
 ,, लक्ष्मणदास शिवलाल  
 ,, भीराम द्वारकादाम

## खेती

यह छोटा सा स्थान परभनी जिले का कपास का प्रधान व्यापारिक केन्द्र है। इसकी मजदूरी-संख्या केवल ५ हजार है। इसकी छोटी बस्ती में ५० हजार गीलों की खेई की आबादी होती है। इस स्थान पर १३ जीनिंग मैकटरी ७ प्रेमिंग मैकटरी और १ आइन मिल है। कपास के अलावा आलू, ककड़ी, गोहूँ, भुवारी, चना, तूर, लाल, मूँ, कपासिया, चाजरी आदि की पैदावार है। यह स्थान विजय स्टेट रेलवे की मीटर गेज लाइन पर जानना और परभनी के मध्य स्थित है। यह स्थान समुद्र से १५५ मीटर दूर और हैदराबाद से २३१ मीटर दूर है। यहाँ प्रायः आठ व दस दिन मात्र वर्ष होता है और मात्र के पैमाने में विस्र २. वस्तुओं अपने आकार-वकार के दुरुष्कारित काल में कम शिवाया समानी हैं। मात्र की पावनी ९ सेर की मानी जाती है। वर्ष के व्यापारियों का संश्लिष्ट परिचय इस प्रकार है।

### मेसर्स गुलाबदास हरीदास

इस फर्म के मालिक गुलाबानी मोहन (बीना) वणिज समान के मालक हैं। इसका हेड ऑफिस हैदराबाद में है। हैदराबाद के प्राचीन और नामी व्यापारी कुटुम्बों में इसकी भी गणना है। इसमें अरममाय आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के विनों सहित हैदराबाद में दिया गया है। इस फर्म की सेट में एक बहिन जीनिंग प्रेमिंग-मैकटरी है।

### मेसर्स नारायणदास वृन्दीदास

इस फर्म का हेड ऑफिस अरममाय है। अब इसके व्यापार आदि का परिचय फर्म के बहिन का विचर सहित कालमें से दिया गया है। इस फर्म की स्थान २ पर बहिन ३२ जीनिंग प्रेमिंग-मैकटरी तथा एक सेट में एक बहिन की मिल है। इसके सेट मात्र का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

६८ — मेसर्स नारायणदास वृन्दीदास } वर्ष के लिए प्रेमिंग मैकटरी है।  
 १०८

### मेसर्स पद्मजी मूलजी

इस फर्म के मालिक कच्छ-लारजा निवासी कच्छी बलिष्ठ दूरा ओसवाल जाति के सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १९५६ में सेठ मूलजी के हाथों से हुआ। आपने यहाँ एक जीनिंग फेक्टरी खोली। आप संवत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ मूलजी के पुत्र सेठ पद्मजी भाई हैं। आपने १९७० में सेलू में एक प्रेसिंग फेक्टरी खोली। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स पद्मजी मूलजी यहाँ जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है और रुई का व्यापार होता है।

पद्मूल—मेसर्स पद्मजी मूलजी—जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी है और रुई का व्यापार होता है।

### मेसर्स रामनारायण मोहनन्यात

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जेठारण ( जोधपुर स्टेट ) में है। आप माहे-श्वरी समाज के लोहिया बाहिरी सज्जन हैं। करीब १५० वर्ष पूर्व सेठ दौलतरामजी मेलू आपके-आपका कुटुम्ब ७ पीढ़ियों से यहाँ रोजगार कर रहा है। सेठ दौलतरामजी निजामसरकार की ओर से आकिसर थे। आपके बाद क्रमशः मोतीरामजी, जगन्नाथजी और रामनारायणजी ने कारबार सम्हाला। इस फर्म के व्यापार को सेठ रामनारायणजी ने विशेष बढ़ाया। आप २२।२३ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। आपके भ्राता सेठ शिवनारायणजी विद्यमान हैं।

वर्तमान में सेठ रामनारायणजी के पुत्र मोहनलालजी एवं आसारामजी हैं। आपने इस फर्म को जीनिंग प्रेसिंग-फेक्टरी खोली है।

सेठ मोहनलालजी देवलगाँव सादा बारा न्यात के सरपंच हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स रामनारायण मोहनलाल—वैडिंग, खेती और कपास का व्यापार होता है।

सेलू—आसाराम रामनारायण—जीनिंग-प्रेसिंग फेक्टरी और आइल मिल है।

पोपल गाँव ( औरंगाबाद )—आसाराम रामनारायण—जीन और आइल मील है।

जेनूर ( परभनी )—आसाराम रामनारायण—

” ”

### मेसर्स सरदारमल विठ्ठराम

इस फर्म के मालिक जेठारण ( जोधपुर ) निवासी माहेश्वरी समाज के बाहिरी लोहिया सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन सेठ सरदारमलजी ने ५०-६० साल पहिले किया। आरंभ से आपके यहाँ गल्ले और किराने का रोजगार होता है। सेठ सरदारमलजी के ३ पुत्र हुए। विद्वः

## सेलू

यह छोटा सा स्थान परभनी जिले का कपास का प्रधान व्यापारिक केन्द्र है। इसकी मनुष्य-संख्या केवल ५ हजार है। इतनी छोटी बस्ती में ५० हजार गौंठों की रुई की आमद होती है। इस स्थान पर १३ जीनिंग फैक्टरी ७ प्रेसिंग फैक्टरी और १ आइल मिल है। कपास के अलावा अलसी, करड़ी, गेहूँ, जुवारी, चना, तूवर, लाख, रुई, कपासिया, याजरी आदि की पैदावार है। यह स्थान निजाम स्टेट रेलवे की मीटर गेज लाइन पर जालना और परभनी के मध्य स्थित है। यह स्थान मनमाड से १५५ मील दूर और हैदराबाद से २३१ मील दूर है। यहाँ प्रायः अनाज का तौल माप पर होता है और माप के पैमाने में भिन्न २ बस्तुएँ अपने आकार-प्रकार के मुआफिक वजन में कम जियादा समायी हैं। माप की पाथली ९ सेर की मानी जाती है।

यहाँ के व्यापारियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

### मेसर्स गुलामदास हरीदास

इस फर्म के मालिक गुजराती भोज ( बीसा ) वणिक समाज के सज्जन हैं। इसका हेड ऑफिस हैदराबाद में है। हैदराबाद के प्राचीन और नामी व्यापारी कुटुम्बों में इसकी भी गणना है। इसके व्यवसाय आदि का विस्तृत परिचय मालिकों के चित्रों सहित हैदराबाद में दिया गया है। इस फर्म की सेलू में एक कॉटन जीनिंग प्रेसिंग-फैक्टरी है।

### मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल

इस फर्म का हेड आफिस जालना है। अतः इसके व्यवसाय आदि का परिचय फर्म के मालिकों के चित्र सहित जालने में दिया गया है। इस फर्म की स्थान २ पर करीब ३२ जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरियों तथा गदक में एक कपड़े की मिल है। इसके सेलू प्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेलू—मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल } यहाँ जीनिंग-प्रेसिंग फैक्टरी है।  
T. A. Hirakhan

### मेसर्स पटपती मूलजी

इस फर्म के मालिक कच्छ-सावला निवासी कच्छी बणिज्ज द्वारा अमेरिका में स्थापित हैं। इस फर्म का स्थापन संवत् १९५६ में सेठ मूलजी के हाथों में हुआ। आरंभ में एक जीनिंग प्रेसिग मशीन थी। अगले संवत् १९६२ में स्वर्गवासी हुए।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ मूलजी के पुत्र सेठ परमजी माली हैं। आरंभ (१९५६) में सेठ में एक प्रेसिग फेक्टरी होती। आजका व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

सेठ—मेसर्स परमजी मूलजी यहाँ जीनिंग-प्रेसिग फेक्टरी है और रूई का व्यापार होता है।  
पटपल—मेसर्स परमजी मूलजी—जीनिंग-प्रेसिग फेक्टरी है और रूई का व्यापार होता है।

### मेसर्स रामनारायण मोहनलाल

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान जेठारण ( जोधपुर स्टेट ) में है। आज माधु-खरी समाज के लोहिया बाहियों सज्जन हैं। करीब १५० वर्ष पूर्व सेठ दीनारामजी सेठु आरंभ-आजका कुटुम्ब ७ पीढ़ियों से यहाँ रोजगार कर रहा है। सेठ दीनारामजी निजामसरकार की ओर से आहिमर में। आपके बाद क्रमशः भोवीरामजी, जगन्नाथजी और रामनारायणजी ने कारबार सम्हाला। इस फर्म के व्यापार को सेठ रामनारायणजी ने विशेष बढ़ावा। अगले २३ साल पहिले स्वर्गवासी हुए। आपके भ्राता सेठ शिवनारायणजी रिचमान हैं।

वर्तमान में सेठ रामनारायणजी के पुत्र मोहनलालजी एवं आसारामजी हैं। आरंभ इस फर्म की जीनिंग प्रेसिग-फेक्टरी होती है।

सेठ मोहनलालजी देवतगौड़ सादा वारा न्याय के सरपंच हैं। आपके व्यापारिक परिषय इस प्रकार है।

सेठ—मेसर्स रामनारायण मोहनलाल—बैङ्किंग, खेती और कपास का व्यापार होता है।

सेठ—आसाराम रामनारायण—जीनिंग-प्रेसिग फेक्टरी और आइल मिल है।

पटपल गौड़ ( औरंगाबाद )—आसाराम रामनारायण—जीन और आइल मिल है।

जेठूर ( परभनी )—आसाराम रामनारायण— " "

### मेसर्स सरदारमल विठराम

इस फर्म के मालिक जेठारण ( जोधपुर ) निवासी माधुखरी समाज के बाहियों लोहिया सज्जन हैं। इस दुकान का स्थापन सेठ सरदारमलजी ने ५०-६० साल पहिले किया। आरंभ से आपके यहाँ गल्ले और किराने का रोजगार होता है। सेठ सरदारमलजी के ३ पुत्र हुए। विठ्ठ-



रामजी, हरीरामजी और गुलाबचंदजी । आप तीनों भाइयों का इधर दो सालों में स्वर्गवास हो गया है । सेठ विठ्ठलरामजी के पुत्र राधाकिशनजी और गोपीकिशनजी हैं तथा हरीरामजी के पुत्र चुन्नीलाल जी और गुलाबचंदजी के पूसाजालजी हैं । आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।  
 सेलू—मेसर्स सरदारमल विठ्ठलराम—जीनिंगफेक्टरी है तथा गल्ला और किराने का व्यापार होता है ।  
 सेलू—मेसर्स राधाकिशन गोपीकिशन—गल्ला तथा किराने का व्यापार होता है ।

### मेसर्स श्रीराम द्वारकादास

इस फर्म के व्यापार आदि का परिचय परभनी में दिया गया है । परभनी के अलावा सेलू, पूर्णा, नांदेड, बोरी, परली आदि स्थानों में इस दुकान की शाखाएँ हैं । जिन पर आड़त, रुई, गल्ला का कारबार होता है । सेलू में भी इस फर्म पर यही व्यापार होता है ।

### मेसर्स बंशीलाल अवीरचंद रायवहादुर

यह फर्म पहिले मेसर्स सदासुखु जानकीदास के अधिकारमें थी । पर उपरोक्त फर्म के संयालक सेठ केदारनाथजी ढागा के स्वर्गवासी होने के बाद इसका तथा निजाम स्टेट की दूसरी ग्रांचेज का कारबार उनके भ्राता सेठ बंशीलालजी अवीरचंदजी ने सगहला । मेसर्स बंशीलाल अवीरचंद फर्म के हैदराबाद ग्रांच के अंदर में यह शाखा है । यह दुकान भारत के साहुकारों में ऊँचे दर्जे के व्यापारियों की गणना में समझी जाती है । हैदराबाद और सिकन्दराबाद में यह दुकान विल्लूत बैङ्किंग व्यापार करती है तथा उन स्थानों पर प्रधान फर्म मानी जाती है । इसकी सेलू ग्रांच का व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

सेलू—मेसर्स बंशीलाल अवीरचंद रायवहादुर } यहां जीनिंग-प्रेमिंग फेक्टरी है और बैङ्किंग तथा रुई का व्यापार होता है ।

#### जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरीज़

आसाराम रामनाथ जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी  
 गामडिया जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी  
 गुलाबदास हरीदास जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी  
 नारायणदास बुध्नीलाल जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी  
 पद्ममती मूलजी जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी  
 तेजपाल खीमजी जीनिंग फेक्टरी

बंशीलाल अवीरचंद रायवहादुर जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी  
 बेजानजी बेरामजी एण्ड तेजपाल खीमजी प्रेमिंग फेक्टरी  
 मोतीलाल रामधुंवार जीनिंग फेक्टरी  
 न्यू जीनिंग फेक्टरी ( रतनजी पारेण )  
 मेन्टू मर्चेण्ट जीनिंग

सरदारमल विठ्ठलजीन फेडररी  
आसाराम रामनारायण ऑयल मिल

रुई के व्यापारी

- मेसर्स जमनादास नरसी
- " वैजपाल रामजी
- " प्रेमराज पन्नालाल
- " बेजन्नी बेरामजी
- " धंशीलाल अर्पाचंद रायपहाडुर
- " रामनारायण मोहनलाल
- " लालजी रामजी

एजेंसियाँ

- मेसर्स गोसा फाब्रुसा बेसा लिमिटेड
- " जापान ट्रेडिंग कम्पनी
- " पटेल प्रदर्भ
- " बालकट प्रदर्भ

- मेसर्स सुसान कम्पनी
- " रायडी प्रदर्भ

किराना के व्यापारी

- मेसर्स अयासा महुमद
- " अष्टुल्ला जीया
- " राधाकिरान गोपीकिरान
- " हुमेन हाजी मूमा

गल्य के व्यापारी और आइतिया

- मेसर्स गिरधारीलाल लक्ष्मीनारायण
- " प्रेमराज पन्नालाल (हिद अॉकिम नगर)
- " मदनलाल रामजीवन
- " राधाकिरान गोपीकिरान
- " विठ्ठलदास ध्यंष्टलाल
- " मूरत बगम सोनपाल

निजाम-नंर

## जालना

निजाम स्टेट रेलवे की छोटी लाइन पर बसा हुआ औरंगाबाद जिले का प्रसिद्ध व्यापारिक स्थान है। यह शहर मनमाड़ से ११० मील और हैदराबाद से २७६ मील है। इस स्थान पर विशेष कर कपास का व्यापार होता है। प्रति वर्ष करीब ६० हजार गाठों की यहाँ आमद हो जाती है। कपास को लोढ़ने और प्रेसिंग करने के लिये यहाँ १८ जीनिंग और १० प्रेसिंग फेक्टरियों हैं। प्रेसिंग फेक्टरियों ज्वाइंट है। यहाँ से बाहर जाने वाले माल में रुई, सरकी, अलसी, तिहरी, अरंडी और मुंगफली है। और दूसरी प्रकार को पैदावार में जुवारी, गेहूँ, चना, बाजरी, मूंग, मोठ, चड़द, करड़ी आदि प्रधान हैं। व्यापारियों की सुविधा के लिये इम्पीरियल बैंक की ब्रांच स्थापित है।

तौल और भाव की दर—कपास १४० सेर बंगाली का पल्ला ( बारदाना बाद )  
 रुई—१४० सेर का पल्ला ( ८ सेर बारदाना का बाद )  
 अनाज—१३२ सेर का पल्ला  
 गुड़—१२० सेर का पल्ला ( २४ घड़ी का पल्ला )

यहाँ के व्यापारियों का संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

### मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल

इस फर्म के मासिक शासकी (देहली के समीप) निवासी अग्रवाल वैश्य समाज के बांसल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्म के व्यापार सम्मान तथा प्रतिष्ठा को सेठ मोतीलालजी चुन्नीलालजी ने बहुत उन्नति पर पहुँचाया। आप बड़े साहसी व्यापारी थे। आपने अपने हाथों से मुगलार्थ, दक्खिन, अमहद नगर आदि जगहों में धींसियों जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियों खोली, गढ़क में अपनी निज की कपड़े की मिल खोली। आपके व्यापारिक साहस को देखकर कई अंग्रेज वाजुब करते थे। इस प्रकार आपने अपने व्यापार को थोड़ी ही अवस्था में बहुत फैला दिया था। दुर्दैव से केवल ३८ वर्ष की अल्प अवस्था में आप सन् १९२४ में शिवरात्रि के दिन स्वर्गवासी हो गये।

भारतीय व्यापारियों का परिचय:—  
( तीसरा भाग )



एच.जी. एम. मोतीलालजी बट्ट ( मुनीर बट्ट ) बाल्य

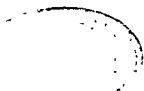


सेठ रामधरजी बघटिया ( रामधर बघटिया ) बाल्य



सेठ धनराजजी धीरू ( धनराज बघटिया ) बाल्य





इस फर्म की जहाँ २ शाखाएँ हैं वन सब जगहों पर यह दुकान बहुत मातबर मानी जाती है।  
 इसके द्वाारा का हाल इस प्रकार है।

१ जालना—मेसर्स नारायणदास चुभोलाल  
 T. A. Hirakhan

२ बम्बई—मेसर्स नारायणदास चुभोलाल  
 वार का पता Hirakhan

३ गदक (हुगली-घारवाड़) दि नारायणदास चुभोलाल  
 कॉटन स्पॉनिंग एण्ड वॉविंग  
 मिल्स, T. A. Hirakhan

} हेड आफिस है, तथा वेट्टिंग जॉनिंग  
 प्रेसिंग फेक्टरी और कॉटन का  
 व्यापार होता है।  
 } वेट्टिंग आइव और रुई का व्यापार  
 होता है।

} इस नाम की आपकी एक प्राइवेट  
 मिला है।

इनके अलावा नीचे लिखे स्थानों पर जॉनिंग प्रेसिंग फेक्टरियाँ हैं और कॉटन का व्यापार  
 होता है, इन सब स्थानों पर वार का पता Hirakhan है। ४—परभनी, ५—मानवर,  
 ६—मेड, ७—वाडूर (निजाम), ८—औरंगाबाद, ९—लाडूर ( निजाम स्टेट ), १०—लाडूर  
 (निजाम), ११—भातेगांव (नासिक), १२—नांदगांव (मननाड), १३—शामोरी (अहमद नगर),  
 १४—कहनदनगर, १५—धरमाला (बीजापुर), १६—कुडवासी (एम. एस. एम.), १७—बीजापुर  
 ( एस. एम. एम.) १८—कुडवासी (बीजापुर)।

मेसर्स पूनमचंद बरलाचरमज

इस फर्म के व्यापार आदि का विस्तृत परिचय औरंगाबाद में दिया गया है। जागना में  
 इस दुकान का स्थान करीब १०१५ साल पूर्व हुआ। यहाँ यह फर्म आइव का कारखाना  
 रखती है।

मेसर्स पेन्ननजी मेरवानजी

इस फर्म के पूर्वज सेठ मेरवानजी मन् १८०३ में जाजना आये थे। आप आरंभ में वृष्टिा  
 सेठ के मेनेजमेंट में यहाँ आये और फिर यहाँ रहने लगे। आपके बाद सेठ पेन्ननजी मेरवा-  
 ने ५० साल पहिले जाजने में वेट्टिंग एवं स्पेरी का व्यापार शुरू किया। सेठ पेन्ननजी के  
 हुए जिनमें से सोरावजी, बरजोरजी, मयनजी निजाम स्टेट के कोर्टेदार थे। तथा सेठ  
 जी और पेन्ननजी वरपेठ फर्म का संभालन करने लगे। सेठ पेन्ननजी मन् १८८१ में  
 मरे हुए।



इस फर्म की जहाँ २ शाखाएँ हैं वन सब जगहों पर यह दुकान बहुत मातबर मानी जाती है । इसके व्यापार का हाल इस प्रकार है ।

१ जालना—मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल  
T. A. Hirakhan

हेट आफिस है, तथा वैट्टिंग जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और कॉटन का व्यापार होता है ।

२ मन्वई—मेसर्स नारायणदास चुन्नीलाल  
तार का पता Hirakhan

वैट्टिंग आदत और रुई का व्यापार होता है ।

३ गदक (हगली-धारवाड़) दि नारायणदास चुन्नीलाल  
कॉटन स्पीनिंग एण्ड वीविंग  
मिस्स, T. A. Hirakhan

इस नाम की आपकी एक प्राइवेट मिल है ।

इसके अलावा नीचे लिखे स्थानों पर जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियों हैं और कॉटन का व्यापार होता है, इन सब स्थानों पर तार का पता Hirakhan है । ४—परभनी, ५—मानवद, ६—सेद, ७—वाल्दूर (निजाम), ८—भौरंगावाड़, ९—लाल्दूर ( निजाम स्टेट ), १०—लाल्दूर (निजाम), ११—मालेगांव (नाशिक), १२—नांदगांव (मनमाड), १३—शाम्मोरी (अहमद नगर), १४—अहमदनगर, १५—छरमाळा (बीजापुर), १६—तुरुडवाड़ी (एम. एस. एम.), १७—बीजापुर ( एम. एस. एम.) १८—कुड्डी (बीजापुर) ।

### मेसर्स पूनमचंद बस्तावरमल

इस फर्म के व्यापार आदि का विलुप्त परिषय औरंगाबाद में दिया गया है । जालना में इस दुकान का स्थापन करीब १०१५ सात पूर्व हुआ । यहाँ यह फर्म आदत का कारखाना चरवी है ।

### मेसर्स पेशनजी मेरवानजी

इस फर्म के पूर्वज सेठ मेरवानजी सन् १८०३ में जालना आये थे। आप आरंभ में ब्रिटिश रेजिमेंट के मेनेजमेंट में यहाँ आये और फिर यहाँ रहने लगे। आपके बाद सेठ पेशनजी मेरवानजी ने ५० साल पहिले जालने से वैट्टिंग एवं खेवी का व्यापार शुरू किया । सेठ पेशनजी के ५ पुत्र हुए जिनमें से सोराबजी, बरनोरजी, प्रथमजी निजाम कस्टम के ओहदेदार थे। तथा सेठ फरदुनजी और पद्मजी उपरोक्त फर्म का संचालन करने लगे। सेठ पेशनजी सन् १८८६ में स्वर्गवासी हुए ।



## भारतीय व्यापारियों का परिचय

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ पद्मजी पेशवजी और सेठ बेजुनजी फरदुनजी हैं। सेठ पद्मजी बयोवृद्ध और प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप जालना एसोसिएशन के प्रेसिडेंट हैं तथा सेठ बेजुनजी जालना कोऑपरेटिव सेंट्रल बैंक के सेक्रेटरी और ट्रेझरर हैं। आपका पारिक परिचय इस प्रकार है।

- |  |                             |   |
|--|-----------------------------|---|
| १. जालना—मेसर्स पेशवजी मेरवानजी  | }                           | हेड आफिस है यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, कोर्टन का व्यापार और जनरल व्यापार |
| २. बम्बई—मेसर्स दिनशाह पेशवजी<br>प्रिसेस स्ट्रीट                               |                             | कमीशन का व्यापार होता है।   |
| ३. ऊमरी—सेठ पेशवजी मेरवानजी—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और कपाम का व्यापार होता है |                             |   |
| ४. करकेली—(नांदेड़) सेठ बेजनजी धेरामजी   | " "                         | " "   |
| ५. नांदेड़—मेसर्स बेजनजी धेरामजी कम्पनी  | " "                         | " "   |
| ६. परभनी—मेसर्स बेजनजी धेरामजी कम्पनी  | " "                         | " "   |
| ७. सेलू—मेसर्स बेजनजी धेरामजी कम्पनी   | " "                         | " "   |
| ८. सातोना—सेठ बेजनजी फरदुनजी   | " "                         | " "   |
| ९. घामन गांव—(अमरावती) दीनशा पेशवजी  | " "                         | " "   |
| १०. देवल गांव—(धरार) पद्मजी पेशवजी कम्पनी                                      | " "                         | " "   |
| ११. बुतगांव—(तांगली) दीनशाजी पेशवजी—   | जीनिंग फेक्टरी है।          |   |
| १२. गुण्टकेल—(बंगलोर) बेजनजी धेरामजी कं०—                                      | जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है। |   |

### मेसर्स रामप्रताप रामदेव

इस फर्म के मालिकों का मूल निवासस्थान डोंडवाणा (जोधपुर स्टेट) है। आप बाल वैश्य समाज के बगड़िया सज्जन हैं। इस फर्म का स्थापन सेठ रामप्रतापजी ने १०० वर्ष पूर्व किया। आपके पश्चात् सेठ रामदेवजी और कन्दैयालालजी ने व्यापार सम्हाला। सेठ रामदेवजी २० साल पूर्व और कन्दैयालालजी १२ साल पूर्व स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ राधाकृष्णजी और गोरीकृष्णजी बगड़िया हैं। आपकी ओर से डोंडवाणा, जालना और नागपुर में धर्मशालाएँ बनी हैं। आपका परिचय इस प्रकार है।

- |   |   |  |
|---|---|--|
| १—जालना—मेसर्स रामप्रताप रामदेव<br>T. A. Ramdev | } | जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, सराफी लेन-वेन और कोर्टन का व्यापार होता है। |
|---|---|--|

- २—जाजना—राधाकिशन गोपाकिशन—कपास का व्यापार होगा है ।  
 ३—रिसोई ( अकोला ) रामप्रताप रामदेव—गेत्री और लेन-देन का काम होगा है ।  
 ४—कामठी—( नागपुर ) रामप्रताप रामदेव—देन लेन और बैटिंग व्यापार होगा है ।  
 ५—नागपुर—रामदेव गनेराराना  
 इतवारिया } किराने का व्यापार होगा है ।

### मेसर्स शिवलाल वंशीलाल

इस फर्म के वर्तमान मालिक मेठ शिवलालजी हैं । आपने मंथर १९४३ में कर्गोल्ड नाम से कपड़े का व्यापार स्थापित किया । आप जेतारण ( जोधपुर स्टेट ) निगामी मादेदरग बैटिंग समाज के सज्जन हैं । आपके पुत्र भी वंशीलाल जी कारवार में भाग लेते हैं । इस समय आप का व्यापारिक परिषय इस प्रकार है ।

जाजना—मेसर्स शिवलाल वंशीलाल—कपड़े का व्यापार होता है ।

### काउन जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरीज़

दि गनेरा कम्पनी प्रेसिंग फेक्टरी  
 दि जाजना जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरी  
 दि जाजना मरचेंट्स कम्पनी जीनिंग प्रेसिंग  
 फेक्टरी

दि टवल जीनिंग प्रेसिंग कम्पनी  
 तेजपाल गोविंदजी जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 महाधर जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरी  
 धनराज जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 नरसिंह जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 एन० ओ० गामडिया जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 नारायणदास सुभ्रीलाल जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 रामप्रताप रामदेव जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
 लालबाग जीनिंग फेक्टरी

### बैंकर्स

दी इम्पोरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड  
 दि लना कौआपररेटिव्ह सैन्ट्रल बैंक

### कपास के व्यापारी

मेसर्स अहमद मिया सममुहोन  
 ,, कपूरचंद कंवरलाल  
 ,, कजोड़ीमल सीवाराम  
 ,, गुमानीयाम रामनाथ  
 ,, धनजी द्यनमल  
 ,, नारायणदास सुभ्रीलाल  
 ,, परवन्जी मेरवानजी  
 ,, रामप्रताप रामदेव  
 ,, राधाकिशन गोपीलाल  
 ,, शिवलाल धालचंद

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ पद्मजी पेशतनजी और सेठ बेजुनजी सेठ पद्मजी वयोवृद्ध और प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आप जालना एसोसिएशन के तथा सेठ बेजुनजी जालना कोआपरेटिव्ह सेंट्रल बैंक के सेक्रेटरी और ट्रेज़रर हैं। पारिक परिचय इस प्रकार है।

- |   |                             |  |
|---|-----------------------------|--|
| १. जालना—मेसर्स पेशतनजी मेरवानजी  | }                           | हेड आफिस है यहाँ जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, कॉटन का व्यापार और कमीशन का व्यापार होता है। |
| २. धम्बई—मेसर्स दिनशाह पेशतनजी<br>मिसेंस स्ट्रीट                        |                             |  |
| ३. उमरी—सेठ पेशतनजी मेरवानजी—जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी और कपाम का व्यापार |                             |  |
| ४. करकेली—(नांदेड़) सेठ बेजुनजी बेरामजी                                 | "                           | " "  |
| ५. नांदेड़—मेसर्स बेजुनजी बेरामजी कम्पनी                                | "                           | " "  |
| ६. परभनी—मेसर्स बेजुनजी बेरामजी कम्पनी                                  | "                           | " "  |
| ७. सेद्व—मेसर्स बेजुनजी बेरामजी कम्पनी                                  | "                           | " "  |
| ८. सातोना—सेठ बेजुनजी फरदुनजी   | "                           | " "  |
| ९. घामन गांव—(अमरावती) दीनशा पेशतनजी                                    | "                           | " "  |
| १०. देवल गांव—(परार) पद्मजी पेशतनजी कम्पनी                              | "                           | " "  |
| ११. सुतगांव—(तांगवी) दीनशाजी पेशतनजी—                                   | जीनिंग फेक्टरी है।          |  |
| १२. गुण्टकेल—(बंगलोर) बेजुनजी बेरामजी कं०—                              | जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी है। |  |

### धर्म रामप्रताप रामदेव

इस कर्म के मालिकों का मूल निवामस्थान छोटवाणा ( जोधपुर स्टेट ) है। आप वान वैश्य समाज के वगदिया मन्त्रन हैं। इस कर्म का स्थापन सेठ रामप्रतापजी ने १०० वर्ष किया। आपके पश्चात् सेठ रामदेवजी और कन्दैयावाजजी ने व्यापार मण्डलाना। २० साल पूर्व और कन्दैयावाजजी १२ साल पूर्व स्वर्गसामी हो गये हैं।

वर्तमान में इस दुकान के मालिक सेठ राधाकृष्णजी और गोपीरामजी वगदिया आरघी और से छोटवाणा, जालना और नागपुर में धर्मराजकार्य धनी हैं। आपका परिचय इस प्रकार है।

- |   |   |  |
|---|---|--|
| १—जालना—धर्म रामप्रताप रामदेव<br>T. A. Ramdev | } | जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी, भारती मेल-देन और कटिन का व्यापार होता है। |
|---|---|--|

- १—जाहना—एकदिवस गोपीविशाल—५५५५ ५५५५५५
- २—रिसोइ (अधोका) एनन्दाय रामदेव—५५५५ ५५५५५५
- ४—कानटी—(नगर) एनन्दाय रामदेव—५५५५ ५५५५५५
- ५—नागपुर—एनदेव एनन्दाय रामदेव—५५५५ ५५५५५५

मेसर्स शिवराज बंधीयाय

इस फर्म के वर्तमान मालिक क्रेडिट सिस्टम हैं। बागों शिवराज बंधीयाय से कपड़े का व्यापार स्थानित किया। इन वेदरान (कोपरपुर रोड) जालना के समाज के सज्जन हैं। कारके पुत्र श्री कर्तारनाथ की कारबार में भाग लेते हैं। इनका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जाहना—मेसर्स शिवराज बंधीयाय—कपड़े का व्यापार होता है।

- फाटन जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरीज
- गनेरा कम्पनी प्रेमिंग फेक्टरी
- दि जाहना जीनिंग एण्ड प्रेमिंग फेक्टरी
- दि जालना मरचेट्स कम्पनी जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी
- दि एबल जीनिंग प्रेमिंग कम्पनी
- सेजवाल गोविंदजी जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी
- महावीर जीनिंग एण्ड प्रेमिंग फेक्टरी
- धनराज जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी
- नरसिंह जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी
- एन० जी० रामदिया जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी
- नारायणदास दुधोजाल जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी
- रामन्दाय रामदेव जीनिंग प्रेमिंग फेक्टरी
- सातबाग जीनिंग फेक्टरी

श्री इन्वॉल्वमेंट बैंक काटन रुचिका (1)  
दि फर्म कोकनॉट्टिडू कैन्टून बैंक

- कनाय के व्यापारी
- मेसर्स कटपट्टिया मन्मथराव
- " कटपट्टिया मन्मथराव
- " कटपट्टिया मन्मथराव
- " सुभाजीराव रामदास
- " धनराज कटपट्टिया
- " रामदास

भारतीय व्यापारियों का परिचय

- ५ बम्बई—मेमर्स पूनमचंद बख्तावरमल, पायधुनी } आइत और वैद्विग कारखार होता है।  
 तार का पता Garnet, T. No 20929 }
- ६ मिठन्द्रावाद—मेमर्स पूनमचन्द बख्तावरमल—वैद्विग कारखार होता है।
- ७ बरंगल—मेमर्स युधमल जुहारमल, T. A. Garnet—सूत, काटन, आइत, फपड़ा व  
 T. No. 17 एरंडी का व्यापार होता है।
- ८ नौदेह—मेमर्स पूनमचंद बख्तावरमल T. A. Garnet } इन नामों से वैद्विग गल्ला,  
 " मेमर्स निदानचंद देवड़ा } काटन और आइत का  
 " निदानचंद उत्तमचंद } काम होता है।
- ९ जानना—मेमर्स पूनमचन्द बख्तावरमल—आइत का काम होता है।

**मेमर्स लच्छीराम श्रीकृष्ण**

इस फर्म के मानिष्ठों का मूल निवास स्थान है ( जोधपुर ) स्टेट में है। आप सगरगी  
 इंस्टीट्यूट दिगम्बर जैन समाज के मन्त्रन हैं। इस फर्म का स्थापन मेठ जसरूप जी के हाथों  
 से करीब ६० साल पहिले हुआ। आप के पुत्र मेठ लच्छीरामजी ने इस दुकान के काम का  
 जो सिरोप लरही है। आपने श्रीरंगवाद् में दिगम्बर जैन मन्दिर के बनवाने में बहुत परिश्रम  
 उठाया था। श्रीरंगवाद् के आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आप का स्वर्गसम संन  
 १९०३ में हुआ। आप के यहाँ श्रीयुत श्रीकृष्ण जी १९७७ में गगगला से दफन लाये गये।  
 यह दुकान यहाँ बहुत पुरानी मानी जाती है। इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

श्रीरंगवाद्—मेमर्स लच्छीराम श्रीकृष्ण } वैद्विग, जनरल मरसेट एण्ड कमोरेन  
 तार का पता Pipariwala } का काम होता है।  
 T. No. 62

श्रीरंगवाद्—लच्छीराम श्रीकृष्ण, निजामराज—गड्डा और आइत का काम होता है।

**मेमर्स श्रीराम मोर्तीवाल**

इस फर्म के मानिष्ठों का मूल निवास स्थान है ( जोधपुर स्टेट ) निजामी कलेक्सी केस  
 जसराज जी और मेठ मेमरसजी दोनों प्रान्त देस में अपने  
 दुकान हैं। आप के व्यापार आप के पुत्र मेठ जी रामजी  
 के कारखार को है।



जनरल मरचेट्स

- मेसर्स अब्दुल्लाभाई फिदाअली  
” अब्दुल तय्यब मुद्दा हैदरअली  
” फमरुद्दीन अब्दुल रहीम  
” हाजी फिदा अली एन्ड संस

सार्वजनिक संस्थाएं

- पांजरा पोल  
बलवंत मोक्त वाचनालय  
समर्थ हिन्दू धर्मशाला  
सरस्वती भवन

जीनिंग प्रेसिंग

- अभावाद मिल जीनिंग फेक्टरी  
गणेश जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरी  
गोविंद धीरम जीनिंग प्रेसिंग  
गंगापूर नैंग फेक्टरी  
टेमरस सो. श्री चिनाई जीनिंग  
ठाकुरदास ज. फेक्टरी  
बारायणदास मु. जीनिंग  
पदमजी वेस्तनज. जीनिंग  
रणछोइदास अनंद जीनिंग

